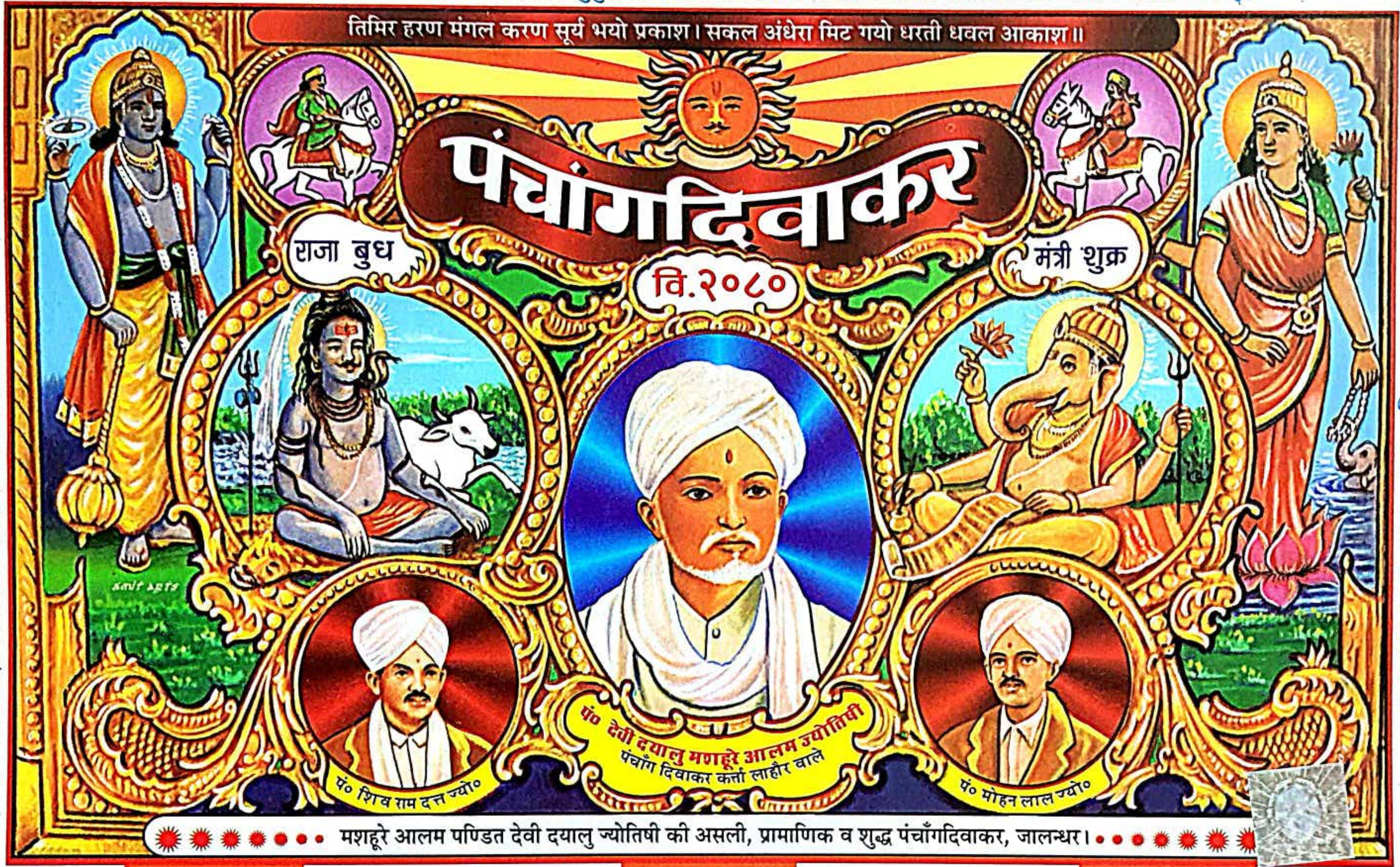
स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2023-24 ई.



द्वादशांश/त्रिशांश कुण्डली फलादेश विशेषांक

गौरवशाली 148 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008 (पं.)

एकमात्र वितरक :

जनरल बुक डिपो

चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्यः ₹130/-

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा।। (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार सहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समासिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समासिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समासिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र** या **योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित **पं. पंकज शर्मा द्वारा विकसित Computer Programme** से की जाती है।

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा।।


स्वर्गीय: पं. पन्ना लाल ज्योतिषी


श्री गणेशाय नमः


संस्थापक : पं. देवीदयालु ज्योतिषी


श्री सरस्वत्यै नमः


स्वर्गीय: पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

नया "पिंगल" नामक संवत्सर पंचाँगदिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा बुध

मन्त्री शुक्र

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल एल. बी.), सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्र: स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144008 (पं.) (भारत) फोन नं. 0181-2457959

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १४८ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)। मोबाईल 94172-91325, 97799-13583

नोट–सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित हैं; –हमारी मुफीद आलम जंत्री उर्दू, हिन्दी व पंजाबी भाषाओं में 2023 ई. की भी छपकर तैयार हैं।

Printed at : Choice Books & Printers (P) LTd., Focal Point, Extension, Jalandhar.

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- जन्मकुण्डली में फलादेश कथन हेतु उपयोगी नियम
- सन् 2025 ई. में कुम्भ-पर्व (प्रयागराज) का विस्तृत विवरण
- अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के दैनिक सूर्योदयास्त तथा अन्य अनेक उपयोगी विषयों को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाएगा।

पंचांग दिवाकर के १४८वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद्.गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यतायाः गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद् पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्यमेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्ग दिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपयोगी प्रतीयते।

आशास्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिक उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुरः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मानः शुभाशीरपि कामये। तिथौ वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासरः प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणानन्द तीर्थ रामेश्वर मठः
श्री काशी धर्मपीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

सूचना-इस पंचांग में किसी प्रकार की प्रिंटिंग, लेखकीय, बाईडिंग आदि त्रुटि के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक जिम्मेवार न होंगे।

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2023–24 ई.)

○ जनवरी–(सन् 2023 ई.) ○

इंग्लिश नववर्ष 2023 ई. प्रा. 1 जन. रवि
पुत्रदा एकादशी व्रत 2 जन. सोम
पौष पूर्णिमा 6 जन. शुक्र
माघ स्नान प्रारम्भ 6 जन. शुक्र
अङ्गारकी गणेश संकष्ट चतुर्थी 10 जन. मंग.
लोहड़ी पर्व 13 जन. शुक्र
मकर संक्रान्ति 14 जन. शनि
माघ (मौनी) अमावस 21 जन. शनि
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 22 जन. रवि
बाबा श्रीलाल दयाल जयंती (ध्यानपुर, पं.) 23 जन. सोम
गौरी तृतीया (गोंतरी) 24 जन. मंग
श्रीतिलचतुर्थी, कुन्द चतुर्थी 24 जन. मंग
गणतन्त्र दिवस (74वाँ) 26 जन. गुरु
वसन्त (श्री) पंचमी 26 जन. गुरु
लक्ष्मी–सरस्वती पूजन 26 जन. गुरु
रथसप्तमी (पूर्वाह्णोदयवाली) 28 जन. शनि
आरोग्य-पुत्र सप्तमी व्रत 28 जन. शनि
भीष्माष्टमी 28 जन. शनि
गुप्त नवरात्र समाप्त 30 जन. सोम

○ फरवरी ○

भीष्म द्वादशी, तिल १२ 2 फर. गुरु
माघ-पूर्णिमा 5 फर. रवि
माघस्नान समाप्त 5 फर. रवि
श्रीगुरु रविदास जयन्ती 5 फर. रवि
स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं. 15 फर. बुध
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 18 फर. शनि
फा. सोमवती अमावस 20 फर. सोम
होलाष्टक प्रारम्भ 27 फर. सोम
अन्नपूर्णा-अष्टमी 27 फर. सोम

○ मार्च ○

गोविन्द द्वादशी 4 मार्च शनि
होलिकादहन (भद्रा-पुच्छे) 6 मार्च सोम
होलाष्टक समाप्त 7 मार्च मंग
होली पर्व 7 मार्च मंग
वसन्तोत्सव 8 मार्च बुध
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब) 8 मार्च बुध
श्रीरंग-पंचमी 12 मार्च रवि
शीतलाष्टमी व्रत 15 मार्च बुध
वारुणी पर्व 19 मार्च रवि
मेला पिहोवातीर्थ (हरि.) 20 मार्च सोम
महाविषुव दिन 20 मार्च सोम
वि. संवत् 2079 पूर्ण 21 मार्च मंग
वि. संवत् 2080 शुरु 22 मार्च बुध
चैत्र (वासन्त) नवरात्र शुरु 22 मार्च बुध
तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण 22 मार्च बुध
गौरी तृतीया (गणगौर) 24 मार्च शुक्र
श्री (लक्ष्मी) पंचमी 26 मार्च रवि
हयव्रत 26 मार्च रवि
स्कन्द षष्ठी व्रत 27 मार्च सोम
श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति 29 मार्च बुध
अशोकाष्टमी 29 मार्च बुध
वासन्त नवरात्र समाप्त 30 मार्च गुरु
श्रीरामनवमी 30 मार्च गुरु
नवरात्र व्रत पारणा 31 मार्च शुक्र

○ अप्रैल ○

लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव 1 अप्रै. शनि
श्रीविष्णु दमनोत्सव 2 अप्रै. रवि
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत 3 अप्रै. सोम
श्रीमहावीर जयं. (जैन) 4 अप्रै. मंग
शिव दमनोत्सव 5 अप्रै. बुध
श्रीहनुमान जयं. (दक्षिण) 6 अप्रै. गुरु
वैशाखस्नान प्रारम्भ 6 अप्रै. गुरु
गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.) 7 अप्रै. शुक्र
वैशाख संक्रान्ति 14 अप्रै. शुक्र
वैशाखी पर्व (पंजाब) 14 अप्रै. शुक्र
अक्षय-तृतीया 22 अप्रै. शनि
भगवान् परशुराम जयंती 22 अप्रै. शनि
अक्षयतृतीया (पूर्वी भारत) 23 अप्रै. रवि
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. 25 अप्रै. मंग
श्रीगङ्गा-जयन्ती 26 अप्रै. बुध
श्रीबगुलामुखी-जयन्ती 28 अप्रै. शुक्र
जानकी-जयन्ती 29 अप्रै. शनि

○ मई ○

श्रीनृसिंह-जयन्ती 4 मई गुरु
श्रीकूर्म-जयन्ती 5 मई शुक्र
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा 5 मई शुक्र
वैशाखस्नान समाप्त 5 मई शुक्र
अपरा-भद्रकाली एकादशी 15 मई सोम
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) 19 मई शुक्र
ज्येष्ठ, भावुका अमावस 19 मई शुक्र
शनैश्चर-जयन्ती 19 मई शुक्र
रम्भा तृतीया व्रत 22 मई सोम
अरण्य षष्ठी 25 मई गुरु
विन्ध्यवासिनी पूजा 25 मई गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. 28 मई रवि
मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर) 28 मई रवि
श्रीगङ्गा दशहरा पर्व 30 मई मंग
निर्जला एकादशी व्रत 31 मई बुध

○ जून ○

वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा) 3 जून शनि
सन्त कबीर जयन्ती 4 जून रवि
ज्येष्ठ पूर्णिमा (ज्येष्ठी योग) 4 जून रवि
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 19 जून सोम
श्रीजगन्नाथ रथयात्रा-पुरी 20 जून मंग
सायन दक्षिणायन प्रा. 21 जून बुध
कुमार-षष्ठी 24 जून शनि
विवस्वत सप्तमी 25 जून रवि
गुप्त नवरात्र समाप्त 27 जून मंग
हरिशयनी एकादशी व्रत 29 जून गुरु
चातुर्मास्य व्रत, नियम शुरु 29 जून गुरु
श्रीविष्णुशयनोत्सव 29 जून गुरु

○ जुलाई ○

श्रीशिव-शयनोत्सव 2 जुला. रवि
कोकिला व्रत 2 जुला. रवि
गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा 3 जुला. सोम
श्रावण सोमवार व्रत शुरु 10 जुला. सोम
श्रावण-शिवरात्रि 15 जुला. शनि
हरियाली अमावस 17 जुला. सोम
सोमवती अमावस 17 जुला. सोम
श्रावण अधिक (मल)-मास प्रारम्भ 18 जुला. मंग.

○ अगस्त ○

स्वतन्त्रता दिवस (77वाँ) 15 अग. मंग
श्रावण अधिक (मल)-मास समाप्त 16 अग. बुध
मे. चिन्तपूर्णी-हि.प्र. शुरु 17 अग. गुरु
मधुस्त्रवा-हरियाली तीज 19 अग. शनि
नाग-पञ्चमी 21 अग. सोम
श्रीकल्कि जयन्ती 22 अग. मंग
श्रीदुर्गाष्टमी (मेला-चिन्तपूर्णी-हि.प्र. समा.) 24 अग. गुरु
दूर्वाष्टमी व्रत 24 अग. गुरु
ऋक्-उपाकर्म 29 अग. मंग
यजु-अथर्ववेदि उपाकर्म 30 अग. बुध
रक्षाबन्धन (राखी) (भद्रा बाद-देखें पृष्ठ-17) 30 अग. बुध
श्रावण-पूर्णिमा 31 अग. गुरु

○ सितम्बर ○

कज्जली तृतीया 2 सितं. शनि
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी 3 सितं. रवि
चन्दन षष्ठी व्रत 4 सितं. सोम
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) 6 सितं. बुध
श्रीकृष्ण-जयन्ती योग 6 सितं. बुध
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (वैष्णव) 7 सितं. गुरु
श्रीगुग्गा-नवमी 8 सितं. शुक्र
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव 8 सितं. शुक्र
वत्स द्वादशी (पूजा) 11 सितं. सोम
कुशाग्रहणी अमावस 14 सितं. गुरु
पिठोरी अमावस 14 सितं. गुरु
सामवेदि उपाकर्म 16 सितं. शनि
हरितालिका तृतीया 18 सितं. सोम
कलंक-चतुर्थी 18 सितं. सोम
सिद्धि विनायक व्रत 19 सितं. मंग
ऋषि-पंचमी व्रत 20 सितं. बुध
सूर्य षष्ठी व्रत 21 सितं. गुरु
मुक्ताभरण-संतान सप्तमी 22 सितं. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. 22 सितं. शुक्र
श्रीराधाष्टमी 23 सितं. शनि
श्रीचन्द नवमी (उदासीन) 24 सितं. रवि
श्रीवामन-जयन्ती 26 सितं. मंग
श्रवण-द्वादशी 26 सितं. मंग
अनन्त चतुर्दशी व्रत 28 सितं. गुरु
मेला सोढल, जालन्धर, पं. 28 सितं. गुरु
प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध 29 सितं. शुक्र
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ 29 सितं. शुक्र

○ अक्तूबर ○

महात्मा गाँधी जयन्ती 2 अक्तू. सोम
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. 6 अक्तू. शुक्र
जीवित्पुत्रिका श्राद्ध 6 अक्तू. शुक्र
मघा श्राद्ध 10 अक्तू. मंग
महालय/श्राद्ध समाप्त 14 अक्तू. शनि
सर्वपितृ श्राद्ध 14 अक्तू. शनि
शरद् नवरात्र प्रारम्भ 15 अक्तू. रवि
घटस्थापन (10:24 बाद) 15 अक्तू. रवि
उपाङ्ग ललिता व्रत 19 अक्तू. गुरु
सरस्वती आवाहन 20 अक्तू. शुक्र
सरस्वती पूजन 21 अक्तू. शनि
सरस्वती बलिदान 22 अक्तू. रवि
सरस्वती विसर्जन 22 अक्तू. रवि
श्रीदुर्गाष्टमी 22 अक्तू. रवि
महानवमी (व्रत, पूजा, बलिदान, होम हेतु) 23 अक्तू. सोम
नवरात्र समाप्त 23 अक्तू. सोम
विजयादशमी (दशहरा) 24 अक्तू. मंग

आयुध (शस्त्र) पूजा	24 अक्तू. मंग
नवरात्र व्रत पारणा	24 अक्तू. मंग
भरत-मिलाप	25 अक्तू. बुध
कोजागर व्रत	28 अक्तू. शनि
शरद्-पूर्णिमा व्रत	28 अक्तू. शनि
महर्षि श्रीवाल्मीकि जयं.	28 अक्तू. शनि
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	28 अक्तू. शनि
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	28 अक्तू. शनि

O नवम्बर O

व्रत करवा-चौथ	1 नवं. बुध
अहोई अष्टमी व्रत	5 नवं. रवि
गोवत्स द्वादशी	9 नवं. गुरु
यम प्रीत्यर्थं दीपदान	10 नवं. शुक्र
धन त्रयोदशी	10 नवं. शुक्र
श्रीहनुमान जयं. (उ.भारत)	11 नवं. शनि
नरक-चतुर्दशी	12 नवं. रवि
दीपावली, महालक्ष्मी-पूजन	12 नवं. रवि
सोमवती अमावस	13 नवं. सोम
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	13 नवं. सोम
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	14 नवं. मंग
भाई-दूज, यमद्वितीया	15 नवं. बुध
श्रीविश्वकर्मा पूजन	15 नवं. बुध
सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	19 नवं. रवि
गोपाष्टमी	20 नवं. सोम
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	21 नवं. मंग
भीष्मपंचक प्रारम्भ	23 नवं. गुरु
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	23 नवं. गुरु
तुलसी विवाह	23 नवं. गुरु
हरिप्रबोधोत्सव	24 नवं. शुक्र
वैकुण्ठ चतुर्दशी	25 नवं. शनि
कृतिका-दीपम्	26 नवं. रवि
त्रिपुरोत्सव	26 नवं. रवि
भीष्मपंचक समाप्त	27 नवं. सोम
कार्तिक पूर्णिमा	27 नवं. सोम
श्रीगुरु नानक जयन्ती	27 नवं. सोम
कार्तिक स्नान समाप्त	27 नवं. सोम

O दिसम्बर O

श्रीकालभैरवाष्टमी	5 दिसं. मंग
स्कन्द-गुह षष्ठी	18 दिसं. सोम
चम्पा-षष्ठी	18 दिसं. सोम
पितृ (विष्णु) सप्तमी	19 दिसं. मंग
सूर्य उत्तरायण में	22 दिसं. शुक्र
श्रीगीता-जयन्ती	22 दिसं. शुक्र
मोक्षदा एकादशी (वैष्णव)	23 दिसं. शनि
क्रिसमिस-डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. सोम
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	26 दिसं. मंग

» जनवरी—2024 ई. »

इंग्लिश नववर्ष 2024 ई. प्रा.	1 जन. सोम
रुक्मिणी-अष्टमी	4 जन. गुरु
लोहड़ी पर्व	13 जन. शनि
मकर संक्रान्ति	14 जन. रवि
पुण्य मकर संक्रान्ति	15 जन. सोम
श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जयं.	17 जन. बुध
मार्त्तण्ड-सप्तमी	17 जन. बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	21 जन. रवि
पौष-पूर्णिमा	25 जन. गुरु
माघस्नान प्रारम्भ	25 जन. गुरु
गणतन्त्र दिवस(75वाँ)	26 जन. शुक्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	29 जन. सोम

» फरवरी—2024 ई० »

माघ (मौनी) अमावस	9 फर. शुक्र
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	10 फर. शनि
बाबा श्रीलाल दयाल -जयं. (ध्यानपुर, पं.)	11 फर. रवि
गौरी तृतीया (गोंतरी)	12 फर. सोम
तिल-कुन्द चतुर्थी	12 फर. सोम
वसन्त (श्री) पंचमी	14 फर. बुध
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	14 फर. बुध
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	16 फर. शुक्र
आरोग्य-पुत्र सप्तमी	16 फर. शुक्र
भीष्माष्टमी	16 फर. शुक्र
गुप्त नवरात्र समाप्त	17 फर. शनि
भीष्म द्वादशी, तिल १२	20 फर. मंग
माघ पूर्णिमा	24 फर. शनि
माघस्नान समाप्त	24 फर. शनि
श्रीगुरु रविदास जयंती	24 फर. शनि

» मार्च—2024 ई० »

स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं.	5 मार्च मंग
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च शुक्र
होलाष्टक प्रारम्भ	17 मार्च रवि
अन्नपूर्णा-अष्टमी	17 मार्च रवि
महाविषुव दिवस	20 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	21 मार्च गुरु
होलिका-दहन (भद्रा-बाद)	24 मार्च रवि
होलाष्टक समाप्त	25 मार्च सोम
होली-पर्व	25 मार्च सोम
वसन्तोत्सव	26 मार्च मंग
होला मेला (श्रीआनन्दपुर--व पांओटा साहिब)	26 मार्च मंग
श्रीरंग-पंचमी	30 मार्च शनि

» अप्रैल—2024 ई० »

शीतलाष्टमी व्रत	2 अप्रै. मंग
महावारुणी पर्व	6 अप्रै. शनि
मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)	7 अप्रै. रवि
सोमवती अमावस	8 अप्रै. सोम
वि. संवत् 2080 पूर्ण	8 अप्रै. सोम

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2023-24 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदय-कालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक दिन का अन्तर आ जाता है, क्योंकि चन्द्रोदयकालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	6 जन. शुक्र
माघ	5 फर. रवि
फाल्गुन	6 मार्च सोम
चैत्र	5 अप्रै. बुध
वैशाख	5 मई शुक्र
ज्येष्ठ	3 जून शनि
आषाढ़ (देखें पृ. 17)	2 जुला. रवि
प्र. अधिक श्रावण	1 अग. मंग
द्वि. शुद्ध श्रावण	30 अग. बुध
भाद्रपद	28 सितं. गुरु
आश्विन	28 अक्तू. शनि
कार्तिक	26 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	26 दिसं. मंग
पौष (2024 ई.)	25 जन. गुरु
माघ	23 फर. शुक्र
फाल्गुन	24 मार्च रवि

पूर्णिमा व्रत (2023-24 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	6 जन. शुक्र
माघ	5 फर. रवि
फाल्गुन	7 मार्च मंग
चैत्र	6 अप्रै. गुरु
वैशाख	5 मई शुक्र
ज्येष्ठ	4 जून रवि
आषाढ़	3 जुला. सोम
प्र. अधिक श्रावण	1 अग. मंग
द्वि. शुद्ध श्रावण	31 अग. गुरु
भाद्रपद	29 सितं. शुक्र
आश्विन	28 अक्तू. शनि
कार्तिक	27 नवं. सोम
मार्गशीर्ष	26 दिसं. मंग.

(सन् 2024 ई.)

पौष	25 जन. गुरु
माघ	24 फर. शनि
फाल्गुन	25 मार्च सोम

अमावस्याएँ

(स्नानदानार्थ) (सन् 2023-24 ई.)

माघ (मौनी) शनैश्चरी	21 जन. शनि
फाल्गुन (सोमवती)	20 फर. सोम
चैत्र (भौमवती)	21 मार्च मंग
वैशाख	20 अप्रै. गुरु
ज्येष्ठ	19 मई शुक्र
आषाढ़	18 जून रवि
प्र. (शुद्ध) श्रावण	17 जुला. सोम
द्वि. (अधिक) श्रावण	16 अग. बुध
भाद्रपद	14 सितं. गुरु
आश्विन (शनैश्चरी)	14 अक्तू. शनि
कार्तिक (सोमवती)	13 नवं. सोम
मार्गशीर्ष (भौमवती)	12 दिसं. मंग

(सन् 2024 ई.)

पौष	11 जन. गुरु
माघ (मौनी) 8:03 बाद	9 फर. शुक्र
फाल्गुन	10 मार्च रवि
चैत्र (सोमवती)	8 अप्रै. सोम

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

माघ (अङ्गारकी)	10 जन. मंग
फाल्गुन	9 फर. गुरु
चैत्र	11 मार्च शनि
वैशाख	9 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ	8 मई सोम
आषाढ़	7 जून बुध
प्र. शुद्ध श्रावण	6 जुला. गुरु
द्वि. अधिक श्रावण	4 अग. शुक्र
भाद्रपद	3 सितं. रवि
आश्विन	2 अक्तू. सोम
कार्तिक	1 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	30 नवं. गुरु
पौष	30 दिसं. शनि

(सन् 2024 ई.)

माघ	29 जन. सोम
फाल्गुन	28 फर. बुध
चैत्र	28 मार्च गुरु

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

माघ	24 जन. मंग
फाल्गुन	23 फर. गुरु
चैत्र	25 मार्च शनि
वैशाख	23 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ	23 मई मंग
आषाढ़	22 जून गुरु
प्र. अधिक श्रावण	21 जुला. शुक्र
द्वि. शुद्ध श्रावण	20 अग. रवि
भाद्रपद (देखें पृ. 19)	19 सितं. मंग
आश्विन	18 अक्तू. बुध
कार्तिक	16 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	16 दिसं. शनि

(सन् 2024 ई.)

पौष	14 जन. रवि
माघ	13 फर. मंग
फाल्गुन	13 मार्च बुध

पितृपक्ष में श्राद्ध–सन् 2023 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियों का निर्णय)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृ-तर्पण एवं श्राद्धकर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति, वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम '**श्राद्ध**' है। इस बात का भी ध्यान रहे कि श्राद्धकृत्य '**अपराह्नकाल**' व्यापिनी तिथि में किए जाते हैं।

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	29 सितं. शुक्र	नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	7 अक्तू. शनि
प्रतिपदा श्राद्ध (देखें पृ.19)	29 सितं. शुक्र	दशमी का श्राद्ध	8 अक्तू. रवि
द्वितीया का श्राद्ध	30 सितं. शनि	एकादशी श्राद्ध (देखें पृ. 20)	9 अक्तू. सोम
तृतीया का श्राद्ध	1 अक्तू. रवि	A मघा श्राद्ध	10 अक्तू. मंग
चतुर्थी/भरणी का श्राद्ध	2 अक्तू. सोम	द्वादशी/संन्यासीनां श्राद्ध	11 अक्तू. बुध
पंचमी का श्राद्ध	3 अक्तू. मंग	त्रयोदशी का श्राद्ध	12 अक्तू. गुरु
षष्ठी का श्राद्ध	4 अक्तू. बुध	✤चतुर्दशी/अपमृत्यु श्राद्ध	13 अक्तू. शुक्र
सप्तमी का श्राद्ध	5 अक्तू. गुरु	अमावस, सर्वपितृ, अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध	14 अक्तू. शनि
अष्टमी का श्राद्ध	6 अक्तू. शुक्र		

A=10 अक्तू. को किसी तिथि का श्राद्ध नहीं होगा। ✤ चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2023–24 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन., शनि	20:44	मध्याह्न बाद से
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर., सोम	9:44	सू.उ. से मध्याह्न बाद तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, मंग	30:34	अगले दिन दोपहर 12:58 तक
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै., शुक्र	14:58	प्रातः 8:34 बाद से सारा दिन
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई, सोम	11:44	सू.उ. बाद सारा दिन
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून, गुरु	18:16	दोपहर 11:52 बाद
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला., रवि	29:07	अगले दिन दोपहर 11:30 बजे तक
भाद्र. संक्रान्ति	17 अग., गुरु	13:32	प्रातः 7:08 बाद सारा दिन
आश्विन संक्रान्ति	17 सितं., रवि	13:30	प्रातः 7:06 बाद सारा दिन
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू., मंग	25:29	अगले दिन प्रातः 7:53 तक
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं., गुरु	25:18	अगले दिन प्रातः 7:42 तक
पौष संक्रान्ति	16 दिसं., शनि	15:57	प्रातः 9:33 बाद सारा दिन
माघ संक्रान्ति(24)	14 जन., रवि	26:43	अगले दिन प्रातः 9:07 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर., मंग	15:43	प्रातः 9:19 बाद सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, गुरु	12:36	सू.उ. बाद सारा दिन

प्रदोष व्रत (सन् 2023–24 ई.)

प्रदोष व्रत भगवान् शिव की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति हेतु किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनिप्रदोष** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम-प्रदोष** ऋणमोचन हेतु ; **सोमप्रदोष** मनःशान्ति एवं सुरक्षा हेतु, **रवि प्रदोष व्रत** आरोग्य प्राप्ति एवं आयुवृद्धि के लिए विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिवपूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "**भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने। उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः।।**" से प्रार्थना करके भोजन करें।

पौष शुक्ल	4 जन. बुध
माघ कृष्ण	19 जन. गुरु
माघ शुक्ल	3 फर. शुक्र
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	18 फर. शनि
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	4 मार्च शनि
चैत्र कृष्ण	19 मार्च रवि
चैत्र शुक्ल (सोम)	3 अप्रै. सोम
वैशाख कृष्ण (सोम)	17 अप्रै. सोम
वैशाख शुक्ल	3 मई बुध
ज्येष्ठ कृष्ण	17 मई बुध
ज्येष्ठ शुक्ल	1 जून गुरु
आषाढ़ कृष्ण	15 जून गुरु
आषाढ़ शुक्ल*(शनि)	1 जुला. शनि
प्र.शुद्ध श्रावण कृष्ण	15 जुला. शनि
प्र. अधि. श्रावण शुक्ल	30 जुला. रवि
द्वि. अधि. श्रावण कृष्ण	13 अग. रवि
द्वि. शुद्ध श्रावणशुक्ल (सोम)	28 अग. सोम
भाद्रपद कृष्ण (भौम)	12 सितं. मंग
भाद्रपद शुक्ल	27 सितं. बुध
आश्विन कृष्ण	12 अक्तू. गुरु
आश्विन शुक्ल	26 अक्तू. गुरु
कार्तिक कृष्ण	10 नवं. शुक्र
कार्तिक शुक्ल	24 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष कृष्ण	10 दिसं. रवि
मार्गशीर्ष शुक्ल	24 दिसं. रवि

(सन् 2024 ई.)

पौष कृष्ण (भौम)	9 जन. मंग
पौष शुक्ल (भौम)	23 जन. मंग
माघ कृष्ण	7 फर. बुध
माघ शुक्ल	21 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	8 मार्च शुक्र
फाल्गुन शुक्ल	22 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण (शनि)	6 अप्रै. शनि

मासिक कालाष्टमी व्रत

(सन् 2023 ई.)

माघ	15 जन. रवि
फाल्गुन	13 फर. सोम
चैत्र*	14 मार्च मंग
वैशाख	13 अप्रै. गुरु
ज्येष्ठ	12 मई शुक्र
आषाढ़	10 जून शनि
प्र. शुद्ध श्रावण	9 जुला. रवि
द्वि. अधिक श्रावण	8 अग. मंग
भाद्रपद	6 सितं. बुध
आश्विन	6 अक्तू. शुक्र
कार्तिक	5 नवं. रवि
मार्गशीर्ष	5 दिसं. मंग

(सन् 2024 ई.)

पौष	4 जन. गुरु
माघ	2 फर. शुक्र
फाल्गुन	3 मार्च रवि
चैत्र	2 अप्रै. मंग

*स्थानीय सूर्योदय/सूर्यास्त कालानुसार यह पर्व एक दिन बाद भी हो सकता है।

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् 2023 ई.)

माघ	20 जन. शुक्र
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	18 फर. शनि
चैत्र	20 मार्च सोम
वैशाख	18 अप्रै. मंग
ज्येष्ठ	17 मई बुध
आषाढ़	16 जून शुक्र
प्र. शुद्ध श्रावण	15 जुला. शनि
द्वि. अधिक श्रावण	14 अग. सोम
भाद्रपद कृष्ण	13 सितं. बुध
आश्विन	12 अक्तू. गुरु
कार्तिक	11 नवं. शनि
मार्गशीर्ष	11 दिसं. सोम

(सन् 2024 ई.)

पौष	9 जन. मंग
माघ	8 फर. गुरु
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	8 मार्च शुक्र
चैत्र	7 अप्रै. रवि

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

(सन् 2023 ई.)

माघ	28 जन. शनि
फाल्गुन	27 फर. सोम
चैत्र	29 मार्च बुध
वैशाख	28 अप्रै. शुक्र
ज्येष्ठ	28 मई रवि
आषाढ़	26 जून सोम
प्र. अधिक श्रावण	26 जुला. बुध
द्वि. शुद्ध श्रावण	24 अग. गुरु
भाद्रपद	23 सितं. शनि
आश्विन	22 अक्तू. रवि
कार्तिक	20 नवं. सोम
मार्गशीर्ष	20 दिसं. बुध

(सन् 2024 ई.)

पौष	18 जन. गुरु
माघ (8:55 बाद)	16 फर. शुक्र
फाल्गुन	17 मार्च रवि

एकादशी व्रत (सन् 2023-24 ई.)

'धर्मसिन्धु' ग्रन्थानुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी तिथि विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि से युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है। इसलिए 'स्मार्त' (अर्थात् जिसमें साधारण गृहस्थी लोग भी सम्मिलित हैं) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रख लेते हैं।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	2 जन. सोम
षट्तिला (माघ कृष्ण)	18 जन. बुध
जया (माघ शुक्ल)	1 फर. बुध
विजया (फाल्गुन कृष्ण) वैष्णव	17 फर. शुक्र
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	3 मार्च शुक्र
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	18 मार्च शनि
कामदा (चैत्र शुक्ल) वैष्णव	2 अप्रै. रवि
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	16 अप्रै. रवि
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	1 मई सोम
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	15 मई सोम
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	31 मई बुध
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	14 जून बुध
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	29 जून गुरु
कामिका (शुद्ध श्रावण कृ.)	13 जुला. गुरु
पुरुषोत्तमा (अधि. श्रावण शु.)	29 जुला. शनि
पुरुषोत्तमा (अधि. श्रावण कृ.)	12 अग. शनि
पवित्रा (शुद्ध श्रावण शुक्ल)	27 अग. रवि
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	10 सितं. रवि
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल) वैष्णव	26 सितं. मंग
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	10 अक्तू. मंग
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	25 अक्तू. बुध
रमा (कार्तिक कृष्ण)	9 नवं. गुरु
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शुक्ल)	23 नवं. गुरु
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृष्ण)	8 दिसं. शुक्र
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शुक्ल) वैष्ण.	23 दिसं. शनि

(सन् 2024 ई.)

सफला (पौष कृष्ण)	7 जन. रवि
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	21 जन. रवि
षट्तिला (माघ कृष्ण)	6 फर. मंग
जया (माघ शुक्ल)	20 फर. मंग
विजया (फाल्गुन कृष्ण) वैष्णव	7 मार्च गुरु
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	20 मार्च बुध
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	5 अप्रै. शुक्र

दशमहाविद्या जयन्तियां–सं. २०८०

श्रीमहातारा जयन्ती	30 मार्च गुरु
श्रीमातङ्गी जयन्ती	22 अप्रै. शनि
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	28 अप्रै. शुक्र
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	5 मई शुक्र
श्रीधूमावती जयन्ती	28 मई रवि
श्रीमहाकाली जयन्ती	6 सितं. बुध
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	26 सितं. मंग
श्रीकमला जयन्ती	31 अक्तू. मंग
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	26 दिसं. मंग
श्रीललिता जयन्ती (2024 ई.)	24 फर. शनि

दशावतार जयन्तियां–(सन् 2023 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	24 मार्च शुक्र
श्रीराम जयन्ती (नवमी)	30 मार्च गुरु
श्रीपरशुराम जयन्ती	22 अप्रै. शनि
श्रीनृसिंह जयन्ती	4 मई गुरु
श्रीकूर्म जयन्ती	5 मई शुक्र
श्रीबुद्ध जयन्ती	5 मई शुक्र
श्रीकल्कि जयन्ती	22 अग. मंग
श्रीकृष्ण जयन्ती	6 सितं. बुध
श्रीवराह जयन्ती	17 सितं. रवि
श्रीवामन जयन्ती	26 सितं. मंग

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)-2023 ई.

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	28 जन. शनि
श्रीहोलिका दहन	6 मार्च सोम
श्रीभगवत्नारायण जयंती	11 मार्च शनि
रामनवमी पर्व	30 मार्च गुरु
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. शुक्र
जानकी जयन्ती	29 अप्रै. शनि
गंगा दशहरा पर्व	30 मई मंग
गुरु पूर्णिमा	3 जुला. सोम
तुलसी जयन्ती पर्व	23 अग. बुध
कृष्ण जयन्ती पर्व	6-8 सितम्बर
महंत गु. गोबिन्ददास जयंती	27 अक्तू. शुक्र

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	14 जन. शनि
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	23 जन. चन्द्र
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. चंद्र
लाला लाजपतराय जयंती	28 जन. शनि
श्रीगुरु रविदास जयंती	5 फर. रवि
समर्थ गुरुरामदास जयन्ती	15 फर. बुध
महर्षि दयानन्द सरस्वती	15 फर. बुध
श्रीवैद्यनाथ जयन्ती	18 फर. शनि
छत्रपति शिवाजी जयं.	19 फर. रवि
श्रीरामकृष्ण परमहंस	21 फर. मंग
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव	28 फर. मंग
श्रीचैतन्य महाप्रभु	7 मार्च मंग
सन्त तुकाराम जी	9 मार्च गुरु
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च गुरु
श्रीझूलेलाल जयन्ती	23 मार्च गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	4 अप्रै. मंग
श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत)	6 अप्रै. गुरु
सती अनुसूइया जयन्ती	10 अप्रै. चंद्र
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. शुक्र
श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	16 अप्रै. रवि
श्रीशुकदेव जयन्ती	20 अप्रै. गुरु
छत्रपति शिवाजी (प्राचीनमतेन)	22 अप्रै. शनि
भगवान् परशुराम जयन्ती	22 अप्रै. शनि
आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य	25 अप्रै. मंग
श्रीसूरदास जयन्ती	25 अप्रै. मंग
श्री रामानुजाचार्य जयं.	26 अप्रै. बुध
श्रीगङ्गा-जयन्ती	26 अप्रै. बुध
महात्मा बुद्ध	5 मई शुक्र
श्रीनारद-जयन्ती	7 मई रवि
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई रवि
श्रीमहाराणा प्रताप	22 मई सोम
सन्त कबीर जयन्ती	4 जून रवि
महाकवि कालीदास जयंती	19 जून चंद्र
श्रीध्यानू भगत	24 जून शनि
ऋषि वेदव्यास जयन्ती	3 जुला. चंद्र
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. रवि
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. मंग
गोस्वामी तुलसीदास जी	23 अग. बुध
सन्त ज्ञानेश्वर जयन्ती	7 सितं. गुरु
भक्त नवल (जोधपुर)	7 सितं. गुरु
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. शुक्र
श्री दधीची जयन्ती	23 सितं. शनि
श्रीचन्द महाराज (उदासीन)	24 सितं. रवि
महात्मा गांधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. चंद्र
श्रीकात्यायनी जयन्ती	13 अक्तू. शुक्र
महाराजा अग्रसेन	15 अक्तू. रवि
स्वामी रामतीर्थ जयन्ती	22 अक्तू. रवि
श्रीमाधवाचार्य जी	24 अक्तू. मंग
श्रीधनवन्तरी जयन्ती	11 नवं. शनि
श्रीहनुमान जयं. (उ. भारत)	11 नवं. शनि
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. चंद्र
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. शुक्र
श्रीसत्यसाईं बाबा जयन्ती	23 नवं. गुरु
श्री गुरु नानकदेव जी	27 नवं. चंद्र
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. रवि
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	26 दिसं. मंग
शहीद सः ऊधम सिंह जयं.	26 दिसं. मंग

(सन् 2024 ई.)

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. शुक्र
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. मंग
लाला लाजपतराय जयंती	28 जन. रवि
स्वा. विवेकानन्द (प्राचीनमतेन)	2 फर. शुक्र
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	2 फर. शुक्र
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	11 फर. रवि
श्रीगुरु रविदास जी	24 फर. शनि
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरणोत्सव	28 फर. बुध
महर्षि दयानन्द सरस्वती	5 मार्च मंग
समर्थ गुरु रामदास जी	5 मार्च मंग
श्रीवैद्यनाथ जयन्ती	8 मार्च शुक्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	12 मार्च मंग
शहीदी सः भगत सिंह जी	23 मार्च शनि
श्री चैतन्य महाप्रभु	25 मार्च चंद्र
सन्त तुकाराम जी	27 मार्च बुध

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के पर्व–2023 ई.

बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती	23 जन. चंद्र
वसंतपंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	26 जन. गुरु
होलिका-दहन	6 मार्च चंद्र
श्रीरामनवमी पर्व	30 मार्च गुरु
महंत श्रीनारायणदास जयं.	30 मई मंग
व्यास-पूजा पर्व	3 जुला. चंद्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	7 सितं. गुरु
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. बुध
दीपावली पर्व	12 नवं. रवि

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश के मुख्य मेले–सन् 2023 ई.

ऊँट उत्सव (बीकानेर, राज.)	12–13 जन.
मरोज पर्व (जौनसार, उत्तराखण्ड)	12 जन.
मेला लोहड़ी (पं., हरि., जम्मू आदि)	13 जन.
मेला दाऊँ (मोहाली, पं.)	13–14 जन.
बिन्दरख (रोपड़, पंजाब)	14 जन.
मेला मौनी अमावस (हरिद्वार, प्रयागराजादि)	21 जन.
मेला वसन्त पंचमी	26 जन.
मेला पशु–नागौर (राजस्थान)	27–30 जन.
मेला जैसलमेर (राजस्थान)	3–5 फर.
जयन्ती–देवी (चण्डीगढ़)	4–5 फर.
माघी पूर्णिमा (प्रयागराज, उ.प्र.)	5 फर.
मेला श्रीमहाशिवरात्रि	18 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल, उ.खण्ड)	18 फर.
मेला फूलेरा–दूज (मथुरा, उ.प्र.)	21 फर.
मे. बाबा–मस्तनाथ (अस्थल बोहर, रोहतक, हरि.)	26–28 फर.
होलियां–होलाष्टक (उ.प्र.)	27 फ.–7 मार्च
मेला श्रीखाटू श्याम जी	3–4 मार्च
मेला सावातिल्ला	5 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा., पं.)	8 मार्च
मेला नवचण्डी (मेरठ, उ.प्र.) प्रा.	12 मार्च
मेला गुरु रामराय (देहरादून, उ.खण्ड)	12 मार्च
मेला वीरमदास (बधौछी, पटि., पं.)	14 मार्च
मेला शीतलामाता शुरु (सर्वत्र)	14–15 मार्च
मे. पृथूदक (पिहोवातीर्थ, हरियाणा)	20 मार्च
मेला हथीरा (थानेसर, कुरुक्षेत्र, हरि.)	20–30 मार्च
मेला चीमा (नानकसर, पंजाव)	22 मार्च
मेला झंडेवाला (करोलबाग, दिल्ली)	22–30 मार्च
मेला नवरात्रे–मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	22–30 मार्च

मेला कालका जी (दिल्ली)	22–30 मार्च
गणगौरी तृतीया (जयपुर, राजस्थान)	24 मार्च
मेला माईसरखाना (बठिण्डा, पं.)	27 मार्च
मे. नरीसैंभरी (मथुरा, उ. प्र.)	29 मार्च
मे. रामनवमी (जालन्धर, पं.)	30 मार्च
भण्डा. सं. प्रीतमदास (जालन्धर, पं.)	30 मार्च
वैशाख मेला, श्रीलक्ष्मण चौंतरा–हाँसी (हरियाणा)	4–14 अप्रै.
मेला कांसादेवी (चण्डीगढ़)	5–6 अप्रै.
देवी–मेला (हथीहरा, कुरुक्षेत्र हरि.)	5 अप्रै.
मेला वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाज़िल्का, पं.)	14 अप्रै.
मे. वैशाखी–गंगभेवा (बावड़ी) ढकरानी, देहरादून, उत्तराखण्ड	14–19 अप्रै.
मेला ठाणा डांडा, नागी––बागीधार (उत्तराखण्ड)	17 अप्रै.
मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा)	20 अप्रै.
मे. गंगा–सप्तमी (हरिद्वार)	26 अप्रै.
मेला चकराता (देहरादून, उ.खण्ड)	3 मई
मे. भद्रकाली (कपूरथला, पंजाब)	15 मई
जोड़ मेला–संत खुशीराम जी गाँव–भरोमज़ारा, नवांशहर, पंजाब	23–24 मई
साईं टेऊंराम पुण्यतिथि (हरिद्वार)	25 मई
मे. गङ्गा–दशहरा (हरिद्वार)	30 मई
मेला जखोली (उत्तराखण्ड)	3 जून
यज्ञ ओमदरबार, नन्दाचौर, होशियारपुर, पं.	6–8 जून
मेला शीलावन्ती जी (भवानी, पठानकोट, पंजा.)	16 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी, उड़ीसा)	20 जून
साईं टेऊंराम जयन्ती, सप्तसरोवर, भूपतवाला रोड, हरिद्वार, उ. खण्ड	23 जून
गुरु पूर्णिमा उत्सव	3 जुला.
मेला काहनूवाल (गुरदासपुर, पंजाब)	3 जुला.
मेला नाग–पंचमी (राजस्थान)	7 जुला.

मेला पं. जोगराज (बंडियाला, पंजाब)	16–17 जुला.
मे. नुणाई (जौनसार बावर, उ.खण्ड)	4 अग.
मेला सिंघारा तीज (पंजाब)	19 अग.
मेला गौरी–तीज (जयपुर, राज.)	19 अग.
जोड़ मेला सन्त मेलाराम जी (गाँव–भरोमजारा राणुआं, नवांशहर पं.)	28–29 अग.
मेला जयन्ती–देवी (मुल्लापुर–गरीबदास, चण्डीगढ़)	30–31 अग.
मेला बग्गी–देहरी (कण्डेलालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	31 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा, उ.प्र.)	7 सितं.
गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर, पंजाब)	8 सितं.
मे. गोगामेड़ी (श्रीगंगानगर, राज.)	8 सितं.
मेला बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	14 सितं.
रानी सती मेला (झुंझुनूं, राजस्थान)	14 सितं.
मेला श्रीगोसाईंआणा (कुराली, पं.)	17 सितं.
मेला महासू देवता (ढुंगरा, जागड़ा, जौनसार, उ.खण्ड)	19 सितं.
मेला रामदेव रोणेचा (जोधपुर, राज.)	25 सितं.
मेला वामन–द्वादशी (अम्बाला, हरि.)	26 सितं.
मे. छपार (मलेरकोटला, पं.)	27–30 सितं.
मेला बाबा सोढल (जालन्धर, पंजाब)	28 सितं.
मे. गोईंदवाल सा. (तरनतारन, पं.)	29 सितं.
मेला गुग्गापीर (लुधियाना, पं.)	29 सितं.
तपा बाबा गोपीचन्द जी–(राहों, नवांशहर, पं.)	7–9 अक्तू.
देवीमेला (हथीरा, थानेसर, हरि.)	13–23 अक्तू.
मेला आशापूर्णी (पठानकोट, पं.)	15–23 अक्तू.
मे. अगरोहाधाम (हरियाणा)	15–23 अक्तू.
मे. पुष्करतीर्थ (राजस्थान)	20–27 नवं.
मे. अचलेश्वर (बटाला, पं.)	22–23 नवं.
मे. वीर–वैरागी (नकोदर, पंजाब)	25 नवं.

मे. बग्गी–देहरी (कण्डे––लालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	26–27 नवं.
मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब)	27 नवं.
मे. कपालमोचन (जगाधरी, हरि.)	27 नवं.
भण्डारा सन्त प्रीतमदास (जालन्धर, पं.)	30 नवं.
वार्षिक महायज्ञ श्रीओमदरबार (नन्दाचौरधाम, होशियारपुर, पं.)	2–4 दिसं.
पुरानी दीपावली (जौनसार, जौनपुर, उ. खण्ड)	12 दिसं.
सिद्ध बाबा कैलाशनाथ जयंती (बस्तीशेखरोड, जालन्धर, पंजाब)	14 दिसं.
कुरुक्षेत्र गीता महोत्सव (हरियाणा)	21–23 दिसं.
मेला जोड़ (फतेहगढ़ साहिब, पं.)शुरु	26 दिसं.

श्री बदरीनाथ धाम के मुख्य उत्सव (2023–24 ई.)

श्रीबदरीनाथ–कपाट खुलने की तिथि–निर्धारण	26 जन. गुरु
श्रीबदरी यात्रा प्रारंभ	22 अप्रै. शनि
श्रीगङ्गा–दशहरा	30 मई मंग
घण्टाकर्ण उत्सव	15 जून गुरु
गुरु पूर्णिमा	3 जुला. चंद्र
नर–नारायण जयंती	21 अग. चंद्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व	6–7 सितं.
नन्दा–अष्टमी	23 सितं. शनि
माता–मूर्त्ति उत्सव	26 सितं. मंग
नारद–उत्सव	27 सितं. बुध
पितृ–श्राद्ध पर्व	29 सितं.–14 अक्तू.
श्रीबदरीनाथ के कपाट बन्द करने की तिथि	24 अक्तू. मंग
श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि निर्धारण	14 फर. (24 ई.)

हिमाचल प्रदेश के मेले व उत्सव (सन् 2023–24 ई.)

श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
मे. श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	26 जन.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	18–26 फर.
मेला काठगढ़	18 फर.
मे. रिवालसर (मण्डी)	18 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	18–20 फर.
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	19 फर.
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	27 फर.–7 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	7–11 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	8 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17–22 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22–29 मार्च
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	22–30 मार्च
मे. बालासुन्दरी (सिरमौर)	22 मा.–6 अप्रै.
मे. ललवाड़ (सुन्दरनगर)	24–29 मार्च
मे. लाहौल (मण्डी)	28 मार्च
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.–3 अप्रै.
मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी)	29 मार्च
मेला रोहरू (महासू)	1–2 अप्रै.
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5–9 अप्रै.
मे. चचौहली (जगतसुख, कुल्लू)	11–13 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12–16 अप्रै.
मेला नैनादेवी (धर्मपुर, बनवार)	13 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, काँगड़ा)	14 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	14–16 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	14 अप्रै.
मेला बिशू (सिरमौर) प्रारम्भ	14 अप्रै.
मे. हुरला (वारी, कुल्लू)	16–17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	17–18 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	20–21 अप्रै.
मे. माहूनाग (करसोग)	24–25 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28–30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मे. मनीकरण (कुल्लू)	30 अप्रै.–5 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7–9 मई
मे. नारकण्डा (बिलासपुर)	11–13 मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	13 मई
मेला बंजार (कुल्लू)	14–18 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	15 मई
मे. डुंगरी जातर (मनाली)	15–16 मई
पशु-मेला (हमीरपुर) शुरु	15 मई
मे. शाढ़ी जातर (नगर)	18–23 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	22 मई
मे. धारावाले सूढ़देवता (सेरीघाट, कण्डाघाट, सोलन)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	23–25 मई
मे. लगदेवी (हमीरपुर)	23 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	25–26 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	26–28 मई
मे. ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	30–31 मई
मे. पीपलू (हमीरपुर)	31 मई
मे. स्थूल मढोल	1–4 जून
मेला बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	15 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15–17 जून
मेला उहल (हमीरपुर)	15 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	15 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	16–18 जून
मे. टौणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	9 जुला.
वन महोत्सव प्रारम्भ	10 जुला.
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला
मे. सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	16 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा)	23 जुला
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	17–24 अग.
मेला चामुण्डादेवी	17–24 अग.
मे. सन्तोषी माता (लदरौर)	17 अग.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	17–24 अग.
श्रीदेवता खुड्डी जल, गाँव-देहूरी, आनी, जिला-कुल्लू	31 अ–7 सितं.
मेला गुग्गा-नवमी (बिलासपुर)	8 सितं.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	8 सितं.
मे. अम्बिकादेवी (सदर, मण्डी)	13 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	17 सितं.
मे. सायर (अर्की)	17 सितं.
हिमाचल गणेश-उत्सव अम्बिकानगर, अम्ब (ऊना)	18–28 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	18–28 सितं.
मे. महासू (शिलाई, सिरमौर)	19–20 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) शुरु	21 सितं.
मे. गुग्गामाड़ी (सुबाथू, सोलन)	23–25 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	26 सितं.
मेला चामुण्डादेवी (कांगड़ा)	15–23 अक्तू.
मेला बगुलामुखी (वनखण्डी)	15–24 अक्तू.
मेला रामलीला	15–23 अक्तू.
मेला तारादेवी (शिमला)	22–24 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	22–23 अक्तू.
मे. शीतलामाता (मच्छिभवन, कांगड़ा)	22 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	24 अक्तू.
मेला दशहरा (कुल्लू)	24–28 अक्तू.
मेला काली-बाड़ी (शिमला)	11–12 नवं.
मेला रेणुका (नाहन, सिरमौर)	23–24 नवं.
मे. बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	23–27 नवं.
मे. जोगी पांगा (ऊना)	27 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई, सिरमौर)	12–15 दिसं.

(सन् 2024 ई०)

मे. ब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	14 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	8–16 मार्च
मेला काठगढ़	8 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	8 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	8–10 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	9 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17–22 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	17–25 मार्च
मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22–29 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	25–28 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	26 मार्च

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	28 जन.
मे. शिवरात्रि (पंचवटी, दवलैहड़, जम्मू)	18 फर.
देविका स्नान (ऊधमपुर)	18 फर.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	19–20 मार्च
मेला गुप्तगंगा (कफी, अखनूर)	20 मार्च
नवरात्र-पर्व (वैष्णोदेवी)	22–30 मार्च
मे. वैशाखी-हरिमन्दिर -चक रामचन्द, साम्बा	14 अप्रै.
सतगुरु बावा कांशीगिरी जी महाराज (सुन्दरवनी)	14 अप्रै.
देविका-स्नान (ऊधमपुर)	14 अप्रै.
नृसिंह चौदश	4 मई
मेला मानसर (जम्मू)	25–26 मई
मे. क्षीर (खीर) भवानी (तलमुल)	28 मई
सपोरयात्रा (धारलदा, ऊधमपुर)	30 मई
मे. शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	4 जून
वानसुल देवता (चब्वा, रामबन)	21–28 जून
सरथलदेवी यात्रा (किश्तवाड़)	26 जून
मेला शरीक-भवानी	27 जून
मेला हरिप्रयाग (बनी)	29 जून
मेला चमलियाल	29 जून
मेला ज्वालामुखी	2 जुला
मेला रुद्रगंगा (चंद्रेणीदेसा, डोडा)	3 जुला.
श्रावण शिवरात्रि (गाँव चलाई, शिवपुरी, राजगढ़, रामबन)	15 जुला.
मेला नागपंचमी (कास्तीगढ़, डोडा)	21 अग.
शोपियान यात्रा शुरु	28 अग.
यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त	31 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	31 अग.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	6 सितं.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	12–13 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	20–22 सितं.
मेला आशापति (मार्तण्ड)	13–14 अक्तू.
मेला झिड़ी बाबा	27 नवं.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	11 दिसं.
मे. वानसुल देवता (चब्वा, रामबन)	22–29 दिसं.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

मेरू त्रयोदशी	20 जन. शुक्र
मर्यादा महोत्सव	28 जन. शनि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	5-7 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	14 मार्च मंग
वरसी तप प्रारम्भ	15 मार्च बुध
ओली तप प्रारम्भ	28 मार्च मंग
आचार्यभिक्षु अभिनिष्क्रमण	30 मार्च गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	4 अप्रै. मंग
ओली तप समाप्त	6 अप्रै. गुरु
वरसी तप समाप्त	23 अप्रै. रवि
केवलज्ञान दिवस	30 अप्रै. रवि
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिन्द)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम शुरु	3 जुला. चंद्र
तेरापन्थ स्थापना दिवस	3 जुला. चंद्र
जैन महोत्सव	15-17 जुला.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	13 सितं. बुध
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमीपक्ष)	20 सितं. बुध
श्रीकालू निर्वाण दिवस	21 सितं. गुरु
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	24 सितं. रवि
आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस	27 सितं. बुध
श्रीमहावीर निर्वाण	13 नवं. चंद्र
श्रीवीर संवत् 2550 शुरु	14 नवं. मंग
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	15 नवं. बुध
ज्ञान पंचमी	18 नवं. शनि
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	27 नवं. चंद्र
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	7 दिसं. गुरु
मौनी एकादशी	23 दिसं. शनि

—(सन् 2024 ई.)—

आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	1 जन. चंद्र
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	6 जन. शनि
मेरू त्रयोदशी	8 फर. गुरु
मर्यादा महोत्सव	16 फर. शुक्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	5-7 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	1 अप्रै. चंद्र
वरसी तप प्रारम्भ	2 अप्रै. मंग

मुस्लिम त्यौहार

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	24-29 जन.
जन्म श्रीहजरत अली	5 फर. रवि
शबे-मिराज	19 फर. रवि
शब-ए-बरात	8 मार्च बुध
रमज़ान (रोज़े शुरु)	24 मार्च शुक्र
शहादत-ए-हजरत अली	13 अप्रै. गुरु
शबे-कदर	19 अप्रै. बुध
जमातुल-विदा	21 अप्रै. शुक्र
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	22 अप्रै. शनि
ईदुलजुहा (बकरीद)	29 जून गुरु
मुहर्रम (हिजरी 1445 शुरु)	20 जुला. गुरु
मुहर्रम (ताजिया)	29 जुला. शनि
चेहलुम	6 सितं. बुध
आखिरी-चहार शम्बा	13 सितं. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	15 सितं. शुक्र
ईद-ए-मिलाद	28 सितं. गुरु
ईद-ए-मौलाद	3 अक्तू. मंग
ग्यारहवीं शरीफ़ (फतिहायज़्दहुम)	27 अक्तू. शुक्र

—(सन् 2024 ई.)—

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	14-19 जन.
जन्म श्रीहजरत अली	26 जन. शुक्र
शबे-मिराज*	9 फर. शुक्र
शब-ए-बरात	26 फर. चंद्र
रमज़ान (रोज़े शुरु)	12 मार्च मंग
शहादत-ए-हज़रतअली	1 अप्रै. चंद्र
जमातुलविदा	5 अप्रै. शुक्र
शबे-कदर	7 अप्रै. रवि

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) की तारीख में अन्तर आ जाने से मुस्लिम त्यौहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. रवि
पाम सण्डे	2 अप्रै. रवि
गुड फ्राइडे	7 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	9 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	14 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. चंद्र
नववर्ष प्रारम्भ (2024 ई.)	1 जन. चंद्र
गुड फ्राइडे	29 मार्च शुक्र

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2023-24 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार की गज़ट-सूची से अवश्य मिला लें।)

मकर संक्रान्ति	14 जन. श.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. बु.
वसन्त-पञ्चमी	26 जन. गु.
गणतन्त्र दिवस (74वाँ)	26 जन. गु.
जन्म श्रीहजरत अली	5 फर. र.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	5 फर. र.
महर्षि दयानन्द जयन्ती	15 फर. बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर. श.
होली पर्व	7 मार्च मं.
होला (पंजाब)	8 मार्च बु.
श्रीरामनवमी	30 मार्च गु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	4 अप्रै. मं.
गुड फ्राइडे	7 अप्रै. शु.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै. शु.
डॉ. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. शु.
हिमाचल प्रदेश डे	15 अप्रै. श.
जमातुलविदा (ज.का.)	21 अप्रै. शु.
भगवान् परशुराम जयं.	22 अप्रै. श.
ईदुलफितर	22 अप्रै. श.
श्रम-दिवस	1 मई चं.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	5 मई शु.
महाराणा प्रताप जयन्ती	22 मई चं.
सन्त कबीर जयन्ती	4 जून र.
रथयात्रा (पुरी, उड़ीसा)	20 जून मं.
ईदुलजुहा (बकरीद)	29 जून गु.
महा. रणजीत सिंह पुण्यतिथि	29 जून गु.
मुहर्रम (ताजिया)	29 जुला. श.
शही. स. ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. चं.
स्वतन्त्रता दिवस (77वाँ)	15 अग. मं.
रक्षा बन्धन	30 अग. बु.
शिक्षक-दिवस	5 सितं. मं.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (वै.)	7 सितं. गु.
सिद्धि विनायक व्रत (महाराष्ट्र)	19 सितं. मं.
बाबा श्रीचन्द जयन्ती (पं.)	24 सितं. र.
शहीदी भगत सिंह जयं. (पं.)	28 सितं. गु.
ईद-ए-मिलाद (ज.का.)	28 सितं. गु.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. चं.
महाराजा अग्रसेन जयन्ती	15 अक्तू. र.
विजयादशमी	24 अक्तू. मं.
महर्षि श्रीवाल्मीकि जयं.	28 अक्तू. श.
दीपावली	12 नवं. र.
श्रीविश्वकर्मा दिवस (पं.)	13 नवं. चं.
भाई-दूज	15 नवं. बु.
श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती	27 नवं. चं.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. चं.

(सन् 2024 ई.)

मकर संक्रान्ति	14 जन. र.
श्रीगुरुगोबिन्द सिंह जयं.	17 जन. बु.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. गु.
गणतन्त्र दिवस (75वाँ)	26 जन. शु.
जन्म श्रीहजरत अली	26 जन. शु.
वसन्त-पंचमी	14 फर. बु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	24 फर. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च शु.
होली पर्व	25 मार्च चं.
होला (पंजाब)	26 मार्च मं.

सिक्ख गुरुपर्व (सन् 2023-24 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार) जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	27 नवं.	जन्म से	9 अक्तू.
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	21 अप्रै.	3 अक्तू.	25 मार्च
3. श्रीगुरु अमरदास जी	4 मई	22 मार्च	29 सितं.
4. श्रीगुरु रामदास जी	30 अक्तू.	27 सितं.	18 सितं.
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	12 अप्रै.	17 सितं.	23 मई
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	5 जून	13 मई	26 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	3 फर., 23 ई. / 22 फर. 24 ई.	19 मार्च, 23 ई. / 7 अप्रै., 24 ई.	6 नवं.
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	11 जुला.	6 नवं.	5 अप्रै.
9. श्रीगुरु तेग़ बहादुर जी	11 अप्रै.	4 अप्रै.	17 दिसं.
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	17 जन.(24)	15 दिसं.	18 नवं.

I. श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश = 16 सितं. 2023 ई.
II. गुरयाई—श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी = 15 नवं., 2023 ई.
III. खालसा पंथ साजना दिवस = 14 अप्रैल, 2023 ई.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2023 ई.

स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	26 जन. गु.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	10 मार्च शु.
श्रीअद्वैत-जयन्ती	30 मार्च गु.
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	8 अप्रै. श.
स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	21 अप्रै. शु.
निर्वाण स्व. अद्वैतानन्द जी	30 जून. शु.
गुरु प्रेमानन्द जी जयन्ती	3 जुला. चं.
निर्वाण गुरु प्रेमानन्द जी	20 अग. र.

'विवाह'

मातृपक्ष से पाँचवी पीढ़ी तक और पितृपक्ष से सातवीं पीढ़ी तक जिस कन्या का सम्बन्ध न हो, उसी से पुरुष को विवाह करना चाहिए। —विष्णुपुराण

वि. संवत् २०८० में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–'बुध' **वर्ष का मन्त्री–'शुक्र'**

- वि. संवत् (नल/पिंगल) २०८० का शुभारम्भ = 22 मार्च, बुधवार, 2023 ई.
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,124 वर्ष
- सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,124 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,876 वर्ष
- २०८० में कलि वर्ष = 5124वां वर्ष (22 अगस्त, मंगलवार, 2023 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5259 प्रा. (7 सितंबर, गुरुवार, 2023 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5099 प्रारम्भ = 22 मार्च, बुधवार, 2023 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2647 प्रा. = 5 मई, शुक्रवार, 2023 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2550 प्रा. = 13 नवं. सोमवार, 2023 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2024 प्रारम्भ = 1 जनवरी, सोमवार, 2024 ई.
- (i) शाका संवत् 1945 प्रारम्भ = 22 मार्च, बुधवार, 2023 ई.
  (ii) शाका संवत् 1946 प्रारम्भ = 21 मार्च, गुरुवार, 2024 ई.
- हिजरी सन् 1445 (मुस्लिम) प्रा. = 20 जुलाई, गुरुवार, 2023 ई.
- बंगाली सन् 1430 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, शुक्रवार, 2023 ई.
- नानकशाही संवत् 556 प्रारम्भ = 14 मार्च, गुरुवार, 2024 ई.
- खालसा संवत् 325 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, शुक्रवार, 2023 ई.
- जय हिन्द संवत् 77वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, मंगलवार, 2023 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 148वाँ = 22 मार्च, बुधवार, 2023 ई.

सन् 2023–24 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

(मास) 2023–24↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य–नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	2, 18	4, 19	6	6	10	21
फरवरी	13 (फाल्गु.)	1, 17(वै.)	3, 18	5	5	9	20
मार्च	14 (चैत्र)	3, 18	4, 19	6	7	11	21
अप्रैल	14 (वैशा.)	2(वै.),16	3, 17	5	6	9	20
मई	15 (ज्येष्ठ)	1,15,31	3, 17	5	5	8	19
जून	15 (आषा.)	14, 29	1, 15	3	4	7	18
जुलाई	16 (श्राव.)	13, 29	1,15,30	2	3	6	17
अगस्त	17 (भाद्र.)	12, 27	13, 28	1, 30	1, 31	4	16
सितम्बर	17 (आश्वि.)	10,26(वै.)	12, 27	28	29	3	14
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	10, 25	12, 26	28	28	2	14
नवम्बर	16 (मार्ग.)	9, 23	10, 24	26	27	1, 30	13
दिसम्बर	16 (पौष)	8, 23(वै.)	10, 24	26	26	30	12
जनवरी(24)	14 (माघ)	7, 21	9, 23	25	25	29	11
फरवरी(24)	13 (फाल्गु.)	6, 20	7, 21	23	24	28	9
मार्च (24)	14 (चैत्र)	7, 20	8, 22	24	25	28	10
अप्रै. (24)	----	5	6	–	–	–	8

आगामी वि. संवत् २०८१ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2024-25 ई.)

चैत्र नवरात्र शुरु	9 अप्रै. मं.
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. श.
श्रीदुर्गाष्टमी	16 अप्रै. मं.
श्रीरामनवमी	17 अप्रै. बु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	21 अप्रै. र.
अक्षय-तृतीया	10 मई शु.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	23 मई गु.
श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व	16 जून र.
गुरु-पूर्णिमा	21 जुला. र.
दुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी)	13 अग. मं.
रक्षा-बन्धन	19 अग. चं.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत	26 अग. चं.
सिद्धि विनायक व्रत	7 सितं. श.
श्राद्ध प्रारम्भ	18 सितं. बु.
श्राद्ध समाप्त	2 अक्तू. बु.
शरद् नवरात्र प्रारम्भ	3 अक्तू. गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	11 अक्तू. शु.
विजयादशमी	12 अक्तू. श.
शरद् पूर्णिमा व्रत	16 अक्तू. बु.
करवा-चौथ व्रत	20 अक्तू. र.
दीपावली	1 नवं. शु.
भाई-दूज	3 नवं. र.
श्रीगुरु नानक जयं.	15 नवं. शु.
श्रीगीता-जयन्ती	11 दिसं. बु.

(सन् 2025 ई.)

मकर संक्रान्ति	14 जन. मं.
माघ(मौनी)अमावस	29 जन. मं.
वसन्त पंचमी	2 फर. र.
श्रीगुरु रविदास जयं.	12 फर. बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	26 फर. बु.
होलिका दहन	13 मार्च गु.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०८० वि.

(1 जनवरी, सन् 2023 ई. से 8 अप्रैल, 2024 ई. तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी '**सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग**' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। मूल्य 100/- रु.
पता—जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रारम्भ काल				समाप्ति काल			
ता. मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता. मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
30दिसं.(22)	रेवती	11	24	1 जन.	अश्विनी	12	48
9 जन.	आश्लेषा	6	05	11 जन.	मघा	11	50
18 जन.	ज्येष्ठा	17	23	20 जन.	मूल	12	40
26 जन.	रेवती	18	57	28 जन.	अश्विनी	19	06
5 फर.	आश्लेषा	12	13	7 फर.	मघा	17	45
15 फर.	ज्येष्ठा	2	02	16 फर.	मूल	22	53
23 फर.	रेवती	4	50	25 फर.	अश्विनी	3	27
4 मार्च	आश्लेषा	18	41	7 मार्च	मघा	0	05
14 मार्च	ज्येष्ठा	18	13	16 मार्च	मूल	6	24
22 मार्च	रेवती	15	32	24 मार्च	अश्विनी	13	22
1 अप्रैल	आश्लेषा	1	57	3 अप्रैल	मघा	7	24
10 अप्रैल	ज्येष्ठा	13	39	12 अप्रैल	मूल	11	59
19 अप्रैल	रेवती	1	01	20 अप्रैल	अश्विनी	23	11
28 अप्रैल	आश्लेषा	9	53	30 अप्रैल	मघा	15	30
7 मई	ज्येष्ठा	20	21	9 मई	मूल	17	45
16 मई	रेवती	8	15	18 मई	अश्विनी	7	23
25 मई	आश्लेषा	17	54	27 मई	मघा	23	43
4 जून	ज्येष्ठा	5	04	6 जून	मूल	1	23
12 जून	रेवती	13	50	14 जून	अश्विनी	13	40
22 जून	आश्लेषा	1	21	24 जून	मघा	7	18
1 जुला.	ज्येष्ठा	15	04	3 जुला.	मूल	11	02
9 जुला.	रेवती	19	30	11 जुला.	अश्विनी	19	05
19 जुला.	आश्लेषा	7	58	21 जुला.	मघा	13	58
29 जुला.	ज्येष्ठा	0	55	30 जुला.	मूल	21	33
6 अग.	रेवती	2	54	8 अग.	अश्विनी	1	16
15 अग.	आश्लेषा	13	59	17 अग.	मघा	19	58
25 अग.	ज्येष्ठा	9	14	27 अग.	मूल	7	16

प्रारम्भ काल				समाप्ति काल			
ता. मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता. मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
2 सितं.	रेवती	12	31	4 सितं.	अश्विनी	9	27
11 सितं.	आश्लेषा	20	01	14 सितं.	मघा	2	01
21 सितं.	ज्येष्ठा	15	35	23 सितं.	मूल	14	56
29 सितं.	रेवती	23	18	1 अक्तू.	अश्विनी	19	28
9 अक्तू.	आश्लेषा	2	45	11 अक्तू.	मघा	8	45
18 अक्तू.	ज्येष्ठा	21	01	20 अक्तू.	मूल	20	41
27 अक्तू.	रेवती	9	25	29 अक्तू.	अश्विनी	5	54
5 नवं.	आश्लेषा	10	29	7 नवं.	मघा	16	24
15 नवं.	ज्येष्ठा	3	24	17 नवं.	मूल	2	17
23 नवं.	रेवती	17	16	25 नवं.	अश्विनी	14	56
2 दिसं.	आश्लेषा	18	54	5 दिसं.	मघा	0	35
12 दिसं.	ज्येष्ठा	11	57	14 दिसं.	मूल	9	47
20 दिसं.	रेवती	22	58	22 दिसं.	अश्विनी	21	36
30 दिसं.	आश्लेषा	3	10	1 जन.(24)	मघा	8	36
(सन् 2024 ई.)							
8 जन.	ज्येष्ठा	22	03	10 जन.	मूल	19	40
17 जन.	रेवती	4	38	19 जन.	अश्विनी	2	58
26 जन.	आश्लेषा	10	28	28 जन.	मघा	15	53
5 फर.	ज्येष्ठा	7	54	7 फर.	मूल	6	27
13 फर.	रेवती	12	36	15 फर.	अश्विनी	9	26
22 फर.	आश्लेषा	16	43	24 फर.	मघा	22	21
3 मार्च	ज्येष्ठा	15	55	5 मार्च	मूल	16	00
11 मार्च	रेवती	23	03	13 मार्च	अश्विनी	18	25
20 मार्च	आश्लेषा	22	38	23 मार्च	मघा	4	28
30 मार्च	ज्येष्ठा	22	04	1 अप्रैल	मूल	23	12
8 अप्रैल	रेवती	10	13	10 अप्रैल	अश्विनी	5	07

पंचक—आरम्भ एवं समाप्तिकाल

(सन् 2023-24 ई.)

पंचक नक्षत्र (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्त्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
23 जन.	13	51	27 जन.	18	37
20 फर.	1	14	24 फर.	3	44
19 मार्च	11	17	23 मार्च	14	09
15 अप्रैल	18	44	19 अप्रैल	23	53
13 मई	0	18	17 मई	7	39
9 जून	6	02	13 जून	13	33
6 जुला	13	39	10 जुला	18	59
2 अग.	23	26	7 अग.	1	44
30 अग.	10	19	3 सितं.	10	39
26 सितं.	20	28	30 सितं.	21	08
24 अक्तू.	4	23	28 अक्तू.	7	31
20 नवं.	10	08	24 नवं.	16	01
17 दिसं.	15	45	21 दिसं.	22	09
(सन् 2024 ई.)					
13 जन.	23	35	18 जन.	3	34
10 फर.	10	02	14 फर.	10	43
8 मार्च	21	20	12 मार्च	20	30
5 अप्रै.	7	13	9 अप्रै.	7	32

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2080) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल													श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव	कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	9 अप्रै. 2023 ई. घं. मिं.	8 मई 2023 ई. घं. मिं.	7 जून 2023 ई. घं. मिं.	6 जुला. 2023 ई. घं. मिं.	4 अग. 2023 ई. घं. मिं.	3 सितं. 2023 ई. घं. मिं.	2 अक्तू 2023 ई. घं. मिं.	1 नवं. 2023 ई. करवाचौथ	30 नवं. 2023 ई. घं. मिं.	30 दिसं 2023 ई. घं. मिं.	29जन. 2024 ई. संकटचौथ	28 फर 2024 ई. घं. मिं.	28 मार्च 2024 ई. घं. मिं.	6 सितं. घं. मिं.	7 सितं. घं. मिं.	18 सितं चन्द्रास्त	6 अक्तू चन्द्रोदय
अमृतसर	22:19	22:24	23:09	22:27	21:33	21:04	20:09	20:15	19:56	20:40	21:18	21:54	21:44	22:57	23:44	20:16	23:23
अजमेर	22:08	22:10	22:56	22:20	21:30	21:10	20:20	20:32	20:11	20:51	21:22	21:50	21:35	23:12	24:00	20:24	23:39
अम्बाला	22:08	22:11	22:56	22:17	21:23	20:57	20:03	20:11	19:51	20:35	21:11	21:45	21:33	22:52	23:40	20:09	23:19
अहमदाबाद(गु.)	22:09	22:08	22:57	22:23	21:37	21:22	20:35	20:50	20:29	21:06	21:32	21:56	21:37	23:29	24:18	20:36	23:57
अलवर (राज.)	22:02	22:04	22:50	22:13	21:22	21:01	20:10	20:21	20:00	20:41	21:13	21:43	21:28	23:02	23:49	20:14	23:28
आगरा	21:55	21:57	22:43	22:07	21:16	20:55	20:05	20:17	19:56	20:37	21:09	21:37	21:22	22:57	23:44	20:10	23:23
इन्दौर (म.प्र.)	21:55	21:53	22:42	22:09	21:23	21:09	20:23	20:38	20:16	20:53	21:19	21:42	21:23	23:16	24:05	20:23	23:44
ऊना (हि.प्र.)	22:13	22:17	23:01	22:21	21:26	20:58	20:03	20:11	19:50	20:35	21:14	21:48	21:37	22:51	23:40	20:10	23:18
उदयपुर (राज.)	22:08	22:07	22:55	22:21	21:33	21:16	20:27	20:41	20:20	20:59	21:27	21:52	21:35	23:20	24:09	20:30	23:48
ऊधमपुर (का.)	22:21	22:26	23:10	22:28	21:31	21:00	20:04	20:10	19:50	20:37	21:17	21:55	21:45	22:52	23:39	20:13	23:18
उज्जैन	21:56	21:55	22:44	22:10	21:24	21:09	20:22	20:36	20:15	20:52	21:19	21:43	21:24	23:15	24:04	20:23	23:44
कठुआ (ज.का.)	22:19	22:23	23:07	22:25	21:29	21:00	20:04	20:10	19:50	20:36	21:15	21:53	21:42	22:52	23:39	20:12	23:18
कपूरथला	22:16	22:20	23:05	22:24	21:29	21:01	20:07	20:14	19:54	20:39	21:16	21:52	21:41	22:55	23:42	20:14	23:21
करनाल	22:05	22:08	22:54	22:15	21:22	20:56	20:04	20:12	19:52	20:35	21:10	21:43	21:31	22:53	23:41	20:09	23:20
काँगडा(हि.प्र.)	22:15	22:19	23:03	22:22	21:26	20:57	20:02	20:08	19:48	20:34	21:12	21:49	21:39	22:50	23:37	20:09	23:16
कानपुर	21:44	21:45	22:32	21:56	21:07	20:47	19:56	20:08	19:47	20:28	20:59	21:28	21:12	22:49	23:38	20:01	23:16
कैथल (हरि.)	22:08	22:11	22:57	22:18	21:25	20:59	20:06	20:15	19:55	20:38	21:13	21:46	21:35	22:55	23:44	20:12	23:22
कुल्लू (हि.प्र.)	22:11	22:15	23:00	22:19	21:23	20:55	19:59	20:06	19:45	20:30	21:10	21:45	21:36	22:46	23:34	20:06	23:12
कुराली (पं.)	22:10	22:14	22:59	22:18	21:24	20:57	20:03	20:11	19:51	20:35	21:12	21:47	21:35	22:52	23:40	20:10	23:18
कुरुक्षेत्र	22:07	22:11	22:56	22:16	21:23	20:57	20:04	20:12	19:52	20:36	21:11	21:45	21:33	22:54	23:41	20:10	23:20
कालका (हरि.)	22:09	22:12	22:57	22:17	21:23	20:56	20:02	20:09	19:49	20:33	21:10	21:45	21:33	22:51	23:39	20:08	23:17
करसोग (हि.प्र.)	22:09	22:13	22:57	22:17	21:22	20:54	19:59	20:07	19:46	20:31	21:09	21:45	21:33	22:48	23:36	20:06	23:14
कोलकाता	21:02	21:01	21:50	21:17	20:32	20:18	19:31	19:47	19:24	20:01	20:27	20:50	20:31	22:24	23:14	19:32	22:53
खरड़ (पं.)	22:10	22:13	22:58	22:18	21:25	20:58	20:03	20:11	19:50	20:35	21:12	21:46	21:34	22:52	23:40	20:10	23:18
खन्ना (पं.)	22:11	22:15	23:00	22:20	21:26	20:59	20:05	20:13	19:52	20:37	21:13	21:48	21:36	22:54	23:41	20:11	23:20
गाजियाबाद	22:01	22:03	22:49	22:11	21:19	20:56	20:04	20:14	19:53	20:36	21:09	21:41	21:27	22:54	23:42	20:09	23:21
ग्वालियर	21:52	21:53	22:41	22:05	21:15	20:56	20:06	20:18	19:57	20:37	21:07	21:35	21:20	22:58	23:46	20:09	23:25
गुरदासपुर (पं.)	22:18	22:22	23:08	22:25	21:30	21:00	20:05	20:12	19:51	20:37	21:16	21:53	21:42	22:53	23:40	20:13	23:19
गुरुग्राम	22:02	22:04	22:51	22:13	21:21	20:58	20:06	20:16	19:55	20:38	21:11	21:42	21:28	22:56	23:45	20:11	23:24
चण्डीगढ़	22:09	22:12	22:57	22:17	21:23	20:56	20:02	20:10	19:50	20:34	21:11	21:46	21:34	22:51	23:40	20:09	23:18
चम्बा	22:16	22:21	23:05	22:23	21:28	20:57	20:01	20:07	19:47	20:33	21:13	21:50	21:40	22:49	23:36	20:09	23:15

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2080) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल													श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव	कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	9 अप्रै. 2023 ई. घं. मिं.	8 मई 2023 ई. घं. मिं.	7 जून 2023 ई. घं. मिं.	6 जुला. 2023 ई. घं. मिं.	4 अग. 2023 ई. घं. मिं.	3 सितं. 2023 ई. घं. मिं.	2 अक्तू 2023 ई. घं. मिं.	1 नवं. 2023 ई. करवाचौथ	30 नवं. 2023 ई. घं. मिं.	30 दिसं 2023 ई. घं. मिं.	29जन. 2024 ई. संकटचौथ	28 फर 2024 ई. घं. मिं.	28 मार्च 2024 ई. घं. मिं.	6 सितं. घं. मिं.	7 सितं. घं. मिं.	18 सितं चन्द्रास्त	6 अक्तू चन्द्रोदय
चेन्नई	21:17	21:11	22:04	21:38	21:01	21:00	20:20	20:43	20:21	20:50	21:04	21:16	20:49	23:19	24:11	20:16	23:50
जयपुर (राज.)	22:04	22:05	22:52	22:15	21:25	21:05	20:14	20:26	20:05	20:46	21:17	21:46	21:31	23:06	23:54	20:18	23:33
जम्मू	22:22	22:27	23:11	22:28	21:32	21:02	20:06	20:12	19:51	20:38	21:18	21:56	21:46	22:53	23:40	20:14	23:19
जलालाबाद(पं.)	22:19	22:23	23:08	22:28	21:34	21:07	20:13	20:21	20:01	20:45	21:21	21:56	21:44	23:02	23:50	20:20	23:29
जलगांव(महा.)	21:52	21:50	22:40	22:08	21:24	21:12	20:26	20:43	20:22	20:57	21:21	21:42	21:21	23:21	24:11	20:27	23:50
ज्वाली (हि.प्र.)	22:16	22:20	23:04	22:23	21:27	20:58	20:03	20:09	19:49	20:35	21:13	21:50	21:40	22:50	23:38	20:10	23:16
जालन्धर	22:16	22:19	23:04	22:23	21:29	21:01	20:06	20:14	19:53	20:38	21:16	21:51	21:40	22:55	23:42	:20:13	23:21
जाखल	22:11	22:14	22:59	22:20	21:27	21:01	20:08	20:18	19:57	20:40	21:15	21:49	21:36	22:58	23:46	20:14	23:25
जीन्द (हरि.)	22:08	22:10	22:56	22:17	21:25	21:00	20:07	20:17	19:56	20:39	21:14	21:46	21:33	22:57	23:45	20:13	23:24
जोधपुर (राज.)	22:14	22:15	23:02	22:26	21:36	21:16	20:27	20:39	20:18	20:58	21:29	21:57	21:41	23:19	24:07	20:30	23:46
तलवाड़ा (पं.)	22:16	22:20	23:04	22:23	21:28	20:59	20:04	20:10	19:50	20:36	21:14	21:51	21:40	22:52	23:40	20:11	23:18
टोहाना (हरि.)	22:10	22:13	22:58	22:19	21:26	21:01	20:08	20:17	19:57	20:40	21:15	21:48	21:36	22:58	23:46	20:14	23:25
दिल्ली	22:02	22:04	22:50	22:13	21:21	20:58	20:06	20:16	19:54	20:37	21:10	21:42	21:28	22:55	23:44	20:10	23:23
दीनानगर (पं.)	22:18	22:22	23:07	22:25	21:29	21:00	20:05	20:11	19:51	20:38	21:16	21:53	21:42	22:53	23:40	20:12	23:19
देहरादून	22:03	22:06	22:51	22:12	21:18	20:52	19:58	20:07	19:46	20:30	21:06	21:40	21:29	22:47	23:36	20:05	23:14
धर्मशाला	22:15	22:19	23:03	22:22	21:26	20:56	20:01	20:09	19:47	20:33	21:12	21:49	21:40	22:49	23:36	20:09	2315
धारीवाल (पं.)	22:18	22:22	23:07	22:25	21:30	21:01	20:06	20:13	19:52	20:38	21:16	21:53	21:42	22:54	23:41	20:13	23:20
नंगल (पं.)	22:12	22:16	23:01	22:20	21:25	20:57	20:03	20:11	19:49	20:35	21:12	21:48	21:37	22:51	23:39	20:10	23:17
नादौन (हि.प्र.)	22:13	22:18	23:02	22:21	21:26	20:58	20:02	20:09	19:48	20:34	21:12	21:49	21:38	22:50	23:38	20:09	23:16
नाहन (हि.प्र.)	22:06	22:10	22:55	22:15	21:21	20:54	20:01	20:10	19:48	20:33	21:09	21:43	21:31	22:50	23:37	20:07	23:16
नवाशहर (पं.)	22:13	22:16	23:01	22:21	21:26	20:59	20:04	20:13	19:51	20:36	21:13	21:49	21:38	22:53	23:40	20:11	23:19
नालागढ़ (हि.प्र.)	22:10	22:14	22:59	22:18	21:24	20:56	20:02	20:10	19:49	20:34	21:11	21:46	21:35	22:51	23:39	20:09	23:17
नूरपुर (हि.प्र.)	22:17	22:21	23:05	22:24	21:29	20:59	20:03	20:09	19:49	2035	21:14	21:51	21:41	22:51	23:39	20:10	23:16
पठानकोट (पं.)	22:18	22:22	23:06	22:25	21:29	20:59	20:04	20:10	19:50	20:36	21:16	21:53	21:42	22:52	23:40	20:11	23:18
पटियाला (पं.)	22:10	22:13	22:58	22:19	21:26	20:58	20:05	20:13	19:54	20:37	21:14	21:47	21:35	22:54	23:42	20:11	23:21
पंचकूला	22:09	22:12	22:57	22:17	21:23	20:56	20:02	20:10	19:50	20:34	21:12	21:45	21:34	22:51	23:40	20:09	23:18
पटना	21:22	21:22	22:10	21:35	20:46	20:28	19:38	19:51	19:30	20:09	20:39	21:06	20:49	22:30	23:19	19:42	22:58
प्रयागराज	21:35	21:36	22:24	21:48	21:00	20:41	19:52	20:05	19:44	20:23	20:53	21:19	21:03	22:45	23:33	19:55	23:12
पालमपुर(हि.प्र.)	22:14	22:18	23:02	22:21	21:25	20:56	20:01	20:08	19:46	20:33	21:11	21:48	21:38	22:48	23:36	20:08	23:14
पानीपत	22:05	22:08	22:53	22:15	21:22	20:57	20:05	20:15	19:53	20:36	21:12	21:45	21:30	22:54	23:42	20:10	23:21
पूना (महा.)	21:54	21:51	22:41	22:13	21:29	21:21	20:38	20:56	20:35	21:08	21:29	21:46	21:24	23:34	24:24	20:36	24:03

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2080) (भा.स्टै.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल													श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
														स्मार्त	वैष्णव		
	9 अप्रै. 2023 ई. घं. मिं.	8 मई 2023 ई. घं. मिं.	7 जून 2023 ई. घं. मिं.	6 जुला. 2023 ई. घं. मिं.	4 अग. 2023 ई. घं. मिं.	3 सितं. 2023 ई. घं. मिं.	2 अक्तू 2023 ई. घं. मिं.	1 नवं. 2023 ई. करवाचौथ	30 नवं. 2023 ई. घं. मिं.	30 दिसं 2023 ई. घं. मिं.	29जन. 2024 ई. संकटचौथ	28 फर 2024 ई. घं. मिं.	28 मार्च 2024 ई. घं. मिं.	6 सितं. घं. मिं.	7 सितं. घं. मिं.	18 सितं चन्द्रास्त	6 अक्तू चन्द्रोदय
पिहोवा (हरि.)	22:08	22:11	22:56	22:17	21:24	20:58	20:05	20:15	19:53	20:37	21:12	21:46	21:33	22:55	23:43	20:11	23:21
पांओटा साहिब	22:05	22:08	22:53	22:14	21:20	20:53	20:00	20:08	19:48	20:31	21:08	21:42	21:30	22:50	23:37	20:06	23:15
परवाणू(हि.प्र.)	22:09	22:12	22:57	22:18	21:23	20:56	20:02	20:09	19:49	20:33	21:11	21:45	21:33	22:50	23:38	20:08	23:17
फगवाड़ा (पं.)	22:14	22:18	23:03	22:23	21:28	21:00	20:06	20:13	19:52	20:38	21:15	21:50	21:40	22:54	23:41	20:12	23:20
फरीदकोट	22:17	22:21	23:06	22:26	21:32	21:05	20:11	20:19	19:58	20:43	21:19	21:54	21:42	23:00	23:48	20:17	23:26
फरीदाबाद	22:01	22:03	22:49	22:12	21:20	20:57	20:05	20:15	19:54	20:37	21:11	21:41	21:27	22:56	23:44	20:10	23:23
फाज़िल्का	22:20	22:23	23:08	22:28	21:34	21:08	20:14	20:24	20:02	20:46	21:24	21:57	21:45	23:04	23:52	20:21	23:30
फिरोज़पुर	22:19	22:22	23:07	22:27	21:32	21:05	20:11	20:19	19:59	20:43	21:20	21:55	21:43	23:00	23:48	20:18	23:26
फतेहाबाद(हरि.)	22:12	22:14	23:00	22:21	21:29	21:03	20:11	20:20	19:59	20:42	21:17	21:50	21:38	23:00	23:48	20:16	23:27
बरनाला(पं.)	22:13	22:16	23:02	22:22	21:28	21:02	20:08	20:17	19:56	20:40	21:16	21:50	21:38	22:57	23:45	20:15	23:24
बीकानेर (राज.)	22:17	22:19	23:05	22:27	21:36	21:14	20:22	20:34	20:12	20:54	21:27	21:57	21:43	23:13	24:01	20:27	23:40
बनीखेत(हि.प्र.)	22:17	22:22	23:06	22:24	21:28	20:57	20:02	20:09	19:47	20:34	21:14	21:51	21:41	22:49	23:36	20:10	23:15
बरेली (उ.प्र.)	21:53	21:54	22:40	22:03	21:11	20:48	19:56	20:08	19:46	20:28	21:02	21:32	21:18	22:47	23:25	20:01	23:14
बैजनाथ(हि.प्र.)	22:13	22:17	23:01	22:20	21:25	20:55	20:00	20:07	19:46	20:32	21:12	21:48	21:38	22:48	23:35	20:08	23:14
बिलासपुर(हि.प्र.)	22:11	22:14	22:59	22:18	21:24	20:56	20:01	20:10	19:48	20:33	21:12	21:46	21:36	22:50	23:38	20:08	23:16
बैंगलूरु	21:28	21:22	22:15	21:49	21:12	21:12	20:33	20:55	20:32	21:01	21:16	21:26	21:00	23:32	24:22	20:27	24:01
भटिण्डा	22:15	22:18	23:04	22:24	21:31	21:04	20:11	20:20	19:59	20:43	21:20	21:53	21:40	23:00	23:49	20:17	23:27
मथुरा	21:57	21:59	22:46	22:09	21:18	20:56	20:05	20:16	19:56	20:37	21:09	21:39	21:24	22:56	23:45	20:10	23:24
मण्डी (हि.प्र.)	22:11	22:15	22:59	22:18	21:24	20:56	20:01	20:08	19:46	20:32	21:11	21:46	21:35	22:48	23:36	20:07	23:14
मुकेरियां (पं.)	22:17	22:21	23:05	22:25	21:30	21:00	20:05	20:11	19:52	20:37	21:16	21:52	21:42	22:53	23:41	20:12	23:20
मोहाली (पं.)	22:09	22:13	22:58	22:18	21:25	20:57	20:03	20:12	19:51	20:35	21:12	21:46	21:34	22:52	23:40	20:09	23:18
मेरठ (उ.प्र.)	22:01	22:03	22:50	22:11	21:19	20:55	20:02	20:12	19:51	20:34	21:09	21:41	21:28	22:52	23:40	20:08	23:19
मुम्बई	22:00	21:57	22:47	22:17	21:34	21:25	20:41	21:00	20:38	21:12	21:33	21:51	21:30	23:37	24:27	20:40	24:06
मनाली(हि.प्र.)	22:11	22:16	23:01	22:18	21:23	20:53	19:58	20:05	19:43	20:30	21:09	21:45	21:35	22:46	23:32	20:05	23:11
मुक्तसर (पं.)	22:18	22:21	23:06	22:26	21:33	21:06	20:12	20:21	20:00	20:44	21:20	21:55	21:43	23:01	23:50	20:19	23:28
मोगा(पं.)	22:16	22:19	23:04	22:25	21:31	21:03	20:09	20:18	19:56	20:41	21:18	21:52	21:41	22:58	23:45	20:15	23:25
मलेरकोटला	22:12	22:16	23:01	22:21	21:27	21:00	20:07	20:15	19:54	20:39	21:16	21:49	21:37	22:56	23:44	20:13	23:22
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22:06	22:08	22:54	20:16	21:25	21:02	20:10	20:22	20:00	20:42	21:15	21:46	21:32	23:01	23:49	20:15	23:28
यमुनानगर	22:05	22:09	22:54	22:14	21:21	20:56	20:03	20:11	19:50	20:33	21:10	21:43	21:31	22:52	23:40	20:08	23:19
रिवाड़ी (हरि.)	22:04	22:05	22:52	22:14	21:23	21:00	20:08	20:19	19:58	20:40	21:14	21:45	21:31	23:0	23:48	20:13	23:26

श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत का चंद्रोदय समय एवं कलंक-चतुर्थी का चन्द्रास्त काल

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2080) (भा.स्टैं.टा.)

नगर	श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल													श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		कलंकचौथ चंद्रदर्शन निषेध	श्री महालक्ष्मी व्रत
	9 अप्रै. 2023 ई. घं. मिं.	8 मई 2023 ई. घं. मिं.	7 जून 2023 ई. घं. मिं.	6 जुला. 2023 ई. घं. मिं.	4 अग. 2023 ई. घं. मिं.	3 सितं. 2023 ई. घं. मिं.	2 अक्तू 2023 ई. घं. मिं.	1 नवं. 2023 ई. करवाचौथ	30 नवं. 2023 ई. घं. मिं.	30 दिसं 2023 ई. घं. मिं.	29जन. 2024 ई. संकटचौथ	28 फर 2024 ई. घं. मिं.	28 मार्च 2024 ई. घं. मिं.	स्मार्त 6 सितं. घं. मिं.	वैष्णव 7 सितं. घं. मिं.	18 सितं चन्द्रास्त	6 अक्तू चन्द्रोदय
रोहतक(हरि.)	22:05	22:08	22:53	22:15	21:23	20:59	20:07	20:17	19:56	20:39	21:13	21:44	21:31	22:58	23:46	20:12	23:24
रोहड़ू (हि.प्र.)	22:06	22:10	22:55	22:14	21:20	20:52	19:57	20:06	19:45	20:30	21:08	21:42	21:31	22:46	23:33	20:04	23:12
रोपड़ (पं.)	22:11	22:14	22:59	22:19	21:25	20:57	20:03	20:12	19:50	20:35	21:13	21:47	21:35	22:53	23:40	20:10	23:18
राजपुरा (पं.)	22:09	22:12	22:58	22:18	21:24	20:57	20:04	20:12	19:51	20:36	21:14	21:47	21:34	22:53	23:40	20:10	23:19
रायपुर(छ.गढ़)	21:28	21:27	22:16	21:44	21:00	20:48	20:02	20:18	19:56	20:31	20:56	21:18	20:58	22:56	23:45	20:01	23:25
रामपुर बुशैहर	22:07	22:12	22:56	22:16	21:21	20:53	19:58	20:06	19:45	20:30	21:08	21:44	21:33	22:47	23:34	20:05	23:13
रूड़की (उ.खण्ड)	22:02	22:06	22:52	22:11	21:18	20:53	20:01	20:10	19:49	20:32	21:08	21:41	21:29	22:50	23:37	20:06	23:17
राजौरी(ज.का.)	22:26	22:32	23:16	22:33	21:36	21:04	20:08	20:13	19:53	20:40	21:21	22:00	21:51	22:55	23:42	20:15	23:20
लुधियाना(पं.)	22:13	22:17	23:02	22:22	21:28	21:00	20:07	20:15	19:54	20:39	21:16	21:50	21:38	22:56	23:43	20:13	23:21
लखनऊ	21:42	21:43	22:31	21:54	21:05	20:44	19:53	20:06	19:44	20:24	20:57	21:24	21:09	22:45	23:33	19:57	23:12
वाराणसी	21:30	21:31	22:18	21:43	20:55	20:38	19:48	20:02	19:39	20:19	20:49	21:15	20:58	22:40	23:30	19:51	23:08
शिमला	22:08	22:12	22:57	22:16	21:23	20:54	20:00	20:09	19:47	20:32	21:10	21:44	21:33	22:50	23:37	20:07	23:16
श्रीनगर (का.)	22:26	22:32	23:15	22:32	21:34	21:00	20:04	20:09	19:48	20:37	21:18	21:58	21:50	22:51	23:37	20:12	23:16
श्रीगंगानगर	22:19	22:23	23:07	22:29	21:35	21:09	20:17	20:26	20:05	20:48	21:24	21:57	21:45	23:07	23:54	20:22	23:33
संगरूर	22:12	22:15	23:01	22:21	21:27	21:02	20:08	20:17	19:56	20:40	21:16	21:50	21:37	22:58	23:45	20:14	23:24
सरकाघाट(हि.प्र.)	22:12	22:17	23:00	22:20	21:25	20:56	20:02	20:09	19:48	20:34	21:12	21:48	21:36	22:50	23:37	20:08	23:16
सहारनपुर	22:05	22:07	22:52	22:13	21:21	20:55	20:02	20:11	19:50	20:33	21:09	21:43	21:30	22:51	23:39	20:08	23:17
सागर (म.प्र.)	21:46	21:45	22:33	22:00	21:13	20:57	20:09	20:23	20:01	20:39	21:06	21:31	21:14	23:02	23:50	20:10	23:29
सोनीपत	22:04	22:06	22:53	22:14	21:23	20:57	20:05	20:16	19:54	20:38	21:11	21:43	21:30	22:55	23:44	20:11	23:22
सिरसा (हरि.)	22:13	22:17	23:03	22:24	21:31	21:05	20:13	20:22	20:02	20:44	21:20	21:52	21:40	23:03	23:51	20:18	23:30
सोलन (हि.प्र.)	22:08	22:12	22:57	22:16	21:22	20:56	20:02	20:10	19:49	20:34	21:11	21:45	21:34	22:51	23:38	20:08	23:16
सुन्दरनगर	22:11	22:14	22:59	22:18	21:24	20:56	20:01	20:08	19:48	20:32	21:11	21:46	21:35	22:49	23:37	20:07	23:15
सुजानपुर टिहरा	22:13	22:18	23:02	22:21	21:26	20:57	20:02	20:09	19:48	20:34	21:13	21:49	21:38	22:49	23:37	20:09	23:16
सुन्दरबनी (का.)	22:25	22:30	23:14	22:32	21:35	21:04	20:08	20:13	19:53	20:40	21:20	21:59	21:49	22:55	23:42	20:15	23:20
सुनाम (पं.)	22:12	22:15	23:00	22:21	21:28	21:02	20:09	20:17	19:56	20:41	21:16	21:50	21:38	22:57	23:45	20:14	23:24
हमीरपुर(हि.प्र.)	22:13	22:16	23:02	22:21	21:26	20:57	20:03	20:09	19:49	20:33	21:13	21:49	21:38	22:50	23:37	20:09	23:17
हरिद्वार	22:01	22:04	22:50	22:11	21:18	20:53	19:59	20:08	19:47	20:31	21:07	21:40	21:28	22:48	23:35	20:04	23:14
हिसार (हरि.)	22:10	22:12	22:58	22:19	21:27	21:02	20:11	20:21	20:00	20:42	21:17	21:48	21:35	23:00	23:49	20:16	23:27
होशियारपुर	22:15	22:19	23:03	22:22	21:28	20:59	20:04	20:13	19:51	20:36	21:14	21:50	21:39	22:53	23:40	20:12	23:19
हाँसी (हरि.)	22:08	22:11	22:57	22:18	21:26	21:02	20:09	20:19	19:58	20:41	21:15	21:47	21:34	22:59	23:48	20:15	23:26

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्र-सम्मत निर्णय-वि.सं.२०८०

लेखक :-पं. विवेक शर्मा

(1) संवत्सर–नाम (वि. संवत् २०८० मध्ये)

नया '**पिंगल**' नाम विक्रमी संवत्सर पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो। गत कुछ वर्षों से संवत्सर के नाम सम्बन्धी वैमत्य से पाठक भली भान्ति अवगत हैं।

सूक्ष्म गणितानुसार वि. संवत् 2080 मध्ये मेष संक्रान्ति के समय '**पिंगल**' नामक सम्वत्सर के भुक्त मासादि ०/२१/१२/२४ तथा भोग्य मासादि ११/०८°/४७/३६' हैं। अर्थात् वैशाख संक्रान्ति से 21 दिन पूर्व '**पिंगल**' नामक संवत्सर प्रारम्भ होगा।

इस प्रकार '**पिंगल**' संवत्सर 24 मार्च, 2023 ई. को प्रारम्भ हो रहा है, जबकि विक्रमी संवत् 2080 का प्रारम्भ 22 मार्च, 2023 ई. को हो चुका होगा। इस प्रकार यद्यपि प्रचलित शास्त्र-परम्परा-अनुसार वि. संवत् के आरम्भ में विद्यमान संवत्सर को ही विक्रमी संवतारम्भ से सम्वतान्त तक धार्मिक अनुष्ठान, जप, दान, संकल्पादि कार्यों के आरम्भ में प्रयोग किया जाएगा परन्तु विक्रमी संवत् 2080 के अधिकांश कालखण्ड में '**पिंगल**' नामक संवत्सर (24 मार्च, 2023 ई. से 18 मार्च, 2024 ई. के मध्य) की कालावधि रहने से '**पिंगल**' संवत्सर को ही अधिमान दिया जाएगा।

अतः स्पष्ट है, धार्मिक, कर्मकाण्डी विद्वान् सभी प्रकार के संकल्पादि कार्यों में "**संवतारम्भे नल परं वर्तमाने 'पिंगल' नाम संवत्सरे**" का प्रयोग करेंगे। ता. 24 मार्च, 2023 ई. के बाद तो "**वर्तमाने 'पिंगल' नाम संवत्सर**" का ही प्रयोग रहेगा।

(2) कामदा एकादशी व्रत (चैत्र शुक्ल)

द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने पर स्मार्त (गृहस्थी) द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णव सम्प्रदाय वाले षष्ठिघट्यात्मक (६० घड़ी) द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। दशमी तिथि द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध–दोनों स्थितियों में यह नियम इसी प्रकार होगा।

इस स्थिति में नारद, माधव और हेमाद्रि के वचनों में परस्पर विरोधाभास है। '**अत्रशुद्धत्वात्स्मार्तानाम् एकादश्यामेवोपवासो न द्वादश्यामिति।।**' (माधव)–यहाँ माधव मतानुसार स्मार्तों का व्रत द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन और वैष्णवों का व्रत षष्ठिघट्यात्मक (६० घड़ी) द्वादशी वाले दिन होना चाहिए।

जबकि हेमाद्रि, पद्मपुराण, नारद के मतानुसार स्मार्तों (गृहस्थियों) और वैष्णवों (सन्यासी, विधवा आदि) सम्प्रदाय वालों–दोनों का व्रत षष्ठिघट्यात्मक द्वादशी के दिन होना चाहिए। '**सर्वत्रैकादशी कार्या द्वादशीमिश्रिताः नरैः।।**' (पद्मपुराण)। मार्कण्डेय के वचनानुसार भी सन्देह होने पर द्वादशी में ही उपवास करें।–'**संधिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीं समुपोषयेत्।।**' तथा '**विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम्।।**' **पारणं च त्रयोदशयामाज्ञेयं।** परन्तु यहाँ माधव के मत को ही अधिक अधिमान्यता दी गई है।

इस वर्ष चैत्र शुक्ल द्वादशी की वृद्धि हुई है। यह 2 अप्रैल, 2023 ई. को अहोरात्र व्यापिनी है। **इसलिए उपरोक्त माधव-मतानुसार कामदा एकादशी स्मार्तों (गृहस्थियों) हेतु 1 अप्रैल, शनिवार को** तथा **वैष्णव सम्प्रदाय हेतु 2 अप्रैल, रविवार, 2023 ई. को लिखी गई है।**

यहाँ एक बात का ध्यान रखें कि पंजाब के सुदूर पश्चिमी-दक्षिणी नगरों (फाज़िल्का, जलालाबाद, अबोहर के निकटवर्ती), राजस्थान के पश्चिमी नगरों (श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर आदि), गुजरात, महाराष्ट्र (मुम्बई आदि) के नगरों में जहाँ सूर्योदय 6घं.–26मिं. के बाद होगा अर्थात् जहाँ द्वादशी तिथि की वृद्धि नहीं होगी, वहाँ यह एकादशी व्रत स्मार्त्त एवम् वैष्णव–दोनों सम्प्रदायों के लोगों द्वारा 1 अप्रैल, शनिवार को ही एकादशी व्रत रखा जाएगा।

(3) अनङ्ग त्रयोदशी (चैत्र शुक्ल 13) (3 अप्रैल, सोमवार)

यह पर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को मनाया जाता है। इसे पूर्व (द्वादशी) विद्धा के दिन मनाने का निर्देश है। यदि त्रयोदशी द्वादशी-विद्धा न हो तो इसे त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी त्रयोदशी के दिन मनाना चाहिए। परन्तु यदि त्रिमुहूर्त्त त्रयोदशी भी न हो, तो इसे केवल द्वादशीयुता त्रयोदशी में ही मनाना चाहिए।

अतः शास्त्रनिर्देशानुसार यह पर्व पहले दिन (द्वादशीयुता त्रयोदशी वाले दिन) **3 अप्रैल, 2023 ई.** को ही मनाया जाएगा।

(4) अक्षय–तृतीया (22 अप्रैल, शनिवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को अक्षय-तृतीया का व्रत-पर्व मनाया जाता है। इसदिन किए गए स्नान-दान, पितृश्राद्ध-तर्पण, जप-होमादि सभी सत्कर्मों का फल अक्षय अर्थात् अनन्त होता है। वैशाखशुक्ल तृतीया युगादि तिथि है। यह पूर्वाह्ण-व्यापिनी ली जाती है–**वैशाखशुक्ल तृतीया अक्षयातृतीयोच्यते। सा पूर्वाह्ण-व्यापिनी ग्राह्या।।** **(निर्णयसिन्धु)**

अतएव वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन पूर्वाह्ण-व्यापिनी होगी, उसी दिन यह व्रत एवं पर्व मनाया जाएगा। यदि तृतीया तिथि दोनों दिन पूर्वाह्ण-व्यापिनी हो अथवा आंशिक रूप से पूर्वाह्ण-काल (दिनमान का पूर्वार्द्ध) को व्याप्त करे, तो तीन मुहूर्त्त (लगभग 6 घड़ी) से अधिक व्याप्ति की स्थिति में परली (चतुर्थीयुता) लें, परन्तु यदि तीन मुहूर्त्त से कम (न्यून) हो, तो पहिले दिन (द्वितीया-युता) ही मनाया जाना चाहिए–

''द्वेधाविभक्त–दिन–पूर्वार्द्धैक–देशव्यापिनी दिनद्वये चेत्, त्रिमुहूर्त्ताधिक–व्याप्तिसत्त्वे परा, त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा।।'' (धर्मसिन्धुः)

प्रस्तुत वर्ष, 23 अप्रैल, रविवार को वैशाख शुक्ल तृतीया मात्र ४ घड़ी ४३ पल तक व्याप्त है। स्पष्ट है कि–त्रिमुहूर्त्त न्यून होने से यह पर्व पहिले दिन ही मनाना शास्त्रसम्मत होगा। **22 अप्रैल, शनिवार को तृतीया तिथि प्रातः 7घं.–50मिं. बाद पूर्वाह्न, मध्याह्न एवं अपराह्न–व्यापिनी होने से स्नान–दान, जप, होम, तर्पणादि सत्कृत्यों के लिए प्रशस्त होगी।** यद्यपि 23 अप्रैल, रविवार को भी तृतीया आंशिक रूप से प्रातःकाल 7घं.–48मिं. तक स्नानदानादि कार्यों के लिए शुभ होगी।

[यहाँ एक बात का ध्यान रखें कि बंगाल तथा अन्य पूर्वी प्रदेशों (आसाम, अरुणां. प्रदेश आदि) में, जहाँ सूर्योदय 5घं.–15मिं. से पहिले होगा, वहाँ तृतीया तिथि 23 अप्रैल, रविवार को त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी हो जाएगी, तद्नुसार उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार अक्षय–तृतीया 23 अप्रैल, रविवार को ही मनायी जाएगी।]

एवं च, भगवान् परशुराम जयन्ती 22 अप्रैल, शनिवार को ही ग्राह्य होगी, क्योंकि तृतीया तिथि इसीदिन प्रदोष–व्यापिनी है।

(5) श्रीगङ्गा–जयन्ती (26 अप्रैल, बुधवार)

वैशाख शुक्ल सप्तमी को श्रीगङ्गा जी की उत्पति हुई थी। श्रीगङ्गा–पूजन, भागीरथ आदि देव–ऋषि पूजन मध्याह्न–व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि में करना चाहिए। यथा–

'वैशाख शुक्लसप्तम्यां गंगोत्पत्तिः। तस्यां मध्याह्न–व्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्। दिनद्वये तद्–व्याप्तौ पूर्वा।। (धर्मसिन्धु)

शास्त्रानुसार सप्तमी तिथि यदि दोनों दिन मध्याह्न को व्याप्त या अव्याप्त हो तो यह पर्व पहिले दिन मनाना चाहिए।

इस वर्ष वैशाखशुक्ल सप्तमी तिथि दो दिन–26 तथा 27 अप्रैल, 2023 ई. को मध्याह्न–व्यापिनी है। **तद्नुसार उपरोक्त शास्त्रवाक्यानुसार 'श्रीङ्गा–जयन्ती' 26 अप्रैल, 2023 ई. को मनायी जाएगी।**

[26–27 अप्रैल को हरिद्वार में मध्याह्न–काल लगभग 10घं.–57मिं. से 13घं.–42मिं. तक रहेगा।]

(6) श्रीसत्यनारायण व्रत (आषाढ़–पूर्णिमा) (2 जुलाई, रविवार)

शास्त्रानुसार श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा 3 जुलाई, 2023 ई. को सायं 17घं.–09मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इसदिन (सूर्यास्त से पहिले) प्रदोष–व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पहिले (2 जुलाई) को पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 19घं.–32मिं. से 21घं.–32मिं. तक रहेगा।

ता. 2 जुलाई, 2023 ई. को पूर्णिमा 20घं.–22मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसीदिन प्रदोष एवं रात्रि–व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। अतएव इस मास का श्रीसत्यनारायण व्रत 2 जुलाई, 2023 ई., रविवार को ही रखना शास्त्रसम्मत होगा।

(7)दूर्वाष्टमी व्रत (24 अगस्त, बृहस्पतिवार)

सिंहस्थ सूर्य की कालावधि में रौहिण मुहूर्त्त (दिन के नवम–मुहूर्त्त) व्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार जिस किसी वर्ष में भाद्र. शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए (लगभग 3/4 सितम्बर के आसपास), तो उस स्थिति में पूर्ववर्त्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र. कृष्ण या श्रावण–शुक्लाष्टमी) में इस व्रत का पालन करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तगत) हो।

'भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।' (हेमाद्रि)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 22 सितम्बर, 2023 ई. को है, जबकि इस समय 17 सितम्बर से ही आश्विन मास प्रारम्भ हो चुका होगा, भाद्र. कृष्ण अष्टमी (7 सितम्बर, 2023 ई.) को भी पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली आदि पश्चिमोत्तर प्रदेशों में अगस्त्य तारा उदित हो चुका होगा। अतः 7 सितं. को भी दूर्वाष्टमी व्रत करना शुभ नहीं होगा। अतएव शास्त्र–निर्देशानुसार **दूर्वाष्टमी का व्रत पूर्ववर्त्ती श्रावण शुक्ल में रौहिण व्याप्त अष्टमी 24 अगस्त, गुरुवार, 2023 ई. को करना शुभ एवं शास्त्र–सम्मत होगा।**

(8) रक्षाबन्धन (30 अगस्त, 2023 ई.)

गतवर्ष की भान्ति इसवर्ष भी **'रक्षाबन्धन'** पर्व का अल्पकालिक मुहूर्त्त रहेगा।

शास्त्रानुसार रक्षाबन्धन का पवित्र पर्व भद्रारहित अपराह्ण–व्यापिनी पूर्णिमा में करना चाहिए–**''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा''**...............।''

यदि पहिले दिन व्याप्त पूर्णिमा के अपराह्णकाल में भद्रा हो तथा दूसरे दिन उदयकालिक पूर्णिमा तिथि त्रिमुहूर्त्त–व्यापिनी हो, तो उसी उदयकालिक पूर्णिमा (दूसरे दिन) के अपराह्णकाल में रक्षाबन्धन करना चाहिए। चाहे पूर्णिमा अपराह्ण से पूर्व ही क्यों न समाप्त हो जाए। क्योंकि उस समय साकल्यापादित पूर्णिमा का अस्तित्व होता ही है। **पुरुषार्थ चिन्तामणि** का इस सम्बन्ध में प्रमाण है–

'यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्व समाप्ता, तदापि भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये........।'

परन्तु यदि आगामी दिन (दूसरे दिन) पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी न हो, तो पहिले दिन भद्रा समाप्त होने पर प्रदोषकाल में ही रक्षाबन्धन करने का विधान कहा गया है।

''अथ रक्षाबन्धनमस्यामेव पूर्णिमायां भद्रारहितायां त्रिमुहूर्त्ताधिकोदय–व्यापिन्याम्–अपराह्णे प्रदोषे वा कार्यम्।। उदयत्रिमुहूर्त्त–न्यूनत्वे पूर्वेद्यु–र्भद्रारहिते प्रदोषादिकाले कार्यम्।।'

परन्तु पंजाब, हिमाचल, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में प्राचीन समय से ही परम्परा स्वरुप उदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल ही रक्षाबन्धन पर्व मनाने का प्रचलन है। पंजाब में कुछ सम्प्रदाय **31 अगस्त, 2023 ई.** को त्रिमुहूर्त्त–न्यून उदयकालिक पूर्णिमा में ही रक्षाबन्धन पर्व करेंगे–**जोकि किसी भी रूप से शास्त्र-सम्मत नहीं है।**

इस वर्ष **30 अगस्त, 2023 ई.** को अपराह्ण-व्यापिनी पूर्णिमा में भद्रादोष व्याप्त है और आगामी दिन 31 अगस्त, गुरुवार को पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी नहीं है। पूर्णिमा केवल प्रात: $7^{\text{घं.}}$–$06^{\text{मिं.}}$ पर ही समाप्त हो रही है। अत: उपरोक्त **शास्त्र-निर्णयानुसार तो 30 अगस्त, बुधवार को ही प्रदोषकाल के समय भद्रारहित काल में अर्थात् $21^{\text{घं.}}$–$03^{\text{मिं.}}$ के बाद रक्षाबन्धन पर्व मनाया जा सकेगा।**

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि 30 अगस्त, 2023 ई. को लगभग पूरा प्रदोषकाल भद्रा से दूषित है।

30 अगस्त, 2023 ई. को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर आदि में प्रदोषकाल लगभग $18^{\text{घं.}}$–$50^{\text{मिं.}}$ से $21^{\text{घं.}}$–$05^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा। स्पष्ट है कि प्रदोषकाल $21^{\text{घं.}}$–$03^{\text{मिं.}}$ तक तो भद्रादूषित रहेगा। **यहाँ शास्त्रकारों ने प्रदोष के अनन्तर भी भद्रारहित रात्रिकाल में रक्षाबन्धन को विहित बतलाया है। जैसे–**

'तत् (भद्रा) सत्त्वे तु रात्रावपि तदन्ते कुर्यात्।'–(निर्णयामृत) एवम्

'उदये त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्त्वे पूर्वेद्यु: भद्रारहिते प्रदोषादिकाले कार्यम्।'–(धर्मसिन्धु)

➻अतएव शास्त्र-निर्देशानुसार 30 अगस्त को ही प्रदोषकाल के बाद भद्रारहितकाल में अर्थात् $21^{\text{घं.}}$–$03^{\text{मिं.}}$ बाद रक्षाबन्धन करना चाहिए।

परन्तु अति आवश्यक परिस्थितिवश (यात्रा-भ्रमण सुविधा उपलब्ध न होने पर, फौज आदि में, ड्यूटी आदि कार्यों में आदि) परिहारस्वरूप भद्रामुख ($18^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ से $20^{\text{घं.}}$–$13^{\text{मिं.}}$ तक) काल का विशेष रूप से त्यागकर **भद्रापुच्छकाल** ($17^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ से $18^{\text{घं.}}$–$32^{\text{मिं.}}$ तक) में भी रक्षाबन्धन करना कुछ मर्यादा तक शुभ एवं ग्राह्य होगा।

कार्येत्वावश्यके विष्टे: मुखमात्रं परित्यजेत्।। (मुहूर्त्त-प्रकाश)

परन्तु ध्यान रहे। रक्षाबन्धन के लिए यथाशक्य सर्वथा भद्रारहित काल ही अभीष्ट है।

(9) श्रीकृष्ण-जयन्ती योग (भाद्र. कृष्ण ८)–(6 सितम्बर, 2023 ई.)

अर्धरात्रिव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी को चन्द्रोदय के समय रोहिणी नक्षत्र से संयोग होने पर श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी को '**श्रीकृष्ण-जयन्ती**' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। **इस वर्ष 6 सितम्बर, बुधवार को अर्धरात्रिव्यापिनी चन्द्रोदयकालीन अष्टमी रोहिणीयुता है। अतएव यहाँ 'श्रीकृष्ण-जयन्ती' नामक पुण्यतम योग बना है।**

अधिक विस्तार से माहात्म्य आदि जानने के लिए कृपया पृष्ठ–23 अवश्य पढ़ें।

(10) साम-उपाकर्म (16 सितम्बर, शनिवार)

सामवेदियों का भाद्रपद शुक्लपक्ष में अपराह्णव्यापी हस्त नक्षत्र में उपाकर्म का मुख्यकाल है। शास्त्रानुसार यदि केवल पहले ही दिन हस्त नक्षत्र अपराह्ण-काल को पूर्णरूप से अथवा आंशिक रूप से व्याप्त करे तो उपाकर्म पहले दिन ही करना चाहिए–

पूर्वदिन एवा–अपराह्ण पूर्ण व्याप्तौ पूर्वत्रैव।। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष भाद्रपद शुक्लपक्ष में हस्त-नक्षत्र 16 सितम्बर, 2023 ई. को ही अपराह्ण-काल को व्याप्त है। **अतएव उपरोक्त शास्त्रनिर्देश अनुसार सामवेदियों का उपाकर्म पहिले दिन 16 सितम्बर, 2023 ई., शनिवार को होगा।**

कुछ सामवेदि पहले दिन अपराह्ण-काल को छोड़कर दूसरे दिन प्रातःकाल और संगवकाल (दिनमान का चतुर्थ से षष्ठ मुहूर्त्त) में उपाकर्म करते हैं। परन्तु वे भी पहिले दिन 16 सितम्बर, शनिवार को ही प्रात: $7^{\text{घं.}}$–$36^{\text{मिं.}}$ बाद उपाकर्म करेंगे। क्योंकि **17 सितम्बर, रविवार को संक्रान्ति-दोष रहेगा।**

(11) श्रीवराह-जयन्ती (17 सितम्बर, रविवार)

भाद्र. शुक्ल तृतीया जिस दिन अपराह्ण-व्यापिनी हो, उस दिन '**श्रीवराह-जयन्ती**' मनाई जाती है। इस वर्ष भाद्र. शुक्ल तृतीया 17 सितम्बर, रविवार को अपराह्ण-व्यापिनी है। अत: श्रीवराह जयन्ती 17 सितम्बर, रविवार को ही मनायी जाएगी।

(12) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (18 या 19 सितम्बर)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन चन्द्रदर्शन होने पर मिथ्याकलंक लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि चतुर्थी तिथि में चन्द्र-उदय होकर पंचमी-तिथि तक वर्तमान हो (अर्थात् चन्द्र-अस्त पंचमी तिथि में हो), तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन करना या होना दोषकारक नहीं होता तथा यदि पहिले दिन सायंकाल से चतुर्थी तिथि की व्याप्ति हो जाए अर्थात् तृतीया में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी तिथि व्याप्ति तक चन्द्रदर्शन हो (चन्द्र अस्त चतुर्थी में हो), तो चन्द्रदर्शन का दोष पहिले दिन होगा, चाहे उस दिन सिद्धिविनायक व्रत न भी हो। **निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी में ही चन्द्रदर्शन का दोष है।** सिद्धिविनायक व्रत का इससे सम्बन्ध नहीं है जोकि मध्याह्न-व्यापिनी ग्राह्य होता है।

चतुर्थ्यामुदितस्य पंचम्यां दर्शनं विनायकव्रत दिनेपि न दोषाय पूर्वदिने सायाह्नमारभ्य प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेपि पूर्वेद्युरेव चंद्रदर्शने दोष इति सिध्यति। ……… ***इदानीं लोकास्त्वेकतरपक्षाश्रयेण विनायक व्रतदिने एवं चंद्रं न पश्चयन्ति न तदयकाले दर्शनकाले वा चतुर्थीसत्त्वासत्त्वे नियमेनाश्रयन्ति।।***

परन्तु इस उपरोक्त नियम की उपेक्षा करते हुए लोकमतानुसार महाराष्ट्र, गुजरातादि में लोग सिद्धिविनायक व्रत वाले दिन ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानते हैं। चाहे उस दिन सायंकाल पंचमी तिथि व्याप्ति में ही चन्द्रास्त हो अर्थात् पंचमी तिथि तक चन्द्रदर्शन हो रहे हों। वे उदयकाल या दर्शनकाल में चतुर्थी होने या न होने पर चन्द्रदर्शन के नियम को नहीं मानते। जबकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि उत्तरी भारत में चतुर्थी तिथि व्यापिनी में ही चन्द्रदर्शन का दोष मानते हैं।

इस वर्ष (वि. संवत् 2080) सिद्धिविनायक व्रत मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी 19 सितम्बर, मंगलवार को है। परन्तु चतुर्थी तिथि 18 सितम्बर, सोमवार को दोपहर 12घं.–40मिं. से प्रारम्भ हो रही है तथा इसदिन चतुर्थी के समय ही रात्रि 20घं.–13मिं. पर चन्द्रास्त होगा। जबकि 19 सितम्बर को चतुर्थी तिथि दोपहर 13घं.–44मिं. तक ही है तथा इस दिन चन्द्रास्त 20घं.–45मिं. पर होगा। जब पंचमी तिथि व्याप्त होगी। **इस प्रकार उत्तरी भारत में, तो लोग शास्त्रानिर्देशानुसार 18 सितम्बर, सोमवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे।** परन्तु महाराष्ट्र आदि कुछ राज्यों में 19 सितम्बर, मंगलवार को चन्द्रदर्शन-निषेध का विचार करेंगे तथा कलंक-चतुर्थी, पत्थर-चौथ आदि इसीदिन मनायी जाएगी।

(13) सिद्धि विनायक व्रत (19 सितम्बर, 2023 ई.)

यह व्रत मध्याह्न-व्यापिनी भाद्र. शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। यदि चतुर्थी पहले दिन मध्याह्न-काल को आंशिक रुप अर्थात् कम समय के लिए स्पर्श करें और दूसरे दिन सम्पूर्ण मध्याह्न-काल को स्पर्श करे, तब यह व्रत दूसरे दिन ही किया जाता है।

इस वर्ष, भाद्र. शु. चतुर्थी 18 सितम्बर को आंशिक रुप से तथा 19 सितम्बर, मंगलवार को पूर्ण रुप से मध्याह्न-काल को व्याप्त है। अत: सिद्धिविनायक व्रत 19 सितम्बर, मंगलवार को ही होगा।

(14) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (22 सितम्बर, शुक्रवार)

चन्द्रोदय-व्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन यह व्रत प्रारम्भ किया जाता है। इस वर्ष (वि. संवत् २०८०) भाद्रपद शुक्ल अष्टमी 22 सितम्बर, शुक्रवार को ही चन्द्रोदय-व्यापिनी है। इस प्रकार यह व्रत इसी दिन से प्रारम्भ किया जाएगा। ऐसा शास्त्रनिर्णय है–'**इयं चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। तत्रैव पूजाद्युक्तेः।।···· पूर्वा व पराविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदय सदा।।**'

इस प्रमाणानुसार इस वर्ष इस व्रत का प्रारम्भ 22 सितम्बर, शुक्रवार को ही होगा।

(15) श्रवण-द्वादशी (विष्णुश्रृंखल योग) (26 सितम्बर, मंगलवार)

भाद्र. शुक्ल पक्ष में दिन के समय मुहूर्त्तमात्र भी द्वादशी एवं श्रवण नक्षत्र का योग हो तो श्रवण-द्वादशी का व्रत किया जाता है। यदि इस पक्ष में किसी दिन एकादशी, द्वादशी और श्रवण-तीनों परस्पर एक दूसरों को स्पर्श करें, तो उस दिन '**विष्णुश्रृंखल योग**' बनता है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार एकादशी, द्वादशी और श्रवण का यह योग दिन में ही घटित होना चाहिए, रात्रि में नहीं। जबकि निर्णयसिन्धु के अनुसार रात्रि में अर्द्धरात्रि के बाद भी स्वीकार करना चाहिए। परन्तु कुछ आचार्यों का यह मत है कि–रात्रि के प्रथम प्रहर पर्यन्त ही यह योग इस व्रत में स्वीकार किया जाए। यहाँ यह अन्तिम मत को ही अधिकतर मान्यता प्राप्त है एवं युक्तियुक्त लगता है।

अत: स्पष्ट है कि श्रवण-द्वादशी का व्रत 26 सितम्बर, मंगलवार को होगा तथा विष्णुश्रृंखल योग प्रात: 9:42 तक रहेगा।

ध्यान रहे–श्रवण द्वादशी एवम् विष्णुश्रृंखल योग का व्रत करने वालों को एकादशी व्रत करने की आवश्यकता नहीं होती–

''श्रवणेन युता चेत्स्याद् द्वादशी सा हि वैष्णवैः।
स्मार्तैश्चोपोषणीया स्यात्त्यजेदेकादशीं तदा।।'' (माधव)

(16) पूर्णिमा-महालय श्राद्ध (प्रोष्ठपदी श्राद्ध) (29 सितं., शुक्रवार)

यह पार्वण श्राद्ध है–'**इदं पार्वणत्वादपराह्णे।।**' भाद्र शुक्ल अपराह्णव्यापिनी पूर्णिमा में यह श्राद्ध किया जाता है। इसमें पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही तथा मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह एवं मातामही, प्रमातामही, वृद्ध प्रमातामही का पार्वण श्राद्ध करना चाहिए। इसदिन उन लोगों का महालय श्राद्ध भी किया जाता है, जिनकी मृत्यु पूर्णिमा तिथि को हुई हो।

इस वर्ष भाद्र. पूर्णिमा **29 सितम्बर, 2023 ई.** को ही अपराह्ण व्यापिनी है, अत: इस वर्ष '**प्रोष्ठपदी श्राद्ध**' इसी दिन होगा।

इस दिन उत्तरी भारत में अपराह्णकाल लगभग 13घं.–29मिं. से 15घं.–51मिं. तक रहेगा।

(17) प्रतिपदा तिथि का महालय श्राद्ध (29 सितम्बर, शुक्रवार)

आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) में किए जाने वाले सभी श्राद्ध '**पार्वण-श्राद्ध**' कहलाते हैं। पित्तरों के निमित्त किए जाने वाले मृत्यु-तिथियों के अनुसार सभी श्राद्ध अपराह्ण-व्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है।

पूर्वाह्णो वै देवानां मध्याह्ने मनुष्यणामपराह्ण पितृणाम्–श्रुति पूर्वाह्णे दैविकं श्राद्धमपराह्णे तु पार्वणम्।। (याज्ञवल्क्य)

इस वर्ष आश्विन कृष्ण प्रतिपदा तिथि 29 सितम्बर, 2023 ई. को 15घं.–28मिं. से 15घं.–51मिं. तक अपराह्ण-काल को स्पर्श कर रही है। जबकि 30 सितम्बर, 2023 ई. को दोपहर 12घं.–22मिं. पर ही समाप्त होकर अपराह्णकाल को बिल्कुल स्पर्श नहीं करेगी। **अतएव प्रतिपदा तिथि का पार्वण श्राद्ध तो 29 सितम्बर, शुक्रवार को ही पूर्णिमा तिथि-श्राद्ध के बाद होगा।**

इसी प्रकार **द्वितीया तिथि का श्राद्ध 30 सितम्बर,** शनिवार को होगा, क्योंकि द्वितीया तिथि इसीदिन अपराह्ण-व्यापिनी है।

(18) एकादशी का महालय श्राद्ध (9 अक्तूबर, सोमवार)

क्योंकि महालयपक्ष के लगभग सभी श्राद्ध पार्वण होते हैं, अतः किसी की मृत्युतिथि जिस दिन अपराह्णव्यापिनी होगी, उसी दिन उसका महालयश्राद्ध होगा। अर्थात् यदि पहिले दिन मृत्युतिथि अपराह्णव्यापिनी है तो उसी दिन और यदि दूसरे दिन अपराह्नव्यापिनी है तो दूसरे दिन उसका श्राद्ध होगा। परन्तु यदि मृत्युतिथि अपराह्न-काल को दो दिन असमान रूप से व्याप्त करे अर्थात् एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम व्याप्त करे, तो वहाँ श्राद्ध उस दिन होगा जिस दिन तिथि अपराह्न को अधिक समय तक व्याप्त कर रही हो।

इस वर्ष आश्विन कृष्ण एकादशी तिथि दो दिन (9 और 10 अक्तू., 2023 ई. को) अपराह्ण-व्यापिनी है, अतः उपरोक्त शास्त्र-नियमानुसार एकादशी तिथि का श्राद्ध 9 अक्तूबर, 2023 ई. को होगा, क्योंकि इस दिन एकादशी तिथि सम्पूर्ण अपराह्णकाल (**13घं.–24मिं. से 15घं.–42मिं. तक**) को व्याप्त कर रही है, जबकि यह (एकादशी) 10 अक्तूबर, मंगलवार को अपेक्षाकृत कम समय (13घं.–24मिं. से 15घं.–09मिं. तक) अपराह्ण-व्याप्त है। **इस प्रकार स्पष्ट है, एकादशी-श्राद्ध पहिले दिन 9 अक्तूबर को ही होगा।**

ध्यान दें–इस वर्ष (वि. संवत् २०८० में) श्राद्धपक्ष में 10 अक्तूबर, 2023 ई. को तिथिश्राद्ध नहीं होगा। परन्तु जो लोग किसी कारणवश 9 अक्तूबर, सोमवार को एकादशी का श्राद्ध न कर सकें, वे 10 अक्तूबर को भी 13घं.–24मिं. से 15घं.–09मिं. तक श्राद्ध कार्य कर सकते हैं।

(19) सरस्वती आवाहन-पूजन-बलिदान-विसर्जन

सरस्वती का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्लपक्ष में क्रमशः मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद में किया जाता है। आवाहन आदि दिन के समय ही किए जाते हैं। रात्रि मे ये नहीं होते। यदि मूल आदि नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त से कम हों या उनका प्रथम पाद रात्रि के समय विद्यमान् हो तो आवाहन आदि दूसरे दिन मूल आदि के द्वितीय आदि किसी भी चरण में (दिन के समय ही) करने चाहिएं–

''तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी सरस्वत्यावाहनम्। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेषवचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिन एवावाहनम्, एवं पूर्वाषाढादि–नक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्येव ग्राह्यम्।–'' (धर्मसिन्धुः)

ध्यान दें–क्योंकि इस बार हमने '**सरस्वती विसर्जन**' का निर्णय करना है और शास्त्रानुसार यहाँ विशेष बात यह है कि–केवल विसर्जन श्रवणनक्षत्र के प्रथमपाद में रात्रि के प्रथमप्रहर में भी किया जा सकता है–'**विसर्जनन्तु श्रवण-प्रथमपादे रात्रिभागगतेऽपिकार्यम्, विशेष वचनात्। तच्च रात्रैः प्रथमप्रहर-पर्यन्तमेव इति भाति।।**'' (धर्मसिन्धु)

–इस वर्ष आश्विन शुक्ल पक्ष में श्रवण नक्षत्र का प्रथमपाद 22 अक्तूबर, 2023 ई. को रात्रि के प्रथम प्रहर में पड़ रहा है। अतः उपरोक्त शास्त्रविवेचनानुसार इस वर्ष '**सरस्वती विसर्जन**' 22 अक्तूबर, 2023 ई. को रात्रि के प्रथमपाद (प्रदोषकाल) में ही किया जाएगा।

(20) गोवत्स द्वादशी (9 नवम्बर, गुरुवार)

प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्ण द्वादशी को '**गोवत्स-द्वादशी**' मनाई जाती है। इस वर्ष कार्तिक कृष्ण द्वादशी 9 नवम्बर, 2023 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। इसलिए '**गोवत्स द्वादशी**' 9 नवम्बर को लगाई गई है।

(21) धन त्रयोदशी (10 नवम्बर, शुक्रवार)

धन-त्रयोदश (धन-तेरस) प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्णत्रयोदशी को मनायी जाती है। इसदिन चाँदी, पीतल आदि का बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। इसदिन सायंकाल के समय घर के मुख्य दरवाजे पर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख करके एक दीपक तेल से भरकर प्रज्वलित करें तथा गन्धाक्षतादि से पूजन कर एक पात्र में अनाज रखकर उस पर प्रज्वलित दीप रख देवें।

'कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
यमदीपं वहिर्णर्दघात् अपमृत्यु विनश्यति।।

यह पर्व सूर्यास्त के बाद त्रि-मुहूर्त्त (लगभग 6 घड़ी) व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए–

सूर्यास्तमानोत्तर त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष त्रयोदशी 10 नवम्बर, शुक्रवार को पूर्णतया प्रदोषव्यापिनी है। अतः '**धन त्रयोदशी**' 10 नवम्बर, शुक्रवार को ही शास्त्रसम्मत है।

प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्णत्रयोदशी के दिन प्रदोष में यम को दीपदान किया जाता है। अतः इसीदिन यम-दीपदान होगा।

(22) भाई-दूज (यम-द्वितीया) (15 नवम्बर, बुधवार)

कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुना ने अपने घर में पूजन करके भाई यम को सत्कार से भोजन कराया था। इसीलिए यह तिथि तीनों लोकों में भ्रातृद्वितीया (भाईदूज) या यमद्वितीया नाम से प्रसिद्ध है। शास्त्रानुसार, अपराह्णव्यापिनी कार्तिक शुक्लद्वितीया के दिन ही भाईदूज (यमद्वितीया) मनाई जाती है। इसदिन अपराह्णकाल के समय चित्रगुप्त और यमदूतों सहित यमराज का पूजन और यम के लिए अर्घ्यदान भी किया जाता है।

धर्मसिन्धुकार भट्टोदीक्षित, स्कन्दपुराणादि अनुसार यदि केवल पहिले ही दिन अपराह्ण-व्यापिनी द्वितीया हो तो यह पर्व पहले दिन मनाया जाए और यदि दोनों दिन अपराह्ण-व्यापिनी द्वितीया हो अथवा दोनों दिन न हो, तो अगले (दूसरे) दिन-

'इयं पूर्वेद्युरेवापराह्णव्याप्तौ पूर्वा।
उभयत्र व्याप्त्याव्याप्त्यादि पक्षांतरेषु परैव।।' (धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि 14 नवम्बर, मंगलवार को 14घं.-37मिं. से 15घं.-21मिं. तक अपराह्ण-काल व्यापिनी है, परन्तु द्वितीया तिथि 15 नवम्बर, बुधवार को मध्याह्न-व्यापिनी तथा 13घं.-15मिं. से 13घं.-48मिं. तक अपराह्ण व्यापिनी रहेगी। [**ध्यान दें,** उत्तरी-भारत में 14 या 15 नवम्बर को 13घं.-15मिं. से 15घं.-21मिं. तक अपराह्ण काल रहेगा।]

अतएव उपरोक्त शास्त्र-नियम के अनुसार भाईदूज (यमद्वितीया) का पर्व दूसरे दिन 15 नवम्बर, बुधवार को ही होगा।

(23) वैकुण्ठ-चतुर्दशी (25 नवम्बर, शनिवार)

मुख्य रूप से श्रद्धालु जन जिस दिन कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी अरुणोदयव्यापिनी हो, उस दिन यह व्रत भगवान् शिव एवं विष्णु की पूजा करके करते हैं। जिस अहोरात्र में चतुर्दशी अरुणोदयव्यापिनी हो, उस दिन उपवास रखकर पहले अरुणोदय के समय पूजा, फिर पारणा करने का विधान है

''चतुर्दशीयुक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपावसः फलित्।।'' (धर्मसिन्धु)

इसवर्ष यह चतुर्दशी 25/26 नवम्बर, शनिवार को अरुणोदय-व्यापिनी है। इसलिए 25 नवम्बर, शनिवार को उपवास रखकर 26 नवम्बर, रविवार को सूर्योदय से पहिले अरुणोदयकाल में भगवान् शिव/विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

(24) मित्र (विष्णु) सप्तमी (19 दिसम्बर, मंगलवार)

षष्ठीविद्धा मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी के दिन **'मित्र सप्तमी'** का पर्व मनाया जाता है। इस वर्ष 18 दिसम्बर, 2023 को सप्तमी षष्ठीविद्धा नहीं है, क्योंकि सूर्यास्त पूर्व सप्तमी त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी नहीं है। **अतः मित्र (विष्णु) सप्तमी पर्व त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी 19 दिसम्बर, 2023 ई. को ही मनाया जाएगा।**

(25) मोक्षदा एकादशी व्रत (22-23 दिसम्बर)

शास्त्रानुसार यदि एकादशी तिथि का क्षय हो जाए, तो स्मार्त लोग दशमीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव लोग त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते हैं। यहाँ स्मार्तों के व्रत को वैष्णवों के व्रत के साथ त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन नहीं किया जा सकता। क्योंकि, ऐसा करने पर उनकी पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ जाती है, जोकि शास्त्रविरुद्ध हो जाएगी। निर्णयसिन्धु में ऋष्यशृंग ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा है-

''पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयापि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।'

अतएव इस स्थिति में स्मार्तों का व्रत दशमीविद्धा एकादशी में ही होगा। इसी कारण मोक्षदा एकादशी का व्रत स्मार्तों के लिए 22 दिसम्बर, 2023 ई. को तथा वैष्णवों के लिए 23 दिसम्बर, 2023 ई. को होगा।

(26) तिल-कुन्द चतुर्थी (12 फरवरी, सोमवार)

माघ शुक्ल चतुर्थी जिस दिन प्रदोषव्यापिनी हो, उस दिन यह व्रत किया जाता है। इस वर्ष माघ शुक्ल चतुर्थी 12 फरवरी, 2024 ई. को ही प्रदोष व्यापिनी है। अतः तिल-कुन्द-वरद् चतुर्थी सभी व्रत इसीदिन होंगे।

(27) भीष्माष्टमी (16 फरवरी, 2024 ई.)

माघ शुक्ल अष्टमी को भीष्म पितामह के निमित्त एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जाता है, इस श्राद्ध-पर्व को ही **'भीष्माष्टमी'** का नाम दिया गया है। क्योंकि एकोद्दिष्ट-श्राद्ध मध्याह्न-काल में किया जाता है, इसलिए मध्याह्न-व्यापिनी माघ शुक्ल अष्टमी के दिन **'भीष्माष्टमी'** मनाई जाती है।

इसवर्ष माघ शुक्लाष्टमी 16 फरवरी, 2024 ई. को ही मध्याह्न व्यापिनी है। अतः भीष्म-पितामह निमित्त श्राद्ध/तर्पणादि कृत्य इसीदिन किए जाएंगे।

(28) भीष्म-द्वादशी (20 फरवरी, 2024 ई.)

माघ शुक्ल द्वादशी को **'भीष्म-द्वादशी'** मनाई जाती है। इसमें व्रत को ब्रह्मार्पण करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर पारणा करें। युग्मवाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी-विद्धा ही ली जाती है-**'द्वादशी तु एकादशीविद्धा ग्राह्या।।'**

इसीलिए **'भीष्म-द्वादशी'** 20 फरवरी, 2024 ई. को लिखी गयी है।

(29) विजया एकादशी व्रत (फाल्गुन कृष्ण)–6/7 मार्च, 2024 ई.

यदि दशमी अरुणोदयकाल को स्पर्श कर रही हो (अर्थात् दशमी तिथि का समाप्तिकाल 56 घड़ी से अधिक हो), तो दशमी द्वारा अरुणोदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में वैष्णव लोग दूसरे दिन (त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन) व्रत करते हैं। स्मार्त्त लोग तो उसी दिन द्वादशीयुत एकादशी में व्रत कर लेते हैं, अर्थात् दशमी द्वारा अरुणोदयवेध स्मार्त्तों को त्याज्य नहीं है, यह वैष्णवों को तो निःसन्देह त्याज्य है। यथा–

'दशमी शेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशी व्रतम्॥'

इस वर्ष फाल्गुन कृष्ण नवमी, मंगलवार के दिन दशमी तिथि क्षय होकर अरुणोदय को स्पर्श कर रही है। अतः उपरोक्त शास्त्र–विवेचनानुसार स्मार्त्त लोग 6 मार्च, 2024 ई., बुधवार को और वैष्णव 7 मार्च, गुरुवार को एकादशी व्रत करेंगे।

(30) होलिका-दहन का समय (24 मार्च, 2024 ई.)

प्रदोष–व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा–रहितकाल में होलिका–दहन किया जाता है। यथा–'**सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहित ग्राह्या॥** (धर्मसिन्धुः)

यदि प्रदोषकाल के समय भद्रा हो तो दूसरे दिन प्रदोष–व्यापिनी पूर्णिमा में होलिका दहन करना चाहिए। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोष–व्यापिनी न हो तो पहिले दिन भद्रा समाप्ति पर होली जलाएं। यदि भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद या निशीथ में समाप्त हो रही हो तो भद्रा के मुख छोड़कर भद्राकाल में ही निशीथ से पहिले होलिका–दहन कर लेना चाहिए, क्योंकि निशीथ के अनन्तर होलिका–दहन निषिध है–

'परदिने प्रदोष–स्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक्–भद्रासमाप्तिः तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिका–दीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रा–समाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।' (धर्मसिन्धुः)

इसवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा (सं. 2080 वि.) केवल 24 मार्च, 2024 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी है। 25 मार्च को तो वह प्रदोषकाल को बिल्कुल स्पर्श नहीं कर रही। 24 मार्च को भद्रा अर्द्धरात्रि (24घं.–33मिं.) से पहिले 23घं.–13मिं. पर समाप्त हो रही है। अतः होलिका–दहन 24 मार्च, रविवार को रात्रि 23घं.–13मिं. के बाद ही करना होगा।

ध्यान दें–इसदिन (24 मार्च, 2024 ई.) भद्रामुखकाल 19घं–54मिं. से 22घं–07मिं. तक रहेगा तथा भद्रा–पुच्छकाल 18घं–34मिं. से 19घं–54मिं. तक रहेगा। अतएव आवश्यक–परिस्थितिवश कुछ लोग भद्रामुखकाल को त्यागकर भद्रापुच्छकाल में होलिका–दहन करेंगे। परन्तु शास्त्रनिर्देशानुसार भद्रा बाद (23घं–13मिं. से) तथा निशीथकाल से पहिले (24घं–33मिं.) ही होलिका–दहन करना चाहिए।

(31) वारुणी/महावारुणी योग (6 अप्रैल, 2024 ई.)

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र से सम्पर्क होने पर '**वारुणी योग**' बनता है। इसी प्रकार त्रयोदशी, शतभिषा और शनिवार का संयोग होने पर '**महावारुणी–योग**' तथा चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शनिवार, शतभिषा नक्षत्र तथा शुभयोग–इन तीनों का सम्पर्क होने पर '**महामहावारुणी–योग**' बनता है। शास्त्रों में इस योग का विशेष माहात्म्य माना गया है। इसदिन हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर गंगास्नान एवं दानादि का फल सौ–सूर्यग्रहणों के तुल्य माना गया है–

'वारुणेन समायुक्त मधौ कृष्ण–त्रयोदशी।
गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा॥
शनिवार–समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता।
गंगायां यदि लभ्येत् कोटिसूर्यग्रहैः समा॥
शुभयोग–समायुक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महामहेति विख्याता त्रिकोटि–कुलमुद्धरेत्॥' (स्कन्दपुराण)

ब्रह्माण्ड पुराण में भी इस योग को महाशुभदायक तथा गंगास्नान (काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों में स्नान–दानादि) को सूर्यग्रहण के समान माना गया है–

चैत्रासिते वारुणऋक्षयुक्ता त्रयोदशी सूर्यसुतस्य वारे।
योगे शुभे सा महती महत्या गङ्गाजलेऽर्कग्रहकोटितुल्या॥

इस वर्ष ता. 6 अप्रैल, 2024 ई. को प्रातः 10घं–20मिं. से दोपहर बाद 15घं–40मिं. तक '**महावारुणी पर्व**' है, क्योंकि इस अवधि में चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शनिवार और शतभिषा नक्षत्र से योग है। ध्यान रहे, इस संयोग का विशेष माहात्म्य सूर्यास्त पूर्व (पहिले) विशेष रूप से होता है। अतः श्रद्धालुजनों को इस योग में हरिद्वार, काशी अथवा किसी अन्य तीर्थस्थान में स्नान, दान कर इस महापुण्यतम योग में पुण्य अर्जित करना चाहिए।

नोट–इन दिए गए संदिग्ध पर्व–त्यौहारों के निर्णयों के अतिरिक्त यदि पाठकों को किसी पर्व सम्बन्धी शंका/संशय हो तो पत्र भेजकर अथवा मोबाईल द्वारा भी मुझसे स्पष्टीकरण ले सकते हैं। –पं. विवेक शर्मा (जालन्धर) **94172-91325**



श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-महोत्सव

(6 सितम्बर, बुधवार 2023 ई.—महापुण्यप्रदायक जयन्ती योग:)



श्रीमद्‌भागवत, भविष्यादि सभी पुराणों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्र. कृष्ण अष्टमीतिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमा-कालीन अर्द्धरात्रि के समय हुआ था–

मासि भाद्रपदे, अष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्द्ध रात्रके।
वृष राशि स्थितो चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।। (भविष्यपुराण)

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर्व के समय छहों तत्त्वों भाद्र. कृष्ण पक्ष, अर्द्धरात्रिकाल, अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष का चन्द्र और बुधवार या सोमवार की विद्यमानता (सम्मिलन) बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है। अनेकों वर्षों में कई बार भा.कृ. अष्टमी की अर्द्धरात्रि को वृष का चन्द्र तो होता है, परन्तु रोहिणी नक्षत्र नहीं होता। इसी पंचांग में प्राय: सप्तमीविद्धा अष्टमी को स्मार्तानां तथा नवमीविद्धा अष्टमी को वैष्णवानां लिखा होता है। इस वर्ष 6 सितम्बर, 2023 ई. को प्राय: सभी तत्त्वों का दुर्लभ योग मिल रहा है अर्थात् 6 सितंबर को श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दिन अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्रमा का दुर्लभ एवं पुण्यप्रदायक योग बन रहा है। प्राय: सभी शास्त्रकारों ने ऐसे दुर्लभ योग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा एवं स्तुतिगान किया है। **यथा**–निर्णयसिन्धु अनुसार आधी रात के समय रोहिणी में यदि अष्टमी तिथि मिल जाए तो उसमें श्रीकृष्ण का पूजार्चन करने से तीन जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं–

'रोहिण्यां–अर्द्धरात्रे च यदा कृष्णाष्टमी भवेत्।
तस्यांम्यर्चनं शौरे: हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।।

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी रोहिणी नक्षत्र के योग से रहित हो तो 'केवला और 'रोहिणी' नक्षत्र युक्त हो तो 'जयन्ती' कहलाती है। 'जयन्ती' में बुध या सोमवार का योग आ जाए तो वह अत्युत्कृष्ट फलदायक हो जाती है। 'केवलाष्टमी' और 'जयन्ती' में अधिक भिन्नता नहीं है, क्योंकि अष्टमी के बिना जयन्ती का स्वतन्त्र स्वरूप नहीं हो सकता। प्राचीनकाल से ही अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी में रोहिणी नक्षत्र के बिना भी व्रत-उपवास किया जाता है, परन्तु तिथि-योग के बिना रोहिणी में किसी प्रकार का स्वतन्त्र विधान नहीं है। अत: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही रोहिणी नक्षत्र के योग से जयन्ती बनती है। एतदर्थ कहा गया है कि **'रोहिणी-गुणविशिष्टा जयन्ती'**।। विष्णुरहस्य का भी यह श्लोक **'जयन्ती-योग'** की पुष्टि करता है–

अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणीऋक्षसंयुता।
भवेत्प्रौष्ठपदे मासि जयन्तीनाम सा स्मृता।।

अर्थात् भाद्रपद कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी से संयुक्त होती है तो वह जयन्ती नाम से जानी जाती है। **'गौतमी तन्त्र'** में भी इस सम्बन्ध में स्पष्टत: लिखा गया है कि भाद्र. कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्र और सोम या बुधवार से संयुक्त हो जाए तो वह जयन्ती नाम से विख्यात होती है। जन्म-जन्मान्तरों के पुण्यसंचय से ऐसा योग मिलता है। जिस मनुषअय को जयन्ती-उपवास का सौभाग्य मिलता है, उसके कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं तथा जन्म-बन्धन से मुक्त होकर वह परम दिव्य वैकुण्ठादि भगवद् धाम में निवास करता है–

अष्टमी रोहिणी युक्ता चार्धरात्रे यदा भवेत्।
उपोष्य तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमाह्णि बुधवासरे वा अष्टमी रोहिणी युता।
जयन्ती सा समाख्याता सा लभ्या पुण्य संचयै:।। (गौतमी तन्त्र)

'पद्मपुराण' अनुसार भी जिन्होंने श्रावण (भाद्रपद) में रोहिणी, बुधवार या सोमवार युक्त अथवा कोटि-कुलों की मुक्ति देने वाली नवमीयुक्त जन्माष्टमी का व्रत किया है वे प्रेतयोनि को प्राप्त हुए अपने पितरों को भी प्रेतयोनि से मुक्त कर देते हैं।

'प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं तु तै:।
यै कृता श्रावणे (भाद्रे) मासि अष्टमी रोहिणीयुता।
किं पुन: बुधवारेण सोमेनापि विशेषत:।
किं पुन: नवमीयुक्ता कुलकोटयास्तु मुक्तिदा।।'

अस्तु, सभी धर्म एवं निबन्ध ग्रन्थों में ऐसे दुर्लभ योग की विशेष महिमा कही है।

उपरोक्त शास्त्रवचनों के अनुसार 6 सितम्बर, बुधवार को प्रात: ध्वजारोहण एवं संकल्पपूर्वक व्रतानुष्ठान करके **'ॐ नम: भगवते वासुदेवाय।' 'ॐ कृष्णाय वासुदेवाय गोविन्दाय नमो नम:'** आदि मन्त्र-जप, श्रीकृष्ण नाम स्तोत्रपाठ, कीर्तनादि तथा रात्रि को श्रीकृष्ण बालरूप की पूजार्चन, ध्वजारोहण, झूला-झुलान, चन्द्रार्घ्यदान, जागरण-कीर्तनादि शुभ कृत्य करने चाहिए। रात्रि को बारह बजे गर्भ से जन्म लेने के प्रतीकस्वरूप खीरा फोड़कर एवं शंख ध्वनि सहित भगवान् का जन्मोत्सव मनाएँ। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्वलित कर सामूहिक स्वर से श्रीभगवान् की आरती-स्तुति करें। फिर शङ्ख में गंगाजल सहित दूध-जल, फल, कुश, कुसुम, गन्धादि डालकर निम्न मन्त्र द्वारा चन्द्रमा को अर्घ्य देकर नमस्कार कर अर्घ्य देवें–

'क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्र–सम–उद्भव। गृहाणार्घ्यं शशाङ्क इमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।

तत्पश्चात् देवकी को अर्घ्य, श्रीकृष्ण को पुष्पाञ्जलि अर्पण करे तथा **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतयो सोमसम्भवाय सोमाय नमो नम:'** से चन्द्रमा का पूजन करें।

फिर नमस्कार करके प्रार्थना करें–

त्राहि मां सर्वपापघ्नं दुखशोकार्णवात् प्रभो ! अर्थात् हे प्रभो ! दु:ख व शोकरूपी समुद्र से मेरी रक्षा करो। तत्पश्चात् मक्खन, मिश्री-धनिया, केले आदि फलों का प्रसाद ग्रहण करें। फिर भगवान् श्रीकृष्ण के ध्यान/नाम मन्त्रों का यथाशक्ति जाप करते रहें–

'ॐ नारायणाय नम:, अच्युताय नम:, अनन्ताय नम:, वासुदेवाय नम:।।'

'तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम्' के अनुसार दूसरे दिन मिष्ठान्न सहित प्रसाद बाँटना, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करके श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दुर्लभ पर्व का अवश्य पुण्य-लाभ उठाना चाहिए।

इस दिन अभीष्ट सन्तान प्राप्ति के लिए विधिपूर्वक सन्तान गोपाल स्तोत्र या हरिवंश पुराण का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होगा। इस पर्व के सम्बन्ध में संशय या संदिग्ध कुछ भी नहीं है। फिर भी **'जयन्ती-योग'** के उपलक्ष्य में माहात्म्य लिखा गया है। अपने स्थानीय नगर में **'श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी' (6 सितम्बर)** के दिन चन्द्रोदय जानने के लिए पृष्ठ 12 देखें।

विस्तृत 'ग्रहण-विवरण' (वि. संवत् २०८०)

परिलेख- -पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०८० (सन् 2023–24 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर चार ग्रहण दिखाई देंगे–

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (20 अप्रैल, 2023 ई., गुरुवार)
(2) कंकण सूर्यग्रहण (14 अक्तूबर, 2023 ई., शनिवार)
(3) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तूबर, 2023 ई., शनिवार)
(4) खग्रास सूर्यग्रहण (8 अप्रैल, 2024 ई., सोमवार)

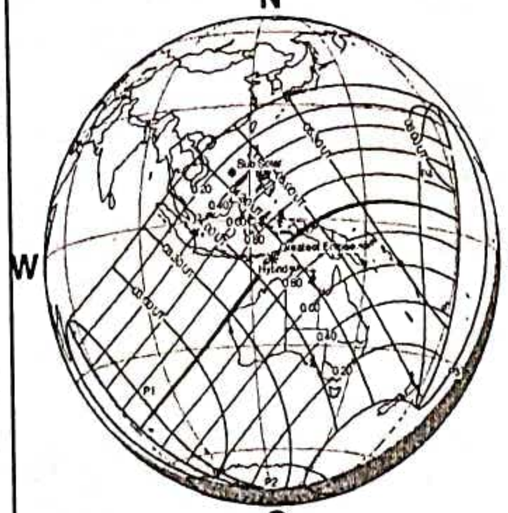
इनमें से (3) नं. वाला खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तूबर, 2023 ई.) ही भारत में दिखाई देगा। शेष तीनों सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (20 अप्रैल, 2023 ई., बृहस्पतिवार)–

यह खग्रास सूर्यग्रहण वैशाख अमावस, बृहस्पतिवार को भा.स्टैं.टा. अनुसार प्रात: $7^{घं.}–05^{मिं.}$ से दोपहर $12^{घं.}–29^{मिं.}$ तक दिखाई देगा। यह सूर्यग्रहण अन्टार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिणी हिन्द महासागर, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स तथा दक्षिणी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इस ग्रहण की खग्रास आकृति ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों, न्यू ग्याना, जावा, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में बैरो द्वीप, इण्डोनेशिया में पापुआ प्रान्त के कुछ हिस्सों में दिखाई देगी। भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि-काल इस प्रकार है–

खग्रास सूर्यग्रहण–विश्व-परिदृश्य
20 अप्रैल, 2023 ई.



ग्रहण प्रारम्भ	$07^{घं.}–05^{मिं.}$	20 अप्रैल, 2023 ई., (भा.स्टैं.टा. अनुसार)
खग्रास प्रारम्भ	$08^{घं.}–07^{मिं.}$	
परमग्रास (मध्य)	$09^{घं.}–47^{मिं.}$	
खग्रास समाप्त	$11^{घं.}–27^{मिं.}$	
ग्रहण समाप्त	$12^{घं.}–29^{मिं.}$	

यह ग्रहण भारत में अदृश्य है

[ग्रहण का ग्रासमान = 1.0132, ग्रहण की अवधि = $5^{घं.}–24^{मिं.}$]

सूर्यग्रहण तब होता है, जब पृथ्वी और सूर्य के मध्य (बीच) में से चन्द्रमा गुज़रता है, जिससे पृथ्वी पर एक दर्शक के लिए सूर्य की छवि पूरी तरह या आंशिक रूप से अस्पष्ट हो जाती है। खग्रास सूर्यग्रहण तब होता है, जब चन्द्रमा का स्पष्ट व्यास सूर्य से बड़ा होता है, जो सभी प्रत्यक्ष सूर्य के प्रकाश को अवरुद्ध करता है, दिन को अंधेरे में वदल देता है। पृथ्वी की सतह पर एक संकीर्ण पथ में समग्रता होती है, आंशिक सूर्यग्रहण आसपास के क्षेत्र में हज़ारों किलोमीटर चौड़ा दिखाई देता है। इसके पथ के कुछ भाग सूर्योदय और सूर्यास्त के निकट वलयाकार के रूप में होते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के कुछ एक दो नगरों का स्थानीय समयानुसार विवरण लिख दे रहे हैं–

Austrialia & Newzealand	ग्रहण प्रारम्भ घं.मिं.सैं.	ग्रहण मध्य घं. मिं. सैं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं. सैं.	ग्रहण ग्रासमान %	
Melbourne (EST)	13 15 11	14 08 55	15 01 20	0.205	20 अप्रैल, 2023 ई. की दोपहर (स्थानीय समयानुसार)
Sydney (EST)	13 36 36	14 28 45	15 18 33	0.191	
Adelaide (EST)	12 23 35	13 29 53	14 35 23	0.324	
Auckland (NZ)	16 33 54	16 59 42	17 24 43	0.064	

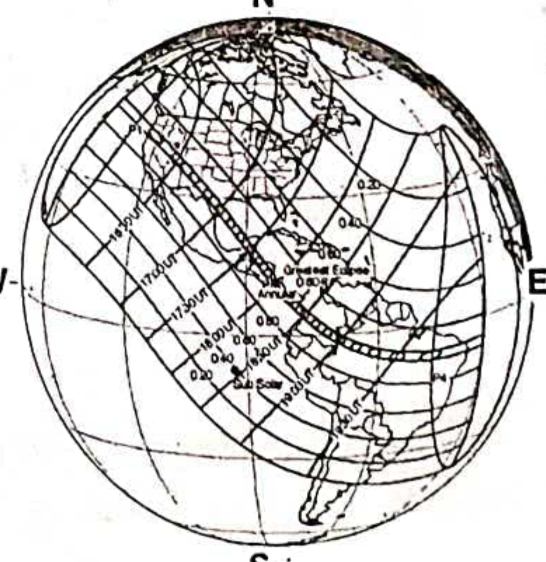
(2) कंकण सूर्यग्रहण

(14 अक्तूबर, 2023 ई., शनिवार)–

यह कंकण सूर्यग्रहण आश्विन अमावस, शनिवार की रात्रि भा.स्टैं.टा. अनुसार $20^{घं.}–34^{मिं.}$ से $26^{घं.}–25^{मिं.}$ तक (14-15 अक्तूबर की मध्यरात्रि) घटित होगा। यह ग्रहण सुदूर दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी क्षेत्रों को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण उत्तरी-अमेरिका (कैनेडा, अमरीका) से लेकर दक्षिणी अमेरिका के देशों तक दिखेगा। उ.-द. अमरीका के अतिरिक्त यह ग्रहण अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिमी क्षेत्रों–ग्याना, पश्चिमी सहारा आदि पश्चिमी क्षेत्रों में ही दृश्य होगा।

इस ग्रहण की कंकणकृति (Ring of fire) अमेरिका के Oregon से Taxas तक दिखेगी। इस कंकण मार्ग में Oregon,

विश्व परिदृश्य-कंकण सूर्यग्रहण
14 अक्तूबर, 2023 ई.



Nevada, Utah, New Mexico तथा Taxas आदि शहर होंगे। California, Idaho, Colorado तथा Arizone के कुछ क्षेत्रों में भी दिखाई देगा।

भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि-काल इस प्रकार हैं–

ग्रहण प्रारम्भ	$20^{घं.}–34^{मिं.}$	14/15 अक्तूबर की मध्यरात्रि
कंकण प्रारम्भ	$21^{घं.}–42^{मिं.}$	
परमग्रास	$23^{घं.}–30^{मिं.}$	
कंकण समाप्त	$25^{घं.}–17^{मिं.}$	
ग्रहण समाप्त	$26^{घं.}–25^{मिं.}$	

[ग्रहण का ग्रासमान = 0.951, कंकण की अवधि = $5^{मिं.}–23^{सैं.}$]

14 अक्तूबर, 2023 ई. के दिन

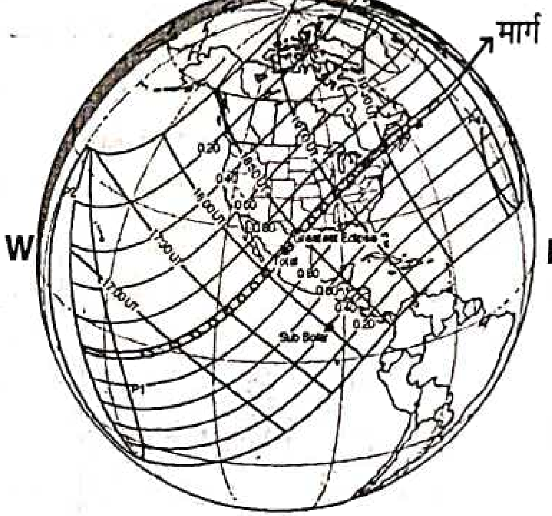
कैनेडा तथा अमेरिका के कुछ मुख्य नगरों का स्थानीय समयानुसार ग्रहण प्रारम्भ, मध्य तथा समाप्तिकाल दे रहे हैं। आशा है, पाठकों को लाभ होगा। (Day-Saving Time लिया गया है।)

Canada & America	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	ग्रहण मध्य घं. मिं. सैं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं. सैं.	ग्रहण ग्रासमान (प्रतिशत)
(Canada)	CANADA-(कैनेडा)			
1. Toronto (Ont.)	10 55 41	12 09 41	13 25 16	0.389
2. Vancouver (BC)	07 08 29	8 20 15	09 38 22	0.823
3. Winnipeg (MB)	09 28 30	10 42 14	12 00 11	0.533
4. Windsor (Ont.)	10 46 45	12 04 56	13 25 46	0.463
	(U.S.A.)-अमेरिका			
1. Atlanta (GA)	10 43 07	12 12 14	13 45 06	0.62
2. Boston (MA)	11 18 03	12 25 53	13 33 26	0.287
3. Chicago (IL)	9 37 18	10 58 03	12 22 42	0.541
4. Detroit (MI)	10 46 41	12 04 51	13 25 40	0.463
5. Houston (TX)	9 27 07	10 58 49	12 38 01	0.897
6. Los Angeles, CA	7 07 54	08 24 28	9 50 04	0.781
7. Minneapolis, MN	9 29 42	10 48 13	12 11 22	0.571
8. New York, NY	11 08 50	12 22 23	13 36 15	0.348
9. Richmond, VA	10 58 57	12 20 00	13 42 17	0.443
10. Seattle, WA	7 07 28	08 20 08	9 39 32	0.858
11. Washington, DC	11 00 09	12 19 03	13 39 03	0.418

(3) खग्रास सूर्यग्रहण (8 अप्रैल, 2024 ई., सोमवार)–

विश्व परिदृश्य–III

खग्रास सूर्यग्रहण (8 अप्रैल, 2024 ई.)



यह खग्रास सूर्यग्रहण चैत्र अमावस, सोमवार की रात्रि भा.स्टैं.टा. अनुसार $21^{घं.}–12^{मिं.}$ से $26^{घं.}–22^{मिं.}$ तक (8-9 अप्रैल की मध्यरात्रि) घटित होगा। यह खग्रास सूर्यग्रहण अलास्का को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तरी अमेरिका (कैनेडा सहित), मध्य अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका के कुछ उत्तरी भागों में, आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड के कुछ उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्रों (Glasgow) में दिखाई देगा।

इस ग्रहण की खग्रास-आकृति सर्वप्रथम मैक्सिको के Mazatlan शहर से प्रारम्भ होती हुई **अमेरिका के Texas** क्षेत्र में प्रवेश करती हुई (देखें चित्र-विश्व परिदृश्य-III), Maine तथा कैनेडा के Maritime राज्य में प्रवेश करेगी। खग्रास मार्ग के मुख्य क्षेत्र इस प्रकार होंगे–Mazatlan (Mexico), Torreon, San Antonio, Austin, Dallas, Fort Worth, Indiana polis, Cleveland, Buffalo, Rochester, Syracuse तथा Montreal.

[**ध्यान दें,** St. Louis, Detroit, Toronto तथा Quebec आदि क्षेत्र भी खग्रास-मार्ग के काफी निकट होंगे। Boston, Newyork, Washington आदि शहर खग्रास मार्ग के 200 मील क्षेत्र के भीतर होंगे।]

भा.स्टैं.टा. अनुसार इस खग्रास सूर्यग्रहण का प्रारम्भ व समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

ग्रहण प्रारम्भ	$21^{घं.}–12^{मिं.}$	(भा.स्टैं.टा.) 8 अप्रैल, 2024 ई.
खग्रास प्रारम्भ	$22^{घं.}–10^{मिं.}$	
परमग्रास (मध्य)	$23^{घं.}–47^{मिं.}$	
खग्रास समाप्त	$25^{घं.}–25^{मिं.}$	
ग्रहण समाप्त	$26^{घं.}–22^{मिं.}$	

[ग्रहण का ग्रासमान = 1.056, खग्रास की अधिकतम अवधि = $4^{मिं.}–25^{सैं.}$]

अमेरिका तथा कैनेडा के मुख्य शहरों में खग्रास सूर्यग्रहण का प्रारम्भ/समाप्ति समय–8 अप्रैल, 2024 ई.

[यहाँ Day Saving Time लिया गया है अर्थात् घड़ियों में 1 घण्टा आगे होगा।]
[आजकल (2007 के बाद) अमेरिका/कैनेडा में मार्च के दूसरे रविवार से नवम्बर के प्रथम रविवार तक Day Saving Time लिया जा रहा है। (रात्रि 2 A:M से)]

(CANADA के मुख्य शहर) (स्थानीय समयानुसार)

CANADA के शहर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	खग्रास प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	परमग्रास मध्य घं. मिं. सैं.	खग्रास समाप्त घं. मिं. सैं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं. सैं.	खग्रास की अवधि मिं. सैं.
Alert, NU	14 45 35	---	15 13 26	---	15 41 11	–
Calgary, AB	10 48 33	---	11 43 07	---	12 38 45	–
Charlottetown, PE	14 28 02	---	15 38 11	---	16 43 52	–
Churchill, MB	12 11 46	---	13 09 15	---	14 06 15	–
Edmonton, AB	10 54 20	---	11 46 34	---	12 39 37	–
Fredericton, NB	14 23 36	15 33 42	15 34 52	15 36 01	16 41 49	2 18
Halifax, NS	14 27 13	---	15 37 57	---	16 44 03	–
Hamilton, ON	13 03 49	14 18 07	14 19 02	14 19 57	15 31 06	1 49
Inuvik, NT	11 36 05	---	11 46 15	---	11 56 25	–
Iqaluit,. NU	13 31 11	---	14 27 27	---	15 22 10	–
Kuujjuaq, QC	13 27 42	---	14 30 22	---	15 30 40	–
Montreal, QC	13 14 23	14 26 51	14 27 27	14 28 04	15 36 46	1 12
Ottawa, ONT	13 11 29	---	14 24 59	---	15 34 56	–
Prince George, BC	09 54 32	---	10 37 29	---	11 21 19	–
Quebec, QC	13 18 13	---	14 30 10	---	15 38 16	–
Saint John's NF	15 09 26	---	16 15 52	---	17 17 50	–
Toronto, ON	13 04 53	---	14 19 50	---	15 31 35	–
Vancouver, BC	09 43 05	---	10 30 49	---	11 19 53	–
Victoria, BC	12 40 57	---	13 29 18	---	14 19 07	–
Winnipeg, MB	11 54 46	---	13 01 36	---	14 08 06	–
Windsor, ON	12 58 17	---	14 14 17	---	15 27 34	–

अमेरिका (America-United States के मुख्य शहर)

अमेरिका के शहर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	खग्रास प्रारम्भ घं. मिं. सैं.	परमग्रास मध्य घं. मिं. सैं.	खग्रास समाप्त घं. मिं. सैं.	ग्रहण समाप्त घं. मिं. सैं.	खग्रास की अवधि मिं. सैं.
Albany, NY	13 12 10	---	14 28 31	---	15 38 51	–
Atlanta, GA	12 45 38	---	14 04 30	---	15 20 54	–
Austin, TX	11 17 08	12 36 04	12 38 56	12 37 49	13 58 02	1 45
Boston, MA	13 16 01	---	14 29 43	---	15 39 04	–
Buffalo, NY	13 04 51	14 18 15	14 20 08	14 22 01	15 22 05	3 45
Chicago, IL	11 51 18	---	13 07 32	---	14 21 54	–
Columbus, OH	12 55 31	---	14 12 39	---	15 26 59	–
Dallas, TX	11 23 12	12 40 37	12 42 33	12 44 29	14 02 35	3 52
Detroit, MI	12 58 17	---	14 14 15	---	15 27 22	–
Houston, TX	11 19 55	---	12 40 07	---	14 01 04	–
Indianapolis, IN	12 50 28	14 05 59	14 07 53	14 09 48	15 23 07	3 49
Los Angeles,CA	9 06 06	---	10 12 15	---	11 22 04	–
Miami, FL	12 47 37	---	14 01 47	---	15 13 15	–
Milwaukee, WI	11 52 42	---	13 08 09	---	14 21 47	–
Minneapolis, MN	11 49 35	---	13 02 33	---	14 14 39	–
Newyork, NY	13 10 29	---	14 25 29	---	15 36 18	–
Richmond, VA	13 02 22	---	14 18 57	---	15 31 41	–
Rochester, NY	13 06 55	14 20 04	14 21 53	14 23 42	15 33 20	3 38
Sacramento, CA	9 06 12	---	10 15 52	---	11 18 27	–
San Francisco, CA	9 13 55	---	10 13 17	---	11 15 41	–
Seattle, WA	9 38 56	---	10 29 17	---	11 21 12	–
Washington, DC	13 04 10	---	14 20 25	---	15 32 49	–
इंग्लैण्ड (United Kingdom)						
Glasgow, UK	18 54 25	---	---	---	19–06	–
आयरलैण्ड (Ireland)						
Dublin (Ireland)	18 55 43	---	---	---	19–10	–

भारत में दृश्य एकमात्र चन्द्रग्रहण का विस्तृत विवरण

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तूबर, 2023 ई., शनिवार)–

यह ग्रहण आश्विन पूर्णिमा को 28 एवं 29 अक्तूबर, 2023 ई. की मध्यगत रात्रि को सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षादि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श (प्रारम्भ)	25–05	28-29 अक्तू. की मध्यगत रात्रि शनि/रविवार
ग्रहण मध्य	25–44	
ग्रहणमोक्ष (समाप्त)	26–24	

पर्वकाल = $1^{घं.}$–$19^{मिं.}$, **ग्रासमान** = 0.126 (लगभग 13 प्रतिशत)

चन्द्र मालिन्यारम्भ (Enters Penumbra) = $23^{घं.}$–$30^{मिं.}$

चन्द्र क्रान्ति निर्मल (Moon Leaves Penumbra)) = $27^{घं.}$–$58^{मिं.}$

भारत में जब 28/29 अक्तूबर, 2023 ई. की मध्य-रात्रि 1 बजकर 05 मिनट पर यह चन्द्रग्रहण शुरु होगा, उस समय तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में चन्द्र-उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों/ग्रामों में 28 अक्तू. को सायं 4 बजे से सायं 6 बजे तक चन्द्रोदय हो जाएगा तथा यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 28 अक्तू. की रात्रि $25^{घं.}$–$05^{मिं.}$ से प्रारम्भ होकर रात्रि $26^{घं.}$–$24^{मिं.}$ (अर्थात् 2 बजकर 24 मिंट) पर समाप्त (मोक्ष) होगा। भारत के सभी नगरों में इसका प्रारम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

इस ग्रहण में चन्द्रबिम्ब दक्षिण की ओर से ग्रस्त दिखेगा। इस ग्रहण की स्पर्श-मोक्ष की दिशाएं, दिशा सहित परमग्रासमान तथा विश्व में कहाँ-कहाँ दिखाई देगा, आगामी पृष्ठ 28 पर दिए गए चित्र में देखिए।

भारत के अतिरिक्त दिखाई देने वाले क्षेत्र

यह खण्ड चन्द्रग्रहण ऑस्ट्रेलिया, सम्पूर्ण एशिया, यूरोप, अफ्रीका, दक्षिणी-पूर्वी अमरीका, उत्तरी-अमेरिका के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र (कैनेडा-सहित), हिन्द महासागर, दक्षिणी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

ऑस्ट्रेलिया, रूस के पूर्वी क्षेत्रों में इस ग्रहण का प्रारम्भ केवल चन्द्रास्त के समय ही दिखाई देगा। (ग्रस्तास्त)

जबकि कैनेडा, ब्राज़ील के पूर्वी क्षेत्रों, दक्षिणी एटलांटिक महासागर में चन्द्रोदय के समय इसकी समाप्ति देखी जा सकेगी। (ग्रस्तोदय)

भारत में तो इस ग्रहण का दृश्य प्रारम्भ से समाप्ति तक देखा जा सकेगा।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 28 अक्तूबर, 2023 ई. को सायं 4 बजकर 05 मिंट (16:05) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण–काल तथा बाद में क्या करें ?

ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पठ, मन्त्र-जाप, मन्त्र-सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक लोगों को ग्रहणकाल अथवा 28 अक्तूबर के सूर्यास्त के बाद अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण के परामर्शानुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा अगले दिन 29 अक्तू., 2023 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक सामग्री/वस्तुएँ योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा सङ्क्रमणे रवेः।
राहोश्च दर्शने कार्यं प्रशस्तं नान्यथा निशि।। (वसिष्ठ)

अर्थात् पुत्र की उत्पत्ति, यज्ञ, सूर्य-संक्रान्ति और सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में रात में भी स्नान करना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, नाखुन-काटना, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूठ-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। सूतककाल में बाल, वृद्ध, रोगी एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं। ग्रहण/सूतक से पहले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में घटित हो रहा है। इसलिए इस राशि एवं नक्षत्र में उत्पन्न जातकों को चन्द्रमा-राहु तथा राशिस्वामी मंगल का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	दुर्घटना शरीर कष्ट, शत्रुता	धन-हानि, चिन्ता	धन लाभ, उन्नति	रोग, कष्ट भय	सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता	शत्रुभय, साधारण लाभ, खर्च	स्त्री/पति सम्बन्धी परेशानी	रोग, गुप्त चिन्ता, संघर्ष	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य-सिद्धि, लाभ	धन लाभ, उन्नति	धन-हानि, व्यर्थ-यात्रा

जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, वह यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रह-शान्ति (चन्द्रमा एवं राशिस्वामी मंगल की) एवं दानादि द्वारा ग्रहण के अनिष्ट प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहणोपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। रोग शान्ति के लिए ग्रहणकाल में '**श्रीमहामृत्युञ्जय-मन्त्र**' का जप करना शुभ होता है।

प्रयोग—काँसे की कटोरी में घी भरकर उसमें ताम्रादि का सिक्का डालकर अपना मुँह देखकर छायापात्र मन्त्र पढ़े और ग्रहण-समाप्ति पर वस्त्र, फल व दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने से क्लिष्ट रोग से निवृत्ति होती है।

ग्रहण का लोक-भविष्य एवं प्रभाव

(i) आश्विन मास में ग्रहणफल—यह खण्ड-चन्द्रग्रहण आश्विन मास में घटित होने से चीन, ईरान, सिन्ध आदि देशों में कष्ट, प्राकृतिक प्रकोप हों, शिल्पी (बढ़ई आदि), वैद्यों, डॉक्टरों को कष्ट, पीड़ा तथा जगत् में बहुत श्रेष्ठ सुभिक्ष हो- **दृष्टोसुरोश्वंयुजि भूरि सुभिक्षकृञ्च।**

(ii) वारफलम्—चन्द्रग्रहण शनिवार को घटित होने से चोरों का उपद्रव अर्थात् चोरी की वारदातें अधिक हों, राज्य के मन्त्रियों को कष्ट तथा धान्य, चावल, मूँग, ताँबा, काली मिर्च, सरसों, एरण्डी आदि का संग्रह करने से आगे उत्तम लाभ मिले।

(iii) नक्षत्रफलम्—घोड़ों, सेनापति, वैद्य, डॉक्टर, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारी-वर्ग को कष्ट रहे।

(iv) योगफलम्—यह ग्रहण सिद्धि योग में होने से धातुओं के बर्तन बनाने वालों, तपस्वी लोगों को पीड़ा हो।

(v) राशिफलम्—यह ग्रहण मेष राशि में घटित होने से पंजाब, आंध्रा-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, मथुरा आदि क्षेत्र के लोगों को तथा शस्त्र/अग्नि-गैस आदि से सम्बन्धित व्यापार करने वाले लोगों को पीड़ा हो।

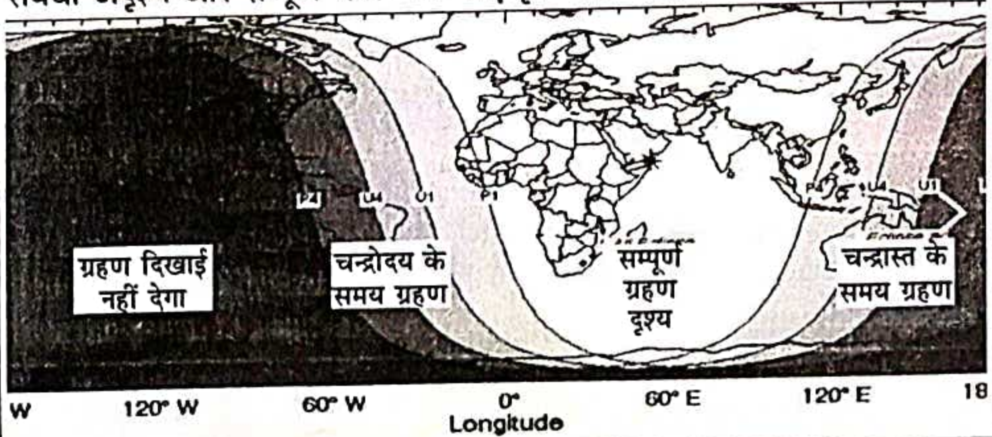
(vi) ग्रहण-कालीन चन्द्र पर ग्रहदृष्टि फल—ग्रहण के समय मेष राशिस्थ चन्द्रमा गुरु-राहु के साथ है तथा इन पर शनि, मंगल आदि ग्रहों की दृष्टियां हैं। शास्त्रों में इसका फल अनिष्टकारक लिखा है। कहीं वर्षा से भारी जन-धन हानि तथा कहीं दुर्भिक्ष (अकालजन्य) जैसे हालात बनेंगे। चोरी आदि का भय तथा उड़द आदि कृष्ण-धान्य, लोहा, क्रूड ऑयल आदि काले तथा लाल रंग की वस्तुएँ एवं धातुएं तेज भाव हो जाएंगी। राजाओं को युद्धभय तथा प्रजा को महँगाई से कष्ट रहे।

शनैश्चरश्चेद्-ग्रहणं निरीक्षेत्, दुर्भिक्षचौरोत्थभयं त्ववृष्टया।
कृष्णानि धान्यानि च कृष्णधातून् कुर्यान्महर्घान्यसितान् विलेपान्॥

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (28/29 अक्तूबर, 2023 ई.)

विश्व परिदृश्य

(अर्थात् यह चन्द्रग्रहण भूगोल पर कहाँ-कहाँ ग्रस्तोदय, कहाँ ग्रस्तास्त, कहाँ सर्वथा अदृश्य और सम्पूर्ण काल के लिए दृश्य होगा ?)



चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहण—वि. संवत् २०८०

वि. संवत् 2080 (सन् 2023-24 ई.) में पृथ्वी पर तीन सूर्यग्रहण तथा एक चन्द्रग्रहण घटित होंगे, जिनका विवरण हम गत पृष्ठों पर लिख दिया है। वि. संवत् 2080 में भूलोक पर दो उपच्छाया ग्रहण भी घटित होंगे।

'उपच्छाया ग्रहण' वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पहिले चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में प्रवेश करता है, जिसे चन्द्र-मालिन्य (Penumbra) भी कहते हैं। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया (भूभा-Umbra) में प्रवेश करता है। तभी उसे वास्तविक ग्रहण कहा जाता है। धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण इन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। अतः धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धालुजनों को इन्हें ग्रहण की कोटि में न मानते हुए एवं ग्रहण सम्बन्धी पथ्य-अपथ्य का विचार न करते हुए पूर्णिमा सम्बन्धित साधारण व्रत, उपवास, दानादि का अनुष्ठान करना चाहिए। दोनों उपच्छाया ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है—

(1) प्रथम उपच्छाया ग्रहण (5/6 मई, 2023 ई. शुक्र/शनि)—यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण आरम्भ से समाप्ति तक भारत में देखा जा सकेगा। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार है—

स्पर्श (Enters Penumbra)	20–44	(भा.स्टैं.टा.) घं.-मिं.	भारत में दृश्य
मध्य	22–53		
मोक्ष (Leaves Penumbra)	25–02		

ध्यान रहे, यह उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चाँदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता है। इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक, स्नान, दानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा।

भारत के अतिरिक्त यह उपच्छाया दक्षिणी-पूर्वी यूरोप (इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, नार्वे स्वीडन के उत्तरी क्षेत्रों को छोड़कर), एशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड में दृश्य होगी।

(2) द्वितीय उपच्छाया ग्रहण (25 मार्च, 2024 ई., सोमवार)—भारत में यह **उपच्छाया दृष्टिगोचर नहीं होगी।** यह उपच्छाया इंग्लैण्ड, ऑयरलैण्ड, इटली, पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, बैल्जियम, हालैण्ड, स्विटज़रलैण्ड, दक्षिणी नार्वे, उत्तर व दक्षिणी अमरीका, पूर्वी रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया (पश्चिमी ऑस्ट्रे. को छोड़कर), न्यूज़ीलैण्ड तथा अधिकतर अफ्रीका के देशों में दृश्य होगी। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं—

स्पर्श (Enters Penumbra)	10–23	(भा.स्टैं.टा.) घं.-मिं.	भारत में अदृश्य
मध्य	12–43		
मोक्ष (Leaves Penumbra)	15–02		

ध्यान दें, उपच्छाया ग्रहण में न तो अन्य पूर्ण अथवा खण्डग्रास ग्रहणों की भान्ति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ती है, न ही सौरपिण्डों (सूर्य-चन्द्र) की भान्ति उनका वर्ण काला होता है। केवल चन्द्रमा की आकृति में उसका प्रकाश कुछ धुंधला सा हो जाता है।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०८० (सन् 2023-24 ई.)

गत संवत् से (**17 जनवरी, 2023 ई.**) कुम्भ राशि में संचरणशील शनि-देव आगामी वि. संवत् २०८० (22 मार्च, 2023 ई. से 8 अप्रैल, 2024 ई. तक) **कुम्भ राशि** में ही संचार करेंगे।

ता. 17 जून, 2023 ई. को कुम्भ राशि में ही वक्री होकर 4 नवम्बर, 2023 ई. से मार्गी होकर संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ-फलदायक बन जाते है, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह अपनी राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्या वक्रा महाशुभाः।।

फलस्वरूप शनिदेव जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में कमी किंवा उनकी कीमतों में अत्यधिक महँगाई, उपद्रव, जनांदोलन, अग्निकाण्ड, राजनीतिक टकराव, विग्रह, आर्थिक संकट एवं राजनैतिक उल्टफेर, छत्रभंग, हिंसक घटनाएँ आदि अशुभ फल घटित होने के संकेत हैं।

जब किसी जातक की कुण्डली में अशुभ शनि वक्री होकर **साढ़ेसाती** या **ढैय्या** के रूप में प्रभाव कर रहा हो तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक संताप, पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनें, शरीर कष्ट, निकट बन्धुओं से विरोध, आय कम व खर्च अधिक, शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

शनि-साढ़ेसाती—गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म-राशि (अथवा नाम-राशि) से **द्वादश, प्रथम** या **द्वितीय** स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर-स्थिति '**शनि-साढ़ेसाती**' कहलाती है। शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती हैं। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले (प्रथम), बाहरवें और दूसरे (द्वितीय) भावों में स्थित राशियों को विशेषतः प्रभावित करता है। इसी को **शनि की साढ़ेसाती** (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

कुम्भ राशिगत संचार कालीन **मकर, कुम्भ** तथा **मीन राशि** वाले जातकों को शनि-साढ़ेसाती के शुभाशुभ (मिश्रित) फल रहेंगे।

- **मकर राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी (22 मार्च, 2023 ई. से) लगभग 2 वर्ष 7 दिन तक रहेगा।
- **कुम्भ राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का शुभाशुभ प्रभाव अभी लगभग 4 वर्ष, 2 मास तथा 12 दिन शेष रहेगा। (22 मार्च, 2023 से)
- **मीन राशि** पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी 6 वर्ष, 4-मास, 17 दिन तक शेष होगा।

शनि की ढैय्या—(लघु-कल्याणी)-गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नामराशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब '**शनि की ढैय्या**' कहलाती है। यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है।

शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को वृथा दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएँ, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

कर्क और वृश्चिक राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

शनि पाया (पाद) विचार—शनि देव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11वें भाव (स्थान) में हो, **तो स्वर्ण-पाद** ; यदि 2, 5, 9वें भाव में हो तो **रजत-पाद** ; यदि 3, 7, 10वें भाव में हो तो **ताम्र-पाद** तथा यदि चन्द्र 4, 8, 12वें स्थान में हो तो **लौह-पाद** होता है।

पाद (पाया) फल विचार—

'लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्।।''

(क) सोने का पाया हो, तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग भय, मानसिक-तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश अधिक रहे।

(ख) चाँदी (रजत) का पाया हो, तो जातक को गत समय में किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है।

(ग) ताम्र-पाया—का शुभ फल प्राप्त होता है। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। सम्बन्धियों तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनते हैं। उच्च-विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति, सवारी (वाहनादि) आदि सुख-सुविधाओं की भी प्राप्ति सम्भव होती है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

(घ) लौह का पाया हो, तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियां अधिक होती हैं। सेहत सम्बन्धी परेशानियां, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना में चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ रहें, प्रयास करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

सुवर्णादि पाया निर्णय—गतवर्ष 17 जनवरी, 2023 ई. को सायं 18घं.-02मिं. पर वृश्चिक राशिस्थ चंद्रकालीन शनिदेव ने कुम्भ राशि में प्रवेश किया है। तदनुसार मेषादि राशियों पर सुवर्णादि पाया वही रहेगा। यथा-

(1) **मेष, सिंह** तथा **धनु** राशियों पर लौह-पाद अशुभ फलदायक रहेगा।
(2) **वृष, कन्या** तथा **कुम्भ** राशियों पर ताम्र का पाया (पाद) शुभ होगा।
(3) **मिथुन, वृश्चिक** तथा **मकर** राशियों पर सुवर्ण-पाद (पाया) मिश्रित फलदायक होगा।
(4) **कर्क, तुला** तथा **मीन** राशियों पर रजत का पाद (पाया) शुभ होगा।

✪ कुम्भ राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल–सं. २०८० ✪
(22 मार्च, 2023 ई. से संवतान्त तक)

शनि का कुम्भ राशि में गोचर फलादेश यद्यपि गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं, परन्तु सन् 2023-24 ई. में मंगल, गुरु आदि ग्रहों का राशि-परिवर्तन होने से शनि के गोचरफल में भी न्यूनाधिक रूपेण अन्तर पड़ जाएगा।

✚ **मेष**–राशि पर शनि की अशुभ नीच दृष्टि रहने से मानसिक एवं शारीरिक कष्ट रहेंगे, आय की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, शनि का पाया भी लौह होने से भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ रहें। आकस्मिक खर्च रहेंगे, परन्तु ता. 22 अप्रै. से गुरु की इसी राशि में स्थिति होने से सन्तान सम्बन्धी शुभ समाचार तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

✚ **वृष**–राशि से दशमस्थ शनि होने से अत्यन्त कठिनाईयों एवं संघर्ष के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु पाया ताम्र होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार, आकस्मिक धन लाभ तथा भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

✚ **मिथुन**–राशि से शनि नवमस्थ होने से कार्य-व्यवसाय एवं भाग्योन्नति में अड़चनें, स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट तथा परिस्थितियाँ विपरीत रहेंगी। पारिवारिक मतभेद रहेंगे। इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से भी निकट बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। उत्तरार्द्ध में कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

✚ **कर्क**–राशि से शनि अष्टमस्थ (ढैय्या) होने से वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु शनि का पाया चाँदी होने से अकस्मात् धन-लाभ, पदोन्नति व विदेश-भ्रमण के चाँस बनेंगे।

✚ **सिंह**–राशि पर शनि की सप्तमस्थ शत्रु दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव या विरोध रहे। शनि का पाया भी लौह होने से स्वास्थ्य विकार, गुप्त चिन्ताएँ, घरेलु तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी।

✚ **कन्या**–राशि को शनि षष्ठस्थ होने से स्वास्थ्य कष्ट, निकटस्थ बन्धु से तनाव, धन-हानि व अनावश्यक खर्च तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया ताम्र (ताँबा) होने से पदोन्नति, धन-लाभ, सुखद विदेश-यात्रा, विवाहादि सुखों की प्राप्ति होगी।

✚ **तुला**–राशि से शनि पंचमस्थ होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। इस राशि को शनि का पाया भी रजत (चाँदी) होने से धन-लाभ, गत किए कार्यों में सफलता, भूमि-वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

✚ **वृश्चिक**–राशि को शनि चतुर्थस्थ होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। जिससे धन-हानि, वृथा कलह-क्लेश, खर्च आदि रहेंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से घरेलु तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी।

✚ **धनु**–राशि से शनि तृतीयस्थ तथा ता. 22 अप्रै. से गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ सोची हुई योजनाओं में सफलता, भूमि-मकान, वाहनादि सुखों में वृद्धि एवं धन-खर्च अधिक होगा। शनि-पाया लौह होने से आय सीमित, तनाव रहे एवं कार्य-व्यवसाय के विघ्न-बाधाएँ होंगी।

✚ **मकर**–राशि को शनि-साढ़ेसाती के कारण कार्य-व्यवसाय में अड़चनें तथा आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। शनि का पाया सुवर्ण होने से धन लाभ व उन्नति के लिए विशेष संघर्ष करना पड़े। मन अशान्त व तनावपूर्ण हालात रहें।

✚ **कुम्भ**–राशि में शनि स्वराशिगत होकर संचार करने (साढ़ेसाती) तथा पाया भी ताम्र होने से किसी नए कार्य की योजना बनेगी। गत किए गए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। परन्तु साढ़ेसाती होने से मानसिक तनाव, घरेलु उलझनें एवं खर्च अधिक रहेंगे।

✚ **मीन**–राशि को शनि द्वादशस्थ (साढ़ेसाती) होने से आय कम व खर्च अधिक, घरेलु व कार्य सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। स्त्री/पति से भी तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। ता. 22 अप्रै. तक गुरु का संचार इस राशि पर रहने से धर्म में प्रवृत्ति एवं लाभ/उन्नति के भी अवसर मिलेंगे।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्राय: क्लिष्ट रोग एवं दु:ख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के

अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि के बीज मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें—

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा—

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि—सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे-गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें। शनि के बीज मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले-तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का पाठ तथा **'शनि वज्र-पञ्जर कवच'** का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभफल के उपाय

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।''*

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''

शनि लघु स्तोत्र—

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य-250 रु.

गुरु का मेष राशिस्थ गोचरफल—संवत् २०८०

गत वि. संवत् २०७९ (2022-23 ई.) में गुरु (बृहस्पति) ने 13 अप्रैल, 2022 ई. को मीन राशि में प्रवेश किया था।

आगामी वि. संवत् २०८० के आरम्भ (22 मार्च, 2023 ई.) से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक गुरु मीन राशि में ही रहेंगे। ता. 22 अप्रैल, 2023 ई. को प्रातः $5^{घं.}$-$14^{मिं.}$ पर गुरु मेष राशि में प्रवेश करेंगे तथा संवतान्त (8 अप्रै, 2024 ई.) तक मेष राशि में ही संचार करेंगे।

वक्री-मार्गी—गुरु 4 सितंबर, 2023 ई. से 30 दिसंबर, 2023 ई. तक वक्री अवस्था में संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! वक्री, अस्त एवं शीघ्रातिचार अवस्था में गुरु कुछ जातक/जातिकाओं को अशुभ फलप्रदायक होता है। अतः इस वक्री-अवस्था कालखण्ड के दौरान देश में दुर्भिक्ष (अकाल) एवं अराजकता का माहौल बनेगा। अर्थात् उपभोग्य वस्तुओं की कमी हो, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी, लोगों में क्लिष्ट रोगों का भय, अशान्ति एवं दुःखों का बाहुल्य रहे। कहीं राज्य में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, लूटमार एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने का भय रहे—

यदा क्रूर ग्रहो वक्री ह्यतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥

ध्यान रहे, गुरु लगभग 15 मार्च, 2023 ई. से 6 मई, 2023 ई. के मध्य अतिचार गति को प्राप्त है।

मेष राशि—मेष राशिस्थ गुरु संचारकालीन (22 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक) चन्दन, पुष्प तथा अन्य सुगन्धित वस्तुएँ एवं च तेलादि सब वस्तुएँ दो मास में महँगी हो

जाएंगी। यद्यपि अनाज आदि उत्पादन में सुभिक्ष (कुशल-क्षेम) रहे। राजाओं में विग्रह अर्थात् पुराने गठबन्धनों में विच्छेद हो। वस्त्र-कपास, सोना, चाँदी, ताँबा तथा मूँग आदि सस्ते होंगे।

चन्दनं कुसुमं वापियेचान्येपिसुगंधयः।
तैलपण्यानि सर्वाणि मासद्वयं महर्घता।।

मीन राशिगत (संवतारम्भ से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक) गुरु का शुभाशुभ गोचरफल इस गतवर्षीय पंचांगदिवाकर (सं. २०७९) के पृष्ठ 45 पर लिख चुके हैं। कृपया पाठक वहाँ देखें।

विशेष ध्यातव्य—मेष राशि पर संचार के समय गुरु की इस राशि पर मित्रगत स्थिति, सिंह राशि पर मित्र दृष्टि तथा धनु राशि पर स्वगृही दृष्टि रहेगी। फलतः इन राशि वालों को गुरु की शुभ दृष्टियाँ होने से उच्चविद्या में सफलता, विवाह-सन्तान सम्बन्धी सुख, विदेश यात्रा योग व धन-सम्पदा की प्राप्ति, भाग्योन्नति, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धार्मिक कार्यों में रूचि आदि अन्य शुभ फल भी घटित होने की सम्भावनाएँ बनती हैं।

✤ मीन राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल ✤

[1 जनवरी, 2023 ई. से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु 12वें होने से मिश्रित फल प्राप्त हों। आय सीमित, खर्च बहुत होंगे। संघर्ष रहे।	भाग्य से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, सवारी, भूमि आदि सुखों में वृद्धि हो।	दशमस्थ गुरु होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद भी व्यवसाय में विघ्न, आय कम व खर्च अधिक रहे।	नवम में गुरु शुभ फल देगा। उच्च-विद्या, कैरियर में सफलता धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़े।	घरेलु व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। तनाव व गुप्त चिन्ता हो।	विशेष परिश्रम के बाद ही निर्वाह योग्य धन मिले, सवारी आदि सुख प्राप्त हो, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।	व्यय अधिक रहे। ऋण-रोग या शत्रु भय हो, बनते कार्यों में अड़चनें रहे। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।	विद्या, भूमि व वाहन सम्बन्धी सुख हों। गृह में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो। धर्म-कर्म में रूचि बढ़े।	गुरु चतुर्थस्थ होने से आराम कम व संघर्ष अधिक, धन-वाहन सम्बन्धी परेशानी, गुजारे योग्य आय बने।	आय सामान्य, अचानक व्यय बढ़ेंगे। शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च, उच्च प्रतिष्ठत लोगों से मेल हो, शीघ्र यात्रा के योग।	लग्नस्थ गुरु पूज्य है, आय कम, खर्च अधिक होंगे। धर्म पालन करने से लाभ के चांस बनेंगे।

✤ मेष राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल-सं. २०८० ✤

[22 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त 8 अप्रैल, 2024 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लग्नस्थ गुरु पूज्य है। शरीर कष्ट व तनाव हो,आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय अल्प व खर्च बहुत होंगे। घरेलु व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों के कारण तनाव रहे।	गुरु लाभ स्थान में होने से भाग्य-वश लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, सवारी, भूमि आदि सुखों में वृद्धि हो।	दशमस्थ गुरु होने से संघर्ष व कठिनाईयों के बाद ही गुजारे योग्य आय, खर्च अधिक, तनाव व रोग-भय।	भाग्य स्थान में गुरु शुभ फल देगा, गत किए गए कार्यों में सफलता, वाहनादि सुख प्राप्ति, धर्म-कर्म में रूचि बढ़े।	गुरु अष्टम में होने से बनते कार्यों में विघ्न रहेंगे। आय कम व खर्च अधिक होंगे। घरेलु उलझनें के कारण आशांति व रोग भय।	विशेष परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वाहनादि सुख, परन्तु सेहत का ध्यान रखें।	गुरु छटे होने से व्यय अधिक रहे। ऋण, रोग व शत्रु भय हो, बनते कामों में अड़चनें रहें। भाग-दौड़ अधिक रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से विद्या, भूमि व वाहन सम्बन्धी सुख हो, गृह में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो, धन लाभ के अवसर प्राप्त हों।	चतुर्थस्थ गुरु होने से विशेष संघर्ष के बाद किंचित धन लाभ हो, गृह कलह व खर्च के कारण मन अशांत रहे।	गुरु तृतीय होने से सामान्य आय, आक-स्मिक खर्च, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें व तनाव बढ़ेंगे।	धन-लाभ व उन्नति के अवसर, शुभ कार्यों पर खर्च, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल, यात्रा, धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़े।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, बृहस्पतिवार का व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

बृहस्पति शान्ति हेतु स्नान योग्य वस्तुएँ—गुरु की अनिष्ट शान्ति (वैवाहिक विलम्ब, विद्या प्राप्ति, पदोन्नति में बाधाएं, पितृदोष आदि दूर करने हेतु) के लिए चमेली पुष्प, पीली सरसों, शहद, गुलर, दमयन्ती, मुलट्ठी, हरिद्रा, मालती पुष्प, सुगन्धबाला, श्वेत आक के नवीन पत्ते एवं गंगाजल आदि स्नान-औषधियों में से यदि कोई वस्तु प्राप्त न हो सके, तो जितनी प्राप्त हो, उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

विशेष—औषध-स्नान के दिन साबुन, शैम्पू आदि को लगाने से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिए। सभी गुरु-औषधि को गंगाजल में मिश्रित शुद्ध जल डालकर पूर्वाभिमुख होकर गुरु के बीजमंत्र से मंत्रपूर्वक स्नान करने से गुरु कृत अनिष्ट प्रभाव से निवृत्ति होती है। औषध स्नान के उपरान्त गुरु के बीज मंत्र का कम-से-कम 3 माला का जप (जप में हरिद्रा की माला या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना) करके ब्राह्मण-दम्पत्ति को मीठा भोजन, पीले वस्त्र एवं अन्य गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र— ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

✤ **मन्त्र प्रयोग विधि तथा गुरु** सम्बन्धी अन्य उपयोगी उपाय व टोटके जानने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **''अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके''** मंगवाकर पढ़ें। **मूल्य-250/- रु.**

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल-वि. संवत् २०८०

गत वि. संवत् २०७९ मध्ये 12 अप्रै., 2022 ई. से राहु मेष राशि में तथा केतु तुला राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् २०८० के प्रारम्भ से (22 मार्च, 2023 ई.) ता. 29 अक्तू., 2023 ई. तक राहु मेष राशि में ही तथा केतु तुला राशि में ही संचार करेंगे।

ता. 30 अक्तू., 2023 ई. को मध्यम गति से सायं 5 बजकर, 43 मिंट पर (17:43) राहु मीन राशि में तथा केतु कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। यद्यपि मेष राशिस्थ राहु, तुला राशिस्थ, केतु का संचारफल गतवर्षीय पंचांग में (पृष्ठ 47) लिख चुके हैं, पुनः पाठकों की सुविधार्थ पुनः लिख रहे हैं—

✤ मेष राशिस्थ राहु का गोचरफल-सं. २०८० ✤
[22 मार्च, 2023 ई. से 29 अक्तूबर, 2023 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
किसी निकट बन्धु से कलह, आर्थिक समस्या हो, वृथा दौड़-धूप, अचानक धन प्राप्ति व खर्च हो।	अपव्यय, व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक, बनते कार्यों में विलम्ब, अकस्मात खर्च हों, मन अशान्त रहे।	कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहनादि सुख प्राप्ति, धन-लाभ, विदेश यात्रा के योग हैं।	वृथा दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलु उलझनों व कलह से मन अशान्त रहे।	घरेलु उलझनों के बावजूद गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे, निज बन्धु से विरोध, वाहनादि सुखों की प्राप्ति।	लाभ कम, संघर्ष, अधिक रहे। शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें।	बनते कार्यों में बाधाएं, धन लाभ कम, खर्च अधिक रहे, तनाव भी रहे, विशेषत: पति/पत्नी में।	अचानक धन लाभ, प्रिय बन्धु से मेल, कार्य-व्यवसाय में सफलता, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।	निकटस्थ सम्बन्धी से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व गुप्त चिन्ता बढ़े, संतान/विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ कम व खर्चों में वृद्धि हो, वृथा दौड़-धूप बढ़े। व्यवसाय में संघर्ष रहे।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी।	घरेलु कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव रहे। रोग भय

✤ तुला राशिस्थ केतु का गोचरफल-सं. २०८० ✤
[22 मार्च, 2023 ई. से 29 अक्तूबर, 2023 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्त्री व परिवार सम्बन्धी चिन्ता, किसी से वैमनस्य, निकटस्थ से धोखा मिलने का भय है।	निज पराक्रम से निर्वाह योग्य धन लाभ, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	घरेलु कलह-क्लेश से मन अशान्त व परेशान, लाभ कम व खर्च अधिक, सन्तान संबंधी चिन्ता रहे।	आर्थिक परेशा-नियों के कारण घरेलु झंझट व अशांति रहे। गुजारे योग्य आय ही होगी।	आशा-अनुकूल सफलता, बिगड़े हुए कार्यों में कुछ सुधार, परन्तु शरीर कष्ट व तनाव बढ़े।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम, खर्च अधिक व नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़े।	आर्थिक परेशानी, रुकावटें व शरीर कष्ट, स्त्री/पति से तनाव बढ़े। बनते कार्यों में विघ्न रहे।	रोग-शोक व शत्रु-भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें, खर्च अधिक व गुप्त परेशानी रहे।	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई मंगल कार्य हो, लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, विदेश यात्रा का योग बने।	धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना, में चोटादि का भय, वाहनादि सुख-साधनों पर खर्च हो।	धन-हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सन्तान संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।

♣ मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल–सं. २०८० ♣

[30 अक्तूबर, 2023 ई. से संवतान्त 8 अप्रैल, 2024 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सामान्य आय के साथ–साथ खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।	धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे। विदेश या दीर्घ यात्रा का विचार बने।	वृथा दौड़-धूप अधिक, बनते कार्यों में विघ्न, घरेलु एवं व्यव-सायिक उलझनों के कारण तनाव बढ़ें।	बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार हों, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में वृद्धि, निज बन्धु से विरोध हो।	लाभ कम, खर्च अधिक रहे, शरीर कष्ट एवं रोग भय रहे, अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें।	बनते कार्यों में अड़चनें, लाभ कम–खर्च अधिक, मानसिक तनाव, परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।	विगत किए गए प्रयासों में सफलता, अचानक धन लाभ, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।	निकटस्थ बन्धु से तनाव, रोग व शत्रु भय, खर्च एवं मानसिक तनाव रहे, सन्तान एवं विद्या सम्बन्धी कार्यों में विघ्न-बाधाएं हों।	कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले, आय के साथ-साथ खर्च अधिक रहे, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	कोई शुभ समाचार प्राप्त हो, धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों, विदेश गमन की योजना बनेगी।	धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे। अचानक लाभ तथा अचानक हानि का भय, मानसिक तनाव रहे।	शरीर कष्ट, तनाव अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, खर्चों की भी अधिकता रहे।

♣ कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल–सं. २०८० ♣

[30 अक्तूबर, 2023 ई. से संवतान्त 8 अप्रैल, 2024 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
निज पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक रहे। किसी शुभ कार्य पर खर्च हो। विदेश यात्रा का योग बने।	संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, सवारी सुख की प्राप्ति, परन्तु घरेलु झंझट व अशांति रहे।	गत किए कार्यों में सफलता प्राप्त हो, धन-लाभ के अवसर प्राप्त हो, किसी मित्र की सहायता से बिगड़ा कार्य बने।	वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहे। हानि होने का भय, शरीर कष्ट व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	संघर्ष अधिक हो, आय कम व खर्च अधिक रहे। स्वास्थ्य में विकार क्रोध अधिक रहे।	बनते कार्यों में अड़चनें, आय कम व खर्च अधिक, तनाव से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु-भय, परेशानियां बढ़ेंगी।	धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो।	धन हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सेहत संबंधी चिंता, खर्च अधिक रहे।	खर्च अधिक, लाभ अल्प हो। घरेलु उलझनों के कारण तनाव तथा अशांति बढ़ेंगी।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हजार की संख्या में जाप करें। **गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र** का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–**ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥**

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हजार की संख्या में जाप करना तथा **संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र** एवं **अपराजिता स्तोत्र** का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–
ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। मूल्य–250/-

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

* आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
* विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
* रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
* पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता॥

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लौह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके॥**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से** करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च–नीच, स्व–गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पश्चि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण–स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेजी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष **2** बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी** पर **अग्नि** का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।—**पं. पन्ना लाल ज्यो.**

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)

शुक्ल पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी (लाभ)	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
२	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
३	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी क्षय	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
४	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
५	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
६	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
७	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
८	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
९	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१०	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
११	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१२	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१३	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१४	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१५	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)

कृष्ण पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
२	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
३	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
४	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
५	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
६	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
७	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
८	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
९	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१०	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
११	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१२	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१३	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१४	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१५	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि

अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

सूर्य क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हज़ार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ **शुक्ल पक्षीय रविवार** या सूर्य षष्ठी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहनादि करें। जप-पाठ के लिए रूद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन (या पुष्प) डालकर अर्घ्य देना चाहिए** तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र–

जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वेदोक्त सूर्यमन्त्र–

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (जप संख्या ७०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

सूर्यार्घ्य मन्त्र–

एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र–"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"॥

सूर्यगायत्री मन्त्र–ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रदोयात्॥

सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक **रविवार का व्रत, सूर्यमणि (मणिक्य)** धारण करना, **औषधि स्नान** (मनः शिला, इलायची छोटी, देवदारू, केशर, खस, कनेरादि लाल पुष्प एवं गंगाजल तथा विधिवत् निर्मित **सूर्ययन्त्र** धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

सूर्य दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की सवत्सा गाय, सुवर्ण, माणक, ताम्र वर्तन, मिष्टान्न, नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

उपाय–(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो–

(3) 108 रविवार तक अथवा प्रतिदिन नियमित रूप से ताम्र वर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(5) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें **'कार्तिक माहात्म्य'** का कार्तिकमास में नित्यप्रति पाठ करके तुलसी के पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

चन्द्रमा शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट, युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

अशुभ चन्द्र की शान्ति के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की **११ हज़ार की संख्या** में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमाशी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र–ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र–ह्रीं दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

चन्द्रमा गायत्री मन्त्र–ॐ अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्॥

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र–ॐ सोम् सोमाय नमः॥

चन्द्रमा अशुभ हो, तो मानसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अँगूठी में चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुच्चा मोती धारण करना, विधिवत, सोमवार एवं पूर्णमाशी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चाँदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचगण्य, श्वेत चन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है।

चन्द्र की शुभता बढ़ाने के लिए दान योग्य पदार्थ :–चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के

वर्क लगी बर्फी। **बलान्वित चन्द्रमा** मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

उपाय–(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती एवं चांदी का कड़ा धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय–

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

मंगल ग्रह = १, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल, बुध अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) में अशुभ कारक होता है। **जन्म कुण्डली** या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम **१० हज़ार की संख्या** में, शुभ मुहूर्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र–ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

पुराणोक्त भौम मन्त्र–ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।

कुमारं–शक्तिं हस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायत्री मन्त्र–ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए **मंगलवार का व्रत** रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान करना परन्तु मांस, मछली, शराब आदि से परहेज़ रखना, विधिपूर्वक बना भौम यन्त्र धारण करना, उद्यापन के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

उपाय–जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे–

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशेषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो–उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

बुध ग्रह कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान को कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (जप संख्या ९०००)

पुराणोक्त बुध मन्त्र–ह्रीं प्रियंगु कलिका श्याम रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्॥

बुध गायत्री मन्त्र–ॐ सौम्यरूपाय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जाप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emareld) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चौपायों को हरा चारा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

बुध के दान की वस्तुएँ–मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्ज़ियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

उपाय–कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो–(3) हरे रंग के वस्त्र एवं हरे रंग की गाड़ी आदि का प्रयोग न करें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायचीं हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

गुरू (बृहस्पति) कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशिगत (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक को अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक को विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरु में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १९,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र—**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ स: गुरवे नम:**(जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरू मन्त्र—ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरूं का-चन संन्निभम्।

बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

गुरु गायत्री मन्त्र—ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरू: प्रचोदयात्॥

संकल्पपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित **गुरू यन्त्र** धारण, औषधि स्नान करना, **गुरूवार** का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गौओं की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ—पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

उपाय—जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें—

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे-चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

◆शुक्र शान्ति के लिए उपाय◆

शुक्र ग्रह जन्म कुण्डली में शुक्र ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

शुक्र ग्रह स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:

शुक्र गायत्री मन्त्र—ॐ भृगुजाताय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्र: प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक्र सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक्र यन्त्र धारण करना, शुक्र-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, **श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती** का पाठ करना तथा पाँच **शुक्रवार व्रत करके पाँच कन्याओं का पूजन करना एवं उन्हें श्वेत वस्तुओं की भेंट देने से ग्रह शान्ति होती है।**

शुक्र दान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

उपाय—कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे—

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे—

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

◆शनि शान्ति के लिए उपाय◆

शनि ग्रह किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशिगत हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हज़ार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (जप संख्या २३०००)

तन्त्रोक्त शनि का लघु मन्त्र–ॐ शं शनैश्चराय नमः

वेदोक्त शनि मन्त्र–ॐ शंन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिरस्त्रवन्तु नः॥

शनि गायत्री मन्त्र–ॐ सूर्यसुताय विद्महे, यमरूपाय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्॥

पुराणोक्त शनि मन्त्र–ह्रीं नीलांजन समा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिक्के अथवा पंचधातु की अंगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाना, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलियां डालना, शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

शनि के दान योग्य वस्तुएँ–उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें–

(2) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा '**शनि मन्दिर**' में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

(3) अष्टम भाव में शनि अशुभ एवं रोगकारक हो, तो संकटनाशन श्री गणेशस्तोत्र का पाठ एवं श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखना चाहिये।

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

राहु जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जनित अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१८ हज़ार की संख्या** में जाप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त राहु मन्त्र–ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

राहुगायत्री मन्त्र–ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल वहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अपाहज एवं कुष्टाश्रम में अनाज, फल, आदि।

राहु दान योग्य वस्तुएँ–सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्वल, विल पत्र, मौसमी फल, कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

उपाय–अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें–

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते हुए जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

केतु कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशिगत हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१७ हज़ार की संख्या** में जाप करना लाभदायक रहता है–

तन्त्रोक्त केतु मन्त्र–ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

केतु गायत्री मन्त्र–ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ट आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यन्त्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

केतु-दान योग्य, वस्तुएं–लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना। **शास्त्रोक्त एवं लाल किताब सम्बन्धी** अधिक जानकारी एवं उपायों के लिए हमारी पुस्तक '**अरिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके**' मंगवाकर पढ़ें।

जन्मपत्री में द्वादशांश/त्रिशांश कुण्डली निर्माण एवं फलित विचार

गतवर्षों वि. संवत् 2077 से 2079 तक **पंचांगदिवाकर** में षड्वर्ग के अन्तर्गत होरा, **द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश कुण्डली द्वारा फलादेश तथा विश्लेषण** कर आएं हैं। इस वर्ष उसी क्रम में द्वादशांश, त्रिशांश कुण्डली विचार व फलादेश का विश्लेषण करेंगे।

राशि के बाहरवें भाग अर्थात् 2 अंश 30 कला को द्वादशांश कहते हैं। इसमें माता-पिता के सुख का विशेष रूप से विचार किया है। **स्याद द्वादशांशे पितृ-मातृ सौख्यम्।**

द्वादशांश की गणना प्रथम अपनी ही राशि से होती है। बाद में क्रम से दूसरा, तीसरा आदि आगामी राशि का होता है। सुगमता के लिए द्वादशांश चक्र दिया जाता है।

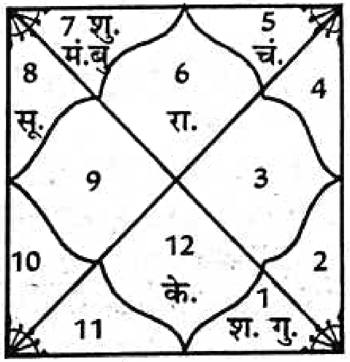
द्वादशांश चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	अंश-कला
प्रथम भाग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	2°-30′तक
द्वितीय भाग	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	5°-00′तक
तृतीय भाग	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	7°-30′तक
चतुर्थ भाग	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	10°-0′तक
पंचम भाग	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	12°-30′तक
षष्ठ भाग	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	15°-0′तक
सप्तम भाग	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	17°-30′तक
अष्टम भाग	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	20°-00′तक
नवम भाग	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	22°-30′तक
दशम भाग	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	25°-0′तक
एकादश भाग	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	27°-30′तक
द्वादश भाग	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	30°-00′तक

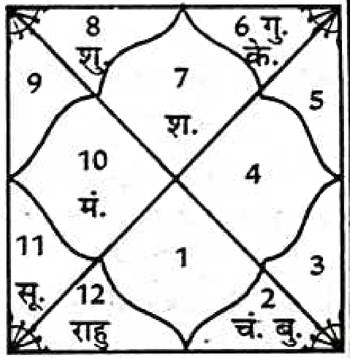
उदाहरण—गतवर्षीय पंचांग में कन्या लग्न के जातक का लग्न स्पष्ट 5/2°/58′/13″ निकला था तदनुसार कन्या लग्न स्पष्ट 2/30 अंशादि से अधिक होने द्वादशांश चक्र का द्वितीय भाग अर्थात् **तुला लग्न** होगा। तुला लग्न में सभी ग्रह का स्थापन जन्म के ग्रह स्पष्ट के आधार पर ऊपर दी द्वादशांश-तालिकानुसार आगे दी गई कुण्डली उदाहरण कुण्डली बनेगी।

प्रस्तुत जन्म कुण्डली अनुसार जातक की द्वादशांश लग्न कुण्डली में तुला लग्न उदित है। द्वादशांश शुक्र स्त्री ग्रह होकर शत्रु राशि में पड़ा है तथा चन्द्रमा की शत्रु दृष्टि द्वारा वीक्षित है, जिस कारण जातक को माता के सुख में कमी रही। इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली का चतुर्थेश (गुरु) द्वादशांश कुं. में 12वें भाव में केतु युक्त होना भी मातृ सुख में कमी करता है। द्वा. कुण्डली में दशमेश चन्द्र **उच्चस्थ** होने पर भी शत्रु ग्रह बुध के साथ है तथा

उदाहरण जन्म कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली



पितृ कारक ग्रह सूर्य शत्रु राशि (कुम्भ) में होने से पिता का सुख 30 वर्ष की आयु (मध्यम से कम आयु) तक रहा।

● द्वादशांशपति यदि जन्म लग्न में हो तो जातक पिता के समान धनवान एवं गुणवान नहीं होता, बल्कि पिता से कुछ कम गुणी एवं अल्पतर धनी होता है।

● यदि द्वादशांशेश जन्म कुण्डली के धन स्थान में हो तो जातक पिता से अधिक शिक्षित, गुणी एवं अधिक धनी एवं सवारी आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है।

● द्वादशांश स्वामी जन्म कुं. में तृतीय स्थान में हो, तो पिता से अधिक उद्यमी एवं पराक्रमी होता है।

● **चतुर्थ** स्थान में हो तो जातक भाग्यशाली, भूमि, सवारी आदि सुखों से युक्त, **पंचम** में हो, तो जातक बुद्धिमान एवं पिता को सुख देने वाला होता है।

● द्वादशांशेश **छटे** भाव में हो, तो जातक अधिक विरोधियों एवं शत्रुओं वाला होता है।

● द्वा. सातवें भाव में हो तो स्त्री सुख एवं धन लाभ होता है। विवाह के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है।

● द्वादशांशेश अष्टम भाव में हो, तो पिता की आकस्मिक दुर्घटना से अकाल मृत्यु का भय होता है।

● नवम स्थान में द्वादशांशेश हो, तो पिता धार्मिक वृत्ति वाला, परोपकारी एवं पुण्यवान प्रकृति का होता है।

● द्वादशांशेश दशम स्थान में हो तो जातक पिता से अधिक सुख साधनों से सम्पन्न होता है।

● द्वादशांशपति लाभ स्थान में बली होकर पड़ा हो, तो जातक की शेयर, सट्टा, लाटरी आदि से आकस्मिक धन लाभ होने की सम्भावना होती है।

● द्वादशांश स्वा. यदि बाहरवें भाव में हो, तो जातक की आय के साधन कम, परन्तु व्यय अधिक होते हैं।

● द्वादशांश स्वामी जन्म कुण्डली में उच्चस्थ या स्वगृही हो तो जातक अत्यन्त भाग्यशाली, वाहनादि सुखों से सम्पन्न होता है। यदि द्वा. नीचस्थ, पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा अस्तंगत हो, तो जातक धन सम्बन्धी, रोग एवं शत्रुओं से सम्बन्धी अनेक चिन्ताओं से युक्त रहता है। पारिवारिक सुख कम होता है।

द्वादशांश फल विचार—द्वादशांश कुण्डली से जातक के माता-पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। जातक के माता-पिता की आयु, उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति, माता-पिता से प्राप्त सुख का ज्ञान द्वादशांश कुण्डली के विवेचन से मिल जाता है। द्वादशांशेश का जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में फल ऊपर में लिख चुके हैं–

द्वादशांश लग्नेश एवं ग्रह स्थिति फल

(1) सूर्य यदि द्वादशांश लग्नेश हो तो जातक का अस्थिर मन, बहुत उग्र और उतावला होता है। यदि सूर्य द्वादशांश कुण्डली में अपनी ही राशि में हो तो जातक का तीक्ष्ण स्वभाव, अत्यधिक परिश्रमी, सामान्य बुद्धि, वह बाहर से तेज परन्तु मन से डरा या भयभीत सा रहता है।

(2) **चन्द्रमा** यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में चन्द्र की राशि कर्क हो तो जातक विद्वान, चंचल, बाई-बन्धुओं एवं परिवार की पालना (पोषक) करने वाला होता है। सदाचारी, अपने कुल में श्रेष्ठ, धार्मिक निष्ठा से युक्त होता है। सदाचारी, अपने कुल में श्रेष्ठ, धार्मिक निष्ठा से युक्त होता है। **चन्द्रमा** भी उसमें हो तो जातक शुभ लक्षणों वाले पुत्र का पिता, धन-सम्पदा, वाहनों से युक्त विनीत प्रकृति वाला होगा। **मंगल,** हो तो जातक भाई-बन्धुओं से युक्त, उदार होता है। **बुध** हो, तो जातक विनम्र बातचीत करने में कुशल देश-विदेश की यात्राएँ करने वाला होता है।

(3) **मंगल** यदि **द्वादशांश लग्नेश** हो तो जातक उग्र स्वभाव का झगड़ालू, रक्त व चर्म रोग से पीड़ित होता है। **मंगल** की राशि (द्वादशांश लग्न में 1 या 8) में **सूर्य** स्थित हो तो जातक पाप कर्मों की ओर प्रवृत्त, भोगी हो सकता है। **चंद्रमा** हो, तो धर्म परायण, सुशील, मंगल हो तो सुन्दर किन्तु, पापी, कुव्यसनी, परनिन्दक, बुध हो, तो रोग ग्रस्त, बहुत परिश्रमी, महिलाओं से दुर्व्यवहार करता है। **गुरु** हो तो जातक दुष्ट, रोग पीड़ित तथा दुराचारी, **शुक्र** हो तो जातक विदेश में जाने का इच्छुक, जुआरी, अविवेकी, बल-पौरुष सम्पन्न तथा स्त्रियों को प्रिय होता है। **शनि** मंगल के द्वादशांश में हो, तो जातक कुटिल, आलसी, पित विकार जन्य रोग से ग्रस्त, डरपोक होता है।

(4) **बुध** यदि **द्वादशांश लग्नेश** हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में मिथुन अथवा कन्या राशि हो, **सूर्य** उसमें स्थित हो, तो जातक को माता-पिता की स्नेह, छाया का सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है, जातक सत्यनिष्ठ व आतिथ्य प्रेमी होता है। **चंद्र** हो, तो जातक सौम्य स्वभाव का, तकनीकी ज्ञान सम्पन्न, प्रतिष्ठित, यशस्वी, सेवा सत्कार करने वाला व सुखी होता है। **मंगल** हो, तो जातक उद्यमशील, धनी, बहुमूल्य वस्त्र व आभूषणों से युक्त, सरकार की ओर से पीड़ित, धैर्यशाली व सुन्दर पत्नी वाला होता है। **बुध** हो, तो ज्योतिष, आध्यात्म में रुचि रखने वाला, विद्वान, विविध कलाओं में दक्ष व शत्रुओं पर प्रभावी होता। **गुरु** हो, तो प्रतिष्ठित, सर्वगुण सम्पन्न तथा पुत्र, भाई-बन्धुओं का स्नेह प्राप्त। **शुक्र** हो, तो जातक सुन्दर आकर्षक, भोग-विलास में तत्पर, खर्चीले स्वभाव का तथा पिता से विचार-वैमनस्य रहेगा। **शनि** हो, तो जातक प्रतिभाशाली, समयानुसार व्यवहार करने वाला, विनम्र होता है।

(5) गुरु यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में धनु या मीन राशि हो, **सूर्य** उस में स्थित हो, तो जातक स्त्रियों में प्रिय, संगीत प्रिय, विनयशील, धनाढ्य, धार्मिक विचारों से युक्त होता है। **चंद्रमा** हो, तो जातक सौम्य, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व, वाहनादि भौतिक सुखों से युक्त होता है। **मंगल** गुरु के द्वादशांश में हो, तो जातक बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने वाला, स्वतन्त्रता प्रिय, धनी, पिता से सहायता प्राप्त करने वाला व पैतृक धन से सुखी होगा, **बुध** हो, तो जातक प्रतिष्ठित, माता-पिता, भाई-बन्धुओं का सहयोग एवं स्नेह प्राप्त करने वाला, **गुरु** अपने ही द्वादशांश में होकर लग्न भाव में हो, तो जातक स्वस्थ शरीर युक्त, सौम्य एवं धार्मिक स्वभाव, परिवार या किसी संस्था/आफिस का मुखिया होता है। **शुक्र** हो, तो जातक प्रतिष्ठित, पुत्रवान, धनवान, धार्मिक तथा सभी प्रकार के भौतिक सुखों को भोगने वाला होगा। **शनि** हो, तो जातक संकोचशील, विनम्र, मान-सम्मान प्राप्त प्रतिष्ठित, भाई-बन्धुओं का सुख प्राप्त करने वाला होगा।

(6) **शुक्र** यदि **द्वादशांश** लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में वृष या तुला राशि हो, **सूर्य उसमें स्थित हो,** तो जातक शूरवीर, किसी विशेष कला में निपुण तथा यशस्वी होता है। **चंद्रमा हो,** तो धन, वैभव, स्त्री तथा भौतिक सुख प्राप्त करने वाला व विनम्र होगा। **मंगल हो,** तो जातक सुन्दर, शत्रुजित, परिश्रमी, महिलाओं का प्रिय होता है। **बुध हो,** तो जातक का सौम्य स्वभाव, धार्मिक, ज्योतिष तथा पठन-पाठन का शौकीन होता है। **गुरु हो,** तो जातक प्रभावशाली वक्ता, विद्वान, धार्मिक, संगीत प्रेमी, परिवार या संस्था का मुखी होता है। **शुक्र हो,** तो जातक संगीत-कला प्रेमी, समाज में प्रतिष्ठित, सौन्दर्य प्रेमी तथा रतिकुशल होता है। **शनि हो,** तो जातक खाने-पीने का शौकीन, वाहन, भूमि तथा सुन्दर, सुशील पत्नी/पति का सुख प्राप्त होता है।

(7) **शनि** यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में मकर या कुम्भ राशि हो, **सूर्य उसमें स्थित हो,** तो जातक दुर्बल, डरपोक, कमज़ोर यौन सामर्थ्य वाला, चिड़चिड़ेपन वाला होता है। **चन्द्रमा हो,** तो जातक सत्यनिष्ठ, धनी किन्तु थोड़ा आलसी, उसके शौक बहुत कम होते हैं। भाई-बहन, बन्धु, बहुधा उसकी अपेक्षा या त्याग करते हैं। **मंगल हो,** तो निकट भाई-बन्धुओं से झगड़ा/विवाद, जातक झगड़ालू, चंचल तथा अधिक बोलने वाला होता है। **बुध हो,** तो जातक अपव्ययी, आर्थिक स्थिति मध्यम, अनेक रोगों से युक्त होकर बहुत कष्ट पाता है। **गुरु हो,** तो जातक अश्लील, बहुत कष्ट पाने वाला होता है। **शुक्र हो,** तो जातक जन्म स्थान से दूर रहने वाला, दुर्बल शरीर व रोगों से पीड़ित होता है। **शनि हो,** तो जातक स्थिर बुद्धि, प्रतिष्ठित, मुखिया, दुराचारी भी हो सकता है।

माता-पिता की आयु व स्वास्थ्य

द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख मिलता है। पिता दीर्घजीवी और सामान्य स्वास्थ्य को

बनाए रखने वाला होता है। परन्तु यदि द्वादशांशेश नीच, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में हो अथवा त्रिक् भाव (6, 8, 12) में हो, तो जातक को पिता का अल्प सुख होता है अथवा पिता को शरीर कष्ट रहता है।

इसी भान्ति यदि द्वादशांश पति स्त्री ग्रह हो तथा शुभ एवं स्वराशि, मित्र राशि या उच्च में स्थित होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो माता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यदि वही स्त्री ग्रह द्वादशांश कुण्डली में पाप युक्त या पाप दृष्टिगत होकर 6, 8 या 12वें भावों में हो, तो माता का अल्प सुख होता है अथवा माता को शरीर कष्ट रहता है।

यदि द्वादशांश लग्नेश पुरुष ग्रह हो, परन्तु वह मित्र राशि, स्वराशि या उच्च राशि में केन्द्र-त्रिकोण में बैठा हो और वह राशि स्त्री राशि हो, तो मिश्रित परिणाम मिलते हैं। अर्थात् जातक का पिता दीर्घजीवी तो हो सकता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य खराब रह सकता है।

- द्वादशांशेश छठे भाव में माता-पिता को रोगी, अष्टम में हो, तो अपमृत्यु का भय तथा 12वें भाव में हो, तो धन हानि एवं अपव्यय होता है।
- द्वादशांश स्वामी तथा जातक के लग्न स्वामी में मैत्री हो, तो माता-पिता से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यदि लग्नेश व द्वादशांश स्वामी शत्रु क्षेत्री हो, तो परस्पर वैमनस्य रहता है।

त्रिशांश कुण्डली निर्माण एवं फल विचार

इस राशि का तीसवां भाग त्रिशांश कहलाता है। (त्रिंश + अंश = त्रिंशांश)। त्रिशांश कुण्डली बनाने के लिए अन्य वर्ग कुण्डलियों के निर्माण की विधि से अलग विधि अपनाई गई है।

इस कुण्डली में त्रिशांशों का स्वामित्व, प्रकाश स्रोतों सूर्य और चंद्र में नहीं बांटा जाता। इसे केवल पांच तारा ग्रहों मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि को ही सौंपा जाता है। किसी ग्रह का कितने त्रिंशांशों पर अधिकार होगा और यह अधिकार किस क्रम से होगा, इसका निर्धारण भी सम और विषम राशियों में अलग-अलग किया जाता है। त्रिशांश में प्रत्येक राशि में 5-5 खण्ड होते हैं।

विषम राशियों में–मेष, मिथुन, सिंह आदि में 1 से 5 अंश तक, प्रथम खण्ड का स्वामी **मंगल**, 6 से 10 अंश तक द्वितीय खण्ड का **शनि**, 11 से 18 अंश तक के खण्ड का **गुरु**, 19 से 15 तक **बुध**, 26 से 30 अंश तक पंचम खण्ड का स्वामी **शुक्र** होता है। अर्थात् विषम राशि में स्थित कोई ग्रह 16 से 30 अंश के बीच होगा तो वह ग्रह शुक्र के त्रिशांश में माना जाएगा।

सम राशियों में–वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में 5 अंश तक **शुक्र** का, दूसरा 6 से 12 अंश तक **बुध का**, तीसरा (13 से 20°) तक **गुरु का**, चौथा (21 से 25) अंश तक **शनि का** और पांचवा 26 से 30 अंश तक **मंगल का** त्रिशांश होता है।

विषम राशि का त्रिशांश चक्र

अंश	स्वामी	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुंभ
1-5	मंगल	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.
6-10	शनि	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.
11-18	गुरु	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.
19-25	बुध	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.
26-30	शुक्र	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.

सम राशि का त्रिशांश चक्र

अंश	स्वामी	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चि.	मकर	मीन
1-5	शुक्र	2 शु.	2 शु.	2 शु.	2 शु.	2 शु.	2 शु.
6-12	बुध	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.
13-20	गुरु	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.
21-25	शनि	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.
26-30	मंग.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.

त्रिशांश चक्रों द्वारा उदाहरण कुण्डली के लिए आप **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)** का अध्ययन कर सकते हैं।

त्रिशांश कुण्डली द्वारा फल विचार

(1) त्रिशांश कुण्डली से जातक के जीवन में होने वाले मानसिक एवं शारीरिक कष्टों, संघर्षों, कठिनाईयों, लाभ-हानि एवं अन्य सम्भावित दु:खों व परेशानियों का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त जातक सम्बन्धी चारित्रिक विशेषताओं, गुण-दोषों आदि का भी पता चलता है। त्रिशांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह गुरु, बुध अथवा शुक्र हो, तो जातक अपने परिवार तथा अन्य लोगों के साथ अनुकूल आचरण एवं सद्व्यवहार करने वाला, परोपकार एवं शुभ कार्य करने वाला, अच्छी वाणी बोलने वाला होता है। इसके विपरीत यदि त्रिशांश पति ग्रह शनि, मंगल आदि हो, तो जातक क्रोधी स्वभाव का, कटु वाणी बोलने वाला होता है। इसके विपरीत यदि त्रिशांश पति ग्रह शनि, मंगल आदि हो, तो जातक क्रोधी स्वभाव का, कटु वाणी बोलने वाला होता है तथा लोगों के साथ उसका व्यवहार भी अशिष्टता से भरा हुआ एवं विपरीत आचरण वाला होता है।

(2) त्रिशांश लग्न का स्वामी, यदि शुभ ग्रह होकर अपनी उच्च या स्वराशि अथवा मित्र क्षेत्री हो, तथा किसी पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट न हो, तो जातक-जातिका स्वस्थ, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। इसके विपरीत यदि त्रिशांश स्वामी ग्रह अशुभ हो, या नीच एवं शत्रु राशिगत होकर पापाक्रान्त हो, तो जातक-जातिका रुग्ण शरीर एवं अनाकर्षक व्यक्तित्व वाला, क्रोधी एवं चिड़चिड़ा स्वभाव, परिवार वालों के साथ मामूली बातों पर विवाद रहे तथा उसकी मृत्यु लम्बी बीमारी के बाद कष्टपूर्ण होती है।

(3) त्रिशांश पति ग्रह कुण्डली में छटे भाव में शत्रु नीचादि राशि में हो, तो ग्रह राशि अनुसार रोग आदि से कष्ट, धन सम्बन्धी परेशानी, ऋण के कारण चिन्ता हो। त्रिशांश पति अष्टम में हो तो सरकारी विभाग द्वारा दण्ड या परेशानी हो तथा द्वादश भाव में हो, तो जातक की दौड़-धूप एवं कष्टों का सामना अधिक रहता है। *आय कम तथा खर्च भी अधिक होते हैं।*

(4) त्रिशांशपति यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो, तो जातक को भूमि, जायदाद, मकान, सुन्दर एवं सुशील स्त्री एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है।

(5) त्रिशांश कुण्डली में अधिक ग्रह उच्च, स्वराशि या मित्र क्षेत्री हों, तो अथवा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो जातक साहसी, स्वावलम्बी, धन-सम्पदा, परिवार एवं वाहनादि सुखों से युक्त, धार्मिक, उच्च-प्रतिष्ठित एवं पराक्रमी होता है। यदि अधिक ग्रह नीच, शत्रु राशि आदि में हो, तो जातक को धन-सम्पदा आदि सुखों में कमी तथा व्यवसाय में भी साधनों की कमी तथा संघर्ष व कठिनाईयां अधिक होती हैं।

(6) **मानसागरी** के अनुसार त्रिशांश कुण्डली फल-कथन करते समय सत्त्वगुणी, रजोगुणी एवं तमोगुणी ग्रहों में जो अधिक बली हो, उसी के अनुसार फल कहना चाहिए, परन्तु उस फल-कथन में जातक की जाति, देश एवं कुलाचार आदि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

सत्त्वं रजस्तमो वा त्रिशांशे यस्य भास्करस्तादृक्।
बलिनः सदृशी मूर्त्ति बुद्ध्वा वा जातिकुलदेशान्।। (मानसागरी)

(7) सूर्य, गुरु व चन्द्रमा **सत्त्वगुणी** ग्रह हैं। बुध-शुक्र **रजोगुणी** तथा शनि-मंगल तमोगुणी ग्रह है। ये सभी ग्रह अपने गुण स्वभावानुसार (आत्मदृश) फल प्रदान करते हैं।

(क) त्रिशांश कुण्डली में सत्त्वगुणी ग्रह (सूर्य, चंद्र, गुरु) बली हों, अथवा लग्न में उनका बाहुल्य हो, एवं उच्च राशि या मित्र राशि हो कर केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में हों, तो जातक सत्यवक्ता, परोपकारी, दयालु, धर्म-परायण, ब्राह्मण-देवताओं का भक्त, संतोषी, सरल हृदय, क्षमाशील एवं सद्व्यवहार करने वाला होता है।

(ख) त्रिशांश में रजोगुणी ग्रह (बुध, शुक्र) अधिक प्रभावी (बली) हों, तो जातक भावुक, संगीत, गायन एवं ललित कलाओं में विशेष रूचि रखने वाला, व्यवहार कुशल, धन-सम्पदा, वाहन एवं स्त्री व सन्तान आदि सुखों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रखने वाला, क्रय-विक्रय करने में कुशल, अपनी स्त्री एवं परिवार से विशेष प्रेम रखने वाला तथा लोक व्यवहार में कुशल होता है।

(ग) त्रिशांश कुण्डली मे यदि **तमोगुणी** ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतु) ग्रहों का प्रभाव अधिक हो, तो जातक क्रोधी, आलसी, अधिक सोना वाला, असत्यवादी, लोभी, षड्यन्त्र आदि कार्यों में कुशल, मदिरा माँस एवं तामसिक भोजन करने वाला, स्वार्थी, अपने कार्य की सिद्धि के लिए नीति-अनीति का विचार न करने वाला होता है।

(घ) **मिश्रित प्रभाव**–कई बार जन्म कुण्डली एवं त्रिशांश आदि कुण्डलियों में लग्न एवं लग्नेश पर **सत्त्व, रजस एवं तमोगुणी** सभी प्रकार के ग्रहों का न्यूनाधिक प्रभाव होता है जिससे जातक के स्वभाव में अच्छे व बुरे सभी गुणों का मिश्रण पाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में यदि जातक को पारिवारिक व सामाजिक परिवेश से अच्छे संस्कार मिले हों तथा स्वयं भी सुशिक्षित हो, तो ईश्वर कृपावश उसमें अच्छे गुणों का उद्रेक होता है तथा उसे ईश्वर, भक्ति, ज्ञान, सात्विक धन, सुन्दर व सुशील स्त्री आदि अच्छे फल प्राप्त होते हैं। अन्यथा यदा-कदा अशुभ फल भी होते हैं।

(8) आचार्य वराहमिहिर ने अपने ही त्रिशांश में स्थित ग्रहों का फल शनि के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रहों का फल शुभ ही माना है, जैसे-

(क) मंगल यदि अपने ही त्रिशांश में हो, तो जातक उत्साहशील, साहसी, पराक्रमी, उद्यमी एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, शत्रुओं पर सफलता पाने वाला होता है। जातक निज उद्योग द्वारा धनार्जन करने वाला, भूमि, वाहन, आवास, स्वास्थ्य एवं सुन्दर व सुशील स्त्री (पति), व सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है।

(ख) यदि शनि अपने ही त्रिशांश में हो, तो जातक भूमि, मकान, वाहन, धन-सम्पदा आदि सुख-साधनों से तो युक्त होता है। परन्तु पारिवारिक एवं वैवाहिक सुखों में कमी होती है। ऐसा जातक कामुक तथा सवारी आदि से भ्रमण का शौकीन होता है। जातक का स्वास्थ्य भी खराब रहता है।

(ग) गुरु अपने ही त्रिशांश का हो, तो जातक धर्म-परायण, परोपकारी स्वभाव, बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिष्ठित एवं उच्चशिक्षित होता है। जातक धन-सम्पदा से युक्त, स्त्री, पुत्र, सवारी एवं पारिवारिक सुखों से युक्त भाग्यशाली होता है।

(घ) यदि बुध अपने ही त्रिशांश में स्थित हो, तो जातक बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, कुशलवक्ता, हस्त शिल्प आदि तकनीकी कार्यों में निपुण, कला प्रेमी, क्रय-विक्रय एवं उद्योग आदि कार्य करने में कुशल होना है। व्यवसाय में भी गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

(ङ) यदि शुक्र अपने त्रिशांश का हो तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, धन-सम्पदा, सुन्दर एवं सुशील स्त्री एवं वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला, संगीत, गायन, सौन्दर्य एवं ललित कलाओं की ओर विशेष रूचि रखने वाला होता है।

मंगल आदि ग्रहों का अन्य ग्रहों के त्रिशांश का फल

(क) मंगल, शनि के त्रिशांश में हो, तो जातक कामुक, विलासप्रिय, परस्त्री लोलुप, अपनी परिस्थितियों से असन्तुष्ट तथा अत्यन्त संघर्ष के बाद जीवन में उन्नति करता है।

(ख) मंगल गुरु के त्रिशांश में हो, तो जातक धार्मिक आस्थाओं से युक्त, परोपकारी एवं दयालु स्वभाव, उच्च विद्या प्राप्त एवं विद्वान् होता है। जातक अध्यापन, मंत्री, परामर्श देने वाला, पुरोहित, न्यायाधीश आदि के कार्यों में सफल होता है।

(ग) मंगल बुध के त्रिशांश में हो, तो जातक व्यवहार-कुशल, भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सहायक, स्त्री, सन्तान, धन आदि सुखों से युक्त होता है।

(घ) मंगल शुक्र के त्रिशांश में हो, तो जातक कामुक एवं विलास प्रिय, गीत-संगीत, वस्त्र, आभूषण एवं स्त्रियों की संगति करने को उत्सुक होता है। खान-पान एवं भोग-विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक करता है। अभिनय, नृत्य, गायन, संगीत, चित्रकारी में रुचि एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

नोट–षड्वर्ग सम्बन्धी विस्तृत फलादेश हेतु हमारे कार्यालय से फलित सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें।
सम्पादक–पं. विवेक शर्मा

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य-आदि योग-वि. संवत् २०८० (सन् 2023-2024 ई.)

दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त्त का अभाव हो, तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सकता हो, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं—सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग, सिद्धि, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग। **'यथा नाम तथा गुणा'** उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धिकारक हैं।

(1) सर्वार्थ सिद्धि योग—महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे—कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रेक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थसिद्धि योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

(2) अमृतसिद्धि योग—में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं।** परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी हैं। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। **उदाहरण**—जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना है, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अत: इस काल को त्याग देना चाहिए।

(3) रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

(4) गुरुपुष्य योग— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च-विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है। परन्तु **'विवाह'** सर्वथा त्याज्य है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्रमा निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे। ध्यान रहे,** इस वर्ष गुरु 31 मार्च, 2023 ई. से 29 अप्रैल तक 2023 ई. तक अस्त रहेगा। जबकि शुक्र 2 अगस्त, 2023 ई० से 18 अगस्त, 2023 ई. तक अस्त रहेगा।

—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्त्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2023 ई.	घं. मिं.	2023 ई.	घं. मिं.
23 मार्च	सू. उ.	24 मार्च	13 22
27 मार्च	सू. उ.	28 मार्च	सू. उ.
30 मार्च	सू. उ.	31 मार्च	सू. उ.
5 अप्रै.	11 23	6 अप्रै.	सू. उ.
8 अप्रै.	सू. उ.	8 अप्रै.	13 59
10 अप्रै.	सू. उ.	10 अप्रै.	13 39
14 अप्रै.	9 14	15 अप्रै.	7 36
18 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	1 01
20 अप्रै.	सू. उ.	20 अप्रै.	23 11
22 अप्रै.	23 24	23 अप्रै.	सू. उ.
24 अप्रै.	सू. उ.	25 अप्रै.	2 07
27 अप्रै.	सू. उ.	28 अप्रै.	सू. उ.
3 मई	सू. उ.	3 मई	20 56
12 मई	सू. उ.	12 मई	13 03
16 मई	सू. उ.	16 मई	8 15
18 मई	सू. उ.	18 मई	7 23

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2023 ई.	घं. मिं.	2023 ई.	घं. मिं.
20 मई	8 03	21 मई	सू. उ.
22 मई	सू. उ.	22 मई	10 37
25 मई	सू. उ.	25 मई	17 54
29 मई	02 20	29 मई	सू. उ.
31 मई	सू. उ.	31 मई	6 00
5 जून	3 23	5 जून	सू. उ.
11 जून	14 32	12 जून	सू. उ.
13 जून	13 33	14 जून	सू. उ.
17 जून	सू. उ.	17 जून	16 25
25 जून	10 11	26 जून	सू. उ.
30 जून	16 10	1 जुला	सू. उ.
2 जुला	13 18	3 जुला	सू. उ.
9 जुला	सू. उ.	9 जुला	19 30
11 जुला	सू. उ.	11 जुला	19 05
12 जुला	19 44	13 जुला	सू. उ.
18 जुला	5 11	18 जुला	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2023 ई.	घं. मिं.	2023 ई.	घं. मिं.
21 जुला	13 58	22 जुला	सू. उ.
23 जुला	सू. उ.	24 जुला	सू. उ.
28 जुला	1 28	29 जुला	0 55
30 जुला	सू. उ.	30 जुला	21 33
7 अग.	1 44	7 अग.	सू. उ.
9 अग.	1 32	10 अग.	सू. उ.
14 अग.	11 07	15 अग.	सू. उ.
15 अग.	13 59	16 अग.	सू. उ.
18 अग.	सू. उ.	18 अग.	22 57
20 अग.	सू. उ.	21 अग.	4 22
24 अग.	9 04	25 अग.	9 14
27 अग.	सू. उ.	27 अग.	7 16
28 अग.	5 15	28 अग.	सू. उ.
29 अग.	2 43	29 अग.	सू. उ.
3 सितं.	10 39	4 सितं.	सू. उ.
5 सितं.	9 00	7 सितं.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2023 ई.	घं. मिं.	2023 ई.	घं. मिं.
10 सितं.	17 07	11 सितं.	20 01
12 सितं.	सू. उ.	12 सितं.	23 01
17 सितं.	सू. उ.	17 सितं.	10 02
20 सितं.	14 59	21 सितं.	15 35
24 सितं.	13 42	25 सितं.	सू. उ.
25 सितं.	11 55	26 सितं.	सू. उ.
29 सितं.	23 18	30 सितं.	सू. उ.
1 अक्तू.	सू. उ.	1 अक्तू.	19 28
3 अक्तू.	सू. उ.	3 अक्तू.	18 04
4 अक्तू.	सू. उ.	5 अक्तू.	सू. उ.
6 अक्तू.	21 32	7 अक्तू.	सू. उ.
8 अक्तू.	सू. उ.	9 अक्तू.	2 45
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	21 01
22 अक्तू.	सू. उ.	22 अक्तू.	18 44

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2023 ई.	घं. मिं.	2023 ई.	घं. मिं.
23 अक्तू.	सू. उ.	23 अक्तू.	17 14
27 अक्तू.	9 25	28 अक्तू.	सू. उ.
31 अक्तू.	4 01	31 अक्तू.	सू. उ.
1 नवं.	सू. उ.	2 नवं.	4 36
3 नवं.	5 57	4 नवं.	सू. उ.
5 नवं.	सू. उ.	5 नवं.	10 29
12 नवं.	1 47	12 नवं.	सू. उ.
14 नवं.	3 23	14 नवं.	सू. उ.
19 नवं.	0 07	19 नवं.	सू. उ.
23 नवं.	17 16	25 नवं.	सू. उ.
27 नवं.	13 36	28 नवं.	सू. उ.
29 नवं.	सू. उ.	29 नवं.	13 59
30 नवं.	15 02	1 दिसं.	16 41
7 दिसं.	6 29	7 दिसं.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023 ई.	घं.	मिं.	2023 ई.	घं.	मिं.
9 दिसं.	10	43	10 दिसं.	सू.	उ.
11 दिसं.	12	14	12 दिसं.	सू.	उ.
16 दिसं.	6	25	17 दिसं.	4	37
20 दिसं.	0	02	20 दिसं.	सू.	उ.
21 दिसं.	सू.	उ.	22 दिसं.	21	36
25 दिसं.	सू.	उ.	26 दिसं.	सू.	उ.
28 दिसं.	सू.	उ.	29 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2024 ई०)					
3 जन.	14	46	4 जन.	सू.	उ.
6 जन.	सू.	उ.	6 जन.	21	23
8 जन.	सू.	उ.	8 जन.	22	03
12 जन.	15	18	13 जन.	12	50
16 जन.	सू.	उ.	17 जन.	4	38
18 जन.	सू.	उ.	19 जन.	2	58
21 जन.	3	09	21 जन.	सू.	उ.
22 जन.	सू.	उ.	23 जन.	4	59
25 जन.	सू.	उ.	26 जन.	सू.	उ.
31 जन.	सू.	उ.	1 फर.	1	08
5 फर.	सू.	उ.	5 फर.	7	54
9 फर.	सू.	उ.	9 फर.	23	29
13 फर.	सू.	उ.	13 फर.	12	36
15 फर.	सू.	उ.	15 फर.	9	26
17 फर.	8	46	18 फर.	सू.	उ.
19 फर.	सू.	उ.	19 फर.	10	33
22 फर.	सू.	उ.	22 फर.	16	43
26 फर.	1	24	26 फर.	सू.	उ.
28 फर.	सू.	उ.	28 फर.	7	33
8 मार्च	सू.	उ.	8 मार्च	10	41
11 मार्च	1	55	11 मार्च	सू.	उ.
12 मार्च	20	30	13 मार्च	सू.	उ.
16 मार्च	सू.	उ.	16 मार्च	16	06
23 मार्च	4	28	23 मार्च	सू.	उ.
24 मार्च	7	34	25 मार्च	सू.	उ.
29 मार्च	20	36	30 मार्च	सू.	उ.
31 मार्च	22	57	1 अप्रै.	सू.	उ.
7 अप्रै.	12	58	8 अप्रै.	सू.	उ.

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। यथा—रविवार से शनिवार तक क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023 ई.	घं.	मिं.	2023 ई.	घं.	मिं.
27 मार्च चं.	15	27	28 मार्च	सू.	उ.
30 मार्च गु.	22	59	31 मार्च	सू.	उ.
22 अप्रै. श.	23	24	23 अप्रै.	सू.	उ.
24 अप्रै. चं.	सू.	उ.	25 अप्रै.	2	07
27 अप्रै. गु.	7	00	28 अप्रै.	सू.	उ.
20 मई श.	8	03	21 मई	सू.	उ.
22 मई चं.	सू.	उ.	22 मई	10	37
25 मई गु.	सू.	उ.	25 मई	17	54
13 जून मं.	13	33	14 जून	सू.	उ.
17 जून श.	सू.	उ.	17 जून	16	25
11 जुला मं.	सू.	उ.	11 जुला	19	05
23 जुला र.	19	47	24 जुला	सू.	उ.
20 अग. र.	सू.	उ.	21 अग.	4	22
17 सितं. र.	सू.	उ.	17 सितं.	10	02
20 सितं. बु.	14	59	21 सितं.	सू.	उ.
29 सितं. शु.	23	18	30 सितं.	सू.	उ.
18 अक्तू. बु.	सू.	उ.	18 अक्तू.	21	01
27 अक्तू. शु.	9	25	28 अक्तू.	सू.	उ.
24 नवं. शु.	सू.	उ.	24 नवं.	16	01
25 दिसं. चं.	21	39	26 दिसं.	सू.	उ.
28 दिसं. गु.	25	05	29 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2024 ईसवी में)					
20 जन. श.	27	09	21 जन.	सू.	उ.
22 जन. चं.	सू.	उ.	23 जन.	4	59
25 जन. गु.	8	17	26 जन.	सू.	उ.
17 फर. श.	8	46	18 फर.	सू.	उ.
19 फर. चं.	सू.	उ.	19 फर.	10	33
22 फर. गु.	सू.	उ.	22 फर.	16	43
12 मार्च मं.	20	30	13 मार्च	सू.	उ.
16 मार्च श.	सू.	उ.	16 मार्च	16	06

▼ रवि योग—संवत् २०८० वि. ▼

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यतः अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे— प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023 ई.	घं.	मिं.	2023 ई.	घं.	मिं.
24 मार्च	13	22	25 मार्च	13	19
26 मार्च	14	01	27 मार्च	15	27
29 मार्च	20	07	2 अप्रै.	4	48
4 अप्रै.	9	36	5 अप्रै.	11	23
11 अप्रै.	12	58	12 अप्रै.	11	59
22 अप्रै.	23	24	24 अप्रै.	0	27
25 अप्रै.	2	07	26 अप्रै.	4	21
29 अप्रै.	12	47	1 मई	17	51
3 मई	20	56	4 मई	21	35
10 मई	16	12	11 मई	14	37
12 मई	0	52	12 मई	13	03
22 मई	10	37	23 मई	12	39
24 मई	15	06	25 मई	17	54
25 मई	20	58	26 मई	20	50
29 मई	2	20	31 मई	6	00
2 जून	6	53	3 जून	6	16
9 जून	17	09	10 जून	15	39
20 जून	22	37	22 जून	1	21
22 जून	17	48	23 जून	4	18
24 जून	7	18	25 जून	10	11
27 जून	14	43	29 जून	16	30
1 जुला	15	04	2 जुला	13	18
8 जुला	20	36	9 जुला	19	30
20 जुला	10	55	20 जुला	16	55
21 जुला	13	58	22 जुला	16	59
23 जुला	19	47	24 जुला	22	12
27 जुला	1	10	29 जुला	0	55
30 जुला	21	33	31 जुला	18	58
7 अग.	1	44	8 अग.	1	16
20 अग.	1	48	21 अग.	4	22
22 अग.	6	32	23 अग.	8	08
25 अग.	9	14	27 अग.	7	16
29 अग.	2	43	29 अग.	23	50
5 सितं.	9	00	6 सितं.	9	20
18 सितं.	12	08	19 सितं.	13	48
20 सितं.	14	59	21 सितं.	15	35
23 सितं.	14	56	25 सितं.	11	55
27 सितं.	7	10	27 सितं.	18	55
28 सितं.	4	29	29 सितं.	1	49

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023 ई.	घं.	मिं.	2023 ई.	घं.	मिं.
4 अक्तू.	18	29	5 अक्तू.	19	40
17 अक्तू.	20	31	18 अक्तू.	21	01
19 अक्तू.	21	04	20 अक्तू.	20	41
22 अक्तू.	18	44	24 अक्तू.	15	28
24 अक्तू.	18	26	25 अक्तू.	13	30
27 अक्तू.	9	25	28 अक्तू.	7	31
3 नवं.	5	57	4 नवं.	7	57
16 नवं.	3	01	17 नवं.	2	17
18 नवं.	1	17	19 नवं.	0	07
21 नवं.	20	01	23 नवं.	17	16
25 नवं.	14	56	26 नवं.	14	06
2 दिसं.	18	54	3 दिसं.	13	01
3 दिसं.	21	36	5 दिसं.	0	35
15 दिसं.	8	11	16 दिसं.	6	25
16 दिसं.	15	57	17 दिसं.	4	37
18 दिसं.	2	55	19 दिसं.	1	22
20 दिसं.	22	58	22 दिसं.	21	36
24 दिसं.	21	19	25 दिसं.	21	39
(सन् 2024 ईसवी में)					
2 जन.	11	42	3 जन.	14	46
14 जन.	10	23	15 जन.	8	07
16 जन.	6	10	17 जन.	4	38
19 जन.	2	58	21 जन.	3	09
23 जन.	4	59	24 जन.	6	27
24 जन.	22	30	25 जन.	8	17
1 फर.	1	08	2 फर.	3	49
12 फर.	14	57	13 फर.	12	36
14 फर.	10	43	15 फर.	9	26
17 फर.	8	46	19 फर.	10	33
20 फर.	6	10	20 फर.	12	13
22 फर.	16	43	23 फर.	19	26
1 मार्च	12	49	2 मार्च	14	42
12 मार्च	20	30	13 मार्च	18	25
14 मार्च	16	56	15 मार्च	16	08
17 मार्च	16	47	17 मार्च	20	54
18 मार्च	18	11	20 मार्च	22	38
23 मार्च	4	28	24 मार्च	7	34
30 मार्च	22	04	31 मार्च	7	49
31 मार्च	22	57	1 अप्रै.	23	12

यमघण्टक योग
(सन् 2023-24 ई.)

यमघण्टक योग अशुभ माने गए हैं। इन योगों में मंगल कार्यों का सम्पादन निषेध माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
28 मार्च	17	32	29 मार्च	सू.	उ.
2 अप्रै.	सू.	उ.	3 अप्रै.	सू.	उ.
12 अप्रै.	सू.	उ.	12 अप्रै.	11	59
25 अप्रै.	सू.	उ.	26 अप्रै.	4	21
30 अप्रै.	सू.	उ.	30 अप्रै.	15	30
23 मई	सू.	उ.	23 मई	12	39
15 जून	14	12	16 जून	सू.	उ.
16 जून	15	07	17 जून	सू.	उ.
13 जुला	सू.	उ.	13 जुला	20	52
14 जुला	सू.	उ.	14 जुला	22	27
20 अग.	1	48	20 अग.	सू.	उ.
16 सितं.	7	36	17 सितं.	सू.	उ.
14 अक्तू	सू.	उ.	14 अक्तू	16	24
16 अक्तू	19	35	17 अक्तू	सू.	उ.
13 नवं.	सू.	उ.	14 नवं.	3	23
16 नवं.	3	01	16 नवं.	सू.	उ.
3 दिसं.	21	36	4 दिसं.	सू.	उ.
11 दिसं.	सू.	उ.	11 दिसं.	12	14
13 दिसं.	11	05	14 दिसं.	सू.	उ.
26 दिसं.	22	21	27 दिसं.	सू.	उ.
31 दिसं.	सू.	उ.	1 जन.	सू.	उ.
(सन् 2024 ई०)					
10 जन.	सू.	उ.	10 जन.	19	40
23 जन.	सू.	उ.	24 जन.	6	27
28 जन.	सू.	उ.	28 जन.	15	53
20 फर.	सू.	उ.	20 फर.	12	13
14 मार्च	16	56	15 मार्च	सू.	उ.
15 मार्च	16	08	16 मार्च	सू.	उ.

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2023–24 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त)

'द्विपुष्कर योग' द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित **लाभ-हानिकारक होता है।** यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इन योगों में **बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ,** वस्तुएँ **जैसे**—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

परिहार—द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023–24	घं.	मिं.	2023–24	घं.	मिं.
28 मार्च	सू.	उ.	28 मार्च	17	32
21 मई	9	05	21 मई	22	10
25 जुला	सू.	उ.	25 जुला	15	09
17 सितं.	10	02	17 सितं.	11	10
26 सितं.	9	42	27 सितं.	1	46
19 नवं.	22	49	20 नवं.	5	22
28 नवं.	14	06	29 नवं.	सू.	उ.
9 दिसं.	सू.	उ.	9 दिसं.	10	43
(सन् 2024 ई. में)					
22 जन.	3	52	22 जन.	सू.	उ.
16 मार्च	16	06	16 मार्च	21	39
26 मार्च	14	56	27 मार्च	सू.	उ.

रविपुष्य योग

10 सितं.	17	07	11 सितं.	सू.	उ.
8 अक्तू.	सू.	उ.	9 अक्तू.	2	45
5 नवं.	सू.	उ.	5 नवं.	10	29

गुरुपुष्य योग

30 मार्च	22	59	31 मार्च	सू.	उ.
27 अप्रै.	7	00	28 अप्रै.	सू.	उ.
25 मई	सू.	उ.	25 मई	17	54
29 दिसं.	1	05	29 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2024 ई. में)					
25 जन.	8	17	26 जन.	सू.	उ.
22 फर.	सू.	उ.	22 फर.	16	43

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2023–24	घं.	मिं.	2023–24	घं.	मिं.
17 अप्रै.	4	07	17 अप्रै.	सू.	उ.
22 अप्रै.	सू.	उ.	22 अप्रै.	7	50
2 मई	सू.	उ.	2 मई	19	41
20 जून	सू.	उ.	20 जून	13	08
25 जून	10	11	26 जून	0	26
4 जुला	13	39	5 जुला	सू.	उ.
28 अग.	5	15	28 अग.	सू.	उ.
5 सितं.	15	47	6 सितं.	सू.	उ.
21 अक्तू	19	54	21 अक्तू	21	54
30 अक्तू	4	42	30 अक्तू	सू.	उ.
4 नवं.	सू.	उ.	4 नवं.	7	57
19 दिसं.	सू.	उ.	19 दिसं.	13	07
23 दिसं.	21	19	24 दिसं.	6	25
(सन् 2024 ईसवी में)					
2 जन.	17	11	3 जन.	सू.	उ.
11 फर.	17	40	11 फर.	21	10
20 फर.	12	13	21 फर.	सू.	उ.
26 फर.	1	24	26 फर.	सू.	उ.
2 मार्च	7	54	2 मार्च	14	42

ज्वालामुखी-अशुभ योग (वि. संवत् २०८०)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
31 मार्च	25	57	31 मार्च	25	59
5 जून	3	23	5 जून	6	40
9 अग.	1	32	9 अग.	3	53
10 अग.	2	29	10 अग.	4	12
4 सितं.	9	27	4 सितं.	16	43
9 अक्तू	2	45	9 अक्तू	12	37
13 दिसं.	11	05	14 दिसं.	3	10
(सन् 2024 ई.)					
16 फर.	8	55	17 फर.	8	17
17 फर.	8	46	18 फर.	8	16
14 मार्च	1	26	14 मार्च	16	56

वि. संवत् 2080 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
हानि	5	11	11	5	2	11	11	5	8	11	11	8

तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है—**अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति। परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्।।** अन्यत्रऽपि—**अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते।।** (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोई अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषाः तु ऐते न रात्रिषु।।** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धियोग' यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग' पाणिग्रहण** (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है— **भौमाश्विनीं प्रवेशे च, प्रयाणे शनिरोहिणीम्। गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।।** (राजमार्तण्ड)

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयरबाज़ार में मन्दा-तेजी विचार-सन् 2023 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंत्तरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2022 ई. तक हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर अप्रैल-मई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 1000 रु., 2 मास की फीस 1800 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या वाट्स-एप (What's App) के माध्यम से भेज दी जाएगी।

पता—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन—0181-2457959, 94172-91325

जनवरी—नववर्ष वायदा व्यापारियों एवं पंचांगदिवाकर के पाठकों के लिए मंगलमय एवं लाभप्रद रहे। यही मंगलकामना है।

मासारम्भ में ही ता. 2 जन. को धनुराशिस्थ वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी में झटके के साथ तेजी बनेगी। रुई, कपास, घी, शेयर-बाज़ार, मूँग में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही अच्छी तेजी बन जाएगी।

4 जन. को वक्री बुध पू.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाने से भी शेयर्ज़, बैंकिंग सेक्टर, रूई, विनौला में अच्छी तेजी बने। सोना, चाँदी में कुछ मन्दी बन सकती है। परन्तु सायंकाल के समय मज़बूत होंगे।

6 जन. को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आने से यद्यपि सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग, मोठ, उड़द, अनाज में मन्दी बनती है, परन्तु यहाँ शुक्र-शनि का योग होने से यहाँ मन्दी की जगह तेजी बनेगी। घटा-वढ़ी के मध्य तेजी का यह रुख ता. 10 जन. तक चलता रहेगा।

11 जन. को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आने से गुड़, सरसों, खाण्ड, गेहूँ, उड़द, मूँग, चावल, चना, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल आदि में शीघ्र ही तेजी बनेगी।

12 जन. को वृषराशिगत मंगल मार्गी होने से रूई पहले तेज होकर बाद में मन्दी की तरफ जा सकती है, सावधान रहे। चाँदी, घी, गुड़, शक्कर, लाल-मिर्च में अच्छी घटा-बढ़ी होगी।

13 जन. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से अनाज सोने में मन्दी, जबकि गेहूँ, जौं, चना, लाल मिर्च, अलसी, बिनौला, शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। शीघ्र ही घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, क्रूड-ऑयल, सोना, कॉपर में ज़बरदस्त तेजी बनेगी। अगर नहीं भी बनी तो 2-3 दिन बाद बनेगी।

17 जन. को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **इसीदिन शनि कुम्भ राशि में आकर मेष राशिस्थ राहु पर विशेष दृष्टि रखेगा। यह ग्रहयोग विशेष तेज़ी की लाईन लेकर आएगा।** सरसों, तिलहन, अलसी, ऐरण्ड, रूई, चाँदी, शेयरों एवं सभी प्रकार के अनाजों में तेजी बनेगी। सोना, कॉपर, जिस्त आदि धातुओं में भी तेजी बनेगी।

18 जन. को बुध मार्गी होने से रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। रेशम, अलसी, तेल, एरण्ड, गुड़, कपूर, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बनेगी।

21 जन. को गुरु उ.भा. (3) में आने से चाँदी में मामूली मन्दी, सोना, रुई, गेहूँ आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

22 जन. को शुक्र कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। यह ग्रहयोग भी तेजी की ओर इशारा कर रहा है। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, परन्तु क्रूर ग्रहयोग होने से तेजी ही बनेगी। रुई, चाँदी, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, ज्वार, बाजरा, ग्वार में अच्छी तेजी बनेगी।

24 जन. को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आने से गेहूँ, जौं, चावल, रुई, सूत, सन, सोना-चाँदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल, क्रूड में तेजी बनेगी।

27 जन. को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आने से गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना-चाँदी में घटाबढ़ी के मध्य तेजी का ही वातावरण रहेगा।

30 जन. को शनि पश्चिम में अस्त होने से रुई, शेयरों, सोने में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बन जाएगी।

***विशेष*—ता. 14 से 20 जन. के मध्य लगभग सभी व्यापारिक, करियाना वस्तुओं तथा धातुओं में ज़बरदस्त तेजी की लाईन बन सकती है। शीघ्र लाभ उठाकर निकल जाएं।*

फरवरी–मासारम्भ में मुख्य व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा।

4 फर. को बुध उ.षा. नक्षत्र में आएगा। मंगल की इस पर दृष्टि रहने से बैंकिंग शेयर्ज़, मूँग-साबुत, इलायची, किशमिश, गुड़, घी आदि में तेजी बनेगी, जबकि चना, गेहूँ आदि अनाजों में मामूली मन्दी बन सकती है।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना-चाँदी, मोती, कॉपर, मणि, हीरा आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रुई, कपास, क्रूड में तेजी बनेगी।

7 फर. को बुध मकर राशि में आएगा। अकेला बुध यहाँ मन्दी की लाईन बनाएगा। सोना, चाँदी, क्रूयड-ऑयल, रुई में तेजी बनेगी तथा अन्य सभी प्रकार के अनाजों में मन्दी बनेगी। इसी दिन शुक्र पू.भा. नक्षत्र में आकर रुई में तेजी तथा सभी प्रकार के अनाजों में मन्दी करेगा।

8 फर. को गुरु उ.भा. (4) में आने से चाँदी में थोड़ी मन्दी, सोना, रुई, गेहूँ आदि अनाजों में तेजी होगी। घटा-बढ़ी के मध्य व्यापारिक वस्तुओं में यह रुख ता. 12 तक चलते रहेगा।

13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर शुक्र एवं शनि के मध्य एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। घी, तेल, नमक, सरसों, सोयाबीन, मूँगफली, राई, **सोना, चाँदी, कॉपर, क्रूयड-ऑयल में अच्छी तेजी का चाँस है।** गुड़, शक्कर, खाण्ड, रूई, अलसी, कपास, ग्वार में भी पहले अच्छी तेजी बनकर बाद में भाव लुढ़केंगे।

14 फर. को बुध श्रवण तथा शनि धनिष्ठा (4) नक्षत्र में आने से पहले चल रही तेजी को ओर बढ़ावा देंगे। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, रुई, जौं, गेहूँ, मोठ, चना, चावल, मूँग, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार, ग्वार में अच्छी तेजी बनेगी।

15 फर. को शुक्र मीन राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। कुछ व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी तथा कुछ वस्तुओं/धातुओं में अच्छी मन्दी सम्भव है। अतः सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें। चाँदी, रुई, घी, खाण्ड, शक्कर में मन्दी, परन्तु सोना, गुड़, कॉपर, सोंठ, इलायची, नारियल, हल्दी, सरसों में तेजी बनेगी।

18 फर. को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **अतः जो वस्तुएँ/धातुएँ पहले मन्दी चल रही होगी, उन वस्तुओं में मन्दी और बन सकती है।** चाँदी, चावल, मोती, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

19 फर. को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी में सुधार होना शुरु हो जाएगा। तिल, सोया-तेल, एरण्डी, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ के भावों में तेजी बनेगी।

20 फर. को राहु अश्विनी (4), केतु स्वाती (2) में आने से गुड़, लाख, काँसी, क्रूड-ऑयल, काली-मिर्च, तिलहन, काले-तिल, रुई, चाँदी, ग्वार में तेजी बनेगी।

21 फर. को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रकालीन, मंगलवार को चंद्रदर्शन होने से प्रायः सभी प्रकार के अनाजों तथा अन्य वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। गुड़, सरसों, मूंगफली भी तेज रहें।

23 फर. को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल आदि अनाजों में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

24 फर. को गुरु रेवती नक्षत्र में आएगा। रुई, चाँदी, घी, हल्दी में घटावढ़ी के मध्य मुख्यतः मन्दी का रुख रहेगा।

27 फर. को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य-शनि के साथ मेल करेगा। जिन व्यापारिक वस्तुओं/धातुओं में पहले तेजी चल रही होगी, उनमें जबरदस्त तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड, सभी प्रकार की दालों, हरी इलायची, क्रूड-ऑयल में तेजी को बढ़ावा मिलेगा।

***विशेष*—ता. 13, 15, 16, 27 एवं 28 फरवरी को शेयर-बाज़ार में विशेष उथल-पुथल वाले दिन रहेंगे। घटाबढ़ी के मध्य पहले मामूली मन्दी या तेजी, परन्तु शाम तक Nifty अच्छी तेजी के साथ बन्द होगी।*

मार्च–मासारम्भ ता. 1 मार्च को शुक्र रेवती नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसीदिन बुध अस्त होगा। रुई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात आदि में अच्छी घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी।

3 मार्च को बुध शतभिषा नक्षत्र में आएगा। बुध सूर्य-शनि के साथ है। सोना, चाँदी, अनाजों, गेहूँ, चने आदि में पहले मामूली तेजी, परन्तु शीघ्र ही मन्दी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आएगा। **ध्यान दें,** सूर्य बुध एवं शनि के साथ संचार कर रहा है। **यह योग तेजी प्रधान रहेगा।** शीघ्र ही अगले दिन सोना, रेशम, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रुई में तेजी बनेगी।

5 मार्च को ही कुम्भराशिस्थ शनि पूर्व में उदय होने से रुई, शेयरों, अलसी, सरसों, सोयाबीन, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में कुछ मन्दी बनेगी। जबकि लोहा, स्टील, जिस्त, सीसा, रंग, क्रूड-ऑयल आदि काले पदार्थ तथा घी, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

10 मार्च को बुध पू.भा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। यद्यपि अकेला बुध यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु *यहाँ कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी ही बनेगी।*

सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, रुई, अनाज आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

11 मार्च को गुरु रेवती (2) में आने से घी, रुई, चाँदी, हल्दी, अनाजों में पहले कुछ मन्दी अवश्य आएगी।

12 मार्च को शुक्र मेष राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा, इन पर शनि की विशेष तृतीय दृष्टि भी रहेगी। यह योग विशेष घटाबढ़ी के बाद तेज़ीकारक रहेगा। गेहूँ, चना आदि अनाजों, घी, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट, ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, क्रूड-ऑयल में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

13 मार्च को मंगल मिथुन राशि में आएगा। रुई, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, ताँबा, कुसुंभ, मजीठ, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल वर्ण की वस्तुओं में विशेष तेजी बनेगी।

15 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बृहस्पति के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, गुड़, सरसों, सोयाबीन, तिल, तेल, शक्कर, रुई में साधारण तेजी बनेगी। चना, गेहूँ, चावल आदि सभी प्रकार के अनाजों में पहले तेजी, फिर मन्दी की ओर झुकाव रहेगा। चाँदी में भी कुछ मन्दी बने।

16 मार्च को बुध भी मीन राशि में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, शेयर-बाज़ार, बैंकिंग शेयर्ज़ में पहले तेजी बनकर बाद में मन्दी बनेगी।

18 मार्च को सूर्य और बुध-दोनों उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, चाँदी, तेल, सोयाबीन, सरसों में तेजी बने। लगभग सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा।

23 मार्च को शुक्र भरणी नक्षत्र में आएगा। शुक्र-राहु एक ही राशि में एकत्र हैं तथा इन पर शनि की दृष्टि चल रही है। सोना, चाँदी, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुएं, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी का योग होने के बावजूद तेजी ही रहेगी। चना, मूँग, मोठ, ज्वार, रुई आदि में भी तेजी बनेगी।

24 मार्च को बुध रेवती नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। केसर, मजीठ, कुसुंभा, लाल-चन्दन, गेरु, लाल-मिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी तथा गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी में मन्दी का रुख बनेगा।

25 मार्च को गुरु रेवती (3) में आकर भी चाँदी, रुई, घी में पहले मन्दी, फिर कुछ तेजी बनाएगा।

27 मार्च को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी बनेगी। चाँदी में मन्दी बन सकती है।

30 मार्च को बुध पश्चिम में उदय होगा। बाज़ार में अचानक मन्दी का रुख बनेगा। रुई, घी, शेयर-बाज़ार तथा सभी प्रकार के अनाजों में पहले अचानक मन्दी, फिर तेजी बनेगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी समय बुध-मेष राशि में आकर शुक्र-राहु के साथ योग करेगा। **इन पर शनि की विशेष क्रूर दृष्टि भी रहेगी। यह ग्रहयोग बाज़ार में विशेष उथल-पुथल करेगा। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ तेजीकारक ही रहेगा।** अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, सोना-चाँदी में तेजी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दी बनेगी। **इसी दिन गुरु अस्त होने से शीघ्र जिन्सों में मन्दी बन सकती है, इसलिए तुरन्त मुनाफा काट लें। सावधानीपूर्वक चलें।**

विशेष—ता. 12 मार्च से 16 मार्च तक शेयर-बाज़ार में विशेष उथल-पुथल रहेगी। ज़ोरदार तेजी या ज़ोरदार मन्दी की उम्मीद है।

अप्रैल—मासारम्भ 3 अप्रै. को मेषराशिगत शुक्र कृतिका नक्षत्र में आएगा। शनि की दृष्टि के कारण जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दी की उम्मीद के बावजूद पहले अच्छी तेजी का झटका लगकर बाद में भाव गिरेंगे।

6 अप्रैल को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा। आरम्भ में रुई, कपास में अच्छी मन्दी, सोना, चाँदी तथा अन्य धातुओं में पहले घटाबढ़ी के मध्य मामूली मन्दी, अन्त में तेजी ही बन जाएगी।

8 अप्रैल को गुरु रेवती (4) में आएगा। रुई, चाँदी, घी में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। इसीदिन बुध भरणी नक्षत्र में आने से चावल, गेहूँ, चना आदि अनाजों में शीघ्र ही तेजी बनेगी। घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी का यह रुख 13 अप्रैल तक रहेगा।

14 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। यह योग ज़ोरदार तेजी-मन्दी के झटके देगा। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, अन्य सभी प्रकार के ड्राई-फ्रूट, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर, शेयर-बाज़ार में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। इसीदिन रोहिणी नक्षत्र में शुक्र आकर शीघ्र ही सोना-चाँदी आदि धातुओं, गुड़, सरसों में मन्दी का झटका ला सकता है, **परन्तु ग्रहयोग से तेजी ही प्रतीत हो रही है।**

15 अप्रैल को शनि शतभिषा (2) में आने से चना, चावल, गेहूँ आदि में मन्दी, परन्तु घी, क्रूड-ऑयल, सोया-आयल आदि तेज होंगे।

घटा-बढ़ी के मध्य तेजी का यह रुख 20 अप्रैल तक चलेगा।

21 अप्रैल को मेषराशिगत बुध वक्री होगा। ध्यान रहे, मेषस्थ बुध-सूर्य-राहु पर शनि की विशेष तृतीय दृष्टि चल रही है। सोना-चाँदी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग आदि दालों, सोयाबीन, क्रूड-ऑयल आदि में झटके के साथ तेजी बनेगी। शेयर-बाज़ार विशेषकर बैंकिंग तथा रियल-अस्टेट, केमिकल, पेट्रोलियम, पेंटस से सम्बन्धित शेयर्ज़ तेजी की तरफ रहेंगे।

22 अप्रैल को ही अक्षय-तृतीया वाले दिन गुरु मेष राशि में आकर सूर्य-बुध-राहु ग्रहों के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। अकेला गुरु यद्यपि यहाँ कुछ मन्दीकारक होता है। परन्तु यहाँ तेजी ही प्रधान रहेगी। इसीदिन मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में भी आएगा। रुई, चाँदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, ताम्बा, सोयाबीन आदि में विशेष तेजी बनेगी। सोना, क्रूड, हल्दी, घी, अलसी, गुड़, शक्कर में भी तेजी रहेगी।

23 अप्रैल को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से भी रुई, चाँदी, घी, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी का परिदृश्य बनेगा। यहाँ तक अपना मुनाफा काट लें।

24 अप्रैल को राहु अश्विनी (3) में आने से गुड़, लाख, काँसी, बिनौला, बाजरा, ग्वार में तेजी बने।

26 अप्रैल को शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आने से गेहूँ, चना, ज्वार, मक्की आदि अनाजों में मन्दी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बने।

29 अप्रैल को मेष राशिगत गुरु पूर्व में उदय होगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं, हल्दी, घी, रुई तथा अन्य अभी करियाना तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

विशेष—ता. 16, 17, 20, 21, 22, 25, 26 अप्रैल को शेयर-बाज़ार तेज रहने की उम्मीद है।

मई–मासारम्भ 2 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। कुछ व्यापारिक/करियाना वस्तुओं में अच्छी तेजी तथा कुछ में मन्दी का दौर चलेगा। अलसी, गुड़, घी, गेहूँ, जौं, चावल, चना, चाँदी, खाण्ड, मूँग में अच्छी तेजी तथा रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी बने।

6 मई को गुरु अश्विनी (2) में आने से रुई, सोना, चाँदी, घी आदि में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी बनेगी।

8 मई को वक्री बुध अश्विनी नक्षत्र में आकर गुरु एवं राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसीदिन शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जौं, चना आदि अनाजों में पहले मन्दी, फिर तेजी बन जाएगी। घी, दूध, खाण्ड, शक्कर, तेल आदि भी तेज होंगे।

10 मई को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। **इसी समय मंगल कर्क (नीच) राशि में प्रवेश करेगा तथा कुम्भ राशिस्थ शनि पर विशेष शत्रु दृष्टि रखेगा।** रुई में पहले कुछ मन्दी बाद में तेजी बने। गेहूँ, चना आदि अनाजों, घी, तिल, पाट, लाल-मिर्च, क्रूड-ऑयल, सोयाबीन ऑयल, सरसों तथा सोने में आने वाले कुछ दिनों में अच्छी तेजी का वातावरण बनेगा।

11 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र में आएगा। इसलिए घी, सोना-चाँदी, रुई, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल एवं राई, सरसों आदि तिलहन तेज रहेंगे।

15 मई को सूर्य वृष राशि में आएगा। इसीदिन मेष राशिस्थ एवं शनि द्वारा दृष्ट बुध मार्गी भी होगा। रुई, शेयर्ज़ में विशेष घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बने। जौं, मूँग, चावल, गेहूँ, चना आदि में मामूली मन्दी बने।

16 मई को मंगल पुष्य नक्षत्र में आने से रुई व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। सोने, गुड़ में विशेष तेजी बनेगी।

20 मई को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आने से चना, चावल, गेहूँ आदि धान्य, बिनौला, हल्दी, खाण्ड में तेजी, सोना-चाँदी, रुई, कपास, सूत में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

21 मई को बुध भरणी नक्षत्र में आने से गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, मूँग में तेजी आएगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आने से तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बनेगी। चाँदी तथा शेयर-बाज़ार नीचे रहेंगे।

30 मई को शुक्र कर्क राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। मंगल-शनि का षडाष्टक योग पहले ही चल रहा है। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

विशेष—ता. 2, 15, 16, 22, 23, 28, 29 मई को शेयर-बाज़ार तेज रहने की सम्भावना है।

जून–मासारम्भ में करियाना वस्तुएँ तेज रहने के बाद 3 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आने से रुई, सूत, सन, रेशमी व ऊनी धागों, चावल आदि धान्यों में तो तेजी रहेगी, परन्तु लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

4 जून को गुरु अश्विनी (4) में आने से रुई, घी, दूध में तेजी, सोना, चाँदी, अनाजों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

5 जून को बुध कृतिका नक्षत्र में आकर करियाना वस्तुओं तथा बैंकिंग शेयर्ज़ में विशेष घटाबढ़ी करेगा। चाँदी, घी, ग्वार, क्रूड में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, अनाज पहले कुछ तेज तथा रुई में तेजी बनेगी।

7 जून को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। तद्नुसार शेयर-बाज़ार तथा करियाना/व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी। घटाबढ़ी के बाद गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि के भावों में तेजी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर तथा मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी तथा जलोत्पन्न पदार्थ, नारियल तथा सभी प्रकार के फल तेज होंगे। रुई तथा चाँदी में पहले मन्दी का झटका भी लगेगा।

13 जून को बुध रोहिणी नक्षत्र में आने से रुई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। राई, तूअर, सन, ऊनी व रेशमी धागों में मन्दी बनेगी। रुई में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी बने।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आएगा। कंद-मूल आदि फल, पाट, बारदाना, रेशम,सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि सभी प्रकार के अनाजों, सोना-चाँदी में तेजी का रुख बनेगा।

17 जून को कुम्भ राशिगत शनि वक्री होगा। शनि की मेष राशिस्थ गुरु-राहु पर विशेष दृष्टि है तथा मंगल के साथ षडाष्टक योग भी है। गुड़, सरसों, क्रूड-ऑयल,

सोना, चाँदी, कॉपर, पेट्रोलियम शेयर्ज़ में विशेष तेजी बनेगी। इसीदिन शुक्र आश्लेषा में आकर रुई, चावल आदि में कुछ मन्दी करेगा।

20 जून को बुध पूर्व में अस्त होने से रुई में मन्दी-तेजी के झटके आएंगे। पाट, हैसियन और शेयर-बाज़ार मन्दे रहेंगे। परन्तु चाँदी में तेजी का रुख होगा।

21 जून को बुध मृगशिर में तथा गुरु भरणी नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं, हीरा, मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौं, गेहूँ, तिल, उड़द, मूँग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े के भावों में मन्दी के झटके लगेंगे।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आने से रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनेगी। सोने, ताँबे, लोहे के भावों में घटाबढ़ी रहेगी।

24 जून को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ योग करेगा। सोना, चाँदी, रुई, अरहर, मूँग में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

26 जून को राहु अश्विनी (2) में आने से गुड़, लाख, कांसी, रुई, चांदी, कपास, तिलहन, काली मिर्च, घी एवं मूंगफली आदि में तेजी ही रहेगी।

27 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ, चाँदी में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी की तरफ बढ़ेगी।

30 जून को मंगल सिंह राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग सम्बन्ध बनाएगा। जोकि भयंकर तेजीकारक है, परन्तु गुरु की मंगल पर दृष्टि के कारण या तो कम तेजी बनेगी अथवा ज़बरदस्त तेजी बनकर अचानक मन्दी बनेगी। सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु व शस्त्र, क्रूड-ऑयल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रुई, लाल-वस्त्र, लाल-मिर्च तथा लाल रंग की अन्य वस्तुओं में तेजी बनेगी।

विशेष*—*ता. 5, 6, 17, 18, 19, 27, 28, 29 जून को शेयर्ज़ का रुझान तेजी की तरफ रहेगा। ता. 20 से 23 जून के मध्य शेयर-बाज़ार में मन्दी प्रधान रहेगी।

जुलाई-मासारम्भ 3 जुला. को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आने से चाँदी, रुई, कपास, सूत, सन में अच्छी मन्दी बन सकती है।

6 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आकर बुध के साथ मेल करेगा। **सूर्य का बुध के साथ योग करने पर बाज़ार तेजी की तरफ बढ़ता है।** रुई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ तथा सभी करियाना वस्तुओं में तेजी बनेगी।

7 जुला. को शुक्र सिंह राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा तथा शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। मंगल-शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि भी रहेगी। इसलिए सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, चाँदी में पहले तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी बन सकती है। **अतः सावधानीपूर्वक अपना मुनाफा साथ-साथ काटते जाएं।**

8 जुला. को बुध कर्क राशि में आएगा। रुई में मन्दी बनेगी। चाँदी में घटावढ़ी के बाद तेजी, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, सोने में भी तेजी बनेगी।

9 जुला. को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर सोना, चाँदी में मन्दी करेगा। रुई में घटावढ़ी के बाद मन्दी बने। मणि, मोती, जवाहरात तथा ऊनी वस्त्रों/धागों में तेजी बनेगी।

10 जुला. को भी गुरु भर. (2) में आने से सोना, चाँदी आदि धातु, हीरा, मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौं, गेहूँ, तिल, उड़द, मूँग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊनी धागों में मन्दी का रुख बनेगा।

13 जुला. को बुध पश्चिम में उदय होने से सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल के व्यापार में अच्छी तेजी बनकर बाद में मन्दी रहेगी।

17 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। बुध-सूर्य का मेल अच्छी तेजी का संकेत दे रहा है। इसीदिन बुध आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चाँदी- सोना, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बनेगी।

20 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी बने।

22 जुला. को मंगल पू.फा. नक्षत्र में आएगा। मंगल-शनि मध्य समसप्तक योग चल रहा है, परन्तु मंगल-शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी है। तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी बन सकती है।

23 जुला. को सिंह राशिगत शुक्र वक्री होगा। शुक्र मंगल के साथ संचार कर रहा है तथा शनि के साथ समसप्तक योग सम्बन्ध है। सोना, चाँदी, पीतल, खाण्ड, दूध, रुई, तेल, क्रूड-ऑयल, सोयाबीन, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी।

25 जुला. को बुध सिंह राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ योग करेंगे। इनका शनि के साथ समसप्तक दृष्टि-सम्बन्ध रहेगा। सोना, चाँदी, सूत, रुई व ऊनी वस्त्र, बैंकिंग शेयर्ज़, लाल-मिर्च, तेल, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी। परन्तु मं.-बु.-शु. पर गुरु की दृष्टि के कारण शीघ्र ही कुछ वस्तुओं में मन्दी बने। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना में मन्दी बने।

मासान्त तक व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी रहेगी।

विशेष*—*ता. 17-18 एवं 23 से 26 जुलाई तक शेयर-बाज़ार विशेष रूप से तेज रह सकता है।

अगस्त-मासारम्भ में व्यापारिक वस्तुओं में कुछ मन्दी का रुख रहेगा। ता. 3 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में तथा बुध पू.फा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भावों में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ आदि के भावों में कुछ मन्दी बने। इसीदिन सायं वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त होने से शीघ्र ही सोना, चाँदी, गुड़, घी, सूत,

कपड़ा, तेल, अलसी, एरण्डी, बिनौला, मूँगफली में **मन्दी** बनेगी। अतः पहले तेजी बनते ही सौदे कर लें। रुई में तेजी ही रहेगी।

6 अग. को गुरु भरणी (3) में आने से सोना, चाँदी आदि धातु, हीरा, मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौं, गेहूँ, तिल, उड़द, मूँग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े में मन्दी का रुख बनेगा।

7 अग. को वक्री शुक्र कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, रुई, चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में **मन्दी** बनकर तेजी बनेगी।

13 अग. को मंगल उ.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, ताँबा, लाल-मिर्च में तेजी बनेगी।

17 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इनका शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा। सूर्य-मंगल-बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल तैल, एरण्ड, सरसों, सोयाबीन तेल आदि तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी। शेयरों, चना, गेहूँ आदि अनाजों में कुछ मन्दी बनकर तेजी बनेगी।

18 अग. को मंगल कन्या राशि में आकर मेष राशिस्थ गुरु-राहु पर विशेष दृष्टि रखेगा। रुई-चाँदी में विशेष तेजी बनेगी। सोना, घी, ऊनी, सूती व लाल रंग के सभी प्रकार के वस्त्र, अलसी, गेहूँ, लाल-मिर्च, हल्दी, मूँग, ग्वार तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। इसीदिन वक्री शुक्र पूर्व में उदय होने से घी, खाण्ड में कुछ मन्दी बनेगी।

22 अग. को वक्री शनि शत. (1) में आने से घी, वनस्पति घी, तेल आदि में तेजी, अनाज के भाव गिरेंगे।

23 अग. को **सिंह राशिगत बुध वक्री होगा। बुध से सप्तमस्थ शनि भी वक्री चल रहा है। ज़ोरदार तेजी की लाईन बन सकती है।** शीघ्र ही गुड़, घी, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, जौं, चना आदि अनाजों, ताम्बा, कॉपर आदि धातुओं तथा बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी। **यह तेजी की लाईन ता. 27 तक चलेगी।**

28 अग. को वक्री बुध पू.फा. में आएगा। गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि अनाजों में मन्दी बनेगी। परन्तु राहु अश्विनी नक्षत्र में आने से शीघ्र ही गुड़, लाख, रुई, चाँदी, कपास, तिलहन, कालीमिर्च, घी एवं मूंगफली आदि में तेजी ही रहेगी।

31 अग. को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इनका शनि के साथ पहले ही दृष्टि-सम्बन्ध चल रहा है। इसीदिन वक्री बुध भी पश्चिम में अस्त होगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़े व धागे, रुई, सूत में तेजी बनेगी। चाँदी, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। शेयर्ज़ कुछ नीचे आएंगे।

विशेष—ता. 17 अग. के बाद शेयर-बाज़ार में उथल-पुथल के मध्य मन्दी के 1-2 विशेष झटके लगेंगे। इसलिए सावधान होकर व्यापार करें।

सितम्बर

सितम्बर-मासारम्भ 3 सितं. को मंगल हस्त नक्षत्र में आने से घी, गुड़, खाण्ड, नमक, मूँग, लाल-मिर्च, चाँदी में तेज़ी बने। **4 सितं. को मेषराशिस्थ गुरु वक्री होगा। मेषस्थ वक्री गुरु-राहु पर वक्री शनि की विशेष दृष्टि रहेगी।** इसीदिन कर्क राशिस्थ शुक्र मार्गी होगा। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष उथल-पुथल रहेगी। सोना, चाँदी, रुई, मोती, घी, गुड़, धान्य, हल्दी, ग्वार में पहले कुछ मन्दी, परन्तु शीघ्र ही तेजी रफ्तार पकड़ेगी।

घटाबढ़ी के साथ तेजी का यह रुख ता. 12 सितं. तक चलता रहेगा। बीच-बीच में मन्दी के झटके भी लगेंगे।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आएगा। इसीदिन वक्री बुध पूर्व में उदित होने से भी रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, बाँस, नील में तेजी बनेगी।

15 सितं., को बुध मार्गी होगा। रुई, चाँदी, चावल, घी, जौं, चना, गेहूँ, अनाजादि तथा रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली में पहले तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी बनेगी।

16 सितं. शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना, सरसों, मूँगफली आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

17 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तैल, मजीठ, लाल रंग की सभी वस्तुएं, लाल-मिर्च, गुड़, खाण्ड, सरसों में तेजी बनेगी। चाँदी तथा शेयरों में पहले मन्दी, परन्तु बाद में इनमें भी तेजी बन जाएगी।

23 सितं. को मंगल चित्रा में आने से भी पहले चल रही तेजी को ओर बल मिल सकता है। गेहूँ, चना, चावल, सोना-चाँदी, तांबा, पीतल में तेजी बनेगी।

24 सितं. को मंगल पश्चिम में अस्त होगा। गेहूँ, अलसी, जौं, चना, गुड़, सोया, सरसों, क्रूड-ऑयल में विशेष तेजी का झटका लग सकता है। रुई, घी आदि कुछ जिन्सों में मन्दी भी बनेगी।

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी बनेगी।

29 सितं. को बुध उ.फा. नक्षत्र में आएगा। उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बने। रुई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी बने।

विशेष—ता. 17 सितं. के बाद ही शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी की लाईन बनेगी।

अक्तूबर

अक्तूबर-मासारम्भ **ता. 1 को ही बुध कन्या राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। इसीदिन शुक्र सिंह राशि में आकर पुनः शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। वायदा एवं हाजिर बाज़ारों में विशेष उथल-पुथल रहेगी। शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि रहने से व्यापारिक वस्तुओं में शीघ्र ही तूफानी तेजी बनकर अचानक मन्दी का वातावरण बन सकता है। अतः सावधानीपूर्वक साथ-साथ चलें।** सोना, चाँदी, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, हल्दी, गुड़, शक्कर, खाण्ड में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, चाँदी में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी के झटके भी लगेंगे।

2 अक्तू. को बुध पूर्व में अस्त होने से भी सोना, रुई, चाँदी, गेहूँ आदि अनाज, तेल, घी, तिलहन एवं करियाना वस्तुओं में तेजी बनेगी।

3 अक्तू. को मंगल तुला राशि में आकर केतु के साथ योग करेगा तथा गुरु-राहु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। रुई, कपास, सूत, सण, पाट, वारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ तथा उड़द, मूँग आदि अनाजों, सोना, ताँबा में पहले अच्छी तेजी बनकर बाद में मन्दी की लाईन बन सकती है।

7 अक्तू. को बुध हस्त नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, चना, मूँग आदि अनाजों में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

11 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर मंगल-केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। यह योग शीघ्र ही रुई, सूत, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, अनाजों, दालवाना आदि में तेजी करेगा।

परन्तु 13 अक्तू. को मंगल स्वाती नक्षत्र में आकर सोने में मन्दी, चाँदी में कुछ घटाबढ़ी करेगा। रुई, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल, तेल तेज होंगे।

14 अक्तू. को बुध चित्रा नक्षत्र में आकर सूर्य एवं केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, सोना, चाँदी, काली मिर्च, तिल, सोयाबीन, सरसों आदि में तेजी बनेगी।

15 अक्तू. को वक्री शनि धनिष्ठा नक्षत्र में आने से भी राई, जौं, गेहूँ, मोठ, चना, चावल, मूँग, उड़द, मसूर, बाजरा, ज्वार में तेजी बनेगी। शक्कर, गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दी बन सकती है।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आकर मंगल-केतु के साथ योग करेगा। इनका गुरु-राहु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा। रुई, चाँदी में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताँबा, लाल मिर्च, लाल चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में तो तेजी ही बनेगी। इसी दिन शुक्र पू.फा. नक्षत्र में आने से उड़द, चना, मूँग में कुछ मन्दी बने।

18 अक्तू. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य-मंगल-केतु के साथ मेल करेगा। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, ताँबा, मूँग, अरहर में तेजी बनेगी। चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में पहले कुछ मन्दी रहकर शीघ्र तेजी बनेगी।

22 अक्तू. को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, घी, चान्दी में घटाबढ़ी के साथ पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी।

24 अक्तू. को सूर्य भी स्वाती नक्षत्र में आकर मंगल एवं बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। बाज़ार तेजी प्रधान ही रहेगा। रुई, सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

28 अक्तू. को आश्विन पूर्णिमा को खण्ड चन्द्रग्रहण घटित होने से अलसी, सरसों, एरण्ड, उड़द, अफीम, तिल, तैल, ज्वार, बाजरा, लोहा, काला वस्त्र का संग्रह करने से छः मास के अनन्तर अच्छा लाभ मिलेगा। सोना-चाँदी, घी तथा शेयरों में अच्छी तेजी बनेगी।

30 अक्तू. को बुध विशाखा तथा शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आएंगे। इसीदिन राहु मीन राशि में तथा केतु कन्या राशि में आएगा। सोना-चाँदी में विशेष घटाबढ़ी चले। रुई, मूँग, दालों तथा अनाजों में तेजी रहे। सरसों, तिलहन, सोयाबीन आदि में मन्दी बन सकती है।

31 अक्तू. को वक्री गुरु भरणी (1) में आने से शीघ्र ही 1-2 दिन में सोना-चाँदी आदि धातुओं, हीरा, मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौं, गेहूँ, तिल, उड़द, मूँग, मोठ, चना, लाख, ऊन व चमड़े के भाव गिरेंगे।

विशेष—मासान्त में अन्तिम सप्ताह शेयरबाज़ार नीचे की तरफ रहेगा। तदनुसार कार्य करें।

नवम्बर

नवम्बर—मासारम्भ 1 नवं. को मंगल विशाखा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, कपास, वस्त्र, गेहूं, मूँग, चना आदि अनाज, सोना, चाँदी, कॉपर में अच्छी तेजी बनेगी।

3 नवं. को शुक्र कन्या राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। चाँदी, चावल, रुई में विशेष तेजी का झटका सम्भव है। गेहूँ, चना आदि सर्व प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, घास, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी होगी।

4 नवं. को कुम्भ राशिगत शनि मार्गी होने से रुई व चाँदी में मन्दी का झटका लगेगा। तिल, तेल, सरसों, हींग, काली-मिर्च, क्रूड-ऑयल में तेजी बनेगी।

6 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर मंगल एवं बुध के साथ एकनक्षत्र सम्वन्ध बनाएगा। इसीदिन बुध वृश्चिक राशि में आकर शनि द्वारा दृष्ट रहेगा। **हाजिर बाज़ार में अचानक तेज़ी का तूफान आएगा।** जौं,चावल, गेहूँ, घी, तेल, सरसों, रुई, चाँदी, गुड़, मसूर, खाण्ड, तिल, एरण्ड, अलसी, सोने, ताँबे में अच्छी तेजी बने।

8 नवं. को बुध अनुराधा नक्षत्र में आएगा। बुध पर इस समय शनि की दृष्टि रहेगी। सोना-चाँदी, रुई, खाण्ड में अच्छी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

11 नवं. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई तथा शेयर-बाज़ारों में कुछ मन्दी कर सकता है।

16 नवं. को सूर्य और मंगल दोनों वृश्चिक राशि में आकर **बुध के साथ मेल करेंगे। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यदि दीपावली से पहले या दीपावली पर अच्छी तेजी ना बन पाई तो यह योग बाज़ारों में तेजी का ज़बरदस्त माहौल बना देगा। रुई, सोना, चाँदी, ताम्बा, ऊनी वस्त्रों, लाल मिर्च, क्रूड-ऑयल, सोयाबीन, सरसों तथा अन्य सभी करियाना वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी।**

17 नवं. को ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध भी घी, गुड़, खाण्ड, चावल, बैंकिंग शेयर्ज में तेजी करेगा।

20 नवं. को सूर्य और मंगल-दोनों अनुराधा नक्षत्र में आएंगे। शीघ्र ही रुई, कपास, गेहूँ, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन, जौं, चना आदि धान्यों, ऊन, सोना, ताम्बा आदि धातुओं तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी।

23 नवं. को शुक्र चित्रा नक्षत्र में आकर केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, चना, गेहूँ, मूँग आदि अनाजों के भाव मामूली रूप से तेज होंगे।

24 नवं. को शनि शतभिषा नक्षत्र में आने से अनाज के भाव कुछ मन्दे हो सकते हैं। घी, वनस्पति तेल, सोयाबीन, सरसों आदि कुछ तेज़ होंगे।

26 नवं. को बुध धनु राशि में आएगा। बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। अतः शीघ्र ही रुई, कपास, सूत, मूँग, चावल, चाँदी में मन्दी बन सकती है, सावधान रहें। इसीदिन वक्री गुरु अश्विनी नक्षत्र में आने से रुई, घी में घटाबढ़ी रहेगी।

29 नवं. को शुक्र तुला राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। रुई, चाँदी, अफीम, गुड़, खाण्ड, सोना, ताँबा, घी में पहले अच्छी तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन सकता है, सावधान रहे।

विशेष—दीपावली (12 नवं.) के बाद एक सप्ताह तक शेयरबाज़ार सुस्त रहेगा।

दिसम्बर–मासारम्भ 3 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से ऊनी वस्त्र, सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

5 दिसं. को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, रुई, ऊनी वस्त्र, शक्कर, राईं, ग्वार, चाँदी तेज होगी।

9 दिसं. को मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सूर्य–मंगल पर पहले ही शनि की दृष्टि है। रुई, चावल, घी, सोयाबीन, सरसों, तेल, सोने, ताम्बे में तेजी बनेगी। इसीदिन बुध पू.षा. नक्षत्र में आने से बाद में सोने, चाँदी में मन्दी का दौर शुरु हो सकता है।

13 दिसं. को धनु राशिगत बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, शेयर–बाज़ार में तेजी बनेगी। जौं, चना, गेहूँ में कुछ मन्दी बनेगी।

16 दिसं. को सूर्य धनुराशि में जाकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि भी रहेगी। अतः रुई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चाँदी, घी में पहले तेजी बनकर शीघ्र मन्दी का रुख बन जाएगा। इसीदिन वक्री बुध मूल तथा शुक्र विशाखा नक्षत्र में आने से बाज़ार का वातावरण मन्दी की तरफ रहेगा।

17 दिसं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, रुई, बैंकिंग शेयर्ज़ घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का झटका लगेगा।

घटाबढ़ी का यह रुख ता. 24 तक चलता रहेगा। 25 दिसं. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। रुई, शेयरों, चाँदी, अफीम, गुड़, गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोंठ, बाजरा आदि अनाजों, सरसों में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

27 दिसं. को मंगल धनु राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। इसीदिन शुक्र भी अनुराधा नक्षत्र में आएगा। रुई, सोना, चाँदी आदि धातु, लकड़ी, सूत, तृण, बिनौला, सरसों, घी तथा सर्वप्रकार के अनाजों में तेजी बनेगी।

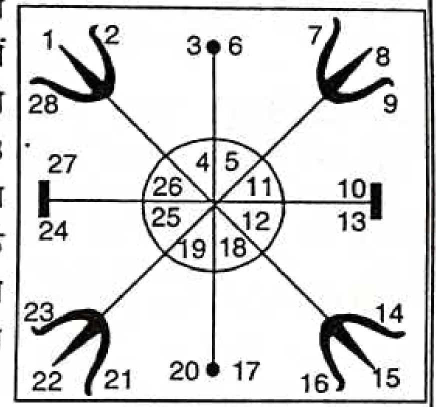
28 दिसं. को वक्री बुध वृश्चिक राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। घी, तेल, सरसों, रुई, चाँदी, क्रूड–ऑयल, सोयाबीन, सरसों, तिलहन, खाण्ड में अच्छी तेजी बनेगी। इसीदिन वक्री बुध पूर्व में उदय होने से शीघ्र ही शेयरों, चना आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

29 दिसं. को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में जाने से तिल, तैल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, चाँदी में तेजी बनेगी।

31 दिसं. को गुरु मार्गी होने से रुई में पहले मन्दी, फिर तेज होगी, चाँदी, हल्दी में मन्दी बनेगी। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू, चना आदि में तेजी बनेगी।

नोट–गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन अनुकूल न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे। —सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?



जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है–

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरै:। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्रा: फलप्रदा:॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों का पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे–गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक '**शिव मन्त्रावली**' में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1) सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2023-24 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2023-24 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	14:00	प्रात: 7:36 से रात्रि 20:24 तक
18 फरवरी	मीन	28:04	17 की रात्रि 21:40 से 18 की प्रात: 10:28 तक
20 मार्च	मेष	26:55	19 की रात्रि 20:31 से 20 की प्रात: 9:19 तक
20 अप्रैल	वृष	13:44	प्रात: 7:20 से रात्रि 20:08 तक
21 मई	मिथुन	12:39	प्रात: 6:15 से रात्रि 19:03 तक
21 जून	कर्क	20:28	दोपहर 14:04 से रात्रि 26:52 तक
23 जुलाई	सिंह	7:20	22 की रात्रि 24:56 से 23 ता. की दोप. 13:44 तक
23 अगस्त	कन्या	14:31	प्रात: 8:07 से 20:55 तक
23 सितम्बर	तुला	12:20	प्रात: 5:56 से सायं 18:44 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	21:51	दोपहर 15:27 से 24 ता. की प्रात: 28:15 तक
22 नवम्बर	धनु	19:33	दोपहर 13:09 से रात्रि 25:57 तक
22 दिसम्बर	मकर	8:57	21 दिसं. की रात्रि 26:33 से 22 की दोप. 15:21 तक
20जन.(2024)	कुम्भ	19:37	दोपहर 13:13 से रात्रि 26:01 तक
19 फरवरी	मीन	9:43	18 की रात्रि 27:19 से सायं 16:07 तक
20 मार्च	मेष	8:36	19 की रात्रि 26:12 से 20 की दोप. 15:00 तक

क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2023-24 ई.)

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात-गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य-काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य-काल को वर्जित किया जाता है। यह समयावधि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ एवं त्याज्य है, परन्तु मन्त्र-यन्त्रादि तांत्रिक अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
4 अप्रैल	12 57	4 अप्रैल	17 02
16 अप्रैल	25 02	17 अप्रैल	4 45
30 अप्रैल	4 25	30 अप्रैल	9 11
12 मई	21 33	12 मई	26 06
25 मई	24 15	26 मई	6 28
7 जून	26 44	8 जून	8 37
21 जून	13 21	21 जून	21 10
30 जून	21 24	1 जुला.	3 47
13 जुला.	5 34	13 जुला.	11 44
27 जुला.	8 13	27 जुला.	13 19
8 अग.	5 26	8 अग.	9 56
22 अग.	3 25	22 अग.	7 46
3 सितं.	3 15	3 सितं.	6 49
16 सितं.	16 42	16 सितं.	20 46
29 सितं.	3 30	29 सितं.	6 49
12 अक्तू.	5 34	12 अक्तू.	9 47
24 अक्तू.	26 20	25 अक्तू.	6 03
6 नवं.	19 55	6 नवं.	24 50
19 नवं.	23 19	20 नवं.	4 03
2 दिसं.	17 20	2 दिसं.	23 42
16 दिसं.	7 47	16 दिसं.	13 52
24 दिसं.	12 10	24 दिसं.	18 52
(सन् 2024 ई.)			
7 जन.	18 13	7 जन.	24 16
19 जन.	23 16	20 जन.	4 28

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2024 ई.	घं. मिं.	2024 ई.	घं. मिं.
2 फर.	20 17	2 फर.	25 06
14 फर.	20 26	14 फर.	24 18
28 फर.	10 19	28 फर.	14 32
11 मार्च	19 36	11 मार्च	22 52
24 मार्च	21 51	24 मार्च	25 57
6 अप्रै.	20 43	6 अप्रै.	24 04
19 अप्रै.	10 32	19 अप्रै.	14 58

वारुणी पर्व (2023 ई.)

19 मार्च	22 04	20 मार्च	04 56

महावारुणी योग (2024 ई.)

6 अप्रै.	10 20	6 अप्रै.	15 40

चन्द्रग्रहण-सं. २०८०

28 अक्तू.	25 05	28 अक्तू.	26 24

दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 12 नवं., रविवार को दीपावली पर्व में प्रदोष एवं महानिशीथकाल आदि विशेष सिद्धिदायक होंगे। (देखें पृष्ठ 195)

(1) किरायेदारों से परेशान भू-स्वामियों के लिए मन्त्र

वास्तव में कोई भू-स्वामी या मकान-मालिक अपने किसी दुष्ट किरायेदार के दुर्व्यवहार से तंग आकर निकालने की कोशिश कर रहा है तो वैसी परिस्थिति में निम्न प्रयोग करना चाहिए। किसी पुराने लौहपत्र पर मुख्य किरायेदार और उसके पारिवारिक सदस्यों का नाम लोहे की कलम से खुदवाना चाहिए। सभी नाम खुदने के बाद उस लौहपत्र के पृष्ठ भाग पर कोयले की स्याही बनाकर बाँस की कलम द्वारा निम्नलिखित मन्त्र स्वयं हाथ से लिखें-

'ॐ नमो न्यायाधिकारिणी सर्वशत्रु संहारकारिणी ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ठः ठः पृष्ठांकित किरायदार स्वरूप दुष्टानां मम् गृहात् निष्कासनं कुरु-कुरु उच्चाटनं कुरु-कुरु ममाधिकारं देहि-देहि स्वाहा।।''

शनिवार की मध्यरात्रि में लिखकर किसी मिट्टी के चूल्हे में इस प्रकार मिट्टी का लेप करके गाड़ दें, ताकि मन्त्र लिखा भाग नीचे की ओर और नाम लिखा भाग ऊपर की ओर हो। प्रतिदिन सुबह-शाम उस चूल्हे में कोयला जलाया जाय, ताकि वह लौहपात्र अग्नि ताप में तपे। सामान्यतः यह प्रयोग 40 दिन, विशेष स्थिति में 160 दिन तक करना पड़ता है।

(2) भूमि/मकान/जायदाद/कृषिभूमि खरीदने या बेचने के लिए मन्त्र

यदि कोई विशेष या नियत की हुई भूमि/मकान/जायदाद आदि खरीदने या किसी से किराये पर लेने का प्रयास किया जा रहा हो अथवा किसी वाद-विवाद-शत्रुता, मुकद्दमा आदि की परिस्थिति में अपनी ही ज़मीन-जायदाद-मकान आदि नष्ट होने की स्थिति पैदा हो रही हो तो द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर योग वाले दिन अपनी आकांक्षा के अनुसार संकल्प करके श्रीगणेश-गौरी-कार्त्तवीर्य-दत्तात्रेय और वराह देवता की विधिवत् पूजा करके 10 दिन इस मन्त्र का जाप 10-10 माला प्रतिदिन करें-

''ॐ एकदण्ष्ट्राय विद्महे महावराहाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।''

11वें दिन इसी मन्त्र के 10 माला के जप द्वारा तिल, मधु तथा घी के साथ हवन करें। फिर 12वें दिन से 27 दिन तक, कुल 16 दिन 5-5 प्रतिदिन इस मन्त्र का जप करें-

''ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि च दापय स्वाहा।।''

28वें दिन इसी मन्त्र के 8 माला जप द्वारा खड़ी हल्दी और घी का हवन करें। फिर 29वें दिन से 40 दिन तक, कुल 12 दिन 12-12 माला प्रतिदिन इस मन्त्र का जप करें-

''ॐ श्रीवराहायधरण्युद्धारणाय स्वाहा।।''

41वें दिन इसी मन्त्र का 15 माला जप छोटी इलायची, मधु, घी के साथ हवन करें। 42वें दिन 3 ब्राह्मण को विधिवत् भोजन कराकर सर्वांग वस्त्र-दान देने से भूमि-मकान-जायदाद की इच्छित कामना पूर्ण होती है।

(3) शिव-गायत्री मन्त्र द्वारा मनोवांछित वर प्राप्ति

''ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो शिवः प्रचोदयात्।।''

उपरोक्त शिव गायत्री मन्त्र का जप संकल्पपूर्वक एवं सुनिश्चित संख्या में जप करने से विवाह योग्य कन्या को उत्तम मनचाहा वर प्राप्त होता है। महर्षि नारद की प्रेरणा से पार्वती देवी ने पंचाक्षर मन्त्र के अतिरिक्त शिव गायत्री मन्त्र का जप व ध्यान करके ही भगवान् शिव को पति रुप में प्राप्त किया था।

(4) कन्या का शीघ्र विवाह हेतु मन्त्र

जिस कन्या का विवाह अशुभ ग्रहों के कारण अथवा आर्थिक संकट से नहीं हो पा रहा हो, उसे चाहिए कि भगवान् शंकर और पार्वती का चित्र सामने लगाकर उसका नित्य पूजन करें। धूपबत्ती जलाए और जप के स्थान पर एक गमले में अथवा टीन के कनस्तर में केले के पौधे को लगाकर अथवा उसके स्तम्भ को रोपकर उस पर 11 बार कलावा लपेट दे और उसकी पूजा करें। तदनन्तर निम्न मन्त्र का तीन माला जप करें। जप पूर्ण हो जाने पर केले के स्तम्भ की बारह बार प्रदक्षिणा करें। ऐसा करने से अवश्य ही शीघ्र वर की प्राप्ति होती है-

''ॐ शं शंकराय सकलजन्मार्जित पापविध्वंसनाय पुरुषार्थ-चतुष्टयलाभाय च पति मे देहि कुरु-कुरु स्वाहा।।''

(5) सर्वव्याधि/शारीरिक कष्ट निवारणार्थ 'श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र' (मृतसंजीवनी मन्त्र)

'ॐ ह्रौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ ह्रौं ॐ।'

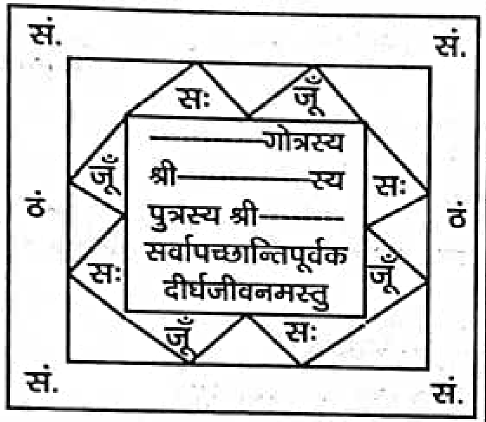
अर्थ-हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि-यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।



"श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्"

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुगुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।

(6) भगवती दुर्गा की अर्चना से पुत्र-प्राप्ति

रूपं देहि यशो देहि भगं भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि श्रियं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।। १०।।

मन्त्रार्थ–(हे भगवति ! आप मुझे रूप, यश और ऐश्वर्य प्रदान करें। हे देवि ! आप मेरे लिए पुत्र प्रदान करें, लक्ष्मी दें और मेरी सभी कामनाओं को परिपूर्ण करें।)

पुत्र जन्म की कामना करने वाली स्त्री को दूर्वा और सरसों के पुष्पों द्वारा भगवती दुर्गा की अर्चना करके स्वस्ति वाचन एवं पूजन कराने के बाद पति/पत्नी को या पण्डित जी द्वारा नवरात्रादि के शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करके संकल्पपूर्वक कम से कम **सवा लाख की सँख्या** में पाठ करवाना चाहिए। मन्त्र की प्रतिदिन तीन या कम-से-कम एक माला का पाठ अवश्य करना चाहिए। पाठ श्री दुर्गा मूर्ति के सम्मुख कुशासन या पीले कम्बल के आसन पर उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर आचमनादि एवं पवित्रीकरण मन्त्र पढ़कर तथा स्वास्तिवाचन, एवं गणेशाम्बिका का पूजन करने के बाद, आगे लिखे किसी भी अभीष्ट एवं पूज्य देवी का पाठ/जप उपरोक्त सँख्या में स्वयं अथवा पण्डित जी द्वारा करवाना चाहिए। पाठ की सम्पूर्ति के बाद, दशमांश सँख्या में (हवन), उसका दशमांश तर्पण तथा उसका दशांश सँख्या में मार्जन कराना चाहिए। फिर भगवान् कृष्ण की आरती करके मिष्ठान्त सहित भगवान् को भोग लगाकर, ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर, उन्हें दक्षिणा सहित वस्त्र, फल, मिष्ठान्नादि का दान यथाशक्ति देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए।

नोट–एक सुनिश्चित सँख्या में जपोपरान्त यदि प्रतिदिन देवी दुर्गा माता का **"अर्गला स्तोत्र"** एवं कुंजिकास्तोत्र का पाठ भी कर लें, तो कल्याणप्रद रहेगा।

(7) पुत्र प्रदायक सरस्वती मन्त्र

त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती।
पतिं देहि, गृहं देहि, सुतं देहि मे, नमोऽस्तुते ।।

अर्थ–(हे सरस्वती देवी, तुम ही शक्ति स्वरूपा, सत्व (तेज) रूप स्वधा, स्वाहा, सावित्री आदि रूपों में विद्यवान् हो। मुझ को पति सुख, गृह सुख एवं पुत्र सुख प्रदान करें। आपको नमस्कार है।।)

ऊपरलिखित मन्त्र पति/पत्नी द्वारा ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया से प्रारम्भ करके सवा लाख की सँख्या में करना चाहिए। पाठारम्भ श्री सरस्वती की प्रतिमा (मूर्त्ति) के सामने अखण्ड दीप जलाकर शुरू करना चाहिए। शेष विधि मन्त्र सँख्या नं० (10) के समान ही अनुसरण करें।। पाठोपरान्त ऊपर लिखे मन्त्र से कम-से-कम १०८ आहुतियाँ देनी चाहिएँ तथा अन्त में अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मण भोजन, दान-दक्षिणा सहित करवाना तथा कन्या पूजन करना कल्याणकारी होगा।

(8) गर्भ रक्षा हेतु अन्य उपयोगी यन्त्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यन्त्र धारण विधि–जिस स्त्री को गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो अथवा गर्भ की बार-बार क्षति हो, उस स्त्री की बाईं बाजू अथवा कमर में यह यन्त्र बाँध देने से गर्भ स्थिर हो जाता है। इस यन्त्र को भोजपत्र पर रविवार के दिन, मूला नक्षत्र में अनार की कलम से लिखकर तांबे के ताबीज़ में रखकर बाँधना चाहिए और निम्नलिखित मंत्र कम-से-कम 3 बार पढ़ना चाहिए।–

"ॐ बिन्दु सँयुक्तं नित्यं ध्यायन्ती योगिनः,
कामदं मोक्षदं ओंकाराय नमो नमः ।।"

(9) मुकद्दमे में विजय हेतु मन्त्र

'ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु-पक्ष/जज का नाम) जीभि तालू सर्वखिली सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।'

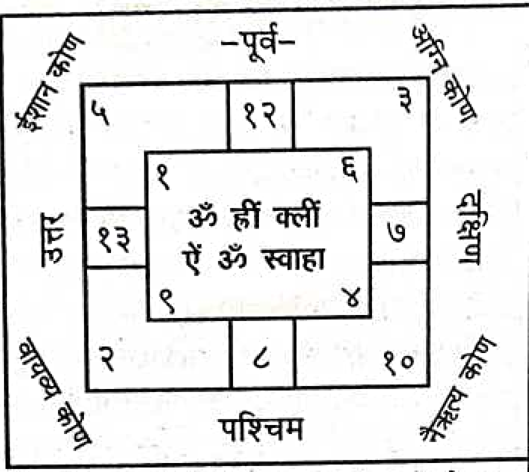
५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

इस मन्त्र को दीपावली आदि किसी शुभ मुहूर्त्त में सिद्ध करके 21 बार विवाद के समय मन में बोले तो व्यक्ति विवाद/मुकद्दमा/शास्त्रार्थ जीत कर ही आएगा।

विशेष–यदि साथ दिए गए यन्त्र को चाँदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन संक्रान्ति, हस्त-मूल नक्षत्रकालीन अथवा दीपावली/ग्रहण के दिन खुदवाकर प्रतिष्ठित कर प्रतिदिन पूजन करें तो कोर्ट-कचहरी आदि विषयों में विजय प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन जाती है।

(10) धन प्राप्ति एवं व्यापार वृद्धि हेतु श्रीमहालक्ष्मी मन्त्र एवं बीसा यन्त्र

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-



सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है।

प्रतिदिन स्नान, पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्त्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जाप (१, ३, ७ माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (५१ हज़ार अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तुति पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा–

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्नां स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

श्रीमहालक्ष्मी मन्त्राः–

✱ **''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः''**
✱ **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।**
✱ **श्री ह्रीं श्री महालक्ष्मै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**
✱ **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम् व। धीमहि तन्नोलक्ष्मी प्रचोदयात् ह्रीं ॐ॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त्त जैसे नवरात्रे, अक्षय तृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य योग, दीपावली, ग्रहण काल में यथेष्ठ संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है। ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य हेतु पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।

''संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र''

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

(11) भूत-प्रेत बाधा एवं गाय की पशु-रोग से निवृत्ति के लिए मन्त्र

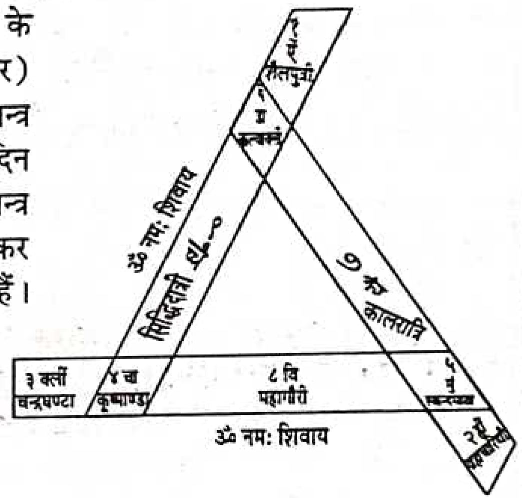
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संङ्घाः॥ (गीता–11/36)

उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए इसका 3000 बार जाप करें। इसके बाद जब कभी आवश्यकता हो, किसी में भूत-प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र या बर्तन में गंगाजल या कुएँ का जल लेकर सात बार मन्त्र बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली फिरा दें। फिर उस जल में से थोड़ा-सा रोगी को पिला दें। बाकी जल को सारे अंगों पर और सारे स्थान पर छिड़क दें। जब तक रोगी की प्रेत-बाधा का नाश न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार इस प्रयोग को करते रहें।

इसी प्रकार अभिमन्त्रित जल को पानी के साथ मिलाकर या किसी प्रकार भी गाय को पिला देने पर उसकी 'पशु-रोग' से रक्षा हो जाती है।

(12) ज्योतिष, तन्त्र, ज्ञान-विज्ञानप्रद 'सिद्ध बीसा यन्त्र'

प्रयोग विधि–सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण अथवा पूर्णमाशी के दिन जब गुरुवार पड़े अथवा दीपावली की रात्रि में इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर अथवा अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से एक अंक के क्रमानुसार 9 अंक तक (यन्त्र के अनुसार) विधिपूर्वक लिखें, तत्पश्चात् विधि-विधान से यन्त्र का पूजन कर सत्ताइस हज़ार निर्वाण मन्त्र नौ दिन में रुद्राक्ष की माला से पूर्ण करें और फिर इस यन्त्र को यथाशक्ति यन्त्र में भरकर लाल धागे में पिरोकर धारण करने से उपरोक्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं। परीक्षित है।



नर्वाण मन्त्र–

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥'

(13) शत्रुभय से मुक्ति/मुकद्दमे में विजय हेतु मन्त्र

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॐ॥'

विधि–उक्त मन्त्र का जाप श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन श्रीभगवती माता का ध्यान करते हुए करें, विशेषकर नवरात्रों/दीपावली/ग्रहण आदि पर्वों पर। इस मन्त्र के जाप से पूर्व हमारी पं. देवीदयालु कृत **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** में से **'सिद्धकुञ्जिका-स्तोत्र'** का पाठ करें। तत्पश्चात् इस मन्त्र की एक माला प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करें। तत्पश्चात् अन्त में पुनः **'सिद्धकुञ्जिका स्तोत्र'** का पाठ करके भगवती दुर्गा के समक्ष समर्पण भावना से शत्रु पर विजय या मुकद्दमे में विजय हेतु प्रार्थना करें, अवश्य सफलता मिलेगी।

(14) कुछ उपयोगी टोटके

(1) शीघ्र विवाह के लिए–(*i*) विवाह के इच्छुक युवक या युवती को प्रत्येक बृहस्पतिवार को स्नान करने वाले जल में एक चौथाई चम्मच हल्दी डालकर स्नान करना

चाहिए। हल्दी के स्थान पर केसर का उपयोग भी किया जा सकता है। यदि ऐसे युवक या युवती बृहस्पतिवार को गाय को भोग (आटे के दो गोलों पर थोड़ी सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ तथा चने की गीली दाल) दें तो उनके विवाह का योग शीघ्र बन सकता है।

(*ii*) मंगली होने के कारण विवाह में बाधा आ रही हो, तो कन्या प्रत्येक मंगलवार 'श्रीमंगल चंडिका स्तोत्र' (देखें वि. संवत् २०७७ की पंचांगदिवाकर अथवा हमारी पुस्तक 'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय') का पाठ करें तथा लाल मूंगे की माला से निम्न मंत्र का जप करें– **'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व पूज्ये देवि मंगल चंडिके हूँ फट् स्वाहा।'**

इस मंत्र जाप के साथ सुन्दरकाण्ड का पाठ भी करें।

(*iii*) विवाह सम्बन्ध बनते-बनते टूट रहे हो, तो पूर्णिमा को किसी भी वटवृक्ष की 108 परिक्रमा करने से विवाह की विघ्नता दूर हो जाती है। गुरुवार को वट, पीपल एवं केले के वृक्ष पर जल अर्पित करने से विवाह की बाधा टूट हो जाती है।

(2) दाम्पत्य सुख के लिए–पति-पत्नी में परस्पर तनाव एवं झगड़ा रहता हो तथा स्त्री सदेव पति से प्रताडित होती रहती हो, तो वह बेल के तीन पत्तों पर अपने पति का नाम गोरोचन में काली हल्दी का घोल बनाकर मोर पंख की कलम से लिखे। फिर उन्हें चाँदी की डिब्बी में भरकर, उसे अपने दाएं हाथ की हथेली में रखें और निम्न मंत्र का मन ही मन 11 बार, 11 दिन तक जाप करें–**'ॐ नमः शिवाय शंकराय'**

जब 11 दिन पूरे हो जाएं, तब डिब्बी को उसी बेल वृक्ष को समर्पित कर आए, जिसके वे तीन पत्ते लिए थे। कुछ ही दिनों में पति के व्यवहार में परिवर्तन होगा।

(3) सन्तान प्राप्ति के लिए–(*i*) चार बृहस्पतिवार को 900 ग्राम जौं चलते पानी में बहाएं। बृहस्पतिवार का व्रत रखना भी शुभ होगा। राधाकृष्ण जी के मन्दिर में शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार या जन्माष्टमी को चाँदी की बांसुरी चढ़ाएं। लाल या भूरी गाय को आटे का पेड़ा या पानी दें। उपाय श्रद्धापूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी।

(*ii*) सन्तान प्राप्ति के लिए कृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर श्वेत वस्त्र धारण करें। पत्नी लाल वस्त्र पहने। दोनों उपवास रखें और घर के पूजा-स्थल में श्रीकृष्ण के बालरूप का चित्र व सन्तान गोपाल यन्त्र को स्थापित करें। घी का दीपक और अगरबत्तियाँ जलाएं तथा एक सेब, मक्खन, शहद, शिवलिंगी के 6 बीज और नागकेशर के 21 दाने एवं दोनों हाथों पर बांधने के लिए लाल रेशमी धागे अर्पित करें। फिर तुलसी की माला से **'ॐ कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।'** की एक माला जाप करें। जाप के बाद सन्तान प्राप्ति के लिए निवेदन करें। लाल धागों को पत्नी बाएं और पति दाएं हाथ में बांध ले और भोग को प्रसाद रूप में ग्रहण करें।

(4) विवाह बाधा दूर करने के उपाय–मंगलवार को प्रातः सूर्योदयकाल में एक सूखा नारियल लें। उसमें तीन सौ ग्राम बूरा अर्थात् पिसी हुई शक्कर तथा ग्यारह रुपये की पंचमेवा मिला लें। उस नारियल में एक इतना बड़ा छिद्र करें, जिसमें आसानी से उंगली जा सके।

उस नारियल में पिसी शक्कर व पंचमेवा मिलाकर भर दें और किसी पीपल वृक्ष के नीचे थोड़ा गड्ढा कर दबा दें। जो शक्कर बचे, उसे गड्ढे के ऊपर ही डालकर एक पत्थर रख दें, जिससे कोई पशु उसे निकाल न पाए।

इस क्रिया को आप लगातार सात मंगलवार करें। किसी भी कन्या के लिए लगातार सात मंगलवार नहीं हो सकते, क्योंकि मासिक होने का समय आ जाता है, किन्तु इसमें इसके अस्वस्थ होने की कोई समस्या नहीं है। इसलिए जब माहवारी की समस्या आए तो उपाय रोक दें और शुद्ध होने पर पुनः आरम्भ कर दें। इस प्रयोग में यह सावधानी रखनी पड़ती है कि सोमवार की रात्रि से मंगलवार को प्रयोग होने तक पानी नहीं पीना है और न ही किसी से कोई बात ही करनी है। सात मंगल होने के बाद चमत्कार स्वयं ही दिखाई देने लगेगा और कहीं न कहीं संबंध हो जाएगा।

(5) पति-पत्नी में गृह-क्लेश दूर करने के उपाय–पत्नी द्वारा किया जाने वाला एक सशक्त टोटका है जिसको अपनाने से दाम्पत्य में क्लेश दूर होता है। शुक्लपक्ष के प्रथम गुरुवार से आरम्भ करें और लगातार तीन दिन तक करें। इस उपाय में आपको तीन स्थान पर सुहाग सामग्री (सिन्दूर, चूड़ियां, मेहंदी, वस्त्र, महावर व नगद दक्षिणा आदि) की आवश्यकता होगी जो आप अपनी आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार प्राप्त कर सकती हैं। सामग्री में कोई वस्त्र तथा सिन्दूर अवश्य होना चाहिए। अब आप गुरुवार को दोपहर 2 बजे के बाद स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें। एक थाली में सुहाग सामग्री लेकर किसी सुहागिन ब्राह्मण वर्ण की स्त्री को दान कर दें। फिर चरणस्पर्श कर कुछ नगद दक्षिणा देकर उनके हाथ से सिन्दूर की डिब्बी वापस ले लें। डिब्बी को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। अगले दिन सायंकाल लगभग 5 बजे स्नान कर हल्के रंग के वस्त्र पहनकर किसी क्षत्रिय वर्ण की सुहागिन को सुहाग सामग्री दें तथा फिर वही क्रिया करें अर्थात् चरण स्पर्श कर कुछ नगद धन देकर सिन्दूर की डिब्बी वापस ले लें। इस डिब्बी को भी पहले वाली डिब्बी के साथ रख दें। अब अगले दिन अर्थात् शनिवार को अंधेरा होने के बाद स्नान कर नीले रंग के वस्त्र धारण करें और सुहाग सामग्री का दान किसी निम्नवर्ग की सुहागिन को करें। फिर वही क्रिया करें। इस प्रकार से आपके पास तीन सिन्दूर की डिब्बियां हो जाएंगी। अब आप तीनों डिब्बियों का सिन्दूर एक साथ मिला लें और नियमित रूप से इससे अपनी मांग भरें। कुछ ही दिन में आप परिवर्तन अनुभव करेंगी क्योंकि आप पर देवगुरु बृहस्पति, शुक्रदेव तथा शनिदेव की कृपा है। देवगुरु की कृपा से आपके पति को सद्बुद्धि आएगी, शुक्रदेव की कृपा से आपके दाम्पत्य जीवन में सुख आएगा। शनिदेव की कृपा से आपके परिवार में गुप्त विरोधी निष्क्रिय होंगे।

* यदि आपके पति किसी भी सदस्य के सामने आपका अपमान करते हैं तो आप यह उपाय अवश्य करें–शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्ष चतुर्दशी को किसी भी निकट के शिव मन्दिर में जाकर दूध से शिवलिंग को स्नान कराएं तथा साबूदाने की खीर का नैवेद्य अर्पित करें। उपरोक्त उपाय आप अपने पति के अधिक क्रोध करने की आदत को समाप्त करने के लिए भी कर सकती हैं।

□ बृहस्पति अष्टोत्तर शतनामावली □

(पितृदोष निवारणार्थ एवं विद्यार्थियों के लिए विद्या प्राप्ति में सफलता के लिए)

आगामी वर्ष में सन् 2023 ई. में गोचरवश 22 अप्रैल, 2023 ई. से 30 अक्तूबर, 2023 ई. तक 'गुरु-राहु' योग रहेगा। जिन जातक/जातिकाओं की जन्मकुण्डली में गुरु-राहु योग हो, उन्हें बृहस्पति के 108 नाम का नित्य जप करने से इस योग जनित अशुभ प्रभाव दूर होंगे।

—श्रीबृहस्पति अष्टोत्तरशत नामावली—

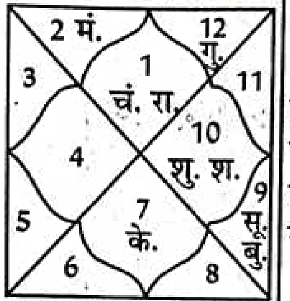
1. ॐ वृं गुरवे नमः।
2. ॐ वृं गुणवराय नमः।
3. ॐ वृं गोप्त्रे नमः।
4. ॐ वृं गोचराय नमः।
5. ॐ वृं गो-पतिप्रियाय नमः।
6. ॐ वृं गुणिने नमः।
7. ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः।
8. ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः।
9. ॐ वृं अव्ययाय नमः।
10. ॐ वृं जेत्रे नमः।
11. ॐ वृं जयन्ताय नमः।
12. ॐ वृं जयदाय नमः।
13. ॐ वृं जीवाय नमः।
14. ॐ वृं अनन्ताय नमः।
15. ॐ वृं जयावहाय नमः।
16. ॐ वृं आङ्गीरसाय नमः।
17. ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः।
18. ॐ वृं विविक्ताय नमः।
19. ॐ वृं अध्वरकृत्पराय नमः।
20. ॐ वृं वाचस्पतये नमः।
21. ॐ वृं वशिने नमः।
22. ॐ वृं वश्याय नमः।
23. ॐ वृं वरिष्ठाय नमः।
24. ॐ वृं वाग्विचक्षणाय नमः।
25. ॐ वृं चित्तशुद्धिकराय नमः।
26. ॐ वृं श्रीमते नमः।
27. ॐ वृं चैत्राय नमः।
28. ॐ वृं चित्रशिखण्डिजाय नमः।
29. ॐ वृं बृहद्रथाय नमः।
30. ॐ वृं बृहद्भानवे नमः।
31. ॐ वृं वृहस्पतये नमः।
32. ॐ वृं अभीष्टदाय नमः।
33. ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
34. ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः।
35. ॐ वृं सुरकार्यहितकराय नमः।
36. ॐ वृं गीर्वाणपोषकाय नमः।
37. ॐ वृं धन्याय नमः।
38. ॐ वृं गीष्पतये नमः।
39. ॐ वृं गिरीशाय नमः।
40. ॐ अनघाय नमः।
41. ॐ वृं धीवराय नमः।
42. ॐ वृं दिव्यभूषणाय नमः।
43. ॐ वृं देवपूजिताय नमः।
44. ॐ वृं धनुर्धराय नमः।
45. ॐ वृं दैत्यहन्त्रे नमः।
46. ॐ वृं दयासाराय नमः।
47. ॐ वृं दयाकराय नमः।
48. ॐ वृं दारिद्र्यविनाशनाय नमः।
49. ॐ वृं धन्याय नमः।
50. ॐ वृं धिषणाय नमः।
51. ॐ वृं दक्षिणायनसम्भवाय नमः।
52. ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः।
53. ॐ वृं देवाय नमः।
54. ॐ वृं धनुर्बाणधराय नमः।
55. ॐ वृं हरये नमः।
56. ॐ वृं अङ्गीरसाब्दसञ्जाताय नमः।
57. ॐ वृं अंगिरसकुलोद्भवाय नमः।
58. ॐ वृं सिन्धुदेशाधिपाय नमः।
59. ॐ वृं धीमते नमः।
60. ॐ वृं स्वर्णकायाय नमः।
61. ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः।
62. ॐ वृं हेमाङ्गदाय नमः।
63. ॐ वृं हेमवपुषे नमः।
64. ॐ वृं हेमभूषणभूषिताय नमः।
65. ॐ वृं पुष्यनाथाय नमः।
66. ॐ वृं पुष्यरागमणि मण्डनमण्डिताय नमः।
67. ॐ वृं काशपुष्पसमानाभाय नमः।
68. ॐ वृं कलिदोषनिवारकाय नमः।
69. ॐ वृं इन्द्रादिदेवदेवेशाय नमः।
70. ॐ वृं देवताऽभीष्टदायकाय नमः।
71. ॐ वृं असमानबलाय नमः।
72. ॐ वृं सत्त्वगुणसम्पद्विभावसवे नमः।
73. ॐ वृं भूसुराभीष्टफलदाय नमः।
74. ॐ वृं भूरियशसे नमः।
75. ॐ वृं पुण्यविवर्धनाय नमः।
76. ॐ वृं धर्मरूपाय नमः।
77. ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः।
78. ॐ वृं धनदाय नमः।
79. ॐ वृं धर्मपालनाय नमः।
80. ॐ वृं सर्वदेवतार्थतत्त्वज्ञाय नमः।
81. ॐ वृं सर्वापद्विनिवारकाय नमः।
82. ॐ वृं सर्वपापप्रशमनाय नमः।
83. ॐ वृं स्वमतानुगतामराय नमः।
84. ॐ वृं ऋग्वेदपारगाय नमः।
85. ॐ वृं सदानन्दाय नमः।
86. ॐ वृं सत्यसन्धाय नमः।
87. ॐ वृं सत्यसङ्कल्प मानसाय नमः।
88. ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः।
89. ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः।
90. ॐ वृं सर्ववेदान्तविदुषे नमः।
91. ॐ वृं ब्रह्मपुत्राय नमः।
92. ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः।
93. ॐ वृं ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः
94. ॐ वृं समानाधिक निर्मुक्ताय नमः
95. ॐ वृं सर्वलोक वंशकराय नमः
96. ॐ वृं सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः
97. ॐ वृं सत्यभाषणाय नमः।
98. ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
99. ॐ वृं दयावते नमः।
100. ॐ वृं शुभलक्षणाय नमः।
101. ॐ वृं लोकत्रयगुरवे नमः।
102. ॐ वृं श्रीमते नमः।
103. ॐ वृं सर्वगाय नमः।
104. ॐ वृं सर्वतोविभवे नमः।
105. ॐ वृं सर्वेशाय नमः।
106. ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः।
107. ॐ वृं सर्वपूजिताय नमः।
108. ॐ वृं सर्वदेवेभ्यो नमः।

शतनाम स्तोत्र से पूर्व गुरु बृहस्पति. देवता का विनियोग, अंग-न्यास तथा ध्यान मन्त्र का भी यथा पाठ करना चाहिए। [स्त्रियों तथा जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ है, उन्हें प्रत्येक नाम के पहले 'ॐ' के स्थान पर 'श्री' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।]

द्वादश राशियों का ग्रहगोचरानुसार फलादेश एवं उपाय–2023 ई.

☆ वर्षफल–मेष राशि ☆

वर्षप्रवेश कुण्डली



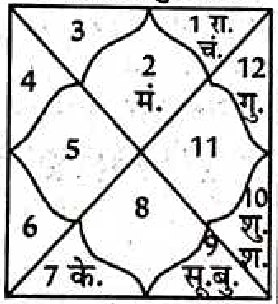
वर्षारम्भ से 30 अक्तू. तक इस राशि पर राहु का संचार तथा 17 जन. से वर्षान्त तक शनि की नीच दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें, घरेलु उलझनें तथा स्वास्थ्य कष्ट रहे। परन्तु 22 अप्रै. से वर्षान्त तक गुरु का संचार इस राशि पर होने से बीच–बीच में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। ता. 14 अप्रै. से 14 मई तक सूर्य के इस राशि पर उच्चस्थिति में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के चाँस के साथ–साथ आकस्मिक खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 30 अक्तू. से इस राशि पर से राहु की स्थिति भी हट जाने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

उपाय–(1) गौओं को जौं, गेहूँ एवं उड़द के आटे से बनी चापातियाँ शक्कर सहित हर शनिवार एवं बुधवार को खिलाएँ।

(2) हर मंगलवार का व्रत विधि–विधानपूर्वक रखें। प्रात: एवं सायं को श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करना, हनुमान जी की मूर्त्ति पर सिंधूर व तेल चढ़ाकर प्रसाद बाँटना शुभ होगा। 'पं. देवी दयालु' मंगलवार व्रत कथा पढ़ें।

☆वर्षफल–वृष राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 12 मार्च तक इस राशि पर मंगल का संचार रहने से क्रोध–उत्तेजना तथा व्यर्थ के वाद–विवाद से बचना चाहिए। ता. 15 फर. से 11 मार्च के मध्य राशिस्वामी शुक्र उच्च राशिगत संचार करने से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

ता. 15 मई से 15 जून के मध्य सूर्य इस राशि पर संचार करने तथा 22 अप्रै. से वर्षान्त तक द्वादशस्थ '**गुरु–राहु**' पर शनि की नीच दृष्टि रहने से क्रोधाधिक्य, व्यर्थ के खर्च, बनते कार्यों में विघ्न, आँखों में कष्ट व मानसिक तनाव होगा। ता. 23 जुला. से 3 सितं. तक शुक्र वक्री रहने से आय के साधनों में भी विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 2 से 29 नवं. के मध्य शुक्र नीच राशि में होने से किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा हानि होने के संकेत मिलते हैं।

उपाय–(1) हर मंगलवार माता के मन्दिर में एक नारियल चढ़ाना तथा उस दिन श्रीदुर्गा–सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

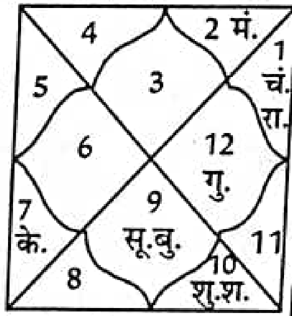
(2) ता. 30 अक्तू. तक प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा डालना तथा प्रत्येक संक्रान्ति 1 नारियल मन्दिर में प्रशाद रूप में चढ़ाएं।

(3) ता. 22 मार्च के बाद मई तक, पुन: जुलाई से नवं. तक हर शुक्रवार छोटी कन्याओं का पूजन करके उन्हें बर्फी, फलादि भेंट देकर स्वयं व्रत रखें।

विशेष उपायों के लिए हमारी पुस्तक '**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके**' (लेखक : पं. पन्ना लाल ज्यो.) मंगलवाकर पढ़ें–**मूल्य 250 रु.**

☆ वर्षफल–मिथुन राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 6 फर. तक वक्री बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से पुरुषार्थ एवं उद्यम में वृद्धि, संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु ता. 14 जन. तक सूर्य की दृष्टि तथा ता. 17 जन. तक शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से क्रोध एवं उत्तेजना से बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं।

7 फर. से 27 फर. तक बुध अष्टमस्थ तथा 1 मार्च से 30 मार्च तक बुध अस्त रहने से स्वास्थ्य कष्ट, आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। ता. 16 मार्च से 30 मार्च तक बुध नीच (मीन) राशिस्थ होने से स्वास्थ्य हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

ता. 1 अक्तू. से 18 अक्तू. तक बुध चतुर्थ भाव उच्चराशि में होने से अचानक धन प्राप्ति के योग हैं। नवं. में बुध छठे स्थान में होने से सेहत में खराबी तथा चोटादि का भय होगा।

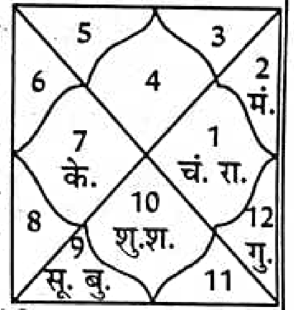
उपाय–(1) पूर्णमाशी का व्रत करना और श्रीविष्णु–सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना। प्रतिदिन गौओं का चपातियां खिलाना शुभ रहेगा।

(2) बुधवार को कन्याओं को मीठा प्रसाद बाँटना, तामसिक भोजन (माँस, मछली आदि) से पूरी तरह परहेज़ करना।

(3) प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा डालना शुभ रहेगा, विशेषकर 30 अक्तू. तक।

☆ वर्षफल–कर्क राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 16 जन. तक शनि की सप्तम दृष्टि, 17 जन. से वर्षान्त तक शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, धन–हानि, निकट–बन्धुओं से विरोध, घरेलु कलह–क्लेश, रोग एवं शत्रुभय तथा आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। परन्तु वर्षारम्भ से 21 अप्रै. तक गुरु की शुभ उच्च दृष्टि रहने के कारण सकरात्मक सोच तथा दृढ़ इच्छाशक्ति, पराक्रम के बल पर सोची हुई योजनाओं में सफलता भी मिलती रहेगी।

ता. 10 मई से 30 जून तक मंगल नीचस्थ रहने से स्वास्थ्य में विकार, मानसिक तनाव व क्रोध अधिक रहेगा।

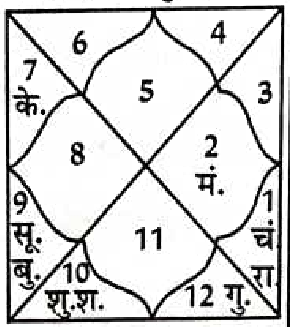
उपाय–(1) अप्रैल से वर्षान्त तक संकल्पपूर्वक मंगलवार का व्रत रखकर प्रशाद चढ़ाना शुभ रहेगा। (संकल्प सहित हमारी प्रकाशित 'पं. देवीदयालु' '**मंगलवार व्रत कथा**' ही खरीदें।)

(2) 'पितृ–सूक्त' का पाठ करें। विशेषकर उन जातकों को, जिनकी कुण्डली में 'पितृ–दोष' हो।

(3) वर्षभर कृष्णपक्ष के शनिवार से प्रारम्भ लगातार 7 शनिवार सूखे नारियल को तेल का

टीका लगाकर काली डोरी लपेटकर अपने सिर से 3 बार छुआकर शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए शाम के समय चलते पानी में बहा देवें।

वर्ष प्रवेश कुण्डली



☆ वर्षफल–सिंह राशि ☆

ता. 17 जन. से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि की शत्रु सप्तम दृष्टि रहने से बनते कार्यों में विलम्ब, रुकावटें रहेंगी। ता. 13 फर. से 14 मार्च तक राशिस्वामी सूर्य की तथा 12 मार्च तक मंगल की दृष्टि रहने से दौड़धूप अधिक, धन लाभ होता रहेगा परन्तु उत्तेजना व क्रोध से बचें। ता. 15 मार्च से 13 अप्रैल तक सूर्य अष्टमस्थ होने से पिता एवं स्वयं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। ता. 14 अप्रै. से 14 मई तक राशिस्वामी सूर्य उच्चस्थ होने भाग्योन्नति, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क/सम्बन्ध बनेंगे।

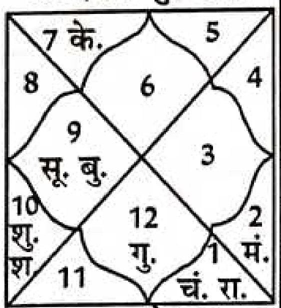
ता. 22 अप्रैल से वर्षान्त तक गुरु की विशेष पंचम शुभ दृष्टि पड़ने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी।

उपाय–(1) वर्षभर (17 जन. के बाद) शनि की अशुभ दृष्टि के निवारण हेतु हर शनिवार को शनि मन्दिर में तेल, तिल चढ़ाना और '**शनि-स्तोत्रम्**' का पाठ करना शुभ रहेगा।

(2) हर संक्रान्ति को '**सूर्य गायत्री मन्त्र**' की एक माला तथा सूर्यार्घ्य देवें तथा धर्मस्थान पर आटा, गुड़, लाल फल एवं लाल वस्त्र का दान शुभ होगा।

(3) जन्मदिन पर जन्मदिन पूजन करवाकर अष्ट-दीर्घजीवी आचार्यों का पूजन करें। [देखें हमारी पुस्तक-'**जन्मदिन पूजा पद्धति**']

वर्ष प्रवेश कुण्डली



☆ वर्षफल–कन्या राशि ☆

वर्षारम्भ से 21 अप्रै. तक गुरु की सप्तम दृष्टि रहने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

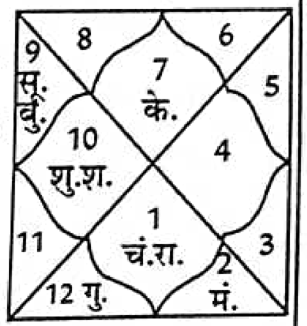
16 मार्च से 30 मार्च के मध्य राशिस्वामी बुध नीच राशि में तथा 31 मार्च से 7 जून तक अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे तथा अपने नज़दीकी सम्बन्धी भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 1 अक्तू. से 18 अक्तू. के मध्य राशि स्वामी बुध इसी राशि पर स्वोच्च स्थिति में संचार करेगा जिससे आय के साधनों में वृद्धि होगी तथा बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। नवं. मास में इस राशि पर शुक्र नीचस्थ होने से खर्च भी अधिक होंगे। ता. 30 अक्तू. से वर्षान्त तक केतु का संचार इस राशि पर होने से वृथा मानसिक तनाव, परेशानियां तथा धन-हानि होगी।

उपाय–(1) मार्च से मई मास के मध्य लगातार 6 बुधवार साबुत मूँगी (सामर्थ्यानुसार) धर्मस्थान अथवा पिंगलवाड़ा में दान देना शुभ रहेगा।

(2) ता. 12 मार्च से 10 मई के मध्य तक तथा सितम्बर मास में मंगलवार को गौओं को मीठी चपातियां खिलाना शुभ होगा।

(3) वर्षारम्भ से 22 अप्रै. के मध्य बृहस्पतिवार वाले दिन धर्मस्थान पर हलुवा या पीले मीठे चावलों का लंगर करवाएं तथा बच्चों में केले बाँटना शुभ होगा।

वर्ष प्रवेश कुण्डली



☆ वर्षफल–तुला राशि ☆

वर्षारम्भ से 30 अक्तू. तक इस राशि पर केतु का संचार रहने से घरेलु तनाव, कार्यक्षेत्र सम्बन्धी परेशानियां एवं गुप्त चिन्ताएं बनी रहेंगी। वर्षारम्भ से 17 जन. तक शनि की ढैय्या भी रहेगी। ता. 15 फर. से 11 मार्च तक राशिस्वामी शुक्र मीन (उच्च) राशि में संचार करने तथा 12 मार्च से 5 अप्रै. तक शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, अकस्मात् धन-लाभ व उन्नति होगी।

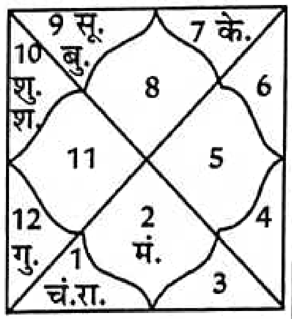
ता. 14 अप्रै. से 14 मई तक इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि तथा 22 अप्रै. से वर्षान्त तक गुरु की शत्रु दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 30 मई से 2 नवं. के मध्य राशिस्वामी शुक्र क्रमशः कर्क व सिंह राशि में संचारित होने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

उपाय–(1) ता. 30 अक्तू. तक केतु की शान्ति के लिए अपने जन्मदिन पर सुपात्र व्यक्ति को रंगदार कम्बल का दान करना शुभ होगा।

(2) शुक्रवार का विधिवत् व्रत रखना, कन्यापूजन करके मिष्ठान्न सहित दक्षिणा भेंट करना।

(3) नवरात्रों में श्रीदुर्गा-सप्तशती का विधिपूर्वक पाठ करना शुभ होगा।

वर्ष प्रवेश कुण्डली



☆ वर्षफल–वृश्चिक राशि ☆

वर्षारम्भ ता. 17 जन. से वर्षान्त तक इस राशि पर **शनि की ढैय्या** का प्रभाव रहने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। परन्तु वर्षारम्भ से 21 अप्रै. तक गुरु की शुभ दृष्टि तथा वर्षारम्भ से 12 मार्च तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से नए उच्चाधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। ता. 12 मार्च से 9 मई तक मंगल अष्टमस्थ, तदुपरान्त 30 जून तक नीचस्थ (कर्क राशिगत) संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

ता. 30 जून से 17 अग. तक इस राशि पर मंगल की स्वगृही चतुर्थ दृष्टि रहने से संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

उपाय–(1) वर्षभर प्रत्येक शनिवार काँसे की कटोरी में तेल का छायापात्र करना, शनि-मन्दिर में काले तिल, तेल शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ाना शुभ रहेगा।

(2) लगातार 7 मंगल या शनिवार अन्धविद्यालय या कुष्ठ आश्रम में सूखा अनाज या पकाया हुआ भोजन दान करें।

☆ वर्षफल–धनु राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 16 जन. तक इस राशि पर शनि–साढ़ेसाती का प्रभाव रहने से कार्य–व्यवसाय में विघ्न/बाधाओं के कारण उलझनें बढ़ेंगी। ता. 17 जन. से वर्षान्त तक द्वादश (व्यय) भाव पर शनि की विशेष दशम दृष्टि होने से वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। राशिस्वामी गुरु चतुर्थ भाव में होने से भूमि, सवारी आदि सुख–साधनों की प्राप्ति भी होगी।

22 अप्रैल से वर्षान्त तक इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से बिगड़े हुए काम बनेंगे। वर्षारम्भ से 9 मई तक, पुन: 18 अग. से 3 अक्तू. तक मंगल की दृष्टि धनु राशि पर होने से विद्या में सफलता तथा सोची हुई योजनाओं में कामयाबी होगी।

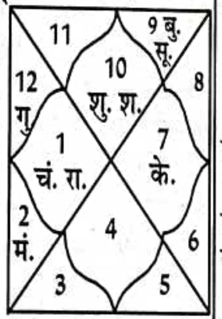
उपाय–(1) प्रत्येक बृहस्पतिवार का व्रत रखकर एक समय मिष्ठान्न के साथ भोजन करें।

(2) जन्मदिन को जन्मदिन की पूजा करवाकर, भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें तथा ब्राह्मण को भोजन करवाकर वस्त्र, फल, धर्मग्रन्थ सहित दान करें।

(3) लगातार 16 बृहस्पतिवार छोटी कन्याओं/बालकों को केले बाँटना शुभ रहेगा।

☆ वर्षफल–मकर राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षभर मकर राशि पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। ता. 16 जन. तक राशिस्वामी शनि लग्नस्थ, तदुपरान्त 17 जन. से वर्षान्त तक द्वितीय भाव में संचार करेगा तथा चतुर्थस्थ राहु पर नीच दृष्टि रखेगा। वृथा दौड़–धूप तथा खर्च अधिक रहेंगे।

ता. 14 जन. से 12 फर. के मध्य इस राशि पर सूर्य का संचार रहने से भी आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। ता. 13 फर. से 14 मार्च के मध्य द्वितीय भाव में '**सूर्य–शनि**' योग होने से निकट बन्धुओं के साथ मतभेद एवं तकरार के हालात बनेंगे। ता. 13 मार्च से 9 मई तक मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। ता. 10 मई से 30 जून तक मंगल की स्वोच्च दृष्टि रहने से अत्यधिक संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे।

3 अक्तू. से 16 नवं. तक मंगल की पुन: चतुर्थ उच्च दृष्टि रहने से पुरुषार्थ में वृद्धि, निकटस्थ सम्बन्धियों से मेल–मिलाप, वाहनादि सुख–साधनों में भी वृद्धि होगी।

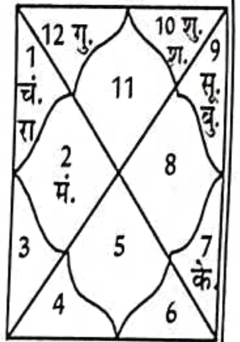
उपाय–(1) वर्षभर शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा देखकर बीज मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल शनि मन्दिर में तेल चढ़ाएँ। **बीज मन्त्र–'ॐ प्रां प्रीं प्रौ स: शनये नम:।'**

(2) प्रत्येक शनिवार काले वर्ण की गाय को चारा एवं चपातियाँ खिलाना शुभ होगा।

(3) हमारी पुस्तक '**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय टोटके**' नामक पुस्तक में दिए गए '**शनि वज्रपञ्जर कवच**' या '**शनि–स्तोत्र**' का पाठ हर शनिवार करें।

☆ वर्षफल–कुम्भ राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 16 जन. तक राशिस्वामी शनि 12वें तथा 17 जन. से वर्षान्त तक लग्न (इसी राशि में) भाव में संचार करने से इस राशि पर '**शनि–साढ़ेसाती**' का प्रभाव रहेगा। फलत: व्यवसाय/सर्विस सम्बन्धी दौड़–धूप, वृथा–परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहे, परन्तु इन सबके बावजूद पुरुषार्थ में वृद्धि, व्यवसाय सम्बन्धी नई–नई योजनाएँ भी बनेंगी।

ता. 13 फर. से 14 मार्च के मध्य सूर्य इस राशि पर शनि युक्त होने से बनते कार्यों में अड़चनें उत्पन्न हो। ता. 10 मई से 17 अग. तक मंगल की शत्रु दृष्टि रहने से शरीर कष्ट व उलझनें बढ़ेंगी। तथा. 17 जून से 3 नवं. तक शनि वक्री होने से व्यवसाय एवं गृहस्थ सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी।

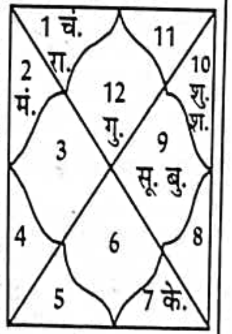
उपाय–(1) प्रत्येक शनिवार को शिव मन्दिर में शिवलिङ्ग पर कच्ची लस्सी, विल्वपत्र, 1 चुटकी शक्कर डालकर (**ॐ नम: शिवाय:**) मन्त्र पढ़कर अभिषेक करें।

(2) लोहे की कटोरी में तेल का छायापात्र करते रहें तथा वह तेल पाँच रविवार आक के पौधे पर डालें। पाँचवें शनिवार तेल चढ़ाने के पश्चात् तेल की कटोरी वहीं दवा दें।

(3) कार्तिक मास में (ता. 17 अक्तू. से) प्रतिदिन सूर्य भगवान् को '**ॐ घृणि: सूर्याय नम:**' मन्त्र के साथ अर्घ्य दें तथा **कार्तिक–माहात्म्य** का (पं. देवी दयालु पब्लिपकेशन्ज से प्रकाशित, इसमें पूरे अध्याय, तुलसी विवाह भी दिया गया है) पाठ करें।

☆ वर्षफल–मीन राशि ☆

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 21 अप्रैल तक राशिस्वामी गुरु का संचार स्वराशि मीन में ही रहेगा, फलत: उसकी शुभ दृष्टियां पंचम एवं नवम (भाग्य) स्थानों पर विशेष रूप से रहेंगी। ता. 17 जन. से वर्षान्त तक शनि–साढ़ेसाती का प्रभाव रहने से बनते कामों में अड़चनें तथा व्यवसाय में भी आशानुकूल धन लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा।

22 अप्रैल से वर्षान्त तक गुरु दूसरे भाव (मेष राशि) में संचार करेगा, जिससे आय में कमी तथा खर्चों में विशेष वृद्धि होगी। ता. 30 अक्तू. तक '**गुरु–राहु**' योग रहने से किसी निकटस्थ बन्धु से धोखा मिलने की भी सम्भावना है। ता. 30 अक्तू. के बाद राहु का संचार इस राशि पर होने से नई–नई समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी।

उपाय–(1) सूर्यदेव को प्रतिदिन गुरु गायत्री मन्त्र तथा '**ॐ घृणि सूर्याय नम:**' मन्त्र पढ़ते हुए अर्घ्य देवें तथा गुरु गायत्री मन्त्र का पाठ करें।

( ) बृहस्पतिवार का व्रत रखना शुभ होगा। उस दिन बेसन, केले आदि पीली वस्तुओं का दान करना शुभ होगा।

(3) बृहस्पतिवार को गौओं को चारा व चापातियाँ डालना शुभ होगा।

विशेष–राशियों सम्बन्धी फलादेश अधिक विस्तार से जानने के लिए हमारा पं. देवी दयालु '**वृहद् राशिफल**' मँगवाकर पढ़ें। मूल्य–75 रु.

बारह राशियों का ग्रहगोचर के अनुसार मासिक फलादेश-सन् 2023 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, रोग, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 1750, अधिक वृहद् विस्तृत की 2500 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 900 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 900 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 51 पौंड अथवा 75 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें-

–पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959, 94172-91325

मेष राशि (Aries)—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

जनवरी—इस राशि पर राहु का संचार तथा ता. 17 से शनि की नीच दृष्टि रहने से बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलु उलझनें तथा स्वास्थ्य कष्ट रहे। धन का अपव्यय एवं गुप्त चिन्ताएं भी रहेंगी। परन्तु मंगल द्वितीयस्थ होने से भाग्यवश गुजारेलायक आय होती रहेगी।

फरवरी—स्वास्थ्य कष्ट, मानसिक तनाव, धन का अपव्यय अथवा हानि होने की आशंका है। निकट बन्धुओं से मन-मुटाव होने का भय है। गृह-कलह के कारण उलझनें बढ़ेंगी। नज़दीकी मित्रों द्वारा परायों जैसा व्यवहार होने के कारण मन विक्षुब्ध होगा।

मार्च—राहु लग्नस्थ तथा शनि की दृष्टि के कारण स्वभाव में उत्तेजना, अधिक क्रोध और व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। व्यवसाय या नौकरी में उलझनों का सामना रहेगा। संघर्ष करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। ता. 13 से मंगल तृतीयस्थ होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

अप्रैल—मंगल तृतीयस्थ होने से भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। ता. 14 से सूर्य इस राशि पर उच्चस्थ होकर संचार करने से कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। प्रयास करने पर धन प्राप्ति के साधन बनेंगे।

मई—इस राशि सूर्य-गुरु-राहु योग ता. 14 तक रहने से पराक्रम और पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। नए-नए मित्रों एवं श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 10 से मंगल नीच (कर्क) राशि में रहने से घरेलु सुखों में कमी व अशान्ति व्याप्त रहेगी।

जून—नीचराशिगत मंगल का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध होने से मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, उदर-विकार से परेशानी होगी। उलझनें व समस्याएं उभरती व सिमटती रहेंगी। समय अनुकूल नहीं है। किसी से व्यर्थ का वाद-विवाद न करें।

जुलाई—मासारम्भ से ही मंगल सिंह राशि (पाँचवें) में संचार करेगा। '**मंगल-शनि**' का समसप्तक योग रहने से दौड़-धूप अधिक रहेगी। आय के साधनों में विघ्न-बाधाएँ, खर्च भी बढ़-चढ़ कर अधिक होंगे। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं वैमनस्य पैदा होने का भय है।

अगस्त—कार्य-व्यवसाय की स्थिति अभी अनिश्चित रहेगी। अत्यधिक परिश्रम एवं भागदौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। ता. 18 से मंगल षष्ठस्थ रहने के बावजूद उत्साह एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। ***उपाय***–'पुरुषोत्तम-माहात्म्य' का ता. 16 तक नित्य पाठ करें।

सितम्बर—लग्न में **गुरु-राहु** की स्थिति तथा मंगल की दृष्टि रहने से मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि, उच्च-प्रतिष्ठत लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। दाम्पत्य-जीवन में उत्साह, सहयोग तथा सुख-साधनों की अधिकता रहे। समय वाद-विवाद में नष्ट न करें अन्यथा हानि का भय है।

अक्तूबर—मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से हालात में कुछ सुधार होगा। बिगड़े काम बनेंगे तथा धन प्राप्ति के कुछ साधन बनेंगे। पारिवारिक वातावरण मनोऽनुकूल सुख प्रदान करेगा। दूरस्थ स्थल की यात्रा भी होगी। ***उपाय***–ता. 17 से पं. देवीदयालु (पं. पन्ना-लाल ज्यो. रचित) **'कार्तिक-माहात्म्य'** का पाठ करें।

नवम्बर—ता. 15 तक पुरुषार्थ एवं परिश्रम से विशेष कार्य में सफलता के आसार बढ़ेंगे। घरेलू काम निपटाने की व्यग्रता एवं परेशानी रहेगी। ता. 16 से मंगल अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य कष्ट, घरेलु उलझनें तथा बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। मंगल स्वराशिगत होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

दिसम्बर—गुरु इसी राशि में होने से कुछ रुके हुए महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। विशेष अवसरों और उत्सवों में जाने से मान-सम्मन में वृद्धि होगी, परन्तु किसी विशेष व्यक्ति के कारण मानसिक तनाव होगा।

वृष राशि (Taurus)—(ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

जनवरी—इस राशि पर मंगल का संचार रहने तथा शुक्र भाग्य स्थान में होने से स्वभाव में तेजी, व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। घर-परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी गुप्त चिन्ता रहेगी। पारिवारिक और व्यवसायिक योजनाओं की ओर मनोवृत्ति बढ़ेगी।

फरवरी—पूर्वार्द्ध में दशम भाव में '**शुक्र-शनि**' योग होने से वृथा यात्रा, शत्रु-भय, मानसिक तनाव, अवाँछित स्थान परिवर्तन से परिवार में कलह-क्लेश रहेगा। ता. 15 से शुक्र उच्चस्थ होने से मन में उत्साह और प्रसन्नता जागृत होगी। धन लाभ व उन्नति के योग हैं।

मार्च—*मासारम्भ में धन लाभ तथा व्यवसायिक व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। ता. 12 से शुक्र*

द्वादशस्थ होने से खर्च अधिक, घरेलु उलझनें व तनाव भी बढ़ेगा। घरेलु समस्याओं के कारण मन परेशान रहे।

अप्रैल—ता. 6 से शुक्र स्वराशिगत (वृष) होने से कोई शुभ समाचार मिलेगा। पारिवारिक सहयोग से कोई उलझा हुआ कार्य पूर्ण होने के योग हैं। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी पर अन्ध-विश्वास न करें, धोखा होने की सम्भावना है।

मई—इस मास शुक्र मिथुन राशि में, '**गुरु-राहु**' द्वादशस्थ रहने से क्रोधाधिक्य, व्यर्थ के खर्च, बनते कार्यों में विघ्न, आँखों में कष्ट व मानसिक तनाव होगा। व्यवसाय एवं नौकरी में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, परन्तु विलासता के कारण अभीष्ट लाभ नहीं होगा।

जून—शुक्र चतुर्थस्थ (कर्क) रहने से अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट रहे। पारिवारिक शान्ति का वातावरण बनाए रखने के लिए श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ करना शुभ होगा।

जुलाई—ता. 6 तक शुक्र तृतीयस्थ रहने से परिस्थितियों में विशेष परिवर्तन होंगे। भाई-बन्धुओं से मतभेद, स्वभाव में तेजी रहेगी। ता. 7 से शुक्र चतुर्थस्थ होने से विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

अगस्त—मासारम्भ से ही शुक्र वक्री रहने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटें, आय के साधनों में विघ्न रहेंगे। ता. 7 से शुक्र पुनः तृतीयस्थ संचार करने से पारिवारिक सदस्यों के साथ मतान्तर एवं मतभेद उत्पन्न हो। ता. 17 तक '**पुरुषोत्तम-माहात्म्य**' का पाठ करें।

सितम्बर—ता. 4 से शुक्र मार्गी अवस्था में तृतीयस्थ संचार करने से घरेलु एवं कारोबारी परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे, परन्तु अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बन पाएंगे।

अक्तूबर—1 अक्तू. से शुक्र पुनः चतुर्थ स्थान में संचार करने से गत समय में किए गए प्रयासों का प्रतिफल कुछ दिनों के बाद प्राप्त होगा। माता-पिता या किसी निकटस्थ से धन व उपहारादि की प्राप्ति के योग हैं। आशा के विपरीत खर्च बहुत होंगे।

नवम्बर—ता. 3 से शुक्र नीच राशि (कन्या) में होने से पारिवारिक अशान्ति बढ़ेगी। भाई-बन्धुओं से वृथा तकरार, धन का अपव्यय, शरीर कष्ट रहेगा। वाहनादि से चोटादि का भय रहे।

दिसम्बर—ता. 24 तक शुक्र षष्ठस्थ स्वराशि में होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होने के योग हैं। धीरे-धीरे आर्थिक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन एवं लाभ के योग बनेंगे। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु कार्यरूप देने में विघ्न उत्पन्न होंगे।

मिथुन राशि (Gemini)—(क,की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

जनवरी—ता. 16 तक शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से कार्य-व्यवसाय में संघर्ष अधिक रहेगा, परन्तु बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से पुरुषार्थ एवं उद्यम में वृद्धि, संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में कुछ भ्रामक धारणाओं से व्यर्थ की उलझनें उत्पन्न होंगी।

फरवरी—ता. 7 से 27 तक बुध अष्टमस्थ संचार करने से व्यवसाय में भागदौड़ एवं खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में विकार का भय है। किसी निकट-बन्धु से मतान्तर हो। आर्थिक परिस्थितियां अनिश्चित रहेंगी।

मार्च—इस मास बुध अस्त परन्तु ता. 16 तक भाग्यस्थ रहने से भाग्योन्नति तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 16 से बुध नीचस्थ होने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न तथा अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

अप्रैल—मासारम्भ से ही बुध लाभ स्थान में राहु युक्त होने से पराक्रम में वृद्धि, परन्तु व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। व्यापार को बढ़ाने में मित्रों और सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। ता. 21 से बुध वक्री होने से स्वास्थ्य नर्म और अति महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए भागदौड़ होगी।

मई—पूर्वार्द्ध में व्यर्थ की चिन्ता और कार्य-विलम्ब होने के योग हैं। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। ता. 15 से बुध मार्गी होने से पुरुषार्थ द्वारा उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क-साधनों से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि और पारिवारिक व राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी।

जून—ता. 7 से 23 जून तक बुध द्वादशस्थ होने से कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक होगी, धन के खर्च भी अधिक होंगे। ता. 24 से बुध स्वराशि (मिथुन) में होने से वाहन एवं मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्च विशेष होंगे। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात हो।

जुलाई—मासारम्भ में भूमि-वाहनादि के क्रय-विक्रय की योजना बनेगी। ता. 8 के पश्चात् आवास व रहन-सहन में परिवर्तन करना आवश्यक रहेगा। गुप्त शत्रुओं से सावधानी बरतें तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें। ता. 17 से पुरुषोत्तम-माहात्म्य का पाठ करें।

अगस्त—अनेक बाधाओं के बावजूद कामकाज में प्रगति होगी। वृथा यात्रा की परेशानी होगी। मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। किसी निकट बन्धु से तनाव और विरोध पैदा होगा। शरीर कष्ट और व्यर्थ का अपव्यय होगा।

सितम्बर—क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनों के कारण मन में तनाव व चिन्ताएं रहेंगी। ता. 16 से बुध मार्गी होने से मानसिक तनाव से मुक्ति, उन्नति के अवसर मिलेंगे, परन्तु पारिवारिक व्यस्तता के कारण विशेष लाभ नहीं होगा।

अक्तूबर—मासारम्भ से ही बुध उच्चस्थ होने से अकस्मात् धन-लाभ होगा, भाई-बन्धुओं के सहयोग से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा, ता. 18 से बुध पंचमस्थ केतु युक्त होने से अकस्मात् किसी कार्य में विलम्ब से क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी।

नवम्बर—उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि होगी। ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होंगी। आर्थिक कार्यों में विघ्न होने पर भी गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। प्रिय बन्धु से मुलाकात, शुभ एवं धार्मिक कार्यों सम्बन्धी विशेष विचार-विमर्श होगा।

दिसम्बर—मासारम्भ से ही बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे। प्रयास एवं प्रयत्न करने से उन्नति व लाभ के आसार बढ़ेंगे। ता. 13 से विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने में परेशानी व विलम्ब से मानसिक तनाव रहेगा।

कर्क राशि (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

जनवरी—ता. 16 तक शनि की दृष्टि, फिर ता. 17 से शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से मानसिक तनाव, उत्तेजना, क्रोध अधिक तथा स्वास्थ्य कष्ट रहे। मन के अनुकूल कार्य

न होने से परेशानी अनुभव होगी। गुरु की शुभ उच्च दृष्टि होने से भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

फरवरी—समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पारिवारिक वातावरण कुछ बेहतर होगा। धार्मिक समागमों में आना-जाना होगा। पुरुषार्थ करने से आत्मबल विकसित होगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में रुकावटों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मार्च—भाग्य एवं परिस्थितियों के साथ न देने के कारण खिन्नता का अनुभव हो सकता है। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अति महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए भागदौड़ होगी। व्यर्थ की चिन्ता और बनते कार्यों में विलम्ब होने के योग हैं।

अप्रैल—ता. 21 तक गुरु की दृष्टि रहने से किसी मित्र की सहायता से रुका हुआ कार्य बनेगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यापार को बढ़ाने में मित्रों और सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। नए लोगों से मेल-जोल होगा।

मई—कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। ता. 10 से मंगल इसी राशि पर संचार करने से परिवार में व्यर्थ की परेशानी रहेगी। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च अधिक रहे। अत्यधिक खर्चों के कारण परेशानी का सामना हो।

जून—व्यर्थ की यात्रा में परेशानी व खर्च अधिक होगा। भागदौड़ के उपरान्त भी गुज़ारे योग्य धन प्राप्त होने में विलम्ब होगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। किसी पर क्रोध न करें अन्यथा लाभ के मार्गों में रुकावट आएगी।

जुलाई—व्यवसाय में आंशिक लाभ। स्वास्थ्य मध्यम, विद्या और सन्तान की ओर से चिन्ता, किसी नवीन कार्य की योजना बने। आय के साधनों में वृद्धि का योग है, किन्तु व्यय अधिक होने से मानसिक तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी।

अगस्त—नए कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से करने पर ही लाभ होगा। भूमि-जायदाद सम्बन्धी मामलों में तनाव उत्पन्न होगा। निकट बन्धुओं से गलतफ़हमी उत्पन्न होगी। परिवारिक माहौल में उथल-पुथल होगी।

सितम्बर—किसी निकट-बन्धु से धोखा मिलने के योग हैं। परन्तु अकस्मात् किसी बिगड़े हुए कार्य के बन जाने से खुशी का माहौल बनेगा। आर्थिक दृष्टि से इस अवधि में आप निरर्थक मामलों में उलझे रहेंगे।

अक्तूबर—किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में विघ्नों के पश्चात् सफलता प्राप्त होगी। आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे, निकटस्थ बन्धु से धोखा मिलने के संकेत हैं, सावधानी बरतें। घरेलु उलझनों के कारण विलम्ब व विघ्न उत्पन्न होंगे।

नवम्बर—वृथा खर्चों की परेशानी होगी। भागदौड़ के बावजूद आय अल्प रहेगी। व्यर्थ के झंझटों और वाद-विवाद से दूर रहें, अन्यथा हानि होगी। गुज़ारे योग्य धन लाभ व उन्नति के योग हैं। ता. 16 तक **'कार्तिक माहात्म्य'** का पाठ करते रहें।

दिसम्बर—मासारम्भ में पंचमस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से कारोबार में कई प्रकार के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। पारिवारिक मनमुटाव रहेगा। ता. 16 के बाद हालात में कुछ सुधार व कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल होगा।

सिंह राशि (Leo)—(म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

जनवरी—सूर्य पंचमस्थ होने तथा मासभर मंगल की दृष्टि रहने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परन्तु ता. 17 से पुनः शनि की शत्रु दृष्टि रहने से कार्य-व्यवसाय में संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहे। व्यवसायिक एवं घरेलु उलझनों के कारण मन अशान्त रहे तथा खर्च भी अधिक रहे।

फरवरी—मंगल की चतुर्थ दृष्टि रहने से संयमपूर्वक व्यवहार करें, अनावश्यक तकरार एवं कलह-क्लेश से बचें। ता. 13 से सूर्य की भी दृष्टि रहने से लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता और पारिवारिक मतभेद रहेंगे।

मार्च—सूर्य-मंगल-शनि ग्रहों की दृष्टियां रहने से निर्वाह योग्य धन लाभ संघर्ष के पश्चात् ही प्राप्त होगा। मानसिक तनाव, क्रोध एवं गुप्त परेशानियों का सामना रहेगा। ता. 15 से सूर्य अष्टमस्थ होने से शरीर कष्ट एवं स्वभाव में उग्रता आएगी।

अप्रैल—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। शनि की दृष्टि के कारण धनागमन में बाधाएं उत्पन्न होंगी। स्त्री/पति का सुख कम मिलेगा। नौकरी में अफसरों से मतान्तर का भय, निकट-बन्धु से मनमुटाव होगा।

मई—राशिस्वामी सूर्य ता. 14 तक उच्चस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। प्रोमोशन (उन्नति) के प्रबल चाँस बनते हैं। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क बनेंगे। गुरु की विशेष पंचम दृष्टि रहने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी।

जून—किसी गुरुजन अथवा श्रेष्ठ जन की सहायता से बिगड़े कार्यों में धीरे-धीरे सुधार होगा। अकस्मात् धन लाभ हो तथा मानसिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होगा। धन का व्यय भी शुभ एवं मांगलिक कार्यों पूरा होगा।

जुलाई—लाभस्थ सूर्य तथा गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म की ओर रुचि होगी। एवं किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे। परन्तु शनि की भी दृष्टि होने तथा ता. 16 से सूर्य 12वें होने से खर्च अधिक, कार्य-व्यस्तताएं भी रहेंगी। कहीं व्यर्थ की यात्रा भी होगी।

अगस्त—किसी शंका के कारण दाम्पत्य जीवन में मनमुटाव उत्पन्न होगा। अकस्मात् धन का अपव्यय व वृथा यात्रा के योग हैं। सोच-विचार कर खर्च करें। आलस्य में वृद्धि और व्यर्थ चिन्ता होगी। **उपाय**—ता. 17 तक **'पुरुषोत्तम-माहात्म्य'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

सितम्बर—ता. 16 तक सूर्य स्वराशिगत संचार करने से दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। यद्यपि आय के साधन सीमित रहेंगे। ता. 16 से वृथा भ्रमण, व्यर्थ का खर्च एवं मुश्किल हालात में धन लाभ मध्यम रहेगा।

अक्तूबर—किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में विघ्नों के पश्चात् सफलता प्राप्त होगी। शुभ समाचारों का आदान-प्रदान होगा। ता. 17 से सूर्य नीचराशिगत होने से व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी।

नवम्बर—वृथा खर्चों के कारण परेशानी होगी। भागदौड़ के उपरान्त भी आय अल्प रहेगी। परिवार सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। ता. 16 के बाद व्यापार में मित्रों और सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। नए-नए लोगों से मेल-मिलाप हो।

दिसम्बर—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता और कुछ कार्यों में विलम्ब होगा। सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। व्यापार के विस्तार की भी योजनाएं बनेंगी। यात्रा का भी प्रोग्राम बनेगा।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

जनवरी—गुरु की दृष्टि रहने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु खर्च भी विशेष अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, आर्थिक समस्याएं अधिक रहेंगी। अपने कुछ कार्य गुप्त रखने पड़ेंगे।

फरवरी—प्रारम्भिक कुछ दिन व्यर्थ की यात्राएं और पारिवारिक चिन्ताओं में व्यतीत होगा। ता. 7 से बुध पंचमस्थ होने से किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु गृहस्थ सम्बन्धी कार्यों में अतिव्यस्तता होने से कार्यरूप देने में विलम्ब होगा।

मार्च—विघ्न-बाधाओं के बाद धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। परन्तु अत्यधिक खर्च से परेशानी होगी। पराक्रम/पुरुषार्थ में वृद्धि, व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता और गुप्त परेशानी रहेगी। स्वास्थ्य नर्म रहे।

अप्रैल—बुध अष्टमस्थ होने से अकस्मात् स्वास्थ्य में विकार और बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों। निकटबन्धु से भी मनमुटाव रहेगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा।

मई—बुध अष्टमस्थ रहने से शरीर कष्ट तथा खर्च की अधिकता रहेगी। सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव एवं कलह-क्लेश रहेगा। किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा होगी।

जून—ता. 7 से बुध भाग्यस्थ होने से व्यवसाय में धीरे-धीरे प्रगति एवं लाभ प्राप्त होगा। अकस्मात् किसी अतिप्रिय बन्धु, मित्र से मुलाकात होगी। कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन तथा व्यस्तताएं बढ़ेंगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि और शुभ यात्रा होने के योग हैं।

जुलाई—कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। ज़मीन-जायदाद अथवा वाहनादि का क्रय-विक्रय होगा। ता. 8 के बाद घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। आय कम, आकस्मिक व्यय एवं उलझनें बढ़ेंगी।

अगस्त—बुध द्वादश भावस्थ रहने से परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे। आर्थिक उलझनों के कारण मन चिन्तित रहेगा। स्वास्थ्य नर्म, आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। खर्च अधिक रहें।

सितम्बर—कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। मंगल का संचार रहने से उत्तेजना, क्रोध अधिक व मानसिक तनाव रहेगा। ता. 16 से सूर्य का संचार भी रहने से परिस्थितियों में मामूली सुधार होगा। परिवार में व्यर्थ की उलझनें बढ़ेंगी।

अक्तूबर—मासारम्भ से ही बुध स्वराशिगत होने से धन लाभ व उन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे, परन्तु केतु के कारण समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। स्त्रियों को परिवार में सुखद वातावरण बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहना होगा।

नवम्बर—केतु का संचार इस राशि पर तथा बुध की स्थिति के कारण मानसिक तनाव, चिन्ताएं तथा उलझनें रहेंगी। अत्यधिक संघर्ष के वाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता रहेगी।

दिसम्बर—परिवार में वृथा वाद-विवाद और वैचारिक मतभेद उभरेंगे। गृहस्थ जीवन में भी तनाव रहे। व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। दूरस्थ यात्रा व भ्रमण का प्रोग्राम भी बनेगा।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

जनवरी—विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। परन्तु मानसिक तनाव एवं कुछ उलझनपूर्ण परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। आर्थिक उलझनों के कारण मन चिन्तित रहेगा। अप्रत्याशित सूचनाएं प्राप्त होंगी।

फरवरी—पूर्वार्द्ध में अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्द्ध में कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अकस्मात् किसी कार्य के बनने से खुशी प्राप्त होगी।

मार्च—ता. 11 तक षष्ठस्थ '**गुरु-शुक्र**' योग रहने से आशाओं में आंशिक सफलता के बावजूद मन परेशान और अशान्त होगा। ता. 12 से शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से सुख-सुविधा के साधन बढ़ेंगे। परन्तु व्यर्थ की भागदौड़ भी अधिक होगी।

अप्रैल—ता. 6 से शुक्र अष्टमस्थ होने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। परिवार में भाई-बन्धु से तनाव और अत्यधिक क्रोध से हानि होगी। विभिन्न उलझनों का सामना होगा।

मई—सूर्य-गुरु की शत्रु दृष्टि रहने से स्वास्थ्य कष्ट तथा पारिवारिक चिन्ता रहेगी। प्रयास करने पर रुके हुए कार्य में प्रगति होगी। सर्विस अथवा व्यवसाय सम्बन्धी अनेक कठिनाईयों का सामना रहेगा। विशेष स्नेही व्यक्ति से मुलाकात होगी।

जून—व्यर्थ की भागदौड़ के कारण शरीर अस्वस्थ रहेगा। ज़मीन-जायदाद के निर्माण सम्बन्धी समस्याएं कष्ट देंगी। आय से व्यय अधिक रहेगा। सरकारी विभाग में काम निकालने के लिए कठिनाई होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी और वृथा यात्रा होगी।

जुलाई—इस मास प्रयत्न करने पर व्यापार/नौकरी में उन्नति होगी। उत्साह से कार्य करने से समय साथ देगा। लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। काम-काज करने से ढंग में परिवर्तन करने पर लाभ होगा। जटिल समस्याओं के हल होने से राहत एवं मानसिक तनाव कम होगा।

अगस्त—वक्री शुक्र के कारण आर्थिक उलझनें रहने से मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे।

सितम्बर—विभिन्न प्रयास, भरपूर परिश्रम और हित चिन्तकों का सहयोग लेकर ही वांछित सफलता सम्भव होगी। प्राप्त साधनों का उपयोग संयमपूर्वक करें। स्वास्थ्य हानि एवं लेन-देन करते समय विवाद होने के संकेत हैं।

अक्तूबर—कुटुम्ब में किसी सुखद प्रसंग की सम्भावना है। नौकरी या व्यवसाय में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क-साधनों से उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं

बढ़ेंगी। धार्मिक कार्यों में रूचि बनेगी। **'महालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्र'** का पाठ करना शुभ होगा।

नवम्बर—ता. 3 से शुक्र नीचराशिगत रहने से आय में कमी तथा आकस्मिक खर्च अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाएंगे। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। किसी निकट बन्धु से मनमुटाव पैदा हो।

दिसम्बर—शुक्र स्वराशिगत रहने से परिस्थितियों में सुधार होगा। विदेश सम्बन्धी सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। व्यापारियों के लिए समय अच्छा है। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी।

वृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

जनवरी—मासारम्भ से मंगल-गुरु की शुभ दृष्टि रहने से परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि के कारण कार्य-व्यवसाय में लाभ प्राप्ति होती रहेगी। परन्तु ता. 17 से शनि की ढैय्या रहने से मन परेशान रहेगा। व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन का विचार बने।

फरवरी—शनि की दृष्टि रहने से यद्यपि खर्च एवं क्रोध अधिक रहेगा। किन्तु मंगल-गुरु की दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। अचानक अप्रत्याशित लाभ और शुभ समाचारों का आदान-प्रदान होगा।

मार्च—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। परन्तु ता. 12 से मंगल अष्टमस्थ होने से सफलता तथा बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन-हानि तथा स्वास्थ्य नर्म रहेगा।

अप्रैल—आय कम और खर्च अधिक रहेगा। किसी निकटस्थ मित्र से मतभेद उत्पन्न होंगे। पुरुषार्थ और परिश्रम करने पर गुज़ारेलायक धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् विशिष्टजनों से सम्पर्क बढ़ेगा। वाहनादि पर खर्च होगा।

मई—व्यर्थ की चिन्ताओं से मानसिक तनाव रहेगा। सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। ता. 10 से मंगल नीच राशिस्थ रहने से गुप्त शत्रुओं से भी सावधान रहे। यात्रादि का प्रोग्राम टाल दें, अन्यथा परेशानी एवं व्यर्थ के व्यय अधिक होंगे।

जून—मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता होगी। उच्च-वर्ग से सम्पर्क होगा, परन्तु लेन-देन में धोखा मिलने के योग हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी और सन्तान चिन्ता रहेगी।

जुलाई—मासारम्भ से ही मंगल की दृष्टि रहने से सोचे हुए कार्यों में कुछ सफलता तथा विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यवसायिक क्षेत्र में कार्य-प्रणाली में कुछ परिवर्तनों का विचार बने।

अगस्त—आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक होगा। परिश्रम और उत्साह से कार्य करने पर सफलता मिलेगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, परन्तु पारिवारिक परेशानी होगी। नेत्र कष्ट, धन हानि, रोग-भय आदि परेशानियां होंगी।

सितम्बर—कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रुका हुआ कार्य बनने के योग हैं। परिवार में खुशी के अवसर भी प्राप्त होंगे। विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। अधिक व्यस्तता होने से परेशानी होगी।

अक्तूबर—मंगल-केतु योग होने से अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। ता. 17 से 12वें सूर्य होने से परिवार में आवश्यक खर्चों में वृद्धि होगी। क्रोध व उत्तेजना रहेगी।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य विकार, दुर्घटना से चोटादि लगने का भय है, सावधानी बरतें, आकस्मिक खर्चों में भी वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में ता. 16 से मंगल इसी राशि पर होने से यद्यपि परिश्रम और पुरुषार्थ बढ़ेगा। परन्तु शनि की दृष्टि रहने से पारिवारिक व व्यवसायिक उलझनें भी होंगी।

दिसम्बर—अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में धन लाभ मध्यम होगा। मन उचाट रहेगा। आराम कम और दौड़-धूप अधिक रहेगी। वाद-विवाद से बचें। सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

जनवरी—मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 17 से शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव हट जाने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। कार्य-विलम्ब, धन-हानि और अत्यधिक खर्च होने की चिन्ता से मन परेशान रहेगा।

फरवरी—घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त एवं उद्विग्न रहेगा। पूर्वार्द्ध में उत्साहवर्द्धक स्थितियां बनेंगी। प्रयास करने पर महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। पारिवारिक विवादों का हल होने के योग हैं।

मार्च—पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा। अनावश्यक कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव एवं कलह-क्लेश रहेगा।

अप्रैल—कार्यक्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का सामना रहेगा। भूमि-सवारी आदि सम्बन्धी परेशानी एवं खर्च में वृद्धि होगी। परन्तु ता. 22 से राशिस्वामी गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से अचानक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मई—मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक, कार्यों की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे। भूमि, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी, परन्तु स्वास्थ्य में अचानक खराबी और गुप्त रोग की सम्भावना है।

जून—व्यर्थ की दौड़-धूप और क्रोध की अधिकता के कारण कार्य बिगड़ने के योग हैं। मानसिक तनाव और प्रियबन्धु से मनमुटाव होगा। अचानक यात्रा, किसी विशेष कार्य में उलझनों के योग हैं। स्त्री व सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

जुलाई—सूर्य एवं गुरु की दृष्टि होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव और कार्यशाली में परिवर्तन से लाभ के अवसर बढ़ेंगे।

अगस्त—सोची हुई योजनाओं में कामयाबी, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। पदोन्नति एवं धन लाभ के योग हैं। विदेश सम्बन्धी कार्यों में गत किए प्रयासों

में सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्य व उत्सवादि पर धन का व्यय होगा।

सितम्बर—मंगल एवं गुरु की दृष्टि के कारण मानसिक तनाव व उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ काम पर खर्च भी होगा। स्त्री व सन्तान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा।

अक्तूबर—कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। रुका हुआ धन मिलेगा। धर्म-कर्म में विशेष प्रवृत्ति, परिवार सम्बन्धी सुखों में वृद्धि, अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं। उत्तरार्द्ध में किसी निकट बन्धु के साथ तकरार का भय है। **'कार्तिक माहात्म्य'** का नित्य पाठ करें।

नवम्बर—गुरु वक्री होने से आर्थिक परेशानियां उभरेंगी। क्रोध की अधिकता व खर्च भी अधिक रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। **उपाय**—पं. पन्ना लाल ज्यो. कृत **'कार्तिक-माहात्म्य'** का ता. 27 तक नित्य पाठ करें।

दिसम्बर—मासारम्भ में व्यवसायिक जोखिम उठाना पड़ेगा। भोगविलास पूर्ण वातावरण रहेगा। बिगड़े कार्यों में सुधार और प्रगति होगी। कुछ नए मुद्दों पर विचार-विमर्श होगा। कुछ अप्रत्याशित लाभ हर्षोल्लास बढ़ाएंगे। व्यवसायिक प्रतिष्ठा सुदृढ़ होगी।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

जनवरी—शनि-साढ़ेसाती के बावजूद महत्त्वपूर्ण कार्यों में विघ्नों के पश्चात् सफलता प्राप्त होगी। शुभ समाचारों का आदान-प्रदान होगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता और पारिवारिक मतभेद रहेंगे। उन्नति व प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु व्यवसाय में कोई गुप्त चिन्ता होगी।

फरवरी—कार्य-व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यर्थ की दौड़-धूप, खर्च की अधिकता होगी। क्रोध की अधिकता से कार्य बिगड़ने के योग हैं। मन अशान्त रहेगा।

मार्च—संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा। अनावश्यक कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव एवं कलह-क्लेश रहेगा। ता. 13 से मंगल की उच्च दृष्टि रहने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि तथा भूमि/वाहनादि की प्राप्ति होगी।

अप्रैल—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। परिवार में संघर्ष और सन्तान से व्यर्थ की चिन्ता रहेगी।

मई—व्यय भाव पर गुरु की शुभ दृष्टि रहने से शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा। ता. 10 से मंगल की स्वोच्च सप्तम दृष्टि रहने से अत्यधिक संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा बिगड़े कामों में सुधार होगा।

जून—अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होगी, नौकरी में तरक्की के अवसर प्राप्त हों, कम्पीटीशन में सफलता मिलेगी। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा के योग हैं। नवीन योजनाएं बनेंगी। परिश्रम करने पर कार्य-सिद्धि हो जाएगी।

जुलाई—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। आय के साधनों में विस्तार होगा। विदेश यात्रा की योजना भी बनेगी। परन्तु ता. 17 से सूर्य की दृष्टि होने से संघर्ष अधिक रहेगा। व्यर्थ का खर्च और भागदौड़ अधिक रहेगी। पारिवारिक सम्पत्ति के लिए मतभेद उत्पन्न हों।

अगस्त—आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। परिवार में मतभेद होंगे।

सितम्बर—व्यर्थ की भागदौड़ और धन का खर्च अधिक होगा। पारिवारिक कार्यों में अधिकतर समय व्यतीत होगा। किसी विशेष कार्य के बन जाने से खुशी होगी। धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी।

अक्तूबर—आध्यात्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। घर में धार्मिक उत्सव होंगे। आकस्मिक कार्यसिद्धि से सभी आश्चर्यचकित होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय-नौकरी में उन्नति के साधन बनेंगे।

नवम्बर—मासारम्भ में कुछ कार्य व्यस्तताएं एवं उत्साह में वृद्धि रहे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। स्त्री एवं परिवार सम्बन्धी सुखों में वृद्धि होगी। अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं।

दिसम्बर—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं सन्तान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। गृहस्थ जीवन में व्यर्थ का तनाव रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ से मन संतप्त रहे।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

जनवरी—शनि-साढ़ेसाती रहने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। ता. 17 से शनि इसी राशि में संचार करने से नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

फरवरी—व्यवसाय सम्बन्धी भागदौड़ अधिक रहेगी। आय की अपेक्षा खर्च भी बढ़ेंगे तथा निकट बन्धुओं से सहयोग में कमी होगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। अपनी क्षमता और सूझबूझ से पारिवारिक स्थिति को सुलझाने में प्रयत्नशील रहें।

मार्च—कार्यक्षेत्र की स्थिति असंतोषजनक रहेगी। व्यवसाय एवं कार्यशैली में परिवर्तन की सम्भावना बनेगी। पारिवारिक मतभेद उभरेंगे। सम्पत्ति के लिए दूसरों का हस्तक्षेप आवश्यक हो सकता है। **उपाय**—अनुकूल फल के लिए पं. देवीदयालु कृत **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** का पाठ करें।

अप्रैल—कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य की सिद्धि होगी। रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी।

मई—अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। ता. 10 से मंगल की भी शत्रु दृष्टि होने से दौड़-धूप अधिक रहेगी। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी।

जून—अर्थव्यवस्था के लिए संचित कोष में कमी होगी। शुभ कार्यों के लिए व्यय की व्यवस्था करनी पड़ेगी। घरेलू उलझनों व अपव्यय के कारण तनाव रहेगा। स्वास्थ्य परेशानी और अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

जुलाई—शनि वक्री होने से शुभ कार्यों में अड़चनें रहेंगी। उत्साह की भी कमी रहेगी। शरीर कष्ट रहे, स्त्री एवं सन्तान के कारण मन व्यथित रहे। घरेलु समस्याओं को हल करने पर आकस्मिक खर्चे बढ़ेंगे।

अगस्त—व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। उथल-पुथल भरे हालात रहेंगे। स्वास्थ्य परेशानी, आँखों में कष्ट रहेगा। परिवार में कुछ तनाव और असुखद माहौल रहेगा।

सितम्बर—भागदौड़ अधिक, चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी। निकट बन्धुओं से मतान्तर पैदा होंगे। पारिवारिक सदस्यों के व्यवहार में कुछ रूखापन और असन्तुष्टता प्रकट होगी। कारोबार में भी उतार-चढ़ाव के संकेत हैं।

अक्तूबर—आशाओं में सफलता और राजपक्ष की ओर से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापार और नौकरी में मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। सुख-साधनों एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में अच्छे लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। ता. 16 से मंगल की दृष्टि लग्नस्थ शनि पर रहने से धन हानि एवं किसी उच्च-अधिकारी से विरोध पैदा हो, शरीर कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहे।

दिसम्बर—कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। परिश्रम और पुरुषार्थ के पश्चात् ही धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। परन्तु नौकरी में अफसरों से तनाव व उलझनें पैदा हों। मानसिक तनाव, स्वास्थ्य में विकार और सन्तान चिन्ता रहेगी।

मीन राशि (Pisces)—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

जनवरी—गुरु का संचार रहने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 17 से शनि साढ़ेसाती शुरु होने से मानसिक तनाव एवं उलझनपूर्ण परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अकस्मात् धन लाभ में विघ्न उत्पन्न होंगे।

फरवरी—धर्म-कर्म में विशेष प्रवृत्ति और मान-सम्मान में वृद्धि होगी। भाई-बहिनों से मेल व परिवार में खुशी और उल्लासपूर्ण माहौल रहेगा। गत दिनों किए प्रयासों में सफलता मिलेगी। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मार्च—कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। व्यवसाय-नौकरी में उन्नति होगी। कठिन कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। परिवार सम्बन्धी सुखों में वृद्धि, अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं।

अप्रैल—विघ्न-बाधाओं के बावजूद प्रयोजन सिद्धि में कोई रुकावट नहीं आएगी। लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कुछ अप्रत्याशित सफलताएं प्राप्त होंगी। अकस्मात् धन लाभ, बन्धु मिलाप, स्त्री सुख आदि शुभ समाचार मिलेंगे।

मई—गुरु द्वितीय भाव में राहु युक्त संचार करने से आय की अपेक्षा खर्च अधिक, व्यर्थ की दौड़धूप और क्रोध की अधिकता के कारण कार्य बिगड़ने के योग हैं। मानसिक तनाव और प्रियबन्धु से मनमुटाव होगा।

जून—परिश्रम व दौड़धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। सिरदर्द तथा आँखों में कष्ट रहे। घरेलु व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा।

जुलाई—मानसिक तनाव एवं परिवार सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। गुरु की दशम भाव पर दृष्टि होने से पदोन्नति एवं धन लाभ के योग बनेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं उच्चाधिकारी से सम्पर्क बढ़ेगा।

अगस्त—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। स्थान परिवर्तन भी होने के योग हैं। कुछ विवादास्पद मामले मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। '**पुरुषोत्तम-माहात्म्य**' का पाठ करें।

सितम्बर—संघर्षमयी स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। विदेश गमन की योजना बनेगी।

अक्तूबर—शनि-साढ़ेसाती के कारण आशा के विपरीत खर्च अधिक रहेंगी। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। नई-नई योजनाएं बनाने में समय व्यतीत होगा। नौकरी में अफसरों से व्यर्थ का तनाव रहेगा।

नवम्बर—मासारम्भ से राहु इस राशि पर संचार करने से व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। यात्रा में परेशानियां अधिक रहेंगी।

दिसम्बर—अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ेगा। व्यवसाय, नौकरों की ओर से विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी। परन्तु उलझनें उभरती व सिमटती रहेंगी। माता-पिता से मनमुटाव रहेगा। परिवार में कुछ मनमुटाव, वैचारिक मतभेद और अपनी ही गलती से परेशानी उत्पन्न हो।

वि. संवत् २०७९ में रोहिणीवास के निर्णय में मतभेद
(रोहिणी का वास 'समुद्र' में ही था)

वि. संवत् में देश में वर्षा की स्थिति कैसी रहेगी ?–इसका निर्णय उस वर्ष के रोहिणी के वास द्वारा किया जाता है। जिस वर्ष रोहिणी का वास समुद्र में हो तो उस वर्ष वर्षा अधिक एवं वेग के साथ होती है, यदि तट पर हो तो भी उपयोगी एवं शुभ वर्षा होती है। यदि रोहिणी के वास पर्वत पर हो, तो उपयोगी वर्षा की कमी तथा सन्धि पर होने से खण्डवृष्टि होती है–ऐसी भविष्यवाणी लगभग सभी पंचांगों में मिलती है।

गतवर्ष (वि. संवत् 2079) में **'पंचांगदिवाकर'** में रोहिणी का वास **'समुद्र'** में लिखा गया था। भारत के लगभग सभी पंचांगकारों ने रोहिणीवास **'समुद्र'** में ही लिखा था। परन्तु पंजाब से ही प्रकाशित एक पंचांग में रोहिणीवास **'पर्वत'** में लिखा था। जिस कारण असंख्य ज्योतिषी एवं ब्राह्मणगण भ्रमित हो गए। इसी कारण यहाँ स्पष्टीकरण दिया जा रहा है।

संवत् में रोहिणीवास कहाँ है, यह जानने के लिए सूर्य की मेष संक्रान्ति के समय विद्यमान चन्द्रनक्षत्र अपेक्षित होता है। इसी आधार पर रोहिणीवास का निर्णय किया जाता है। **'वर्ष-प्रबोध'** नामक ग्रन्थानुसार इसका निर्णय इस प्रकार है–

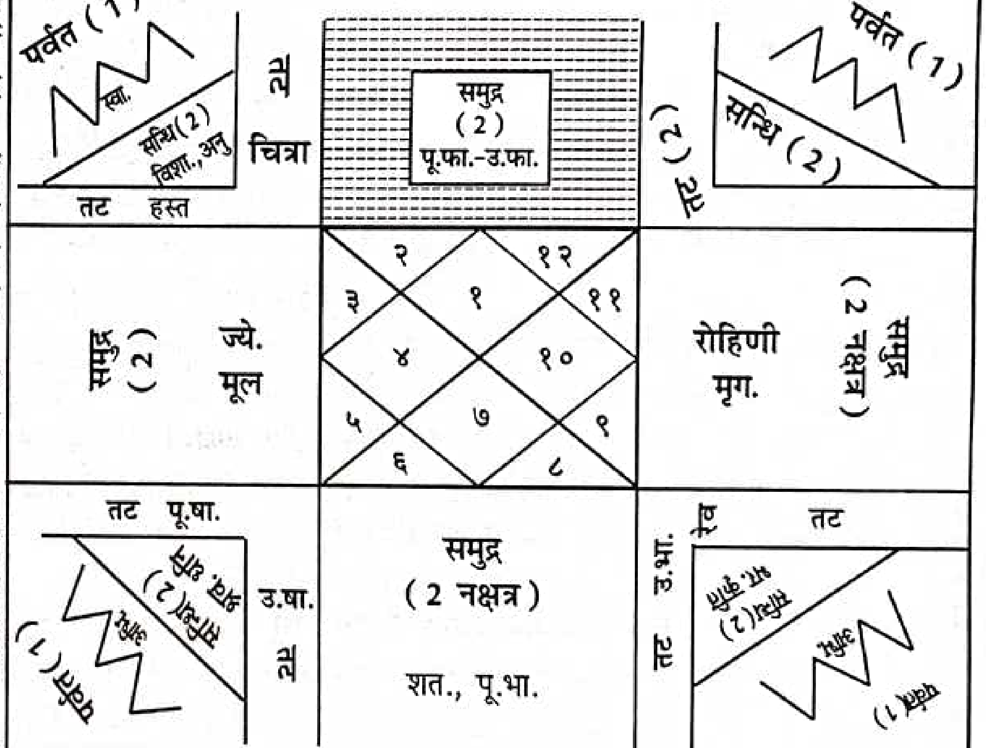
मेषार्कदिन नक्षत्राद् अब्दौ युग्मं तटे द्वयम्। गिरावेकं द्वयं सन्धौ साभिजिद् गणता भवेत्।।

अर्थात् मेष-संक्रान्ति के समय जो नक्षत्र हो, उससे आरम्भ करके 2 नक्षत्र **'समुद्र'** में स्थापित करें। फिर 1–1 नक्षत्र (अर्थात् 2 नक्षत्र) क्रम से तट पर, फिर एक परवर्ती नक्षत्र **'पर्वत'** पर तथा उससे परवर्ती 2 नक्षत्र **'सन्धि'** पर अभिजित सहित कुल 28 नक्षत्रों की स्थापना करें। इस विभाजन करने के बाद जहाँ (समुद्र, पर्वत, तट या सन्धि में) रोहिणी नक्षत्र स्थापित होगा, वहाँ रोहिणी का वास माना जाएगा।

रोहिणी का वास **समुद्र** में हो तो समय का वास **'माली'** के घर में, रोहिणीवास **सन्धि** में हो तो **वैश्य** के घर, रोहिणीवास **'पर्वत'** में हो तो **कुम्हार** के घर और **रोहिणीवास** तट में हो तो समयवास **धोबी** के घर होगा।

उपरोक्त नियमानुसार वि. संवत् २०७९ में मेष संक्रान्ति के समय पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र व्याप्त है, पू.फा. नक्षत्र को रोहिणी चक्रम् में क्रमानुसार अभिजित सहित स्थापना करने से रोहिणी नक्षत्र समुद्र में आने से सम्वत् का वास **'माली'** के घर में ही माना जाएगा।

नक्षत्र स्थापन हेतु रोहिणी चक्र (समुद्र चक्र)



इस प्रकार वि. संवत् २०७९ में समुद्र चक्र द्वारा रोहिणी नक्षत्र का **'समुद्र'** में वास तथा तदनुसार समय का वास **'माली'** के गृह में ही शास्त्रसम्मत एवं शुद्ध प्रमाणित होता है।

[कुछ पंचांगकार रोहिणीवास का निर्णय **'मेघमहोदय'** ग्रन्थानुसार भी करते हैं। उसके अनुसार भी रोहिणीवास **'समुद्र'** में ही आ रहा है। यद्यपि अधिकतर पंचांगकार वर्षप्रबोध अनुसार ही रोहिणीवास स्थापित करते हैं।]

–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०८० में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री-आदि का फल

ॐ स्वस्ति न: श्रीगणेशाय नम:। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नम:। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्–चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे सम्वत्तारम्भे **'नल'** नामक विक्रमी सम्वत्सरे ततो अग्रे सम्पूर्णकाले **'पिंगल'** सम्वत्सरे शुभे अष्ट–चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४८) वर्ष प्रवेशे **पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी** अहं प्रप्रपौत्र एवं अधिपति: पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, पुत्र दैवज्ञरत्न **पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी,** कनिष्ठ भ्रातृ **पं. पंकज शर्मा** सहितोऽहं कुर्वे **'पंचाँग दिवाकरम्'**।।

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१२३ के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०८०,** शक संवत् १९४५, कलि (कल्कि) संवत् ५१२४, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५९, सप्तर्षि संवत् ५०९९, श्रीबुद्ध संवत् २६४६–४७, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) संवत् २५४८–४९, हिजरी सन् १४४४–४५, इंग्लिश सन् २०२३–२४ ईस्वी, फसली सन् १४३०–३१, खालसा संवत् ३२४–२५, नानकशाही सम्वत् ५५४–५५, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापरयुग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

'पिंगल' नामक नव–सम्वत्सर का फल–(वि. सं. २०८०)

नववर्ष प्रवेश लग्न



नव विक्रमी संवत् २०८० के आरम्भ (22 मार्च, 2023 ई.) में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत **'दशम युग'** का पंचम **'नल'** नामक (सम्वत्सरों में 50वाँ) संवत्सर चल रहा होगा, जोकि गतवर्ष 28 मार्च, 2022 ई. से चल रहा है।

परन्तु 24 मार्च, 2023 ई. से ही गुरुमान से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत, **'एकादश युग'** का प्रथम **'पिंगल'** नामक (सम्वत्सरों में 51वाँ) सम्वत्सर प्रारम्भ हो जाएगा। [मेषऽर्के समय संम्वत्सर के भुक्त मासादि ०/२१/१२/२४'', भोग्य मास, दिनादि ११/०८/४७/३६ हैं।]

ध्यान रहे, नव विक्रमी संवत् का प्रवेश 21 मार्च, 2022 ई., मंगलवार को रात्रि 10 बजकर 53 मिनट पर (22:53), उ.भा. नक्षत्र तथा शुक्ल योग कालीन वृश्चिक लग्न में होगा। शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार–अनुसार ही किया जाता है। **'बुधवार'** से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगमी वर्ष (संवत्) का राजा भी **'बुध'** होगा। सम्वत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है जोकि (नल) लगभग 28 मार्च, 2022 ई. से 23 मार्च, 2023 ई. तक विद्यमान् रहेगा। जबकि **'पिंगल'** नामक संवत्सर 24 मार्च, 2023 ई. से 20 मार्च, 2024 ई. तक रहेगा। **अत: स्पष्ट है कि विक्रमी संवत् 2080 के आरम्भ से केवल 2 दिन बाद 'पिंगल' संवत्सर प्रारम्भ हो जाएगा।**

यद्यपि प्रचलित शास्त्र–परम्परा–अनुसार संवतारम्भ में विद्यमान् संवत्सर को ही विक्रमी संवतारम्भ से सम्वतान्त तक धार्मिक अनुष्ठान, जप–पाठ, दानादि संकल्प कार्यों के आरम्भ में प्रयोग किया जाता है। परन्तु विक्रमी संवत् के अधिकांश कालखण्ड (24 मार्च, 2023 ई. से 20 मार्च, 2024 ई. तक) में **'पिंगल' सम्वत्सर** का प्रभुत्व रहने से **'पिंगल'** को ही विक्रमी संवत् 2080 में उच्चारित किया जाएगा। **धार्मिक, कर्मकाण्डी विद्वान 24 मार्च, 2023 ई. के बाद सभी प्रकार के संकल्प कार्यों में 'संवतारम्भे 'नल' पर वर्तमाने 'पिंगल' नाम संवत्सरे'** का प्रयोग करना चाहिए। **वर्ष का राजा 'बुध'** तथा **मन्त्री 'शुक्र'** होगा। **'पिंगल'** नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है–

'गावो वाहा विनश्यन्ति मेघा: स्वल्पजलप्रदा:।
पिंगले विग्रहो राज्ञामकस्मात्संकटागम:।।'

अर्थात् **'पिंगल'** नामक संवत्सर में देश में गाय, भैंस, ऊँट आदि दुधारू पशुओं की हानि, वाहनों का नाश अर्थात् सरकार की नवीन नीतियों के कारण पुराने वाहन प्रयोग में न रहें। कम तथा विपरीत वर्षा के कारण फसलों की हानि, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि होने से महँगाई बढ़ेगी। समाज में भय–आक्रोश एवं परस्पर वैर–विरोध का वातावरण रहे तथा प्रमुख शासकों में देश के सामने अचानक संकट उपस्थित होने से विपक्षी पार्टियों के साथ टकराव होगा।

'वर्ष-प्रबोध' अनुसार–**'पिंगलाब्देत्वीति–भीति: मध्य सस्यार्घवृष्टय:।**
राजानो–विक्रमाक्रांता–भुंजते–शत्रु–मेदिनीम्।।'

'पिंगल' नामक संवत्सर होने से राजाओं (प्रशासकों) में परस्पर टकराव, विरोध एवं प्रतिद्वन्द्वता (होड़) की भावना अधिक रहेगी, उनके इस परस्परिक विरोध तथा आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि के कारण साधारण लोग (प्रजा) दु:खी रहते हैं। पृथ्वी पर वर्षा एवं अनाज की फसल मध्यम रहे, खुशहाली एवं सुख के साधनों में विस्तार हो, परन्तु राजा (प्रशासक) सैनिक बल के प्रभाव पर शत्रु देशों पर आक्रमण करेंगे तथा शत्रुओं की भूमि एवं संसाधनों का भोग करेंगे अर्थात् युद्ध के समाचार मिलेंगे।

✤ ***रोहिणी का वास***–वि. संवत् २०८० में मेष संक्रान्ति का प्रवेश **'श्रवण'** नक्षत्रकालीन हुआ है। अतएव रोहिणी का वास **'तट'** पर होगा। यथा–

यदि विधिधिष्ण्यपतति तटस्थम्। शुभजल वृष्टिः धन-कण वृद्धिः॥

अर्थात् '**तट**' पर रोहिणी का वास होने से आगामी वर्ष उपयोगी एवं उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनते हैं। फलस्वरुप धान्य, चावल, चने, गन्ने, वृक्ष, घास व अन्य जड़ी-बूटियों, पौधों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों व प्रसाधनों की वृद्धि होगी। '**तटे वृष्टिः सुशोभना**' अनुसार भी सन्तोषजनक एवं पर्याप्त वर्षा होगी।

❖ संवत् (समय) का वास

संवत् (समय) का वास—रोहिणी का वास '**तट**' पर होने से सम्वत् का वास '**धोबी**' (रजक) के घर होगा। फलस्वरुप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी- '**रजके वृष्टिरूत्तमा**'॥ धान्य, गेहूँ, चने, गन्ना, ईख, मक्की, हरी सब्जियों, वृक्षों व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों मे सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियाँ, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे। यथा-

वापी कूपतडागानि नदी नद वनानि च, जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजके।

❖ संवत् (सम्वत्सर) का वाहन

संवत् (सम्वत्सर) का वाहन—वि. संवत् २०८० का राजा '**बुध**' होने के कारण सम्वत् का वाहन '**गीदड़**' होने से देश के विभिन्न भागों विशेषकर दक्षिणोत्तरी प्रान्तों में शासन-परिवर्तन, विग्रह एवं राजनैतिक उथल-पुथल होगी। राजनैतिक अस्थिरता बने। कहीं खाद्यान्न की कमी रहे एवं उनके मूल्यों में विशेष तेज़ी बने। खण्ड एवं विषम वर्षा हो। प्रजा में क्लिष्ट रोग एवं आर्थिक परेशानियाँ बढ़ें।

कुछ विद्वान् राजा '**बुध**' होने पर संवत् का वाहन '**झूला या सियार**' को भी मानते हैं। सियार वाहन होने पर पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता हैं। व्यापक दुर्भिक्ष अर्थात् बहुत स्थानों पर भयानक सूखा व अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। विभिन्न देशों के मध्य टुकड़ों में अर्थात् थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् टकराव,संघर्ष एवं युद्ध होता रहेगा।

यत्राब्दे वाहनं दोला हाहाभूता तु मेदिनी।
दुर्भिक्षं सर्वदेशेषु संग्रामः खण्डखण्डयोः॥

वि. संवत् २०८० के दश-पदाधिकारियों का फल

(1) वर्ष (वि. संवत् २०८०) के राजा 'बुध' का फल-

'बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्य विवाहमङ्गलम्।
प्रकुर्वन्ते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्य सङ्कुलम्॥

अर्थात् वर्ष का राजा बुध हो, तो उस वर्ष पृथ्वी पर वर्षा अच्छी होगी। घर-घर में विवाहादि माङ्गलिक कार्य तथा उत्सव अधिक होंगे। लोगों में दान-दया एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बढ़े, लोगों में स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतना एवं जागरुकता बढ़े। विशेष वर्ग के लोगों में धन-धान्य, सुख-साधन एवं समृद्धि बढ़े। व्यापारी, शिल्पी, लेखक तथा वैद्य (डॉक्टर) लोग विशेष लाभान्वित होंगे।

अन्य संहिता ग्रन्थानुसार भी-

'सन्धानदानप्रयतः क्षितीशः स्वाध्याय-तीर्थाध्वर, भीर्द्विजौघः।
निराधिरुङ् मध्यम सस्यवर्षो बौधः सुहृत्स्नेह-विवर्धनोऽब्दः॥

अर्थात् संवत्सर का राजा बुध होने से उस वर्ष देश में ठगी, छल-कपट करने वाले लोगों का बोलबाला व प्रभाव अधिक रहेगा। देश में कुछ सफेदपोश अपराधियों का भण्डाफोड़ भी होगा। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, लेखकों की ग़ैर-कानूनी एवं देश-विरोधी गतिविधियाँ उजागर अर्थात् दृष्टिगोचर होंगी। शासकवर्ग द्वारा किसी विशेष वर्ग को प्रसन्न करने के लिए लोकप्रिय एवं लोकलुभावन घोषणाएं भी की जाएंगी, व्यापारियों को भी विशेष सुविधाएं दी जाएंगी। परन्तु उनका विशेष लाभ नहीं मिल पाएगा। सन्तों एवं महन्तों का वर्चस्व बढ़ेगा तथा बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होगी। आयुर्वेद, योग आदि चिकित्सा प्रणाली का प्रचार-प्रसार अधिक होगा।

(2) सम्वत् के मन्त्री 'शुक्र' का फल-

'भृगुसुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभ-मूषक-रौहिषः।
भवति धान्य-समर्घतयामलं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्॥'

अर्थात् '**शुक्र**' को मन्त्रिपद प्राप्त होने से इस वर्ष कीट-पतंग (टिड्डीदल), मूषक (चूहे), जंगली सूअरों एवं अन्य वन्यजीवों (भैंसे), सांड आदि से खड़ी फसलों को हानि पहुँचे। वर्षा अधिक हो, जिससे कहीं अतिवृष्टि, भूस्खलन, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि-धनादि की हानि हो। नदियों का जल गाँवों, बस्तियों में प्रविष्ट होने से भय होगा। यद्यपि धान्य, चावल, ईखादि की फसलें अच्छी होंगी, परन्तु खाद्यान्न के बाज़ारों में अकारण ही उछाल आ जाएगा। रूई, कपास, धान्य, चावल, अलसी, तेल, अरण्डी आदि के व्यापारी अच्छा मुनाफा उठा पाएंगे। वात, पित्त, कफ, प्रमेह (शूगर) एवं यौन आदि गुप्त रोगों का प्रकोप बढ़ेगा। ऐश्वर्य प्रधान एवं सौन्दर्य प्रसाधनों तथा भड़काऊ फैशन परस्ती का प्रचार व प्रसार अधिक बढ़ेगा।

(3) सस्येश 'सूर्य' का फल-

सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्व धान्यं समर्घं खलु चौरवृत्तिः।
युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूरूहाश्च॥

अर्थात् ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी (सस्येश) सूर्य हो तो पूर्वधान्य (शरद्कालीन धान्य)-गेहूँ, जौं, चना, मक्की, दालें आदि के भाव स्थिर अर्थात् इनका पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होगा। लोगों में तथा व्यापारी वर्ग में अनावश्यक अन्न-भण्डारण की प्रवृत्ति पैदा होगी। देश में चोरी-ठगी व हिंसा की घटनाएँ अधिक हों। सत्तारूढ़ एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप भरा माहौल रहेगा एवं च कुछ विरोधी राष्ट्रों के मध्य युद्ध का वातावरण बने। अधिक वर्षा के बावजूद उपयोगी वर्षा की कमी तथा कुछ प्रान्तों में अनाज का उत्पादन कम होगा। परन्तु वनस्पतियों, ईख आदि का उत्पादन अच्छा होगा। दूध व रसदार फलों का उत्पादन भी श्रेष्ठ रहे। किसी विशेष महामारी के कारण प्राणियों की हानि होगी।

(4) धान्येश 'शनि' का फल–

निर्धनाः क्षितिभुजो रणादराः सस्यमल्पमति रोगिणो नराः।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वरः स्याद् यदांत्यकणपः शनैश्चरः।।

अर्थात् धान्येश 'शनि' हो तो वर्षभर उपयोगी वर्षा की कमी रहे। शीतकालीन फसलों जैसे–गेहूँ, जौं, मक्की, ज्वार, बाजरा, ईखादि की पैदावार में कमी रहे। युद्धोन्मुखी कुछ देशों को आर्थिक संकट (मन्दी) का सामना करना पड़े। सामान्य लोग क्लिष्ट एवं गम्भीर रोगों के कारण परेशान रहें। वर्षा की कमी के कारण देश के कुछ भागों में अनाज की कमी एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। किसी विशिष्ट व्यक्ति/राजनेता की आकस्मिक मृत्यु के भी संकेत हैं। (संवतारम्भ में)

एवं च, किसी अन्य संहिता ग्रन्थानुसार धान्येश शनि होने पर देश में दुर्भिक्ष अर्थात् अकाल की स्थिति बने। कुछ प्रदेशों में उपद्रव, हिंसा, दंगे, अशान्ति का वातावरण रहे। गुजरात, सौराष्ट्र, पंजाब आदि पश्चिमी प्रान्तों में उपद्रव तथा प्रजा-शासकों के मध्य कलह का माहौल एवं राजनैतिक संकट उत्पन्न हो।

(5) मेघेश 'गुरु' का फल–

'गुरुरपि प्रियवृष्टिकरः सदाखिल–विलासवती धरणी तदा।
श्रुति–विचारपरा नरपालकाः रस–समृद्धि–युताखिल–मानवाः।।'

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) गुरु हो तो उस वर्ष देश में कुछ स्थानों पर व्यापक वर्षा होने के संयोग बनते हैं। लोगों में सुख-साधन, ऐश्वर्य-विलास एवं उपभोग्य वस्तुओं का संग्रह बढ़ने लगता है। परन्तु किंचिद् (कुछ) लोग ही धन-सम्पदा एवं सुख-ऐशवर्य के साधनों से सम्पन्न होंगे। शासकवर्ग शास्त्र-परम्परा अर्थात् विधिसम्मत तरीके से शासन करेंगे। रस-पदार्थों जैसे–घी, दूध, फल आदि का उत्पादन अच्छा होता है तथा जनता में इनकी उपलब्धता भी श्रेष्ठ होती है।

(6) रसेश 'मंगल' का फल–

'यदि धरातनयो रसपो भवेद् न रसराशियुता जनता शुभा।
नरपतिर्विषमो जनतापदो न जलदो बहुवृष्टिकरो भुवि।।'

अर्थात् रसों का स्वामी (रसेश) मंगल हो, तो उस वर्ष रसदार पदार्थों जैसे–मौसम्मी, संगतरा, अनार, अंगूर, ईख, गन्ना, दुग्ध आदि की उपलब्धता में कमी रहे तथा रसदार सभी फलों में रस की भी कमी रहे। फलस्वरुप गुड़, चीनी आदि में कमी एवं च इनके मूल्यों में तेजी होगी। जनपदों में पानी की कमी से त्रास फैलता है। लोगों में परस्पर प्रेमभाव की कमी रहेगी। शासक एवं प्रशासक वर्ग का व्यवहार सामान्य प्रजा के प्रति अनुकूल नहीं होगा। पृथ्वी (देश) के कुछ क्षेत्रों में उपयोगी वर्षा की विशेष कमी रहे। सर्वप्रकार के अनाजों के भाव तेज हों। अधिकांश कृषि उत्पादों में विषैले-रसायनिक तत्त्वों की बहुलता होगी।

(7) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) 'सूर्य' का फल–

नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्र–चन्दनयोरपि।
रत्न–माणिक्य मुक्तादेरर्घ वृद्धिः प्रजायते।।

नीरसेश अर्थात् धातुओं के स्वामी सूर्य होने से सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, लोहा, चन्दन, माणिक्य, मोती, पुखराज, नीलम आदि धातुओं एवं रत्नों के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी। ज्यूलर्ज़, सुनार एवं कुछ विशिष्ट वर्ग के लोग विशेष लाभान्वित होंगे।

(8) फलेश (फलों का स्वामी) 'गुरु' का फल–

'सुरगुरुः फल–नायकतां गतो गतभया वनराशिः महाद्रुमाः।
यजन–याजनकोत्सवः–मन्दिराः श्रुति–विचारपराः द्विजपूर्वकाः।।'

अर्थात् फलों का स्वामी गुरु (वृहस्पति) हो तो वनों में फल-फूल एवं वन्य-वृक्षों की पैदावार अच्छी होगी, वृक्षारोपण भी बड़े पैमाने पर किए जाएंगे। लकड़ी की भी अच्छी उपलब्धता रहेगी। लोगों में निर्भयता की भावना बढ़ेगी। कहीं-कहीं घरों में तथा मन्दिरों-मठों में पूजा-पाठ, यज्ञ, हवन एवं अन्य धार्मिक उत्सव अधिक होंवे। धार्मिक लोग तथा विशेष रूप से विद्वान् एवं ब्राह्मणजन वेद-पुराणादि शास्त्रों में अभिरूचि अर्थात् उनका अध्ययन, पाठ करेंगे।

(9) धनेश (धन के स्वामी) 'सूर्य' का फल–

द्रविणपेयदि वासरपे तदा वणिजतो बहुद्रव्य समागमः।
गज–तुरंग–मेष–खरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रय विक्रयात्।।

अर्थात् धनेश (कोश का स्वामी) सूर्य हो, तो उस वर्ष उच्च व्यापारी वर्ग व्यापार द्वारा समुचित धनार्जन करने में सफल रहें। हाथी, घोड़े, भेड़, बकरी, ऊँट एवं गाय-भैंस आदि चौपायों के क्रय-विक्रय (व्यापार) से विशेष धन लाभ प्राप्त हो। बड़े उद्योगपति एवं सरकार से सम्बन्धित उच्चाधिकारी वर्ग ही विशेष लाभान्वित होंगे।

(10) दुर्गेश (सेना के स्वामी) 'गुरु' का फल–

सुरगुरौ गढ़पे नवशोभिता नरवराः नरपाः करपालिताः।
गिरिषु वा नगरेषु समं सुखं सुखमति–द्विजशस्त्रतोऽनिशम्।।

दुर्ग अर्थात् सेना का स्वामी गुरु (बृहस्पति) हो, तो देश का राजकीय तन्त्र लोगों को यथासम्भव न्यायिक व्यवस्था प्रदान करने में प्रयासरत रहेंगे। पर्वतीय प्रदेशों एवं नगरवासियों को समान रुप से सुख-सुविधाएँ प्रदान करने के प्रयास होंगे तथा कानून व्यवस्था सुचारु बनी रहेगी। विप्र (ब्राह्मण) लोग भी आत्मरक्षा के लिए शस्त्र धारण करने के लिए बाध्य होंगे।

नोट–वर्ष के उपरोक्त दशाधिकारियों का फल यद्यपि सर्वत्र होता है। परन्तु राजा का फल विशेष रूप से काश्मीर, बंगाल, चीन, तिब्बत एवं हिमाचल, उ.खण्ड के निकटवर्ती क्षेत्र, मन्त्री का फल आन्ध्र-प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य-प्रदेशों में विशेष रूप से होता है। वैसे सामान्यतः राजा एवं मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

चतुर्मेघ फल विचार–आवर्तकादि चतुर्मेघों में इस संवत् '**द्रोण**' नामक मेघ है।

फल–'**द्रोणो वर्षति सर्वदा**'–द्रोण नामक मेघ होने से इन्द्रदेव मेघों द्वारा जल अधिक बरसाएंगे। अर्थात् वर्षा अधिक होगी तथा कुछ क्षेत्र बाढ़ग्रस्त भी रहेंगे।

नवमेघों में 'वायु' नामक मेघ का फल–

नैव अम्बुवृष्टिं कुरुते सुरेशः समस्त धान्याम्बर कण्यनाशः।
धराधरः स्याद्यदि वायुनामाजनव्रजस्तर्हि विहीनधामा॥

अर्थात्–वायु नामक मेघ होने से '**इन्द्रदेव**' जल की वर्षा न करे। देश में अनेक स्थलों पर उपयोगी वर्षा की कमी रहे। सब प्रकार के धान्यों अर्थात् अनाज का नाश हो। विभिन्न प्रकार की जनोपयोगी वस्तुओं की कमी हो जाने से बहुत से लोग आश्रयहीन अर्थात् विवशतापूर्ण परिस्थितियों में जनता को घर-बार छोड़कर अन्य स्थानों पर जाना पड़े।

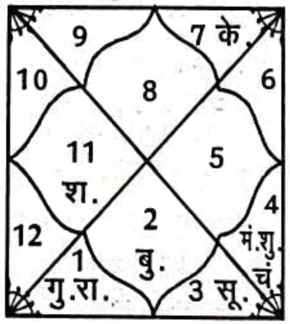
द्वादश नागों में 'कर्कोटक' नामक नाग का फल–

'यदा कर्कोटको नामा जायते पवनाशनः।
तदा नाम्बुद-दातेन्द्रो मरणं स्यान्महीपतेः॥'

अर्थात्–इस वर्ष '**कर्कोटक**' नामक नागराजा होने से अनेकत्र उपयोगी वर्षा की कमी रहे तथा राजा-मन्त्री आदि शासकवर्ग में किसी उच्च पदस्थ नेता की आकस्मिक मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशफल–वि. संवत् २०८०
(वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुंडली
22 जून, 2023 ई., 17घं. 48मिं.



वि. संवत् २०८० में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी को तदनुसार 22 जून, 2023 ई., बृहस्पतिवार को सायं 5 बजकर 48 मिंट पर आश्लेषा नक्षत्र, हर्ष योग तथा कर्क राशिस्थ चन्द्रमा कालीन वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेंगे। स्थिर राशि, जल-तत्त्व तथा उत्तर दिशा की स्वामी राशि में सूर्य का आर्द्रा प्रवेश हुआं है तथा लग्नेश **मंगल** (चर तथा अग्नितत्त्वकारक), चरकारक, जलतत्त्व एवं उत्तर-दिशा की स्वामी राशि '**कर्क**' में चर तथा जलतत्वकारक ग्रह **चन्द्र-शुक्र** के साथ स्थित है। '**सूर्य**' वायुतत्त्व एवं पश्चिम दिशा की राशि '**मिथुन**' में अष्टम भावस्थ है। ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों (पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, जम्मू-काश्मीर) में गर्मी के बावजूद व्यापक वर्षा होगी। पृथ्वी तत्त्व प्रधान परन्तु नपुंसक ग्रह '**बुध**' सप्तम भावस्थ पृथ्वी-तत्त्व राशि वृष पर अवरोधक बनकर बैठा है तथा लग्न भाव को सप्तम दृष्टि से देख रहा है, फलस्वरूप वर्षा-काल में मध्यम स्तरीय वर्षा होगी।

चन्द्रमा की शुभ स्थिति होने से उत्तरी-भारत में मानसून का प्रारम्भ यद्यपि 22 जून से हो जाएगा, परन्तु सूर्य-मंगल आदि ग्रहों की स्थिति तथा लग्न भाव पर **शनि** की विशेष **दशम दृष्टि** होने से जुलाई मास के प्रारम्भिक दिनों में उपयोगी वर्षा का अवरोध रहेगा। यद्यपि **जलीय ग्रह शुक्र** एवं **चंद्र** जलराशि **कर्क** में होने से उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे–उ. प्रदेश, हिमाचल-प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, हरियाणा, पंजाव एवं राजस्थान के ऊपरी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होने के संकेत हैं। कहीं बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि, जन-धन आदि की हानि होने के भी योग हैं।

षष्ठ-भाव में मेष राशि पर '**गुरु-राहु**' की स्थिति होने से भारत के पूर्वी भागों जैसे–बिहार, बंगाल, मध्य-प्रदेश, ३६गढ़ आदि के कुछ क्षेत्रों में वर्षाकाल में सामाजिक एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं खाद्यान्न की कमी, सूखा, दुर्भिक्ष एवं विजली/पानी की कमी, तापमान में वृद्धि तथा अन्य परेशानियाँ होने से संकेत मिलते हैं। समाज व सरकार को सावधान होने की आवश्यकता होगी।

आर्द्रा प्रवेश चतुर्थी परन्तु पंचमी तिथि कालीन तथा बृहस्पतिवार वाले दिन होने से आगामी वर्ष सब प्राणियों को उत्तम परिस्थितियां प्राप्त होंगी। शासनतंत्र की ओर से लोगों को सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं दी जाएंगी।

सार्पभदिभं चेत् स्याद्ऽर्कस्यार्द्रा प्रवेशशने।
दारुणं कर्म लोकानां भवेत् सौख्यविनाशनम्॥

अर्थात् आर्द्रा लग्न प्रवेश के समय यदि आश्लेषा नक्षत्र हो, तो अधिकांशतः लोग उपद्रव, हिंसा, कलह, असत्यचरण आदि नीति विरुद्ध कार्यों में प्रवृत्त हों तथा उनमें सुख-शान्ति की कमी रहे।

आर्द्रा प्रवेश सायंकालीन होने से आगे सुभिक्ष अर्थात् कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा के योग बनेंगे। कृषि उत्पादन में भी लाभदायक वृद्धि होने के योग हैं–**संध्यास्थितार्द्राकुरुते सुभिक्षं॥**

वि. संवत् २०८० में शनि की दृष्टि का फल

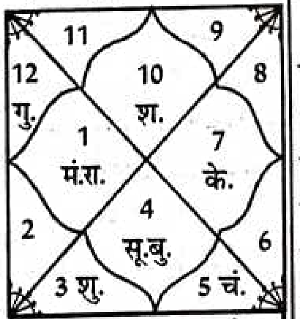
वि. संवत् २०८० में शनि देव '**कुम्भ**' राशि में संचरणशील रहेंगे। फलस्वरूप 22 मार्च, 2023 ई. से 8 अप्रैल, 2024 ई. तक शनि की दृष्टि उत्तर दिशा अर्थात् उत्तर-गोलार्द्ध की तरफ रहेगी। कुम्भ राशिस्थ संचारकालीन शनि की **मेष, सिंह** तथा **वृश्चिक** राशियों पर दृष्टि तथा **मकर, कुम्भ** व **मीन** राशि वाले राष्ट्रों पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। फलतः भारत के उत्तरी-दिशा के राज्यों (जम्मू-काश्मीर, हिमाचल-प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उ.खण्ड, उत्तरी उ.प्र.) उत्तरी-अमेरिका तथा उत्तर-यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, आयरलैण्ड, फिनलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, बैल्जियम देशों (ब्रिटेन, आयरलैण्ड, फिनलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, बैल्जियम, इटली, स्पेन आदि) तथा उत्तरी-अरब देशों (ईराक, तुर्की, ईरान, यमन)

में राजनीतिक उथल-पुथल, राजनैतिक अस्थिरता, सत्ता-परिवर्तन, दुर्भिक्ष, राजनैतिक एवं सामाजिक आन्दोलन व हिंसक घटनाओं के कारण भारी जन-धन हानि होगी। कुछ देशों के मध्य युद्ध के भी दृश्य उपस्थित होंगे। **क्योंकि कुम्भ राशि पश्चिम दिशा की द्योतक है,** इसलिए भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों (गुजरात, महाराष्ट्र, जम्मू-काश्मीर, पंजाब) तथा पश्चिमी देशों (पश्चिमी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया के देशों में) में प्राकृतिक प्रकोप, भीषण वर्षा, बाढ़, समुद्री तूफान, चक्रवात तथा कहीं अकालजन्य परिस्थितियां बनें। इन उपरोक्त प्रभावित राशि वाले देशों/प्रान्तों/नगरों में आन्दोलन, हत्याकाण्ड, अकाल, भयंकर रोग से व्यापक जन-धन हानि के संकेत हैं। पैट्रोल, डीज़ल, क्रूड-ऑयल महँगे होंगे। धान्य तथा अनाजादि विशेष रूप से महँगे होंगे। यथा-

कुंभराशिगतः सौरिर्विर्षमात्रं तदर्धकम्।
कालिंद्याउपकंठे च तत्र धान्य महर्घता।।

गुर्राफल विचार (सन् 2023-24 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1444 (2022-23 ई.)

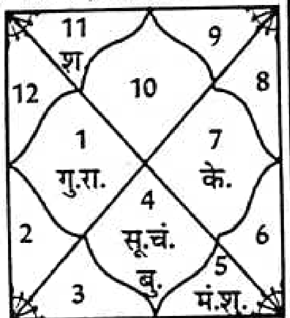


30 जुलाई, 2022 ई.
सूर्यास्त 19[घं]-21[मिं] (I.S.T.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नए हिजरी सन् की शुरुयात (आगाज़) होती, है। गत वि. संवत् 2079 में 31 जुलाई, 2022 ई., रविवार को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1444 शुरु हो गया है। **'रविवार'** को हिजरी सन् का आगाज़ होने से मुस्लिम (ईस्लामी) वर्ष 1444 (सन् 2022-23 ई. में) का राजा (बादशाह) **'सूर्य'** (सूरज) ही होगा। अतः 31 जुलाई, 2022 ई. से 19 जुलाई, 2023 ई. तक मुस्लिम मतानुसार बादशाह सूरज होगा।

नववर्ष कुण्डली में (हिजरी सन् 1444) मकर लग्न उदित हुआ है तथा लग्नेश शनि लग्नस्थ होकर (मकरस्थ) कर्क राशिस्थ सूर्य-बुध के साथ समसप्तक योग (शत्रु दृष्टि सम्बन्ध) बना रहा है। चतुर्थ भाव (जोकि कृषि, सर्वसाधारण की प्रसन्नता फसलों का उत्पादन, भूकम्प का भाव है) में **'मंगल-राहु'** (अंगारक-योग) अशुभ योग बना हुआ है तथा मंगल की सप्तम भावस्थ सूर्य-बुध पर शत्रु नीच दृष्टि रहने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, टर्की, यमन आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में अत्यन्त गम्भीर राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कतर, यमन आदि कुछ देशों में अनेक भूभागों पर विस्फोटक एवं आतंकी घटनाएँ घटित होंगी। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधाननेता के लिए विशेष संकट भरी स्थिति बन जाएगी एवं सत्ता-परिवर्तन अथवा पुनः चुनाव करवाने अवश्यम्भावी हो जाएंगे। पाकिस्तान के बलूच, सिन्ध आदि प्रान्तों में आज़ादी की माँग प्रबल तथा जनांदोलन तीव्र होते ही सेना को अतिक्रमण करना अनिवार्य हो जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की छवि आर्थिक एवं आतंकवाद के मुद्दों के कारण धूमिल होगी। सीरिया, लीविया, टर्की, यमन, पाक आदि आतंकवाद समर्थक देश स्वयं आतंकवाद एवं शिया-सुन्नी विवाद की आग में झुलसने लगेंगे। इज़रायल-फिलीस्तीन तथा ईरान-अमरीका में भी युद्धमय वातावरण रहेगा तथा किसी भी समय एक-दूसरे पर प्राणसंहारक हथियारों का प्रयोग करेंगे। **'चतुर्थ-भाव'** में **'मंगल-राहु'** योग के कारण किसी भी समय कहीं भूकम्प, बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं अथवा युद्ध के कारण भारी जन-धन की क्षति होने के योग हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान में विरोधी पक्षों द्वारा ज़बरदस्त विस्फोटक घटनाओं को अंजाम दिया जाएगा, जिससे आम आदमी का जीवन संकटग्रस्त रहेगा।

ईस्लामी नववर्ष कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1445 (2023-24 ई.)



19 जुलाई, 2023 ई.
सूर्यास्त 19[घं]-28[मिं] (I.S.T.)

वि. संवत् 2080 में 20 जुलाई, 2023 ई., गुरुवार को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1445 शुरु होगा। गुरुवार को हिजरी सन् का आगाज़ होने से मुस्लिम (ईस्लामी) वर्ष 1445 (सन् 2023-24 ई. में) का राजा (बादशाह) **'गुरु'** (बृहस्पत) होगा। इस प्रकार 20 जुलाई, 2023 ई. से 10 जुलाई, 2024 ई. तक मुस्लिम मतानुसार बादशाह-साल **'गुरु'** होगा।

नववर्ष कुण्डली (हिजरी 1445-सन् 2023-24 ई.) में मकर लग्न उदित हुआ है तथा लग्नेश शनि द्वितीय भाव में (जोकि आर्थिक स्थिति, मुद्रास्फीति, महँगाई, व्यापार का भाव है) स्वराशिगत होकर अष्टम भाव (युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं का भाव) में स्थित मंगल-शुक्र के साथ समसप्तक योग बना रहा है। यह शत्रु दृष्टि सम्बन्ध ईस्लामी राष्ट्रों में भयंकर उथल-पुथल मचाएगा। रूस-यूक्रेन युद्ध के दूरगामी प्रभावों के कारण तेल-उत्पादक मुस्लिम राष्ट्र मनमाने तरीके से क्रूड-ऑयल आदि के मूल्यों में वृद्धि करेंगे। **चतुर्थ भाव** (जोकि कृषि सर्वसाधारण की प्रसन्नता, फसलों का उत्पादन, भूकम्प का भाव है) में **'गुरु-राहु'** अशुभ योग एवं शनि की इन पर क्रूर नीच दृष्टि रहने से मुस्लिम राष्ट्रों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सऊदी-अरब, कतर, सूडान, टर्की, यमन) के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विशेषकर पश्चिमी देशों के साथ तनावपूर्ण रहेंगे। इन देशों के लोगों में क्रोध (गुस्सा), उत्तेजना की भावनाएँ ज्यादा होंगी। हुक्मरानो में भी आपसी टकराव और विरोध अधिक होगा। विभिन्न देशों के प्रमुख अध्यक्षों के दरम्यान भी सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे। शिया-सुन्नी आदि मज़हबी झगड़े और तनाव अधिक रहेंगे। चोरी-बेईमानी और धोखा-फरेब की वारदातें होंगी। **'मंगल-शनि'** के मध्य दृष्टि सम्बन्ध होने से अनावश्यक बियानबाजी से कुछ मुस्लिम देशों का अमरीका एवं यूरोपीय देशों के साथ वैमनस्य बढ़ेगा। धर्म-ईमान की तरफ लोगों का ध्यान कम रहे।

गतवर्ष पृष्ठ 87, कालम-I में मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली (1) के विवेचन में पाकिस्तान (मुस्लिम) से सम्बन्धित भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य हुई–पढ़ें–'.... आदि में गम्भीर अराजकता, गृहयुद्ध एवं आतंकी घटनाओं, आगज़नी, राजनीतिक उलट-फेर, जैसी परिस्थितियां बनेंगी। राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन के लिए आन्दोलन आदि का प्रयोग करना पड़ेगा।'–जैसा कि अप्रैल, 2022 ई. में इमरान खान की सरकार को सत्ता से बेदखल करने के लिए घटनाक्रम हुए–उनसे पाठक विदित ही हैं।

वर्षादि के विश्वमान

वर्षादि विश्वा का कुल मान 20 विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। **जैसे**–आगे वि. संवत् 2080 में धान्य के विश्वा 5 लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन औसत से काफी कम होगा।

वर्षा 13, धान्य 5, तृण 5, शीत 13, तेज 17, वायु 13, वृद्धि 15, क्षय 15, विग्रह 11, क्षुधा 9, तृषा 15, निद्रा 7, आलस्य 15, उद्यम 13, शान्ति 15, क्रोध 13, दम्भ 5, लोभ 3, मैथुन 15, रस 9, फल 13, फलनिष्पत्ति 11, उत्साह 17, उग्रता 17, पाप 1, पुण्य 7, व्याधि 7, व्याधिनाश 5, आचार 5, अनाचार 11, मृत्यु 9, जन्म 1, देशोपद्रव 7, देशस्वास्थ्य 13, चौरभय 3, चोरनाश 13, अग्नि 11, अग्निशान्त 15, उद्भिज 7, जरायुज 3, अंडज 13, स्वेदज 9, टिड्डी 17, तोता 3, मूषक 15, सोना 19, ताम्र 7, स्वचक्र 9, परचक्र 15, वृष्टि 3, वृष्टिनाश 11 तथा संवत् विश्वा 10 हैं।

जल आदि चार स्तम्भ–वि. संवत् २०८०

(1) जल स्तम्भ–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 22.49 प्रतिशत है। जलस्तम्भ अल्पबली है। स्पष्ट है कि अनेक प्रान्तों/क्षेत्रों में वर्षा विशेष रूप से कम होगी। कहीं खण्ड वर्षा होगी तथा कहीं उपयोगी/अनुकूल वर्षा की अत्यन्त कमी महसूस होगी। कहीं पेयजल की समस्याएँ विकराल रूप धारण कर लेंगी। भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। दुर्भिक्ष (अकाल) की परिस्थितियां बनेंगी जोकि किसानों के लिए कष्टप्रद समय रहेगा। सरकार (शासनतन्त्र) को भी देश के अनेक भूभागों को अकालग्रस्त घोषित करना पड़ेगा। विद्युत्-उत्पादन तथा सिंचाई हेतु नदियों में पर्याप्त जल-भण्डार की कुछ कमी का अनुभव होगा।

(2) तृण स्तम्भ–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 40.84% है। तृणस्तम्भ मध्यम-बली रहने से तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, भूसे से निकलने वाले मुख्य अनाज, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा अन्य वन-औषधियों के उत्पादन व उपलब्धता में विचारणीय कमी रहेगी। अनाज, पशुचारे का पर्याप्त उत्पादन होने के बावजूद भण्डारण, आबंटन की अव्यवस्था होने के कारण इनके मूल्यों में आशातीत वृद्धि होगी। मानसून के विलम्ब या अनियमित होने से गर्मी की अधिकता, खड़ी फसलों का सूखना, सब्ज़ियों आदि की कम पैदावार तथा कहीं अत्यधिक गर्मी, ऊष्णता व कहीं अति वर्षा के कारण लोगों व पशु-पक्षियों को कष्ट रहे। आयुर्वेदिक औषधियां तथा दूध, डायरी उत्पाद महँगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरुप कृषि आदि खड़ी फसलों तथा पर्यावरण पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा। वायु स्तम्भ नगण्य होने से मेघों के संचालन की व्यवस्था भी प्रतिकूल रहेगी अर्थात् बादलों की गति तितर-बितर करने में वायुवेग सक्षम न होगा। कहीं बाढ़ से तथा कहीं असामयिक वर्षा से कृषि आदि की हानि सम्भव है। कृषि-उत्पादन में कमी चिन्ताजनक रहेगी। वातावरण में प्रदूषण, ऊष्णता एवं आशातीत गर्मी का प्रकोप रहे। कहीं दक्षिणी भारत में समुद्री तूफान से भयंकर हानि भी सम्भव है।

(4) अन्न स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का अभाव भी चिन्ताजनक है। कुछ राज्यों में विपरीत जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोपों के कारण अन्न, धान्य तथा कुछ सब्ज़ियों, दालों के उत्पादन में कमी के कारण इनके मूल्यों में आशातीत वृद्धि होगी। वायु स्तम्भ भी नगण्य होने से हाड़ी-सौणी की खड़ी फसलों को नुकसान होगा। मूल्यों में वृद्धि तथा किसानों व बिचौलियों को लाभ मिलेगा।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने (आकलन) के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रुप से वर्षा, मानसून तथा अन्न उत्पादन पर निर्भर करती है। वि. संवत् २०८० में एक स्तम्भ अल्प-बली, एक स्तम्भ मध्यम बली तथा दो स्तम्भ नगण्य होने से मानसून समय पर न आने तथा वर्षा पर्याप्त न होने से सूखा (अकाल) तथा प्राकृतिक प्रकोपों के कारण साधारण जनता एवं कृषकवर्ग परेशान रहे। सरकार को अनेक जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं का आयात करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था में अच्छे सुधारों के बावजूद विकास-गति धीमी पड़ जाएगी।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार (वि. सं. २०८०)

निम्नलिखित ये चार आर्षमान वर्षभर जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति, नैतिक मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी उपरोक्त स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती हैं। आर्ष शब्द का अर्थ है–ऋषियों से सम्बन्धित, ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः अर्थ हुआ–नापतोल का ऋषि प्रोक्ता पमाना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा, आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) **प्रथम आर्ष**–गतवर्ष की पौष-अमावस्या को मूल नक्षत्र के सम्पर्क से माना जाता है। मूल नक्षत्र का सम्पर्क 57% है।

(2) **द्वितीय आर्ष**–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 35% है।

(3) **तृतीय आर्ष**–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(4) **चतुर्थ आर्ष**–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 94.89% है।

निष्कर्ष–इस वर्ष राष्ट्र रक्षा हेतु एक दुर्ग सुदृढ़, एक दुर्ग मध्यम बली, एक दुर्ग अल्प-बली तथा एक दुर्ग का अभाव है। फलतः यह वर्ष आर्षमान विचार से अच्छा नहीं है। यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, परमाणु ऊर्जा, अन्य ऊर्जा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में भारत उल्लेखनीय प्रगति करेगा। अनेक अवरोधों एवं अन्तर्राष्ट्रीय गम्भीर परिस्थितियों के बावजूद देश राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं रक्षा के क्षेत्र में प्रगतिपथ पर होगा। सीमा सुरक्षा तथा घुसपैठ रोकने के लिए विशेष आधुनिक सुरक्षा-उपाय किए जाएंगे। परन्तु तृतीय आर्ष के नगण्य होने के कारण सीमा प्रान्तों में ड्रोन-घुसपैठ, आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं, आन्दोलनों के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा तथा कहीं भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि का भी संकेत है।

मेष राशि में गुरु संचार-फल
(22 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त 8 अप्रैल, 2024 ई. तक)

संवतारम्भ 22 मार्च, 2023 ई. से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक गुरु मीन राशि में रहेंगे। मीनस्थ गुरु का संचार फल गतवर्ष पंचांगदिवाकर के पृष्ठ 88 पर लिख आएँ हैं। आगे 22 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक मेष राशि में संचार का फल इस प्रकार रहेगा–

मेषराशौयदा जीव चैत्र सम्वत्सरः तदा। प्रबुद्धोनामजलदः वर्षाचसर्वतोमुखी।।

अर्थात् **गुरु जब मेष** राशि में आए तो '**चैत्र**' संवत्सर होता है और उसमें '**प्रबुद्ध**' नामक मेघ वर्षा करते हैं। वर्षा पर्याप्त होती है तथा सब जगह सुभिक्ष अर्थात् सभी प्रकार के धान्यों का यथेष्ठ उत्पादन हो। राजाओं (नेताओं) में परस्पर वाद-विवाद रहे। वस्त्रों, सोना, चाँदी, ताँबा, कपास आदि के भाव कुछ कम होंगे। चौपायों विशेषकर घोड़ों में रोगों से पीड़ा रहे, ब्राह्मणों, वेदपाठी लोगों को कष्ट रहे। भाद्रपद मास में गेहूँ, चावल, घी, उड़द आदि सस्ते होंगे तथा उत्तर-दक्षिणी राज्यों में खण्ड वर्षा होगी। दक्षिणोत्तर में कहीं सत्ता-परिवर्तन, आश्विन से फाल्गुन मास तक छः मास तक दुर्भिक्ष अर्थात् अकाल की स्थिति रहे। कार्तिक, मार्गशीर्ष मास में कपास, रुई और अन्न महँगे हो जाएंगे।

● सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य ●

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है–

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है–

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्र गौओं के दान का फल प्राप्त होता है–

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्रफलं लभेत्। –हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वह अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है–

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्॥

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इसदिन व्रत धारण करके भगवान श्रीविष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल, तिल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2023-24 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

माघ (मौनी) (शनैश्चरी)	21 जन., शनि	आश्विन (शनैश्चरी)	14 अक्तू. शनि
फाल्गुन (सोमवती)	20 फर., सोम	कार्तिक (सोमवती)	13 नवं. सोम
चैत्र (भौमवती)	21 मार्च मंग.	मार्गशीर्ष (भौमवती)	12 दिसं. मंग.
शुद्ध श्रावण (सोमवती)	18 जुला. सोम	चैत्र (सोमवती)(2024 ई.)	8 अप्रै. सोम

श्रावण अधिक मासफल—वि. संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.)

(18 जुलाई से 16 अगस्त, 2023 ई. तक)

आगामी वि. संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.) में चान्द्र श्रावण मास '**अधिक**' (मल, पुरुषोत्तम) मास होगा। इस अधि-मास की समयावधि 18 जुलाई, मंगलवार से 16 अगस्त, बुधवार, सन् 2023 ई. तक रहेगी।

अधिक-मास निर्णय—जिस महीने में सूर्य संक्रान्ति न हो, वह महीना अधिमास होता है और जिसमें दो संक्रान्ति हों, वह क्षय-मास होता है।

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्।

द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।। (ज्योतिःशास्त्र)

प्रचलन में सौर वर्ष और चान्द्र-वर्ष में सांमजस्य स्थापित करने के लिए हर तीसरे वर्ष पंचांगों में एक चान्द्र मास की वृद्धि कर दी जाती है। लोकव्यवहार में इसी को '**अधिक-मास**' के अतिरिक्त '**अधि-मास**', '**मलमास**' तथा आध्यात्मिक विषयों में अत्यन्त पुण्यदायी होने के कारण '**पुरुषोत्तम-मास**' आदि नामों से भी विख्यात है। ज्योतिषगणनानुसार एक सौरवर्ष का मान 365 दिन, 6 घण्टे एवं 11 सैकिण्ड के लगभग है, जबकि चान्द्र वर्ष 354 दिन, एवं लगभग 9 घण्टे का होता है। दोनों वर्षमानों में प्रतिवर्ष 10 दिन, 21 घण्टे, 9 मिन्ट का अन्तर अर्थात् लगभग 11 दिन का अन्तर पड़ जाता है। इस अन्तर में सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए 32 महीने, 16 दिन, 4 घड़ी, बीत जाने पर अधिकमास का निर्णय किया जाता है। '**पुरुषार्थ-चिन्तामणि**' के अनुसार एक अधिक मास से दूसरे अधिक (मल) मास तक की अवधि अर्थात् पुनरावृत्ति 28 मास से लेकर 36 मास के भीतर होना सम्भव है। इस प्रकार हर तीसरे वर्ष में अधिक मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास की पुनरावृत्ति होना सम्भव है।

पुरुषोत्तम मास का माहात्म्य एवं कर्त्तव्य

इस मास की मलमास की दृष्टि से जैसे निन्दा है, पुरुषोत्तम मास की दृष्टि से इसकी बड़ी महिमा है। अधिमास ने तपस्या कर भगवान् विष्णु से उनका '**पुरुषोत्तमनाम**' प्राप्त किया था। भगवान् कृष्ण ने इसको अपना नाम देकर कहा–सद्गुणों, कीर्ति, प्रभाव, षडैश्वर्य, पराक्रम, भक्तों को वरदान देने आदि जितने भी गुण मुझमें हैं और उनसे जिस प्रकार मैं विश्व में पुरुषोत्तम के नाम से विख्यात हूँ, उसी प्रकार यह मलमास भी भूतल पर '**पुरुषोत्तम**' नाम से प्रसिद्ध होगा–

अहमेते यथा लोके प्रथितः पुरुषोत्तमः तथायमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्तमः।।

अधिक मास के आने पर जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक व्रत, उपवास, श्रीविष्णु पूजन, पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ, दान आदि शुभ कर्म करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और मरणोपरान्त गोलोक पहुँचकर भगवान् श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करता है।

इसी प्रकार इस मास गीतापाठ, श्रीराम-कृष्ण के मन्त्रों, पंचाक्षर शिवमन्त्र, अष्टाक्षर नारायणमन्त्र, द्वादशाक्षर वासुदेवमन्त्र आदि के जप का लाखगुना, करोड़गुना या अनन्त फल होता है–

द्वादशाक्षरमन्त्रोऽयं यो जपेत् कृष्णसन्निधौ।

दशवारमपि ब्रह्मन् स कोटिफलमश्नुते।। (पुरुषोत्तममास–माहा.)

श्रावण (अधिक) मास का फल

वि. संवत् २०८० में प्रथम श्रावण शुक्ल प्रतिपदा तद्नुसार 18 जुलाई, मंगलवार से श्रावण अधिक मास प्रारम्भ होकर 16 अगस्त, बुधवार तक व्याप्त रहेगा। प्रथम श्रावण शुक्ल पक्ष और द्वितीय श्रावण कृष्ण पक्ष–दोनों पक्षों के अन्तराल (मध्यावधि) में संक्रान्ति का अभाव होने से '**श्रावण-मास**' अधिक मास अर्थात् **पुरुषोत्तम मास** माना जाएगा। शास्त्रों में श्रावण अधिक मास का फल इस प्रकार से वर्णित है–

'दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजाक्षयः।'

अर्थात् जिस वर्ष में दो श्रावण हों अर्थात् श्रावण अधि. मास हो, तो उस वर्ष पृथ्वी पर कहीं दुर्भिक्ष, उपयोगी वर्षा की कमी एवं अग्निकाण्ड, युद्ध, यानादि दुर्घटनाओं एवं प्राकृतिक प्रकोपों से धन एवं जन हानि की आशंका होती है। अधिक मास काल में गोचरवश '**मंगल-शनि**' मध्य समसप्तक योग भी होने से पृथ्वी के उत्तर गोलार्द्ध के दक्षिण दिशा में पड़ने वाले देशों जैसे-रूस, चीन, ताईवान, यूक्रेन, पाकिस्तान तथा अन्य सभी यूरोपीय देशों में आन्तरिक व बाह्य राजनैतिक परिस्थितियां विशेष रूप से प्रभावित रहेंगी। इन देशों में कहीं आन्तरिक विद्वेष, उपद्रव, अग्निकाण्ड, बाढ़, युद्ध, भूकम्प आदि से भी जन व धन सम्पदा की हानि की सम्भावनाएं होंगी।

पुरुषोत्तम मास में नित्यकर्म एवं उद्यापन अर्थात् पालनीय नियम

भविष्योत्तरपुराण अनुसार पुरुषोत्तम मास में ईश्वर के निमित्त जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं, उन सबका अक्षय फल होता है और व्रती के सब अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। पुराणों में अधिकमास में पूजन, व्रत, दान सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के विधान बतलाए गए हैं–

इस मास के प्रारम्भ होते ही प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर शौच, स्नान, संध्या आदि अपने-अपने अधिकार के अनुसार नित्यकर्म करके भगवान् का स्मरण करना चाहिए और पुरुषोत्तम-मास के नियम ग्रहण करने चाहिये। पुरुषोत्तम-मास में श्रीमद्भागवत् पुराण का पाठ करना महान् पुण्यप्रदायक है और एक लाख तुलसीपत्र से शालग्राम भगवान् का पूजन करने से अनन्त पुण्य होता है। विधिपूर्वक षोडशोपचार से नित्य भगवान् का पूजन करना उचित है। इस पुरुषोत्तम-मास में–

'गोवर्द्धनधरं वन्दे गोपालं गोपरूपिणम्।
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्।।'

–इस मन्त्र का एक महीने तक भक्तिपूर्वक बार-बार जप करने से पुरुषोत्तम भगवान् की प्राप्ति होती है। प्राचीनकाल में श्रीकौण्डिन्य ऋषि ने यह मन्त्र बताया था। मन्त्र जपते समय नवीन मेघश्याम द्विभुज मुरलीधर पीतवस्त्रधारी श्रीराधिका जी के सहित श्रीपुरुषोत्तम भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

हेमाद्रि अनुसार पुरुषोत्तम-मास आरम्भ होने पर प्रातः स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्तव्रत रखकर भगवान् विष्णुस्वरुप सहस्रांशु (भास्कर) का मंत्रों द्वारा लालपुष्प सहित पूजन एवं कृष्णस्तोत्र पाठ करके कांस्य पात्र में भरे हुए अन्न, फल, वस्त्रादि का दान किया जाता है। पूजनोपरान्त अथवा अधिकमास के अन्तिम दिन विविध प्रकार के मिष्ठान्न, घी, गुड़ और अन्न का दान ब्राह्मण को करें तथा घी, गेहूँ और गुड़ के बनाए हुए तैंतीस (33) अपूप (पूओं) को पात्र में रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर फलों, मिष्ठान्न, वस्त्र दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करें–

''ॐ विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्न प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।''

इसके बाद आगे लिखे मन्त्र से भगवान् विष्णु को प्रार्थना करें–

''यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडोयस्य वाहनम्। शङ्खः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।''

इसके अतिरिक्त श्रावण अधिक मास में प्रतिदिन श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ एक निश्चित समय पर श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। श्रीविष्णु स्तोत्र, श्रीविष्णु सहस्रनाम, श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त आदि पाठ करना शुभ होगा। अधिकमास की समाप्ति पर स्नान, जप, पुरुषोत्तम मास पाठ एवं निम्न मन्त्रों सहित गुड़, गेहूँ, घृत, वस्त्र, मिष्ठान्न, दाख, केले, कूष्माण्ड (कुम्हड़ा), ककड़ी, मूली आदि वस्तुओं का दान, दक्षिणा सहित करके भगवान् को 3 बार अर्घ्य देवें। त्रयस्त्रिंशत् (३३) नाम मन्त्रों का जप करें–

१. विष्णुं, २. जिष्णुं, ३. महाविष्णुं, ४. हरिं, ५. कृष्णं, ६. अधोक्षजम्, ७. केशवं, ८. माधवं, ९. रामं, १०. अच्युतं, ११. पुरुषोत्तमम्, १२. गोविन्दं, १३. वामनं, १४. श्रीशं, १५. श्रीकृष्णं, १६. विश्वसाक्षिणं, १७. नारायणं, १८. मधुरिपुं, १९. अनिरुद्धं, २०. त्रिविक्रमम्, २१. वासुदेवं, २२. जगद्योनिं, २३. अनन्तं, २४. शेषशायिनम्, २५. सङ्कर्षणं, २६. प्रद्युम्नं, २७. दैत्यरिं, २८. विश्वतोमुखम्, २९. जनार्दनं, ३०. धरावासं, ३१. दामोदरं, ३२. मघार्दनं, ३३. श्रीपतिं च।।

अधिक-मास में त्याज्य कर्म/कार्य

अधिमास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले प्रायः सभी काम वर्जित हैं और फल की आशा से रहित होकर करने के आवश्यक सब काम किए जा सकते हैं। ज्योतिष-आचार्यों के मतानुसार अधिक (पुरुषोत्तम) मास में कुछ नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को करने का निषेध माना गया है। जैसे-विवाह, यज्ञ, देव-प्रतिष्ठा, महादान, चूड़ाकर्म (मुण्डन), पहले कभी न देखे हुए देवतीर्थों में गमन, नवगृह-प्रवेश, वृषोत्सर्ग, भूमि आदि सम्पत्ति की खरीद (क्रय), नई गाड़ी का क्रय आदि शुभ कार्यों का आरम्भ अधिक-मास-काल में नहीं करना चाहिए–

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्ग चूडाकरणमेखलाः।।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।। (गर्गाचार्य)

इसके अतिरिक्त अन्य अनित्य व अनैमित्तिक कार्य जैसे-नववधू प्रवेश, नव-यज्ञोपवीत धारण, व्रतोद्यापन, नव-अलंकार, नवीन वस्त्रादि धारण करना, कूआँ, तालाब, बावली, बाग आदि का खनन करना, भूमि, वाहनादि का क्रय करना, काम्य व्रत का आरम्भ, भूमि, सुवर्ण, तुला, गायादि का दान, अष्टका श्राद्ध, उपनयन, द्वितीय वार्षिक श्राद्ध, उपाकर्मादि कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है।

अधिक (पुरुषोत्तम) मास में करणीय कर्म

अधिक (मल) मास में जिस काम्य कर्म के प्रयोग का आरम्भ अधिक मास से पहले ही हो चुका हो, उसकी सम्पूर्ति अधिक मास में विहित है। मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, पितरों की क्रिया करना, तीर्थ व गजच्छाया श्राद्ध, यदि मध्य में किसी के मलमास हो तो एक मास का अधिक ही श्राद्ध होगा। अर्थात् जिस मास में यह प्राप्त होता है, उसकी द्विरावृत्ति होती है। यदि मलमास में ही किसी की मृत्यु हो, तो उससे जो 12वाँ मास हो, उसमें प्रेतक्रिया को समाप्त करना चाहिए। तीव्र ज्वर या प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रुद्रपूजादि अनुष्ठान, पुत्र/सन्तान जन्म के बाद अन्नप्राशन, **गण्डमूल, जन्मदिन पूजन सम्बन्धी आवश्यक** (दिन-निर्धारित) कर्म, कपिल-षष्ठी जैसे दुर्लभ योगों के प्रयोग, नित्य पूजा-जप-दानादि कर्म अथवा ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध, दान, जपादि किए जा सकते हैं–

आवश्यकर्म मासाख्यं मलमासभृताब्दिकम्।
तीर्थेभच्छाययोः श्राद्धमाधानाङ्ग पितृक्रियाम्।। (सूर्योदय) (ज्यो. नि.)

वि. संवत् २०८० में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

- नया 'पिंगल' नामक संवत्सर होने से समाज तथा राजनीतिज्ञों में परस्पर टकराव, वैर-विरोध एवं प्रतिद्वन्द्वता की भावना अधिक रहेगी। आरोप-प्रत्यारोप भरा वातावरण रहेगा। मूल्य-वृद्धि से साधारण लोग त्रस्त रहेंगे। विश्व में अनेक स्थलों से युद्धादि के समाचार मिलेंगे। देश में गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं तथा वाहनों की हानि होगी।
- राजा बुध तथा मन्त्री शुक्र होने से राजनीति, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में चालाकी, कपट एवं बौद्धिक कूटनीतियों का प्रयोग होने लगेगा। आगामी वर्ष भी ऐसे अनेक राजनीतिक समीकरण देखने को मिलेंगे, जिनमें षड्यन्त्र, दोगलापन, पीठ पर छुरा घोंपना आदि के उदाहरण मिलेंगे। देश में गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, विद्वानों, राजनीतिज्ञों की ग़ैर-कानूनी एवं देश-विरोधी गतिविधियां उजागर होंगी।
- स्त्री ग्रह शुक्र मन्त्री होने से समाज में स्त्री-पुरुषों में बाह्य आकर्षण, नाच-गान, सिनेमा-संगीत आदि के कार्यक्रम, पुरुष व स्त्रियों में अश्लीलता एवं फैशन-परस्ती का अशोभनीय प्रदर्शन बढ़ेगा। हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी एवं प्रभाव बढ़ेगा।
- *खप्पर योग*—चांद्र माघ मास से फाल्गुन मास के मध्य (7 जन. से 7 मार्च) पाँच शनि, पाँच रवि तथा पाँच मंगलवार होने से खप्पर योग बना है। फलस्वरूप विश्व एवं भारत के किसी राज्य में छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन), युद्ध या किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या मृत्यु के योग हैं। प्रतिकूल जलवायु, खण्ड वर्षा, जलवायु परिवर्तन से कहीं अकालजन्य तथा कहीं जल-प्रलय के हालात बनेंगे। पेट्रोल, डीज़ल के मूल्यों में आशातीत वृद्धि होगी।
- जगत् लग्न कुण्डली में भी ग्रहस्थिति अनुसार विश्व के अधिकतर देशों के मध्य न्यूकिलयर एवं अन्य संहारक हथियारों के संग्रह की प्रतिस्पर्धा एवं होड़ बढ़ेगी। रूस, चीन आदि कुछ देशों की सीमाओं के विस्तारवाद की प्रवृत्ति के कारण विश्व-राजनीति फिर से दो गुटों में बंट जाएगी।
- रूस-यूक्रेन युद्ध लम्बा खींचने के बाद एक नया कठपुतली देश अस्तित्व में आएगा। विश्व राजनीति एवं विश्व अर्थव्यवस्था के मंच विशेष घटनाप्रद रहेंगे। विश्वयुद्ध समतुल्य शीत-युद्ध शुरु होगा। इंग्लैण्ड आदि यूरोपीय देशों को मुद्रा-अवमूल्यन के कारण आर्थिक पेचीदगियों का सामना रहे।
- वैश्विक घटनाक्रम अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने में अहम कारक बनेंगे। भारत आयातित महँगाई का शिकार होता रहेगा। मोदी सरकार का विकास के प्रति प्रतिबद्धता का भाव बढ़ती महँगाई, मुद्रा अवमूल्यन, नवीन टैक्स दरों तथा धार्मिक कट्टरता की धुंध में विलुप्त होता जाएगा।
- विपक्षी दल वैचारिक जड़ता के शिकार रहेंगे। केन्द्रीय सरकार के निर्णयों एवं नीतियों से असहमति तथा तद्जन्य विरोध की अमर्यादित घटनाएं होंगी।
- ता. 22 अप्रै. से 15 मई तक चतुग्रही योग, 10 मई से 30 जून तक मंगल-शनि मध्य षडाष्टक योग, तदुपरान्त समसप्तक योग रहने से देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह-रह कर उठ रही साम्प्रदायिक टकराव की चिंगारी विचलित करती रहेगी। देश में मज़हबी कट्टरवाद और जिहादी सोच के विरुद्ध आक्रोश रहेगा।
- आगामी हि.प्र., गुजरात के होने वाले चुनावों में भाजपा कुछ मुश्किलों के बावजूद पुनः विजयी होगी। 'आप' पार्टी द्वारा कड़ी टक्कर मिलेगी। पुनः आगामी वर्ष भी राजस्थान, ३६गढ़ में स्पष्ट एवं प्रचण्ड बहुमत से तथा कर्नाटक, म.प्र. में संघर्ष व योजनाबद्ध तरीके से 'भाजपा' पार्टी के ही विजयी होने की सम्भावना है।

अनेक रहस्यों से युक्त ज्योतिष शास्त्र ज्ञान का महासमुद्र है। ब्रह्माण्ड के अनेक तत्त्वों के रहस्योद्घाटन में प्रवृत्त ज्योतिषशास्त्र में ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, उल्कापात आदि ज्योतिः पदार्थों के स्वरूप, गति एवं स्थित्यादि का निरीक्षण करने पर ये तारे क्या वस्तु हैं ? इनमें पूर्व की ओर गतिमान ज्योतिःपुंज क्या है ? चन्द्र का स्वरूप प्रतिदिन क्यों बदलता रहता है ? ऋतुओं के आवागमन का चक्र कैसे चलता है ? इत्यादि क्या ? क्यों ? और कैसे? जैसे प्रश्नों ने मानव-मन को उद्वेलित किया। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने की चाह ने 'ज्योतिषशास्त्र' की नींव रखी। हमारे ऋषि-महर्षियों एवं पूर्वाचार्यों ने भी ज्योतिःपदार्थों की गति-स्थित्यादि के अतिरिक्त आकाश में घटने वाली ग्रहण-जैसी आश्चर्यजनक घटनाओं का भी सतत निरीक्षण करके प्राणियों पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का विश्लेषणकर ज्योतिषशास्त्र के मानव सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। उनके द्वारा रचित

ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तरूपी अनमोल रत्न ज्योतिषशास्त्र की अमूल्य धरोहर हैं। वैदिक दर्शन की अवधारणा पर आधारित ज्योतिषशास्त्र वेदाङ्ग के नेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है। वेदांग-ज्योतिष में सभी वेदांगों में इसकी प्रधानता स्वीकार की गई है–

यदा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्॥

'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्' ज्योतिषशास्त्र की इस व्युत्पत्ति के अनुसार सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहते हैं। वस्तुत: ग्रह-नक्षत्रों की गतिविधि एवं प्रभाव के विषय में जो कुछ भी ज्ञान है, वह सब ज्योतिष ही है। प्राणियों पर ग्रहादिकों के प्रभाव का अध्ययन कर उसके अनुसार शुभाशुभ फलकथन ही ज्योतिष का मुख्य उद्देश्य है। जैसा कि भास्कराचार्य जी ने कहा है–

'ज्योति:शास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।' (सिद्धान्तशिरोमणि)

ज्योतिषशास्त्र के मुख्यतया सिद्धान्त, होरा एवं संहिता–ये तीन स्कन्ध हैं। सिद्धान्तस्कन्ध गणितात्मक है। इसमें मुख्यतया ग्रहों की गति, स्थिति, दिग्देश एवं कालगणन विषय की विवेचना प्राप्त होती है। ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन कर शुभाशुभ फल निरूपण होरा एवं संहिता का वर्ण्य-विषय है।

मुख्यतया काल को आधार बनाकर फलविवेचना के लिए जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार कुण्डली का निर्माण किया जाता है। जन्मकुण्डली के द्वादश भावों मे स्थित ग्रहों के परस्पर सम्बन्धादि का विचार कर वैयक्तिक फल का विवेचन संहिता स्कन्ध में प्राप्त होता है। संहिता स्कन्ध में शकुन, वास्तुप्रभृति विषय भी आते हैं। इस प्रकार मानव जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर समुचित मार्गदर्शन देना ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है।

मनुष्य अपने संचित एवं प्रारब्ध कर्मों की जीवननौका में बैठकर क्रियमाण कर्मरूपी पतवार के द्वारा उन्नति, अवनति, यशापयश, सुख-दु:खादि के रूप में स्वकर्मों का फल भोगता है। चित्त की उद्विग्नता-प्रसन्नता, आकस्मिक आपत्तियाँ-विपत्तियाँ, हर्ष-उत्कर्षादि सभी कुछ कर्मों के परिणामों पर निर्भर है। यदि क्रियमाण कर्मों का पलड़ा भारी हो जाए तो पूर्वार्जित संचित अदृष्ट कर्म असह्य फल देने में असफल रह जाते हैं। यदि क्रियमाण शास्त्रानुमोदित शुभ कर्म यथार्थ रूप से सम्पन्न न किए जाएं तो अदृष्ट का फल मनुष्य को भोगना ही पड़ेगा।

जीवन से सम्बद्ध इस परम सत्य का विश्लेषण करना ही ज्योतिष है। अस्तु, ज्योतिष को प्रत्यक्ष शास्त्र एवं चन्द्र-सूर्य को इसका साक्षी माना जाता है–**'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।'**

ब्रह्माण्ड यदि पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश–इन पंचमहाभूतों के पंचीकरण का परिणाम है तो यह शरीर भी इन्हीं पाँचों के संघात का परिणाम है। अस्तु, इस शरीर को पंचायती-धर्मशाला स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है।

ब्रह्माण्ड का प्रबन्धक परमात्मा (सूर्य) अपने मन्त्री चन्द्रमा तथा प्रबन्धसमिति के अन्यान्य सदस्य-ग्रह, उपग्रह आदि के साथ नियमानुसार जैसे संचालन करता है, उसी प्रकार इस शरीर में रहकर जीवात्मा अपने मन्त्री मन के साथ बल-रक्तादि (मंगल), वाणी (बुध), ज्ञान (गुरु), वीर्यतन्त्रादि (शुक्र), सुख-दु:खानुभूति (शनि), उन्नति-अवनति, विकास इत्यादि (राहु-केतु-हर्षल-वरुण आदि) के साथ नियमित संचालन करता है।

जब तक पंचायत द्वारा नियुक्त प्रबन्धक (जीवात्मा) यदि पंचायत के प्रबन्ध-समिति के सदस्यों-सूर्यादि (जिन्हें हम नवग्रहों के नाम से जानते हैं)–के प्रति कृतज्ञ रहता हुआ इस धर्मशाला (शरीर) का संचालन अच्छी तरह करता रहेगा, तव तक उसे श्रमतोष (पारिश्रमिक) के साथ ही साथ पुरस्कारस्वरुप सुख, शुभ उन्नति आदि अनुदान-वरदान भी प्राप्त होते रहेंगे। जिस दिन संचालन-व्यवस्था में अवहेलनापूर्वक व्यवधान दिखाई देगा, उसी समय इस पंचायती धर्मशाला को ध्वस्तकर ये ही नवग्रह सदस्य जीवात्मा को बाहर निकाल देते हैं।

अस्तु, इन सदस्यों (नवग्रहादि) के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना ही वेदविहित प्रकृति-प्रवाह के अनुकूल उपादेय कर्म (पुण्य) तथा इसके विपरीत वेदनिषिद्ध हेय कर्म प्रकृति-प्रवाह के प्रतिकूल-पाप माने गये हैं। आंग्ल भाषाभाषियों मे एक बहुत प्रचलित सूक्ति है–'Man does not live on bread alone' अर्थात् मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता, उसे अपनी जिज्ञासा शान्ति हेतु कुछ और भी चाहिए। जैसे-शौर्य, उच्च-पदवी, मांगल्य, बुद्धिमता, महानता, सुख-शान्ति, बाहुबल, कुल-वृद्धि आदि। इसी हेतु नवग्रहों से प्रसन्नतापूर्वक अनुकूल रहने की कामना की जाती है। वेदविहित उपादेय कोई भी कर्म बिना नवग्रहों के पूर्वार्चन के सम्पन्न नहीं होता। ग्रहों से ही समस्त त्रैलोक्य प्रभावित रहता है–

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च।
ग्रहास्तु व्यापितं सर्वं त्रैलोक्ये सचराचरम्॥

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

आगे हम संक्षिप्त रूप से हमारे पूर्वजों पं. देवीदयालु जी, पं. मोहन लाल जी, पं. चून्नी लाल जी, पिता जी पं. पन्ना लाल जी तथा वर्तमान गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं, जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं। इन सटीक एवं सफल भविष्यवाणियों के कारण ही '**पंचांगदिवाकर**' को विद्वत समाज में अग्रणी एवं शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

[भारत-पाक का ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्र होना सं. २००४ (1947-48 ई.), भारत-चीन युद्ध (सं. २०१९), भारत-पाक युद्ध (सं. २०२२), बांग्लादेश का उदय होना-सं. २०२७, कांग्रेस (ई.) की पराजय (संवत् २०३३) तथा पुनः सत्ता में आना-सं. २०३६, ईरान-ईराक युद्ध-वि. सं. २०३९, पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु-सं. २०४१, पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४७), मोर्चा सरकार का पतन तथा भाजपा का सशक्त पार्टी के रूप में सत्तारूढ़ होना-वि. सं. २०५५, भाजपा सरकार का आकस्मिक गिरना तथा कारगिल (ज. काश्मीर) में घुसपैठ एवं युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी-वि. संवत् २०५६, सं. २०५७ के पंचांग में एवं च, भाजपा का केन्द्र में गिरकर पुनः सत्ता ग्रहण की भविष्यवाणी स्पष्टतः की गई थी।]

*पुनः वि. संवत् २०५८ के पंचांग में अमरीका 9/11 सम्बन्धित त्रासदी के बारे में, वि. संवत् २०५९ में पंजाब में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. सं. २०६० में 'अमरीका-ईराक' युद्ध तथा ईराक में सत्ता-परिवर्तन, वि. सं. २०६१ में लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की विजय तथा भाजपा (वाजपेयी) सरकार का पतन, वि. संवत् २०६३ में पंजाब, बिहार में नेतृत्व-परिवर्तन के योग (बादल तथा नितीश कुमार का सत्तासीन होना) तथा मुम्बई में 11 जुलाई, 2006 ई. को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६४ (2007-08 ई.) में उ.प्र., उत्तराखण्ड में नेतृत्व परिवर्तन के योग, वि. संवत् २०६५ में गुजरात में भाजपा एवं मोदी सरकार के विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६६ में अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति एवं जम्मू-काश्मीर में नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का विजयी होना वि. संवत् २०६७ में कांग्रेस का पुनः जीत प्राप्त करना, वि. संवत् २०६८ में विश्व में आर्थिक मन्दी, वि. संवत् २०६९ में पंजाब में अकाली-भाजपा गठबन्धन का पुनर्विजयी होना, **वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में ही 'श्रीनरेन्द्र मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने सम्बन्धी भविष्यवाणी तथा विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणी एवं उत्तराखण्ड में महावृष्टि सम्बन्धी हानि की भविष्यवाणी**, वि. संवत् २०७१ (2014-15 ई.) तथा वि. संवत् २०७२ (2015-16 ई.) में अप्रैल, 2015 ई. में **नेपाल में भूकम्प, जम्मू-काश्मीर में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होना तथा चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी' भविष्यवाणी**, सं. २०७३ (2016-17 ई.) में 'एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा', आदि अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख हम गतवर्षीय पंचांगों में कर आएं हैं। परन्तु **सन् 2016-17 ई. की सबसे बड़ी भविष्यवाणी थी 'नोटबन्दी'**। वि. संवत् २०७४ (2017-18 ई.) में पृष्ठ 91, कॉलम-I में पढ़ें-'......व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे।' जैसा कि लोग/व्यापारी जी.एस.टी. व नोटबन्दी के दौरान परेशान रहे। वि. संवत् २०७५ में गुजरात, हि.प्र., त्रिपुरा, कर्नाटका में भाजपा की विजयी/मज़बूती की भविष्यवाणी, पूर्व-प्रधानमन्त्री श्री अटल-बिहारी वाजपेयी जी के निधन सम्बन्धी भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं।*

कोरोना महामारी सम्बन्धी स्पष्ट संकेत

वि. संवत् २०७६ में पृष्ठ 74 पर कोरोना महामारी सम्बन्धी स्पष्ट संकेत दिए गए थे। लोगों के पलायन सम्बन्धी भविष्यवाणी भी स्पष्टतः दी गई थी। (देखें पृष्ठ 74)। वि. संवत् २०७७ में पृष्ठ 85 पर कोरोना महामारी के कारण सरकार द्वारा कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाने सम्बन्धी भविष्यवाणी (सरकार द्वारा क्रियान्वित लॉकडाऊन नियमों से साधारण प्रजा में काफी भय, दुविधा का माहौल रहा।) इसी वर्ष पृष्ठ 92 पर म.प्र. सरकार परिवर्तन सम्बन्धी भविष्यवाणी। वि. संवत् २०७८ (2021-22 ई.) में पृष्ठ 92 पर अमेरिका में ट्रम्प सरकार के गिरने सम्बन्धी भविष्यवाणी, पृष्ठ 87 पर कोरोना महामारी की दूसरी लहर में (अप्रैल-मई 2021 ई.) ऑक्सीजन सम्बन्धी फैली अव्यवस्था सम्बन्धी संकेत, पंजाब सरकार को गहरा आघात सम्बन्धी संकेत (पृष्ठ 98)। इसीलिए ज्योतिषशास्त्र को संकेतशास्त्र भी कहा जाता है।

गतवर्ष वि. संवत् २०७९ पंचांग की भविष्यवाणियां जो सत्य सिद्ध हुईं

गतवर्ष वि. संवत् २०७९ के पंचांगदिवाकर में अभी तक (20 जुलाई, 2022 ई. तक) अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश सत्य सिद्ध हुईं हैं। यथा–

(1) पृष्ठ 89-मुख्य कॉलम की पंचम पंक्ति में स्पष्टतः पढ़ें-"यहाँ तक की यूरोप, रूस, *अमरीका आदि देश भी इस आग से त्रस्त हो जाएंगे। युद्धमय वातावरण के मध्य बड़े* पैमाने पर साधारण जनता पलायन *(विस्थापन) करेगी।"*

-रूस-यूक्रेन युद्ध की विभीषिका पाठकों के सामने है, जिसमें लाखों लोगों को युद्ध के कारण अन्य यूरोपीय देशों में विस्थापित होना पड़ा है।

(2) पृष्ठ 89 पर ही मुख्य कॉलम की अन्तिम दो पंक्तियां पढ़ें-"आगामी वर्ष (2022 ई.) कुछ राज्यों (पंजाब, उ.प्र., उत्तराखण्ड, गोवा तथा मणिपुर) में होने वाले **विधानसभा चुनावों में भाजपा पुनः सत्ता प्राप्त करने में सफल होती प्रतीत होगी।** पंजाब में त्रिकोणीय संघर्ष रहेगा।"

-यहाँ की गई भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

(3) पृष्ठ 94 कॉलम-I में स्पष्टतः पढ़ें-'यूरोपीय देशों में भीषण गर्मी आदि प्राकृतिक *आपदाओं के कारण जन-धन हानि के संकेत हैं।'-जुलाई, 2022 ई. में ब्रिटेन,* इटली, *स्पेन, फ्रांस आदि देशों में भीषण गर्मी से अग्निकाण्ड जैसी असंख्य घटनाएं हुईं।*

*(4) पृष्ठ 94 पर, कॉलम-II में पढ़ें-27 जून से '**मंगल-राहु**' योग पर शनि की* विशेष *दृष्टि विश्व में विशेष उथल-पुथल करेगी। कहीं विद्रोह एवं युद्ध का भय, किसी वरिष्ठ व्यक्ति की हत्या या निधन की भी सम्भावना है।'-जैसा कि श्रीलंका में विद्रोह हुआ तथा 8 जुला. को जापान के पूर्व प्रधानमंत्री तथा विश्व के वरिष्ठ नेता '**शिजो एबी**'* की हत्या हो गई।

(5) पृष्ठ 96, कॉलम-I में स्पष्टत: पढ़ें-'कश्मीर, उ.प्र. आदि कुछ राज्यों में अलगाववाद, साम्प्रदायिक उपद्रव तथा सामाजिक असंतुलन का नया विद्रूप देखने को मिलेगा।-जैसा कि जून, 2022 ई. में नूपुर शर्मा जी के वक्तव्य के बांद सामाजिक विद्वेश फैला।

एवं च, इसी पृष्ठ पर आगे पढ़ें-'... होने से दैनिक उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि होगी। पैट्रोल, डीज़ल, रसोई गैस, बिजली-पानी दूध, दवाईंयां, लोहा, सोना-चाँदी, भूमि-मकान के मूल्यों में ज़बरदस्त तेज़ी का रुख रहेगा।

(6) पृष्ठ 96 पर ही देखें-'भारत में राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। ......एवं च, 'भारत में विकास-दर को ठेस पहुँचेगी।'

(7) पृष्ठ 97 पर पढ़ें-सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप का वातावरण संसदीय परम्पराओं को तहस-नहस कर देगा। विदेशी असमाजिक तत्त्वों/शत्रुओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से साम्प्रदायिक विद्वेष भड़काने का कार्य किया जाएगा।' -मई से जुलाई, 2022 ई. तक का घटनाक्रम आपके सामने है। जब नुपुर शर्मा जी के विरोध में एक वर्ग द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से सामाजिक विद्वेष को भड़काया गया।

(8) पृष्ठ 100, कॉलम-II में उ.प्र. शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें-'आगामी विधानसभा चुनावों में योगी जी के ही पुन: मुख्यमन्त्री बनने की प्रबल सम्भावना है। भाजपा के वोट प्रतिशत में कुछ कमी भी आएगी, परन्तु अन्त में भाजपा ही सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी तथा पुन: सत्तारूढ़ होगी।' परिणाम आप सबके सामने हैं।-इत्यादि अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई हैं। इसी कारण परम ज्ञान-विज्ञान विशारद् भारतीय ऋषियों-मुनियों का यह मानना था कि आकाशीय पिण्डों का प्रभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर पड़ता है अर्थात् अन्तरिक्ष से आने वाले अन्तर्ग्रहीय दुष्प्रभाव हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

*उपरोक्त ये सभी घटनाएं '**पंचांगदिवाकर**' में दी गई भविष्यवाणियों की सार्थकता एवं सत्यता प्रामाणित कर रही है। वस्तुत: यदि पाठक गतवर्ष (वि. संवत् २०७९) में की गई भविष्यवाणियों एवं संकेतों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करेंगे तो उनमें आश्चर्यपूर्वक रूप से एक-एक पंक्ति में सांकेतिक भविष्यवाणियां दृष्टिगोचर होंगी।*

वि. संवत् 2080 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् २०८० में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दश पदाधिकारों में से (इस वर्ष भी गत संवत् की भान्ति) पाँच अधिकार उग्र (क्रूर) ग्रहों को तथा पाँच अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। '**राजा**' का महत्त्वपूर्ण पद द्विस्वभाव ग्रह परन्तु सौम्य ग्रह '**बुध**' को प्राप्त हुआ है। बुध को कूटनीतिज्ञ, चपल किन्तु नपुंसक ग्रह भी माना जाता है। '**मन्त्री**' जैसा महत्त्वपूर्ण पद स्त्री ग्रह '**शुक्र**' को प्राप्त हुआ है। वर्षा (मेघ), फलों तथा सेना (रक्षा) के तीन महत्त्वपूर्ण अधिकार सौम्य एवं बुद्धिमान ग्रह '**गुरु**' को प्राप्त हुए हैं। जबकि सस्य (कृषि), धातुओं तथा कोष (धन) के अधिकार क्रूर ग्रह '**सूर्य**' को प्राप्त हुए हैं।

ग्रहों के प्रस्तुत पद-विभाजन के प्रभावस्वरुप राजा और मन्त्री पद-दो मित्र ग्रहों को प्राप्त होने से देश में लेखक, अध्यापक, वकील, जज, बौद्धिक एवं तकनीकि कार्यों से सम्बन्धित लोग, वैद्यक, चिकित्सा, लेखा-जोखा (Accounts), विज्ञान-ज्योतिष, तकनीकि कार्य-उद्योग, व्यापारादि से सम्बन्धित लोग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। विश्व में अधिकांश राष्ट्राध्यक्ष पारस्परिक सम्बन्धों में दोगली कूटनीति का प्रयोग करेंगे। राजनीति, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में चालाकी, कपट एवं बौद्धिक कूटनीतियों का प्रयोग होने लगेगा। मन्त्री शुक्र के फलस्वरुप समाज में स्त्री-पुरुषों में बाह्य आकर्षण, सौन्दर्य, श्रृंगार एवं फैशन-परस्ती बढ़ेगी। सिनेमा, संगीत, अभिनय, नाच-गायन, मोवाईल का प्रयोग, मनोरंजन-कार्य, नृत्य, उत्सव, धन-लोलुपता, पुरुषों व स्त्रियों में प्रदर्शन का रूझान अधिक बढ़ेगा।

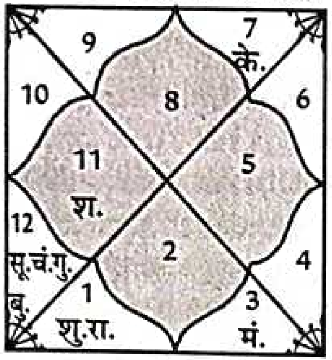
मेघेश (वर्षा), फलों तथा सेनापति गुरु होने से देश में आगे अच्छी वर्षा होने के संयोग बनेंगे। कृषि का उत्पादन अच्छा होगा। यद्यपि धन का प्रसार बहुत अधिक रहेगा। ऐश्वर्य एवं उपभोग्य वस्तुओं का संग्रह तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी। सरकार देश में नए-नए कानून व सुरक्षा की प्रणाली को बेहतर बनाने का प्रयास करेगी। परस्पर विरोधी देश भी अपने राष्ट्र की सुरक्षा सम्बन्धी समस्याएं सैन्य टकराव की अपेक्षा परस्पर बातचीत द्वारा सुलझाने का प्रयास करेंगे। सस्येश (कृषि का स्वामी) एवं नीरसेश (धातुओं) '**सूर्य**' होने से उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी, जिससे ग्रीष्मकालीन फसलों (गेहूँ, मक्की, दालों) के उत्पादन में कमी रहेगी। जेवहरात, मोती, हीरा, पुखराज आदि रत्नों के विशेष प्रचलन एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में सोने, चाँदी के भावों में तेजी के कारण इनकी मांग बढ़ेगी। फलस्वरुप कृष्ण-वर्ग, बढ़िया किस्म के वस्त्र-विक्रेता, जौहरी, सुवर्णकार, कृषि एवं अनाज-करियाना आदि उपभोग्य वस्तुओं के व्यापारी तथा पैट्रोल, कागज़, सोना-चाँदी, लोहा आदि धातुओं के व्यापारी (व्यवसायी) विशेष लाभान्वित हो सकेंगे।

परन्तु धान्येश शनि तथा रसों का स्वामी मंगल होने से देश में अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा में कमी होगी। जिससे गेहूँ, चने, ज्वार, बाजरा, धान्य, चावल, ईख, घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ तथा दूध, दही, पेयजल, रसदार फल एवं सब्ज़ियों की पैदावार में कमी होगी। लोगों में परस्पर प्रेम-व्यवहार की कमी रहेगी। सरकारी तन्त्र एवं सामान्य लोगों के मध्य भी आपसी तालमेल में कमी होगी। सामान्य जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी के कारण साधारण लोगों में तीव्र आक्रोश व असन्तोष व्याप्त रहेगा।

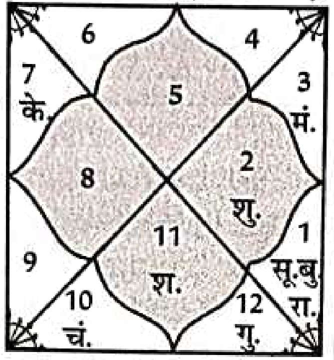
'**पिंगल**' नामक नए सम्वत्सर का फल भी शुभ नहीं माना गया है। उसके फलस्वरूप समाज तथा राजनीतिज्ञों में परस्पर टकराव, वैर-विरोध तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा वातावरण रहेगा। मूल्य-वृद्धि से साधारण लोग त्रस्त रहेंगे। विश्व में अनेक स्थलों से युद्धादि के समाचार मिलेंगे।

नववर्ष-प्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

नववर्ष प्रवेश कुण्डली
21 मार्च, सन् 2023 ई.
$22^{घं.}\ 53^{मिं.}$P:M (भा.स्टैं.टा.)



जगत् लग्न कुण्डली,
14 अप्रैल, सन् 2023 ई.
$14^{घं.}\cdot 58^{मिं.}$P:M (भा.स्टैं.टा.)



'पिंगल' नामक संवत्सर में विक्रमी संवत् 2080 का प्रवेश चैत्र अमावस्या की समाप्ति 21 मार्च, 2023 ई. की रात्रि 22घं.-53मिं. पर उ.भा. नक्षत्रकालीन स्थिर लग्न **'वृश्चिक'** में हुआ है। वर्ष लग्नेश मंगल अष्टम भाव (प्राकृतिक आपदाओं, गुप्त योजनाओं, राष्ट्रीय ऋण, युद्ध, आकस्मिक दुर्घटनाओं का भाव) में स्थित है। वर्षप्रवेश कुण्डली में अष्टम भाव का स्वामी बुध (जोकि वर्ष का राजा भी है) पंचम भाव (प्रशासनिक बुद्धि, विकास योजनाओं का भाव) में शत्रुराशिगत (नीचस्थ) होकर स्थित है। षष्ठ भाव में शुक्र (जोकि वर्ष का मन्त्री है) राहु युक्त है तथा इन पर शनि की विशेष नीच दृष्टि पड़ रही है। लग्न राशि (वृश्चिक राशि) भाव पर भी शनि की विशेष नीच दृष्टि है। यद्यपि गुरु की भी भाग्य भाव (विकास योजनाओं का भाव) तथा लग्न पर शुभ मित्र दृष्टियां हैं।

ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के अधिकतर देशों के मध्य न्यूकिलयर एवं अन्य संहारक हथियारों के संग्रह की प्रतिस्पर्धा एवं होड़ बढ़ेगी। शनि की लग्न तथा मेषस्थ शुक्र-राहु पर नीच व शत्रु दृष्टि रहने तथा 12वें (गुप्त शत्रु का भाव) केतु होने से विश्व की प्रमुख शक्तियों अमरीका, फ्रांस, जर्मनी, भारत आदि के सामने **'इस्लामिक कट्टरवाद'** एवं चीन रूपी दैत्य का बढ़ता प्रभाव एवं कुटिल चालों का मुख्य मुद्दा बन उद्वेलित करता रहेगा। आध्यात्मिक ग्रह गुरु स्वराशिगत है तथा लग्न पर उसकी दृष्टि है। फलतः विश्व राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विश्व-शान्ति के लिए किए गए भारत के प्रयासों की सार्वभौमिक श्लाघा होगी। वर्षकुण्डली में राजा बुध नीचस्थ तथा अस्तगत है। फलस्वरुप विश्व तथा भारत में कुछ समय के लिए अचानक आर्थिक मन्दी का वातावरण तैयार हो जाएगा। परन्तु भारत शीघ्र ही इस भंवर से बाहर आ जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष उथल-पुथल होगी। विश्वव्यापी आर्थिक क्षेत्रों में आर्थिक मन्दी के कारण पाकिस्तान, बांग्लादेश, ब्राज़ील, श्रीलंका आदि अनेक विकासशील देश आर्थिक मन्दी की लपेट में आ जाएंगे तथा आर्थिक दिवालियापन का शिकार हो जाएंगे।

वर्षप्रवेश कुण्डली में वृश्चिक लग्न उदित होने से भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में नौ मास तक अर्थात् वर्षान्त तक दुर्भिक्ष व अकालजन्य परिस्थितियां रहें। उत्तर में भी अनाज का उत्पादन आधा रह जाएगा और धातुओं (सोना, चाँदी) की समर्घता हो अर्थात् कुछ तेज़ होंगे। दक्षिण के राज्यों में छत्रभंग हो।

जगत् (वर्षेश) लग्न कुण्डली में सिंह लग्न उदित हुआ है। लग्नेश सूर्य भाग्य (नवम) भाव में (विकास योजनाओं, धार्मिक संस्थानों-मन्दिर आदि का भाव) बुध एवं राहु युक्त है तथा इन पर शनि की विशेष शत्रु नीच दृष्टि भी पड़ रही है। इसके प्रभावस्वरुप विभिन्न देशों की सरकारें धर्मांधता के कुएँ में गिर पड़ेंगी। भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा अन्य विकासशील देशों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण, अस्थिर एवं अनिश्चित होंगी। विश्व में एक प्रकार से जंगलराज का प्रभाव बढ़ेगा। विकासशील देशों में भ्रष्टाचार, महँगाई आदि आर्थिक संकट बढ़ेंगे। कुछ मुस्लिम एवं अफ्रीकी देशों जैसे-सीरिया, लीबिया, सोमालिया, सूडान, मिस्र आदि देशों में क्रांतिकारी निरकुंश तानाशाही नेताओं के विरुद्ध विद्रोह कर देंगे। कुछ एशियाई देशों में भी हिंसक हत्याएं, सत्ता-परिवर्तन, यान-दुर्घटनाएं होने के भी योग हैं। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान आदि एशिया के कुछ देशों सहित अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देश जैसे-ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, इटली, पौलैण्ड, फिनलैण्ड आदि देश ज़बरदस्त महँगाई एवं गम्भीर आर्थिक संकट की गिरफ्त में आ जाएंगे।

विश्व का राजनीतिक-मंच

चीन, रूस, उ. कोरिया, ईरान आदि देशों की बढ़ती सामरिक शक्ति एवं घातक परमाणु व न्यूकिलयर हथियारों के संग्रह तथा सीमाओं के विस्तारवाद की प्रवृत्ति के कारण विश्व-राजनीति फिर से दो गुटों में बंट जाएगी। संहारक न्यूकिलयर हथियारों के निर्माण की दौड़ में विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देश शामिल होंगे। कुछ देशों के मध्य गुप्त सामरिक समझौते विश्व शान्ति हेतु चिन्ता का विषय होंगे।

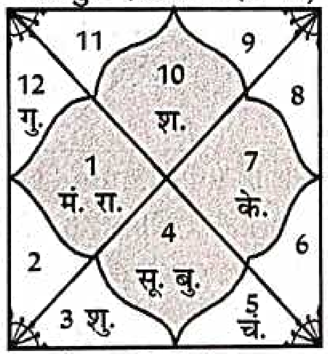
यूरोपीय देशों की कुण्डली
1 जन., 2023 ई.
मध्यरात्रि $00^{घं.}\ 00^{मिं.}$



वर्षारम्भ 2023 ई. में यूरोपीय देशों की कुण्डली में अष्टम भाव में (युद्ध, मृत्युदर, प्राकृतिक आपदाओं, ऋण का भाव) **'चंद्र-राहु'** योग, लग्न भाव पर गुरु की शत्रु दृष्टि तथा **'शुक्र-शनि'** योग के कारण अमेरिका, स्पेन, फ्रांस, इटली, ब्रिटेन आदि यूरोपीय देशों में मुद्रा अवमूल्यन तथा वैश्विक माँग में सुस्ती के कारण आर्थिक मन्दी का वातावरण बन जाएगा। यूरोप की अर्थव्यवस्था मन्दी के भंवर में फंस जाएगी, जिसका असर यूरोप ही नहीं, पूरी दुनिया को झेलना पड़ेगा। रूस-यूक्रेन युद्ध काफ़ी देर लम्बा खींचने के बाद डोनवास, ओडेसा आदि को जोड़कर एक नया कठपुतली देश अस्तित्व में आएगा। यह नया

देश बचे खुचे यूक्रेन और रूस के बीच बफर का काम करेगा। तमाम यूरोपीय देशों में ब्याज दरों में बढ़ौत्तरी सम्भव है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उथल-पुथल भी कायम रहेगी। विश्व के अधिकांश देश अपने-अपने देशों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से घातक परमाणु हथियारों के संग्रह करने की दौड़ में शामिल रहेंगे। विश्व की दोनों बड़ी शक्तियाँ रूस एवं चीन भी यूक्रेन तथा ताईवान में अमेरिका व कुछ अन्य यूरोपीय देशों का हस्तक्षेप सहन नहीं करेंगे। विश्व-राजनीतिक पटल पर दो गुटों में बंटता प्रतीत होगा तथा **युद्ध** अथवा **युद्ध-भय एवं धमकियों भरा यह खेल ज़रा लम्बा चलेगा।** चीन के खतरनाक मंसूबे दुनिया के सामने आ जाएंगे जो पूरी दुनिया में विध्वंस मचा देंगे। चीन-ताईवान युद्ध भी अपने सीमित दायरे में लम्बी अवधि तक चलेगा। पोलैण्ड, रोमानिया, फ्रांस आदि देशों में शरणार्थी तथा पलायन सम्बन्धी समस्या विकराल रूप धारण कर लेगी।

मुस्लिम देशों की कुण्डली
(30 जुला., 2022 ई. से 19 जुला., 2023 ई. तक)



हिजरी सन् 1444 का बादशाह **'सूरज'** है। मुस्लिम देशों की नववर्ष प्रवेश कुण्डली में मकर लग्न उदित है। लग्नेश शनि लग्न भाव (केन्द्रीय नेतृत्व) में सप्तमस्थ (वैदेशिक सम्बन्धों, विदेशी व्यापार का भाव) सूर्य के साथ समसप्तक शत्रु सम्बन्ध बना रहा है। चतुर्थ भाव (फसलों, कृषि उद्योग का भाव) में **'मंगल-राहु'** योग अशुभ संकेत ही दे रहा है। गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कच्चे तेल में तेज़ी के झटके लगते रहेंगे। विश्व में इस्लामीउग्रवाद एवं आई.एस. से सम्बन्ध उग्र विचारधारा के पोषक देश व संगठन वर्तमान वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देते रहेंगे। वस्तुतः आतंकवाद और उग्रवाद की चुनौती एक नया आयाम ग्रहण कर लेगी। जिसके चलते एक सर्वांगीण ग्लोबल रणनीति की आवश्यकता होगी। शुक्र की व्यय भाव (गुप्त शत्रु, युद्ध का भाव) पर शत्रु दृष्टि रहने से भी राष्ट्रों का हथियारों एवं युद्ध सम्बन्धी साजो-सामान पर खर्च बढ़ाएगी। भारत की प्रभावराशि मकर में लग्न उदित होने तथा राशिस्वामी शनि लग्न में स्वराशिगत होने से अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय नई और बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका देखेगा।

सन् 2023 ई. में ग्रहगोचर स्थिति और विश्व के हालात

वर्षप्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली में ग्रहस्थिति के अनुसार विपरीत स्थितियों के कारण आगामी वर्ष विश्व-राजनीति एवं विश्व-अर्थव्यवस्था के मंच विशेष घटनाप्रद रहेंगे। चीन-रूस की विस्तारीकरण की नीतियों एवं आक्रमण के विरुद्ध अमरीका यूरोपीय एवं खाड़ी देशों के साथ गुट बनाएगा तथा विश्व लगभग दो गुटों में बंट जाएगा। विश्व-युद्ध समतुल्य शीत-युद्ध शुरु होगा, जिसकी अवधि लगभग 2-3 वर्ष रहेगी। इंग्लैण्ड आदि यूरोपीय देशों को मुद्रा अवमूल्यन के कारण आर्थिक पेचीदगियों का सामना करना पड़ेगा।

माघ मास (7 जन., से 5 फर. तक) में **पाँच शनिवार** तथा **पाँच रविवार** होने, 17 जन. से शनि कुम्भ राशि में आकर मेषस्थ राहु पर विशेष नीच दृष्टि रखेगा। इस समयावधि में विश्व में अनेक स्थलों में रोगोत्पात, उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में अत्याधिक तेज़ी तथा लोगों में क्लिष्ट-पेचीदा रोगों की उत्पत्ति होने से कष्टों व दुःखों में वृद्धि होगी। विश्व राजनीतिक समीकरणों में परिवर्तन, छत्रभंग, टकराव व युद्धादि का वातावरण बने।

शनिवारा यदा पंचजायते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी।।

चान्द्र फाल्गुन मास (6 फर. से 7 मार्च तक) में **पाँच सोमवार** व **पाँच मंगलवार** होने, 16 फर. को सूर्य-शनि की अंशात्मक युति, सूर्य-शनि तथा गुरु-शुक्र परस्पर विरुद्ध ग्रहों का योग होने से कहीं किसी देश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), पदच्युति या किसी प्रधान नेता का निधन हो। कहीं उपद्रव, जनांदोलन व हिंसक घटनाएं घटित होंगी। **'मङ्गले म्रियते राजा'**

खप्पर योग—**चान्द्र माघ** मास से **फाल्गुन मास** (7 जन. से 7 मार्च, 2023 ई. के मध्य) के मध्यान्तर में क्रमशः 5 शनिवार, 5 रविवार तथा 5 मंगलवार पड़ने से अनिष्टकारी **'खप्पर योग'** बन रहा है, जिसका फल शास्त्रों में अशुभ कहा है।

शनि भानु कुजे वारे बहवः संक्रमा-मासा यदाः। तदामहर्घं अनिलं कुर्वते रोग विग्रहम्।।

अर्थात् चान्द्र मासों या संक्रान्तियों में क्रमशः शनि, रवि एवं मंगलवारों का आगमन हो, तो इसके प्रभावस्वरूप पाक, चीन आदि देश भारत के प्रति कुटिल चालों का प्रयोग करते रहेंगे, विश्व के अधिकांश देशों में उपभोग्य वस्तुओं जैसे-खाद्यान्न, पैट्रोल, सोना, चाँदी आदि धातुओं में ज़बरदस्त तेज़ी होगी। किन्हीं मुस्लिम देशों में हिंसक, आतंकी एवं महाशक्तियों के हवाई हमलों से भी विनाशकारी घटनाएँ घटित होंगी।

चान्द्र चैत्र मास (8 मार्च से 6 अप्रैल के मध्य) में पाँच बुधवार तथा **पाँच बृहस्पतिवार** होने, 22 मार्च को **'शुक्र-राहु'** मध्ये अंशात्मक युति तथा इन पर शनि की नीच दृष्टि के प्रभावस्वरूप मुस्लिम राष्ट्रों विशेषकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सीरिया, यमन आदि के लिए अनिष्टकारी होगा। पश्चिम एशिया के देशों में कहीं राजविग्रह, हिंसा, हवाई आक्रमण, छदम युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) चलेगा।

चान्द्र वैशाख मास (7 अप्रैल से 5 मई के मध्य) में **पाँच शुक्रवार** आने से विश्व राजनीतिक मंच पर स्त्रियों का प्रभाव एवं प्रभुत्व बढ़ेगा। अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन आदि देशों में महिला प्रतिनिधित्व सम्मुख एवं प्रबल रूप से सामने आएगा। विश्व-राजनीति मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा संचालित होगी। किसी प्रमुख यूरोपीय देश तथा पूर्वी एशियाई देश में युद्ध जन्य माहौल बनेगा तथा पूर्वी एशियाई देश में युद्ध जन्य माहौल बनेगा तथा अमरीका-रूस एवं चीन-अमरीका का शीत एवं गुप्त मनोवैज्ञानिक युद्ध नई दिशा लेगा। महाशक्तियों के मध्य विस्तारवादी हितों के लिए परस्पर टकराव का माहौल रहेगा।

चान्द्र ज्येष्ठ मास (6 मई से 4 जून) में **पाँच शनिवार** तथा **पाँच रविवार** होने, मेषस्थ **'गुरु-राहु'** योग तथा उन पर शनि की नीच दृष्टि, 15 मई तक **चतुर्ग्रही योग** होने

से इस अवधि में विश्व का राजनीतिक पटल असमंजसपूर्ण एवं अशान्त बन जाएगा। विश्व में कहीं भूकम्प, दुर्भिक्ष, यान-दुर्घटना, उपद्रव, कहीं छत्रभंग, अग्निकाण्ड आदि प्रकोपों से शोक व्याप्त रहे एवं युद्धभय होगा।

आषाढ़ मास (5 जून से 3 जुलाई) **में पाँच सोमवार होना,** मेष राशि में **'गुरु-राहु'** योग तथा इन पर शनि की नीच दृष्टि एवं **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक योग रहने तथा ता. 17 जून से शनि वक्री होने से विश्व के अनेक देशों में राजनीतिक संकट, उपद्रव, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अग्निकाण्ड एवं युद्धादि का भय होगा।

प्रथम श्रावण मास (4 जुला. से 1 अग.) **में पांच मंगलवार होना,** वक्री शनि की **'गुरु-राहु'** पर नीच दृष्टि, मंगल-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से विश्व में कहीं युद्ध-भय, राजनीतिक उलट-फेर, उपद्रव तथा किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु के संकेत हैं। अफ़गानिस्तान, ईराक, कतर, सीरिया पाकिस्तान, तुर्की आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में आतंकवाद की दावाग्नि उग्र रूप से भड़कने लगेगी। पूर्वी एशिया में चीन की विस्तारवादी नीतियों के कारण युद्धजन्य भयावहपूर्ण माहौल रहेगा।

द्वितीय श्रावण मास (2 अग. से 31 अग.) में भी पाँच बुध एवं **पाँच बृहस्पतिवार होने,** शुक्र-शनि वक्री रहने से विश्व-राजनीति में पेचीदा परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। विश्व शान्ति सम्मेलनों/बैठकों में यद्यपि बड़े-बड़े निर्णय लिए जाएंगे, परन्तु उनका क्रियान्वयन संदिग्ध रहेगा। अमेरिका तथा यूरोपीय, सम्पन्न देश U.N.O. द्वारा चीन, उ. कोरिया, रूस आदि देशों के विरुद्ध प्रतिबन्ध आदि लगाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे।

भाद्रपद मास (1 से 29 सितम्बर) में पांच शुक्रवार आने, सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक योग रूस, यूक्रेन, अमेरिका-चीन-ताईवान आदि देशों के मध्य बेहद तनावपूर्ण सम्बन्ध, मानवीय कत्लेआम, विश्व के लगभग सभी प्रमुख देशों के राज्याध्यक्ष अपने देशों के हितों के लिए विशेष रूप से कार्य करेंगे तथा कई अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों को तिलाञ्जली देकर युद्धोन्मुखी नीतियों पर चलेंगे।

आश्विन मास (30 सितं. से 28 अक्तू.) में **पाँच शनिवार, 'गुरु-राहु'** पर शनि की नीच दृष्टि, **शनिवारी अमावस** (14 अक्तू.) आने से विरोधी देशों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी, चीन, रूस आदि कुछ देशों की विस्तारवादी नीतियों के कारण विश्व राजनीतिक परिस्थितियां विशेष रूप से उद्वेलित रहेंगी। मुस्लिम बाहुल्य दक्षिण अफ्रीकी देशों तथा पश्चिमी एशियाई देशों-कतर, सूडान, ईराक, तुर्की में भूखमरी के कारण असंख्य मौतें, उग्रवाद, विस्तारवादी आतंक की दावाग्नि से सम्पूर्ण विश्व त्राहि-त्राहि कर उठेगा। किसी विशेष राष्ट्र (रूस, चीन, उ. कोरिया, ईरान आदि) के राष्ट्राध्यक्ष की एक पागलपन तुल्य चेष्टा के विरुद्ध सम्पूर्ण विश्व एकजुट होता प्रतीत होगा।

कार्तिक मास (29 अक्तू. से 27 नवं.) में **पांच रविवार तथा पांच सोमवार** होने से मुस्लिम एवं विरोधी देशों (जैसे-अजरबेजान-अर्बेनिया) के मध्य युद्धमय वातावरण, तनाव, उपद्रव, विस्फोट आदि घटनाएं घटित होंगी। पश्चिमी एशियाई एवं मुस्लिम बाहुल्य अफ्रीकी देशों में कहीं दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग होने का भय होगा। कहीं शासन-परिवर्तन, किसी वरिष्ठ व्यक्ति की हत्या या निधन की भी सम्भावना है।

मार्गशीर्ष मास (28 नवं. से 26 दिसं.) में पाँच मंगलवार आने तथा आश्विन मास से मार्ग. मास तक (30 सितं. से 26 दिसं.) पुन: **'खप्पर योग'** बनने, 12 दिसं. को **भौमवती अमावस** आने से दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों-वियतनाम, जापान, इण्डोनेशिया, चीन में कहीं तूफानी बवंडर, भूकम्प, समुद्री तूफान, विस्फोट आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन, धन एवं सम्पदा की हानि होगी। अनेक विरोधी देशों, शासनतन्त्रों के खिलाफ विद्रोह एवं तख्तापल्ट की घटनाएं घटित होंगी। माहौल युद्ध जन्य बनेगा।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

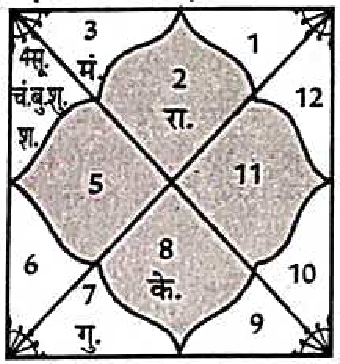
अमेरिका (America)–इसकी प्रभावराशि **मिथुन** है। जगत् लग्न कुं. में मिथुन राशि एकादश भाव में (वाणिज्य, निर्यात द्वारा लाभ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, राष्ट्रीय आय का भाव) मंगल द्वारा अधीष्ठित है तथा राशिस्वामी बुध भाग्य स्थान में मेष राशिस्थ सूर्य एवं राहु के साथ स्थित है। फलत: विश्व-राजनीतिक मंच पर अमेरिका केन्द्र-बिन्दु बना रहेगा। परन्तु स्वयं अमेरिका राहु के प्रभाव से उच्च मुद्रास्फीति (महँगाई) कभी न खत्म होने वाली बन्दूक हिंसा तथा गैस की बढ़ती कीमतों से जूझता रहेगा। फलत: उच्च मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए अमरीकी केन्द्रीय बैंक आक्रामक रूप से ब्याज दरों में वृद्धि करेगा। यद्यपि बंदूक संस्कृति के कारण हिंसा, बलात्कार और व्यभिचार की बहुतायत इस उन्नत राष्ट्र की छवि को मलिन करेंगे। रूस एवं चीन के साथ चल रहे शीत युद्ध के दृष्टिकोण एवं यूक्रेन संकट पर भारत के साथ कुछ असहमति के बावजूद **अमरीका अपने तथा भारत के व्यापक रणनीतिक परिदृश्य को अनदेखा नहीं कर पाएगा।** भारत और अमरीका परस्पर अपने-अपने हितों के लिए काम करते रहेंगे। कुछ विदेश नीति के कारण दोनों देशों के सम्बन्धों में अप्रत्याशित घनिष्ठता आएगी। उत्तरी कोरिया, चीन, रूस, ईरान आदि देशों के विरुद्ध नई युद्धनीति की ओर अग्रसर होगा तथा यूक्रेन, ताईवान, जापान आदि देशों को परोक्षत: आर्थिक, सैनिक एवं रणनीतिक सहयोग करता रहेगा। रूस के साथ प्रत्यक्ष टकराव से बचता रहेगा। मध्य-पश्चिमी एशिया तथा यूक्रेन आदि दक्षिणी यूरोप के अन्य देशों-अर्बेनिया, अजरबेजान, इज़राईल में व्याप्त खूनी आतंकी संघर्ष में परोक्ष रूप से सत्तारूढ़ सरकारों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए घातक हथियारों की आपूर्त्ति करता रहेगा।

पाकिस्तान (Pakistan)–जगत् लग्न कुण्डली में इसकी प्रभावराशि **कन्या** पर गुरु की शत्रु दृष्टि, राशिस्वामी बुध भाग्य स्थान में सूर्य एवं राहु युक्त है। ग्रहस्थिति अनुसार नवगठित गठबन्धन शरीफ़ सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने राजनीतिक समर्थकों को साथ रखने की होगी। सेना को भी साथ रखना होगा। पाकिस्तान में राजनीतिक मोर्चे पर

चाहे जो परिवर्तन हो जाए, लेकिन पाकिस्तान के असली नीति-नियंता एवं हुक्मरान तो फौजी जनरल ही रहेंगे। 30 अक्तू. के बाद कन्या राशि पर केतु का संचार भी होने से शरीफ सरकार को आंतरिक विरोध एवं आलोचनाओं के कारण अपने पद से इस्तीफा भी देना पड़ सकता है। अथवा उनकी सरकार बेहद कमज़ोर और दिखावटी सरकार रह जाएगी। पाकिस्तान में राजनीतिक दुविधा एवं अनिश्चितता से केवल सेना को ही फायदा होगा। राजनीतिक अस्थिरता से गृह-युद्ध के निकट होगा। महँगाई बढ़ने, विदेशी मुद्रा घटने से अर्थव्यवस्था चौपट होती प्रतीत होगी। पाकिस्तान जल्द ही अपने घरेलू आतंक का शिकार हो जाएगा और एक ऐसे राष्ट्र के रूप में सूचीबद्ध हो सकता है जिसने खुद अपनी ही कब्र खोदी हो। अधिक अराजकता, आतंक, आन्दोलन, बाहरी ऋण और मुद्रास्फीति के कारण बहुत जल्द ब्लूचिस्तान और पाक अधिकृत काश्मीर बहुत जल्द आज़ादी की रोशनी देखेंगे। शीघ्र ही पाकिस्तान का असली एजेण्डा काश्मीर में आक्रामकता नहीं, बल्कि पीओके को बचाना हो जाएगा। चीन के समर्थन से आतंकी एवं जेहादी संगठनों का पोषण एवं संवर्धन करता रहेगा तथा काश्मीर पर अपना बेसुरा राग तेज़ करके काश्मीर सम्बन्धी मोदी सरकार के फैसलों को पलटवाने की कोशिश करेगा।

वि. सम्वत् 2080 में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

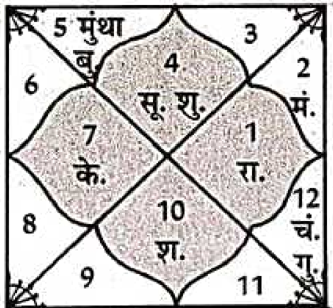
जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
14/15 अगस्त, 1947 ई.
($23^{घं.}$-$59^{मिं.}$) भा. स्टैं. टा.



कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
$10^{घं.}$-$19^{मिं.}$ (भा. स्टैं. टा.)

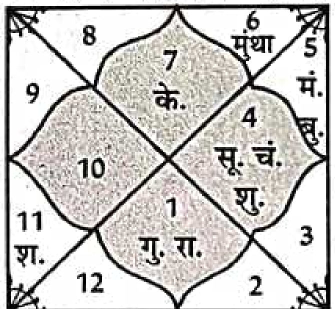


कुं. स्वतंत्र भारत (76वाँ वर्ष)
14/15 अगस्त, 2022 ई., रविवार
29:26 (5:26 A.M.), (दिल्ली)



लग्न स्प.-3-22°-02′-20″

कुं. स्वतंत्र भारत, 77वाँ वर्ष
15 अगस्त, 2023 ई., मंगलवार
11:35 A.M. (I.S.T.), (दिल्ली)



लग्न स्प.-6-12°-26′-15″

कुं. गणतन्त्र दिवस, 74वाँ वर्ष
26/27 जनवरी, 2023 ई., गुरुवार
27:28 A.M. (I.S.T.), (दिल्ली)



लग्न स्प.-7-17°-09′-05″

स्वतन्त्र भारत का 76वाँ वर्ष

(15 अगस्त, सन् 2022 ई. से 14 अगस्त, 2023 ई. तक)

स्वतन्त्र भारत के 76वें वर्ष की कुण्डली (15 अगस्त, 2022 ई.) में कर्क लग्न उदित हुआ है तथा कुण्डली में सूर्य-शुक्र का शनि के साथ शत्रु समसप्तक योग सम्बन्ध, द्वितीय भावस्थ मुंथा पर मंगल की गुप्त शत्रु दृष्टि भी है। द्वितीय भाव राष्ट्र की आर्थिक स्थिति, मुद्रास्फीति, व्यापार का भाव (कारक) है। फलस्वरूप ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष आर्थिक मोर्चे पर अनिश्चितता के आसार रहेंगे। वैश्विक घटनाक्रम अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने में अहम कारक बनेंगे। **भारत आयातित महँगाई का शिकार होता रहेगा। मोदी सरकार का विकास के प्रति प्रतिबद्धता का भाव बढ़ती महँगाई, मुद्रा अवमूल्यन, नवीन टैक्स दरों तथा धार्मिक कट्टरता की धुन्ध में विलुप्त होता जाएगा।** परस्पर शत्रु ग्रहों का समसप्तक योग के कारण खण्डित एवं बिखरा हुआ विपक्ष **वैचारिक जड़ता का शिकार रहेगा।** विपक्षी दल निरर्थक, निराधार और देश का समय एवं ऊर्जा बर्बाद करने वाले मुद्दों की ताक में रहेंगे। **केन्द्रीय सरकार के निर्णयों से असहमति तथा तद्जन्य विरोध की अमर्यादित घटनाएं होंगी। विरोध की ओट में राष्ट्रघाटी आराजकता के रूप में देश की सम्पत्ति को शत्रु देश की सम्पत्ति की तरह जलाकर नष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।** सेक्युलरिज़्म एक भयंकर विकृति एवं कट्टरता का रूप ले लेगा। सेक्युलर कट्टरपंथी तत्त्व विरोध की आड़ में कभी किसान, मज़दूर, युवा संगठनों को तो कभी मुस्लिम समुदाय को भड़काकर हिंसा फैलाने की फिराक में रहेंगे। लगभग सभी विपक्षी दल अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए युवाओं को भड़काने में संलिप्त रहेंगे।

वर्ष लग्न भाव पर गुरु की शुभ उच्च दृष्टि रहने से अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय नई और बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका देखेगा। नयी आकार लेती वैश्विक परिस्थितियों में भारत निवेश के एक आकर्षक ठिकाने के रूप में उभरेगा तथा अपनी अहम जगह बनाएगा। **भारत की यह हैसियत उसकी अन्तर्राष्ट्रीय साख बढ़ाने एवं राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगी।** ता. 22 अप्रैल से 15 मई के मध्य दशम भाव में

(प्रशासनिक अधिकारी, विद्रोह, व्यापार, आयात-निर्यात का भाव) मेष राशि में चतुर्ग्रही योग पर शनि की नीच दृष्टि रहने से धार्मिक कट्टरता का साया घना होता जाएगा। **देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह-रहकर उठ रही साम्प्रदायिक टकराव की चिंगारी विचलित करती रहेगी। देश में मज़हबी कट्टरवाद और जिहादी सोच के विरुद्ध आक्रोश रहेगा।** सत्तारूढ़ भाजपा सरकार तथा विपक्ष की विचारधाराओं में ज़बरदस्त मतभेद रहेगा। खण्डित और निराश विपक्ष सरकार पर अनर्गल आरोप लगाएगा। विपक्ष के आरोप/विरोध आलोचनात्मक न होकर वरन आरोपात्मक होने से अधिक देर तक ठहर नहीं पाएगा।

गणतन्त्र दिवस का 74वाँ वर्ष

74वें गणतन्त्र दिवस की (27 जनवरी, 2023 ई.) कुण्डली में वृश्चिक लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश मंगल सप्तम भाव (वैदेशिक सम्बन्ध, विदेशी व्यापार का भाव) में स्थित होकर लग्न भाव को सप्तम स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। षष्ठ भावस्थ (ऋण, शत्रु सेना, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष शत्रु का भाव) मुंथा एवं राहु पर शनि की क्रूर नीच दृष्टि है। फलत: आगामी वर्ष में भी शुभाशुभ परिस्थितियां रहेंगी। आगामी वर्ष में भी ऐसे अनेक राजनीतिक समीकरण देखने को मिलेंगे जिनमें षड्यन्त्र, दोगलापन, पीठ पर छुरा घोंपने आदि के उदाहरण मिलेंगे। अनिश्चित वैश्विक परिदृश्य के कारण महँगाई अनियन्त्रित होती प्रतीत होगी। इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक राजनीति के जुमलों से समूचे परिवेश को इतना प्रदूषित कर दिया जाएगा कि उस पर नियन्त्रण पाना मुश्किल होगा। **'एकेश्वरवादी'** सिद्धान्त एवं विषाक्त चिन्तन शेष बचे खण्डित भारत को भी अपने नागपाश में जकड़ने लगेगा, जिसे वामपंथी, सैकुलर-उदारवादी कुनबे का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

परन्तु इस गणतन्त्र दिवस कुं. में लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि रहने से **आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस कालखण्ड में भारत का समरस, सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर इतिहास के एक नए युग की शुरुआत होगी।** 240 वर्षों के बाद काशी विश्वनाथ धाम कोरीडोर, चारधाम यात्रा, रामायण सर्किट, श्रीकृष्ण सर्किट और बुद्ध सर्किट जैसी योजनाएं भारत की आस्था के लिए सुखद अनुभूति होगी। दुनिया के लोग बड़ी संख्या में भारत की विरासत का दर्शन करने आएंगे क्योंकि भारत के अध्यात्म के पास विश्व के लिए सुख, शान्ति और कल्याण का मार्ग है। समान नागरिक संहिता तथा समान शिक्षा कानून की एकरूपता से देश में राष्ट्रवादी भावना को बल मिलेगा। लग्न पर शनि की शत्रु दृष्टि, 27 मई, 2023 ई. को **'गुरु-राहु'** की अंशात्मक युति होने से विपक्षी आन्दोलनों, विरोध, संसदीय गतिरोध तथा अन्य विविध अन्तर्विरोधों के कारण मोदी सरकार यथेष्ठ काम नहीं कर पाएगी। मुंथा राहु युक्त तथा शनि द्वारा दृष्ट है, परन्तु पंचम भाव में 'चन्द्र-गुरु' योग (पंचम भाव विकास योजनाओं का भाव है।) होने से **सरकार भारतीय राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था में आधारभूत बदलाव लाने का प्रयास करेगी तथा आर्थिक बुनियाद (कर-संग्रह) मज़बूत रहने से विभिन्न चुनौतियों से निपटने में सक्षम होगी।** विपक्ष के विपरीत अपनी विश्वसनीयता और भ्रष्टाचार मुक्त कारगुजारी का मोदी सरकार को लाभ मिलेगा। प्रौद्योगिकी व तकनीकी विकास से भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा। भारत की बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता और लगातार बढ़ रहे कद के कारण रुपये को अन्तर्राष्ट्रीय करेंसी के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी। **भारत एक अद्वितीय सैनिक शक्ति, मज़बूत अर्थव्यवस्था, अद्भुत इच्छाशक्ति एवं अतुल्य राष्ट्रवाद की ओर बढ़ते राष्ट्र का प्रतीक बनेगा।** परन्तु विपरीत गोचर ग्रहस्थिति के कारण कुछ राज्यों में बिगड़ती कानून-व्यवस्था, बेरोज़गारी, पक्ष-विपक्ष की अमर्यादित ब्यानबाज़ी, उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अतिशय वृद्धि इत्यादि ज्वलन्त समस्याओं के कारण सामान्य लोगों में विक्षोभ एवं असन्तोष व्याप्त रहेगा।

स्वतन्त्र भारत का 77वाँ वर्ष
(15 अगस्त, 2023 ई. से संवतान्त तक)

स्वतन्त्र भारत के 77वें वर्ष की कुण्डली में 15 अगस्त, 2023 ई. को तुला लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश शुक्र दशम भाव में शत्रु राशिगत सूर्य एवं चंद्र युक्त तथा अस्तगत है। लग्न भाव (केन्द्रीय नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल, जनता की प्रवृत्ति का भाव) में भी केतु की स्थिति यह संकेत कर रही है कि प्रधानमन्त्री एवं केन्द्रीय सरकार के समक्ष आगे का रास्ता बहुत ही कंटकाकीर्ण रहेगा। विपक्ष नकरात्मक राजनीति की राह पर रहेगा। आगामी समय केन्द्रीय सरकार के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला होगा। महँगाई एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष टैक्सों (करों) की भरमार का मुद्दा अभी भी आम आदमी को उद्वेलित और आन्दोलित करता रहेगा। सर्वसाधारण लोग एवं व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे। लग्न में केतु की स्थिति तथा गुरु की शत्रु दृष्टि एवं च, सप्तमस्थ **'गुरु-राहु'** पर शनि की नीच दृष्टि के कारण आरोप-प्रत्यारोपों के कारण भारतीय लोकतान्त्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा आघात लगेगा। पक्ष-विपक्ष के नेताओं के बीच पारस्परिक सम्मान और भाषाई शालीनता की अनुपस्थिति झकझोर देगी। वर्ष कुण्डली में **'मंगल-शनि'** के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से छोटे-छोटे उग्र एवं अराजक आन्दोलनों को भड़काकर वीभत्स रूप दिया जाएगा। ताजिकशास्त्र अनुसार लग्न पर शनि की विशेष प्रत्यक्ष उच्च मित्र दृष्टि रहने से केन्द्रीय सरकार द्वारा विकासोन्मुखी नीतिगत निर्णयों के क्रियान्वयन में तीव्रता लाई जाएगी। इस सम्बन्ध में जो दशा एवं दिशा पकड़ी गई है, उसके प्रभावकारी परिणाम अगले वर्ष से सामने आने लगेंगे, जिससे कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में आपेक्षित सफलता भी प्राप्त होगी। **जनसंख्या वृद्धि, गरीबी और मज़हबी कट्टरवाद के बढ़ते खतरे जैसे संकटों के मध्य भारत प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा।** सदियों पहले विदेशी हमलावरों द्वारा किए गए सांस्कृतिक हमलों से छुटकारा पाने के लिए नई कार्ययोजना बनाई जाएगी। अनेक अवरोधों एवं समस्याओं के बावजूद मोदी सरकार द्वारा विकास के नए प्रतिमान स्थापित होंगे।

सन् 2023 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ में ही **माघ मास में** (7 जनवरी, से 5 फरवरी, 2023 ई. तक) पाँच शनि तथा पाँच रविवार होने, 17 जन. से कुम्भस्थ शनि मेषस्थ राहु पर विशेष नीच दृष्टि रखेगा। फलतः आवश्यक वस्तुओं एवं खाद्य-वस्तुओं में विशेष तेजी बनने से लोगों को भयंकर विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। कहीं छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन, विदेशी असमाजिक तत्त्वों, सोशल मीडिया द्वारा साम्प्रदायिक विद्वेष भड़काने का कार्य किया जाएगा।

फाल्गुन मास (6 फरवरी से 7 मार्च, 2023 ई.) में पाँच सोमवार तथा पाँच मंगलवार आने, कुम्भराशिगत सूर्य-शनि योग तथा मीनराशिगत गुरु-शुक्र योग होने से प्रजा में असन्तोष एवं उपद्रव की घटनाएँ अधिक होंगी। उ.प्र., म.प्र., असम, उड़ीसा, प. बंगाल आदि प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटिक होंगी।

***खप्पर योग*—चान्द्र माघ से फाल्गुन मास** तक (7 जनवरी से 7 मार्च, 2023 ई. तक) क्रमशः पाँच शनिवार, पाँच रविवार तथा पाँच मंगलवारों का समावेश होने से खप्पर नामक अनिष्टकारी योग बन रहा है, जिसका फल शास्त्रकारों ने अशुभ माना है। इसके प्रभावस्वरूप देश में महँगाई बढ़े, रोगों का प्रकोप भी बढ़े, लोगों व प्रशासकों में विग्रह हो। जनांदोलनों, विवादों एवं साम्प्रदायिक उपद्रवों के कारण प्रजा में अशान्ति हो।

[अपि च, माघ मास में शनिवार को माघ संक्रान्ति होने तथा शनिवार की ही माघ अमावस घटित (14 एवं 21 जनवरी) होने से **'खप्पर योग'** बन रहा है।]

चैत्र मास (8 मार्च से 6 अप्रैल, 2023 ई.) में पांच बुध/बृहस्पतिवार होने, 12 मार्च से **शुक्र-राहु** योग तथा इन पर शनि की नीच दृष्टि रहने से यद्यपि अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी, परन्तु पांच बृहस्पतिवार होने से कहीं तूफान/आँधी प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन सम्पदा को क्षति पहुँचे। सत्तारूढ़ व विपक्षों दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। सरकारी कठोर नीतियों, बढ़ती महँगाई के विरुद्ध उपद्रव, जनांदोलन एवं तोड़-फोड़ की घटनाएं बढ़ेंगी।

वैशाख मास (7 अप्रैल से 5 मई तक) में पाँच शुक्रवार आने, 22 अप्रैल से 15 मई तक मेष राशिस्थ **चतुर्ग्रही योग** पर शनि की नीच दृष्टि रहने से देश में प्राकृतिक आपदाओं, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफ़ान आदि से भारी जन-धन हानि का भय है। कुछ प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव व टकराव के हालात पैदा होंगे। 'गुरु-राहु' योग के प्रभावस्वरुप सब प्रकार के अनाजों, दालों में विशेष तेजी बनेगी।

गुरु-राहु यदैकग भवेतां सहितो यदा। सर्वधान्य महर्घत्वं राजानो भयविह्वलाः।।

ज्येष्ठ मास (6 मई से 4 जून) में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार होने, मेषस्थ **'गुरु-राहु'** पर शनि की नीच दृष्टि, 15 मई तक चतुर्ग्रही योग रहने से देश में कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं आन्दोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे फ़साद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रुझान रहेगा। राजनीतिक एवं सामाजिक माहौल विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा।

आषाढ़ मास (5 जून से 3 जुला.) में **'गुरु-राहु'** पर शनि की नीच दृष्टि, मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग, ता. 17 जून से शनि वक्री होने से सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोण का वातावरण संसदीय परम्पराओं को तहस-नहस कर देगा। प. बंगाल, केरल, काश्मीर आदि कुछ राज्यों का वातावरण छद्म-सेक्युलरवाद के कारण पूरी तरह विषाक्त हो जाएगा। जेहादी और कट्टरवादी मानसिकता को प्रोत्साहन देकर बंगाल, केरल आदि कुछ राज्यों को भयावह स्थिति की ओर धकेल देने का प्रयास किया जाएगा।

प्रथम श्रावण मास (4 जुलाई से 1 अगस्त) में पाँच मंगलवार आने, वक्री शनि की **'गुरु-राहु'** पर नीच दृष्टि, मंगल-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से केन्द्रीय सरकार को विपक्षी विरोध तथा आन्दोलनों का सामना करना पड़ेगा। सरकारी निर्णयों की आधारहीन तथा खोखले तर्कों के साथ आलोचना की जाएगी। पड़ोसी देश सीमाओं पर तनावपूर्ण एवं पेचीदा परिस्थितियां उत्पन्न करेंगे। बाढ़ादि, प्रकोपों से जन-धन हानि तथा लोग पलायन के लिए विवश होंगे।

द्वितीय श्रावण मास (2 अगस्त से 31 अगस्त) में भी पाँच बृहस्पतिवार होने, शुक्र-शनि वक्री रहने से देश में भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी एवं बेलगम महँगाई के विरुद्ध सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन पर्याप्त नहीं रहेगा। सरकारी तन्त्र निरंकुश एवं मनमाना आचरण करेगा। सम्भ्रांत लोगों में धन का प्रसार अधिक बढ़ेगा। बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन सम्पदा को हानि तथा महँगाई में वृद्धि होगी।

भाद्रपद मास (1 से 29 सितम्बर) में पांच शुक्रवार आने, सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक योग, सम्बन्ध रहने से भारत के पाक, चीन आदि पड़ोसी देश के साथ सभी प्रकार के सम्बन्ध विशेष कटुपूर्ण हो जाएंगे तथा युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। महँगाई, बेरोज़गारी के मुद्दे पर सरकार के विरुद्ध विपक्ष प्रखर रूप से विरोध प्रदर्शन प्रारम्भ कर देगा।

आश्विन मास (30 सितम्बर से 28 अक्तू.) में पाँच शनिवार **'गुरु-राहु'** पर शनि की नीच दृष्टि, शनिवारी अमावस (14 अक्तू.) होने से आवश्यक वस्तुओं जैसे-दूध, ईंधन, सब्जियां, तेल आदि के भावों में अत्यधिक तेजी, सामान्य लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, लोगों में पारस्परिक सौहार्द की कमी, राजनीतिक गठबन्धनों में परिवर्तन व साम्प्रदायिक टकराव हो।

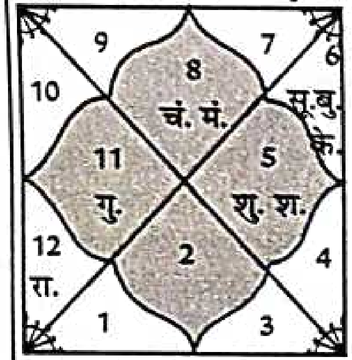
कार्तिक मास (29 अक्तू. से 27 नवम्बर) में पांच रविवार तथा पाँच सोमवार आने, बुध-गुरु का समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से विरोधी देशों में टकराव एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे। हिंसक घटनाएं एवं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) के योग हों। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी संकेत हैं।

मार्गशीर्ष मास (28 नवं. से 26 दिसं.) में पांच मंगलवार आने तथा आश्विन मास से मार्गशीर्ष मास तक (30 सितं. से 26 दिसं. तक) पुनः **'खप्पर योग'** बनने, 12 दिसं. को

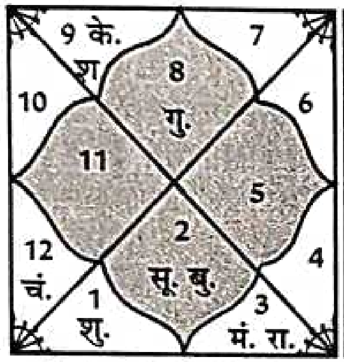
भौमवती अमावस होने से देश के कुछ भागों में उपद्रव, साम्प्रदायिक टकराव, राजनैतिक टकराव एवं हिंसक घटनाएं होने के संकेत हैं। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में अथवा किसी प्रान्त में सत्ता-परिवर्तन होने के योग हैं।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र-मोदी एवं भाजपा गठित एन.डी.ए. सरकार का द्वितीय कार्यकाल

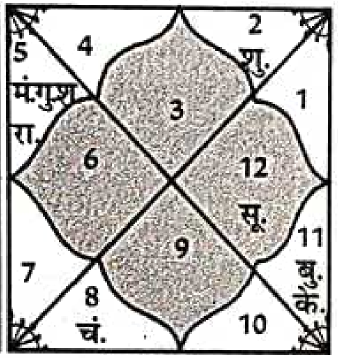
जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी
17 सितम्बर, 1950 ई., रविवार
11घं.-00मिं. A:M, महेसाना (गुज.)



नवगठित एन.डी.ए. सरकार
शपथकालीन कुंडली (II)
30 मई, 2019 ई., 19:03



स्थापना कुण्डली
भाजपा पार्टी
6-04-1980, 11:40 A:M



[प्रधानमन्त्री एवं लौहपुरुष श्रीनरेन्द्र मोदी जी की जन्मकुण्ड़ली का विस्तृत विश्लेषण एवं विवेचना हम गतवर्षीय पंचांगों (वि. संवत् 2071, 2072, 2073) में विस्तारपूर्वक एवं विशेष रूप से कर चुके हैं, वहाँ अवश्य पढ़ना चाहिए।] इस वर्ष हम ग्रहगोचर अनुसार ही प्रधानमन्त्री जी की जन्म कुं. पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

प्रधानमन्त्री मोदी जी की जन्म कुं. में वर्षारम्भ लगभग ता. 17 जनवरी, 2023 ई. से संवतान्त तक (8 अप्रैल, 2024 ई.) शनि चतुर्थ भाव में स्वराशिगत होकर लग्न भाव (केन्द्रीय नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल के हालात का भाव) को शत्रु दृष्टि से देखेगा, यद्यपि वर्षारम्भ से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक गुरु की शुभ दृष्टि भी लग्न भाव पर रहेगी। फलस्वरुप प्रचण्ड वैश्विक एवं घरेलु आर्थिक/राजनीतिक चुनौतियों तथा विपक्ष के अनर्गल आरोपों के बावजूद मोदी जी देश को प्रगतिपथ पर अग्रसर रखेंगे। प्रधानमन्त्री मोदी जी ने गतवर्षों में नए भारत की जो मज़बूत आधारशीला तैयार की है, उस पर **विश्व का नेतृत्व करने वाला एक सक्षम, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत आकार लेगा।** आगामी वर्ष राशिस्वामी शनि के साथ 10 मई से 30 जून तक शत्रु षडाष्टक सम्बन्ध, फिर 30 जून से 18 अगस्त तक समसप्तक सम्बन्ध होने से मोदी जी के समक्ष देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीर चुनौतियां तथा व्यवधान आएंगे। सभी समस्याओं का यथायोग्य निराकरण करते हुए स्वयं अपनी तथा भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाएंगे। मोदी जी द्वारा आरम्भ की गई विकास की राजनीति से देश का चहुँमुखी विकास होगा, तो दूसरी ओर लोकतंत्र की सबसे बड़ी दुश्मन वंशवाद की राजनीति क्रमशः कमज़ोर पड़ती जाएगी। **परिवारवाद पर प्रहार किया जाएगा।**

वर्तमान में श्री मोदी पर 3 मई, 2022 ई. से 21 मई, 2023 ई. तक मंगल मध्ये राहु की अन्तर्दशा रहेगी, जिससे प्रधानमन्त्री जी के समक्ष आगे विकास का पथ ही बहुत कंटकाकीर्ण रहेगा। विपक्ष द्वारा मोदी जी द्वारा प्रणीत प्रत्येक नए नियमों/कानूनों का आधारहीन विरोध एवं व्यवधान उत्पन्न किए जाएंगे। ता. 21 मई, 2023 ई. से 27 अप्रैल, 2024 ई. तक मंगल मध्ये गुरु की अन्तर्दशा प्रधानमन्त्री जी के लिए पुनः यशस्वीकारक रहेगी। अल्प समय में ही प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत की वैश्विक प्रोफाइल को बड़े पैमाने पर ऊपर उठा देंगे और विश्वगुरु के रूप में राष्ट्र के खोये हुए गौरव, प्रतिष्ठा और गरिमा बहाल होगी। आगामी वर्ष भी भारत न केवल घरेलू मोर्चे पर, बल्कि दुनिया में भी आगे बढ़ेगा। प्रधानमन्त्री मोदी आने वाले दशकों के लिए भारत के बेरोक-टोक उत्थान की नींव रख देंगे। जिससे भारत अपने घरेलू मोर्चे पर खुद समृद्ध होता रहेगा और विश्व में भारत का कद बढ़ता रहेगा। भारत को विश्वगुरु के रूप में स्वीकार किया जाएगा, एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र, जो नेतृत्व और प्रेरणा देगा। **प्रधानमन्त्री मोदी सचमुच और निःसंदेह भारत की नियति को बदल देंगे। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी की सक्रियता और सजगता से भारत को एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर देंगे।**

भारतीय जनता-पार्टी—भाजपा की कुण्डली में वर्षारम्भ में शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा, परन्तु ता. 17 जनवरी, 2023 ई. से शनि की ढैय्या का प्रभाव हट जाएगा। वर्तमान में स्वतन्त्र भारत की 76वें वर्ष की कुण्डली में भाजपा की जन्म राशि वृश्चिक पर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से इसी वर्ष सन् 2022 ई. में हि.प्र., गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनावों में यथेष्ठ सफलता प्राप्त कर पुनः सत्तारूढ़ होगी। वस्तुतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक न्याय एवं उन्नयन तथा सुशासन-इस तीन मुद्दों की त्रिवेणी से भाजपा क्षेत्रीय दलों से निपटने में सक्षम होगी। कठिन परिश्रम और मज़बूत कैडर के दम पर भाजपा सफलता की सीढ़ियां लगातार बढ़ती रहेगी। दक्षिण भारत की जनता का रुझान भाजपा के प्रति बढ़ जाएगा। **भाजपा तुष्टीकरण के कालखण्ड से आगे बढ़कर तृप्तिकरण** के मार्ग पर आगे बढ़ेगी।

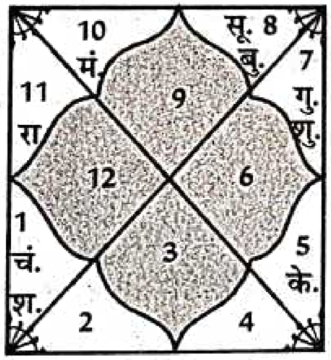
विपक्ष की वैचारिक जड़ता एवं बिखराव के कारण भाजपा को संगठन के भौगोलिक और सामाजिक विस्तार का मार्ग मिलेगा। वर्षारम्भ से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक गुरु की वृश्चिक राशि पर मित्र दृष्टि तथा वर्षारम्भ से 11 मार्च तक राशिस्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से भी आगामी वर्ष **कर्नाटक** में लगातार दूसरी बार तथा **म.प्र.** में लगातार चौथी बार विधानसभा चुनाव जीतना कुछ मुश्किल जरूर होगा, मगर नामुमकिन नहीं होगा। भाजपा को दो प्रमुख चीजें सुनिश्चित करनी होंगी। पहली है मोदी का जादू तथा दूसरी कल्याणकारी योजनाएं लागू करना। **भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रोत्थान का प्रतीक प्रभु**

श्रीराम का भव्य मन्दिर अयोध्या में आकार लेते ही भाजपा की लोकप्रियता में विशेष वृद्धि होगी। राजस्थान तथा **छत्तीसगढ़** में तो इस पार्टी को प्रचण्ड बहुमत प्राप्त होगा। दक्षिण में जैसे-जैसे कांग्रेस का आधार सिकुड़ेगा, भाजपा को अपनी पैठ बनाने का मार्ग मिलता जाएगा।

वि. संवत् 2080 में कांग्रेस पार्टी–एक विवेचना

कांग्रेस पार्टी की स्थापना कुण्डली में धनु लग्न उदित है। लग्नेश गुरु वर्षारम्भ से 21 अप्रैल, 2023 ई. तक चतुर्थ भाव में रहकर व्यय भाव (गुप्त शत्रु, व्यय, हानि, षड्यन्त्र का भाव) को मित्र दृष्टि से देख रहा है, परन्तु ता. 17 जन. से संवतान्त तक शनि भी व्यय भाव को शत्रु दृष्टि से देखेगा। परन्तु 22 अप्रैल, 2023 ई. को गुरु की मित्र दृष्टि भी हट जाएगी। फलतः कांग्रेस के उद्धार की उम्मीद धुंधली होती जाएगी। यह पार्टी अभी भी अपनी पूर्व के शानोशौकत भरे वर्षों की परछाईयों की गिरफ्त में फंसी हुई रहेगी। पार्टी को अभूतपूर्व स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। **फलतः कांग्रेस को असाधारण उपायों की ही सख्त ज़रुरत होगी।** परन्तु कांग्रेस अपनी गल्तियों से सीखने के मूड में नहीं होगी। सत्तारूढ़ पार्टी की लचर-पचर आलोचना लोगों के सिर के ऊपर से निकल जाएगी। कांग्रेस को एक नए नैरेटिव, स्पष्ट विचारधारा, सामरिक गठजोड़ों, नेतृत्व तथा स्रोतों पर ध्यान केन्द्रित करने की ज़रूरत होगी, इन सभी का उसके पास अभाव है। कांग्रेस पार्टी को आगे बढ़ने के लिए महज एक लीपापोती की नहीं बल्कि बड़ी सर्जरी की आवश्यकता होगी। **कांग्रेस के हाथ में जो होगा, वह भी रेत की तरह फिसलता जाएगा। अर्थात् राजस्थान तथा छत्तीसगढ़ राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पुनः सत्तारूढ़ नहीं हो पाएगी।**

कुण्डली कांग्रेस पार्टी
22-11-1969
9:57 A:M, बैंगलूरू



कुण्डली श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970 ई., 5:05AM



श्रीराहुल गाँधी जी की जन्म कुण्डली में **वृष लग्न** उदित हुआ है तथा **जन्मराशि वृश्चिक** है। वर्तमान में इन पर मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। (21-04-2022 ई. से 18-09-2022 ई. तक)। फलस्वरूप इस दशा तक श्री राहुल गाँधी को अनेक कानूनी परेशानियों तथा समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट भी रहे। 18-09-2022 से 18-11-2023 ई. तक मंगल मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा भी विशेष शुभफलदायी नहीं रहेगी क्योंकि राहुल जी की जन्म कुण्डली में शुक्र शत्रु राशिगत तृतीय भावस्थ है। गोचरस्थ भी राहुल जी पर 17 जनवरी, 2023 ई. से संवतान्त तक **शनि की ढैय्या** रहेगी। फलस्वरुप इनके लिए परिस्थितियां तो गम्भीर ही रहेगी। परन्तु शीघ्र ही कांग्रेस में गाँधी परिवार के नेतृत्व की पुर्नस्थापना हो जाएगी। कांग्रेस को गाँधी परिवार प्राइवेट कम्पनी की भान्ति चलाएगा। एक प्रकार से राजनीतिक आत्मघात की राह पर कांग्रेस बढ़ती जाएगी। पार्टी जिहादी आतंकवाद के खतरे को न समझकर खतरनाक और बचकानी राजनीति करेगी, जो उसके लिए एवं राहुल जी के लिए घातक होगी। लगातार जनाधार गंवाती कांग्रेस को इसका आभास है कि आतंक के प्रति उसका नरम रवैया आगामी विधानसभा चुनावों और उसके बाद आम चुनाव में बड़ा घातक सिद्ध होगा।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

(1) हिमाचल प्रदेश–इसकी प्रभावराशि **मीन** तथा नामराशि **कर्क** है। 76वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में नामराशि कर्क लग्न भाव (जनता की प्रवृत्ति, मंत्रीमण्डल, नेतृत्व का भाव) में ही स्थित है। लग्न भाव में सूर्य-शुक्र की शनि के साथ समसप्तक सम्बन्ध प्रदेश में उथल-पुथल भरी परिस्थितियों को जन्म देगा। सत्तारूढ़ भाजपा सरकार के मुख्यमन्त्री श्रीजयराम ठाकुर द्वारा विधानसभा चुनावों से पूर्व ही अनेक कार्ययोजनाओं का उद्घाटन अर्थात् शिलान्यास किया जाएगा। भाजपा संगठन मुख्य रूप से दो प्रमुख चीज़े सुनिश्चित करेगा–पहली है मोदी का जादू तथा दूसरी कल्याणकारी योजनाएं लागू करना। **इनके बल पर ही भाजपा आगामी होने वाले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस तथा आम आदमी पार्टी की टक्कर के बावजूद पुनः विजयी होगी।** वर्तमान में सत्तारूढ़ भाजपा पार्टी श्रीजयराम ठाकुर जी के कुशल नेतृत्व में हिमाचल सरकार प्रदेश में अनेक अधूरी एवं रुकी हुई विकासोन्मुखी योजनाओं को पूरी करने के लिए प्रयत्नशील रहेगी। ता. 10 मई से 30 जून तक **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक योग, 30 जून से 18 अग. तक **'मंग.-शनि'** के मध्य समसप्तक योग रहने से आगामी मई मास के बाद प्राकृतिक आपदाओं जैसे–अतिवृष्टि, भूस्खलन, बादल-स्फुटन, सड़क-वाहन दुर्घटना, हिमखण्डों के पिघलने से बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण कृषि, धन-जनादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं। परन्तु खत्म हो रहे प्राकृतिक संसाधन एवं अधूरे विकास आदि के कारण सामान्य लोग परेशान रहेंगे।

(2) पंजाब–इसकी प्रभावराशि **मीन** तथा नामराशि **कन्या** है। 76वें स्वतन्त्र दिवस कुण्डली में मीन राशि भाग्य स्थान में गुरु द्वारा अधीष्ठित है तथा शनि की दृष्टि भी है। ता. 17 जन. से शनि की दृष्टि हट जाएगी। ग्रहस्थिति अनुसार नवगठित **'आप'** सरकार द्वारा औद्योगिक विकास और रोज़गार को रफ्तार देने के लिए ग्रामीण व पिछड़े इलाकों में विशेष रियायतें और प्रोत्साहन से निवेश बढ़ाया जाएगा। जैविक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए कृषि के क्षेत्र में डी.एस.आर. तकनीक को धीरे-धीरे किसानों द्वारा सहर्ष अपनाया जाएगा, जिससे भूजल संरक्षण के संकल्प को हासिल किया जाएगा। ता. 31 मार्च से 6 जून तक राशिस्वामी बुध मेष राशिस्थ राहुयुक्त तथा शनि द्वारा दृष्ट रहने से **'आम आदमी पार्टी'** की कार्यशैली को लेकर आम जनता में अविश्वास के बादल मंडराने लगेंगे। मुफ्त बिजली की राजनीति राज्य के चहुँमुखी विकास में बाधक रहेगी। चुनाव पूर्व अपने वायदों में नई शर्तों

व तारीखों के जुड़ाव से भी सरकार की साख गिरेगी। यद्यपि वर्षारम्भ से 21 अप्रै. तक गुरु का स्वराशि मीन में संचार रहने से भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, असुरक्षा, नशे की समस्या से त्रस्त पंजाबियों की आप सरकार से बहुत उम्मीदें रहेंगी। अनेक कठिनाईयों के बावजूद पंजाब पुनः कृषि क्षेत्र में पूरे देश का नेतृत्व करेगा।

(3) जम्मू-कश्मीर—नामराशि **मकर** तथा प्रभावराशि **तुला** है। 74वें गणतन्त्र दिवस कुं. (26-01-2023 ई.) में मकर राशि तृतीय भाव (पड़ोसी देश के साथ सम्बन्धों का भाव) में तथा तुला राशि व्यय भाव (गुप्त शत्रु, षड्यन्त्र, अपराध, युद्ध सम्बन्धी कार्यों का भाव) में केतु द्वारा अधीष्ठित है। फलतः दशकों से पोषित मज़हबी अलगाववाद, कट्टरता और घृणा का विनाश दो-तीन वर्षों में असम्भव है। परन्तु लैकिक एवं यर्थार्थ नीतियों के बल पर घाटी में अपनी मूल संस्कृति के अनुरूप बहुलतावाद, समरसता और समग्रता धीरे-धीरे पुष्पित होगी। सेना एवं सुरक्षा बलों की नीतियों के कारण पाकिस्तान पोषित अलगाववादियों को फुंफकारने की आज़ादी नहीं होगी। लक्षित हत्याओं के विरुद्ध घाटी में जेहादियों का सख्ती से सफाया होगा तथा लोगों के मनों में से बंदूक का खतरा हमेशा के लिए निकाल दिया जाएगा। काश्मीर में सक्रिय आतंकियों और उनके खुले छिपे मददगारों के खिलाफ की जाने वाली कार्यवाई में तेजी लाई जाएगी। परन्तु घाटी में अलगाववाद और आतंकवाद को खाद-पानी देने वाले तत्त्व आगे भी सक्रिय रहेंगे। इनके लिए सरकार को नई रणनीति की ज़रुरत होगी। कश्मीर के मुस्लिम समाज को कट्टरपंथियों के चंगुल से निकालने के लिए मस्जिदों-मदरसों की भूमिका पर निगरानी आवश्यक होगी। नैशनल कांफ्रेंस, पी.डी.पी. और वामपंथी आदि के गुपकार गठबन्धन और कांग्रेस सहित अन्य स्वयंभू सैकुलर दल पूर्व (प्राचीन) की उस विभाजनकारी राजनीति को अप्रत्यक्ष रूप से न्यायोचित ठहराने का प्रयास करते रहेंगे।

(4) हरियाणा—इस प्रान्त की **नामराशि** मिथुन तथा **प्रभावराशि मीन** है। 74वें गणतन्त्र दिवस कुं. (26-01-2023 ई.) में नाम राशि अष्टम भाव में है तथा गुरु की गुप्त शत्रु दृष्टि भी है। प्रभावराशि मीन गुरु द्वारा अधीष्ठित है। इसके प्रभावस्वरूप सत्तारूढ़ भाजपा सरकार को अनेक चुनौतिपूर्ण एवं विकट समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कांग्रेस, आप आदि विपक्षी पार्टियों द्वारा राजनैतिक गतिरोध एवं आलोचना की जाएगी। वस्तुतः राजनीति को विरोधनीति में परिवर्तित कर दिया जाएगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में 30 अक्तू. से मीन राशि पर राहु के प्रभाव से हरियाणा का सामाजिक एवं राजनीतिक माहौल अत्यन्त पेचीदा, तनावपूर्ण एवं असमंजसपूर्ण रहने के संकेत हैं। खट्टर सरकार के लिए आगामी वर्ष चुनौतियों से भरा होगा। मन्त्रिमण्डल में सामूहिक कार्यशैली का अभाव होगा, यद्यपि विपक्ष भी खण्डित एवं अन्दरूनी गुटबाज़ी से ग्रस्त रहेगा।

(5) उत्तर-प्रदेश—*गतवर्षीय पंचांगदिवाकर के पृष्ठ 100 पर इसी कॉलम में उ.प्र. के विधानसभा नतीजों के बारे में स्पष्टतः पढ़ें-"आगामी विधानसभा चुनावों में योगी जी के ही पुनः मुख्यमन्त्री बनने की प्रबल सम्भावना है। यद्यपि चुनावों में............भाजपा के वोट प्रतिशत में कुछ कमी भी आएगी, परन्तु अन्ततः भाजपा ही सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी तथा पुनः सत्तारूढ़ होगी।"* -इत्यादि भविष्यवाणियां इस विद्या की प्रामाणिकता की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

उ.प्र. राज्य की प्रभावराशि **धनु** तथा नामराशि **वृष** है। 74वें गणतन्त्र दिवस कुण्डली में धनु राशि द्वितीय भाव बुध द्वारा अधीष्ठित है तथा वृष राशि सप्तम भाव में मंगल द्वारा अधीष्ठित है। गुरु वर्षारम्भ से 21 अप्रैल तक स्वराशिगत रहेगा। फलस्वरूप मुख्यमन्त्री **योगी आदित्यनाथ** वोटों को आकर्पित करने वाले एक करिश्माई नेता बने रहेंगे। सुदृढ़ कानून एवं व्यवस्था योगी सरकार की सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरेगी, जो पूर्ववर्त्ती सरकारों के दौर में लचर थी। ब्रह्मोस मिसाइल से लेकर रक्षा उपकरणों की विदेशी निर्माता कम्पनियों के निवेश, नए-नए एयरपोर्ट, एक्सप्रेस-वे, डिफेंस कारिडोर और तकनीक से सम्बन्धित नए निवेश और एक जनपद-एक उत्पाद योजनाओं से युवाओं में रोज़गार सृजन का विश्वास जगेगा। **सरकार समन्वय और सह-अस्तित्व की भावना से उद्दीपित पुण्य सनातन भूमि नए भारत के नए उ.प्र. के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल होगी।**

(6) दिल्ली—इसकी प्रभावराशि **मकर** 74वें गणतन्त्र दिवस कुं. (26-01-2023 ई.) में तृतीय भाव में सूर्य द्वारा अधीष्ठित है तथा **नामराशि मीन** पंचम भाव में चंद्र-गुरु युक्त है। ग्रहस्थिति अनुसार देश की राजधानी एक दिलचस्प समय के दौर से गुज़रेगी। नई पुरानी समस्याएँ सुलझने के बजाय उनमें उलझाव की आशंका अधिक रहेगी। धन के दुरुपयोग एवं कुछ मन्त्रियों की भ्रष्टाचार में संलिप्टता के आरोप के कारण केजरीवाल सरकार की उज्जवल छवि को गहरा धक्का पहुँचेगा। यद्यपि कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में **'आम-आदमी पार्टी'** के वोट-प्रतिशत तथा सीटों में अप्रत्यशित रूप से वृद्धि भी होगी तथा खाता भी खुलेगा। कुछ राज्यों में कांग्रेस का आधार सिकुड़ने से आम आदमी पार्टी को लाभ होगा।

(7) राजस्थान—प्रभावराशि **कर्क** तथा नामराशि **तुला** है। 74वें गणतन्त्र दिवस कुं. में (26-01-2023 ई.) में व्यय (द्वादश) भावस्थ तुला राशि पर केतु की स्थिति तथा भाग्यस्थ कर्क राशि पर सूर्य की अशुभ दृष्टि वर्तमान कांग्रेस सरकार के लिए अशुभ संकेत ही हैं। गहलोत सरकार के मन्त्रीमण्डल में आपसी सहयोग की कमी तथा नेताओं द्वारा अनर्गल एवं अमर्यादित वक्तव्य देने से साधारण लोगों में असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी। राजस्थान के कुछ ज़िलों में राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण तनावपूर्ण एवं विक्षुब्ध रहेगा। साम्प्रदायिक तनाव के कारण कांग्रेस सरकार व प्रदेश संकटग्रस्त रहेगा। आगामी विधानसभा चुनावों में **भाजपा** ही सशक्त पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, स्थान, राज्य, व्यक्ति आदि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रहस्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों को आधार मानकर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं ईश्वर ही है-

"फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।"

लेख लिपिबद्धम्-

श्रावण शुक्ल दशमी

7 अगस्त, सन् 2022 ई., रविवार

शुभ चिन्तकः
पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र श्रद्धेय स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो.,
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)
फोन-94172-91325

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2023-24 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	20:44	17 सितं.	कन्या	13:30
13 फर.	कुम्भ	9:44	17 अक्तू.	तुला	25:29
15 मार्च	मीन	6:34	16 नवं.	वृश्चिक	25:18
14 अप्रै.	मेष	14:58	16 दिसं.	धनु	15:57
15 मई	वृष	11:44	14 जन.(24)	मकर	26:43
15 जून	मिथुन	18:16	13 फर.	कुम्भ	15:43
17 जुला.	कर्क	5:07	14 मार्च	मीन	12:36
17 अग.	सिंह	13:32			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मिथुन में)

10 मई	कर्क	13:48	16 नवं.	वृश्चिक	10:46
30 जून	सिंह	26:16	27 दिसं.	धनु	24:21
18 अग.	कन्या	15:54	5 फर.(24)	मकर	21:42
3 अक्तू.	तुला	17:57	15 मार्च	कुम्भ	18:08

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

31 मार्च	मेष	14:59	6 नवं.	वृश्चिक	16:25
21 अप्रै.	वक्री	14:05	27 नवं.	धनु	5:53
15 मई	मार्गी	8:45	13 दिसं.	वक्री	12:38
7 जून	वृष	19:44	28 दिसं.	व. वृश्चिक	11:22
24 जून	मिथुन	12:41	2 जन.(24)	मार्गी	8:38
8 जुला.	कर्क	12:15	7 जन.	धनु	20:52
25 जुला.	सिंह	4:31	1 फर.	मकर	14:22
23 अग.	वक्री	25:28	20 फर.	कुम्भ	6:01
15 सितं.	मार्गी	25:48	7 मार्च	मीन	9:35
1 अक्तू.	कन्या	20:35	26 मार्च	मेष	3:05
18 अक्तू.	तुला	25:16	2 अप्रै.	वक्री	3:45
			9 अप्रै.	मीन	21:30

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

22 अप्रै.	मेष	5:14	31 दिसं.	मार्गी	8:12
4 सितं.	वक्री	19:40	-----	---	----

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

6 अप्रै.	वृष	10:59	7 जुला.	सिंह	4:05
2 मई	मिथुन	13:49	23 जुला.	वक्री	7:02
30 मई	कर्क	19:38	7 अग.	व. कर्क	10:56

—शुक्र राशि प्रवेश—

4 सितं.	मार्गी	6:50
1 अक्तू.	सिंह	24:59
3 नवं.	कन्या	5:12
29 नवं.	तुला	25:04
25 दिसं.	वृश्चिक	6:45
18 जन.(24)	धनु	20:56
12 फर.	मकर	4:52
7 मार्च	कुम्भ	10:46
31 मार्च	मीन	16:46

—शनि राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में कुम्भ में)

17 जून	वक्री	22:52
4 नवं.	मार्गी	12:35

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही रहेगा।

मध्यम राहु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में मेष में)

30 अक्तू. मीन 17:43

मध्यम केतु राशि प्रवेश

(संवतारम्भ में तुला में)

30 अक्तू. कन्या 17:43

यूरेनस

सारा संवत् मेष राशि में रहेगा।

नैपच्यून

(संवतारम्भ में मीन में)

सारा संवत् मीन राशि में रहेगा।

प्लूटो

सारा संवत् मकर राशि में रहेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सारा संवत् मार्गी अवस्था में संचार करेगा।

बुध

21 अप्रै.	वक्री	14:05
15 मई	मार्गी	8:45
23 अग.	वक्री	25:28
15 सितं.	मार्गी	25:48
13 दिसं.	वक्री	12:38
2 जन.(24)	मार्गी	8:38
2 अप्रै.	वक्री	3:45

गुरु

4 सितं.	वक्री	19:40
31 दिसं.	मार्गी	8:12

शुक्र

23 जुला.	वक्री	7:02
4 सितं.	मार्गी	6:50

शनि

17 जून	वक्री	22:52
4 नवं.	मार्गी	12:35

यूरेनस

29 अग.	वक्री	8:08
27 जन.(24)	मार्गी	13:05

नैपच्यून

1 जुला.	वक्री	02:40
6 दिसं.	मार्गी	18:55

प्लूटो

1 मई	वक्री	22:34
11 अक्तू.	मार्गी	6:35

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०८०)

मंगल

24 सितं. पश्चि.-अस्त	17:56
17 जन.(24) पूर्व में उदय	04:17

बुध

(संवतारम्भ में पूर्व में अस्त)

30 मार्च पश्चिम में उदय	18:39
23 अप्रै. व. पश्चिमऽस्त	23:50
10 मई व. पूर्व में उदय	5:39
20 जून पूर्व में अस्त	5:55
13 जुला. पश्चिम में उदय	4:55
31 अग. व. पश्चिमऽस्त	5:23
13 सितं. व. पूर्व में उदय	18:32
3 अक्तू. पूर्व में अस्त	5:47
11 नवं. पश्चिम में उदय	17:27
17 दिसं. व. पश्चिमऽस्त	17:23
28 दिसं. व. पूर्व में उदय	17:31

बुध (सन् 2024 ई.)

10 फर. पूर्व में अस्त	7:18
13 मार्च पश्चिम में उदय	18:30
4 अप्रै. व. पश्चिमऽस्त	6:20

गुरु

31 मार्च पश्चिमऽस्त	6:24
30 अप्रै. पूर्व में उदय	3:19

शुक्र

3 अग. व. पश्चिमऽस्त	19:05
18 अग. व. पूर्व में उदय	19:04

शनि

12 फर.(24) पश्चिमऽस्त	5:16
17 मार्च (24) पूर्व में उदय	4:40

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें !—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '**दैनिक गति**' कहते हैं।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश—संवत् २०८० वि. (सन् 2023-24 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश (संवतारम्भ में उ.भा. (2) में)

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
25 मार्च	उ.भा.(3)	7:54
28 मार्च	उ.भा.(4)	16:39
31 मार्च	रेव.(1)	25:36
4 अप्रै.	रेव.(2)	10:42
7 अप्रै.	रेव.(3)	19:59
11 अप्रै.	रेव.(4)	5:24
14 अप्रै.	अश्वि.1 मेष	14:58
17 अप्रै.	अश्वि.(2)	24:39
21 अप्रै.	अश्वि.(3)	10:31
24 अप्रै.	अश्वि.(4)	20:30
28 अप्रै.	भर.(1)	6:40
1 मई	भर.(2)	17:00
4 मई	भर.(3)	27:29
8 मई	भर.(4)	14:08
11 मई	कृति.(1)	24:52
15 मई	कृति.2 वृष	11:44
18 मई	कृति.(3)	22:42
22 मई	कृति.(4)	9:47
25 मई	रोहि.(1)	20:58
29 मई	रोहि.(2)	8:18
1 जून	रोहि.(3)	19:44
5 जून	रोहि.(4)	7:17
8 जून	मृग.(1)	18:53
12 जून	मृग.(2)	6:34
15 जून	मृग. 3 मिथुन	18:16
19 जून	मृग.(4)	6:00
22 जून	आर्द्रा(1)	17:48
26 जून	आर्द्रा(2)	5:40
29 जून	आर्द्रा(3)	17:34
3 जुला.	आर्द्रा(4)	5:30
6 जुला.	पुन.(1)	17:26
10 जुला.	पुन.(2)	5:22
13 जुला.	पुन.(3)	17:16
17 जुला.	पुन.4 कर्क	5:07
20 जुला.	पुष्य(1)	16:55
24 जुला.	पुष्य(2)	4:43
27 जुला.	पुष्य(3)	16:29
31 जुला.	पुष्य(4)	4:12

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
3 अग.	आश्ले.(1)	15:52
7 अग.	आश्ले.(2)	3:27
10 अग.	आश्ले.(3)	14:56
14 अग.	आश्ले.(4)	2:17
17 अग.	मघा 1 सिंह	13:32
20 अग.	मघा(2)	24:40
24 अग.	मघा(3)	11:44
27 अग.	मघा(4)	22:41
31 अग.	पू.फा.(1)	9:31
3 सितं.	पू.फा.(2)	20:14
7 सितं.	पू.फा.(3)	6:48
10 सितं.	पू.फा.(4)	17:11
14 सितं.	उ.फा.(1)	3:25
17 सितं.	उ.फा.2 कन्या	13:30
20 सितं.	उ.फा.(3)	23:27
24 सितं.	उ.फा.(4)	9:14
27 सितं.	हस्त(1)	18:55
1 अक्तू	हस्त(2)	4:26
4 अक्तू	हस्त(3)	13:48
7 अक्तू	हस्त(4)	22:59
11 अक्तू	चित्रा(1)	7:59
14 अक्तू	चित्रा(2)	16:48
17 अक्तू	चित्रा 3 तुला	25:29
21 अक्तू	चित्रा(4)	10:01
24 अक्तू	स्वा.(1)	18:26
27 अक्तू	स्वा.(2)	26:42
31 अक्तू	स्वा.(3)	10:50
3 नवं.	स्वा.(4)	18:49
7 नवं.	विशा.(1)	2:39
10 नवं.	विशा.(2)	10:20
13 नवं.	विशा.(3)	17:53
16 नवं.	विशा.4 वृश्चि.	25:18
20 नवं.	अनु.(1)	8:37
23 नवं.	अनु.(2)	15:51
26 नवं.	अनु.(3)	23:00
30 नवं.	अनु.(4)	6:04
3 दिसं.	ज्ये.(1)	13:01
6 दिसं.	ज्ये.(2)	19:52

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
9 दिसं.	ज्ये.(3)	26:38
13 दिसं.	ज्ये.(4)	9:19
16 दिसं.	मूल 1 धनु	15:57
19 दिसं.	मूल (2)	22:33
23 दिसं.	मूल (3)	5:22
26 दिसं.	मूल (4)	11:42
29 दिसं.	पू.षा.(1)	18:14
(सन् 2024 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	24:45
5 जन.	पू.षा.(3)	7:15
8 जन.	पू.षा.(4)	13:44
11 जन.	उ.षा.(1)	20:13
14 जन.	उ.षा.2 मकर	26:43
18 जन.	उ.षा.(3)	9:15
21 जन.	उ.षा.(4)	15:52
24 जन.	श्रव.(1)	22:30
28 जन.	श्रव.(2)	5:14
31 जन.	श्रव.(3)	12:00
3 फर.	श्रव.(4)	18:50
6 फर.	धनि.(1)	25:43
10 फर.	धनि.(2)	8:40
13 फर.	धनि.3 कुम्भ	15:43
16 फर.	धनि.(4)	22:53
20 फर.	शत.(1)	6:10
23 फर.	शत.(2)	13:35
26 फर.	शत.(3)	21:08
1 मार्च	शत.(4)	4:47
4 मार्च	पू.भा.(1)	12:33
7 मार्च	पू.भा.(2)	20:25
11 मार्च	पू.भा.(3)	4:26
14 मार्च	पू.भा.4 मीन	12:36
17 मार्च	उ.भा.(1)	20:54
21 मार्च	उ.भा.(2)	5:24
24 मार्च	उ.भा.(3)	14:15
27 मार्च	उ.भा.(4)	22:51
31 मार्च	रेव.(1)	7:49
3 अप्रै.	रेव.(2)	16:55
7 अप्रै.	रेव.(3)	2:11
10 अप्रै.	रेव.(4)	11:31

मंगल नक्षत्र प्रवेश [संवतारम्भ में मृग. 4 में]

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
27 मार्च	आर्द्रा(1)	10:59
2 अप्रै.	आर्द्रा(2)	18:19
9 अप्रै.	आर्द्रा(3)	17:11
16 अप्रै.	आर्द्रा(4)	2:30
22 अप्रै.	पुन.(1)	8:46
28 अप्रै.	पुन.(2)	12:29
4 मई	पुन.(3)	14:01
10 मई	पुन. 4 कर्क	13:48
16 मई	पुष्य(1)	11:58
22 मई	पुष्य(2)	8:38
28 मई	पुष्य(3)	3:58
2 जून	पुष्य(4)	22:10
8 जून	आश्ले.(1)	15:20
14 जून	आश्ले.(2)	7:29
19 जून	आश्ले.(3)	22:39
25 जून	आश्ले.(4)	12:51
1 जुला.	मघा 1 सिंह	2:16
6 जुला.	मघा(2)	14:53
12 जुला.	मघा(3)	2:42
17 जुला.	मघा(4)	13:41
22 जुला.	पू.फा.(1)	23:53
28 जुला.	पू.फा.(2)	9:22
2 अग.	पू.फा.(3)	18:06
8 अग.	पू.फा.(4)	2:08
13 अग.	उ.फा.(1)	9:24
18 अग.	उ.फा.2 कन्या	15:54
23 अग.	उ.फा.(3)	21:40
29 अग.	उ.फा.(4)	2:44
3 सितं.	हस्त(1)	7:06
8 सितं.	हस्त(2)	10:43
13 सितं.	हस्त(3)	13:37
18 सितं.	हस्त(4)	15:45
23 सितं.	चित्रा(1)	17:10
28 सितं.	चित्रा(2)	17:55
3 अक्तू	चित्रा 3 तुला	17:57
8 अक्तू	चित्रा(4)	17:17
13 अक्तू	स्वा.(1)	15:50
18 अक्तू	स्वा.(2)	13:43

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 अक्तू	स्वा.(3)	10:55
28 अक्तू	स्वा.(4)	7:26
2 नवं.	विशा.(1)	3:18
6 नवं.	विशा.(2)	22:28
11 नवं.	विशा.(3)	16:57
16 नवं.	विशा.4 वृश्चि.	10:46
21 नवं.	अनु.(1)	3:58
25 नवं.	अनु.(2)	20:33
30 नवं.	अनु.(3)	12:34
5 दिसं.	अनु.(4)	3:57
9 दिसं.	ज्ये.(1)	18:44
14 दिसं.	ज्ये.(2)	8:55
18 दिसं.	ज्ये.(3)	22:34
23 दिसं.	ज्ये.(4)	11:43
27 दिसं.	मूल 1 धनु	24:21
(सन् 2024 ई.)		
1 जन.	मूल(2)	12:29
5 जन.	मूल(3)	24:06
10 जन.	मूल(4)	11:15
14 जन.	पू.षा.(1)	21:56
19 जन.	पू.षा.(2)	8:15
23 जन.	पू.षा.(3)	18:10
28 जन.	पू.षा.(4)	3:43
1 फर.	उ.षा.(1)	12:53
5 फर.	उ.षा.2 मकर	21:42
10 फर.	उ.षा.(3)	6:12
14 फर.	उ.षा.(4)	14:26
18 फर.	श्रव.(1)	22:24
23 फर.	श्रव.(2)	6:11
27 फर.	श्रव.(3)	13:41
2 मार्च	श्रव.(4)	21:02
7 मार्च	धनि.(1)	4:11
11 मार्च	धनि.(2)	11:12
15 मार्च	धनि.3 कुम्भ	18:08
20 मार्च	धनि.(4)	1:00
24 मार्च	शत.(1)	7:50
28 मार्च	शत.(2)	14:38
1 अप्रै.	शत.(3)	21:26
6 अप्रै.	शत.(4)	4:15
10 अप्रै.	पू.भा.(1)	11:08

बुध नक्षत्र प्रवेश [संवतारम्भ में उ.भा. (3) में]

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 मार्च	उ.भा.(4)	3:51
24 मार्च	रेव.(1)	19:31
26 मार्च	रेव.(2)	11:21
28 मार्च	रेव.(3)	3:36
29 मार्च	रेव.(4)	20:40
31 मार्च	अश्वि.1 मेष	14:59
2 अप्रै.	अश्वि.(2)	11:11
4 अप्रै.	अश्वि.(3)	10:13
6 अप्रै.	अश्वि.(4)	14:38
8 अप्रै.	भर.(1)	23:47
11 अप्रै.	भर.(2)	22:35
16 अप्रै.	भर.(3)	6:17
21 अप्रै.	वक्री	14:05
27 अप्रै.	व. भर. (2)	6:58
2 मई	व. भर. (1)	22:53
8 मई	व. अश्वि.(4)	15:46
15 मई	मार्गी	8:45
21 मई	भर.(1)	23:46
26 मई	भर.(2)	25:26
30 मई	भर.(3)	16:18
2 जून	भर.(4)	17:00
5 जून	कृति.(1)	9:19
7 जून	कृति.2 वृष	19:44
9 जून	कृति.(3)	25:52
12 जून	कृति.(4)	4:31
14 जून	रोहि.(1)	4:19
16 जून	रोहि.(2)	1:44
17 जून	रोहि.(3)	21:09
19 जून	रोहि.(4)	14:54
21 जून	मृग.(1)	7:17
22 जून	मृग.(2)	22:26
24 जून	मृग. 3 मिथुन	12:41
26 जून	मृग.(4)	2:14
27 जून	आर्द्रा(1)	15:17
29 जून	आर्द्रा(2)	4:02

बुध नक्षत्र प्रवेश

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
30 जून	आर्द्रा(3)	16:40
2 जुला.	आर्द्रा(4)	5:23
3 जुला.	पुन.(1)	18:21
5 जुला.	पुन.(2)	7:42
6 जुला.	पुन.(3)	21:38
8 जुला.	पुन. 4 कर्क	12:15
10 जुला.	पुष्य(1)	3:41
11 जुला.	पुष्य(2)	20:08
13 जुला.	पुष्य(3)	13:36
15 जुला.	पुष्य(4)	8:16
17 जुला.	आश्ले.(1)	4:15
19 जुला.	आश्ले.(2)	1:44
20 जुला.	आश्ले.(3)	24:50
23 जुला.	आश्ले.(4)	1:41
25 जुला.	मघा 1 सिंह	4:31
27 जुला.	मघा(2)	9:44
29 जुला.	मघा(3)	17:38
1 अग.	मघा(4)	4:41
3 अग.	पू.फा.(1)	19:59
6 अग.	पू.फा.(2)	16:48
9 अग.	पू.फा.(3)	21:51
13 अग.	पू.फा.(4)	17:38
19 अग.	उ.फा.(1)	7:22
24 अग.	**वक्री**	1:28
28 अग.	व. पू.फा.(4)	13:37
2 सितं.	व.पू.फा.(3)	13:11
6 सितं.	व. पू.फा.(2)	2:32
9 सितं.	व.पू.फा.(1)	17:47
16 सितं.	**मार्गी**	1:48
22 सितं.	पू.फा.(2)	3:43
25 सितं.	पू.फा.(3)	5:08
27 सितं.	पू.फा.(4)	15:34
29 सितं.	उ.फा.(1)	19:46
1 अक्तू	उ.फा.2कन्या	20:35
3 अक्तू	उ.फा.(3)	19:28
5 अक्तू	उ.फा.(4)	17:16
7 अक्तू	हस्त(1)	14:33
9 अक्तू	हस्त(2)	11:40

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
11 अक्तू.	हस्त(3)	8:51
13 अक्तू.	हस्त(4)	6:18
15 अक्तू.	चित्रा(1)	4:08
17 अक्तू.	चित्रा(2)	2:26
19 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	1:16
20 अक्तू.	चित्रा(4)	24:41
22 अक्तू.	स्वा.(1)	24:39
24 अक्तू.	स्वा.(2)	25:15
27 अक्तू.	स्वा.(3)	2:24
29 अक्तू.	स्वा.(4)	4:09
31 अक्तू.	विशा.(1)	6:26
2 नवं.	विशा.(2)	9:16
4 नवं.	विशा.(3)	12:36
6 नवं.	विशा.4 वृश्चि.	16:25
8 नवं.	अनु.(1)	20:43
11 नवं.	अनु.(2)	1:30
13 नवं.	अनु.(3)	6:44
15 नवं.	अनु.(4)	12:31
17 नवं.	ज्ये.(1)	18:52
20 नवं.	ज्ये.(2)	1:54
22 नवं.	ज्ये.(3)	9:51
24 नवं.	ज्ये.(4)	19:02
27 नवं.	मूल 1 धनु	5:53
29 नवं.	मूल (2)	19:32
2 दिसं.	मूल(3)	13:43
5 दिसं.	मूल(4)	17:05
9 दिसं.	पू.षा.(1)	25:45
13 दिसं.	**वक्री**	12:38
16 दिसं.	व. मूल (4)	17:02
20 दिसं.	व. मूल(3)	8:00
22 दिसं.	व. मूल (2)	20:51
25 दिसं.	व. मूल(1)	8:22
28 दिसं.	व.ज्ये. 4 वृश्चि	11:22
(सन् 2024 ई.)		
2 जन.	**मार्गी**	8:38
7 जन.	मूल 1 धनु	20:52
11 जन.	मूल (2)	22:06

2024 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
15 जन.	मूल (3)	3:02
17 जन.	मूल (4)	23:37
20 जन.	पू.षा.(1)	15:37
23 जन.	पू.षा.(2)	4:35
25 जन.	पू.षा.(3)	15:17
27 जन.	पू.षा.(4)	24:18
30 जन.	उ.षा.(1)	7:57
1 फर.	उ.षा.2मकर	14:22
3 फर.	उ.षा.(3)	22:20
5 फर.	उ.षा.(4)	24:03
8 फर.	श्रव.(1)	3:27
10 फर.	श्रव.(2)	5:59
12 फर.	श्रव.(3)	7:39
14 फर.	श्रव.(4)	8:28
16 फर.	धनि.(1)	8:27
18 फर.	धनि.(2)	7:38
20 फर.	धनि. 3 कुंभ	6:01
22 फर.	धनि.(4)	3:37
23 फर.	शत.(1)	24:27
25 फर.	शत.(2)	20:32
27 फर.	शत.(3)	16:02
29 फर.	शत.(4)	10:51
2 मार्च	पू.भा.(1)	5:07
3 मार्च	पू.भा.(2)	22:54
5 मार्च	पू.भा.(3)	16:21
7 मार्च	पू.भा. 4 मीन	9:35
9 मार्च	उ.भा.(1)	2:48
10 मार्च	उ.भा.(2)	20:18
12 मार्च	उ.भा.(3)	14:23
14 मार्च	उ.भा.(4)	9:30
16 मार्च	रेव.(1)	6:19
18 मार्च	रेव.(2)	5:56
20 मार्च	रेव.(3)	10:08
22 मार्च	रेव.(4)	22:12
26 मार्च	अश्वि. 1 मेष	3:05
2 अप्रै.	**वक्री**	3:45
9 अप्रै.	व.रेव. 4 मीन	21:30

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. 2 में)

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
25 मार्च	रेव.(3)	12:22
8 मार्च	रेव.(4)	9:18
22 अप्रै.	अश्वि.1 मेष	5:14
6 मई	अश्वि.(2)	5:35
20 मई	अश्वि.(3)	16:23
4 जून	अश्वि.(4)	21:56
21 जून	भर.(1)	12:10
10 जुला.	भर.(2)	17:43
6 अग.	भर.(3)	7:26
4 सितं.	वक्री	19:40
3 अक्तू.	व. भर. (2)	24:40
31 अक्तू.	व. भर. (1)	21:21
26 नवं.	व. अश्वि. (4)	27:13
31 दिसं.	**मार्गी**	8:12
(सन् 2024 ई०)		
3 फर.	भर.(1)	12:48
27 फर.	भर.(2)	12:32
16 मार्च	भर.(3)	20:58
1 अप्रै.	भर.(4)	24:59

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि. (4) में)

23 मार्च	भर.(1)	10:03
26 मार्च	भर.(2)	4:57
28 मार्च	भर.(3)	24:04
31 मार्च	भर.(4)	19:26
3 अप्रै.	कृति.(1)	15:04
6 अप्रै.	कृति. 2 वृष	10:59
9 अप्रै.	कृति.(3)	7:11
12 अप्रै.	कृति.(4)	3:42
14 अप्रै.	रोहि.(1)	24:32
17 अप्रै.	रोहि.(2)	21:42
20 अप्रै.	रोहि.(3)	19:15
23 अप्रै.	रोहि.(4)	17:11
26 अप्रै.	मृग.(1)	15:33

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
29 अप्रै.	मृग.(2)	14:24
2 मई	मृग. 3 मिथुन	13:49
5 मई	मृग.(4)	13:50
8 मई	आर्द्रा(1)	14:25
11 मई	आर्द्रा(2)	15:44
14 मई	आर्द्रा(3)	17:50
17 मई	आर्द्रा(4)	20:45
20 मई	पुन.(1)	24:38
24 मई	पुन.(2)	5:37
27 मई	पुन.(3)	11:54
30 मई	पुन. 4 कर्क	19:38
3 जून	पुष्य(1)	5:09
6 जून	पुष्य(2)	16:48
10 जून	पुष्य(3)	6:56
13 जून	पुष्य(4)	24:13
17 जून	आश्ले.(1)	21:29
21 जून	आश्ले.(2)	24:05
26 जून	आश्ले.(3)	10:16
1 जुला.	आश्ले.(4)	8:16
7 जुला.	मघा 1 सिंह	4:05
15 जुला.	मघा(2)	14:34
23 जुला.	वक्री	7:02
30 जुला.	व. मघा(1)	16:24
7 अग.	व.आश्ले.4 कर्क	10:56
13 अग.	व. आश्ले.(3)	2:00
18 अग.	व.आश्ले.(2)	13:32
25 अग.	व. आश्ले.(1)	7:28
4 सितं.	मार्गी	6:50
14 सितं.	आश्ले.(2)	16:28
21 सितं.	आश्ले.(3)	21:33
27 सितं.	आश्ले.(4)	8:18
1 अक्तू.	मघा 1 सिंह	24:59
6 अक्तू.	मघा(2)	7:14
10 अक्तू.	मघा(3)	6:32
13 अक्तू.	मघा(4)	24:50
17 अक्तू.	पू.फा.(1)	15:24
21 अक्तू.	पू.फा.(2)	3:03

2023 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
24 अक्तू.	पू.फा.(3)	12:18
27 अक्तू.	पू.फा.(4)	19:32
31 अक्तू.	उ.फा.(1)	1:05
3 नवं.	उ.फा.2 कन्या	5:12
6 नवं.	उ.फा.(3)	8:03
9 नवं.	उ.फा.(4)	9:48
12 नवं.	हस्त(1)	10:37
15 नवं.	हस्त(2)	10:36
18 नवं.	हस्त(3)	9:52
21 नवं.	हस्त(4)	8:30
24 नवं.	चित्रा(1)	6:32
27 नवं.	चित्रा(2)	4:02
30 नवं.	चित्रा 3 तुला	1:04
2 दिसं.	चित्रा(4)	21:38
5 दिसं.	स्वा.(1)	17:48
8 दिसं.	स्वा.(2)	13:36
11 दिसं.	स्वा.(3)	9:05
14 दिसं.	स्वा.(4)	4:17
16 दिसं.	विशा.(1)	23:14
19 दिसं.	विशा.(2)	17:56
22 दिसं.	विशा.(3)	12:26
25 दिसं.	विशा.4 वृश्चि.	6:45
27 दिसं.	अनु.(1)	24:53
30 दिसं.	अनु.(2)	18:50
(सन् 2024 ई.)		
2 जन.	अनु.(3)	12:38
5 जन.	अनु.(4)	6:16
7 जन.	ज्ये. (1)	23:48
10 जन.	ज्ये.(2)	17:13
13 जन.	ज्ये.(3)	10:32
16 जन.	ज्ये.(4)	3:46
18 जन.	मूल 1 धनु	20:56
21 जन.	मूल(2)	14:02
24 जन.	मूल(3)	7:04
26 जन.	मूल(4)	24:03
29 जन.	पू.षा.(1)	16:57
1 फर.	पू.षा.(2)	9:50

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

4 फर.	पू.षा.(3)	2:38
6 फर.	पू.षा.(4)	19:25
9 फर.	उ.षा.(1)	12:09
12 फर.	उ.षा.2 मकर	4:52
14 फर.	उ.षा.(3)	21:34
17 फर.	उ.षा.(4)	14:15
20 फर.	श्रव.(1)	6:56
22 फर.	श्रव.(2)	23:36
25 फर.	श्रव.(3)	16:15
28 फर.	श्रव.(4)	8:54
2 मार्च	धनि.(1)	1:32
4 मार्च	धनि.(2)	18:09
7 मार्च	धनि. 3 कुम्भ	10:46
10 मार्च	धनि.(4)	3:23
12 मार्च	शत.(1)	20:00
15 मार्च	शत.(2)	12:39
18 मार्च	शत.(3)	5:18
20 मार्च	शत.(4)	21:58
23 मार्च	पू.भा.(1)	14:39
26 मार्च	पू.भा.(2)	7:20
28 मार्च	पू.भा.(3)	24:02
31 मार्च	पू.भा. 4 मीन	16:46
3 अप्रै.	उ.भा.(1)	9:29
6 अप्रै.	उ.भा.(2)	2:13
8 अप्रै.	उ.भा.(3)	18:58

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत.(1) में)

16 अप्रै.	शत.(2)	4:48
17 जून	वक्री	22:52
22 अग.	व. शत.(1)	22:34
15 अक्तू.	व. धनि.(4)	11:18
4 नवं.	मार्गी	12:35
24 नवं.	शत.(1)	8:54
(सन् 2024 ई.)		
11 जन.	शत.(2)	7:37
10 फर.	शत.(3)	12:28
8 मार्च	शत.(4)	23:57
6 अप्रै.	पू.भा.(1)	14:11

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि.(4) में)

24 अप्रै.	अश्वि.(3)	24:57
26 जून.	अश्वि.(2)	22:26
28 अग.	अश्वि.(1)	19:51
30 अक्तू.	रेव.4 मीन	17:43
1 जन.(24)	रेव.(3)	15:12
4 मार्च	रेव.(2)	12:23

केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में स्वा.(2) में)

24 अप्रै.	स्वा.(1)	24:57
26 जून	चित्रा(4)	22:26
28 अग.	चित्रा(3)	19:51
30 अक्तू.	चित्रा 2 कन्या	17:43
1 जन.(24)	चित्रा(1)	15:12
4 मार्च	हस्त(4)	12:23

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में भर.(3) में)

14 अप्रै.	भर. (4)	23:34
13 जून	कृति.(1)	8:10
29 अग.	वक्री	8:08
18 नवं.	व. भर. (4)	22:27
2 अप्रै.(24)	कृति.(1)	19:02

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा.(4) में)

5 जून	उ.भा.(1)	20:16
1 जुला.	वक्री	2:40
26 जुला.	व. पू.भा.(4)	11:42
6 दिसं.	मार्गी	18:55
22 मार्च(24)	उ.भा.(1)	2:53

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ से उ.षा. (3) में)

1 मई	वक्री	22:34
11 अक्तू.	मार्गी	6:35
17फर.(24)	उ.षा.(4)	14:32

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2023-24 ई.)

22 मार्च ➻ शुक्र-राहु (मेष)
28 मार्च ➻ बुध-गुरु (मीन)
7 अप्रै. ➻ बुध-राहु (मेष)
12 अप्रै. ➻ सूर्य-गुरु (मीन)
24 अप्रै. ➻ सूर्य-राहु (मेष)
2 मई ➻ सूर्य-बुध (मेष)
27 मई ➻ गुरु-राहु (मेष)
1 जुला ➻ सूर्य-बुध (मिथुन)
27 जुला ➻ बुध-शुक्र (सिंह)
13 अग. ➻ सूर्य-शुक्र (कर्क)
6 सितं. ➻ सूर्य-बुध (सिंह)
20 अक्तू ➻ सूर्य-बुध (तुला)
29 अक्तू ➻ मंग.-बुध (तुला)
18 नवं. ➻ सूर्य-मंग. (वृश्चिक)
23 दिसं. ➻ सूर्य-बुध (धनु)
28 दिसं. ➻ मंग.-बुध (धनु)

(सन 2024 ई.)

27 जन. ➻ मंग.-बुध (धनु)
22 फर. ➻ मंग.-शुक्र (मकर)
28 फर. ➻ सूर्य-बुध (कुम्भ)
28 फर. ➻ बुध-शनि (कुम्भ)
29 फर. ➻ सूर्य-शनि (कुम्भ)
19 मार्च ➻ बुध-राहु (मीन)
22 मार्च ➻ शुक्र-शनि (कुम्भ)
5 अप्रै. ➻ सूर्य-राहु (मीन)
10 अप्रै. ➻ मंग.-शनि (कुम्भ)

(चतुर्ग्रही योग-सं. २०८०)

सू.+बु.+गु.+रा. ➻ 22 अप्रैल से 15 मई (मेष)

(सन 2024 ई.)

सू.+मं.+बु.+शु. ➻ 12 फरवरी 13 फरवरी (मकर)
सू.+बु.+शु.+रा. ➻ 10 अप्रैल से 13 अप्रैल (मीन)

द्विग्रही-योग—वि. संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.)

शुक्र-राहु ➻ 12 मार्च से 6 अप्रैल (मेष)
बुध-गुरु ➻ 16 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-बुध ➻ 21 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सूर्य-गुरु ➻ 21 मार्च से 14 अप्रैल (मीन)
बुध-राहु ➻ 31 मार्च से 7 जून (मेष)
बुध-शुक्र ➻ 31 मार्च से 6 अप्रैल (मेष)
सूर्य-बुध ➻ 14 अप्रै. से 15 मई (मेष)
सूर्य-राहु ➻ 14 अप्रैल से 15 मई (मेष)
गुरु-राहु ➻ 22 अप्रैल से 30 अक्तू. (मेष)
सूर्य-गुरु ➻ 22 अप्रैल से 15 मई (मेष)
बुध-गुरु ➻ 22 अप्रैल से 7 जून (मेष)
मंग.-शुक्र ➻ 2 मई से 10 मई (मिथुन)
मंग.-शुक्र ➻ 30 मई से 30 जून (कर्क)
सूर्य-बुध ➻ 7 जून से 15 जून (वृष)
सूर्य-बुध ➻ 24 जून से 8 जुला. (मिथुन)
मंग.-शुक्र ➻ 6 जुलाई से 7 अगस्त (सिंह)
मंग.-बुध ➻ 25 जुलाई से 18 अगस्त (सिंह)
बुध-शुक्र ➻ 25 जुलाई से 7 अगस्त (सिंह)
सूर्य-शुक्र ➻ 7 अगस्त से 17 अगस्त (कर्क)
सूर्य-मंग. ➻ 17 से 18 अगस्त (सिंह)
सूर्य-बुध ➻ 17 अग. से 17 सितंबर (सिंह)
सूर्य-मंग. ➻ 17 सितं. से 3 अक्तू. (कन्या)
सूर्य-बुध ➻ 2 अक्तू. से 17 अक्तू. (कन्या)
सूर्य-मंग. ➻ 17 अक्तू. से 16 नवं. (तुला)
सूर्य-बुध ➻ 19 अक्तू. से 6 नवम्बर (तुला)
मंग.-बुध ➻ 16 नवं. से 27 नवं. (वृश्चिक)
सूर्य-मंग. ➻ 17 नवं. से 16 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-बुध ➻ 16 दिसं. से 28 दिसं. (धनु)
मंग.-बुध ➻ 27 से 28 दिसं. (धनु)
सूर्य-मंग. ➻ 27 दिसं. से 14 जन. (धनु)

(सन 2024 ई.)

सूर्य-बुध ➻ 7 जन. से 14 जन. (धनु)
मंग.-बुध ➻ 7 जन. से 1 फर. (धनु)
मंग.-शुक्र ➻ 18 जन. से 5 फर. (धनु)
बुध-शुक्र ➻ 18 जन. से 1 फर. (धनु)
सूर्य-बुध ➻ 1 फर. से 13 फर. (मकर)
मंग.-बुध ➻ 5 फर. से 20 फर. (मकर)
सूर्य-शुक्र ➻ 12 फर. से 13 फर. (मकर)
बुध-शुक्र ➻ 12 फर. से 20 फर. (मकर)
मंग.-शुक्र ➻ 12 फरवरी से 7 मार्च (मकर)

सूर्य-शनि ➻ 13 फरवरी से 14 मार्च (कुम्भ)
सूर्य-बुध ➻ 20 फरवरी से 7 मार्च (कुम्भ)
सूर्य-शुक्र ➻ 7 मार्च से 14 मार्च (कुम्भ)
शुक्र-शनि ➻ 7 मार्च से 31 मार्च (कुम्भ)
सूर्य-राहु ➻ 14 मार्च से 10 अप्रैल (मीन)
सूर्य-बुध ➻ 14 मार्च से 25 मार्च (मीन)
मंग.-शनि ➻ 15 मार्च से 10 अप्रैल (कुम्भ)
सूर्य-शुक्र ➻ 31 मार्च से 13 अप्रैल (मीन)
शुक्र-राहु ➻ 31 मार्च से 10 अप्रैल (मीन)

तीनग्रही-योग—(संवत् २०८०)

सू.+बु.+गु. ➻ 21 मार्च से 31 मार्च (मीन)
सू.+बु.+रा. ➻ 14 अप्रैल से 15 मई (मेष)
सू.+गु.+रा. ➻ 22 अप्रैल से 15 मई (मेष)
बु.+गु.+रा. ➻ 22 अप्रैल से 15 मई (मेष)
मं.+बु.+शु. ➻ 25 जुला. से 7 अगस्त (सिंह)
सू.+मं.+बु. ➻ 17 अगस्त से 18 अगस्त (सिंह)
सू.+मं.+बु. ➻ 18 अक्तू. से 6 नवंबर (तुला)
सू.+मं.+बु. ➻ 16 नवंबर से 27 नवंबर (वृश्चिक)
सू.+मं.+बु. ➻ 27 दिसं. से 28 दिसम्बर (धनु)

(सन 2024 ई.)

सू.+मं.+बु. ➻ 7 जनवरी से 14 जनवरी (धनु)
मं.+बु.+शु. ➻ 19 जनवरी से 1 फरवरी (धनु)
सू.+मं.+बु. ➻ 5 फरवरी से 13 फरवरी (मकर)
सू.+बु.+श. ➻ 20 फरवरी से 7 मार्च (कुम्भ)
सू.+बु.+रा. ➻ 14 मार्च से 25 मार्च (मीन)
मं.+शु.+श. ➻ 15 मार्च से 31 मार्च (कुम्भ)
सू.+शु.+रा. ➻ 31 मार्च से 10 अप्रैल (मीन)

(समसप्तक योग)-संवत् २०८०

मंग.-शनि ➻ 1 जुला. से 18 अग. (सिंह-कुम्भ)
शुक्र-शनि ➻ 7 जुला. से 6 अग. (सिंह-कुम्भ)
बुध-शनि ➻ 25 जुला. से 30 सितं. (सिंह-कुम्भ)
सूर्य-शनि ➻ 17 अग. से 16 सितं. (सिंह-कुम्भ)
शुक्र-शनि ➻ 1 अक्तू. से 2 नवं. (सिंह-कुम्भ)
मंग.-गुरु ➻ 3 अक्तू. से 15 नवं. (तुला-मेष)
सूर्य-गुरु ➻ 18 अक्तू. से 16 नवं. (तुला-मेष)
बुध-गुरु ➻ 19 अक्तू. से 6 नवं. (तुला-मेष)

षडाष्टक योग

मंग.+शनि ➻ 10 मई से 30 जून (कर्क-कुम्भ)

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास का मुख्य व्रत–त्यौहार
(प्रत्येक मास के व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

[इस श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार **'पंचांगदिवाकर'** में प्रत्येक कृष्ण/शुक्ल पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों के संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जा रहा है। आशा है धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। [सुझाव आमंत्रित है।] गतः सात वर्षों (वि. संवत् २०७३ से सं. २०७९ तक) में हमने **'चैत्र से भाद्रपद शुक्लपक्ष'** मास तक के मुख्य व्रत/पर्वों का विवरण लिख चुके हैं। इस वर्ष हम **'आश्विन कृष्ण पक्ष'** (पितृ–पक्ष) के मुख्य व्रत, पर्वों तथा श्राद्ध सम्बन्धी विधि–विधान का विवरण लिख रहे हैं।–

–पं. विवेक शर्मा सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्ध

यह पार्वण श्राद्ध माना जाता है। भाद्र. शुक्लपक्ष की अपराह्ण–व्यापिनी पूर्णिमा में यह श्राद्ध किया जाता है। इसमें पिता, पितामह, प्रपितामह का वसु, रुद्र, आदित्यस्वरूप पितरों को ; माता, पितामही, प्रपितामही तथा मातामह (नाना), प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह एवं मातामही (नानी), प्रमातामही, वृद्ध प्रमातामही का पुरुख और आर्द्रक देवताओं सहित सपिण्डक पार्वण श्राद्ध करना चाहिए। कुछ विद्वान इस दिन मातामह आदि के श्राद्ध का निषेध मानते हैं। इस दिन उन लोगों का महालय श्राद्ध भी किया जाता है, जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो।

'आश्विन कृष्ण पक्ष'

(1) महालय श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष को **'श्राद्धपक्ष'**, **'पितृपक्ष'** अथवा 'महालय पक्ष' भी कहा जाता है। आश्विन मास के कृष्णपक्ष के ये पंद्रह दिन **'पितृपक्ष'** के नाम से विख्यात है। इस पक्ष में लोग अपने पितरों को जल देते हैं तथा उनकी मृत्युतिथियों के अनुसार उनका श्राद्ध करते हैं। शास्त्रों में श्राद्ध के अनेक भेद बताए गए हैं, किन्तु यहाँ उन्हीं श्राद्धों का उल्लेख किया जाता है, जो अत्यन्त आवश्यक और अनुष्ठेय हैं। मत्स्यपुराण में तीन प्रकार के श्राद्ध बताए गए हैं–**नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्राद्धमुच्यते।**– नित्य, नैमित्तिक और काम्य–भेद से श्राद्ध तीन प्रकार के होते हैं।

यमस्मृति में पाँच प्रकार के श्राद्धों का उल्लेख मिलता है–नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण।–

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धमथापरम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं श्राद्धं पञ्चविधं बुधैः।।

प्रतिदिन किए जाने वाले श्राद्ध को **नित्यश्राद्ध** कहते हैं। इसमें विश्वेदेव नहीं होते तथा अशक्तावस्था में केवल जलप्रदान से भी इस श्राद्ध की पूर्ति हो जाती है तथा **एकोद्दिष्टश्राद्ध** को नैमित्तिकश्राद्ध कहते हैं, इसमें भी विश्वेदेव नहीं होते। किसी कामना की पूर्ति के निमित्त किए जाने वाले श्राद्ध को **काम्यश्राद्ध** कहते हैं। वृद्धिकाल में पुत्रजन्म तथा विवाहादि माङ्गलिक कार्य में जो श्राद्ध किया जाता है, उसे **वृद्धिश्राद्ध (नान्दीश्राद्ध)** कहते हैं। पितृपक्ष अमावस्या अथवा पर्व की तिथि आदि पर जो सदैव (विश्वेदेव–सहित) श्राद्ध किया जाता है, उसे **'पार्वण–श्राद्ध'** कहते हैं।

पितृपक्ष में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि पर मुख्य रूप से पार्वणश्राद्ध करने का विधान है। **पार्वण श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्यु तिथि के दिन किया जाता है।** यथासम्भव पिता की मृत्यु–तिथि पर इसे अवश्य करना चाहिए। पार्वणश्राद्ध में **पिता, पितामह (दादा), प्रपितामह (परदादा), सपत्नीक अर्थात् माता, दादी और परदादी**–इस प्रकार तीन चट में छः व्यक्तियों का श्राद्ध होता है। इसके साथ ही मातामह (नाना), प्रमातामह (परनाना), वृद्ध प्रमातामह (वृद्ध परनाना) सपत्नीक अर्थात् नानी, परनानी तथा वृद्ध परनानी–यहाँ भी तीन चट में छः लोगों का श्राद्ध सम्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त एक चट और लगाया जाता है, जिस पर अपने निकटतम सम्बन्धियों के निमित्त पिण्डदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त दो विश्वेदेव के चट लगते हैं। इस तरह नौ चट लगाकर पार्वणश्राद्ध सम्पन्न होता है। पार्वणश्राद्ध में नौ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। यदि कम कराना हो तो तीन ब्राह्मणों को ही भोजन कराया जा सकता है। यदि ब्राह्मण उपलब्ध न हो तो कम-से-कम एक सन्ध्यावन्दन आदि करने वाले सात्त्विक ब्राह्मण को भोजन अवश्य कराना चाहिए।

एकोद्दिष्ट–श्राद्ध मध्याह्नव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किया जाता है। एकोद्दिष्ट का तात्पर्य है कि केवल मृत व्यक्ति के निमित्त एक पिण्ड का दान तथा कम–से–कम एक ब्राह्मण को भोजन कराया जाए और अधिक से अधिक तीन ब्राह्मणों को। गुरु, ससुर, मामा, भाई, बहनोई, भतीजा, शिष्य, जामाता, भानजा, फूफड़, मासड़, मित्र, पुत्र, विमाता के पिता एवं इन सभी की पत्नियों एवं पुत्रहीन का श्राद्ध एकोद्दिष्ट पद्धति से करना चाहिए।

(2) पार्वण (महालय) श्राद्धतिथि निर्णय के नियम

(1) **ध्यान रहे,** महालय-पक्ष के लगभग सभी श्राद्ध पार्वण-श्राद्ध होते हैं और

पार्वण-श्राद्ध अपराह्ण-व्यापिनी मृत्युतिथि वाले दिन ही किया जाता है। अर्थात् किसी की मृत्युतिथि जिस दिन अपराह्ण-व्यापिनी होगी, उसी दिन उसका महालय श्राद्ध किया जाएगा। अर्थात् यदि पहिले दिन मृत्युतिथि अपराह्णव्यापिनी है तो पहले दिन और यदि दूसरे दिन अपराह्णव्यापिनी है तो दूसरे दिन उस मृत व्यक्ति का श्राद्ध करना होगा।

(2) यदि श्राद्धतिथि दोनों दिन अपराह्णकाल की स्पर्श न करे तो पहिले दिन श्राद्ध किया जाता है।

(3) यदि दोनों दिन मृत्युतिथि में अपराह्णकाल की असमानता हो (अर्थात् एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम व्याप्त करे), तो वहाँ अपराह्णकाल को अधिक काल व्याप्ति वाली मृत्युतिथि के दिन श्राद्ध होता है-

अपराह्ण द्वये चामा यदि स्यात् तत्र याऽधिका।
सा ग्राह्या यदि तुल्या स्यादग्रे वृद्धौ परा स्मृता।।

(4) यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण-काल को लगभग समान रूप से व्याप्त करे तब श्राद्धतिथि का निर्णय निम्न प्रकार से होगा-

(क) यदि श्राद्ध तिथि का मान 60 घड़ी का अथवा 60 घड़ी से अधिक हो तो श्राद्ध दूसरे दिन होगा।

(ख) यदि श्राद्ध 60 घड़ी से कम हो तो श्राद्ध पहिले दिन होगा।

उपरोक्त चार नियमों को ध्यान में रखते हुए श्राद्धतिथि वाले दिन का निर्णय करना चाहिए।

(3) एकोद्दिष्ट श्राद्ध-तिथि निर्णय

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि यह श्राद्ध मध्याह्नव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किया जाता है। पार्वणश्राद्ध के विपरीत यदि मृत्युतिथि दोनों दिन मध्याह्नकाल को पूर्णतया व्याप्त करे अथवा व्याप्त (स्पर्श) न करे तो श्राद्ध दूसरे दिन किया जाता है। यदि श्राद्धतिथि मध्याह्नकाल को दोनों दिन आंशिकरूप से समानतया स्पर्श कर रही हो तो श्राद्धतिथि के क्षयगामिनी स्थिति में अर्थात् श्राद्धतिथि का मान 60 घड़ी से कम होने पर श्राद्ध पहिले दिन, श्राद्ध तिथि की वृद्धिगामिनी होने की स्थिति में अर्थात् श्राद्धतिथि का मान 60 घड़ी से अधिक होने पर एवं श्राद्धतिथि का मान पूर्ण 60 घड़ी होने पर भी श्राद्ध दूसरे दिन होगा।

यदि श्राद्ध तिथि दोनों असमान रूप से मध्याह्न-काल को व्याप्त करे तो भी श्राद्ध दूसरे ही दिन करना चाहिए।

(4) भरणी श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष के भरणी नक्षत्र में पितरों का पार्वण/एकोद्दिष्ट श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य है। पृथ्वीचन्द्रोदय में लिखा है-

'भरणी पितृपक्षे तु महती परिकीर्तिता।
तस्यां श्राद्धं कृतं येन स गयाश्राद्धकृद्भवेत्।।

यदि आश्विन कृष्ण पक्ष की द्वितीया को भरणी नक्षत्र और तृतीया को कृतिका नक्षत्र हो तो यह तिथि पिता को प्रीति देने वाली कही गई है।

(5) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

यह परिचित व्रत प्रत्येक कृष्ण चतुर्थी को होता है। इसमें चन्द्रोदयव्यापिनी तिथि ली जाती है। संकल्प/विधि-विधान गत पंचांगों में लिख दिया गया है।

यदि साधक आश्विन कृष्ण चतुर्थी को व्रत रख रहा हो और उसी दिन माता-पिता आदि का श्राद्ध हो तो दिन में श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन करा दे और अपने हिस्से के भोजन को सूँघकर गौ को खिला दे। रात्रि में चन्द्रोदय के बाद स्वयं भोजन करें।

(6) चन्द्र षष्ठी व्रत

चन्द्रोदयव्यापिनी आश्विन कृष्ण षष्ठी को यह व्रत होता है। दोनों दिन चन्द्रोदयकाल में षष्ठी की व्याप्ति-अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत पहले दिन होगा।

चन्द्रषष्ठीव्रतं कुर्यात् पूर्ववेधः प्रशस्यते।।

(7) कपिला षष्ठी व्रत

आश्विन कृष्ण पक्ष में षष्ठी तिथि में रोहिणी नक्षत्र, व्यतीपात योग तथा मंगलवार हो तो कपिला-षष्ठी मानी गई है। इस व्रत में उपवास और नियम से सूर्य पूजन करने, ब्राह्मण को कपिला गौ देने से यज्ञ का फल प्राप्त होता है। यह योग दिन में ही ग्राह्य है, रात्रि में नहीं।

(8) श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त

भाद्रशुक्लाष्टमी से चल रहा 16 दिन का **'श्रीमहालक्ष्मी व्रत'** चन्द्रोदय-व्यापिनी आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन सम्पन्न (पूर्ण) होता है। यदि दूसरे दिन चन्द्रोदय के बाद अष्टमी त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी हो, केवल उसी स्थिति में यह व्रत दूसरे दिन समाप्त होता है, अन्यथा अन्य प्रत्येक स्थिति में यह व्रत पहिले दिन ही ग्रहण किया जाता है। अर्थात् चन्द्रोदय व्यापिनी होना मुख्य कारक-तत्त्व है। निर्णयसिन्धु में स्पष्ट लिखा है-

'परदिने चन्द्रोदयादूर्ध्वं त्रिमुहूर्त्त-व्यापित्वे परैव ग्राह्या, अन्यथा पूर्वैव।।'

(9) जीवित्पुत्रिका व्रत

आश्विन कृष्ण अष्टमी को ही पुत्र के आयुरारोग्यलाभ तथा सर्वविध कल्याण के लिए जीवित्पुत्रिका या जीमूतवाहन व्रत का विधान धर्मशास्त्रकारों ने निर्दिष्ट किया है।

प्रायः स्त्रियां इस व्रत को करती हैं। प्रदोषव्यापिनी अष्टमी को स्वीकार करते हुए आचार्यों ने प्रदोषकाल में जीमूतवाहन के पूजन का विधान कहा है–

प्रदोषसमये स्त्रीभिः पूज्यो जीमूतवाहनः।

यदि दो दिन प्रदोषव्यापिनी अष्टमी हो तो परदिन को ही ग्राह्य करना चाहिए। फिर यदि सप्तमी उपरान्त अष्टमी हो तो वह भी ठीक है–

सप्तम्यामुदिते सूर्ये परतश्चाष्टमी भवेत्। तत्र व्रतोत्सवं कुर्यान्न कुर्यादपरेऽहनि।।

अष्टमी तिथि के बाद में पारणा करनी चाहिए–'**पारणं तु परदिने तिथ्यन्ते कार्यम्।।**' (वर्षकृत्य)

(10) सौभाग्यवती श्राद्ध

सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध (पार्वण/एकोद्दिष्ट श्राद्ध) नवमी तिथि में ही किया जाता है।

(11) इन्दिरा एकादशी व्रत

आश्विन कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम '**इन्दिरा**' है। इस व्रत से सब प्रकार के पापों से मुक्ति तथा पितरों को अक्षय सुख की प्राप्ति होती है। यदि इस दिन पिता आदि का श्राद्ध हो और उपवास के कारण श्राद्धीय अन्न के ग्रहण करने में संकोच हो तो उसे सूँघकर गौ को खिला दे और पारण के पश्चात् भोजन करें।

(12) संन्यासियों का महालय श्राद्ध

संन्यासियों या वनवासियों का महालयश्राद्ध पार्वण श्राद्ध पद्धति से ही अपराह्ण-व्यापिनी द्वादशी में किया जाता है, चाहे उनकी मृत्युतिथि कोई अन्य भी हो।

'यतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां विशेषतः।
द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विशेषतः।। (पृथ्वीचन्द्रोदयसंग्रहे)

(13) मघा–त्रयोदशी श्राद्ध

आश्विन कृष्णपक्ष की त्रयोदशी में पितृ श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य है। त्रयोदशी के दिन मघा नक्षत्र भी हो तो उसका और भी माहात्म्य लिखा गया है। आश्विन कृष्णपक्ष में केवल मघा नक्षत्र में भी यह श्राद्ध किया जाता है। यदि उसके पुत्र हो तो अपिण्ड श्राद्ध करें।

(14) अपमृत्यु (दुर्मरण) वालों का श्राद्ध

तिर्यग्योनि (कुत्ता, सर्प आदि के काटने से), विष-शास्त्रादि के घात/प्रहार से, किसी अन्य दुर्घटना से मरे हो या ब्रह्मघाती हुए हों, उन मृतों का श्राद्ध एकोद्दिष्ट विधि से चतुर्दशी तिथि में ही करना चाहिए। पिता, पितामह आदि यदि दो पूर्वज अपमृत्यु को प्राप्त हुए हों, तो उनके दो श्राद्ध एकोद्दिष्ट विधि से करें। यदि पिता, पितामह आदि तीन पूर्वज अपमृत्यु को प्राप्त हो गए हों, तो उनका श्राद्ध पार्वणविधि से करने का शास्त्रादेश है। **ध्यान रहे,** दुर्घटनादि से अपमृतों का यह श्राद्ध महालयपक्ष की चतुर्दशी तिथि को ही किया जाता है, चाहे उनकी मृत्यु किसी अन्य तिथिकाल में हुई हो। **यहाँ एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि–चतुर्दशी तिथि में जिनकी मृत्यु शस्त्र/दुर्घटनादि से न होकर स्वाभाविक सामान्य मृत्यु हुई हो, उनका श्राद्ध दूसरे दिन (अमावस्या को) करना चाहिए।**

यथा–'चतुर्दश्यां तु कुप्रजाः' (कूर्मपुराण)

तस्माच्छ्राद्धं न कर्त्तव्यं चतुर्दश्यां द्विजातिभिः। शस्त्रेण तु हतानां वै तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत्।। (कूर्मपुराण)

(15) अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध

जिन बन्धु-बान्धवों की मृत्युतिथि ज्ञात न हो, अथवा कोई तिथि का मतभेद हो, तो उनका महालय श्राद्ध आश्विन अमावस में किया जाता है।

(16) सर्वपितृ श्राद्ध

आश्विन अमावस में ही सभी पितरों का श्राद्ध करने की शास्त्राज्ञा है।

(17) फाल्गु योग

यदि आश्विन अमावस सोमवार के दिन आ जाए अर्थात् आश्वि. अमावस सोमवती हो, तो फाल्गुयोग होता है। पिहोवा तीर्थ (पृथूदक)-हरियाणा तथा कुरुक्षेत्र में भी इस पर्व पर भव्य मेले का आयोजन होता है तथा पवित्र सरोवर में स्नान का विशेष माहात्म्य माना गया है।

(18) 'गजच्छाया योग'

आश्विन अमावस के दिन सूर्य और चन्द्रमा-दोनों हस्त नक्षत्र में विद्यमान हो, तो '**गजच्छाया योग**' होता है। इस योग में श्राद्ध-दानादि का विशेष माहात्म्य है।

नोट–आगामी वर्ष के '**पंचांगदिवाकर**' में '**आश्विन शुक्लपक्ष**' के व्रत-पर्वों का तिथि-निर्णय, कृत-अकृत्य, विधि-विधान आदि दिए जाएंगे।

श्राद्ध पक्ष–पितृ–ऋण मुक्ति का मार्ग

(पितृपक्ष तथा मृत्युतिथि में श्राद्ध क्यों करें ?)

हिन्दू-संस्कृति में पितृपक्ष का बड़ा महत्त्व है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मृत्यु होने पर मनुष्य का जीवात्मा चन्द्रलोक की तरफ जाता है और ऊँचा उठकर पितृलोक में पहुँचता है। इन मृतात्माओं को अपने नियत स्थान तक पहुँचने की शक्ति प्रदान करने के लिए पिण्डदान और श्राद्ध का विधान किया गया है। श्राद्ध में पितरों के नाम पर यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन एवं दान भी किया जाता है।

वस्तुतः श्रद्धा से श्राद्ध शब्द बना है। मृत आत्मा के प्रति श्रद्धापूर्वक किए कार्य को श्राद्ध कहते हैं, श्राद्ध से श्रद्धा जीवित रहती है। पितरों के लिए श्रद्धा प्रकट करने का माध्यम केवल श्राद्ध ही है। यह हमारी संस्कृति की महानता है। तर्पण के द्वारा उनके जीवन का उत्थान होगा, उन्हें शान्ति मिलेगी तो उनकी अन्तरात्मा से आपके प्रति शान्तिदायक सद् प्रेरणाएँ निकलेंगी। अतः श्राद्धपक्ष में तर्पण-श्राद्ध अवश्य करना चाहिए।

वर्तमान समय में अधिकांश मनुष्य श्राद्ध को व्यर्थ समझकर उसे नहीं करते। जो लोग श्राद्ध करते हैं, उनमें कुछ तो यथाविधि नियमानुसार श्रद्धा के साथ श्राद्ध करते हैं। किन्तु अधिकांश लोग तो रस्म-रिवाज की दृष्टि से श्राद्ध करते हैं। वस्तुतः श्रद्धा-भक्ति द्वारा शास्त्रोक्त-विधि से किया हुआ श्राद्ध ही सर्वविध कल्याण प्रदान करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त समस्त श्राद्धों को यथासमय करते रहना चाहिए। जो लोग शास्त्रोक्त समस्त श्राद्धों को न कर सकें, उन्हें कम-से-कम क्षयाह-वार्षिक तिथि पर तथा आश्विन मास के पितृपक्ष में तो अवश्य ही अपने मृत पितृगण के मरणतिथि के दिन श्राद्ध करना चाहिए। पितृपक्ष के साथ पितरों का विशेष सम्बन्ध रहता है।

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से पितरों का दिन प्रारम्भ हो जाता है, जो अमावस्या तक रहता है। शुक्लपक्ष पितरों की रात्रि कही गई है। इसलिए मनुस्मृति में कहा गया है–मनुष्यों के एक मास के बराबर पितरों का एक अहोरात्र (दिन-रात) होता है। मास में दो पक्ष होते हैं। मनुष्यों का कृष्णपक्ष पितरों के कर्म का दिन और शुक्लपक्ष पितरों के सोने के लिए रात होती है।

यही कारण है कि आश्विन मास के कृष्णपक्ष-पितृपक्ष में पितृ श्राद्ध करने का विधान है। ऐसा करने से पितरों को प्रतिदिन भोजन मिल जाता है। इसीलिए शास्त्रों में पितृपक्ष में श्राद्ध करने की विशेष महिमा लिखी गई है। महर्षि जाबालि कहते हैं–

पुत्रानायुस्तथाऽऽरोग्यम् ऐश्वर्यमतुलं तथा।
प्राप्नोति पञ्चेमान् कृत्वा श्राद्धं कामांश्च पुष्कलान्।।

तात्पर्य यह है कि पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पुत्र, आयु, आरोग्य, अतुल ऐश्वर्य और अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

श्राद्ध में प्रयोजनीय एवं प्रशस्त विशेष बातें

(1) पावर्ण श्राद्ध एवं एकोद्दिष्ट श्राद्ध का समय

पूर्वाण्हे दैविकं श्राद्धमपराह्णे तु पावर्णम्।
एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातः वृद्धि निमित्तकम्।। (ज्योति.नि.) याज्ञवल्क्य

अर्थात् दैव सम्बन्धी कार्य पूर्वाह्ण में, पार्वण एवं अन्य पितृ श्राद्ध सम्बन्धी कृत्य अपराह्ण-काल में, एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न-काल में तथा नैमित्तिक एवं वृद्धि सम्बन्धी श्राद्ध कार्य प्रातःकाल में ग्रहण करें।

(2) श्राद्ध में आठ दुर्लभ प्रयोजनीय

श्राद्ध में कुछ बातें अत्यन्त महत्त्व की हैं, जैसे कुतप वेला-दिन का आठवाँ मुहूर्त्त (दिन में 11 बजकर, 36 मिनट से 12 बजकर 24 मिनट तक का समय) श्राद्ध लिए यह काल मुख्य रूप से प्रशस्त है। इसे ही कुतप वेला कहते हैं।

'**कुत्सित**' अर्थात् पाप को संतप्त करने के कारण इसे कुतप कहा गया है। मध्याह्नकाल, खड्गपात्र (गैंड़े के सींग से बना पात्र), नेपाल कम्बल, चाँदी, कुश, तिल, गौ और दौहित्र (कन्या का पुत्र)–ये आठों भी कुतप के समान ही फलदायी होने के कारण कुतप कहलाते हैं। श्राद्ध के लिए ये बड़े ही दुर्लभ प्रयोजनीय हैं। (मत्स्यपुराण)

(3) श्राद्ध में कुश तथा कृष्ण तिल की महिमा

कुश तथा काला तिल—ये दोनों भगवान् विष्णु के शरीर से प्रादुर्भूत हुए हैं। अतः ये श्राद्ध की रक्षा करने में सर्वसमर्थ हैं–ऐसा देवगण कहते हैं। समूलाग्र हरित (जड़ से अन्त तक हरे) तथा गोकर्णमात्र परिणाम के कुश श्राद्ध में उत्तम कहे गए हैं। (मत्स्यपुराण)

(4) श्राद्ध में रजत (चाँदी) की महिमा

श्राद्ध में पितरों के निमित्त पात्र के रूप में पलाश तथा महुआ आदि के वृक्षों के पत्तों के दोने तथा काष्ठ एवं हाथ से बनाए मिट्टी आदि के पात्रों का प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु इसके साथ ही सुवर्णमय एवं रजतमय पात्रों के प्रयोग की विधि है। मुख्य रूप से श्राद्ध में रजत (चाँदी)–का विशेष महत्त्व कहा गया है। पितरों के निमित्त यदि चाँदी से बने हुए या चाँदी से मढ़े हुए पात्रों द्वारा श्रद्धापूर्वक जलमात्र भी प्रदान कर दिया जाए तो वह अक्षय तृप्तिकारक होता है। इसी प्रकार पितरों के लिए अर्घ, पिण्ड और भोजन के पात्र भी चाँदी के ही प्रशस्त माने गए हैं। चूँकि चाँदी शिवजी के नेत्र से उद्भूत हुई है, इसलिए यह पितरों को परम प्रिय है। यहाँ तक लिखा है कि यदि चाँदी का पात्र देने का सामर्थ्य न हो तो चाँदी के विषय में कथोपकथन (चर्चा), दर्शन अथवा दान से कार्य सम्पन्न हो सकता है। (मत्स्यपुराण)

(5) श्राद्ध में अत्यन्त पवित्र प्रयोजनीय

दौहित्र (कन्या का पुत्र), कुतप (दिन का आठवाँ मुहूर्त्त) और तिल–ये तीन तथा चाँदी का दान और भगवत्स्मरण–ये सब श्राद्ध में अत्यन्त पवित्र माने गए हैं। (विष्णुपुराण)

(6) श्राद्ध में महत्त्व के सात प्रयोजनीय

दूध, गङ्गाजल, मधु, तसर का कपड़ा, दौहित्र, कुतप और तिल–ये सात श्राद्ध में बड़े महत्त्व के प्रयोजनीय हैं। (हेमाद्रि)

(7) श्राद्ध में तुलसी की महिमा

तुलसी की गन्ध से पितृगण प्रसन्न होकर गरुड़ पर आरूढ़ हो विष्णुलोक को चले जाते हैं। तुलसी से पिण्डार्चन किए जाने पर पितरलोग प्रलयपर्यन्त तृप्त रहते हैं। (श्राद्धकल्पता-मार्कण्डेय)

(8) श्राद्ध में तीन गुणों की आवश्यकता

पवित्रता, अक्रोध, अचापल्य (जल्दबाजी न करना)–ये तीन प्रशंसनीय गुण हैं। अत: श्राद्धकर्त्ता में होने आवश्यक हैं। (मनुस्मृति)

(9) श्राद्ध में ग्राह्य पुष्प

श्राद्ध में मुख्य रूप से सफेद पुष्प ग्राह्य हैं। सफेद में सुगन्धित पुष्प की विशेष महिमा है। मालती, जूही, चम्पा–प्राय: सभी सुगन्धित श्वेत पुष्प, कमल तथा तुलसी और भृङ्गराज आदि पुष्प प्रशस्त है। स्मृतिसार के अनुसार अगस्त्य पुष्प, भृङ्गराज, तुलसी, शतपत्रिका, चम्पा, तिलपुष्प–ये छ: पितरों को प्रिय होते हैं। (निर्णयसिन्धु)

(10) श्राद्धदेश

गया, पुष्कर, प्रयाग, कुशावर्त (हरिद्वार) आदि तीर्थों में श्राद्ध की विशेष महिमा है। सामान्यत: घर में, गोशाला में, देवालय, गङ्गा, यमुना, नर्मदा आदि पवित्र नदियों के तट पर श्राद्ध करने का अत्यधिक महत्त्व है। श्राद्ध–स्थान को गोबर-मिट्टी से लेपनकर शुद्ध कर लेना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर ढाल वाली श्राद्धभूमि प्रशस्त मानी गई है। (श्राद्धप्रकाश)

(11) श्राद्ध में प्रशस्त अन्न फलादि

ब्रह्मा जी ने पशुओं की सृष्टि करते समय सबसे पहले गौओं को रचा है ; अत: श्राद्ध में उन्हीं का दूध, दही और घी काम में लेना चाहिए। जौं, धान, तिल, गेहूँ, मूँग, साँवाँ, सरसों का तेल, तिन्नी का चावल, कँगनी आदि से पितरों को तृप्त करना चाहिए। आम, अमड़ा, बेल, अनार, बिजौरा, पुराना आँवला, खीर, नारियल, फालसा, नारंगी, खजूर, अंगूर, नीलकैथ, परवल, चिरौंजी, बेर, जंगली बेर, इन्द्र, जौं और भतुआ–इनको श्राद्ध में यत्नपूर्वक लेना चाहिए। जौं, कंगनी, मूँग, गेहूँ, धान, तिल, मटर, कचनार और सरसों–इनका श्राद्ध में होना अच्छा है। (मार्कण्डेयपुराण)

(12) श्राद्ध में प्रशस्त ब्राह्मण

शील, शौच एवं प्रज्ञा से युक्त सदाचारी तथा सन्ध्या-वन्दन एवं गायत्री-मन्त्र का जप करने वाले क्षोत्रिय ब्राह्मण को श्राद्ध में निमन्त्रण देना चाहिए। तप, धर्म, दया, दान, सत्य, ज्ञान, वेदज्ञान, कारुण्य, विद्या, विनय तथा अस्तेय (अचौर्य) आदि गुणों से युक्त ब्राह्मण इसका अधिकारी है।

(13) प्रशस्त आसन

रेशमी, नेपाली कम्बल, ऊन, काष्ट, तृण, पर्ण, कुश आदि के आसन श्रेष्ठ हैं। काष्ठासनों में भी शमी, काश्मरी, शल्ल, कदम्ब, जामुन, आम, मौलसिरी एवं वरुण के आसन श्रेष्ठ हैं। इनमें भी लौह की कील नहीं होनी चाहिए।

(14) श्राद्ध में भोजन के समय मौन आवश्यक

श्राद्ध में भोजन के समय मौन रहना चाहिए। माँगने या प्रतिषेध करने का संकेत हाथ से ही करना चाहिए। भोजन करते समय ब्राह्मण से अन्न कैसा है, यह नहीं पूछना चाहिए तथा भोजनकर्त्ता को भी श्राद्धान्न की प्रशंसा या निन्दा नहीं करनी चाहिए। (श्राद्धदीपिका)

(15) पिण्ड की अष्टाङ्गता

अन्न, तिल, जल, दूध, घी, मधु, धूप और दीप–ये पिण्ड के आठ अङ्ग हैं।

(16) पिण्ड का प्रमाण

एकोद्दिष्ट तथा सपिण्ड में कैथ (कपित्थ)–के फल के बराबर, मासिक तथा वार्षिक श्राद्ध में नारियल के बराबर, तीर्थ में तथा दर्शश्राद्ध में मुर्गी के अण्डे के बराबर तथा गया एवं पितृपक्ष में आँवले के बराबर पिण्ड देना चाहिए। (श्राद्धसंग्रह)

(17) श्राद्ध में पात्र

सोने, चाँदी, काँसे और ताँबे के पात्र पूर्व-पूर्व उत्तमोत्तम हैं। इनके अभाव में पलाश आदि अन्य वृक्ष के पत्तल से काम लेना चाहिए, पर केले के पत्ते में श्राद्ध भोजन सर्वथा निषिध है। साथ ही श्राद्ध में पितरों के भोजन के लिये मिट्टी के पात्रका भी निषेध है। (श्राद्ध चन्द्रिका)

(18) श्राद्ध में पाद–प्रक्षालन–विधि

श्राद्ध में ब्राह्मण को बैठाकर पैर धोना चाहिए। खड़े होकर पैर धोने पर पितर निराश होकर चले जाते हैं। पत्नी को दाहिनी ओर खड़ा करना चाहिए। उसे बाँयें रहकर जल नहीं गिराना चाहिए। अन्यथा वह श्राद्ध आसुरी हो जाता है और पितरों को प्राप्त नहीं होता। (स्मृत्यन्तर)

श्राद्ध में वर्ज्य–निषिद्ध बातें

श्राद्ध में कुछ ऐसी बातें हैं जो वर्ज्य हैं अर्थात् निषिद्ध हैं, उन्हें श्राद्ध के दिन नहीं करना चाहिए–

(1) श्राद्धकर्ता के लिए निषिद्ध सात बातें

दन्तधावन (दतुअन आदि न करे), ताम्बूल (पान आदि न खाएं), तैलमर्दन, उपवास, स्त्री सम्भोग, ओषध (दवाई आदि न लें) तथा परान्नभक्षण (दूसरे का भोजन न करें)–ये सात बातें *श्राद्धकर्ता के लिए वर्जित हैं। (श्राद्धकल्प)*

(2) श्राद्ध भोक्ता के लिए आठ वस्तुओं का निषेध

पुनर्भोजन (दुबारा भोजन न करे), यात्रा, भार ढोना, परिश्रम, मैथुन, दान, प्रतिग्रह तथा होम–श्राद्धान्न भोजन करने वाले को इन आठ बातों से बचना चाहिए। (विष्णुरहस्य)

(3) श्राद्ध में लोहे के पात्र का सर्वथा निषेध

श्राद्ध में लोहे के पात्र का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिए। लोहपात्र में भोजन करना भी नहीं चाहिए तथा ब्राह्मण को भोजन कराना भी नहीं चाहिए। यहाँ तक कि भोजनालय या पाकशाला में भी उसका कोई उपयोग न करें। केवल शाक, फल आदि के काटने में उसका उपयोग कर सकते हैं, लोहे के दर्शन मात्र से पितर वापस लौट जाते हैं।

(4) श्राद्ध में निषिद्ध कुश

चिता में बिछाये हुए, रास्ते में पड़े हुए, पितृतर्पण एवं ब्रह्मयज्ञ में उपयोग में लिए हुए, बिछौने, गन्दगी से और आसन में से निकाले हुए, पिण्डों के नीचे रखे हुए तथा अपवित्र कुश निषिद्ध समझे जाते हैं। (श्राद्धसंग्रह)

(5) श्राद्ध में निषिद्ध गन्ध

श्राद्ध में श्रीखण्ड, चन्दन, खस, कर्पूरसहित सफेद चन्दन ही पिताकार्य के लिए प्रशस्त हैं। अन्य पुरानी लकड़ियों के चन्दन तथा निर्गन्ध काष्ठों का चन्दन के लिए उपयोग नहीं करना चाहिए। कस्तूरी, रक्तचन्दन, गोरोचन, सल्लक तथा पूतिक आदि निषिद्ध हैं। (श्राद्धप्रकाश)

(6) श्राद्ध में त्याज्य पुष्प

कदम्ब, केवड़ा, मौलसिरी, बेलपत्र, करवीर, लाल तथा काले रंग के सभी फूल तथा उग्र गन्ध वाले और गन्ध रहित सभी फूल–श्राद्ध में वर्जित हैं।

(7) निषिद्ध धूप

अग्नि पर दूषित गुग्गुल अथवा बुरा गोंद अथवा केवल घी डालना निषिद्ध है। (मदनरत्न)

(8) श्राद्ध में निषिद्ध ब्राह्मण

श्राद्ध में चोर, पतित, नास्तिक, मूर्ख, धूर्त, मांसविक्रयी, व्यापारी, नौकर, कुनखी, काले दाँत वाले, गुरुद्वेपी, शूद्रपति, भृतकाध्यापक–भृतकाध्यापित (शुल्कों से पढ़ाने या पढ़ने वाला), काना, जुआरी, अन्धा, कुश्ती, सिखाने वाला, नपुंसक इत्यादि अधम ब्राह्मणों को त्याग देना चाहिए। (कूर्मपुराण)

(9) श्राद्ध में निषिद्ध अन्न

जिसमें बाल और कीड़े पड़ गए हों, जिसे कुत्तों ने देख लिया हो, जो बासी एवं दुर्गन्धित हो–ऐसी वस्तु का श्राद्ध में उपयोग न करे। बैंगन और शराब का भी त्याग करे। जिस अन्न पर पहने हुए वस्त्र की हवा लग जाए, वह भी श्राद्ध में वर्जित है। राजमाष, मसूर, अरहर, गाजर, कुम्हड़ा, गोल लौकी, बैंगन, शलजम, हींग, प्याज, लहसुन, काला नमक, काला जीरा, सिंघाड़ा, जामुन, पिप्पली, सुपारी, कुलथी, कैथ, महुआ, अलसी, पीली सरसों, चना—ये सब वस्तुएँ श्राद्ध में वर्जित हैं।

(10) श्राद्ध में मांस का निषेध

बृहत्पाराशर में कहा गया है कि श्राद्ध में मांस देने वाला व्यक्ति मानो चन्दन की लकड़ी जलाकर उसका कोयला बेचता है। वह तो वैसा मूर्ख है जैसे कोई बालक अगाध कूएँ में अपने वस्तु डालकर फिर उसे पाने की इच्छा करता है। श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि न तो कभी मांस खाना चाहिए न श्राद्ध में ही देना चाहिए। सात्त्विक अन्न-फलों से पितरों की सर्वोत्तम तृप्ति होती है। मनु का कहना है कि मांस न खाने वाले की सारी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। वह जो कुछ सोचता है, जो कुछ चाहता है, जो कुछ कहता है, सब सत्य हो जाता है। (वृहद्पराश्वर)

श्राद्ध से जगत् की तृप्ति

मनुष्य को पितृगण की सन्तुष्टि तथा अपने कल्याण के लिये श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। श्राद्धकर्ता केवल अपने पितरों को ही तृप्त नहीं करता, बल्कि वह सम्पूर्ण जगत् को सन्तुष्ट करता है–

यो वा विधानतः श्राद्धं कुर्यात् स्वविभवोचितम्। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत् प्रीणाति मानवः।। ब्रह्मेन्द्ररुद्रनासत्यसूर्यानलसुमारुतान्। विश्वेदेवान् पितृगणान् पर्यग्निमनुजान पशून्।। सरीसृपान् पितृगणान् यच्चान्यद्भूतसंज्ञितान्। श्राद्धं श्रद्धान्वितः कुर्वन् प्रीणयत्यखिलं जगत्।। (ब्रह्मपुराण)

'जो मनुष्य अपने वैभव के अनुसार विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह साक्षात् ब्रह्मा से लेकर तृणपर्यन्त समस्त प्राणियों को तृप्त करता है। श्रद्धापूर्वक विधि-विधान से श्राद्ध करने वाला मनुष्य ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, नासत्य (अश्विनीकुमार), सूर्य, अनल (अग्नि), वायु, विश्वेदेव, पितृगण, मनुष्यगण, पशुगण, समस्त भूतगण तथा सर्पगण को भी सन्तुष्ट करता हुआ सम्पूर्ण जगत् को सन्तुष्ट करता है।'

विष्णुपुराण में कहा है–श्रद्धायुक्त होकर श्राद्धकर्म करने से केवल पितृगण ही तृप्त नहीं होते बल्कि ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, दोनों अश्विनीकुमार, सूर्य, अग्नि, आठों वसु, वायु, विश्वेदेव, पितृगण, पक्षी, मनुष्य, पशु, सरीसृप और ऋषिगण आदि तथा अन्य समस्त भूतप्राणी तृप्त होते हैं।

इस प्रकार गृहस्थ को चाहिए कि वह हव्य से देवताओं का, कव्य से पितृगणों का तथा अन्न से अपने बन्धुओं का सत्कार तथा पूजन करें। श्रद्धापूर्वक देव, पितृ और बान्धवों के पूजन से मनुष्य परलोक में पुष्टि, विपुल यश तथा उत्तम लोकों को प्राप्त करता है।

यहाँ तक कहा है कि जो लोग देवता, ब्राह्मण, अग्नि और पितृगण की पूजा करते हैं, वे सबकी अन्तरात्मा में रहने वाले विष्णु की ही पूजा करते हैं–

ये यजन्ति पितृन् देवान् ब्राह्मणांश्च हुताशनान्। सर्वभूतान्तरात्मानं विष्णुमेव यजन्ति ते।। (यमस्मृति)

तिथि, नक्षत्र, योग, करणादि के नामों की तालिका व उनके स्वामी

पंचांग में ग्रह गणित, व्रत-त्यौहार आदि विविध विषयों के अतिरिक्त उसके पाँच अंगों का मुख्यत: उल्लेख रहता है। ''तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योग: करणमेव च। यत्रैतत् पंचकं स्पष्टं पंचांग तदुदीरितम्।।'' अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण–इन पाँचों के स्पष्ट मान की गणना जिसमें हो, उसे पंचांग कहते हैं।

तिथियाँ	तिथियों के स्वामी	तिथि नाम
प्रतिपदा	अग्नि	नन्दा
द्वितीया	ब्रह्मा	भद्रा
तृतीया	गौरी	जया
चतुर्थी	गणेश	रिक्ता
पंचमी	सर्प (शेषनाग)	पूर्णा
षष्ठी	स्कन्द (कार्तिकेय)	नन्दा
सप्तमी	सूर्यदेव	भद्रा
अष्टमी	शिवजी	जया
नवमी	दुर्गा	रिक्ता
दशमी	यम	पूर्णा
एकादशी	विश्वेदेवा	नन्दा
द्वादशी	श्रीविष्णु	भद्रा
त्रयोदशी	कामदेव	जया
चतुर्दशी	शिवजी	रिक्ता
पूर्णिमा	चन्द्रमा	पूर्णा
अमावस्या	पितर	पूर्णा

नक्षत्र	देवता	स्वामी ग्रह
1. अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु
2. भरणी	यम	शुक्र
3. कृतिका	अग्नि	सूर्य
4. रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र
5. मृगशिर	चन्द्रमा	मंगल
6. आर्द्रा	रुद्र (शिव)	राहु
7. पुनर्वसु	आदित्य	गुरु
8. पुष्य	बृहस्पति	शनि
9. आश्लेषा	सर्प	बुध
10. मघा	पितर	केतु
11. पूर्वाफाल्गुनी	भग	शुक्र
12. उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	सूर्य
13. हस्त	सूर्य	चन्द्र
14. चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल
15. स्वाती	वायु	राहु
16. विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु
17. अनुराधा	मित्र (सूर्य)	शनि
18. ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध
19. मूल	निर्ऋति (राक्षस)	केतु
20. पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र
21. उत्तराषाढ़ा	विश्व देवा	सूर्य
22. अभिजित	ब्रह्मा	सूर्य/चं.
23. श्रवण	विष्णु	चन्द्र
24. धनिष्ठा	वसु	मंगल
25. शतभिषा	वरुण	राहु
26. पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद	गुरु
27. उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्य	शनि
28. रेवती	पूषा	बुध

योग	स्वामी	शुभ-अशुभ
1. विष्कम्भ	यम	अशुभ
2. प्रीति	विष्णु	शुभ
3. आयुष्मान	चन्द्र	शुभ
4. सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ
5. शोभन	बृहस्पति	शुभ
6. अतिगण्ड	चन्द्र	अशुभ
7. सुकर्मा	इन्द्र	शुभ
8. धृति	जल	शुभ
9. शूल	सर्प	अशुभ
10. गण्ड	अग्नि	अशुभ
11. वृद्धि	सूर्य	शुभ
12. ध्रुव	भूमि	शुभ
13. व्याघात	वायु	अशुभ
14. हर्षण	भग	शुभ
15. वज्र	वरुण	अशुभ
16. सिद्धि	गणेश	शुभ
17. व्यतीपात	रूद्र	अशुभ
18. वरीयान	कुबेर	शुभ
19. परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
20. शिव	मित्र	शुभ
21. सिद्ध	कार्तिकेय	शुभ
22. साध्य	सावित्री	शुभ
23. शुभ	लक्ष्मी	शुभ
24. शुक्ल	पार्वती	शुभ
25. ब्रह्म	अश्विनी कु.	शुभ
26. ऐन्द्र	पितर	अशुभ
27. वैधृति	दिति	अशुभ

विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात–वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ–योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटियां), शूल की प्रथम 5, गण्ड–अतिगण्ड की प्रथम 9 घड़ियां ही विशेषतया त्याज्य तथा वैधृति–व्यतिपात का सम्पूर्ण काल त्याज्य माना गया है।

करण नाम

तिथि	शुक्लपक्ष पूर्वार्द्ध	शुक्लपक्ष उत्तरार्द्ध	तिथि	कृष्णपक्ष पूर्वार्द्ध	कृष्णपक्ष उत्तरार्द्ध
प्रतिपदा	किंस्तुघ्न	बव	प्रतिपदा	बालव	कौलव
द्वितीया	बालव	कौलव	द्वितीया	तैतिल	गर
तृतीया	तैतिल	गर	तृतीया	वणिज	विष्टि
चतुर्थी	वणिज	विष्टि	चतुर्थी	बव	बालव
पंचमी	बव	बालव	पंचमी	कौलव	तैतिल
षष्ठी	कौलव	तैतिल	षष्ठी	गर	वणिज
सप्तमी	गर	वणिज	सप्तमी	विष्टि	बव
अष्टमी	विष्टि	बव	अष्टमी	बालव	कौलव
नवमी	बालव	कौलव	नवमी	तैतिल	गर
दशमी	तैतिल	गर	दशमी	वणिज	विष्टि
एकादशी	वणिज	विष्टि	एकादशी	बव	बालव
द्वादशी	बव	बालव	द्वादशी	कौलव	तैतिल
त्रयोदशी	कौलव	तैतिल	त्रयोदशी	गर	वणिज
चतुर्दशी	गर	वणिज	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
पूर्णिमा	विष्टि	बव	अमावस	चतुष्पद	नाग

	करणों के स्वामी		करणों में उपादेय कर्म
चरकरण	बव	इन्द्र	पौष्टिक कर्म।
	बालव	ब्रह्मा	स्वाध्याय, यज्ञ, दानादि धार्मिक कृत्य।
	कौलव	मित्र	मैत्रीकरण एवं स्त्रीकर्म।
	तैतिल	विश्व	सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म।
	गर	भूमि	हल, प्रवहरण व बीजारोपण।
	वणिज	लक्ष्मी	व्यापार करना।
	विष्टि	यम	भद्रा में अग्नि, युद्ध, विषादि, क्रूर कर्म।
स्थिर करण	शकुनि	कलियु.	मंत्र-साधना, पितृकर्म, औषध कर्मादि।
	चतुष्पद	रुद्र	राज्य प्रशासनिक कर्म, पितृकर्म।
	नाग	सर्प	विषादि रसायानिक कर्म, पितृादि कर्म।
	किंस्तुघ्न	मरुत्	मांगलिक कर्म।

वि. संवत् २०८०, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 22 मार्च से 6 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1444
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

प्रातः शनि पूर्व में दृश्य होगा। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्त में, गुरु पश्चिम क्षितिज में तथा शुक्र उससे ऊपर होगा। ता. 30 मार्च से बुध भी सायं पश्चिम में दिखेगा। ता. 31 मार्च से गुरु पश्चिम में अस्त (अदृश्य) हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	चैत्र शक	शव्वा. मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३०:०५	१	बुध	३४:३०	उ.भा.	२२:२५	शुक्ल ब्रह्म	६:४८ ५९:१३	किं	७:३८	चै	29	22	९	मीन	'नल' परं 'पिंगल'* नाम वि. संवत् २०८० प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) (A)	११:०६:५७:००	6:34	18:36
३०:१३	२	गुरु	२९:३३	रेव.	१९:०३	ऐन्द्र	५२:५५	बा	२:०२	2	30	23	१०	मे.१९:०३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त १९:०३ (14:09), शुक्र भर. में ८:४८	११:०७:५७:३०	6:32	18:37
३०:१५	३	शुक्र	२६:१३	अश्वि	१७:०८	वैधृ	४७:५८	ग	२६:१३	3	रम	24	११	मेष	भ. ५५:२८, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, बुध रेवती में ३२:३०, (B)	११:०८:५७:००	6:31	18:37
३०:२०	४	शनि	२४:४५	भर.	१७:०३	विष्क	४४:३३	वि	२४:४५	4	2	25	१२	वृ.३२:१८	भ. २४:४५ तक, गुरु रेवती (३) में १४:४०, दमनक चतुर्थी	११:०९:५६:२९	6:30	18:38
३०:२५	५	रवि	२५:१०	कृति.	१८:५०	प्रीति	४२:३८	बा	२५:१०	5	3	26	१३	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी, हय-व्रत	११:१०:५५:५६	6:29	18:39
३०:३०	६	चन्द्र	२७:३३	रोहि.	२२:३०	आयु	४२:१०	तै	२७:३३	6	4	27	१४	मि.५४:५५	स्कन्द षष्ठी व्रत, मंगल आर्द्रा में ११:२०	११:११:५५:१८	6:27	18:39
३०:३५	७	मंग	३१:३३	मृग.	२७:४५	सौभा	४२:५३	व	३१:३३	7	5	28	१५	मिथुन	भ. ३१:३३ से, (• = देखें पृष्ठ 16)	११:१२:५४:४१	6:26	18:40
३०:४०	८	बुध	३६:४८	आर्द्रा	३४:१५	शोभ	४४:२८	वि	४:११	8	6	29	१६	मिथुन	भ. ४:११ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, बुधाष्टमी, अशोकाष्टमी (C)	११:१३:५४:०३	6:25	18:41
३०:४३	९	गुरु	४२:४८	पुन.	४१:२८	अति	४६:३५	बा	९:४८	9	7	30	१७	क.२४:३८	श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र-समाप्त, श्रीरामनवमी, बुध पश्चिम में उदय 18:39 (घं.मिं.)	११:१४:५३:२०	6:24	18:41
३०:५०	१०	शुक्र	४९:०३	पुष्य	४८:५८	सुक	४८:५५	तै	१५:५६	10	8	31	१८	कर्क	सूर्य रेवती में ४८:०५, बुध अश्वि. १ मेष में २१:३३ (14:59), गुरु पश्चिम(D)	११:१५:५२:३१	6:22	18:42
३०:५५	११	शनि	५४:५८	अश्ले	५६:०८	धृति	५०:५८	व	२२:०१	11	9	अप्रै	१९	सिं.५६:०८	भ. २२:०१ से ५४:५८ तक, कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त) (देखें पृ. 16)(E)	११:१६:५१:४३	6:21	18:43
३०:५८	१२	रवि	६०:००	मघा	६०:००	शूल	५२:३०	ब	२७:३७	12	10	2	२०	सिंह	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव) (देखें पृष्ठ 16), श्रीविष्णु दमनोत्सव	११:१७:५०:५५	6:20	18:43
३१:०३	१२	चन्द्र	०:१५	मघा	२:४३	गण्ड	५३:२३	बा	०:१५	13	11	3	२१	सिंह	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र कृति. में २१:५३, अनङ्ग-त्रयोदशी (देखें पृष्ठ 16)	११:१८:५०:०२	6:19	18:44
३१:१०	१३	मंग	४:३३	पू.फा.	८:१८	वृद्धि	५३:२५	तै	४:३३	14	12	4	२२	क.२४:३३	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	११:१९:४९:०७	6:17	18:45
३१:१३	१४	बुध	७:४०	उ.फा.	१२:४८	ध्रुव	५२:३०	व	७:४०	15	13	5	२३	कन्या	भ. ७:४० से ३८:३८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिव-दमनोत्सव	११:२०:४८:१०	6:16	18:45
३१:१८	१५	गुरु	९:३५	हस्त	१६:०८	व्या.	५०:४०	ब	९:३५	16	14	6	२४	तु.४७:२०	चैत्र-पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, शुक्र वृष में ११:५० (10:59) (F)	११:२१:४७:१३	6:15	18:46

'पिंगल' नाम संवत्सर देखें पृ. 16

M Katyayana

(A) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, संवत्सरफल-श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी पड़वा, गंडमूल 15:32 बाद, शक चैत्र एवं संवत् 1945 प्रारम्भ (B) रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, 'पिंगल' नामक गुरु संवत्सर प्रारम्भ (C) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-काँगड़ादेवी-नैनादेवी (हि.प्र.), अन्नपूर्णा पूजन (D) में अस्त 6:24, नवरात्र व्रत पारणा (E) लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव (F) श्रीहनुमान-जयन्ती (दक्षिण-भारत)

बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 29 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	२	११	११	०	१०	०	६
१३	१२	७	२५	२४	२०	८	११	११
५१	४१	३२	२६	१३	१६	१३	२५	२५
४६	४२	५	५२	१८	९	५७	१४	१४
59 20	718 28	29 36	115 42	14 24	71 19	6 20	3 11	3 11
उभा ४	आर्द्रा २	आर्द्रा १	रेव ३	रेव ३	भर ३	शत. १	अश्वि ४	स्वा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	ठ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 29 मार्च



गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 6 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	२	०	११	०	१०	०	६
२१	१९	११	९	२६	२९	९	१०	१०
४५	३१	३२	३०	८	४३	३	५९	५९
२२	२१	४०	२४	४६	५५	१६	४८	४८
59 2	768 9	30 38	87 46	14 28	70 30	5 57	3 11	3 11
रेव २	हस्त ३	आर्द्रा २	अश्वि ३	रेव ३	कृति १	शत १	अश्वि ४	स्वा. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 6 अप्रैल



चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (22 मार्च, बुधवार) से 'शिवविंशति' का 'नल' परन्तु चैत्र शुक्ल तृतीया (24 मार्च, शुक्रवार) से संवत्-पर्यन्त 'पिंगल' नामक संवत्सर वि. संवत् में रहेगा। (देखें पृष्ठ 16)। आगामी संवत्-काल के मध्य व्रतानुष्ठान, दान, होमादि शुभ कार्यों के संकल्प में 'पिंगल' संवत्सर के नाम का ही प्रयोग होगा। नव संवत् का राजा 'बुध' तथा मन्त्री 'शुक्र' होने से आगामी वर्ष राष्ट्राध्यक्षों के सामने अचानक संकट उपस्थित होने से विनाशक हथियारों की दौड़ (खरीद-फरोख्त) तथा परस्पर टकराव बढ़ेंगे। आर्थिक तथा वैश्विक अस्थिरताओं के मध्य लोग व्यथित रहेंगे। पैट्रोल-डीज़ल से सम्बन्धित लाखों वाहनों का नाश अर्थात् अनुपयोगी बन जाएंगे। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, नेताओं, विद्वानों की गैरकानूनी एवं देश-विरोधी गतिविधियां उजागर होंगी। कुछ लोगों में सुख-साधनों एवं उपभोग्य वस्तुओं का आकर्षण बढ़ेगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (22 मार्च, बुधवार) को शुभ मुहूर्त में ॐकार सहित श्रीगणेश, विष्णु, शिव, श्रीदुर्गा आदि पंचदेवों की पूजार्चना करनी चाहिए। ब्राह्मणमुख से संवत्-राजादि के फलश्रवण के बाद श्रीदुर्गा/गणेश प्रतिमा के सम्मुख प्रतिपदा से नवमी तक अखण्ड दीप-ज्योति प्रज्वलित करके संकल्पपूर्वक नित्य श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करने का विधान है। पूजनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन तथा यथाशक्ति पंचांगादि धर्म-ग्रंथ, फल, वस्त्र, मिष्ठान्न आदि का दान करना शुभ होता है। अन्तिम नवरात्र (या दशमी) के दिन हरी दूर्वा को पूजार्चन के पश्चात् नदी/नहर में विसर्जन करने की परम्परा है। नवरात्रों (विशेषकर प्रतिपदा को) में नीम की कोमल पत्तों एवं पुष्पों (कपोलों) का चूर्ण बनाकर उसमें उचित मात्रा में सेंधा नमक, काली-मिर्च, हींग, ईमली, जीरा, अजवायन, मिश्री (या शक्कर) सभी वस्तुएँ पीसकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर त्वचा विकार, कुष्ट आदि रक्त विकारों का भय नहीं रहता तथा आरोग्यता बनी रहती है। **लोक-भविष्य–**चैत्र मास में पाँच बुधवार और बृहस्पतिवार आने से आगामी तीन महीनों में ज़बरदस्त महँगाई हो। विशेषकर गन्ना, तेल, दूध आदि रसदार वस्तुओं के भावों में आशातीत तेजी होगी।

वि. संवत् २०८०, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 7 से 20 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1444
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु:

प्रात: शनि पूर्व में होगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, उससे कुछ ऊपर शुक्र होगा। इसी समय मंगल पश्चिमकपाल में दिखेगा। गुरु अस्त है।

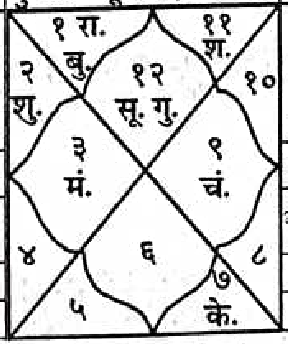
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	चैत्र शक	रमजान मु.	अप्रैल	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३१:२३	१	शुक्र	१०:१८	चित्रा	१८:१८	हर्ष	४७:५८	कौ	१०:१८	17	15	7	२५	तुला	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	११:२२:४६:१२	6:14	18:47
३१:२५	२	शनि	९:५५	स्वा	१९:२५	वज्र	४४:२३	ग	९:५५	18	16	8	२६	तुला	भ. ३९:१३ से, बुध भरणी में ४३:५५, गुरु रेवती ४ में ७:४३	११:२३:४५:१०	6:13	18:47
३१:३३	३	रवि	८:३३	विशा	१९:३३	सिद्धि	४०:०५	वि	८:३३	19	17	9	२७	वृ. ४:३८	भ. ८:३३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	११:२४:४४:०४	6:11	18:48
३१:३८	४	चन्द्र	६:१०	अनु	१८:४३	व्य.	३५:०३	बा	६:१०	20	18	10	२८	वृश्चिक	सती अनुसूइया जयन्ती, गण्डमूल 13:39 बाद	११:२५:४२:५७	6:10	18:49
३१:४०	५	मंग	२:५३	ज्ये.	१७:०३	वरी.	२९:१८	तै	२:५३	21	19	11	२९	ध.१७:०३	भ. ५८:४८ से, गण्डमूल विचार	११:२६:४१:४९	6:9	18:49
अवम्	६	मंग	५८:४८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३१:४५	७	बुध	५४:०३	मूल	१४:३८	परि.	२२:५८	वि	२६:२६	22	20	12	३०	धनु	भ. २६:२६ तक, गण्डमूल 11:59 तक	११:२७:४०:४०	6:8	18:50
३१:५०	८	गुरु	४८:४०	पू.षा.	११:३०	शिव	१६:०५	बा	२१:२२	23	21	13	३१	म.२५:३८		११:२८:३९:२९	6:7	18:51
३१:५५	९	शुक्र	४२:५३	उ.षा.	७:५३	सिद्ध	८:५०	तै	१५:४७	24	22	14	वैशा	मकर	**सूर्य** अश्वि. १ **मेष में २२:१३** (14:58), **वैशाख संक्रान्ति** मु. ३०, **(A)**	११:२९:३८:१४	6:5	18:51
३२:००	१०	शनि	३६:४५	श्रव. धनि.	३:५० ५९:३०	साध्य शुभ	१:१० ५३:१८	व	९:४९	25	23	15	२	कुं.३१:४०	भ. ९:४९ से ३६:४५ तक, **पंचक प्रारम्भ ३१:४०** (18:44), शनि **(B)**	००:००:३६:५९	6:4	18:52
३२:०५	११	रवि	३०:३०	शत.	५५:१०	शुक्ल	४५:२५	ब	३:३८	26	24	16	३	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	००:०१:३५:४४	6:3	18:53
३२:०८	१२	चन्द्र	२४:२३	पू.भा.	५१:०५	ब्रह्म	३७:४३	तै	२४:२३	27	25	17	४	मी.३७:०५	**सोम प्रदोष व्रत,**	००:०२:३४:२६	6:2	18:53
३२:१३	१३	मंग	१८:३८	उ.भा.	४७:३०	ऐन्द्र	३०:२०	व	१८:३८	28	26	18	५	मीन	भ. १८:३८ से ४६:०४ तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 25:01 से	००:०३:३३:०६	6:1	18:54
३२:१८	१४	बुध	१३:३०	रेव.	४४:४३	वैधृ.	२३:३३	श	१३:३०	29	27	19	६	मे.४४:४३	**पंचक समाप्त ४४:४३** (23:53), पितृकार्येषु अमावस, गण्डमूल विचार	००:०४:३१:४५	6:0	18:55
३२:२०	३०	गुरु	९:२०	अश्वि	४३:००	विष्क	१७:३३	ना	९:२०	30	28	20	७	मेष	**वैशाख अमावस** (स्नानदानादि), सूर्य सायन वृष में १९:२३ (13:44), **(C)**	००:०५:३०:२१	5:59	18:55

(A) पुण्यकाल सं. प्रात: 8:34 बाद, शुक्र रोहिणी में ४६:०८ **(B)** शत. (२) में ५६:५० **(C) ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,** मेला पिंजौर (हरियाणा), गण्डमूल 23:11 तक

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 13 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	२	०	११	१	१०	०	६
२८	२३	१५	१७	२७	७	९	१०	१०
३७	३५	९	५२	५०	५५	४३	३७	३७
५८	४४	२६	१	६	६	४२	३३	३३
58 50	851 6	31 24	48 31	14 27	69 43	5 33	3 11	3 11
रेव ४	पूषा ४	आर्द्रा ३	भर. २	रेव ४	कृति ४	शत. १	अश्वि ४	स्वा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 13 अप्रै.



गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 20 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	२	०	११	१	१०	०	६
५	३	१८	२१	२९	१६	१०	१०	१०
२९	१४	५१	२१	३१	००	२१	१५	१५
१०	३०	२१	२	१९	३५	१३	१८	१८
58 37	759 55	32 5	5 6	14 25	68 50	5 6	3 11	3 11
अश्वि २	अश्वि १	आर्द्रा ४	भर. ३	रेव ४	रोहि २	शत. २	अश्वि ४	स्वा. २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 20 अप्रैल



वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) में प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान अथवा अपने निवास पर ही गंगाजलादि मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मीनारायण की तुलसीदल सहित पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु–सहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य, पापप्रशमन स्तोत्र तथा '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों का पाठ करना चाहिए। वैशाख पूर्णिमा को उद्यापन में ब्राह्मणों को भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, मिष्ठान्न, दक्षिणा सहित दान करने से सौभाग्य एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **वैशाख संक्रान्ति–ता. 14 अप्रैल, शुक्रवार** को दोपहर 2 बजकर 58 मिंट (14:58) पर श्रवण नक्षत्र-कालीन सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्ति इस सं. के स्नानदान, जपादि का पुण्यकाल प्रात: 8:34 बजे से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोरों, ठगी करने वालों, बेईमान, पशु वृत्ति के लोगों तथा पशुओं के लिए सुखकर होगी। **वैशाख संक्रान्ति** कुण्डली में उच्चस्थ सूर्य एवं बुध-राहु पर शनि की नीच दृष्टि के प्रभावस्वरूप भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में अराजकता, राजनीतिक अस्थिरता, पदच्युति, हिंसा, विस्फोट, दुर्भिक्ष एवं महँगाई आदि विकट समस्याओं का सामना रहे। लोगों में रोग-शोक आदि दु:खों की बहुलता होगी। **संक्रान्ति राशिफल**–वृष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धनु तथा मीन राशि वालों को इस सं. का फल लाभदायक रहेगा। शेष राशि वालों के लिए अशुभफली है।

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध में वायु-वेग के साथ रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं, पुन: गर्मी का प्रकोप प्रतीत होगा।

वि. संवत् २०८०, **वैशाख शुक्ल पक्ष** शाक : १९४५										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 21 अप्रैल से 5 मई तक), हिजरी सन् 1444 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :	सूर्योदय कालिक	भा. स्टैं. टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	वैशा. शक	रमज़ान मु	अप्रैल	वैशा. प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः शनि पूर्व में, 30 अप्रै. से गुरु भी पूर्व–क्षितिज में दिखेगा। सायं बुध पश्चिमी–क्षितिज में दिखेगा, जो 23 अप्रै. से अस्त हो जाएगा। इसी समय शुक्र पश्चिम में तथा मंगल पश्चिमकपाल में होगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३२:२५	१	शुक्र	६:१८	भर.	४२:३५	प्रीति	१२:३३	ब	६:१८	1	29	21	८	वृ.५७:४०	चन्द्रदर्शन, मु. १५, बुध वक्री २०:१८, गुरु अश्वि. १ मेष में ५८:१० (A)	०:०६:२८:५६	5:58	18:56
३२:३३	२	शनि	४:४५	कृति	४३:४०	आयु	८:४३	कौ	४:४५	2	श०	22	९	वृष	**अक्षय-तृतीया, भगवान् परशुराम जयन्ती**, मंगल पुन. में ७:०५, (B)	०:०७:२७:२६	5:56	18:57
३२:३५	३	रवि	४:४३	रोहि	४६:२०	सोभा	६:०५	ग	४:४३	3	2	23	१०	वृष	भ. ३५:३० से, अक्षय-तृतीया (पूर्वी-भारत) देखें पृष्ठ 16, वक्री बुध (C)	०:०८:२५:५६	5:55	18:57
३२:४३	४	चन्द्र	६:१८	मृग	५०:३३	शोभ	४:४५	वि	६:१८	4	3	24	११	मि.१८:१८	भ. ६:१८ तक, राहु अश्वि. ३ केतु स्वा. १ में ४७:३८	०:०९:२४:२६	5:54	18:58
३२:४५	५	मंग	९:३०	आर्द्रा	५६:१०	अति	४:३८	बा	९:३०	5	4	25	१२	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती** (C) पश्चिम में अस्त 23:50	०:१०:२२:५३	5:53	18:59
३२:४८	६	बुध	१४:००	पुन.	६०:००	सुक	५:३५	तै	१४:००	6	5	26	१३	क.४६:०५	**श्रीगङ्गा-जयन्ती** (मध्याह्न-व्या) देखें पृष्ठ 17, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, (D)	०:११:२१:१७	5:52	18:59
३२:५३	७	गुरु	१९:३०	पुन.	२:५३	धृति	७:२०	व	१९:३०	7	6	27	१४	कर्क	भ. १९:३० से ५२:३० तक, (D) शुक्र मृगशिर में २४:१३	०:१२:१९:३९	5:51	19:00
३२:५८	८	शुक्र	२५:३०	पुष्य	१०:०८	शूल	९:३०	ब	२५:३०	8	7	28	१५	कर्क	सूर्य भर. में २:०५, **श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), (E)	०:१३:१७:५८	5:50	19:1
३३:००	९	शनि	३१:२५	अश्ले	१७:२५	गण्ड	११:४५	कौ	३१:२५	9	8	29	१६	सिं.१७:२५	**जानकी (सीता) जयन्ती, गुरु पूर्व में उदय 27:19**	०:१४:१६:१७	5:49	19:1
३३:०५	१०	रवि	३६:४३	मघा	२४:१५	वृद्धि	१३:४०	तै	४:०४	10	9	30	१७	सिंह	गण्डमूल 15:30 तक	०:१५:१४:३२	5:48	19:2
३३:१०	११	चन्द्र	४०:५८	पू.फा.	३०:१०	ध्रुव	१४:५३	व	८:५१	11	10	मई	१८	कं.४६:२८	भ. ८:५१ से ४०:५८ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**, मई मास प्रारम्भ	०:१६:१२:४७	5:47	19:3
३३:१३	१२	मंग	४३:५०	उ.फा.	३४:४८	व्या.	१५:०८	ब	१२:२४	12	11	2	१९	कन्या	**शुक्र मिथुन में २०:०८** (13:49), गुरु बाल्यत्व समाप्त 27:19	०:१७:११:००	5:46	19:3
३३:१५	१३	बुध	४५:१०	हस्त	३७:५५	हर्ष	१४:१३	कौ	१४:३०	13	12	3	२०	कन्या	**प्रदोष व्रत** — गुरु उदय 29 अप्रैल	०:१८:०९:१२	5:46	19:4
३३:२०	१४	गुरु	४५:००	चित्रा	३९:३५	वज्र	१२:०८	ग	१५:०५	14	13	4	२१	तु. ८:३३	भ. ४५:०० से, **श्रीनृसिंह-जयन्ती**	०:१९:०७:२०	5:45	19:5
३३:२३	१५	शुक्र	४३:२०	स्वा.	३९:४८	सिद्धि	८:५०	वि	१४:१०	15	14	5	२२	तुला	भ. १४:१० तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती**, श्रीबुद्ध-पूर्णिमा, (F)	०:२०:०५:२७	5:44	19:5

(A) (29:14), **अगस्त्य-अस्त,** शक वैशाख शुरु **(B)** श्रीशिवाजी जयन्ती, शव्वाल (मु.) मास शुरु **(E)** गं.मू. 9:53 बाद **(F) वैशाखस्नान-समाप्त,** श्रीकूर्म-जयन्ती, **श्रीसत्यनारायण व्रत,** श्रीछिन्नमस्तिका-जयन्ती

शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	०	०	१	१०	०	६
१३	१४	२३	१९	१	२५	११	९	९
१७	३०	१०	३२	२६	७	०	४९	४९
१०	४	३२	४	१९	१७	६	५२	५२
58 21	713 7	32 46	32 54	14 17	67 38	4 32	3 11	3 11
अश्वि ४	पुष्य ४	पुन १	भर २	अश्वि १	मृगा १	शत. २	अश्वि ३	स्वा १
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 28 अप्रै.



शुक्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	०	०	२	१०	०	६
२०	११	२७	१५	३	२	११	९	९
४	१	१	१३	५	५७	३०	२७	२७
५३	८	२५	५	५०	३	१५	३७	३७
58 7	803 29	33 16	36 3	14 7	66 22	4 00	3 11	3 11
भर ३	स्वा २	पुन ३	भर. १	अश्वि १	मृगा ३	शत. २	अश्वि ३	स्वा. १
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 5 मई



वैशाख शुक्ल पक्षफल—

भविष्य-पुराणानुसार भगवान् विष्णु के अंशावतार श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में हुआ था, तदनुसार 22 अप्रैल, शनिवार को भगवान् परशुराम का जन्मोत्सव मनाना शुभ होगा। पूर्वाह्न-व्यापिनी '**अक्षय-तृतीया**' का पर्व भी इसीदिन होगा। अगले दिन तृतीया तिथि मात्र २ मुहूर्त्त के लगभग है (त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी नहीं है।) अक्षय-तृतीया तिथि बड़ी पवित्र, महासुख व सौभाग्यप्रदायक मानी जाती है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इस तिथि से हुआ था। इसी कारण इस दिन किए गए स्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृतर्पणादि शुभ कर्मों का फल अक्षुण्ण (अक्षय) होता है। यह '**स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त**' तिथि कहलाती है। इस दिन व्रत रखकर श्रीगङ्गा, यमुनादि तीर्थस्नान के बाद गेहूँ आदि अनाज, दूध, दही, बर्फी, जलापूरित घड़ा, पात्र, फल, वस्त्र, नवसंवत् की पंचांग का दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। **श्रीगङ्गा-जयन्ती** (26 अप्रैल) को मध्याह्न के समय श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष व तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान, पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **ता. 28 अप्रैल** को रात्रिव्यापिनी नवमी को शक्तिरूपा बगुलामुखी माता की पूजार्चना करने से ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं रहता। **नृसिंह जयन्ती** (4 मई) पर नृसिंह भगवान् की श्रीलक्ष्मी सहित पंचोपचार पूजन करना चाहिए। **वैशाख पूर्णिमा** (5 मई) को तीर्थ (अथवा गृह में ही) पर गंगाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। **लोक-भविष्य**—चान्द्र वैशाख मास में पाँच शुक्रवार आने से ग्रीष्म-उपयोगी फसलों का अच्छा उत्पादन होगा। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश अमीर-लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। जनसंख्या में असंयमित रूप से वृद्धि होगी। **आकाश-लक्षण**—उत्तर-भारत के अनेक भागों में गर्म-हवाओं एवं खण्ड वर्षा होने के योग हैं। **शकुन**—अक्षय-तृतीया को बदल चाल या बूंदाबांदी होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०८०, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष								शाक: १९४५			तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 6 से 19 मई तक), हिजरी सन् 1444 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :	सूर्योदय कालिक	भा.स्टै.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	वैशा. शक	शव्वाल मु.	मई	वैशा. प्रवि.	प्रवेश घड़ी-पल	प्रातः सूर्योदय से पूर्व गुरु पूर्वी-क्षितिज में, शनि पूर्वकपाल में दिखेंगे। ता. 10 से बुध भी गुरु के साथ होगा। सायं शुक्र पश्चिम में तथा मंगल पश्चिमकपाल में होगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
३३:२८	१	शनि	४०:२५	विशा.	३८:४५	व्य. वरी	४:२८ ५९:०५	बा	११:५३	16	15	6	२३	वृ.२४:०८	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुरु अश्वि. २ में 5:35 (घं.मिं.)	०:२१:०३:३१	5:43	19:6
३३:३३	२	रवि	३६:२५	अनु.	३६:३८	परि	५२:५५	तै	८:२५	17	16	7	२४	वृश्चिक	**श्रीनारद-जयन्ती**, वीणादान, श्रीटैगोर-जयन्ती, गण्डमूल 20:21 से,	०:२२:०१:३४	5:42	19:7
३३:३८	३	चन्द्र	३१:३५	ज्ये.	३३:४३	शिव	४६:१०	व	४:००	18	17	8	२५	ध.३३:४३	भ. ४:०० से ३१:३५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**(देखें पृष्ठ 12)वक्री बुध**(A)**	०:२२:५९:३६	5:41	19:8
३३:४०	४	मंग	२६:१३	मूल	३०:१३	सिद्ध	३९:००	बा	२६:१३	19	18	9	२६	धनु	गण्डमूल 17:45 तक	०:२३:५७:३५	5:40	19:8
३३:४३	५	बुध	२०:२५	पू.षा.	२६:२०	साध्य	३१:३३	तै	२०:२५	20	19	10	२७	म.४०:२३	**मंगल कर्क में २०:२०** (13:48), वक्री बुध पूर्व में उदय 5:39	०:२४:५५:३६	5:40	19:9
३३:४८	६	गुरु	१४:३३	उ.षा.	२२:२५	शुभ	२४:०३	व	१४:३३	21	20	11	२८	मकर	भ. १४:३३ से ४१:३८ तक, सूर्य कृतिका में ४८:०३ (24:52)	०:२५:५३:३४	5:39	19:10
३३:५०	७	शुक्र	८:४३	श्रव.	१८:३३	शुक्ल	१६:३८	ब	८:४३	22	21	12	२९	कुं.४६:४०	**पंचक प्रारम्भ** ४६:४० (24:18)	०:२६:५१:२९	5:38	19:10
३३:५५	८	शनि	३:०५	धनि.	१४:५५	ब्रह्म	९:२३	कौ	३:०५	23	22	13	३०	कुम्भ		०:२७:४९:२४	5:37	19:11
अवम्	९	शनि	५७:४५	००	००	००	००	०	००	०	०	0	०	००	**नवमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३३:५८	१०	रवि	५२:५५	शत.	११:३८	ऐन्द्र वैधृ	२:२५ ५५:४८	व	२५:२०	24	23	14	३१	मी.५४:२८	भ. २५:२० से ५२:५५ तक,	०:२८:४७:२०	5:37	19:12
३४:००	११	चन्द्र	४८:४०	पू.भा.	८:५०	विष्क	४९:४३	ब	२०:४८	25	24	15	ज्ये.	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, सूर्य वृष में १५:२०** (11:44), **ज्येष्ठ संक्रान्ति, (B)**	०:२९:४५:१२	5:36	19:12
३४:०५	१२	मंग	४५:०५	उ.भा.	६:४०	प्रीति	४४:१०	कौ	१६:५३	26	25	16	२	मीन	मंगल पुष्य में १५:५८ (11:58), गण्डमूल 8:15 से	१:००:४३:०३	5:35	19:13
३४:०८	१३	बुध	४२:१५	रेव.	५:१०	आयु	३९:१५	ग	१३:४०	27	26	17	३	मे. ५:१०	भ. ४२:१५ से, **पंचक समाप्त ५:१०** (7:39), **प्रदोष व्रत (C)**	१:०१:४०:५५	5:35	19:14
३४:१०	१४	गुरु	४०:२५	अश्वि	४:३३	सौभा	३५:०८	वि	११:२०	28	27	18	४	मेष	भ. ११:२० तक, सावित्री चौदश, गण्डमूल 7:23 तक	१:०२:३८:४४	5:34	19:14
३४:१३	३०	शुक्र	३९:३३	भर.	४:५०	शोभ	३१:४५	च	९:५९	29	28	19	५	वृ.२०:०३	**ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर-जयन्ती,** वटसावित्री व्रत (अमावस-पक्ष), **(D)**	१:०३:३६:३३	5:34	19:15

(A) अश्वि. ४ में २५:१३, शुक्र आर्द्रा में २१:५० **(B)** मु. ४५, पुण्यकाल सं. प्रातः 5:20 से, **बुध मार्गी ७:५३** (8:45), **मेला भद्रकाली** (कपूरथला, पंजाब)
(C) मासशिवरात्रि व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ **(D)** भावुका अमावस

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 13 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	३	०	०	२	१०	०	६
२७	३	१	११	४	११	११	९	९
४९	४	२९	५०	५७	४२	५९	२	२
७	३४	२०	३८	५०	१४	५८	११	११
57 56	848 3	33 46	7 31	13 51	64 40	3 20	3 11	3 11
कृति १	धनि ३	पुन ४	अश्वि ४	अश्वि २	आर्द्रा २	शत. २	अश्वि ३	स्वा १
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

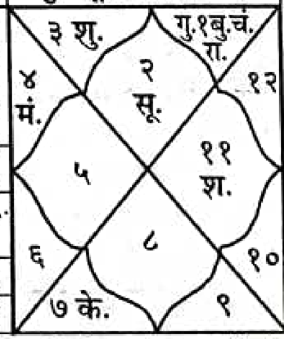
कुण्डली सूर्योदय, 13 मई



शुक्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	३	०	०	२	१०	०	६
३	२५	४	१२	६	१८	१२	८	८
३६	३४	५२	१४	२०	६	१८	४३	४३
२३	३७	५५	२५	१७	३८	४१	६	६
57 48	783 20	34 8	19 49	13 36	63 11	2 48	3 11	3 11
कृति ३	भर ४	पुष्य १	अश्वि ४	अश्वि २	आर्द्रा ४	शत. २	अश्वि ३	स्वा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 19 मई



ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, अष्टमी, एकादशी, गंगा-दशहरा आदि पर्वों पर स्नान, जप, ध्यानादि के साथ श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पंखा, आम, खरबूजे आदि मौसमी फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास जितेन्द्रिय रहकर '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं विष्णु-सहसनाम, नारायण-कवच आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन-सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। इस पक्ष की **अपरा एकादशी** (15 मई) का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा किसी गरीब परिवार की सामर्थ्यानुसार अन्न-धनादि से सहायता करने से अनेक प्रकार के ज्ञात अथवा अज्ञानतावश किए गए पापों का क्षय होता है। '**वटसावित्री व्रत**' (19 मई) में स्त्रियाँ त्रयोदशी से अमावस तक वटवृक्ष का पूजन करके तीन दिवसीय व्रतानुष्ठान करती हैं। वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में देवाधिदेव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। यह व्रत स्त्रियों के वैधव्यादि दोषों की निवृत्ति में एवं पति-पुत्रादि सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए विशेष प्रशस्त माना जाता है। **ज्येष्ठ-संक्रान्ति**–ता. 15 मई, सोमवार को दोपहर 11घं.-44मिं. पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 5घं.-20मिं. से प्रारम्भ होगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. ब्राह्मणों, विद्वानों तथा व्यापारियों के लिए लाभकारी रहेगी। सोमवार की संक्रान्ति होने से मूँग, चना एवं सब प्रकार के धान्य सुलभ अर्थात् सस्ते होंगे। धन-धान्य, सुख-ऐश्वर्य आदि के संसाधनों का प्रसार बढ़ेगा। लोगों में उत्सवों आदि का बाहुल्य होगा। **आकाश-लक्षण**–ज्ये. कृ. 1 को शनिवार होने से जल की कमी अनुभव हो अर्थात् गर्मी का प्रकोप, प्रजा का नाश एवं राज्य-परिवर्तन (छत्रभंग) हो। **शकुन**–ज्ये. कृ. १२ को रेवती नक्षत्र होने से भी कृषकों को कष्ट रहे। ज्ये. अमावस को दिन या रात्रि में आकाश में यदि बादल आ जाएं तो वर्षा ऋतु में वर्षा बहुत कम हो।

वि. संवत् २०८०, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९४५ | तारीखें | चंद्र राशि

सन् 2023 ई. (ता. 20 मई से 4 जून तक), हिजरी सन् 1444
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :
सायं मंगल–शुक्र पश्चिमकपाल में होंगे। प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्त के पास, बुध–गुरु पूर्वी–क्षितिज के पास होंगे।

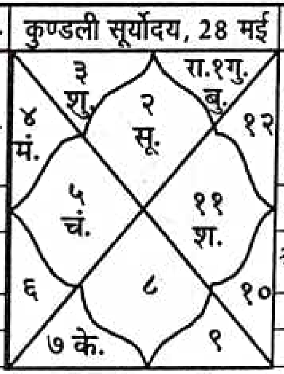
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	वैशा. शक	शव्वाल मु.	मई	ज्ये. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
३४:१८	१	शनि	३९:५५	कृति	६:१५	अति	२९:२३	किं	९:४४	30	29	20	६	वृष	भावुका करिदिन, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, गुरु अश्वि. ३ में २७:०५ (16:23) **(A)**	१:०४:३४:१८	5:33	19:16
३४:१८	२	रवि	४१:३३	रोहि	८:५०	सुक	२७:५५	बा	१०:४४	31	30	21	७	मि.४०:३५	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, सूर्य सायन मिथुन में १७:४५ (12:39) बुध भरणी में ४५:३३	१:०५:३२:०५	5:33	19:16
३४:२३	३	चन्द्र	४४:३०	मृग	१२:४३	धृति	२७:३३	तै	१३:०२	ज्ये	जि	22	८	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत**, महाराणा प्रताप जयन्ती, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, जिल्काद मु. **(B)**	१:०६:२९:४८	5:32	19:17
३४:२५	४	मंग	४८:३५	आर्द्रा	१७:४८	शूल	२८:०५	व	१६:३३	2	2	23	९	मिथुन	भ. १६:३३ से ४८:३५ तक,	१:०७:२७:३२	5:32	19:18
३४:२७	५	बुध	५३:४५	पुन	२३:५८	गण्ड	२९:३०	ब	२१:१०	3	3	24	१०	क. ७:२०	+ गण्डमूल 17:54 से	१:०८:२५:११	5:31	19:18
३४:३०	६	गुरु	५९:३३	पुष्य	३०:५८	वृद्धि	३१:३०	कौ	२६:३९	4	4	25	११	कर्क	सूर्य रोहिणी में ३८:३८, अरण्य–षष्ठी, विन्ध्यवासिनी–पूजा, **गुरुपुष्य योग +**	१:०९:२२:५२	5:31	19:19
३४:३५	७	शुक्र	६०:००	आश्ले	३८:२०	ध्रुव	३३:५३	ग	३२:३३	5	5	26	१२	सिं.३८:२०	गण्डमूल विचार	१:१०:२०:२९	5:30	19:20
३४:३५	७	शनि	५:३३	मघा	४५:३३	व्या.	३६:०८	व	५:३३	6	6	27	१३	सिंह	भ. ५:३३ से ३८:३० तक, गण्डमूल 24:43 तक	१:११:१८:०७	5:30	19:20
३४:४०	८	रवि	११:१०	पू.फा.	५२:०८	हर्ष	३७:५५	ब	११:१०	7	7	28	१४	सिंह	**श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर–भवानी (काश्मीर)**	१:१२:१५:४१	5:29	19:21
३४:४०	९	चन्द्र	१५:५३	उ.फा.	५७:३०	वज्र	३८:५०	कौ	१५:५३	8	8	29	१५	कं. ८:३५		१:१३:१३:१६	5:29	19:21
३४:४२	१०	मंग	१९:१०	हस्त	६०:००	सिद्धि	३८:३३	ग	१९:१०	9	9	30	१६	कन्या	भ. ४९:५८ से, **श्रीगङ्गा–दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि), **शुक्र कर्क में (C)**	१:१४:१०:५०	5:29	19:22
३४:४५	११	बुध	२०:४५	हस्त	१:२०	व्य.	३६:५५	वि	२०:४५	10	10	31	१७	तु.३२:३५	भ. २०:४५ तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	१:१५:०८:१८	5:28	19:22
३४:४८	१२	गुरु	२०:३०	चित्रा	३:२०	वरी	३३:४८	बा	२०:३०	11	11	जून	१८	तुला	**प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी, जून मास प्रारम्भ	१:१६:०५:४९	5:28	19:23
३४:५०	१३	शुक्र	१८:२३	स्वा.	३:३३	परि	२९:१३	तै	१८:२३	12	12	2	१९	वृ.४७:३३	शुक्र पुष्य में ५९:१३ (29:09)	१:१७:०३:१८	5:28	19:24
३४:५१	१४	शनि	१४:३३	विशा अनु.	२:०० ५९:२५	शिव	२३:१८	व	१४:३३	13	13	3	२०	वृश्चिक	भ. १४:३३ से ४१:५८ तक, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमापक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत	१:१८:००:४६	5:28	19:24
३४:५४	१५	रवि	९:२३	ज्ये.	५४:५०	सिद्ध	१६:१८	ब	९:२३	14	14	4	२१	ध.५४:५०	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती (625वीं)**, ज्येष्ठी योग, **(D)**	१:१८:५८:१२	5:27	19:25

(A) शुक्र पुन. में ४७:४३ (24:38), करवीर व्रत **(B)** मास प्रारम्भ, उमा–अवतार **(C)** ३५:२३ (19:38) **(D)** गुरु अश्वि. ४ में ४१:१३, गण्डमूल 5:04 से

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	३	०	०	२	१०	०	६
१२	१६	१०	१७	८	२७	१२	८	८
१५	१२	२	३९	२०	२४	४०	१४	१४
४३	५७	११	२६	४७	३२	३८	२९	२९
57 35	723 6	34 37	54 47	13 7	60 21	1 58	3 11	3 11
रोहि १	पूफा १	पुष्य ३	भर २	अश्वि ३	पुन ३	शत. २	अश्वि ३	स्वा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

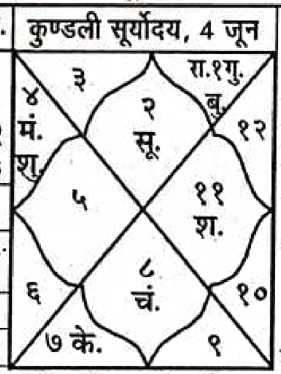
कुण्डली सूर्योदय, 28 मई



रवौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	३	०	०	३	१०	०	६
१८	१६	१४	२५	९	४	१२	७	७
५८	५५	५	१०	५१	१८	५२	५२	५२
१९	५१	३२	३६	१९	४९	२६	१३	१३
57 26	860 53	34 57	76 43	12 40	57 31	1 18	3 10	3 10
रोहि ३	ज्ये. १	पुष्य ४	भर ४	अश्वि ३	पुष्य १	शत. २	अश्वि ३	स्वा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 4 जून



ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया तिथि को (22 मई) रम्भा देवी का विधिपूर्वक व्रत–दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसमें गौरी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–'**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा, त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान देहि नमोऽस्तुते।।**' माता पार्वती का जन्म भी इसी तिथि को हुआ था। **अष्टमी तिथि (28 मई)** को माता खीर (क्षीर) भवानी का मेला काश्मीर (तुलमुल) एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाता है। '**श्रीगङ्गा–दशहरा**' पर्व (30 मई) पर गङ्गा–स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियल आदि सहित पूजार्चन तथा यथाशक्ति दानादि करने से कायिक–वाचिक और मानसिक–दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इसदिन गंगा–स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें–'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।।**' **निर्जला एकादशी (31 मई)** का निराहार व्रत रखकर स्नानादि के पश्चात् भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण की पूजा, मन्त्र–जप एवं स्तोत्र पाठ करने के बाद द्वादशी के दिन ब्राह्मण को यथाशक्ति अन्न–वस्त्र, मौसमी फल, पंखा, जल–कुम्भादि पात्र का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। **लोक–भविष्य–**चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार आने, मेष राशिस्थ '**बुध–गुरु–राहु**' पर शनि की नीच दृष्टि तथा कुम्भ राशिस्थ शनि पर मंगल की शत्रु–दृष्टि होने से दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं (जैसे–पैट्रोल, डीज़ल, तैल, वनस्पति, घी, अनाज, सर्वप्रकार की दालें, दूध आदि) के मूल्यों में आशातीत तेजी के कारण लोगों में आक्रोश, बेचैनी व गहन असन्तोष फैलेगा। लोगों में क्लिष्ट रोग व कष्टों में वृद्धि होगी। राजनीतिक वातावरण अनिश्चित तथा आरोप–प्रत्यारोप भरा रहेगा। कहीं सत्ता–परिवर्तन, टकराव, अग्निकाण्ड व राजनैतिक उलट–फेर होने के संकेत हैं। **आकाश लक्षण–**यद्यपि उत्तर–भारत में गर्मी व लू का प्रकोप बढ़े परन्तु दक्षिणी–पश्चिमी राज्यों में अतिवृष्टि एवं मानसून प्रारम्भ हो जाएगा। **शकुन–**ज्ये. शु. ३ को आर्द्रा नक्षत्र में जहाँ–जहाँ वर्षा हो, वहाँ आगे दुर्भिक्ष (अकाल) हो।

वि. संवत् २०८०, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक : १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 5 से 18 जून तक), हिजरी सन् 1444
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :

सायं मंगल-शुक्र पश्चिम में दिखेंगे। प्रातः शनि याम्योत्तर-वृत्तासन्न, गुरु पूर्व में तथा बुध पूर्वी-क्षितिज में दिखेगा

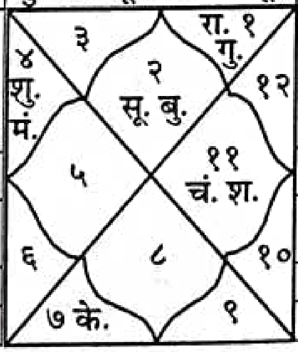
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी-पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी-पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी-पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी-पल	ज्ये. शक	जिल्काद मु.	जून	ज्ये. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३४:५५	१	चन्द्र	३:०३	मूल	४९:५०	साध्य शुभ	८:२३ ५९:५५	कौ	३:०३	15	15	5	२२	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध कृतिका में ९:४० (9:19), गण्डमूल 25:23 तक	१:१९:५५:४०	5:27	19:25
अवम्	२	चन्द्र	५५:५८	००	००	००	००	०	००	०	०	0	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३४:५७	३	मंग	४८:३०	पू.षा.	४४:२५	शुक्ल	५१:०८	व	२२:१४	16	16	6	२३	म.५८:०३	भ. २२:१४ से ४८:३० तक,	१:२०:५३:०५	5:27	19:26
३४:५८	४	बुध	४१:००	उ.षा.	३९:००	ब्रह्म	४२:२०	ब	१४:४५	17	17	7	२४	मकर	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **बुध वृष में ३५:४३** (19:44)	१:२१:५०:३०	5:27	19:26
३५:००	५	गुरु	३३:५०	श्रव.	३३:५०	ऐन्द्र	३३:५०	कौ	७:२५	18	18	8	२५	मकर	**सूर्य मृगशिर में ३३:३५**, मंगल आश्ले. में २४:४३ (15:20)	१:२२:४७:५५	5:27	19:27
३५:००	६	शुक्र	२७:१५	धनि.	२९:१५	वैधृ.	२५:४८	ग	०:३३	19	19	9	२६	कुं. १:२८	भ. २७:१५ से ५४:२३ तक, **पंचक प्रारम्भ १:२८** (6:02)	१:२३:४५:१७	5:27	19:27
३५:०१	७	शनि	२१:२८	शत.	२५:३०	विष्क	१८:२५	ब	२१:२८	20	20	10	२७	कुम्भ		१:२४:४२:३९	5:27	19:27
३५:०३	८	रवि	१६:३८	पू.भा.	२२:४३	प्रीति	११:४८	कौ	१६:३८	21	21	11	२८	मी. ८:१८		१:२५:४०:०२	5:27	19:28
३५:०३	९	चन्द्र	१२:५०	उ.भा.	२०:५८	आयु	६:०३	ग	१२:५०	22	22	12	२९	मीन	भ. ४१:२८ से, गण्डमूल 13:50 बाद	१:२६:३७:२३	5:27	19:28
३५:०५	१०	मंग	१०:०५	रेव.	२०:१५	सौभा शोभ	१:१० ५७:०८	वि	१०:०५	23	23	13	३०	मे.२०:१५	भ. १०:०५ तक, **पंचक समाप्त २०:१५** (13:33), बुध रोहिणी में **(A)**	१:२७:३४:४४	5:27	19:29
३५:०६	११	बुध	८:२५	अश्वि	२०:३३	अति	५३:५३	बा	८:२५	24	24	14	३१	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत, गण्डमूल 13:40 तक**	१:२८:३२:०५	5:27	19:29
३५:०७	१२	गुरु	७:४५	भर.	२१:५३	सुक	५१:२८	तै	७:४५	25	25	15	आ.	वृ.३७:२३	**प्रदोष व्रत, सूर्य मिथुन में ३२:०३** (18:16), **आषाढ़ संक्रान्ति** मु. ३०,**(B)**	१:२९:२९:२६	5:27	19:29
३५:०८	१३	शुक्र	८:०५	कृति	२४:१०	धृति	४९:४८	व	८:०५	26	26	16	२	वृष	भ. ८:०५ से ३८:४५ तक, मासशिवरात्रि व्रत	२:००:२६:४५	5:27	19:30
३५:०९	१४	शनि	९:२३	रोहि.	२७:२५	शूल	४८:५५	श	९:२३	27	27	17	३	मि.५९:२५	पितृकार्येषु अमावस, शुक्र आश्लेषा में ४०:०५, **शनि वक्री** ४३:३३ (22:52)	२:०१:२४:०५	5:27	19:30
३५:०९	३०	रवि	११:४०	मृग.	३१:४०	गण्ड	४८:५०	ना	११:४०	28	28	18	४	मिथुन	**आषाढ़ अमावस** (स्नानदानादि 10:07 तक)	२:०२:२१:२३	5:27	19:30

(A) ५७:१० (28:19) **(B)** पुण्यकाल सं. 11:52 बाद

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	३	१	०	३	१०	०	६
२५	२८	१८	५	११	१०	१२	७	७
४०	६	११	७	१८	५१	५९	२९	२९
७	५	७	२८	३८	१८	२९	५८	५८
57 21	829 49	35 16	96 27	12 11	54 1	0 37	3 11	3 11
मृग १	पूभा ३	श्ले. १	कृति ३	अश्वि ४	पुष्य ३	शत. २	अश्वि ३	स्वा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 11 जून



रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 18 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	१	०	३	१०	०	६
२	०	२२	१७	१२	१६	१३	७	७
२१	९	१८	१९	४२	५६	१	७	७
२८	००	५८	१०	१६	४६	४२	४२	४२
57 19	742 10	35 35	114 54	11 37	49 36	0 5	3 11	3 11
मृग ३	मृग ३	श्ले. २	रोहि ३	अश्वि ४	श्ले. १	शत. २	अश्वि ३	स्वा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 18 जून



आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—

आषाढ़ मास में भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते, आँवले, आम्र, खरबूजे, आड़ू आदि ऋतुफल का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य विचार**—आषाढ़ मास में स्वयं को विशेषकर शिर को तेज धूप व ऊष्णता से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल-जल, सादा-भोजन, छाछ, मौसमी फलों का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में योगिनी एकादशी (14 जून) का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि-जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। **आषाढ़ संक्रान्ति**—15 जून, बृहस्पतिवार को सायं 6 बजकर, 16 मिंट (18:16) पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल दोप. 11घं.-52मिं. बाद से प्रारम्भ होगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार मिश्रा नामक यह सं. ब्राह्मणों, लेखकों, पशुओं तथा पशुओं का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**—यह सं. वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर तथा मीन राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। शेष के लिए अशुभ है। **ग्रह गोचर**—मेष राशि में **'गुरु-राहु'** योग तथा इन पर शनि की नीच दृष्टि एवं **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक योग रहने से साधारण जनता, राजनेताओं एवं प्रशासक वर्ग में भय एवं उथल-पुथल होगी। मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन आदि फल घटित होंगे। भारत-पाक तथा अन्य मुस्लिम देशों में आतंकवादी, विस्फोटक एवं युद्धजन्य घटनाओं से भारी रक्तपात एवं जन-धन की क्षति होने का भय है। लोगों में क्लिष्ट रोगों का भी भय रहे।

आकाश लक्षण—उत्तर-भारत में कहीं तेज़ हवाएँ, लू व गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। शकुन—आषा. कृ. ८ को बादल चाल हो तो आगे श्रावण में अच्छी वर्षा हो।

वि. संवत् २०८०, **आषाढ़ शुक्ल पक्ष** शाक: १९४५										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 19 जून से 3 जुलाई तक), हिजरी सन् 1444 सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु:	सूर्योदय कालिक	मा. स्टैं. टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	ज्ये. शक	जिल्काद मु.	जून	आषा. प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्त में, पूर्वी क्षितिज में दृश्य बुध 20 जून से अस्त हो जाएगा। गुरु भी पूर्व में होगा। सायं मंगल–शुक्र पास–पास पश्चिम में दिखाई देंगे।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
३५:१०	१	चन्द्र	१४:५८	आर्द्रा	३६:५०	वृद्धि	४९:३०	ब	१४:५८	29	29	19	५	मिथुन	**चन्द्रदर्शन, मु. १५, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ**	२:०३:१८:४२	5:27	19:31
३५:१०	२	मंग	११:१०	पुन.	४२:५३	ध्रुव	५०:४८	कौ	११:१०	30	जि	20	६	क.२६:१५	**रथयात्रा–उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), बुध पूर्व में अस्त 5:55 (घं.मिं.), **(A)**	२:०४:१५:५१	5:28	19:31
३५:०९	३	बुध	२४:१५	पुष्य	४९:४३	व्या.	५२:४५	ग	२४:१५	31	2	21	७	कर्क	भ. ५७:०८ से, बुध मृग. में ४:३३, गुरु भर. १ में १६:४५, सूर्य सायन कर्क **(B)**	२:०५:१३:१६	5:28	19:31
३५:०८	४	गुरु	३०:००	अश्ले	५७:०५	हर्ष	५५:०८	वि	३०:००	आ	3	22	८	सिं.५७:०५	भ. ३०:०० तक, सूर्य आर्द्रा में ३०:५० (17:48), शक आषाढ़ प्रारम्भ	२:०६:१०:३३	5:28	19:31
३५:०८	५	शुक्र	३६:०८	मघा	६०:००	वज्र	५७:३८	ब	३:०४	2	4	23	९	सिंह	गण्डमूल विचार	२:०७:०७:४८	5:28	19:31
३५:०८	६	शनि	४२:०५	मघा	४:३५	सिद्धि	५९:५५	कौ	९:०७	3	5	24	१०	सिंह	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी, बुध मिथुन में १८:००** (12:41), गण्डमूल 7:18 तक	२:०८:०५:०७	5:29	19:32
३५:०७	७	रवि	४७:२३	पू.फा.	११:४५	व्य.	६०:००	ग	१४:४४	4	6	25	११	कं.२८:२८	भ. ४७:२३ से, **विवस्वत सप्तमी**, स.सि.यो. 10:11 से	२:०९:०२:२१	5:29	19:32
३५:०७	८	चन्द्र	५१:३०	उ.फा.	१८:०८	व्य.	१:३३	वि	१९:२७	5	7	26	१२	कन्या	भ. १९:२७ तक, राहु अश्वि. २ केतु चित्रा ४ में ४२:२३ श्रीदुर्गाष्टमी	२:०९:५९:३५	5:29	19:32
३५:०७	९	मंग	५४:०३	हस्त	२३:०५	वरी	२:१५	बा	२२:४७	6	8	27	१३	तु.५४:५८	भढली नवमी, बुध आर्द्रा में २४:३०, **गुप्त नवरात्र समाप्त, (C)**	२:१०:५६:४८	5:29	19:32
३५:०६	१०	बुध	५४:३३	चित्रा	२६:१८	परि शिव	१:३५ ५९:२३	तै	२४:१८	7	9	28	१४	तुला		२:११:५४:०३	5:30	19:32
३५:०५	११	गुरु	५३:०३	स्वा.	२७:३०	सिद्ध	५५:३३	व	२३:४८	8	10	29	१५	तुला	भ. २३:४८ से ५३:०३ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत** चातुर्मास्य व्रत–**(D)**	२:१२:५१:१६	5:30	19:32
३५:०४	१२	शुक्र	४९:२८	विशा	२६:४०	साध्य	५०:०५	ब	२१:१६	9	11	30	१६	वृ.१२:०५	**मंगल मघा १ सिंह में ५१:५५** (26:16), हरिवासर	२:१३:४८:२७	5:30	19:32
३५:०३	१३	शनि	४४:०३	अनु.	२३:५३	शुभ	४३:०३	कौ	१६:४६	10	12	जुला	१७	वृश्चिक	**शनि प्रदोष व्रत**, जुलाई मास प्रारम्भ, गण्डमूल 15:04 से,	२:१४:४५:४१	5:31	19:32
३५:०२	१४	रवि	३७:०८	ज्ये.	१९:२८	शुक्ल	३४:४८	ग	१०:३६	11	13	2	१८	ध.१९:२८	भ. ३७:०८ से, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृष्ठ 17), कोकिला व्रत, **(E)**	२:१५:४२:५२	5:31	19:32
३५:०१	१५	चन्द्र	२९:०३	मूल	१३:४५	ब्रह्म	२५:३३	वि	३:०६	12	14	3	१९	धनु	भ. ३:०६ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा बुध पुन. में **(F)**	२:१६:४०:०६	5:32	19:32

(A) जिल्हिजा (मु.) मास प्रारम्भ **(B)** में ३७:३० (20:28), सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु शुरु **(C)** मेला शरीक भवानी (काश्मीर) **(D)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु–शयनोत्सव **(E)** शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गण्डमूल विचार **(F)** ३२:०३, वायु–परीक्षा, गण्डमूल 11:02 तक

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 26 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	२	०	३	१०	०	६
९	६	२७	३	१४	२३	१२	६	६
५९	२०	४	३७	१२	११	५८	४२	४२
३७	५२	५२	२६	३८	२९	१७	१५	१५
57 13	733 10	35 55	129 29	10 53	42 54	0 52	3 11	3 11
आर्द्रा १	उ.फा. ३	श्ले. ४	मृगा ४	भर. १	श्ले. २	शत. २	अश्वि ३	स्वा १
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

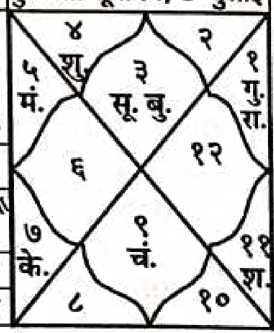
कुण्डली सूर्योदय, 26 जून



चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 3 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	४	२	०	३	१०	०	६
१६	९	१	१८	१५	२७	१२	६	६
४०	५५	१७	५०	२६	४९	५०	२०	२०
१	७	७	४७	३५	३०	१३	००	००
57 11	895 25	36 12	129 17	10 9	35 5	1 32	3 11	3 11
आर्द्रा ४	मूल ३	मघा १	आर्द्रा ४	भर. १	श्ले. ४	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 3 जुलाई



आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (20 जून) को भगवान् श्रीजगन्नाथ की सपरिवार रथयात्रा का भव्य उत्सव विशेषकर जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **हरिशयनी एकादशी (29 जून) से चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ होंगे,** जोकि कार्तिक शुक्ल एका. अर्थात् हरिप्रबोधिनी एकादशी (23 नवं.) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायाण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए नित्य भगवान् विष्णु की पूजार्चना, स्तोत्र-पाठादि में व्यतीत करते हैं। पूजनोपरान्त ब्राह्मण–भोजन करवाना चाहिए। इन **चातुर्मासों के मध्य कुछ प्रदेशों** (उ.प्र., म.प्र., उ.खण्डादि) में विवाह आदि शुभ कार्यों के सम्पादन का निषेध माना जाता है, परन्तु दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों में इस अवधि में विवाहादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ माना गया है। यद्यपि भगवान् क्षण भर भी कभी सोते नहीं, परन्तु प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन–पोषण और संरक्षण करते हैं। **गुरु पूर्णिमा** (3 जुलाई) ज्ञान, ध्यान एवं गुरु भक्ति की तरफ ले जाने वाली होती है। इस दिन परब्रह्म ईश्वर का ध्यान करते हुए ऋषि व्यास, शुक्रदेव आदि ऋषियों का आवाहन–पूजनादि करके अपने इष्ट गुरु की पुष्पाक्षत, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा द्वारा सम्मान करना चाहिए। **ग्रह–गोचर**–ता. 30 जून तक मंगल–शनि मध्ये षडाष्टक दृष्टि सम्बन्ध, 1 जुला. से समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने तथा 'गुरु–राहु' योग पर शनि की शत्रु (नीच) दृष्टि रहने से देश में कहीं अग्निकाण्ड, क्लिष्ट रोगों से भय तथा अनाजादि दैनिक उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। विश्व में अनेक देशों की सीमाओं एवं भारत में भी युद्ध–जन्य वातावरण रहेगा। **आकाश लक्षण**–पक्ष में भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा होगी। **शकुन**–सूर्य आर्द्रा प्रवेश के समय (22 जून) यदि वर्षा हो, तो आगे वर्षाकाल में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

वि. संवत् २०८०, प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९४५ | तारीखें | चंद्र राशि | सन् 2023 ई. (तां. 4 से 17 जुलाई तक), हिजरी सन् 1444

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

प्रात: शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर, गुरु पूर्वकपाल में होगा। सायं मंगल-शुक्र पश्चिम में, 13 जुला. से बुध भी पश्चिमी-क्षितिज में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आषा. शक	जिल्हि. मुं.	जुलाई	आषा. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३५:००	१	मंग	२०:१८	पू.षा.	७:१३	ऐन्द्र	१५:४३	कौ	२०:१८	13	15	4	२०	म.२०:३०	**प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ**, अशून्यशयन व्रत, मङ्गलागौरी व्रत शुरु	२:१७:३७:१७	5:32	19:32
३४:५९	२	बुध	११:१८	उ.षा. श्रव.	०:२० ५३:३०	वैधृ विष्क	५:३८ ५५:४०	ग	११:१८	14	16	5	२१	मकर	भ. ३६:५३ से, कज्जली तृतीया (श्रवणनक्षत्र युता)	२:१८:३४:२७	5:32	19:32
३४:५८	३	गुरु	२:२५	धनि.	४७:१०	प्रीति	४६:०८	वि	२:२५	15	17	6	२२	कुं.२०:१५	भ. २:२५ तक, **पंचक प्रारम्भ २०:१५** (13:39), **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत(A)**	२:१९:३१:४०	5:33	19:32
अवम्	४	गुरु	५४:१०	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३४:५८	५	शुक्र	४६:५३	शत.	४१:४८	आयु	३७:२३	कौ	२०:३२	16	18	7	२३	कुम्भ	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल)	२:२०:२८:५१	5:33	19:32
३४:५२	६	शनि	४०:४५	पू.भा.	३७:३५	सौभा	२९:३३	ग	१३:४९	17	19	8	२४	मी.२३:३०	भ. ४०:४५ से, **बुध कर्क में १६:४३** (12:15)	२:२१:२६:०४	5:34	19:31
३४:५२	७	रवि	३६:०५	उ.भा.	३४:५०	शोभ	२२:५३	वि	८:२५	18	20	9	२५	मीन	भ. ८:२५ तक, बुध पुष्य में ५५:१८ (27:41), स.सि.यो.	२:२२:२३:१६	5:34	19:31
३४:५०	८	चन्द्र	३२:५५	रेव.	३३:३०	अति	१७:२५	बा	४:३०	19	21	10	२६	मे.३३:३०	**पंचक समाप्त ३३:३०** (18:59), गुरु भर. २ में ३०:२०, **श्रावण सोमवार व्रत प्रा.**	२:२३:२०:३१	5:35	19:31
३४:५०	९	मंग	३१:१५	अश्वि	३३:४५	सुक	१३:१३	तै	२:०५	20	22	11	२७	मेष	स.सि.यो.	२:२४:१७:४३	5:35	19:31
३४:४५	१०	बुध	३१:००	भर.	३५:२०	धृति	१०:१०	व	१:०८	21	23	12	२८	वृ.५०:५५	भ. १:०८ से ३१:०० तक, **बुध पश्चिम में उदय ५८:१८** (28:55)	२:२५:१४:५८	5:36	19:30
३४:४५	११	गुरु	३२:०३	कृति.	३८:१०	शूल	८:१०	ब	१:३२	22	24	13	२९	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**	२:२६:१२:१२	5:36	19:30
३४:४३	१२	शुक्र	३४:१३	रोहि	४२:०५	गण्ड	७:०५	कौ	३:०८	23	25	14	३०	वृष		२:२७:०९:२९	5:37	19:30
३४:४०	१३	शनि	३७:१८	मृग	४६:५३	वृद्धि	६:४८	ग	५:४६	24	26	15	३१	मि.१४:२०	भ. ३७:१८ से, **शनि प्रदोष व्रत, श्रावण-शिवरात्रि व्रत**	२:२८:०६:४५	5:38	19:30
३४:३७	१४	रवि	४१:१८	आर्द्रा	५२:३३	ध्रुव	७:१५	वि	९:१८	25	27	16	श्रा.	मिथुन	भ. ९:१८ तक, **सूर्य कर्क में ५८:४३** (29:07), **श्रावण संक्रान्ति (B)**	२:२९:०४:००	5:38	19:29
३४:३५	३०	चन्द्र	४५:५८	पुन.	५८:५०	व्या.	८:१५	च	१३:३८	26	28	17	२	कं.४२:१३	**श्रावण (हरियाली) अमावस, सोमवती अमावस, मेला हरिद्वार-(C)**	३:००:०१:१७	5:39	19:29

(A) (देखें पृष्ठ 12), सूर्य पुन. में २९:४३, शुक्र मघा १ सिंह में ५६:२० (28:05) **(B)** मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन 11:31 तक, बुध आश्लेषा में ५६:३३, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(C)** प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 10 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	३	०	४	१०	०	६
२३	२२	५	३	१६	१	१२	५	५
२०	२३	३१	२९	३५	२६	३७	५७	५७
१९	३०	१७	७	१५	७	३५	४४	४४
57 12	748 11	36 28	119 17	9 20	24 59	2 10	3 11	3 11
पुन २	रेव २	मघा २	पुष्य १	भर. १	मघा १	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय,10 जुला.



चन्द्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 17 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	४	३	०	४	१०	०	६
०	२१	९	१६	१७	३	१२	५	५
०	२६	४७	४५	३८	४४	२०	३५	३५
५६	३०	२७	३५	१	१३	३९	२९	२९
57 15	722 59	36 46	106 19	8 27	12 10	2 45	3 11	3 11
पुन ४	पुन १	मघा ३	श्ले. १	भर. २	मघा २	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 17 जुला.



प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में भगवान् शिव की प्रसन्नता हेतु प्रत्येक सोमवार का फलाहार व्रत रखकर बिल्वपत्र, पंचामृत, गंगाजल, दूध, अक्षत, पुष्पों, फलादि के साथ शिवपूजन एवं पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ भगवान् शिव का अभिषेक, '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र का जप, श्रावण मास माहात्म्य और श्रीशिव महापुराण का श्रवण एवं पठन करने से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है। श्रावण के प्रत्येक मंगलवार को **श्रीमङ्गलागौरी का व्रत**, पूजनादि विधिपूर्वक करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** (13 जुलाई) का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या विष्णु) का पूजन करना चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस** (17 जुला.) सोमवती होने से इसदिन गंगादि तीर्थस्थान पर स्नान, जप, श्राद्ध, तर्पणादि एवं दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन व दानादि करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है (देखें पृष्ठ 80)। **श्रावण संक्रान्ति**–16 जुलाई रविवार की रात्रि के बाद 17 जुलाई के सूर्योदय से पहिले प्रात: 5 बजकर 07 मिंट पर (29:07) मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 17 जुलाई सोमवार की दोपहर 11:30 बजे तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोरों, ठगों, बेईमान तथा नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए शुभ, शेष राशि वालों के लिए कुछ कष्टकारी रहेगी। **सं. कुण्डली में मंगल-शुक्र** का **शनि** के साथ **समसप्तक** दृष्टि सम्बन्ध तथा मेष राशिस्थ '**गुरु-राहु**' पर शनि की दृष्टि रहने से कहीं प्राकृतिक आपदाओं एवं कहीं दुर्भिक्ष आदि के कारण महंगाई में वृद्धि तथा राजनेताओं में परस्पर वाद-विवाद रहे। किसी नेता के अपदस्थ या मृत्यु का समाचार भी मिले। केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन एवं उलटफेर के संकेत हैं। रविवारी सं. होने से भी राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। **आकाश लक्षण**–पक्ष में भारत के उत्तर-पूर्वी तथा उत्तरी राज्यों में कहीं बहुत अधिक वर्षा से बाढ़ तथा कहीं अल्प वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

वि. संवत् २०८०, **प्रथम (अधि.) श्रावण शुक्ल पक्ष** शाक: १९४५ | तारीखें | सन् 2023 ई. (ता. 18 जुलाई से 1 अगस्त तक), हिजरी सन् 1444–45

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

प्रात: शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर, गुरु याम्योत्तर वृत्त के पास होगा। सायं शुक्र पश्चिम क्षितिज में और बुध व मंगल इनसे ऊपर होंगे।

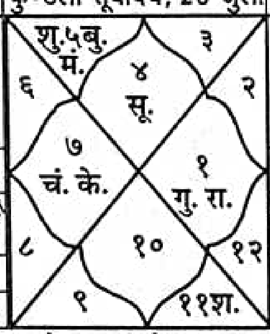
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आषा. शक	जिल्हि. मु.	जुलाई	श्राव. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३४:३३	१	मंग	५१:१८	पुष्य	६०:००	हर्ष	९:५३	किं	१८:३८	27	29	18	३	कर्क	**श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ–81), **(A)**	३:००:५८:३२	5:39	19:28
३४:३०	२	बुध	५७:०८	पुष्य	५:४५	वज्र	११:५३	बा	२४:१३	28	30	19	४	कर्क	**चन्द्रदर्शन**, मु. १५, गण्डमूल 7:58 से,	३:०१:५५:५१	5:40	19:28
३४:२८	३	गुरु	६०:००	अश्ले	१२:४३	सिद्धि	१४:१५	तै	३०:१२	29	मु.	20	५	सिं.१२:४३	सूर्य पुष्य में २८:०८ (16:55), मुहर्रम (मुस्लि.) सं. 1445 हिजरी प्रारम्भ	३:०२:५३:०८	5:40	19:27
३४:२५	३	शुक्र	३:१५	मघा	२०:४३	व्य.	१६:४८	ग	३:१५	30	2	21	६	सिंह	भ. ३६:२० से, गण्डमूल 13:58 तक,	३:०३:५०:२६	5:41	19:27
३४:२०	४	शनि	९:२३	पू.फा.	२८:१३	वरी	१९:१५	वि	९:२३	31	3	22	७	कं.४५:००	भ. ९:२३ तक, मंगल पू.फा. में ४५:२८ (23:53)	३:०४:४७:४५	5:42	19:26
३४:२०	५	रवि	१५:०८	उ.फा.	३५:१३	परि	२१:२५	बा	१५:०८	श्रा.	4	23	८	कन्या	**शुक्र वक्री** ३:२० (7:02), सूर्य सायन सिंह में ४:०५, शक श्रावण प्रारम्भ	३:०५:४५:०३	5:42	19:26
३४:१५	६	चन्द्र	२०:००	हस्त	४१:१३	शिव	२२:५०	तै	२०:००	2	5	24	९	कन्या	**बुध मघा १ सिंह में** ५७:०० (28:31)	३:०६:४२:२३	5:43	19:25
३४:१५	७	मंग	२३:३५	चित्रा	४५:५०	सिद्ध	२३:१५	व	२३:३५	3	6	25	१०	तु.१३:४५	भ. २३:३५ से ५४:३० तक	३:०७:३९:४१	5:43	19:25
३४:१०	८	बुध	२५:२३	स्वा.	४८:३५	साध्य	२२:१८	ब	२५:२३	4	7	26	११	तुला		३:०८:३७:०२	5:44	19:24
३४:०५	९	गुरु	२५:०८	विशा	४९:१८	शुभ	१९:४३	कौ	२५:०८	5	8	27	१२	वृ.३४:१८	अधिक (पुरुषोत्तम मास) 18 जुला. से 16 अग. (देखें पृ. 81)	३:०९:३४:२३	5:45	19:23
३४:०५	१०	शुक्र	२२:४८	अनु	४७:५५	शुक्ल	१५:२८	ग	२२:४८	6	9	28	१३	वृश्चिक	भ. ५०:३५ से, गण्डमूल 24:55 से	३:१०:३१:४२	5:45	19:23
३४:००	११	शनि	१८:२०	ज्ये.	४४:३३	ब्रह्म	९:३०	वि	१८:२०	7	10	29	१४	ध.४४:३३	भ. १८:२० तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार	३:११:२९:०४	5:46	19:22
३३:५५	१२	रवि	१२:००	मूल	३९:२५	ऐन्द्र वैधृ	१:५८ ५३:०५	बा	१२:००	8	11	30	१५	धनु	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 21:33 तक	३:१२:२६:२६	5:47	19:21
३३:५५	१३	चन्द्र	४:१०	पू.षा.	३२:५८	विष्क	४३:१५	तै	४:१०	9	12	31	१६	म.४६:१३	भ. ५५:१३ से,	३:१३:२३:४६	5:47	19:21
अवम्	१४	चन्द्र	५५:१३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३३:५०	१५	मंग	४५:३५	उ.षा.	२५:३८	प्रीति	३२:४०	वि	२०:२४	10	13	अग	१७	मकर	भ. २०:२४ तक, अधि. **श्रावण पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)**	३:१४:२१:११	5:48	19:20

(A) प्रथम (अधिक) श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ **(B)** अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव

बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 26 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	४	०	४	१०	०	६
८	९	१५	१	१८	४	११	५	५
३६	३१	१९	३५	४९	१५	५३	६	६
२९	३५	४६	६	५	००	८	५१	५१
57 18	769 5	37 7	89 28	7 11	8 8	3 25	3 11	3 11
पुष्य २	स्वा १	पूफा १	मघा १	भर. २	मघा २	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 26 जुला



भौमे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 1 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	४	०	४	१०	०	६
१४	३	१९	१०	१९	२	११	४	४
२०	१८	३	२	२९	५०	३१	४७	४७
२८	२७	२	४२	५३	२२	४२	४६	४६
57 22	915 49	37 20	77 35	6 15	22 12	3 47	3 11	3 11
पुष्य ४	उषा २	पूफा २	मघा ४	भर. २	मघा १	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 1 अगस्त



प्रथम (अधि.) श्रावण शुक्ल पक्षफल–

चान्द्र श्रावण मास अर्थात् आगामी दोनों पक्षों में संक्रान्ति का अभाव होने से श्रावण मास की वृद्धि अर्थात् श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम, मल) मास घटित हुआ है। इसकी व्याप्ति 18 जुलाई से 16 अगस्त तक रहेगी। इस समयावधि में **विवाह, मुण्डन, देव-प्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, काम्य-व्रतानुष्ठान, नवीन आभूषण बनवाना, नई गाड़ी खरीदना** आदि अन्य काम्य शुभ कार्यों का आरम्भ करना वर्जित माना जाता है। परन्तु किसी रोग आदि कष्ट निवृत्ति हेतु किए जाने वाले जपादि अनुष्ठान, **वर्षफल-जन्मदिन, सन्तान** के जन्म सम्बन्धी कृत्य, गर्भाधान, पुंसवन और सीमान्त जैसे संस्कार तथा पहले से आरम्भ किए गए निर्माण कार्य किए जा सकते हैं। श्रावण अधिक मास में व्रत, नियमों की पालना करते हुए (विशेषकर एकादशी, पूर्णिमा आदि पर्व-तिथियों पर) भगवान् लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजार्चन, व्रत, स्नान-दानादि तथा पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ करके श्रीसूक्त के मन्त्र **कूर्माय नम: सहस्रशीर्षाय नम:** आदि मन्त्र पढ़ते हुए गन्धयुक्त पुष्प चढ़ाने से मनुष्य पर श्रीलक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है। अधि-मास शुरु होने पर प्रात: स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर एकभुक्त या नक्त व्रत रखकर विष्णुरूप '**सहस्रांशु**' (हज़ार किरण वाले श्रीसूर्यनारायण का) की मन्त्रों सहित रक्त पुष्पों द्वारा पूजन कर आदित्यहृदय, सूर्याष्टक स्तोत्रों तथा '**पुरुषोत्तम मास माहात्म्य**' का पाठ करना एवं कांस्य पात्र में अक्षत, फल, गुड़, मिष्ठान्न, वस्त्रों तथा तैंतीस अपूप (पूओं) को दक्षिणा सहित दान करने का विधान है। विशेष जानकारी के लिए पृष्ठ नं. 81 पर लिखे गए '**श्रावण अधिक मासफल**' सम्बन्धी लेख पढ़ें। **लोक-भविष्य**–प्रथम चान्द्र श्रावण में पाँच मंगलवार होने, मं.-बु.-शु. का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध तथा गुरु-राहु योग पर शनि की शत्रु दृष्टि होने से राजनेताओं में विग्रह-छत्रभंग तथा महँगाई, उपद्रव व सरकारी कठोर नीतियों से प्रजा में असन्तोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं।

आकाश लक्षण–पंजाब, हरि., हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, राजस्थान के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के ही योग हैं। श्रा. शु. ७ को यदि वर्षा हो, तो आगामी मास सुभिक्ष के संकेत हैं। धान्य सस्ते होंगे।

वि. संवत् २०८०, द्वितीय (अधि.) श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९४५											तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2023 ई. (ता. 2 से 16 अगस्त तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :	सूर्योदय कालिक	भा.स्टै.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	श्राव. शक	मुहर्रम मु.	अगस्त	श्राव. प्रवि.	घड़ी–पल	प्रातः शनि पश्चिम क्षितिज की ओर, गुरु याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। सायं शुक्र पश्चिमी क्षितिज में दृश्य जो 2 अग. से लुप्त हो जाएगा। सायंकाल ही मंगल–बुध पास–पास पश्चिम में दिखेंगे।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३३:४५	१	बुध	३५:४३	श्रव.	१७:५३	आयु	२१:५०	बा	१०:३९	11	14	2	१८	कुं.४४:०३	द्वितीय (अधिक) श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ ४४:०३ (23:26)	३:१५:१८:३५	5:49	19:19
३३:४३	२	गुरु	२६:१०	धनि.	१०:१८	सौभा	११:१०	तै	०:५७	12	15	3	१९	कुम्भ	भ. ५१:४८ से, सूर्य आश्ले. में २५:०८ (15:52), बुध पू.फा. में ३५:२५ **(A)**	३:१६:१५:५८	5:49	19:18
३३:३८	३	शुक्र	१७:२०	शत. पू.भा.	३:१५ ५७:१८	शोभ अति	०:५८ ५१:३८	वि	१७:२०	13	16	4	२०	मी.४३:४०	भ. १७:२० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	३:१७:१३:२३	5:50	19:17
३३:३८	४	शनि	९:३८	उ.भा.	५२:४०	सुक	४३:२५	बा	९:३८	14	17	5	२१	मीन	गण्डमूल 26:54 से,	३:१८:१०:४८	5:50	19:17
३३:३३	५	रवि	३:१८	रेव	४९:४३	धृति	३६:३०	तै	३:१८	15	18	6	२२	मे.४९:४३	भ. ५८:४५ से, **पंचक समाप्त** ४९:४३ (25:44), गुरु भर. (३) में **(B)**	३:१९:०८:१७	5:51	19:16
अवम्	६	रवि	५८:४५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**षष्ठी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३३:२८	७	चन्द्र	५५:५८	अश्वि	४८:३०	शूल	३१:००	वि	२७:२२	16	19	7	२३	मेष	भ. २७:२२ तक, **वक्री शुक्र** आश्ले. ४ **कर्क में १२:४०** (10:56) **(C)**	३:२०:०५:४७	5:52	19:15
३३:२५	८	मंग	५५:०३	भर.	४९:१०	गंड	२७:०३	बा	२५:३१	17	20	8	२४	मेष		३:२१:०३:१५	5:52	19:14
३३:२०	९	बुध	५५:४८	कृति	५१:३०	वृद्धि	२४:२८	तै	२५:२६	18	21	9	२५	वृ. ४:३५	शुक्र अस्त 3 अग.	३:२२:००:४९	5:53	19:13
३३:१५	१०	गुरु	५८:०३	रोहि	५५:१८	ध्रुव	२३:१०	व	२६:५६	19	22	10	२६	वृष	भ. २६:५६ से ५८:०३ तक,	३:२२:५८:२३	5:54	19:12
३३:१३	११	शुक्र	६०:००	मृग.	६०:००	व्या.	२३:००	ब	२९:४८	20	23	11	२७	मि.२७:४३		३:२३:५५:५५	5:54	19:11
३३:०८	११	शनि	१:३३	मृग	०:२०	हर्ष	२३:३८	बा	१:३३	21	24	12	२८	मिथुन	**पुरुषोत्तमा (कमला) एकादशी व्रत**	३:२४:५३:३१	5:55	19:10
३३:०३	१२	रवि	६:००	आर्द्रा	६:१८	वज्र	२४:५८	तै	६:००	22	25	13	२९	क.५६:१५	**प्रदोष व्रत**, मंगल उ.फा. में ८:४० (9:24)	३:२५:५१:१०	5:56	19:9
३३:००	१३	चन्द्र	११:१५	पुन.	१२:५८	सिद्धि	२६:५०	व	११:१५	23	26	14	३०	कर्क	भ. ११:१५ से ४४:०५ तक, मासशिवरात्रि व्रत	३:२६:४८:४६	5:56	19:8
३२:५५	१४	मंग	१६:५५	पुष्य	२०:०५	व्य.	२८:५८	श	१६:५५	24	27	15	३१	कर्क	**भारत स्वतन्त्रता दिवस (77वाँ)**, गण्डमूल 13:59 बाद	३:२७:४६:२६	5:57	19:7
३२:५३	३०	बुध	२२:५८	अश्ले	२७:३०	वरी	३१:२३	ना	२२:५८	25	28	16	३२	सिं.२७:३०	**अधि. श्रावण अमावस, श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम) मास समाप्त (D)**	३:२८:४४:०६	5:57	19:6

(A) वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 19:05 (घं.मिं.) **(B)** (३) में ३:५८ (7:26) **(C)** गण्डमूल 25:16 तक **(D)** (देखें पृष्ठ 81)

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 8 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	४	०	३	१०	०	६
२१	१५	२३	१८	२०	२९	११	४	४
२	४१	२५	१८	१०	३४	४	२५	२५
२३	१५	१७	५४	१७	२४	७	३०	३०
57 30	787 25	37 38	61 13	5 7	34 19	4 8	3 10	3 10
श्ले. २	भर. १	पूफा ४	पूफा २	भर. ३	श्ले. ४	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

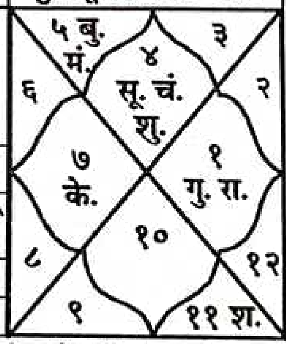
कुण्डली सूर्योदय, 8 अग.



बुधे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 16 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	४	०	३	१०	०	६
२८	२४	२८	२५	२०	२४	१०	४	४
४३	२०	२७	४	४६	४३	३०	०	०
१	४४	३२	४९	१५	१८	००	४	४
57 40	710 54	37 58	35 18	3 52	36 16	4 25	3 10	3 10
श्ले. ४	श्ले. ३	उफा १	पूफा ४	भर. ३	श्ले. ३	शत. २	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 16 अग.



द्वितीय (अधिक) श्रावण कृष्ण पक्षफल–

गत अधिक मास पक्ष की भान्ति इस पक्ष में भी ता. 16 अगस्त तक अधिमास की व्याप्ति रहेगी। जिस कारण इस अवधि में भी विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि मङ्गल–कृत्यों के सम्पादन तथा आभूषण, वाहन, भूमि आदि बहुमूल्य वस्तु के क्रय करने का निषेध रहेगा। यद्यपि पुरुषोत्तमा एकादशी, श्रीगणेश–चतुर्थी आदि पर्वों पर एकभुक्त व्रत रखकर भगवान् सहस्रांशु (सूर्य) का पूजन, मन्त्र, सूर्य–स्तोत्र व पुरुषोत्तम मास माहात्म्य का पाठ करना एवं यथाशक्ति फलों, वस्त्र, धार्मिक ग्रन्थ, अन्नापूरित कांस्य पात्र, ३३ अपूप (पूओं) का दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने का विशेष माहात्म्य होगा। श्रावण अधिमास की समाप्ति पर बाद दुपै. या परवर्ती दिन व्रत का उद्यापन करना भी आवश्यक होता है। इस दिन ब्राह्मण भोजन एवं दानादि करना प्रशस्त होता है। **'देवीभागवत'** अनुसार जिस प्रकार अणु मात्र बीज के दान करने से वट जैसा दीर्घजीवी महान् वृक्ष होता है, वैसे ही मलमास में दिया हुआ दान अधिक फल देता है। शास्त्रमतानुसार श्रावण अधिमास का फल इस प्रकार लिखा गया है–**'दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजाक्षयः।।'**–अर्थात् कहीं उपयोगी वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष एवं प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं सम्पदा की हानि, कुछ देशोंका भूगोल परिवर्तित होगा तथा राजनैतिक अस्थिरता पैदा होगी। **लोक–भविष्य–**द्वितीय चान्द्र श्रावण में पाँच बुधवार एवं पाँच बृहस्पतिवार होने से देश के पश्चिम भागों जैसे–काश्मीर, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरातादि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, आतंकादि विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन–सम्पदा को क्षति पहुँचे। ता. 7 को शुक्र कर्क राशि में आने से अतिवृष्टि होने से धान्य का नाश हो तथा चोरों का भय रहे–**'कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्यविनाशं चौरजं भयम्।।'** आकाश लक्षण–भारत के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०८०, द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष शाक: १९४५

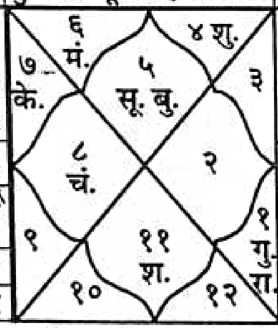
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	श्राव. शक	मुहर्रम मु.	अगस्त	भाद्र. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2023 ई. (ता. 17 से 31 अगस्त तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतु: प्रातःकाल गुरु पश्चिम कपाल में, शनि पश्चिम क्षितिज में नीचे डूबने को होगा। ता. 19 से शुक्र पूर्वक्षितिज में दिखेगा। सायंकाल मंगल–बुध पश्चिमी–क्षितिज में होंगे। ता. 31 से बुध पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	मा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३२:४८	१	गुरु	२९:०५	मघा	३५:००	परि	३३:४८	ब	२९:०५	26	29	17	१	सिंह	**सूर्य** मघा १ सिंह में १८:५५ (13:32), **भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. ३०, **(A)**	३:२९:४१:४९	5:58	19:05
३२:४३	२	शुक्र	३५:०८	पू.फा.	४२:२५	शिव	३६:१०	बा	२:०७	27	30	18	२	कं.५९:१५	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, मंगल कन्या में २४:४८, **वक्री शुक्र पूर्व में उदय 19:04**	४:००:३९:३३	5:59	19:04
३२:४०	३	शनि	४०:५३	उ.फा.	४९:३३	सिद्ध	३८:२०	तै	८:०१	28	स.	19	३	कन्या	**मधुस्त्रवा–हरियाली–सिंघारा तीज**, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	४:०१:३७:१६	5:59	19:03
३२:३५	४	रवि	४५:५८	हस्त	५५:५५	साध्य	३९:५५	व	१३:२६	29	2	20	४	कन्या	भ. १३:२६ से ४५:५८ तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी, स.सि.यो.	४:०२:३५:०२	6:00	19:02
३२:३०	५	चन्द्र	५०:००	चित्रा	६०:००	शुभ	४०:४८	ब	१७:५९	30	3	21	५	तु.२८:४३	**नाग–पञ्चमी**, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 19:04	४:०३:३२:५१	6:01	19:01
३२:२८	६	मंग	५२:४५	चित्रा	१:१८	शुक्ल	४०:४३	कौ	२१:२३	31	4	22	६	तुला	**श्रीकल्कि जयन्ती**, वक्री शनि शत. १ में ४१:२३ (22:34)	४:०४:३०:३७	6:01	19:00
३२:२३	७	बुध	५३:४५	स्वा.	५:१५	ब्रह्म	३९:१८	ग	२३:१५	भा	5	23	७	वृ.५२:१०	भ. ५३:४५ से, **बुध वक्री ४८:३५** (25:28), गोस्वामी तुलसीदास जयं. **(B)**	४:०५:२८:२७	6:02	18:59
३२:१८	८	गुरु	५२:५३	विशा.	७:३५	ऐन्द्र	३६:२५	वि	२३:१९	2	6	24	८	वृश्चिक	भ. २३:१९ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी–चामुण्डादेवी** (हि.प्र.)**(C)**	४:०६:२६:१६	6:02	18:57
३२:१३	९	शुक्र	५०:००	अनु.	७:५८	वैधृ	३१:५८	बा	२१:२७	3	7	25	९	वृश्चिक	गण्डमूल 9:14 से,	४:०७:२४:०९	6:03	18:56
३२:०८	१०	शनि	४५:१३	ज्ये.	६:२५	विष्क	२५:५५	तै	१७:३७	4	8	26	१०	ध. ६:२५	गण्डमूल विचार — **शुक्र उदय–18 अग.**	४:०८:२२:०२	6:04	18:55
३२:०५	११	रवि	३८:४३	मूल पू.षा.	३:०० ५७:५८	प्रीति	१८:२५	व	११:५८	5	9	27	११	धनु	भ. ११:५८ से ३८:४३ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**, गण्डमूल 7:16 तक	४:०९:१९:५५	6:04	18:54
३२:००	१२	चन्द्र	३०:४५	उ.षा.	५१:३५	आयु सौभा	९:३८ ५९:५०	ब	४:४४	6	10	28	१२	म.११:२८	**सोम प्रदोष व्रत**, वक्री बुध पू.फा. ४ में १८:५०, राहु अश्वि. १ केतु **(D)**	४:१०:१७:५०	6:05	18:53
३१:५८	१३	मंग	२१:४८	श्रव.	४४:२३	शोभ	४१:२५	तै	२१:४८	7	11	29	१३	मकर	**ऋग्वेदि–उपाकर्म**	४:११:१५:४५	6:05	18:52
३१:५०	१४	बुध	१२:१३	धनि.	३६:४३	अति	३८:३५	व	१२:१३	8	12	30	१४	कुं.१०:३३	भ. १२:१३ से ३७:२३ तक, **रक्षाबन्धन**–भद्रा बाद(देखें पृष्ठ 17),**पंचक प्रा.(E)**	४:१२:१३:४५	6:06	18:50
३१:४५	१५	गुरु	२:२८	शत.	२९:०५	सुक	२७:५३	ब	२:२८	9	13	31	१५	कुम्भ	**श्रावण–पूर्णिमा**, पूर्णिमा प्रात: 7:06 तक सूर्य पू.फा. में ८:३०, **(F)**	४:१३:११:४५	6:07	18:49

(A) पुण्यकाल सं. प्रात: 7:08 बाद, द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ** **(B)** सूर्य सायन कन्या में २१:१३ (14:31), शक भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रा. **(C)** समाप्त, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 17) **(D)** चित्रा ३ में ३४:२५ **(E)** १०:३३ (10:19), श्रीसत्यनारायण व्रत श्रावणी–उपाकर्म, यजुर्वेदि–अथर्ववेदि उपाकर्म, ऋषि–तर्पण (अपराह्ण–काले), श्रीगायत्री–जयन्ती, हयग्रीव जयन्ती, कोकिला व्रत पूर्ण, **भद्रा 10:59 से 21:03 तक** **(F)** दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा (काश्मीर), वक्री बुध पश्चिम में अस्त 5:23, गायत्री जपम्

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	४	०	३	१०	०	६
६	१	३	२७	२१	२०	९	३	३
२४	२४	३२	३९	१०	२६	५४	३४	३४
५९	१७	३०	५५	३०	३१	१०	२८	२८
57 50	790 28	38 18	3 48	2 11	24 40	4 32	3 10	3 10
मघा २	विशा ४	उफा ३	उफा १	भर. ३	श्ले. २	शत. १	अश्वि २	चित्रा ४
०	०	मा	व	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

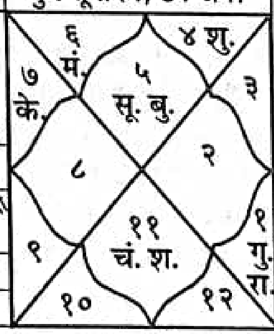
कुण्डली सूर्योदय, 24 अग.



गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 31 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	०	३	१०	०	६
१३	१२	८	२५	२१	१८	९	३	३
१०	१३	१	९	२१	२०	२२	१२	१२
१६	२८	३०	३१	४०	४७	२४	२३	२३
57 59	911 57	38 36	44 3	0 49	8 33	4 32	3 11	3 11
मघा ४	शत २	उफा ४	पूफा ४	भर. ३	श्ले. १	शत. १	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	व	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 31 अग.



द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा (17 अग.) से अष्टमी तिथि (24 अग.) तक **माता छिन्नमस्तिका** (चिन्तपूर्णी), **माता ज्वालामुखी एवं चामुण्डा** (काँगड़ा) में जागरण, कीर्तन, लंगर आदि सम्बन्धी भव्य मेले आयोजित होते हैं। ता. 19 अग. को **सिंघारा तीज** के दिन सुहागिन स्त्रियां झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग–पंचमी** (21 अग.) को अपने गृह–द्वार की दहलीज के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर उनका दूध, दूर्वा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं सहित पूजा करके '**ॐ कुरुकुल्ये हुँ फट् स्वाहा**' मन्त्र का 3 माला जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्प–विष का भय नहीं होता। **श्रावण पूर्णिमा** (30 एवं 31 अगस्त) को भाई–बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक '**रक्षाबन्धन**' का त्यौहार समस्त भारत में मनाया जाएगा। 31 अग. को पूर्णिमा प्रात: 7:06 तक ही व्याप्त (तीन मुहूर्त न्यून) है। ता. 30 अग., बुधवार को प्रात: 10:59 के बाद रात्रिपर्यन्त पूर्णिमा विद्यमान् रहेगी, परन्तु रात्रि 9:03 तक भद्रा व्याप्त रहेगी। अत: रात्रि भद्रा उपरान्त ही रक्षाबन्धन करना शास्त्रसम्मत होगा (देखें पृष्ठ 17)। **भाद्रपद संक्रान्ति**–ता. 17 अगस्त, बृहस्पतिवार को दोप. 1 बजकर, 32 मिंट (13:32) पर वृश्चिक लग्न में प्रविष्ट होगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रात: 7:08 के बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. ब्राह्मणों तथा नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन राशि वालों के लिए शुभप्रद रहेगी। **आकाश लक्षण**–विपरीत ग्रहों (सूर्य–शनि) का समसप्तक योग कुछ क्षेत्रों में गम्भीर सूखे का कारण बनेगा तथा कुछ क्षेत्रों में प्रचण्ड वर्षा से बाढ़ का प्रकोप हो।

वि. संवत् २०८०, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९४५											तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 1 से 15 सितम्बर तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:	सूर्योदय कालिक	मा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	भाद्र. शक	सफ़र मु.	सितंबर	भाद. प्रवि.	प्रवेश घड़ी–पल	प्रात: गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर, शुक्र पूर्व में होगा। ता. 13 से बुध भी प्रात: पूर्वी क्षितिज में शुक्र से नीचे होगा। सायंकाल शनि पूर्व क्षितिज में तथा मंगल पश्चिम क्षितिज में दिखेगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
अवम्	१	गुरु	५३:००	००	००	००	००	०	00	०	०	0	०	००	भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३१:४३	२	शुक्र	४४:२०	पू.भा.	२२:०३	धृति	१७:३५	तै	१८:४०	10	14	1	१६	मी. ८:४३		४:१४:०१:४६	6:07	18:48
३१:३८	३	शनि	३६:४५	उ.भा.	१५:५८	शूल गंड	८:०५ ५९:४३	व	१०:३३	11	15	2	१७	मीन	भ. १०:३३ से ३६:४५ तक, **कज्जली-तृतीया**, गण्डमूल 12:31 से,	४:१५:०७:४८	6:08	18:47
३१:३५	४	रवि	३०:४३	रेव.	११:१८	वृद्धि	५२:४०	ब	३:४४	12	16	3	१८	मे.११:१८	पंचक समाप्त ११:१८ (10:39), **श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत (A).**	४:१६:०५:५१	6:08	18:46
३१:२८	५	चन्द्र	२६:२५	अश्वि	८:१५	ध्रुव	४७:०५	तै	२६:२५	13	17	4	१९	मेष	**चन्दन षष्ठी व्रत**, चन्द्रोदय 21:35 (जालन्धर), **गुरु वक्री ३३:४८ (B)**	४:१७:०३:५८	6:09	18:44
३१:२३	६	मंग	२४:०३	भर.	७:०५	व्या.	४३:०३	व	२४:०३	14	18	5	२०	वृ.२२:०८	भ. २४:०३ से ५३:५३ तक, हल-षष्ठी, स.सि.यो. 9:00 से,	४:१८:०२:०८	6:10	18:43
३१:२०	७	बुध	२३:४०	कृति	७:५५	हर्ष	४०:३८	ब	२३:४०	15	19	6	२१	वृष	**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत स्मार्त-गृहस्थियों के लिए), श्रीकृष्ण-जयंती (C)**	४:१९:००:१७	6:10	18:42
३१:१३	८	गुरु	२५:१०	रोहि	१०:३५	वज्र	३९:३८	कौ	२५:१०	16	20	7	२२	मि.४२:३५	**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत** (वैष्णव) संन्यासियों के लिए (देखें पृष्ठ 23)	४:१९:५८:३०	6:11	18:40
३१:१०	९	शुक्र	२८:२०	मृग	१४:५८	सिद्धि	३९:५०	ग	२८:२०	17	21	8	२३	मिथुन	**श्रीगुग्गा-नवमी**, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	४:२०:५६:४३	6:11	18:39
३१:०५	१०	शनि	३२:४८	आर्द्रा	२०:३५	व्य.	४०:५८	व	०:३४	18	22	9	२४	मिथुन	भ. ०:३४ से ३२:४८ तक,	४:२१:५४:५१	6:12	18:38
३१:००	११	रवि	३८:१०	पुन.	२७:१५	वरी	४२:४५	ब	५:२९	19	23	10	२५	क.१०:३०	**अजा एकादशी व्रत**	४:२२:५३:१९	6:13	18:37
३०:५५	१२	चन्द्र	४४:१०	पुष्य	३४:३०	परि	४५:००	कौ	१०:४०	20	24	11	२६	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा), गण्डमूल 20:01 से	४:२३:५१:३८	6:13	18:35
३०:५०	१३	मंग	५०:२०	अश्ले	४१:५८	शिव	४७:२३	ग	१७:१५	21	25	12	२७	सिं.४१:५८	भ. ५०:२० से, **भौम प्रदोष व्रत**, कैलाश यात्रा प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	४:२४:५०:०१	6:14	18:34
३०:४८	१४	बुध	५६:३०	मघा	४९:२८	सिद्ध	४९:४३	वि	२३:२५	22	26	13	२८	सिंह	भ. २३:२५ तक, **सूर्य उ.फा. में ५२:५८**, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:32,**(D)**	४:२५:४८:२४	6:14	18:33
३०:४३	३०	गुरु	६०:००	पू.फा.	५६:३८	साध्य	५१:५०	च	२९:२४	23	27	14	२९	सिंह	**कुशाग्रहणी अमावस, 'ॐ हुं फट् स्वाहा'** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, **(E)**	४:२६:४६:५२	6:15	18:32
३०:३८	३०	शुक्र	२:१८	उ.फा.	६०:००	शुभ	५३:३८	ना	२:१८	24	28	15	३०	कं.१३:२३	**भाद्रपद अमावस,**–स्नानदानादि प्रात: 7:10 तक, **बुध मार्गी ४८:५३ (25:48)**	४:२७:४५:१८	6:15	18:30

(A) (देखें पृष्ठ 12), मंगल हस्त में २:२५ (7:06) **(B)** (19:40), **शुक्र मार्गी १:४३** (6:50), **अगस्त्य-उदय**, गण्डमूल 9:27 तक **(C) योग (देखें पृष्ठ 23)**, शीतला-सप्तमी
(D) मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा चतुर्दशी, गं.मू. 26:01 तक **(E)** पिठोरी अमावस, **पितृकार्येषु अमावस**, रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान), लोहार्गल यात्रा (स्नान)–2 दिन

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 7 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	५	४	०	३	१०	०	६
१९	२०	१२	१८	२१	१८	८	२	२
५६	४५	३२	५४	२३	११	५१	५०	५०
५१	१०	३६	४४	११	८	१	७	७
58 13	749 49	38 55	56 19	0 35	7 53	4 24	3 11	3 11
पू.फा. २	रोहि ४	हस्त १	पू.फा. २	भर. ३	कृत्ति. १	शत. १	अश्वि. १	चित्रा ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 7 सितं.



शुक्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 15 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	४	०	३	१०	०	६
२७	२६	१७	१३	२१	२०	८	२	२
४३	५८	४५	५२	१२	११	१६	२४	२४
२९	००	११	२३	५०	५४	४१	४१	४१
58 29	718 58	39 17	3 16	2 12	23 38	4 7	3 11	3 11
उ.फा. १	उ.फा. १	हस्त ३	पू.फा. १	भर. ३	कृत्ति. २	शत. १	अश्वि. १	चित्रा ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 15 सितं.



भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (3 सितं.) तथा **चन्दन षष्ठी** (4 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत 6 सितम्बर, बुधवार को ग्राह्य एवं मान्य होगा।** इस दिन दोपहर 15[घं.]–38[मिं.] बाद सप्तमी-विद्धा अष्टमी स्मार्त्तानुसार अर्द्धरात्रि व्यापिनी एवं रोहिणी नक्षत्रयुता होने से प्रशस्त होगी। बुधवार तथा रोहिणी नक्षत्र का योग होने से **'कृष्ण-जयन्ती'** नामक प्रशस्त योग बना है, इसमें श्रीकृष्ण स्तोत्रादि का पाठ करना विशेष पुण्यप्रदायक होगा। वैष्णव मतावलम्बी उदय-व्यापिनी अष्टमी वाले दिन ता. 7 सितं. को ही व्रत रखेंगे। **वत्स-द्वादशी** (11 सितं.) को प्रात: बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग, मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस** (14 सितं.) को वर्षभर हेतु देव-पितृ कार्यों के लिए दिन के द्वितीय प्रहर के समय पूर्व या उत्तर दिशा में बैठकर मन्त्रपूर्वक कुशा ग्रहण करनी चाहिए। **लोक-भविष्य**–चान्द्र भाद्रपद मास में पाँच शुक्रवार होने से अनाज आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। धन का प्रसार बढ़ेगा, सरकार द्वारा प्रदत्त सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण कुछ गम्भीर समस्याएँ बढ़ेंगी। इस पक्ष में भी सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग, **'गुरु-राहु'** योग पर शनि एवं मंगल की दृष्टियां रहने से पश्चिमी देशों-रूस, यूरोप आदि देशों में कहीं **युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार** बनेंगे। भारत में राजनीतिक पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप भरा माहौल रहेगा। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का विरोध किया जाएगा, जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब हो। **आकाश-लक्षण**–पक्ष में उत्तरी भारत के अनेक प्रान्तों में तीव्र बौछारों के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। भाद्र. कृ. ८ को यदि मौसम खुश्क रहे, तो अनाज के मूल्यों में तीन मास तक तेजी रहे।

वि. संवत् २०८०, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक: १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 16 से 29 सितंबर तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

प्रात: गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, शुक्र पूर्व में तथा उससे नीचे बुध पूर्वी क्षितिज में होगा। सायं शनि पूर्व में, मंगल पश्चिम–क्षितिज में दिखेगा, जो ता. 24 से अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें भाद्र. शक	सफर मु.	सितंबर	भाद्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०:३३	१	शनि	७:३५	उ.फा.	३:२०	शुक्ल	५४:५०	ब	७:३५	25	29	16	३१	कन्या	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, **सामवेदि उपाकर्म** (देखें पृष्ठ 18)	४:२८:४३:४९	6:16	18:29
३०:२८	२	रवि	१२:१३	हस्त	९:२३	ब्रह्म	५५:२५	कौ	१२:१३	26	रबि	17	आ.	तु.४२:०८	**सूर्य कन्या में १८:०३ (13:30), आश्विन संक्रान्ति**, मु. ३० पुण्यकाल**(A)**	४:२९:४२:२४	6:17	18:28
३०:२३	३	चन्द्र	१५:५८	चित्रा	१४:३८	ऐन्द्र	५५:१८	ग	१५:५८	27	2	18	२	तुला	भ. ४७:१८ से, **हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, **कलंक–चतुर्थी (B)**	५:००:४०:५५	6:17	18:26
३०:१८	४	मंग	१८:३५	स्वा	१८:४५	वैधृ	५४:०८	वि	१८:३५	28	3	19	३	तुला	भ. १८:३५ तक, **सिद्धि विनायक व्रत** (देखें पृष्ठ 19)	५:०१:३९:३३	6:18	18:25
३०:१५	५	बुध	१९:५८	विशा	२१:४३	विष्क	५१:५८	बा	१९:५८	29	4	20	४	वृ. ६:०५	**ऋषि-पंचमी व्रत, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)**	५:०२:३८:०८	6:18	18:24
३०:०८	६	गुरु	१९:५०	अनु	२३:१०	प्रीति	४८:३३	तै	१९:५०	30	5	21	५	वृश्चिक	**सूर्य षष्ठी व्रत**	५:०३:३६:४७	6:19	18:22
३०:०३	७	शुक्र	१८:१०	ज्ये.	२३:०८	आयु	४३:५०	व	१८:१०	31	6	22	६	ध.२३:०८	भ. १८:१० से ४६:३३ तक, **मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत (C)**	५:०४:३५:२९	6:20	18:21
३०:००	८	शनि	१४:५५	मूल	२१:३०	सौभा	३७:५५	ब	१४:५५	आ	7	23	७	धनु	**श्रीराधाष्टमी**, मंगल चित्रा में २७:०५, सूर्य सायन तुला में १५:०० **(D)**	५:०५:३४:०९	6:20	18:20
२९:५५	९	रवि	१०:०८	पू.षा.	१८:२३	शोभ	३०:४५	कौ	१०:०८	2	8	24	८	म.३२:२३	**श्रीचन्द–नवमी (उदासीन–सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ, (E)**	५:०६:३२:५५	6:21	18:19
२९:५०	१०	चन्द्र	३:५८	उ.षा.	१३:५५	अति	२२:३५	ग	३:५८	3	9	25	९	मकर	भ. ३०:२० से ५६:४० तक, **पद्मा एकादशी व्रत** (स्मार्त) **(F)**	५:०७:३१:३९	6:21	18:17
अवम्	११	चन्द्र	५६:४०	००	००	००	००	०	००	०	०	0	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२९:४५	१२	मंग	४८:३०	श्रव.	८:२०	सुक	१३:२८	ब	२२:३५	4	10	26	१०	कुं.३५:१५	**पंचक प्रारम्भ** ३५:१५ (20:28), **पद्मा एकादशी व्रत** (वैष्णव) **(G)**	५:०८:३०:२८	6:22	18:16
२९:४०	१३	बुध	३९:५०	धनि. शत.	१:५८ ५५:१५	धृति शूल	३:४८ ५३:४८	कौ	१४:१०	5	11	27	११	कुम्भ	**प्रदोष व्रत, सूर्य हस्त में** ३१:२० (18:55)	५:०९:२९:१७	6:23	18:15
२९:३५	१४	गुरु	३१:०८	पू.भा.	४८:३५	गण्ड	४३:५०	ग	५:२९	6	12	28	१२	मी.३५:१३	भ. ३१:०८ से ५६:५५ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (H)**	५:१०:२८:०६	6:23	18:13
२९:३०	१५	शुक्र	२२:४०	उ.भा.	४२:१५	वृद्धि	३४:०८	ब	२२:४०	7	13	29	१३	मीन	**भाद्रपद पूर्णिमा**, बुध उ.फा. में ३३:२५, **प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्ध प्रारम्भ,(I)**	५:११:२७:०१	6:24	18:12

(A) सं. प्रात: 7:06 बाद, श्रीवराह–जयन्ती (अपराह्ण–व्यापिनी) देखें पृष्ठ 18, विश्वकर्मा पूजन, रबि–उल्लावल (मु.) मास शुरु **(B)** (चन्द्रदर्शन–निषेध) चन्द्रास्त 20:13 (जालन्धर), पत्थर चौथ (देखें पृष्ठ 18) **(C) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (चन्द्रोदय व्यापिनी)** (देखें पृ. 19) **(D)** (12:20), दक्षिण गोल प्रारम्भ, शक आश्विन प्रारम्भ, महर्षि दधीचि जयन्ती **(E)** मंगल पश्चिम में अस्त 17:56 **(F) विष्णुश्रृंखल योग 11:55 से शुरु, (G) श्रीवामन–जयन्ती, श्रवण–द्वादशी** (देखें पृष्ठ 19), **विष्णुश्रृंखल योग 9:42 तक (H)** (जालन्धर में), श्रीसत्यनारायण व्रत **(I)** पूर्णिमा एवं प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 19), पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 23 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ५ ३२ ७	८ ७ ५४ २५	५ २३ ० ४२	४ १७ ४२ ३६	० २० ४९ ४८	३ २४ ५ १५	१० ७ ४५ ६	० १ ५९ १५	६ १ ५९ १५
58 43	835 19	39 39	66 00	3 44	35 38	3 41	3 11	3 11
उफा ३	मूल ३	हस्त ४	पूफा २	भर. ३	पुले. ३	शत. १	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

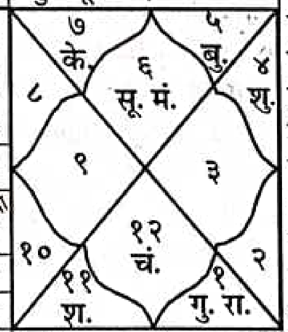
कुण्डली सूर्योदय, 23 सितं.



शुक्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 29 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ११ २४ ४८	११ ५ ३८ १६	५ २६ ५९ १४	४ २५ ४३ १२	० २० २४ ३८	३ २७ ५७ २१	१० ७ २३ ५३	० १ ४० ११	६ १ ४० ११
58 53	890 30	39 55	95 25	4 48	42 41	3 19	3 11	3 11
हस्त १	उभा १	चित्रा २	पूफा ४	भर. ३	पुले. ४	शत. १	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 29 सितं.



भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **हरितालिका तृतीया** (18 सितम्बर) का व्रत तथा शिव–गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। चन्द्रास्त–व्यापिनी सायंकालिक चतुर्थी के दिन (18 सितं.) चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। (देखें पृष्ठ 18)। मध्याह्न–व्यापिनी चतुर्थी को **सिद्धिविनायक** (19 सितं.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र (**ॐ गं गणपतये नम:**) तथा श्रीगणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। ता. 22 सितं. को मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी का व्रत सन्तान सुख प्राप्ति के लिए किया जाता है। ता. 22 सितं. से ही चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी से **श्रीमहालक्ष्मी का व्रत** प्रारम्भ करके आश्विन कृ. अष्टमी तक करने का विधान है। **ता. 23 सितं.** को मध्याह्न–व्यापिनी अष्टमी में श्रीराधा जन्मोत्सव एवं व्रत धारण किया जाएगा। ता. **28 सितं.** को अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए '**ॐ अनन्ताय नम:**' मंत्रपूर्वक तथा रेशम की पीली एवं 14 ग्रन्थियुक्त डोरी सहित पूजन करने का विधान है। **ता. 29 सितं.** भाद्रपद पूर्णिमा के दिन अपराह्ण काल में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त महालय पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाएगा। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध भी इसीदिन अपराह्ण–व्यापिनी प्रतिपदा (29 सितं.) में होगा। **आश्विन संक्रान्ति**–ता. 17 सितम्बर, रविवार को दोपहर 1 बजकर 30 मिंट (13घं.–30मिं.) पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रात: 7:06 बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. राजनेताओं तथा नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेंगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मकर कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए शुभप्रद रहेगी।

वि. संवत् २०८०, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 30 सितं. से 14 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

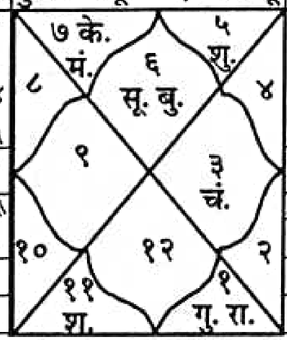
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आश्वि. श	रबिउल्ला. मु	सितंबर	आश्वि. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, शुक्र पूर्व में तथा बुध उससे नीचे होगा जो 3 अक्तू. से अस्त हो जाएगा। सायं शनि पूर्व में होगा। मं. अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२९:२८	१	शनि	१४:५५	रेव.	३६:५०	ध्रुव	२५:०८	कौ	१४:५५	8	14	30	१४	मे.३६:५०	पंचक समाप्त ३६:५० (21:08), द्वितीया का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 20), (A)	५:१२:२५:५४	6:24	18:11
२९:२३	२	रवि	८:१३	अश्वि	३२:३८	व्या.	१७:००	ग	८:१३	9	15	अक्तू	१५	मेष	भ. ३५:३८ से, बुध कन्या में ३५:२५ (20:35), शुक्र मघा १ सिंह में (B)	५:१३:२४:५१	6:25	18:10
२९:१५	३	चन्द्र	२:५८	भर.	२९:५५	हर्ष	१०:०८	वि	२:५८	10	16	2	१६	वृ.४४:३३	भ. २:५८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), महात्मा गाँधी जयं.(C)	५:१४:२३:५१	6:26	18:08
अवम्	४	चन्द्र	५९:२५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२९:१३	५	मंग	५७:४८	कृति	२९:०५	वज्र	४:३८	कौ	२८:३७	11	17	3	१७	वृष	मंगल तुला में २८:४८ (17:57), वक्री गुरु भर. २ में ४५:३५, पचंमी का श्राद्ध	५:१५:२२:५१	6:26	18:07
२९:०८	६	बुध	५८:०८	रोहि	३०:०५	सिद्धि व्या.	०:४० ५८:२५	ग	२७:५८	12	18	4	१८	वृष	भ. ५८:०८ से, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध	५:१६:२१:५५	6:27	18:06
२९:००	७	गुरु	६०:००	मृग	३३:००	वरी	५७:१५	वि	२९:१४	13	19	5	१९	मि. १:१८	भ. २९:१४ तक, सप्तमी का श्राद्ध	५:१७:२१:०२	6:28	18:04
२८:५८	७	शुक्र	०:२०	आर्द्रा	३७:४०	परि	५७:३५	ब	०:२०	14	20	6	२०	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न (चन्द्रोदय व्यापिनी), अष्टमी का श्राद्ध, (D)	५:१८:२०:०८	6:28	18:03
२८:५३	८	शनि	४:१०	पुन.	४३:४०	शिव	५८:५३	कौ	४:१०	15	21	7	२१	क.२७:०३	बुध हस्त में २०:१०, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ-नवमी	५:१९:१९:१९	6:29	18:02
२८:५०	९	रवि	९:२०	पुष्य	५०:४०	सिद्ध	६०:००	ग	९:२०	16	22	8	२२	कर्क	भ. ४२:२० से, दशमी का श्राद्ध, गण्डमूल 26:45 से, रविपुष्य योग	५:२०:१८:३०	6:29	18:01
२८:४५	१०	चन्द्र	१५:१८	अश्ले	५८:०८	सिद्ध	०:५०	वि	१५:१८	17	23	9	२३	सिं.५८:०८	भ. १५:१८ तक, एकादशी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 20), गण्डमूल विचार	५:२१:१७:४६	6:30	18:00
२८:३८	११	मंग	२१:३५	मघा	६०:००	साध्य	३:०८	बा	२१:३५	18	24	10	२४	सिंह	इन्दिरा एकादशी व्रत, मघा श्राद्ध, गण्डमूल विचार	५:२२:१७:०३	6:31	17:58
२८:३५	१२	बुध	२७:४८	मघा	५:३५	शुभ	५:२८	तै	२७:४८	19	25	11	२५	सिंह	सूर्य चित्रा में ३:४० (7:59), द्वादशी श्राद्ध, संन्यासिनां श्राद्ध, गं.मू. 8:45 तक	५:२३:१६:२१	6:31	17:57
२८:३०	१३	गुरु	३३:२५	पू.फा.	१२:४०	शुक्ल	७:२५	ग	०:३७	20	26	12	२६	कं.२९:२३	भ. ३३:२५ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत	५:२४:१५:४४	6:32	17:56
२८:२५	१४	शुक्र	३८:१५	उ.फा.	१९:०५	ब्रह्म	८:५०	वि	५:५०	21	27	13	२७	कन्या	भ. ५:५० तक, मंगल स्वाती में २३:१३, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु)(E)	५:२५:१५:०९	6:33	17:55
२८:२३	३०	शनि	४२:१०	हस्त	२४:३८	ऐन्द्र	९:३८	च	१०:१३	22	28	14	२८	तु.५७:००	आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, शनिवासरी अमावस, (F)	५:२६:१४:३३	6:33	17:54

(A) आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ **(B)** ४६:२५ (24:59), तृतीया का श्राद्ध, अक्तूबर मास प्रारम्भ, गण्डमूल 19:28 तक **(C)** भरणी श्राद्ध, **चतुर्थी का श्राद्ध, बुध पूर्व में अस्त 29:47**
(D) जीवित्पुत्रिका व्रत (E) से मृतों का श्राद्ध **(F) चतुर्दशी/अमावस तिथि का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, पितृ-विसर्जन,** बुध चित्रा में ५३:५८

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 7 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	५	०	४	१०	०	६
१९	२४	२	९	१९	४	६	१	१
१६	३	१९	१९	४१	५	५९	१४	१४
५४	१०	५४	५२	३२	३६	३३	४५	४५
59 11	723 30	40 18	106 21	6 7	49 59	2 41	3 11	3 11
हस्त ३	पुन २	चित्रा ३	उफा ४	भर. २	मघा २	शत. १	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

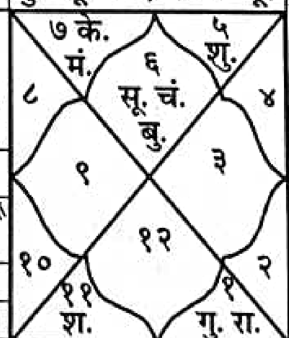
कुण्डली सूर्योदय, 7 अक्तू.



शनौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 14 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	५	०	४	१०	०	६
२६	१७	७	२१	१८	१०	६	०	०
११	४६	३	४१	५५	१०	४२	५२	५२
५९	११	६	२८	५९	३२	३३	३०	३०
59 27	738 27	40 39	104 29	7 1	54 49	2 4	3 11	3 11
चित्रा १	हस्त ३	स्वा १	हस्त ४	भर. २	मघा ४	शत. १	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 14 अक्तू.



आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्णपक्ष '**पितृपक्ष**' कहलाता है। पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्राय: सभी श्राद्धकर्म **पार्वण श्राद्ध** कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु-तिथ्यानुसार तिल, जौं, चावल, कुशा एवं गंगाजल सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्रादि का दान दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश, सम्पदा, मोक्ष आदि सुख प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं–'**आयु पुत्रान् यश: स्वर्गकीर्ति पुष्टिबलं श्रियम्। पशून् सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृ पूजनात्।।**' जो व्यक्ति जान बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है। ता. 6 अक्तू. को (अष्टमी तिथि) **श्रीमहालक्ष्मी एवं जीवित्पुत्रिका का व्रत**-पूजन, सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति एवं सन्तान सुख व उनकी दीर्घायु की कामना हेतु करती है। ता. 14 अक्तू. को चतुर्दशी तिथि/अमावस में तथा ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतजनों (पितरों) के निमित्त सर्वपितृ श्राद्ध होगा। **चतुर्दशी तिथि में** सामान्य ढंग से मृतजनों का श्राद्ध भी इसी दिन करने का निर्देश किया गया है। **शास्त्रों में मध्याह्न विशेषकर अपराह्ण-काल में श्राद्धकर्म करने का विधान** कहा गया है। सायंकाल गृहद्वार के बाहर दीप-प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ-विसर्जन करना चाहिए। **लोक-भविष्य**–चान्द्र आश्विन मास में पाँच शनिवार होने से कहीं भूकम्प, बादल-विस्फोट, यानादि दुर्घटना अथवा अग्निकाण्ड, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। लोगों में क्लिष्ट रोगों का भी भय रहे। दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी होने से सामान्य लोगों में परेशानियाँ एवं असुरक्षा की भावना होगी। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादल-चाल एवं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०८०, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक : १९४५											तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 15 से 28 अक्तूबर तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु :	सूर्योदय कालिक	मा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	आश्वि शक	रबिउल. मु.	अक्तू.	आश्वि प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पश्चिमकपाल में दिखेगा। इसी समय शुक्र पूर्व में होगा। सायंकाल शनि पूर्वकपाल में होगा। मंगल–बुध अभी अस्त हैं।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
२८:१८	१	रवि	४४:५८	चित्रा	२९:०५	वैधृ.	९:३५	किं	१३:३४	23	29	15	२९	तुला	**शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन** (10:24 बाद), मातामह (नाना/नानी) **(A)**	५:२७:१४:०४	6:34	17:53
२८:१०	२	चन्द्र	४६:३८	स्वा.	३२:३०	विष्क	८:४०	बा	१५:४८	24	30	16	३०	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. १५	५:२८:१३:३४	6:35	17:51
२८:०५	३	मंग	४७:०८	विशा	३४:४८	प्रीति	६:५३	तै	१६:५३	25	रबि	17	का.	वृ.१९:२०	**सूर्य तुला में ४७:१३ (25:29), कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३० पुण्यकाल **(B)**	५:२९:१३:०९	6:36	17:50
२८:०३	४	बुध	४६:३३	अनु	३६:०३	आयु	४:१५	व	१६:५१	26	2	18	२	वृश्चिक	भ. १६:५१ से ४६:३३ तक, बुध तुला में ४६:४० (25:16), गण्डमूल 21:01 से	६:००:१२:४१	6:36	17:49
२७:५८	५	गुरु	४४:४८	ज्ये.	३६:०८	सौभा शोभ	०:४३ ५६:३८	ब	१५:४१	27	3	19	३	ध.३६:०८	**उपाङ्ग ललिता व्रत**, गण्डमूल विचार	६:०१:१२:१८	6:37	17:48
२७:५३	६	शुक्र	४१:५८	मूल	३५:०८	अति	५१:००	कौ	१३:२३	28	4	20	४	धनु	**सरस्वती आवाहन** (मूलभे), गण्डमूल 20:41 तक	६:०२:११:५७	6:38	17:47
२७:५०	७	शनि	३८:१०	पू.षा.	३३:१०	सुक	४४:५५	ग	१०:०४	29	5	21	५	म.४७:३३	भ. ३८:१० से, **सरस्वती पूजन पू.षाभे**, भद्रकाली अवतार	६:०३:११:३५	6:38	17:46
२७:४५	८	रवि	३३:२३	उ.षा.	३०:१३	धृति	३८:०३	वि	५:४७	30	6	22	६	मकर	भ. ५:४७ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, बुध स्वाती में ४५:००, सरस्वती**(C)**	६:०४:११:१७	6:39	17:45
२७:४०	९	चन्द्र	२७:४३	श्रव.	२६:२५	शूल	३०:३०	बा	०:३३	का	7	23	७	कुं.५४:१८	**पंचक प्रा.** ५४:१८ (28:23), **महानवमी** (व्रत, पूजा एवं बलिदान हेतु) **(D)**	६:०५:११:०१	6:40	17:44
२७:३५	१०	मंग	२१:२५	धनि.	२१:५८	गण्ड	२२:२५	ग	२१:२५	2	8	24	८	कुम्भ	भ. ४८:०३ से, **विजयादशमी** (दशहरा), अपराजिता-पूजन, शमी पूजा, **(E)**	६:०६:१०:४७	6:41	17:43
२७:३३	११	बुध	१४:४०	शत.	१७:०३	वृद्धि	१४:००	वि	१४:४०	3	9	25	९	मी.५८:१३	भ. १४:४० तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत-मिलाप**	६:०७:१०:३१	6:41	17:42
२७:२८	१२	गुरु	७:३८	पू.भा.	११:५३	ध्रुव व्या.	५:२० ५६:४०	बा	७:३८	4	10	26	१०	मीन	**प्रदोष व्रत**	६:०८:१०:२१	6:42	17:41
२७:२३	१३	शुक्र	०:३५	उ.भा.	६:४५	हर्ष	४८:१५	तै	०:३५	5	11	27	११	मीन	भ. ५३:५८ से, वाराह चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी देवी (देवबन), गं.मू. 9:25 से,	६:०९:१०:११	6:43	17:40
अवम्	१४	शुक्र	५३:५८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० (देखें पृष्ठ 27, 180) ⟵	००००	००	००
२७:१८	१५	शनि	४७:५५	रेव अश्वि	१:५८ ५७:५५	वज्र	४०:२०	वि	२०:५२	6	12	28	१२	मे. १:५८	भ. २०:५२ तक, **पंचक समाप्त** १:५८, **आश्विन पूर्णिमा, खण्डग्रास (F)**	६:१०:१०:०४	6:44	17:39

(A) श्राद्ध, वक्री शनि धनि. ४ में ११:४८, महाराजा अग्रसेन जयन्ती **(B)** सं. अगले दिन प्रातः 7:53 तक, शुक्र पू.फा. में २२:००, आकाश दीपदान प्रारम्भ, श्रीदुर्गा पूजा प्रारम्भ, रवि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ **(C)** बलिदान उ.षाभे, सरस्वती विसर्जन (श्रवणभे) देखें पृष्ठ 20 **(D) नवरात्र समाप्त**, सूर्य सायन वृश्चिक में ३७:५८ (21:51), शक कार्तिक प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(E)** सूर्य स्वाती में २९:२३, आयुध (शस्त्र) पूजा, सीमोल्लंघन, श्रीमाधवाचार्य जयं. **(F) चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य, देखें पृष्ठ 27), **शरद् पूर्णिमा व्रत, महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ, कोजागर व्रत, आकाश दीपदान प्रारम्भ, महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), नवान्नभक्षणं

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 22 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	६	०	४	१०	०	६
४	२	१२	५	१७	१७	६	०	०
८	१४	२९	२०	५७	४४	२८	२७	२७
२५	५७	४२	२७	३	३०	३८	४	४
59 41	846 36	41 2	99 36	7 45	59 2	1 18	3 11	3 11
चित्रा ४	उषा २	स्वा २	चित्रा ४	भर. २	पूफा २	धनि ४	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 22 अक्तू.



शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 28 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	११	६	६	०	४	१०	०	६
१०	२८	१६	१५	१७	२३	६	०	०
६	४७	३६	९	९	४५	२२	७	७
५९	२५	४०	१५	४०	२४	११	५९	५९
59 51	858 25	41 20	96 11	8 4	61 38	0 42	3 11	3 11
स्वा २	रेव ४	स्वा ३	स्वा ३	भर. २	पूफा ४	धनि ४	अश्वि १	चित्रा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 28 अक्तू.



आश्विन शुक्ल पक्षफल—

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 15 अक्तू., रविवार से शारदीय नवरात्र प्रारम्भ होंगे। इस दिन स्नान, ध्यानादि के बाद शुद्ध पात्र में रेत-मिट्टी डालकर मंगलमंत्रपूर्वक जौं/गेहूँ/सप्तधान्य के बीज वपन करने चाहिएँ तथा श्रीदुर्गा जी की मूर्त्ति के सम्मुख अखण्डदीप प्रज्वलन एवं मंत्रोच्चारण सहित घटस्थापन करना चाहिए। फिर षोड्शोपचार पूजन सहित श्रीदुर्गा-पूजन करके संकल्पपूर्वक प्रतिपदा से नवमी तिथि तक देवी के सम्मुख दीप जलाकर '**श्रीदुर्गा सप्तशती**' का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। प्रतिपदा के दिन चित्रा नक्षत्र तथा वैधृति-अशुभ योग होने से शास्त्रानुसार प्रातः 10:24 बाद अथवा अभिजित् मुहूर्त्त में कलश (घट) स्थापन करना शुभ होगा। **कार्तिक संक्रान्ति**—ता. 17 अक्तू., मंगलवार को रात्रि 1 बजकर 29 मिंट (25:29) पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 18 अक्तू. को प्रातः 7:53 बजे तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. राजनेताओं, चोरों, बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**—यह सं. वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। भौमवती संक्रान्ति तथा सं. कुण्डली में सूर्य-मंग-केतु का गुरु-राहु के साथ समसप्तक योग होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के योग हैं। कुछ राज्यों में राजनीतिक संकट, कहीं राज्य-परिवर्तन, अग्निकाण्ड एवं युद्धादि का भय रहेगा। समाज में उपद्रव, विद्रोह एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। **ता. 24 अक्तू.** को विजयादशमी पर्व होगा। विजयादशमी स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त माना जाता है। **सः कालो विजयोज्ञयः सर्वकार्य सिद्धये।** सायंकाल रावण-दहन से पूर्व देवताओं, आयुध, अपराजिता-पूजन और पूजनीय गुरुजनों की यथाविधि पूजा करने की भी परम्परा है। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिम भागों में कहीं छिटपुट रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। दशमी को सायं यदि बादल या वर्षा हो तो आगे उड़द, तिल, कपास महँगे होंगे।

वि. संवत् २०८०, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक: १९४५

सन् 2023 ई. (ता. 29 अक्तू. से 13 नवंबर तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

प्रात: गुरु पश्चिमी-क्षितिज में नीचे की ओर, शुक्र पूर्व में होगा। सायं शनि याम्योत्तर से पूर्व में, 11 नवं. से बुध-पश्चिमी क्षितिज में दिखेगा। मंगल अभी अस्त है।

मा.स्टैं.टा. जालन्धर

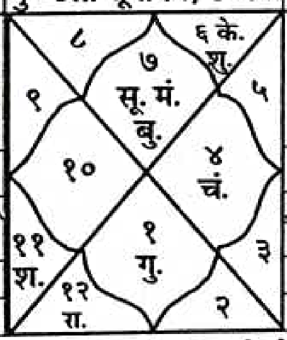
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	कार्ति. शक	रबिउल्लव्वल मु.	अक्टू.	कार्ति. प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
२७:१५	१	रवि	४२:५५	भर.	५४:५५	सिद्धि	३३:१३	बा	१५:२५	7	13	29	१३	मेष	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **ग्रहणवेध दिन**	६:११:०९:५५	6:44	17:38
२७:१०	२	चन्द्र	३९:०८	कृति.	५३:१०	व्य.	२७:००	तै	११:०२	8	14	30	१४	वृ. ९:१८	बुध विशाखा में ५९:१२, शुक्र उ.फा. में ४५:५०, राहु रेव ४ मीन-केतु **(A)**	६:१२:०९:५१	6:45	17:37
२७:०५	३	मंग	३६:५३	रोहि	५३:००	वरी	२१:५८	व	८:०१	9	15	31	१५	वृष	भ. ८:०१ से ३६:५३ तक, वक्री गुरु भर. १ में ३६:२८ ग्रहणवेध दिन	६:१३:०९:५०	6:46	17:36
२७:००	४	बुध	३६:२३	मृग.	५४:३३	परि	१८:१८	ब	६:३८	10	16	नवं	१६	मि.२३:३३	**व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12, **श्रीगणेश (B)**	६:१४:०९:४९	6:47	17:35
२६:५५	५	गुरु	३७:४३	आर्द्रा	५७:५३	शिव	१६:०३	कौ	७:०३	11	17	2	१७	मिथुन	**शुक्र कन्या में ५६:०० (29:12)**	६:१५:०९:५२	6:48	17:34
२६:५५	६	शुक्र	४०:५०	पुन.	६०:००	सिद्ध	१५:१३	ग	९:१७	12	18	3	१८	क.४६:३०	भ. ४०:५० से, **स्कन्द षष्ठी व्रत**, स.सि.यो.	६:१६:०९:५४	6:48	17:34
२६:५०	७	शनि	४५:२८	पुन.	२:५०	साध्य	१५:३३	वि	१३:०९	13	19	4	१९	कर्क	भ. १३:०९ तक, **शनि मार्गी १४:२५ (12:35)**	६:१७:१०:००	6:49	17:33
२६:४५	८	रवि	५१:१३	पुष्य	९:०८	शुभ	१६:५५	बा	१८:२१	14	20	5	२०	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत**, राधाष्टमी, राधाकुण्ड-स्नान, रविपुष्य योग, गं.मू. 10:29 से	६:१८:१०:०९	6:50	17:32
२६:४०	९	चन्द्र	५७:३०	अश्ले	१६:२०	शुक्ल	१८:५५	तै	२४:२२	15	21	6	२१	सिं.१६:२०	**सूर्य विशाखा में** ४९:३० (26:39), **बुध वृश्चिक में २३:५५**	६:१९:१०:२०	6:51	17:31
२६:३५	१०	मंग	६०:००	मघा	२३:५०	ब्रह्म	२१:१०	व	३०:३९	16	22	7	२२	सिंह	भ. ३०:३९ से, गण्डमूल 16:24 तक	६:२०:१०:३३	6:52	17:30
२६:३३	१०	बुध	३:४८	पू.फा.	३१:०५	ऐन्द्र	२३:१३	वि	३:४८	17	23	8	२३	कं.४७:५०	भ. ३:४८ तक, बुध अनुराधा में ३४:३५ (20:43)	६:२१:१०:४७	6:53	17:30
२६:३०	११	गुरु	९:३३	उ.फा.	३७:४०	वैधृ	२४:४८	बा	९:३३	18	24	9	२४	कन्या	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (देखें पृष्ठ 20), कौमुदि महोत्सव प्रारंभ	६:२२:११:०२	6:53	17:29
२६:२५	१२	शुक्र	१४:१५	हस्त	४३:०५	विष्क	२५:२८	तै	१४:१५	19	25	10	२५	कन्या	**प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी** (देखें पृष्ठ 20), **यम प्रीत्यर्थं दीपदान**	६:२३:११:२१	6:54	17:28
२६:२३	१३	शनि	१७:३८	चित्रा	४७:१०	प्रीति	२५:०८	व	१७:३८	20	26	11	२६	तु.१५:१८	भ. १७:३८ से ४८:३८ तक, **श्रीहनुमान जयन्ती** (उत्तर-भारत)-अर्द्धरात्रि**(C)**	६:२४:११:४१	6:55	17:28
२६:१८	१४	रवि	१९:३३	स्वा.	४९:४८	आयु	२३:४०	श	१९:३३	21	27	12	२७	तुला	**नरक चतुर्दशी** (पूर्व-अरुणोदय वाली), प्रभात स्नान, **दीपावली, (D)**	६:२५:१२:०४	6:56	17:27
२६:१५	३०	चन्द्र	२०:००	विशा	५१:०५	सौभा	२१:०५	ना	२०:००	22	28	13	२८	वृ.३५:५३	**कार्तिक (सोमवती) अमावस** (देव-पितृकार्येषु अमावस) तीर्थस्नान **(E)**	६:२६:१२:२८	6:57	17:27

(A) चित्रा २ **कन्या में** २७:२५ (17:43), ग्रहणवेध दिन **(B)** चतुर्थी व्रत, मंगल विशाखा में ५१:१८, दशरथ चतुर्थी **(C)** व्या., श्रीधनवन्तरी जयन्ती, यमाय-तर्पण, बुध पश्चिम में उदय 17:27, मासशिवरात्रि व्रत **(D)** **श्रीमहालक्ष्मी-पूजन** (देखें पृष्ठ 195), तैलाभ्यंग, रूप चौदश, कुबेर-पूजा, सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, शुक्र हस्त में ९:१३ **(E)** माहात्म्य, मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), श्रीमहावीर निर्वाण (जैन),

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 5 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	६	०	५	१०	११	५
१८	१४	२२	२७	१६	२	६	२९	२९
६	१०	८	४५	४	८	१९	४२	४२
४९	४८	४४	२७	३७	४२	३४	३३	३३
60 9	715 46	41 44	92 34	8 8	64 26	0 8	3 11	3 11
स्वा ४	पुष्य ४	विशा १	विशा ३	भर. १	उफा २	धनि ४	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 5 नवं.



चन्द्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 13 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	७	०	५	१०	११	५
२६	२१	२७	९	१५	१०	६	२९	२९
८	२५	४४	५५	०	५२	२३	१७	१७
५१	३८	७	२३	२१	१४	२८	७	७
60 24	784 32	42 9	89 33	7 49	66 38	0 58	3 11	3 11
विशा २	विशा १	विशा ३	अनु २	भर. १	हस्त १	धनि ४	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 13 नवं.



कार्तिक कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में **करवा-चौथ** (1 नवं.) का व्रत सुहागिनस्त्रियां पति की मंगल-कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं श्रीगणेश-पूजन करके चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान कर, पति की प्रतिष्ठा करने के उपरान्त ही भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (5 नवं.) का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **धन-त्रयोदशी** (10 नवं.) को नवीन बर्तन का क्रय करना, सायंकाले श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकालमृत्यु का भय नहीं रहता। ता. 11 नवं. को अर्द्धरात्रि चतुर्दशी में रुद्रावतार **श्रीहनुमान जयन्ती** का पर्व मनाया जाएगा। इस रात्रि को श्रीहनुमान उपासना करनी शुभ होगी। अर्धरात्रि के समय घृतपूर्ण दीपक जलाकर उन्हें मोदक, केले, फलादि अर्पण करके एवं सुन्दरकाण्ड का पाठ करें। इसीदिन सायंकाल दक्षिण दिशा की ओर मुख करके यम हेतु जल, तिल और कुश लेकर तर्पण करें। ता. 12 नवं. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के चतुर्थ प्रहर अर्थात् 12 नवं. की प्रात: तैलाभ्यङ्ग करके शुद्ध स्नान करना चाहिए। यद्यपि कार्तिक स्नान करने वालों के लिए तैलाभ्यङ्ग वर्जित है, परन्तु नरक-चतुर्दशी को तैलाभ्यङ्ग करने में कोई दोष नहीं। ता. 12 नवं. को ही प्रदोषकाल में दीपदान करके अपने गृह के पूजा स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके **श्रीमहालक्ष्मी** की यथाविधि पूजा करनी चाहिए। (देखें पृष्ठ 195)। ता. 13 नवं. को कार्तिक-सोमवती अमावस को हरिद्वार आदि में तीर्थस्नान, दान, जप, भगवान् शिव व विष्णु पूजन तथा पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की पुष्पाक्षत, चावल, फल, धूप, दीपादि सहित पूजन-परिक्रमा करने से अनेक पापों से मुक्ति मिलती है। **लोक-भविष्य**—कार्तिक मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से शुभाशुभ-दोनों प्रकार के फल घटित होंगे। प्राकृतिक प्रकोपों एवं नए सरकारी कानूनों के कारण सामान्य लोगों में असुरक्षा एवं भय की स्थिति बने, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं विस्फोट, *जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं का भय होगा।*

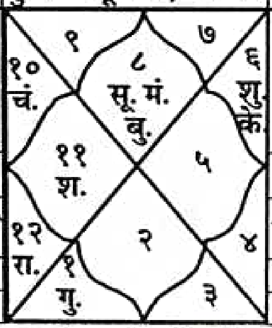
वि. संवत् २०८०, **कार्तिक शुक्ल पक्ष** शाक : १९४५										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 14 से 27 नवंबर तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु :	सूर्योदय कालिक	मा. स्टैं. टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	कार्ति. शक	रविउल्ला मु.	नवंबर	कार्ति. प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	सायं गुरु पूर्व में उदय होकर पूरी रात दिखेगा। शनि याम्योत्तरवृत्त के पास, बुध पश्चिमी क्षितिज में दिखेगा। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा। मंगल अस्त है।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६:१०	१	मंग	१९:०८	अनु.	५१:०५	शोभ	१७:२५	ब	१९:०८	23	29	14	२९	वृश्चिक	**अन्नकूट-गोवर्धन पूजा**, गोक्रीडा, बलिपूजा, कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **(A)**	६:२७:१२:५५	6:58	17:26
२६:०५	२	बुध	१७:०३	ज्ये.	५०:०५	अति	१२:५०	कौ	१७:०३	24	30	15	३०	ध.५०:०५	चन्द्रदर्शन, मु. १५, **भ्रातृ (भाई) दूज** (देखें पृ. 21), यम द्वितीया, यमुना-स्नान, **(B)**	६:२८:१३:२२	6:59	17:25
२६:०५	३	गुरु	१४:००	मूल	४८:१५	सुक	७:३०	ग	१४:००	25	जमा	16	मा.	धनु	भ. ४२:०८ से, **सूर्य वृश्चिक में** ४५:४८ (25:18), **मार्गशीर्ष संक्रान्ति, (C)**	६:२९:१३:४९	6:59	17:25
२६:००	४	शुक्र	१०:१०	पू.षा.	४५:४३	धृति शूल	१:३० ५५:०३	वि	१०:१०	26	2	17	२	धनु	भ. १०:१० तक, बुध ज्येष्ठा में २९:४० (18:52)	७:००:१४:२०	7:00	17:24
२५:५८	५	शनि	५:४५	उ.षा.	४२:४५	गण्ड	४८:१०	बा	५:४५	27	3	18	३	म. ०:०१	**सौभाग्य-पंचमी**, जया-पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन)	७:०१:१४:५२	7:01	17:24
२५:५५	६	रवि	०:५५	श्रव.	३९:२८	वृद्धि	४१:०५	तै	०:५५	28	4	19	४	मकर	भ. ५५:५० से, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**	७:०२:१५:२५	7:02	17:24
अवम्	७	रवि	५५:५०	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२५:५०	८	चन्द्र	५०:३५	धनि.	३५:५८	ध्रुव	३३:५०	वि	२३:१३	29	5	20	५	कुं. ७:४३	भ. २३:१३ तक, **पंचक प्रारम्भ ७:४३ (10:08),गोपाष्टमी,सूर्य अनु.(D)**	७:०३:१६:०४	7:03	17:23
२५:४८	९	मंग	४५:१५	शत.	३२:२३	व्या.	२६:३०	बा	१७:५५	30	6	21	६	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी**, आरोग्य व्रत, आमला-नवमी, जगधातृ पूजा	७:०४:१६:३९	7:04	17:23
२५:४३	१०	बुध	४०:००	पू.भा.	२८:५०	हर्ष	११:१३	तै	१२:३८	मा	7	22	७	मी.१४:४३	सूर्य सायन धनु में ३१:१० (19:33), शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७:०५:१७:१६	7:05	17:22
२५:४०	११	गुरु	३४:५३	उ.भा.	२५:२५	वज्र	११:५८	व	७:२७	2	8	23	८	मीन	भ. ७:२७ से ३४:५३ तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह(E)**	७:०६:१७:५३	7:06	17:22
२५:४०	१२	शुक्र	३०:०३	रेव.	२२:१८	सिद्धि व्य.	४:५५ ५८:१३	ब	२:२८	3	9	24	९	मे.२२:१८	**पंचक समाप्त २२:१८** (16:01), शनि शत. १ में ४:३०, गण्डमूल	७:०७:१८:३०	7:06	17:22
२५:३८	१३	शनि	२५:४०	अश्वि	१९:३३	वरी	५१:५५	तै	२५:४०	4	10	25	१०	मेष	**शनि प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी** (देखें पृष्ठ 21), गण्डमूल 14:56 तक	७:०८:१९:१२	7:07	17:22
२५:३३	१४	रवि	२१:५५	भर.	१७:२५	परि	४६:१०	व	२१:५५	5	11	26	११	वृ.३२:००	भ. २१:५५ से ५०:३० तक, **बुध मूल १ धनु** में ५६:५३ (29:53), **(F)**	७:०९:१९:५४	7:08	17:21
२५:३०	१५	चन्द्र	१९:०३	कृति	१६:०८	शिव	४१:१३	ब	१९:०३	6	12	27	१२	वृष	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त, (G)**	७:१०:२०:३७	7:09	17:21

(A) नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस) **(B)** कलम-दवात पूजन, विश्वकर्मा-पूजन, गण्डमूल 27:24 से, **(C)** मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, **मंगल वृश्चिक में ९:२८ (10:46),** दूर्वा गणपति व्रत, जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ **(D)** में ३:५५, मंगल अनु. में ५२:१८, पुष्कर मेला प्रारम्भ (राज.) **(E) भीष्मपंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त,** शुक्र चित्रा में ५८:३५ **(F) श्रीसत्यनारायण व्रत,** त्रिपुरोत्सव, वक्री गुरु अश्वि. ४ में ५०:१३, कार्तिक व्रतोद्यापनं **(G) मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान),** आकाशदीपदान समाप्ति

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	७	७	०	५	१०	११	५
३	२७	२	२०	१४	१८	६	२८	२८
१२	१६	४०	१३	७	४३	३२	५४	५४
८	३३	१२	००	१८	१९	२२	५१	५१
60 33	849 14	42 29	86 9	7 12	68 9	1 41	3 11	3 11
विशा ४	धनि २	विशा ४	ज्ये. २	भर. १	हस्त ३	धनि ४	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

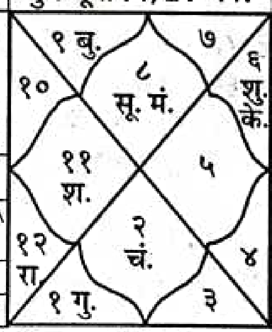
कुण्डली सूर्योदय, 20 नवं.



चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	७	७	०	५	१०	११	५
१०	५	७	२९	१३	२६	६	२८	२८
१६	२६	३८	५८	१९	४४	४६	३२	३२
२६	१२	४२	४४	२३	१२	१६	३६	३६
60 41	807 32	42 50	79 15	6 20	69 24	2 23	3 11	3 11
अनु ३	कृति ३	अनु २	ज्ये. ४	अश्वि ४	चित्रा २	शत १	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 27 नवं.



कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

प्रतिपदा (14 नवं.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए **अन्नकूट पर्व** के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग के पकवान बनाकर गोवर्धन, श्रीकृष्ण व गौओं की पूजा की जाती है। ता. 15 नवं. को भाई-बहन के परस्पर स्नेह का प्रतीक '**भ्रातृ-दूज**' का पर्व मनाया जाएगा। इसमें गणेश जी, शिव-पार्वती, यम, चित्रगुप्त, यमदूतों और यमुना पूजन पश्चात् भाई की मंगल-कामना हेतु उसे रोली व केशर का तिलक लगाती हैं। **अक्षय (आमला) नवमी** (21 नवं.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान-पुण्य अक्षय होता है। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (23 नवं.) को भगवान् लक्ष्मीनारायण की पूजा की जाती है। इसी दिन **भीष्मपंचक प्रारम्भ होकर 27 नवं. तक रहेंगे**। ता. 23 नवं. को ही विवाह-नक्षत्र (उ.भा./रेवती) में '**तुलसी-विवाह**' शुभ रहेगा। ता. 24 को श्रीहरि का **प्रबोधोत्सव** भी मनाने की परम्परा है। ता. 25 नवं. को अरुणोदय व्यापिनी (26 नवं. से पहिले) चतुर्दशी को दिनभर व्रत रखकर **श्रीविष्णु स्तोत्र** पाठ और रात्रि में भगवान् विष्णु की कमल-पुष्पों से पूजा व हरिकीर्तन करने का विधान है। तत्पश्चात् भगवान् शिव की पूजार्चना करनी चाहिए। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**–16 नवं., बृहस्पतिवार, 2023 ई. की रात्रि 1 बजकर, 18 मिंट (25:18) पर सिंह लग्न में प्रविष्ट होगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 17 नवं. को प्रातः 7:42 तक रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. ब्राह्मणों, नीच-दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभदायक रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु राशि वालों के लिए शुभप्रदायक रहेगी। **ग्रह-गोचर**–सूर्य-मंग., बुध का शनि के साथ चतुर्थ-दशम दृष्टि सम्बन्ध होने से देश में कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व कृषि की हानि, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएँ घटित हों। **आकाश लक्षण**–उत्तर पर्वतीय-क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–का. शु. १२ की रात्रि को आकाश निर्मल रहे, तो सुभिक्ष हो।

वि. संवत् २०८०, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक : १९४५										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 28 नवं. से 12 दिसंबर तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु :	सूर्योदय कालिक	मा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	मार्ग. शक	जन.हल्ला.मु.	नवंबर	मार्ग. प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	**ग्रह दर्शन**–प्रातः शुक्र पूर्व में चमकता हुआ दिखेगा। सायं गुरु पूर्व क्षितिज में, शनि याम्योत्तरवृत्त में, बुध पश्चिम क्षितिज में होगा। मंगल अभी अस्त है।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
२५:२७	१	मंग	१७:२०	रोहि	१५:५५	सिद्ध	३२:०८	कौ	१७:२०	7	13	28	१३	मि.४६:१८	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष शुरु, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	७:११:२१:२१	7:10	17:21
२५:२५	२	बुध	१६:५५	मृग	१७:००	साध्य	३२:४५	ग	१६:५५	8	14	29	१४	मिथुन	भ. ४७:३० से, **शुक्र तुला में ४४:४३** (25:04), सौभाग्यसुन्दरी व्रत **(A)**	७:१२:२२:०७	7:11	17:21
२५:२३	३	गुरु	१८:०५	आर्द्रा	१९:३५	शुभ	३४:१५	वि	१८:०५	9	15	30	१५	मिथुन	भ. १८:०५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	७:१३:२२:५४	7:12	17:21
२५:२२	४	शुक्र	२०:५०	पुन.	२३:४३	शुक्ल	३२:०८	बा	२०:५०	10	16	दिसं	१६	क. ७:३०	**दिसम्बर मास** (सं. 2023 ई.) **प्रारम्भ**	७:१४:२३:४०	7:12	17:21
२५:२०	५	शनि	२५:०५	पुष्य	२९:१३	ब्रह्म	३२:४५	तै	२५:०५	11	17	2	१७	कर्क	गण्डमूल 18:54 बाद	७:१५:२४:३२	7:13	17:21
२५:१५	६	रवि	३०:३५	आश्ले	३५:५५	ऐन्द्र	३४:१५	व	३०:३५	12	18	3	१८	सिं.३५:५५	भ. ३०:३५ से, **सूर्य ज्येष्ठा में १४:२८** (13:01), गण्डमूल विचार	७:१६:२४:२१	7:14	17:20
२५:१३	७	चन्द्र	३६:५३	मघा	४३:२०	वैधृ	३६:२०	वि	३:४४	13	19	4	१९	सिंह	भ. ३:४४ तक, गण्डमूल 24:35 तक	७:१७:२६:१३	7:15	17:20
२५:१२	८	मंग	४३:२५	पू.फा.	५०:५५	विष्क	३८:३५	बा	१०:०९	14	20	5	२०	सिंह	**श्रीकालभैरवाष्टमी, भैरव जयन्ती**, शुक्र स्वाती में २६:२०	७:१८:२७:०९	7:16	17:21
२५:१२	९	बुध	४९:३३	उ.फा.	५८:०३	प्रीति	४०:३३	तै	१६:२९	15	21	6	२१	कं. ७:४५		७:१९:२८:०२	7:16	17:21
२५:१०	१०	गुरु	५४:३५	हस्त	६०:००	आयु	४१:४८	व	२२:०४	16	22	7	२२	कन्या	भ. २२:०४ से ५४:३५ तक,	७:२०:२८:५८	7:17	17:21
२५:०९	११	शुक्र	५८:०५	हस्त	४:००	सौभा	४०:४०	ब	२६:२०	17	23	8	२३	तु.३६:२८	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	७:२१:२९:५६	7:18	17:21
२५:०६	१२	शनि	५९:४८	चित्रा	८:३०	शोभ	४०:४५	कौ	२८:५७	18	24	9	२४	तुला	मंगल ज्येष्ठा में २८:३३, बुध पू.षा. में ४६:०५	७:२२:३०:५६	7:19	17:21
२५:०५	१३	रवि	५९:४०	स्वा.	११:१८	अति	३८:०८	ग	२९:४४	19	25	10	२५	वृ.५७:१३	भ. ५९:४० से, **प्रदोष व्रत**	७:२३:३१:५४	7:19	17:21
२५:०४	१४	चन्द्र	५७:४३	विशा	१२:१५	सुक	३४:०५	वि	२८:४२	20	26	11	२६	वृश्चिक	भ. २८:४२ तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी-जयन्ती मेला पुरमण्डल **(B)**	७:२४:३२:५५	7:20	17:21
२५:०३	३०	मंग	५४:१३	अनु.	११:३०	धृति	२८:४५	च	२५:५८	21	27	12	२७	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस, भौमवती अमावस**, गण्डमूल 11:57 बाद	७:२५:३३:५८	7:21	17:22

(A) स.सि.यो. **(B)** (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर, जम्मू-काश्मीर)

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 5 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	८	०	६	१०	११	५
१८	१५	१३	९	१२	६	७	२८	२८
२२	४५	२२	३२	३२	३	८	७	७
४०	२५	४७	१३	५८	५०	२	८	८
60 53	710 14	43 15	57 34	5 5	70 36	3 9	3 10	3 10
ज्ये. १	पूफा ९	अनु. ४	मघा ३	आश्वि ४	चित्रा ४	शत. १	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

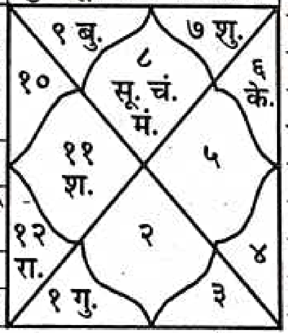
कुण्डली सूर्योदय, 5 दिसं.



भौमे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 12 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	८	०	६	१०	११	५
२५	१३	१८	१४	१२	१४	७	२७	२७
२९	०	२६	९	१	२०	३२	४४	४४
१६	४०	३३	२१	१०	३९	००	५३	५३
61 1	824 46	43 35	8 9	3 49	71 26	3 47	3 11	3 11
ज्ये. ३	अनु. ३	ज्ये. १	पूषा १	आश्वि ४	स्वा ३	शत १	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 12 दिसं.



मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की प्रदोषव्यापिनी अष्टमी तिथि (5 दिसं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इस दिन **'जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।'** के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी** (8 दिसं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। इस दिन प्रातः स्नानादि के पश्चात् **'ममाखिलपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर प्रीतिकामनाया मार्गशीर्ष कृष्णैकादशीव्रतं करिष्ये।'** यह संकल्प करके उपवास करें। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका-स्नान का पर्व ऊधमपुर (ज.का.) में मनाया जाता है। ता. 12 दिसं. को मार्गशीर्ष अमावस भौमवती होने से इसदिन श्रीगङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दान, देवपूजन एवं पितृतर्पण, ब्राह्मण भोजनादि कराने से एक हज़ार गोदान का फल मिलता है–**अमावस्या भवेद् वारो यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नाने गोसहस्रदान-समफलं लभेत्।।** परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया। **'राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।'** अर्थात् देश में राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह एवं टकराव की स्थिति रहे, किसी प्रदेश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। वैश्विक युद्धादि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो। **चान्द्र मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवार** घटित होने से भी देश में अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ शासकवर्ग के लिए यह अवधि अशुभ होगी। किसी देश अथवा राज्य में छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) की स्थिति बनेगी। विश्व में कहीं हवाई दुर्घटनाएं, आतंकवादी एवं युद्धोन्मोदी घटनाएं घटित होंगी।

शकुन–चतुर्दशी या ३० को सूर्य बादलों से ढक जावे, तो आगामी सुभिक्ष के संकेत होंगे। रूई, गुड़ सस्ते हो सकते हैं, अन्यथा महँगे होंगे।

वि. संवत् २०८०, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९४५										तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2023 ई. (ता. 13 से 26 दिसम्बर तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु:	सूर्योदय कालिक	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	मार्ग. शक	जमा.उल.मु.	दिसंबर	मार्ग. प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः शुक्र पूर्व में दृश्य, सायं गुरु पूर्व में चमकता हुआ दिखेगा, ता. 17 से सायं पश्चिम में दृश्य बुध लुप्त हो जाएगा। शनि पश्चिमकपाल में होगा। मंगल अस्त है।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२५:०२	१	बुध	४९:३३	ज्ये.	९:२०	शूल	२२:२३	किं	२१:५३	22	28	13	२८	ध. ९:२०	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **बुध वक्री १३:१३ (12:38)**, गण्डमूल विचार	७:२६:३४:५१	7:21	17:22
२५:००	२	गुरु	४३:५८	मूल	६:०३	गण्ड	१५:०५	बा	१६:४६	23	29	14	२९	धनु	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, गण्डमूल 9:47 तक	७:२७:३६:०३	7:22	17:22
२४:५९	३	शुक्र	३७:५०	पू.षा. उ.षा.	२:०० ५७:३५	वृद्धि ध्रुव	७:१५ ५९:१०	तै	१०:५४	24	जमा	15	३०	म.१५:५५	जमादि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	७:२८:३७:०८	7:23	17:23
२४:५९	४	शनि	३१:३५	श्रव.	५३:०५	व्या.	५१:००	व	४:४३	25	2	16	पौ.	मकर	भ. ४:४३ से ३१:१५ तक, **सूर्य मूल १ धनु में २१:२५ (15:57) (A)**	७:२९:३८:११	7:23	17:23
२४:५८	५	रवि	२५:२५	धनि.	४८:४८	हर्ष	४२:५८	बा	२५:२५	26	3	17	२	कुं.२०:५३	**पंचक प्रारम्भ २०:५३ (15:45), वक्री बुध पश्चिम में अस्त 17:23,(B)**	८:००:३९:१७	7:24	17:23
२४:५८	६	चन्द्र	१९:३५	शत.	४४:५३	वज्र	३५:१८	तै	१९:३५	27	4	18	३	कुम्भ	**स्कन्द (गुह) षष्ठी**, चम्पा–षष्ठी (महाराष्ट्र),	८:०१:४०:२३	7:25	17:24
२४:५७	७	मंग	१४:१५	पू.भा.	४१:३३	सिद्धि	२८:०३	व	१४:१५	28	5	19	४	मी.२७:२०	भ. १४:१५ से ४१:५५ तक, मित्रसप्तमी (देखें पृष्ठ 21)	८:०२:४१:२८	7:25	17:24
२४:५६	८	बुध	९:३३	उ.भा.	३८:५०	व्य.	२१:१५	ब	९:३३	29	6	20	५	मीन	**श्रीदुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी**, गण्डमूल 22:58 से	८:०३:४२:३४	7:26	17:24
२४:५६	९	गुरु	५:३०	रेव.	३६:४८	वरी	१५:०३	कौ	५:३०	30	7	21	६	मे.३६:४८	**पंचक समाप्त ३६:४८** (22:09), नन्दा–नवमी, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.	८:०४:४३:३९	7:26	17:25
२४:५५	१०	शुक्र	२:०५	अश्वि	३५:२३	परि.	९:२०	ग	२:०५	पौ	8	22	७	मेष	भ. ३०:४५से ५९:२३ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मार्त)** (देखें पृष्ठ21)**(C)**	८:०५:४४:४७	7:27	17:25
अवम्	११	शुक्र	५९:२३	००	००	०	००	०	००	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२४:५६	१२	शनि	५७:२५	भर.	३४:४०	शिव सिद्ध	४:१० ५९:३५	ब	२८:२४	2	9	23	८	वृ.४९:३५	**मोक्षदा एकादशी व्रत (वैष्णव)** (देखें पृष्ठ 21), अखण्ड द्वादशी	८:०६:४५:५३	7:27	17:26
२४:५७	१३	रवि	५६:१०	कृति	३४:३८	साध्य	५५:३५	कौ	२६:४८	3	10	24	९	वृष	**प्रदोष व्रत, शुक्र वृश्चिक में ५८:१३** (30:45)	८:०७:४७:००	7:28	17:27
२४:५७	१४	चन्द्र	५५:४८	रोहि	३५:२८	शुभ	५२:१५	ग	२५:५९	4	11	25	१०	वृष	भ. ५५:४८ से, **पिशाचमोचन श्राद्ध**, शिव चतुर्दशी व्रत, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन)	८:०८:४८:०६	7:28	17:27
२४:५८	१५	मंग	५६:२५	मृग.	३७:१०	शुक्ल	४९:४०	वि	२६:०७	5	12	26	११	मि. ६:१०	भ. २६:०७ तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**,श्रीसत्यनारायण**(D)**	८:०९:४९:१५	7:29	17:28

(A) पौष संक्रान्ति, पुण्यकाल सं. प्रातः 9:33 बाद, वक्री बुध मूल ४ में २४:०८, शुक्र विशाखा में ३९:३८ **(B)** श्रीपञ्चमी, श्रीराम–विवाहोत्सव, नाग–पंचमी **(C) श्रीगीता–जयन्ती**, सूर्य सायन मकर में ३:४५, शरद् ऋतु प्रारम्भ, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 21:36 तक **(D)** व्रत, त्रिपुरभैरव–जयन्ती

बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	८	०	६	१०	११	५
३	६	२४	१०	११	२३	८	२७	२७
३७	३१	१६	७	३६	५४	४	१९	१९
४०	३४	३५	५०	१६	४२	४१	२६	२६
61 5	835 2	43 58	74 56	2 12	72 10	4 27	3 10	3 10
मूल २	उषा १	ज्ये ३	मूल ४	अश्वि ४	विशा २	शत १	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 20 दिसं.



भौमे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 26 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	७	८	०	७	१०	११	५
९	२७	२८	२	११	१	८	२७	२७
४४	३५	४१	१५	२६	८	३२	०	०
१३	४४	१	३	९	४४	३५	२२	२२
61 6	773 27	44 13	66 16	0 58	72 36	4 55	3 11	3 11
मूल ३	मृग २	ज्ये ४	मूल १	अश्वि ४	विशा ४	शत १	रेव ४	चित्रा २
०	०	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 26 दिसं.



मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को **श्रीराम–विवाहोत्सव** मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र/चाँदी की मूर्ति को कलश पर स्थापित कर गणपति मातृका एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण–भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 22 एवं 23 दिसं. को अपने–अपने मतानुसार **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। ता. 22 को एकादशी–क्षय वाले दिन **श्रीगीता–जयन्ती** के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा–स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। ता. 26 दिसं. **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। **पौष संक्रान्ति–**16 दिसम्बर, शनिवार को दोपहर बाद 3 बजकर 57 मिनट पर (15:57) वृष लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 9:33 बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. राजनेताओं, चोरों, दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभदायक रहेगी। **सं. राशिफल–**यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ, शेष के लिए अशुभ रहेगी। **ग्रह–गोचर–**ता. 29 नवं. से 24 दिसं. तक **गुरु–शुक्र के मध्य समसप्तक योग, मंगल–शनि** के मध्य चतुर्थ–दशम दृष्टि सम्बन्ध रहने से उ.प्र., मं.प्र., बिहार, असम तथा जम्मू–कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, आतंकी विस्फोटक व हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप–प्रत्यारोप भरा रहेगा। **आकाश लक्षण–**पक्ष के उत्तरार्द्ध में हि.प्र., पंजाब, जम्मू–कश्मीर, उत्तराखण्ड के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा व ओलावृष्टि के संकेत हैं। **शकुन–**परन्तु मार्ग. शु. ९ रेवती नक्षत्रयुता होने से आगे दुर्भिक्षकारक रहेगी। 'मार्गेनवम्यां रेवत्यां बुधोदुर्भिक्षकारकः।।'

वि. संवत् २०८०, पौष कृष्ण पक्ष शाक : १९४५

सन् 2023–24 ई. (ता. 27 दिसं.(23) से 11 जन.(24) तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

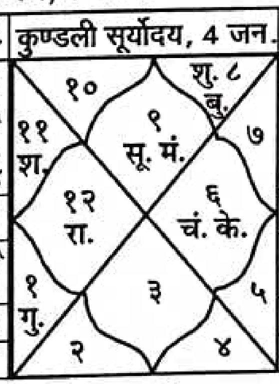
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	पौष शक	जमा.उ.मु.	दिसंबर	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में 29 दिसं. से बुध भी प्रातः पूर्वक्षितिज में दृश्य होगा। सायंकाल गुरु पूर्व में, शनि पश्चिमकपाल में होगा। मंगल अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२४:५९	१	बुध	५८:१५	आर्द्रा	४०:००	ब्रह्म	४८:००	बा	२७:२०	6	13	27	१२	मिथुन	मंगल मूल १ धनु में ४२:१० (24:21), शुक्र अनु. में ४३:३०, (A)	८:१०:५०:२१	7:29	17:28
२४:५९	२	गुरु	६०:००	पुन.	४४:००	ऐन्द्र	४७:१५	तै	२९:४५	7	14	28	१३	क.२७:५३	**वक्री बुध ज्येष्ठा ४ वृश्चिक में ९:४३** (11:22), **वक्री बुध पूर्व (B)**	८:११:५१:२८	7:29	17:29
२५:००	२	शुक्र	१:१५	पुष्य	४९:१०	वैधृ	४७:२८	ग	१:१५	8	15	29	१४	कर्क	भ. ३३:२५ से, सूर्य पू.षा. में २६:५० (18:14), गण्डमूल 27:10 से	८:१२:५२:३७	7:30	17:30
२५:०१	३	शनि	५:३५	अश्ले	५५:३०	विष्क	४८:३५	वि	५:३५	9	16	30	१५	सिं.५५:३०	भ. ५:३५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल विचार	८:१३:५३:४५	7:30	17:30
२५:०२	४	रवि	११:०५	मघा	६०:००	प्रीति	५०:२५	बा	११:०५	10	17	31	१६	सिंह	**गुरु मार्गी १:४५ (8:12 घं.मिं.)**, गण्डमूल विचार	८:१४:५४:५०	7:30	17:31
२५:०३	५	चन्द्र	१७:२५	मघा	२:४३	आयु	५२:४०	तै	१७:२५	11	18	जन.	१७	सिंह	**जनवरी मास–सन् 2024 ई. प्रारम्भ**, राहु रेव. ३ केतु चित्रा २ में ०:१३ **(C)**	८:१५:५६:०३	7:31	17:32
२५:०३	६	मंग	२४:१०	पू.फा.	१०:२८	सौभा	५५:०५	व	२४:१०	12	19	2	१८	कं.२७:२५	भ. २४:१० से ५७:२८ तक, **बुध मार्गी** २:४८ (8:38)	८:१६:५७:१२	7:31	17:32
२५:०५	७	बुध	३०:४५	उ.फा.	१८:०८	शोभ	५७:०५	ब	३०:४५	13	20	3	१९	कन्या		८:१७:५८:२०	7:31	17:33
२५:०७	८	गुरु	३६:२५	हस्त	२५:०८	अति	५८:१५	बा	३:३५	14	21	4	२०	तु.५८:०८	**रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध**	८:१८:५९:२९	7:31	17:34
२५:०८	९	शुक्र	४०:४०	चित्रा	३०:४८	सुक	५८:१०	तै	८:३३	15	22	5	२१	तुला		८:२०:००:३९	7:31	17:34
२५:१०	१०	शनि	४२:५८	स्वा.	३४:४०	धृति	५६:३८	व	११:४९	16	23	6	२२	तुला	भ. ११:४९ से ४२:५८ तक, स. सि. यो.	८:२१:०१:४८	7:31	17:35
२५:१०	११	रवि	४३:०८	विशा	३६:३०	शूल	५३:२३	ब	१३:०३	17	24	7	२३	वृ.२१:१५	**सफला एकादशी व्रत, बुध मूल १ धनु में ३३:२० (20:52)**, शुक्र ज्ये. में ४०:४०	८:२२:०३:००	7:32	17:36
२५:१२	१२	चन्द्र	४१:०८	अनु	३६:१८	गण्ड	४८:३०	कौ	१२:०८	18	25	8	२४	वृश्चिक	गण्डमूल 22:03 से, स.सि.यो.	८:२३:०४:१०	7:32	17:37
२५:१५	१३	मंग	३७:१३	ज्ये.	३४:०८	वृद्धि	४२:०५	ग	९:११	19	26	9	२५	ध.३४:०८	भ. ३७:१३ से, **भौम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल विचार	८:२४:०५:२०	7:32	17:38
२५:१५	१४	बुध	३१:३८	मूल	३०:२०	ध्रुव	३४:२३	वि	४:२६	20	27	10	२६	धनु	भ. ४:२६ तक, गण्डमूल 19:40 तक	८:२५:०६:३०	7:32	17:38
२५:१७	३०	गुरु	२४:४८	पू.षा.	२५:१८	व्या.	२५:४३	ना	२४:४८	21	28	11	२७	म.३८:५३	**पौष अमावस, सूर्य उ.षा. में ३१:४३** (20:13), शनि शत. (२) में ०:१३	८:२६:०७:४०	7:32	17:39

(A) पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ **(B)** में उदय 17:31, स.सि.यो. **(C)** गण्डमूल 8:36 तक

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	७	०	७	१०	११	५
१८	१७	५	२८	११	१२	९	२६	२६
५४	१८	२०	१४	२४	४	१९	३१	३१
२२	३०	४४	४५	५९	२८	२३	४४	४४
61 10	722 56	44 38	19 48	0 54	73 9	5 32	3 11	3 11
पूषा २	हस्त ३	मूल २	ज्ये. ४	अश्वि ४	अनु ३	शत. १	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

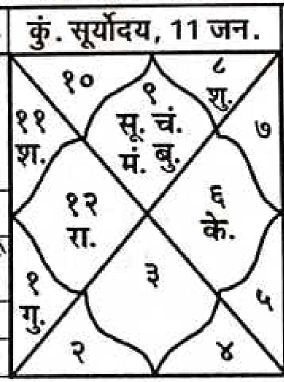
कुण्डली सूर्योदय, 4 जन.



गुरौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	८	०	७	१०	११	५
२६	१९	१०	२	११	२०	९	२६	२६
२	१६	३४	४०	३५	३७	५९	९	९
३१	६	९	४०	४०	३५	२८	२८	२८
61 9	880 47	44 57	56 53	2 21	73 28	5 58	3 11	3 11
पूषा ४	पूषा २	मूल ४	मूल १	अश्वि ४	ज्ये. २	शत १	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 11 जन.



पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्य आदि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन–सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 30 दिसं. शनिवार को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखने से मनोवांछित कामना पूर्ण होती है। ता. 4 जन. **रूक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण, रूक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दें तो रूक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 7 जन. को **सफला एकादशी** का व्रत रखकर एकादशी माहात्म्य का पाठ, जप, श्रीविष्णु स्तोत्र पाठ एवं यथाशक्ति अन्न, गुड़, गर्म–वस्त्र का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **लोक–भविष्य**–पौष मास में पाँच बुधवार तथा पाँच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। बुधवार होने से गेहूँ, धान्य, चावल, गुड़, मूँग आदि सर्वप्रकार की दालें तीन महीने के भीतर बहुत तेज होंगी। लोगों के दुःखों व कष्टों में वृद्धि होगी। पाँच गुरुवार होने से पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे–ईराक, सूडान, इज़रायल–फिलीस्तीन, यूक्रेन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य हालात बनेंगे–**'यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमी देशे खड्गयुद्धं च जायते।।'** मेषस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि, मीनस्थ राहु पर मंगल की शत्रु दृष्टि के प्रभावस्वरूप व्यापार जगत् में विशेष उथल–पुथल होगी। राजनीतिक वातावरण भी अशान्त तथा पेचीदा बन जाएगा। शुक्र पर शनि की दशम शत्रु दृष्टि भी होने से कहीं अनावृष्टि के योग बनेंगे। प्रतिकूल वर्षा तथा ओलावृष्टि से खड़ी फसलों को हानि होगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्द्ध में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०८०, **पौष शुक्ल पक्ष**			शाक : १९४५								तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2024 ई. (ता. 12 से 25 जनवरी तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :	सूर्योदय कालिक	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	पौष शक	जमा उ.मु.	जनवरी	पौष प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः शुक्र पूर्व में, बुध पूर्वी–क्षितिज में, ता. 17 से मंगल भी बुध के साथ पूर्वी–क्षितिज में दृश्य होगा। सायं शनि पश्चिम क्षितिज की ओर, गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास दिखाई देगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२५:२०	१	शुक्र	१७:१०	उ.षा.	११:२५	हर्ष	१६:२३	ब	१७:१०	22	29	12	२८	मकर	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु ३०, आरोग्य व्रत	८:२७:०८:४९	7:32	17:40
२५:२५	२	शनि	९:१३	श्रव.	१३:१८	वज्र सिद्धि	६:४५ ५७:१०	कौ	९:१३	23	रज	13	२९	कुं.४०:१०	**पंचक प्रारम्भ** ४०:१० (23:35), **लोहड़ी पर्व** (पं., हरि., जम्मू, **(A)**	८:२८:०९:५६	7:31	17:41
२५:२८	३	रवि	१:१३	धनि	७:१०	व्य.	४७:५३	ग	१:१३	24	2	14	मा.	कुम्भ	भ. २७:२८ से ५३:४३ तक, **सूर्य मकर में** ४८:०० (26:43), **मकर (B)**	८:२९:११:०५	7:31	17:42
अवम्	४	रवि	५३:४३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२५:३०	५	चन्द्र	४६:५५	शत. पू.भा.	१:३० ५६:३८	वरी	३९:१०	ब	२०:१९	25	3	15	२	मी.४२:४५	**पुण्यकाल माघ संक्रां. प्रातः 9:07 तक**	९:००:१२:१३	7:31	17:43
२५:३३	६	मंग	४१:०८	उ.भा.	५२:४८	परि	३१:१५	कौ	१४:०२	26	4	16	३	मीन	**मंगल पूर्व में उदय** ५१:५५ (28:17 घं.मिं.), गण्डमूल 28:38 से	९:०१:१३:२१	7:31	17:44
२५:३३	७	बुध	३६:३०	रेव.	५०:०८	शिव	२४:१५	ग	८:४९	27	5	17	४	मे.५०:०८	भ. ३६:३० से, **पंचक समाप्त** ५०:०८ (27:34), **मार्तण्ड–सप्तमी, (C)**	९:०२:१४:२८	7:31	17:44
२५:३५	८	गुरु	३३:०५	अश्वि	४८:३८	सिद्ध	१८:१३	वि	४:४८	28	6	18	५	मेष	भ. ४:४८ तक, **शुक्र मूल १ धनु में ३३:३३** (20:56), श्रीदुर्गाष्टमी, महारुद्र व्रत	९:०३:१५:३४	7:31	17:45
२५:४०	९	शुक्र	३०:५५	भर.	४८:२३	साध्य	१३:१०	बा	२:००	29	7	19	६	मेष	**(C)** श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती	९:०४:१६:३६	7:30	17:46
२५:४३	१०	शनि	२९:५३	कृति.	४९:०८	शुभ	९:००	तै	०:२४	30	8	20	७	वृ. ३:२८	भ. ५९:५५ से, बुध पू.षा. में २०:१८, सूर्य सायन कुम्भ में ३०:१८ (19:37)	९:०५:१७:४१	7:30	17:47
२५:४५	११	रवि	२९:५५	रोहि	५०:५५	शुक्ल	५:४३	वि	२९:५५	मा	9	21	८	वृष	भ. २९:५५ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत,** शक माघ प्रारम्भ	९:०६:१८:४४	7:30	17:48
२५:५०	१२	चन्द्र	३०:५८	मृग.	५३:४५	ब्रह्म	३:१३	ब	०:२७	2	10	22	९	मि.२२:१५	सुजन्म द्वादशी, स.सि.यो.	९:०७:१९:४५	7:29	17:49
२५:५३	१३	मंग	३२:५८	आर्द्रा	५७:२५	ऐन्द्र	१:२८	कौ	१:५८	3	11	23	१०	मिथुन	**भौम प्रदोष व्रत,** सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, ईशान व्रत	९:०८:२०:४७	7:29	17:50
२५:५५	१४	बुध	३५:५५	पुन.	६०:००	वैधृ	०:२५	ग	४:२७	4	12	24	११	क.४५:४५	भ. ३५:५५ से, **सूर्य श्रवण में** ३७:३३ (22:30) **(D)** शाकम्भरी जयन्ती	९:०९:२१:४८	7:29	17:51
२६:००	१५	गुरु	३९:५०	पुन.	२:०३	विष्क	०:१०	वि	७:५३	5	13	25	१२	कर्क	भ. ७:५३ तक, **पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ** श्रीसत्यनारायण व्रत, **(D)**	९:१०:२२:४५	7:28	17:52

(A) दिल्ली आदि), रज्जब (मु.) मास प्रारम्भ **(B) (माघ) संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 9:07 तक, मंगल पू.षा. में ३६:०३ (21:56), निरयण उत्तरायण प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 18 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	८	८	०	७	१०	११	५
३	१	१५	१०	११	२९	१०	२५	२५
१०	७	४९	१७	५६	१२	४२	४७	४७
२७	२	३६	४०	१८	३६	२१	१२	१२
61 5	818 43	45 13	74 6	3 43	73 42	6 20	3 10	3 10
उषा २	अश्वि १	पूषा १	मूल ४	अश्वि ४	ज्ये ४	शत. २	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 18 जन.



गुरौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 25 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	८	८	०	८	१०	११	५
१०	१	२१	१९	१२	७	११	२५	२५
१७	५४	६	२६	२६	४९	२७	२४	२४
४६	४४	५२	६	२२	१	३७	५७	५७
60 59	734 24	45 28	83 7	5 3	73 53	6 38	3 11	3 11
श्रव १	पुन ४	पूषा ३	पूषा २	अश्वि ४	मूल ३	शत २	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 25 जनवरी



पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गाय के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारणकर बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का सायंकाले गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। स्वयं भूमि पर शयन करने से रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। मकर संक्रान्ति से 1 दिन पूर्व **'लोहड़ी पर्व'** **(13 जन.)** समस्त पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों में गृहों में अग्नि प्रज्वलित करके तिल-समिधा, रेवड़ियाँ आदि सहित अग्नि पूजनोपरान्त उत्सव मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति**–ता. 14 जनवरी, रविवार को सं. अर्द्धरात्रि के बाद 2 बजकर 43 मिंट पर (26:43) तुला लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्ति इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 15 जन. को प्रातः 9:07 बजे तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोर, बेईमान तथा नीच प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभदायक रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। संक्रान्ति कुं. में मेष राशिस्थ गुरु पर शनि की शत्रु दृष्टि तथा मंगल-बुध के साथ गुरु का नवपंचम योग रहने से विश्व एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल रहेगी। केन्द्रीय अथवा किसी राज्य के मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत हैं। रविवारी सं. होने से कुछ देशों में टकराव, युद्धभय एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होगीं। खाद्यान्नों एवं खाद्य वस्तुओं में कमी तथा महँगाई के कारण लोग दुःखी एवं असहाय अनुभव करेंगे। देश में भय एवं अस्थिरता का वातावरण बनेगा। **मकर संक्रान्ति** (15 जन.) को गंगाजल आदि पवित्र तीर्थ जलों से स्नान-उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व भगवान् विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुष-सूक्त, सूर्याष्टक-स्तोत्र, सूर्य द्वादशनाम, सूर्यार्घ्य, पितृ-तर्पण करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, वस्त्र, फल, धार्मिक पुस्तकादि का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 21 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत् व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण-भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (25 जन.) से हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। **लक्षण**–पौष शु. ४ रविवार होने से आगे 3 मास तक रोगों का फैलाव रहे।

वि. संवत् २०८०, माघ कृष्ण पक्ष			शाक: १९४५							तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2024 ई. (ता. 26 जनवरी से 9 फरवरी तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :	सूर्योदय कालिक	भा. स्टैं. टा.	जालन्धर
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	माघ शक	रजब मु.	जनवरी	माघ प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में, मंगल–बुध भी इनसे नीचे पूर्वी–क्षितिज में होंगे। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त में, शनि पश्चिमक्षितिज पर डूबने को होगा।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६:०३	१	शुक्र	४४:४०	पुष्य	७:३०	प्रीति	०:३५	बा	१२:१५	6	14	26	१३	कर्क	भारत गणतन्त्र दिवस (75वाँ), माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 10:28 से	९:११:२३:४४	7:28	17:53
२६:०८	२	शनि	५०:२५	आश्ले	१३:५५	आयु	१:४३	तै	१७:३३	7	15	27	१४	सिं.१३:५५	गण्डमूल विचार	९:१२:२४:४०	7:27	17:54
२६:०८	३	रवि	५६:५०	मघा	२१:०५	सौभा	३:२८	व	२३:३८	8	16	28	१५	सिंह	भ. २३:३८ से ५६:५० तक, गण्डमूल 15:53 तक	९:१३:२५:३८	7:27	17:54
२६:१३	४	चन्द्र	६०:००	पू.फा.	२८:४८	शोभ	५:४३	ब	३०:१७	9	17	29	१६	कं.४५:४८	**श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), शुक्र पू.षा. में २३:४८ **(A)**	९:१४:२६:३२	7:26	17:55
२६:१५	४	मंग	३:४३	उ.फा.	३६:४०	अति	८:१३	बा	३:४३	10	18	30	१७	कन्या	बुध उ.षा. में १:१८ (7:57)	९:१५:२७:२८	7:26	17:56
२६:२०	५	बुध	१०:३०	हस्त	४४:१८	सुक	१०:४०	तै	१०:३०	11	19	31	१८	कन्या	स.सि.यो.	९:१६:२८:२२	7:25	17:57
२६:२३	६	गुरु	१६:३८	चित्रा	५१:००	धृति	१२:३८	व	१६:३८	12	20	फर	१९	तु.१७:४८	भ. १६:३८ से ४९:०८ तक, मंगल उ.षा. में १३:४०, **बुध मकर में १७:२३ (B)**	९:१७:२९:१७	7:25	17:58
२६:२८	७	शुक्र	२१:३८	स्वा.	५६:२३	शूल	१३:४५	ब	२१:३८	13	21	2	२०	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार)	९:१८:३०:०८	7:24	17:59
२६:३३	८	शनि	२४:५५	विशा	५९:५५	गण्ड	१३:४०	कौ	२४:५५	14	22	3	२१	वृ.४४:१३	गुरु भर. १ में १३:३३ (12:48)	९:१९:३०:५९	7:23	18:00
२६:३५	९	रवि	२६:०८	अनु	६०:००	वृद्धि	१२:०३	ग	२६:०८	15	23	4	२२	वृश्चिक	भ. ५५:३८ से,	९:२०:३१:५१	7:23	18:01
२६:४०	१०	चन्द्र	२५:०८	अनु	१:२०	ध्रुव	८:४५	वि	२५:०८	16	24	5	२३	वृश्चिक	भ. २५:०८ तक, **मंगल मकर में ३५:५०** (21:42), गण्डमूल 7:54 से,	९:२१:३२:४०	7:22	18:02
२६:४५	११	मंग	२१:५८	ज्ये. मूल	०:३५ ५७:४५	व्या. हर्ष	३:४३ ५७:००	बा	२१:५८	17	25	6	२४	ध. ०:३५	**षट्तिला एकादशी व्रत**, सूर्य धनि. में ४५:५५, गण्डमूल विचार	९:२२:३३:२८	7:21	18:03
२६:४५	१२	बुध	१६:४३	पू.षा.	५३:१०	वज्र	४८:५०	तै	१६:४३	18	26	7	२५	धनु	**प्रदोष व्रत**, बुध श्रवण में ५०:१५	९:२३:३४:१८	7:21	18:03
२६:५०	१३	गुरु	९:५५	उ.षा.	४७:१५	सिद्धि	३९:३३	व	९:५५	19	27	8	२६	म. ६:५०	भ. ९:५५ से ३५:५३ तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेरू त्रयोदशी (जैन)	९:२४:३५:०४	7:20	18:04
२६:५५	१४	शुक्र	१:५०	श्रव	४०:२५	व्य.	२९:३०	श	१:५०	20	28	9	२७	मकर	**माघ (मौनी) अमावस (8:03 बाद), महोदय योग (C)**	९:२५:३५:५०	7:19	18:05
अवम्	३०	शुक्र	५२:५५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**माघ अमावस तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०

(A) (16:57), गौरी–वक्रतुण्ड चतुर्थी **(B)** (14:22), फरवरी मास–सन् 2024 ई. प्रारम्भ **(C)** तीर्थस्नान माहात्म्य, शुक्र उ.षा. में १२:०५ (12:09)

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 3 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	०	८	१०	११	५
१९	१९	२७	२	१३	१८	१२	२४	२४
२६	४६	५७	२६	१७	५४	२८	५६	५६
१२	१३	२५	११	५१	४५	४१	११	११
60 52	754 57	45 57	90 47	6 35	74 4	6 57	3 11	3 11
श्रव ३	स्वा ४	उषा १	उषा २	अश्वि ४	पूषा २	शत. २	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 3 फर.



शुक्रे चतुर्दश्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 9 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	९	०	८	१०	११	५
२५	१२	२	११	१३	२६	१३	२४	२४
३१	२	३२	४२	५९	१९	१०	३७	३७
१३	१२	४०	३६	५४	२६	४१	१५	१५
60 46	905 48	45 59	95 26	7 32	74 10	7 7	3 11	3 11
धनि १	श्रव १	उषा २	श्रव १	भर १	पूषा ४	शत २	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 9 फर.



माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी (29 जन.) को **श्रीगणेश संकट चौथ** के व्रत का संकल्प '**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये**' पढ़कर प्रातः स्नानादि के उपरान्त व्रत करके रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर '**ॐ सोम सोमाय नमः**' द्वारा अर्घ्य देने तथा '**ॐ गं गणपतये नमः**' मन्त्र जाप करने से भगवान् श्रीगणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (6 फर.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः**' मन्त्र का 108 बार या यथाशक्ति पाठ करें। फिर तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का नाश होता है। ता. ९ फर. को **माघ (मौनी) अमावस** के दिन श्रवण-नक्षत्र तथा व्यतिपात योग होने से '**महोदय**' नामक पुण्यतम योग भी बना हुआ है। इस दिन **हरिद्वार, प्रयागराज** आदि तीर्थों पर स्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न-दान, फल, आँवला, तिल निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न का दान, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण-भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा। स्नान, जप एवं ध्यानादि मौन होकर करने चाहिए। **लोक-भविष्य**– चान्द्र माघ मास में पाँच शुक्र एवं पाँच शनिवार होने से जनसंख्या, धन-धान्य एवं अनाजादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। कुछ विशेष उच्च वर्ग के लोगों में सुख-साधनों में विशेष वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग-विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। पाँच शनिवारों के कारण आशातीत महँगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, विश्व में कहीं युद्धभय, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) हो। **गुरु-शुक्र** के मध्य दृष्टि सम्बन्ध (5-9) तथा मेषस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि के प्रभाव से विश्व में युद्ध तथा भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों तथा आर्थिक उथल-पुथल से व्यापक जन-धन हानि का भय रहे। विश्व-राजनीति में भारत का प्रभुत्व बढ़ेगा। किसी मुस्लिम देश में क्रान्ति या छत्रभंग हो। **आकाश-लक्षण**–उत्तर-पश्चिम भारत में शीत-प्रकोप, कहीं बर्फबारी एवं कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–माघ कृ. ७ को स्वाती नक्षत्र में बादल गर्जन व ठंड रहे तो धान्य श्रेष्ठ तथा प्रजा सुखी रहे।

वि. संवत् २०८०, माघ शुक्ल पक्ष शाक: १९४५

सन् 2024 ई. (ता. 10 से 24 फरवरी तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल–शुक्र पास–पास पूर्व–क्षितिज में, ता. 10 से बुध पूर्व में ही अस्त हो जाएगा। सायं गुरु पश्चिमकपाल में होगा। शनि अस्त है।

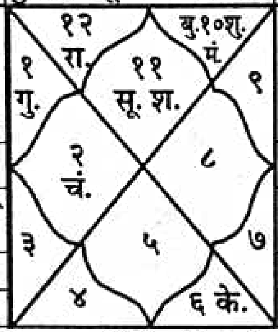
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	माघ शक	रज्जब मु.	फरवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
२७:००	१	शनि	४३:४५	धनि.	३३:१०	वरी	१८:५८	किं	१८:२०	21	29	10	२८	कुं. ६:५०	पंचक प्रारम्भ ६:५० (10:02), बुध पूर्व में अस्त 7:18 (घं.मिं.) (A)	०९:२६:३६:३३	7:18	18:06
२७:०५	२	रवि	३४:४३	शत.	२५:५८	परि शिव	८:२३ ५८:०३	बा	९:१४	22	30	11	२९	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र मकर में ५३:५८ (28:52), बाबा श्रीलाल (B)	०९:२७:३७:१६	7:17	18:07
२७:०८	३	चन्द्र	२६:१०	पू.भा.	१९:१०	सिद्ध	४८:२०	तै	०:२८	23	शब	12	३०	मी. ५:४८	भ. ५२:२३ से, गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत, तिल–कुन्द चतुर्थी (C)	०९:२८:३८:००	7:17	18:08
२७:१३	४	मंग	१८:३८	उ.भा.	१३:२०	साध्य	३९:३३	वि	१८:३८	24	2	13	फा.	मीन	भ. १८:३८ तक, सूर्य कुम्भ में २१:०८ (15:43), फाल्गुन संक्रान्ति, (D)	०९:२९:३८:४०	7:16	18:09
२७:१५	५	बुध	१२:१८	रेव.	८:४०	शुभ	३१:५०	बा	१२:१८	25	3	14	२	मे. ८:४०	पंचक समाप्त ८:४० (10:43), वसन्त–पंचमी, श्रीपञ्चमी, सरस्वती/(E)	१०:००:३९:१८	7:15	18:09
२७:२०	६	गुरु	७:२८	अश्वि	५:३०	शुक्ल	२५:२०	तै	७:२८	26	4	15	३	मेष	गण्डमूल 9:26 तक, (E) लक्ष्मी पूजन, वागेश्वरी जयन्ती	१०:०१:३९:५५	7:14	18:10
२७:२५	७	शुक्र	४:१५	भर.	३:५५	ब्रह्म	२०:१०	व	४:१५	27	5	16	४	वृ.१८:४५	भ. ४:१५ से ३३:२८ तक, रथ सप्तमी व्रत (पूर्व–अरुणोदय वाली), (F)	१०:०२:४०:२९	7:13	18:11
२७:३०	८	शनि	२:४३	कृति	३:५५	ऐन्द्र	१६:१८	ब	२:४३	28	6	17	५	वृष	स.सि.यो. 8:46 बाद (G) सूर्य सायन मीन में ६:२३, वसन्त ऋतु प्रारम्भ	१०:०३:४१:०३	7:12	18:12
२७:३५	९	रवि	२:४३	रोहि	५:३०	वैधृ	१३:४०	कौ	२:४३	29	7	18	६	मि.३६:४८	मंगल श्रवण में ३८:०३, गुप्त नवरात्र समाप्त	१०:०४:४१:३३	7:11	18:13
२७:४०	१०	चन्द्र	४:१३	मृग	८:२८	विष्क	१२:०८	ग	४:१३	30	8	19	७	मिथुन	भ. ३८:१५ से, सूर्य शत. में ५७:३०, बुध कुम्भ में ५७:०८ (30:01),(G)	१०:०५:४२:०३	7:10	18:14
२७:४३	११	मंग	६:५८	आर्द्रा	१२:४०	प्रीति	११:३३	वि	६:५८	फा	9	20	८	मिथुन	भ. ६:५८ तक, जया एकादशी व्रत, भीष्म–द्वादशी (देखें पृष्ठ 21) (H)	१०:०६:४२:३१	7:09	18:14
२७:४८	१२	बुध	१०:५०	पुन.	१७:५५	आयु	११:४८	बा	१०:५०	2	10	21	९	क. १:३०	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी	१०:०७:४२:५७	7:08	18:15
२७:५३	१३	गुरु	१५:३८	पुष्य	२४:००	सौभा	१२:४३	तै	१५:३८	3	11	22	१०	कर्क	मेला जैसलमेर (राजस्थान) शुरु, गण्डमूल 16:43 से, गुरु पुष्य योग	१०:०८:४३:१९	7:07	18:16
२७:५८	१४	शुक्र	२१:१०	अश्ले	३०:५०	शोभ	१४:१५	व	२१:१०	4	12	23	११	सिं.३०:५०	भ. २१:१० से ५४:१३ तक, बुध शत. में ४३:२३, श्रीसत्यनारायण व्रत	१०:०९:४३:४०	7:06	18:17
२८:००	१५	शनि	२७:१८	मघा	३८:१०	अति	१६:१३	ब	२७:१८	5	13	24	१२	सिंह	माघ–पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयंती, श्रीललिताजयंती	१०:१०:४४:००	7:05	18:17

(A) गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, शनि शत. ३ में १२:५५, माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ **(B)** दयाल जयन्ती (ध्यानपुर, पं.), शनि पश्चिम में अस्त 29:16 **(C)** (देखें पृष्ठ 21), शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ **(D)** मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रात: 9:19 बाद, वरद्–चतुर्थी, श्रीगणेश–पूजन, गण्डमूल 12:36 बाद **(F)** आरोग्य व्रत, पुत्र सप्तमी व्रत, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, भानु–सप्तमी, बुध धनि. में ३:०५, भीष्माष्टमी (देखें पृष्ठ 21) **(H)** शुक्र श्रवण में 6:56, शक फाल्गुन प्रारम्भ

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 17 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	९	९	०	९	१०	११	५
३	८	८	२४	१५	६	१४	२४	२४
३६	१२	४१	४८	४	१२	८	११	११
४४	२०	१६	४६	१९	५५	१६	४८	४८
60 33	783 57	46 12	102 6	8 42	74 13	7 15	3 11	3 11
धनि ४	कृति ४	उषा ४	धनि १	भर १	उषा ३	शत ३	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 17 फर.



शनौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	९	१०	०	९	१०	११	५
१०	५	१४	७	१६	१४	१४	२३	२३
४०	०	५	२	७	५२	५१	४९	४९
३	१२	४	३७	५६	२९	१६	३२	३२
60 22	711 50	46 20	108 34	9 36	74 15	7 19	3 11	3 11
शत २	मघा २	श्रव २	शत १	भर १	श्रव २	शत ३	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 24 फर.



माघ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में **गौरी तृतीया** (12 फर.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। **वसन्त–पंचमी** (14 फर.) को पूर्वाह्ण–काल में भगवान् श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण–राधा, सरस्वती माता, रति–कामदेव की पूजा लाल/पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य (भिगोकर छीली हुई हल्दी, गुड़, शक्कर और घी) आदि द्वारा करके फिर पीले/मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का श्रद्धा से भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (16 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र–सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **माघ पूर्णिमा** (24 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देव–पितृ तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **फाल्गुन संक्रान्ति**—ता. 13 फर., मंगलवार को दोप. बाद 3 बजकर 43 मिनट पर (15:43) कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रात: 9घं.–19मिं. बाद से प्रारम्भ होगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. चोरों, बेईमान तथा राजनेताओं के लिए सुखकर रहेगी। **सं. राशिफल**—मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु तथा मकर राशि वालों के लिए लाभदायक रहे, शेष राशि वालों को व्यर्थ की भागदौड़ रहे। ***ग्रहगोचर***—कुम्भ राशि में **'सूर्य–शनि'** योग तथा मेषस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि के प्रभावस्वरूप किसी राज्य के प्रधाननेता की पदच्युति या आकस्मिक निधन होगा। उपयोगी वर्षा की कमी अर्थात् बेमौसमी वर्षा, बर्फबारी, तेज आँधी या तूफान से खड़ी फसलों को हानि होगी। **आकाश लक्षण**—उ. भारत में ओलावृष्टि से फसलों को हानि पहुँचे। **शकुन**—माघ शुक्ल १ को यदि बादल बने तो आगे रूई महँगी हो।

वि. संवत् २०८०, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाकः १९४५

सन् 2024 ई. (ता. 25 फरवरी से 10 मार्च तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः

मा.स्टैं.टा. जालन्धर

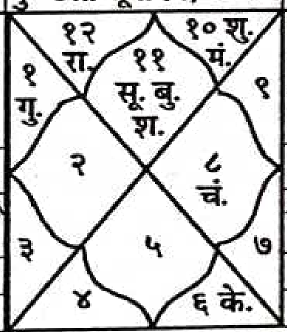
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	फाल्गु. शक	शब्वान मु.	फरवरी	फाल्गु. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व-क्षितिज में, उससे कुछ ऊपर मंगल होगा। सायं गुरु पश्चिमकपाल में होगा। बुध-शनि अस्त हैं।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२८:०५	१	रवि	३३:५०	पू.फा.	४५:५०	सुक	१८:३०	बा	०:३४	6	14	25	१३	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	१०:११:४४:२०	7:4	18:18
२८:१०	२	चन्द्र	४०:३५	उ.फा.	५३:४०	धृति	२१:००	तै	७:१३	7	15	26	१४	कं. २:५०		१०:१२:४४:३७	7:3	18:19
२८:१५	३	मंग	४७:१०	हस्त	६०:००	शूल	२३:२८	व	१३:५३	8	16	27	१५	कन्या	भ. १३:५३ से ४७:१० तक, गुरु भर. २ में १३:४५	१०:१३:४४:५३	7:2	18:20
२८:२०	४	बुध	५३:१५	हस्त	१:२०	गण्ड	२५:४०	ब	२०:१३	9	17	28	१६	तु.३४:५८	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	१०:१४:४५:०७	7:1	18:21
२८:२५	५	गुरु	५८:३०	चित्रा	८:२८	वृद्धि	२७:२३	कौ	२५:५३	10	18	29	१७	तुला		१०:१५:४५:१७	6:59	18:21
२८:३०	६	शुक्र	६०:००	स्वा.	१४:३८	ध्रुव	२८:१३	ग	३०:२७	11	19	मा	१८	तुला	बुध पू.भा. में ५५:२३, शुक्र धनि. में ४६:२५ (25:32), मार्च मास- **(A)**	१०:१६:४५:२९	6:58	18:22
२८:३५	६	शनि	२:२३	विशा	१९:२३	व्या.	२७:५३	व	२:२३	12	20	2	१९	वृ. ३:२०	भ. २:२३ से ३३:२८ तक,	१०:१७:४५:३८	6:57	18:23
२८:४०	७	रवि	४:३३	अनु	२२:२८	हर्ष	२६:१०	ब	४:३३	13	21	3	२०	वृश्चिक	श्रीनाथ-उत्सव, गण्डमूल 15:55 से,	१०:१८:४५:४७	6:56	18:24
२८:४३	८	चन्द्र	४:४८	ज्ये.	२३:३५	वज्र	२२:५८	कौ	४:४८	14	22	4	२१	ध.२३:३५	सूर्य पू.भा. में १४:०५, राहु रेव. २ केतु हस्त ४ में १३:४०, जानकी व्रत	१०:१९:४५:५३	6:55	18:24
२८:४८	९	मंग	२:५५	मूल	२२:४५	सिद्धि	१८:०५	ग	२:५५	15	23	5	२२	धनु	भ. ३१:०० से ५९:०३ तक, गण्डमूल 16:00 तक	१०:२०:४५:५९	6:54	18:25
अवम्	१०	मंग	५९:०३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**दशमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२८:५३	११	बुध	५३:२३	पू.षा.	१९:५८	व्य.	११:४०	ब	२६:१३	16	24	6	२३	म.३३:५८	**विजया एकादशी व्रत (स्मार्त)** (देखें पृष्ठ 22), मंगल धनिष्ठा में **(B)**	१०:२१:४६:०२	6:53	18:26
२८:५८	१२	गुरु	४६:१३	उ.षा.	१५:३०	वरी परि	३:५३ ५४:४८	कौ	१९:४८	17	25	7	२४	मकर	**विजया एकादशी व्रत (वैष्णव)**, बुध मीन में ६:५० (9:35), **(C)**	१०:२२:४६:०१	6:51	18:26
२९:०३	१३	शुक्र	३७:५०	श्रव.	९:३८	शिव	४४:५०	ग	१२:०२	18	26	8	२५	कुं.३६:१५	भ. ३७:५० से, **पंचक प्रारम्भ ३६:१५, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (D)**	१०:२३:४६:०२	6:50	18:27
२९:०८	१४	शनि	२८:४३	धनि. शत.	२:४५ ५५:१८	सिद्ध	३४:१८	वि	३:१७	19	27	9	२६	कुम्भ	भ. ३:१७ तक,	१०:२४:४६:००	6:49	18:28
२९:१०	३०	रवि	१९:१५	पू.भा.	४७:४८	साध्य	२३:३३	ना	१९:१५	20	28	10	२७	मीं.३४:४०	**फाल्गुन अमावस (स्नानदानादि)**	१०:२५:४५:५८	6:48	18:28

(A) सन् 2024 ई. प्रारम्भ **(B)** ५३:१५ (28:11) **(C)** शुक्र कुम्भ में ९:४८ (10:46), **(D)** बुध उ.भा. में ४९:५५, शनि शत. ४ में ४२:४८

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	९	१०	०	९	१०	११	५
१९	२४	२१	२३	१७	२६	१६	२३	२३
४२	१	२	५१	३८	०	५	२०	२०
२१	३१	५५	४१	२८	५०	१०	५५	५५
60 8	800 4	46 32	115 48	10 37	74 17	7 19	3 11	3 11
शत ४	ज्ये ३	श्रव ४	पूभा २	भर २	धनि १	शत ३	रेव ३	चित्रा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	ठ	अ	ठ	ठ	अ	अ	अ

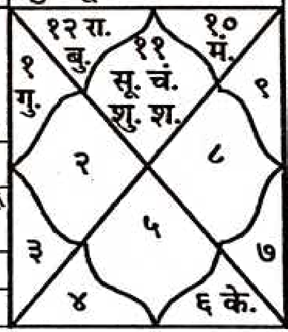
कुण्डली सूर्योदय, 4 मार्च



रवौ अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 10 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	११	०	१०	१०	११	५
२५	२०	२५	५	१८	३	१६	२३	२३
४२	२१	४२	२८	४३	२६	४८	१	१
४३	४४	१९	५४	४३	३२	५८	५१	५१
59 56	914 40	46 36	115 12	11 13	74 17	7 16	3 11	3 11
पूभा २	पूभा १	धनि १	उभा १	भर २	धनि ४	शत ४	रेव २	हस्त ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	ठ	अ	ठ	ठ	अ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 10 मार्च



फाल्गुन कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी को **श्रीगणेश-चतुर्थी** (28 फर.) का व्रत रखकर सायंकाल पुनः स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का लड्डुओं सहित पूजन कर चन्द्रोदय होने पर मन्त्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। **विजया एकादशी** (6 या 7 मार्च) को अपने-अपने मतानुसार विधिपूर्वक व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। ता. 8 मार्च, शुक्रवार को **'शिव'** योगकालीन **श्रीमहाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इसदिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण-भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। फाल्गुन अमावस के दिन पित्रादिकों का अपिण्ड श्राद्ध करना चाहिए। **लोक-भविष्य**—ता. 29 फर. को **सूर्य-शनि** के मध्य कुंभ राशि में अंशात्मक युति, मेषस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि होने से केन्द्रीय नेतृत्व को किसी कठिन चुनौती का सामना होगा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष राजनीतिक घटनाक्रम एवं उपद्रवी व विस्फोटक हालात बनेंगे। देश के कुछ भागों में आन्तरिक कलह, उपद्रव, अशान्ति एवं युद्ध का वातावरण बने। दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में तेजी हो। चान्द्र फाल्गुन मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से फर. के उत्तरार्द्ध में ही अनाज की कीमतों में तेजी, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) होने के संकेत मिलते हैं। प्रजा में क्लिष्ट रोग-उत्पत्ति, उपद्रव, तनाव, जातीय एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। प्रमुख नेता के लिए कठिन समय होगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्द्ध में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०८०, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९४५–४६

सन् 2024 ई. (ता. 11 से 25 मार्च तक), हिजरी सन् 1445
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

प्रातः शुक्र पूर्व–क्षितिज में, ता. 17 से शनि भी इसके पास–पास दिखाई देगा। मंगल इनसे कुछ ऊपर होगा। सायं गुरु पश्चिम में, ता. 13 से बुध भी पश्चिम–क्षितिज में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें फाल्गु. शक	शब्बान मु.	मार्च	फाल्गु. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	मा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२९:१५	१	चन्द्र	९:५८	उ.भा.	४०:४०	शुभ	१२:५८	ब	९:५८	21	29	11	२८	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 23:03 से,	१०:२६:४५:५१	6:47	18:29
२९:२३	२	मंग	१:१३	रेव.	३४:२३	शुक्ल ब्रह्म	२:५० ५३:२८	कौ	१:१३	22	रम	12	२९	मे.३४:२३	पंचक समाप्त ३४:२३ (20:30), शुक्र शत. में ३३:०८, फूलेरा दूज (A)	१०:२७:४५:४२	6:45	18:30
अवम्	३	मंग	५३:१८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
२९:२८	४	बुध	४६:४५	अश्वि.	२९:१३	ऐन्द्र	४५:१०	व	२०:०२	23	2	13	३०	मेष	भ. २०:०२ से ४६:४५ तक, **बुध पश्चिम में उदय 18:30 (घं.मिं.), (B)**	१०:२८:४५:३३	6:44	18:31
२९:३०	५	गुरु	४१:५०	भर.	२५:३३	वैधृ	३८:१३	ब	१४:१८	24	3	14	चैत्र	वृ.३९:५३	**सूर्य मीन में १४:४३** (12:36), **चैत्र संक्रान्ति**, मु. १५ पुण्यकाल सं. **(C)**	१०:२९:४५:२१	6:43	18:31
२९:३५	६	शुक्र	३८:४०	कृति	२३:३५	विष्क	३२:३८	कौ	१०:१५	25	4	15	२	वृष	**मंगल कुम्भ में २८:३५** (18:08), बुध रेवती में ५९:०३	११:००:४५:०९	6:42	18:32
२९:४३	७	शनि	३७:२८	रोहि	२३:३५	प्रीति	२८:४०	ग	८:०४	26	5	16	३	मि.५४:१३	भ. ३७:२८ से, गुरु भर. ३ में ३५:४५, **शनि पूर्व में उदय 28:40** (घं.मिं.)	११:०१:४४:५०	6:40	18:33
२९:४५	८	रवि	३८:०८	मृग	२५:२०	आयु	२६:०५	वि	७:४८	27	6	17	४	मिथुन	भ. ७:४८ तक, सूर्य उ.भा. में ३५:३८, **होलाष्टक प्रारम्भ (D)**	११:०२:४४:३२	6:39	18:33
२९:५०	९	चन्द्र	४०:३०	आर्द्रा	२८:५३	सौभा	२४:५५	बा	९:१९	28	7	18	५	मिथुन		११:०३:४४:१२	6:38	18:34
२९:५५	१०	मंग	४४:२३	पुन.	३३:५३	शोभ	२५:००	तै	१२:२७	29	8	19	६	क.१७:३०		११:०४:४३:४८	6:37	18:35
३०:००	११	बुध	४९:३०	पुष्य	४०:०८	अति	२६:०३	व	१६:५७	30	9	20	७	कर्क	भ. १६:५७ से ४९:३० तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, सूर्य सायन मेष में **(E)**	११:०५:४३:२०	6:35	18:35
३०:०५	१२	गुरु	५५:२८	अश्ले	४७:१३	सुक	२७:५०	ब	२२:२९	चै.	10	21	८	सिं.४७:१३	शक चैत्र एवं सन् 1946 प्रारम्भ, **गोविन्द द्वादशी**, गण्डमूल विचार	११:०६:४२:५५	6:34	18:36
३०:१०	१३	शुक्र	६०:००	मघा	५४:४८	धृति	३०:०५	कौ	२८:४२	2	11	22	९	सिंह	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 28:28 तक	११:०७:४२:२५	6:33	18:37
३०:१३	१३	शनि	१:५५	पू.फा.	६०:००	शूल	३२:३५	तै	१:५५	3	12	23	१०	सिंह	शुक्र पू.भा. में २०:१८, महेश्वर व्रत	११:०८:४१:५३	6:32	18:37
३०:२०	१४	रवि	८:३५	पू.फा.	२:४०	गण्ड	३५:१०	व	८:३५	4	13	24	११	कं.१९:३५	भ. ८:३५ से ४१:४८ तक, मंगल शत. में ३:२०, **होलिका–दहन** (भद्रा बाद) **(F)**	११:०९:४१:१८	6:30	18:38
३०:२५	१५	चन्द्र	१५:०३	उ.फा.	१०:२३	वृद्धि	३७:३३	ब	१५:०३	5	14	25	१२	कन्या	**फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, बुध अश्वि. १ मेष में (G)**	११:१०:४०:४२	6:29	18:39

(A) (मथुरा–वृन्दावन) उ.प्र., श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, रमज़ान (मु.) मास प्रारम्भ **(B)** अविघ्नकर व्रत **(C)** सूर्योदय बाद, याज्ञवल्क्य जयन्ती **(D)** अन्नपूर्णा–अष्टमी **(E)** ५:०३ (8:36), उत्तर गोल प्रारम्भ **(F)** (देखें पृष्ठ 22), श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीलक्ष्मीनारायण व्रत, वृषदान व्रत **(G)** ५१:३० (27:05), श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन

रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 17 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	११	०	१०	१०	११	५
२	०	१	१८	२०	१२	१७	२२	२२
४१	३७	८	१९	४	६	३९	३९	३९
४०	२२	४६	११	११	२३	३३	३५	३५
59 42	765 53	46 39	99 5	11 51	74 14	7 10	3 10	3 10
पूभा ४	मूला ३	धनि ३	रेव १	भर ३	शत २	शत- ४	रेव २	हस्त ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 17 मार्च



चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 25 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	११	०	१०	१०	११	५
१०	७	७	२९	२१	२२	१८	२२	२२
३८	२८	२२	११	४१	०	३६	१४	१४
१७	२०	९	१२	५	७	११	९	९
59 24	711 47	46 42	54 16	12 27	74 12	6 57	3 10	3 10
उभा ३	उफा ४	शत १	रेव ४	भर ३	पूभा १	शत ४	रेव २	हस्त ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 25 मार्च



फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में ता. 17 से 25 मार्च तक 'होलाष्टक' रहेंगे। इन दिनों परम्परानुसार पंजाब, हिमाचल, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में शुभ मंगल कार्यों का आरम्भ वर्जित माना गया है, जबकि अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी** (20 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन कर पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। ता. 24 मार्च, रविवार को प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा में भद्रा–बाद (रात्रि 23:13 बाद) **होलिका–दहन** करना चाहिए। ता. 25 मार्च, सोमवार को **होली** का पर्व सम्पूर्ण भारत में बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। **चैत्र-संक्रान्ति**–ता. 14 मार्च, बृहस्पतिवार को दोपहर 12घं.–36मिं. पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल सूर्योदय बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. ब्राह्मणों, अध्यापकों तथा दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के लिए सुखकर रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, वृष, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, धनु, मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ एवं कल्याणकारी रहेगी। **सं. कुण्डली** में कुम्भ राशि में मंगल-शुक्र-शनि-तीन विपरीत ग्रहों के योग के प्रभावस्वरूप पश्चिमी एवं यवन देशों में आन्तरिक गृह-युद्ध तथा सीमाओं पर भी दारुण युद्धजन्य हालात बनेंगे। पैट्रोल, तेल आदि में विशेष तेजी, जबकि कुछ जिन्सों (चना, रुई, दालों) में विशेष मन्दी बन जाएगी। **आकाश-लक्षण**–उत्तर-पश्चिमी भारत में तेज़ आँधियाँ तथा खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–फा. शु. ८ या १३ तिथि को वृष्टि होना आगामी सुभिक्ष एवं आरोग्यता के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०८०, चैत्र कृष्ण पक्ष			शाक: १९४६							तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2024 ई. (ता. 26 मार्च से 8 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1445 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:	सूर्योदय कालिक	मा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	चैत्र शक	रमज़ान मु.	मार्च	चैत्र प्रवि	प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज में मंगल–शनि इससे कुछ ऊपर होंगे। सायं बुध–गुरु पश्चिम–क्षितिज में दिखेंगे।	सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०:२८	१	मंग	२१:१०	हस्त	१७:४५	ध्रुव	३९:३५	कौ	२१:१०	6	15	26	१३	तु.५१:१३	होला–मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), वसन्तोत्सव, (A)	११:११:४०:०४	6:28	18:39
३०:३५	२	बुध	२६:४३	चित्रा	२४:३५	व्या.	४१:०८	ग	२६:४३	7	16	27	१४	तुला	भ. ५९:०० से, **सन्त तुकाराम जयन्ती**	११:१२:३९:२२	6:26	18:40
३०:४०	३	गुरु	३१:२०	स्वा.	३०:३३	हर्ष	४२:००	वि	३१:२०	8	17	28	१५	तुला	भ. ३१:२० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12)	११:१३:३८:४०	6:25	18:41
३०:४३	४	शुक्र	३४:५३	विशा	३५:३०	वज्र	४१:५८	ब	३:०७	9	18	29	१६	वृ.१९:२३	श्रीभगवान्नारायण जयन्ती, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)	११:१४:३७:५८	6:24	18:41
३०:४८	५	शनि	३७:०८	अनु	३९:१३	सिद्धि	४०:५८	कौ	६:०१	10	19	30	१७	वृश्चिक	**श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी** (मेरठ, उ.प्र.), **मेला गुरु रामराय (B)**	११:१५:३७:१२	6:23	18:42
३०:५५	६	रवि	३७:५८	ज्ये.	४१:३०	व्य.	३८:५०	ग	७:३३	11	20	31	१८	ध.४१:३०	भ. ३७:५८ से, सूर्य रेवती में ३:४०, **शुक्र मीन में २६:०३** (16:46), **(C)**	११:१६:३६:२२	6:21	18:43
३०:५८	७	चन्द्र	३७:०५	मूल	४२:१०	वरी	३५:२५	वि	७:३२	12	21	अप्रै	१९	धनु	भ. ७:३२ तक, गुरु भर. ४ में ४६:३८, शीतला सप्तमी (पूजा), मेला **(D)**	११:१७:३५:३३	6:20	18:43
३१:०३	८	मंग	३४:३५	पू.षा.	४१:१५	परि	३०:४०	बा	५:५०	13	22	2	२०	म.५५:४५	**शीतलाष्टमी व्रत**	११:१८:३४:४२	6:19	18:44
३१:०५	९	बुध	३०:३०	उ.षा.	३८:४५	शिव	२४:४०	तै	२:३३	14	23	3	२१	मकर	भ. ५७:४३ से, शुक्र उ.भा. में ७:५८	११:१९:३३:५०	6:18	18:44
३१:१०	१०	गुरु	२४:५५	श्रव.	३४:४८	सिद्ध	१७:२५	वि	२४:५५	15	24	4	२२	मकर	भ. २४:५५ तक, **वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:20** (घं.मिं.)	११:२०:३२:५६	6:17	18:45
३१:१८	११	शुक्र	१८:०५	धनि	२९:४०	साध्य शुभ	९:१० ५९:५९	बा	१८:०५	16	25	5	२३	कुं. २:२५	**पंचक प्रारम्भ २:२५** (7:13), **पापमोचनी एकादशी व्रत**	११:२१:३१:५८	6:15	18:46
३१:२०	१२	शनि	१०:१५	शत.	२३:३५	शुक्ल	५०:१५	तै	१०:१५	17	26	6	२४	कुम्भ	**शनि प्रदोष व्रत, महावारुणी योग** (10:20 से 15:40 तक) देखें पृ.22,**(E)**	११:२२:३१:००	6:14	18:46
३१:२५	१३	रवि	१:४३	पू.भा.	१६:५३	ब्रह्म	४०:१०	व	१:४३	18	27	7	२५	मी. ३:३८	भ. १:४३ से २७:१८ तक, **मेला पृथूदक–पिहोवातीर्थ** (हरियाणा), **(F)**	११:२३:३०:०१	6:13	18:47
अवम्	१४	रवि	५२:५३	०	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	० ० ० ०	० ०	० ०
३१:३०	३०	चन्द्र	४४:०८	उ.भा.	१०:०३	ऐन्द्र	३०:०५	च	१८:३१	19	28	8	२६	मीन	**चैत्र (सोमवती) अमावस**, तीर्थस्नान माहात्म्य, वि. संवत् 2080 पूर्ण, **(G)**	११:२४:२८:५९	6:12	18:48

(A) ध्वजारोहण, धुलैण्डी, आम्रकुसुम प्राशन **(B)** (देहरादून, उत्तराखण्ड) **(C)** एकनाथ षष्ठी **(D)** शीतलामाता (कुराली, पं.), अप्रैल मास–सन् 2024 ई. शुरु, **बुध वक्री ५३:३३ (27:45)** **(E)** वारुणी पर्व, शनि पू.भा. १ में १९:५३ **(F)** मासशिवरात्रि व्रत **(G)** मेला हरिद्वार–प्रयागराजादि, गण्डमूल 10:13 से,

भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 2 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	०	०	११	१०	११	५
१८	१६	१३	३	२३	१	१९	२१	२१
३२	५१	३५	१	२२	५३	३१	४८	४८
४२	२३	४२	२६	२६	३२	२	४३	४३
59 10	819 22	46 41	4 1	12 57	74 10	6 42	3 10	3 10
रेव १	पूषा २	शत ३	अश्वि १	भर ४	पूभा ४	शत. ४	रेव २	हस्त ४
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 2 अप्रै.



चन्द्रे अमावस्यायां ग्रहस्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१०	०	०	११	१०	११	५
२४	१३	१८	१	२४	९	२०	२१	२१
२७	४२	१५	४	४०	१८	१०	२९	२९
१६	४८	४६	२४	५७	२४	४१	३९	३९
58 59	901 22	46 39	37 20	13 16	74 7	6 28	3 11	3 11
रेव ३	उभा ४	शत ४	अश्वि १	भर ४	उभा २	शत १	रेव २	हस्त ४
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 8 अप्रैल



चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (26 मार्च) को होला–मेला, धुलण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। ता. 28 मार्च को चन्द्रोदय–व्यापिनी चतुर्थी को **श्रीगणेश–चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र–जप (**ॐ गं गणपतये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं, मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र–पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचनी एकादशी** (5 अप्रै.) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 6 अप्रैल को **'महावारुणी पर्व'** पर तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का अनन्त माहात्म्य होता है। इसका महत्त्व ग्रहण तुल्य होता है। चतुर्दशी (7 अप्रै.) को **पिहोवातीर्थ (कुरुक्षेत्र)** पर **मेला पृथूदक** बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है, जहाँ पितरों के निमित्त पिण्डदान, तर्पणादि कृत्य किए जाते हैं। **ता. 8 अप्रैल–सोमवती अमावस** को हरिद्वार आदि तीर्थस्थान पर स्नान, दान, जप, भगवान् शिव व विष्णु–पूजन तथा पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष की पुष्पाक्षत, चावल, फल, धूप, दीपादि सहित पूजन–परिक्रमा करने से अनेक पापों से मुक्ति तथा पितृ–तर्पण, ब्राह्मण–भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा। **लोक–भविष्य**–कुम्भ राशि में **'मंगल–शनि'** योग, मेष राशि में **'बुध–गुरु'** योग तथा मीन राशि में **'सूर्य–शुक्र–राहु'** योग होने से देश में कहीं जलप्रकोप, कहीं दुर्भिक्ष, अनाज की कमी हो। कहीं राज्यभङ्ग एवं हिंसक घटनाएँ घटित हो, कहीं अग्निकाण्ड या प्राकृतिक प्रकोप से जन, धनादि की क्षति हो। सामान्य लोगों में महँगाई के कारण गहन असन्तोष एवं क्रोध की भावना हो। राजनीतिक पटल पर विशेष उथल–पुथल, कहीं भूकम्प, विस्फोट, यानादि दुर्घटना से भारी जन–धन हानि हो–**भौम सौरीश्चेकराशौद्वयो स्थिते यदे। दुर्भिक्षं राज्यभंगं च मेदिन्यामग्नितो भयम्।।**

आकाश लक्षण–चैत्र कृष्ण १ या अमावस को वर्षा या बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् 2079–80, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण, वसन्त-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	१०	बुध	30:40	मृग	9:52	प्रीति	17:01	तै	17:30	मिथुन	मार्च सन् 2023 ई. प्रा., शुक्र रेवती में 9:32, बुध पूर्व में अस्त 18:17	7:03	18:24	6:51	18:17	6:54	18:17	7:02	18:40
	2	११	गुरु	--	आर्द्रा	12:43	आयु	17:50	व	19:56	मिथुन	भ. 19:56 से,	7:02	18:24	6:49	18:17	6:53	18:18	7:01	18:41
	3	११	शुक्र	9:12	पुन.	15:43	सौभा	18:44	वि	9:12	क. 8:58	भ. 9:12 तक, आमलकी एकादशी व्रत, बुध शत. में 16:13	7:00	18:25	6:48	18:18	6:51	18:19	7:01	18:41
	4	१२	शनि	11:44	पुष्य	18:41	शोभ	19:36	बा	11:44	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी, सूर्य पू.भा. में 30:24	6:59	18:26	6:47	18:19	6:50	18:19	7:00	18:41
	5	१३	रवि	14:08	आश्ले	21:30	अति	20:20	तै	14:08	सिं.21:30	महेश्वर व्रत, शनि पूर्व में उदय 18:29	6:58	18:27	6:46	18:19	6:49	18:20	6:59	18:41
	6	१४	चन्द्र	16:18	मघा	24:05	सुक	20:54	व	16:18	सिंह	भ. 16:18 से 29:14 तक, होलिका-दहन (प्रदोष में), (A)	6:57	18:27	6:45	18:20	6:48	18:21	6:58	18:42
	7	१५	मंग	18:10	पू.फा.	26:22	धृति	21:13	ब	18:10	सिंह	फाल्गुन पूर्णिमा, होलाष्टक समाप्त, होली पर्व, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयं.(B)	6:55	18:28	6:44	18:21	6:47	18:21	6:58	18:42
चैत्र कृष्ण पक्ष (वि. संवत् 2079)	8	२	बुध	19:43	उ.फा.	28:20	शूल	21:18	बा	6:57	कं. 8:53	होला-मेला(श्रीआनंदपुर व पांओटा सा.), वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण (C)	6:54	18:29	6:43	18:21	6:46	18:22	6:57	18:42
	9	२	गुरु	20:55	हस्त	29:57	गण्ड	21:07	तै	8:19	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती	6:53	18:30	6:42	18:22	6:44	18:23	6:56	18:43
	10	३	शुक्र	21:43	चित्रा	--	वृद्धि	20:38	व	9:19	तु. 18:37	भ. 9:19 से 21:43 तक, बुध पू.भा. में 28:11	6:52	18:30	6:41	18:22	6:43	18:23	6:55	18:43
	11	४	शनि	22:06	चित्रा	7:11	ध्रुव	19:50	ब	9:55	तुला	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, गुरु रेव. (2) में 8:41, श्रीभगवान्नारायण जयं.	6:50	18:31	6:40	18:23	6:42	18:24	6:54	18:43
	12	५	रवि	22:02	स्वा.	8:00	व्या.	18:41	कौ	10:04	वृ. 26:19	मंगल मिथुन में 29:02, शुक्र अश्वि 1 मेष में 8:27, श्रीरंग-पंचमी (D)	6:49	18:32	6:39	18:24	6:41	18:25	6:54	18:43
	13	६	चन्द्र	21:28	विशा.	8:21	हर्ष	17:10	ग	9:45	वृश्चिक	भ. 21:28 से, एकनाथ षष्ठी	6:48	18:33	6:37	18:24	6:40	18:26	6:53	18:44
	14	७	मंग	20:23	अनु.	8:13	वज्र	15:13	वि	8:56	वृश्चिक	भ. 8:56 तक, सूर्य मीन में 30:34, चैत्र संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल (E)	6:47	18:33	6:36	18:25	6:38	18:26	6:52	18:44
	15	८	बुध	18:46	ज्ये. मूल	7:34 30:24	सिद्धि	12:52	नबा	7:35	ध. 7:34	शीतलाष्टमी व्रत, पुण्यकाल चैत्र संक्रान्ति	6:45	18:34	6:35	18:25	6:37	18:27	6:51	18:44
	16	९	गुरु	16:40	पू.षा.	28:47	व्यु.	10:06	ग	16:40	धनु	भ. 27:24 से, बुध मीन में 10:47	6:44	18:35	6:34	18:26	6:36	18:27	6:50	18:45
	17	१०	शुक्र	14:07	उ.षा.	26:46	वरी परि	6:59 27:32	वि	14:07	म. 10:19	भ. 14:07 तक, बुध उ.भा. में 27:42	6:43	18:36	6:33	18:27	6:35	18:28	6:50	18:45
	18	११	शनि	11:14	श्रव.	24:29	शिव	23:53	बा	11:14	मकर	पापमोचिनी एकादशी व्रत, सूर्य उ.भा. में 14:52	6:41	18:36	6:32	18:27	6:34	18:29	6:49	18:45
	19	१२	रवि	8:08	धनि	22:04	सिद्ध	20:06	तै	8:08	कुं. 11:17	भ. 28:56 से, पंचक प्रा. 11:17, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व, वारुणी (F)	6:40	18:37	6:31	18:28	6:32	18:29	6:48	18:45
	०	१३	रवि	28:56	००	००	००	००	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	20	१४	चन्द्र	25:48	शत.	19:39	साध्य	16:20	वि	15:22	कुम्भ	भ. 15:22 तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)(G)	6:39	18:38	6:29	18:28	6:31	18:30	6:47	18:46
	21	३०	मंग	22:53	पू.भा.	17:26	शुभ	12:41	च	12:21	मी. 11:57	चैत्र अमावस, भौमवती अमावस, वि. संवत् 2079 पूर्ण	6:37	18:39	6:28	18:29	6:30	18:31	6:46	18:46
चैत्र शुक्ल पक्ष(वि.2080)	22	१	बुध	20:22	उ.भा.	15:32	शुक्ल ब्रह्म	9:17 30:15	किं	9:38	मीन	'पिंगल' नाम वि. संवत् 2080 शुरु, चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रारम्भ, (H)	6:36	18:39	6:27	18:29	6:29	18:31	6:45	18:46
	23	२	गुरु	18:21	रेव.	14:09	ऐन्द्र	27:42	बा	7:22	मे. 14:09	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक समाप्त 14:09, शुक्र भर. में 10:03, गण्डमूल	6:35	18:40	6:26	18:30	6:28	18:32	6:45	18:46
	24	३	शुक्र	17:00	अश्वि	13:22	वैधृ	25:42	ग	17:00	मेष	भ. 28:42 से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, बुध रेवती में 19:31,(I)	6:34	18:41	6:25	18:31	6:26	18:32	6:44	18:47
	25	४	शनि	16:24	भर.	13:19	विष्क	24:19	वि	16:24	वृ. 19:25	भ. 16:24 तक, गुरु रेव. (3) में 12:22, दमनक चतुर्थी	6:33	18:41	6:24	18:31	6:25	18:33	6:43	18:47
	26	५	रवि	16:33	कृति.	14:01	प्रीति	23:32	बा	16:33	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी	6:31	18:42	6:22	18:32	6:24	18:34	6:42	18:47
	27	६	चन्द्र	17:28	रोहि.	15:27	आयु	23:19	तै	17:28	मि. 28:25	स्कन्द षष्ठी व्रत, मंगल आर्द्रा में 10:59	6:30	18:43	6:21	18:32	6:23	18:34	6:41	18:47
	28	७	मंग	19:03	मृग.	17:32	सौभा	23:35	व	19:03	मिथुन	भ. 19:03 से,	6:29	18:43	6:20	18:33	6:22	18:35	6:40	18:47
	29	८	बुध	21:08	आर्द्रा	20:07	शोभ	24:12	वि	8:06	मिथुन	भ. 8:06 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, बुधाष्टमी, अशोकाष्टमी, (J)	6:27	18:44	6:19	18:33	6:20	18:36	6:39	18:48
	30	९	गुरु	23:31	पुन.	22:59	अति	25:02	बा	10:20	क. 16:15	श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र समाप्त, श्रीरामनवमी, बुध पश्चिम में उदय 18:39	6:26	18:45	6:18	18:34	6:19	18:36	6:39	18:48
	31	१०	शुक्र	25:59	पुष्य	25:57	सुक	25:56	तै	12:45	कर्क	सूर्य रेवती में 25:36, बुध अश्वि. 1 मेष में 14:59, गुरु पश्चिम में अस्त 6:24 (K)	6:25	18:46	6:17	18:34	6:18	18:37	6:38	18:48

गुरु अस्त 31 मार्च

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मी-नारायण व्रत (B) होलिका विभूतिधारण, धूलिवन्दन (C) धुलण्डी, आम्रकुसुम प्राशन (D) मेला नवचण्डी (मेरठ, उ.प्र.), मेला गुरु रामराय (देहरादून) (E) सं. अगले दिन दोप. 12:58 तक, शीतला सप्तमी, शनि शत. (1) में 25:36 (F) योग 22:04 से 28:56 (G) सूर्य सायन मेष में 26:55, उत्तर गोल प्रारम्भ (H) घटस्थापन, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा, गण्डमूल 15:32 बाद, शक चैत्र एवं संवत् 1945 प्रारम्भ (I) रमज़ान (मु.) मास प्रारम्भ (J) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-काँगड़ा देवी, नैनादेवी (हि.प्र.), अन्नपूर्णा पूजन (K) नवरात्र व्रत पारणा, गण्डमूल 25:57 बाद

वि. संवत् 2080, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण / वसन्त-ग्रीष्म ऋतु:	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	११	शनि	28:20	आश्ले	28:48	धृति	26:44	व	15:10	सिं.28:48	भ. 15:10 से 28:20 तक, कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त) देखें पृष्ठ 16,(A)	6:23	18:46	6:15	18:35	6:17	18:38	6:37	18:48
	2	१२	रवि	--	मघा	--	शूल	27:20	ब	17:23	सिंह	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव) देखें पृष्ठ 16, श्रीविष्णु–दमनोत्सव	6:22	18:47	6:14	18:36	6:15	18:38	6:38	18:49
	3	१२	चन्द्र	6:25	मघा	7:24	गण्ड	27:40	बा	6:25	सिंह	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र कृति. में 15:04, अनङ्ग–त्र्योदशी (देखें पृ. 16), गं.मू.	6:21	18:48	6:13	18:36	6:14	18:39	6:35	18:49
	4	१३	मंग	8:06	पू.फा.	9:36	वृद्धि	27:39	तै	8:06	कं.16:06	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	6:19	18:48	6:12	18:37	6:13	18:39	6:35	18:49
	5	१४	बुध	9:20	उ.फा.	11:23	ध्रुव	27:16	व	9:20	कन्या	भ. 9:20 से 21:43 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिव दमनोत्सव	6:18	18:49	6:11	18:37	6:12	18:40	6:34	18:49
	6	१५	गुरु	10:05	हस्त	12:42	व्या.	26:31	ब	10:05	तु. 25:11	चैत्र-पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रा., शुक्र वृष में 10:59, श्रीहनुमान-जयं. (दक्षिण भारत)	6:17	18:50	6:10	18:38	6:11	18:41	6:33	18:50
वैशाख कृष्ण पक्ष	7	१	शुक्र	10:21	चित्रा	13:33	हर्ष	25:25	कौ	10:21	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	6:16	18:50	6:08	18:38	6:09	18:41	6:32	18:50
	8	२	शनि	10:11	स्वा.	13:59	वज्र	23:58	ग	10:11	तुला	भ. 21:54 से, बुध भर. में 23:47, गुरु रेव. 4 में 9:18	6:14	18:51	6:07	18:39	6:08	18:42	6:31	18:50
	9	३	रवि	9:36	विशा.	14:00	सिद्धि	22:13	वि	9:36	वृ. 8:02	भ. 9:36 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12) — गुरु उदय 30 अप्रैल	6:13	18:52	6:06	18:40	6:07	18:43	6:31	18:51
	10	४	चन्द्र	8:38	अनु.	13:39	व्य.	20:11	बा	8:38	वृश्चिक	सती अनुसूइया जयन्ती, गण्डमूल 13:39 बाद	6:12	18:53	6:05	18:40	6:06	18:43	6:30	18:51
	11	५	मंग	7:18	ज्ये.	12:58	वरी	17:52	तै	7:18	ध. 12:58	भ. 29:40 से, गण्डमूल विचार	6:11	18:53	6:04	18:41	6:05	18:44	6:29	18:51
	०	६	मंग	29:40	००	००	००	००	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	12	७	बुध	27:45	मूल	11:59	परि	15:19	वि	16:43	धनु	भ. 16:43 तक, गण्डमूल 11:59 तक	6:09	18:54	6:03	18:41	6:03	18:45	6:28	18:51
	13	८	गुरु	25:35	पू.षा.	10:43	शिव	12:33	बा	14:40	म. 16:22		6:08	18:55	6:02	18:42	6:02	18:45	6:27	18:52
	14	९	शुक्र	23:14	उ.षा.	9:14	सिद्ध	9:37	तै	12:25	मकर	सूर्य अश्वि. 1 मेष में 14:58, वैशाख संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल (B)	6:07	18:55	6:01	18:42	6:01	18:46	6:27	18:52
	15	१०	शनि	20:46	श्रव. धनि.	7 36 / 29 52	साध्य शुभ	6 32 / 27 23	व	10:00	कुं. 18:44	भ. 10:00 से 20:46 तक, पंचक प्रारम्भ 18:44, शनि शत. (2) में 28:48	6:06	18:56	6:00	18:43	6:00	18:47	6:26	18:52
	16	११	रवि	18:15	शत.	28:07	शुक्ल	24:13	ब	7:36	कुम्भ	वरूथिनी एकादशी व्रत, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	6:05	18:57	5:59	18:44	5:58	18:47	6:25	18:52
	17	१२	चन्द्र	15:47	पू.भा.	26:28	ब्रह्म	21:07	तै	15:47	मी. 20:52	सोम प्रदोष व्रत	6:03	18:58	5:58	18:44	5:57	18:48	6:24	18:53
	18	१३	मंग	13:28	उ.भा.	25:01	ऐन्द्र	18:09	व	13:28	मीन	भ. 13:28 से 24:26 तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 25:01 से,	6:02	18:58	5:57	18:45	5:56	18:49	6:23	18:53
	19	१४	बुध	11:24	रेव.	23:53	वैधृ.	15:25	श	11:24	मे. 23:53	पंचक समाप्त 23:53, अमावस (पितृकार्येषु), गण्डमूल विचार	6:01	18:59	5:56	18:45	5:55	18:49	6:23	18:53
	20	३०	गुरु	9:43	अश्वि	23:11	विष्क	13:00	ना	9:43	मेष	वैशाख अमावस (स्नानदानादि), सूर्य सायन वृष में 13:44, ग्रीष्म ऋतु (C)	6:00	19:00	5:55	18:46	5:54	18:50	6:22	18:53
वैशाख शुक्ल पक्ष	21	१	शुक्र	8:29	भर.	23:00	प्रीति	10:59	ब	8:29	वृ. 29:02	चन्द्रदर्शन, मु. 15, बुध वक्री 14:05, गुरु अश्वि. 1, मेष में 29:14 (D)	5:59	19:00	5:54	18:47	5:53	18:51	6:21	18:54
	22	२	शनि	7:50	कृति.	23:24	आयु	9:25	कौ	7:50	वृष	अक्षय-तृतीया (देखें पृ. 16), भगवान् परशुराम जयं., मंगल पुन. में 8:46, (E)	5:58	19:01	5:53	18:47	5:52	18:51	6:21	18:54
	23	३	रवि	7:48	रोहि.	24:27	सौभा	8:21	ग	7:48	वृष	भ. 20:07 से, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 23:50 — गुरु मेष राशि में–21 अप्रैल	5:56	19:02	5:52	18:48	5:51	18:52	6:20	18:54
	24	४	चन्द्र	8:25	मृग.	26:07	शोभ	7:48	वि	8:25	मि. 13:13	भ. 8:25 तक, राहु अश्वि. 3 केतु स्वा. 1 में 24:57	5:55	19:03	5:51	18:48	5:50	18:53	6:19	18:55
	25	५	मंग	9:41	आर्द्रा	28:21	अति	7:44	बा	9:41	मिथुन	आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती	5:54	19:03	5:50	18:49	5:49	18:53	6:19	18:55
	26	६	बुध	11:28	पुन.	--	सुक	8:06	तै	11:28	क. 24:18	श्रीगङ्गा-जयन्ती (मध्याह्न व्या.) देखें पृष्ठ 17, श्रीरामानुजाचार्य जयंती (F)	5:53	19:04	5:49	18:49	5:48	18:54	6:18	18:55
	27	७	गुरु	13:39	पुन.	7:00	धृति	8:47	व	13:39	कर्क	भ. 13:39 से 26:51 तक, गुरुपुष्य योग 7:00 बाद	5:52	19:05	5:48	18:50	5:47	18:55	6:17	18:56
	28	८	शुक्र	16:02	पुष्य	9:53	शूल	9:38	ब	16:02	कर्क	सूर्य भरणी में 6:40, श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयंन्ती (G)	5:51	19:06	5:47	18:51	5:46	18:55	6:17	18:56
	29	९	शनि	18:23	आश्ले	12:47	गण्ड	10:31	कौ	18:23	सिं. 12:47	जानकी (सीता) जयन्ती, गुरु पूर्व में उदय 27:19, गण्डमूल विचार	5:50	19:06	5:46	18:51	5:45	18:56	6:16	18:56
	30	१०	रवि	20:29	मघा	15:30	वृद्धि	11:16	तै	7:26	सिंह	गण्डमूल 15:30 तक	5/49	19:07	5/45	18:52	5:44	18:57	6:15	18:57

(A) लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव (B) सं. प्रात: 8:34 बाद, शुक्र रोहि. में 24:32, (C) प्रारम्भ, मेला पिंजौर (हरियाणा), गण्डमूल 23:11 तक, (D) अगस्त्य-अस्त, शक वैशाख प्रारम्भ (E) श्रीशिवाजी-जयन्ती, केदार-बद्रीनाथ यात्रा प्रारम्भ, शव्वाल (मु.) मास प्रारम्भ (F) शुक्र मृग. में 15:33, (G) (अर्द्धरात्रि व्यापिनी), गण्डमूल 9:53 बाद

वि. संवत् 2080, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण ग्रीष्म ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
वैशा. शु. पक्ष	1	११	चन्द्र	22:10	पू.फा.	17:51	ध्रुव	11:44	व	9:20	कं. 24:22	भ. 9:20 से 22:10 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत, मई मास प्रारम्भ**	5:48	19:08	5:44	18:52	5:43	18:57	6:15	18:57
	2	१२	मंग	23:18	उ.फा.	19:41	व्या	11:49	ब	10:44	कन्या	**शुक्र मिथुन में 13:49**, गुरु बाल्यत्व समाप्त 27:19	5:47	19:09	5:44	18:53	5:42	18:58	6:14	18:57
	3	१३	बुध	23:50	हस्त	20:56	हर्ष	11:27	कौ	11:34	कन्या	**प्रदोष व्रत,**	5:46	19:09	5:43	18:54	5:41	18:59	6:14	18:58
	4	१४	गुरु	23:45	चित्रा	21:35	वज्र	10:36	ग	11:48	तु. 9:10	भ. 23:45 से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**	5:45	19:10	5:42	18:54	5:40	18:59	6:13	18:58
	5	१५	शुक्र	23:04	स्वा.	21:39	सिद्धि	9:16	वि	11:25	तुला	भ. 11:25 तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयंती,** बुद्ध पूर्णिमा, **(A)**	5:44	19:11	5:41	18:55	5:40	19:00	6:13	18:58
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	6	१	शनि	21:53	विशा	21:13	व्य. वरी	7 30 / 29 21	बा	10:29	वृ. 15:22	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुरु अश्वि. 2 में 5:35	5:43	19:11	5:40	18:56	5:39	19:01	6:12	18:59
	7	२	रवि	20:16	अनु	20:21	परि	26:52	तै	9:05	वृश्चिक	**श्रीनारद-जयन्ती,** वीणादान, श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती, गण्डमूल 20:21 से	5:43	19:12	5:40	18:56	5:38	19:01	6:12	18:59
	8	३	चन्द्र	18:19	ज्ये.	19:10	शिव	24:09	व	7:18	ध. 19:10	भ. 7:18 से 18:19 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **(B)**	5:42	19:13	5:39	18:57	5:37	19:02	6:11	18:59
	9	४	मंग	16:09	मूल	17:45	सिद्ध	21:16	बा	16:09	धनु	गण्डमूल 17:45 तक	5:41	19:14	5:38	18:57	5:36	19:03	6:11	19:00
	10	५	बुध	13:50	पू.षा.	16:12	साध्य	18:17	तै	13:50	म. 21:49	**मंगल कर्क में 13:48,** वक्री बुध पूर्व में उदय 5:39	5:40	19:14	5:37	18:58	5:36	19:03	6:10	19:00
	11	६	गुरु	11:28	उ.षा.	14:37	शुभ	15:16	व	11:28	मकर	भ. 11:28 से 22:18 तक, सूर्य कृतिका में 24:52	5:39	19:15	5:37	18:59	5:35	19:04	6:10	19:00
	12	७	शुक्र	9:07	श्रव.	13:03	शुक्ल	12:17	ब	9:07	कुं. 24:18	**पंचक प्रारम्भ 24:18**	5:38	19:16	5:36	18:59	5:34	19:05	6:09	19:01
	13	८	शनि	6:51	धनि	11:35	ब्रह्म	9:22	कौ	6:51	कुम्भ		5:38	19:17	5:35	19:00	5:33	19:05	6:09	19:01
	०	९	शनि	28:43	००	००	००	००	०	०	००	**नवमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	14	१०	रवि	26:47	शत.	10:16	ऐन्द्र वैधृ	6 35 / 27 56	व	15:45	मी. 27:24	भ. 15:45 से 26:47 तक,	5:37	19:17	5:35	19:00	5:33	19:06	6:09	19:02
	15	११	चन्द्र	25:04	पू.भा.	9:08	विष्क	25:29	ब	13:56	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, सूर्य वृष में 11:44, ज्येष्ठ संक्रान्ति,** मु. 45, **(C)**	5:36	19:18	5:34	19:01	5:32	19:07	6:08	19:02
	16	१२	मंग	23:37	उ.भा.	8:15	प्रीति	23:15	कौ	12:21	मीन	मंगल पुष्य में 11:58, गण्डमूल 8:15 से,	5:36	19:19	5:34	19:02	5:32	19:07	6:08	19:02
	17	१३	बुध	22:29	रेव.	7:39	आयु	21:17	ग	11:03	मे. 7:39	भ. 22:29 से, **पंचक समाप्त 7:39, प्रदोष व्रत,** मासशिवरात्रि व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ	5:35	19:20	5:33	19:02	5:31	19:08	6:08	19:03
	18	१४	गुरु	21:44	अश्वि	7:23	सौभा	19:37	वि	10:07	मेष	भ. 10:07 तक, गण्डमूल 7:23 तक	5:34	19:20	5:33	19:03	5:30	19:09	6:07	19:03
	19	३०	शुक्र	21:23	भर.	7:30	शोभ	18:16	च	9:34	वृ. 13:35	**ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर-जयं, वटसावित्री व्रत** (अमावस-पक्ष), भावुका अमावस	5:34	19:21	5:32	19:03	5:30	19:09	6:07	19:04
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	20	१	शनि	21:31	कृति	8:03	अति	17:18	किं	9:27	वृष	भावुका करिदिन, **श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ,** गुरु अश्वि. (3) में 16:23, शुक्र पुन. में 24:38	5:33	19:22	5:32	19:04	5:29	19:10	6:07	19:04
	21	२	रवि	22:10	रोहि.	9:05	सुक	16:43	बा	9:51	मि. 21:47	**चन्द्रदर्शन,** मु. 30, सूर्य सायन मिथुन में 12:39, बुध भरणी में 23:46	5:32	19:22	5:31	19:05	5:29	19:11	6:06	19:04
	22	३	चन्द्र	23:20	मृग	10:37	धृति	16:33	तै	10:45	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत,** महाराणा प्रताप जयं., शक ज्येष्ठ प्रा., जिल्काद (मु.)मास प्रा. **(D)**	5:32	19:23	5:31	19:05	5:28	19:11	6:06	19:05
	23	४	मंग	24:58	आर्द्रा	12:39	शूल	16:46	व	12:09	मिथुन	भ. 12:09 से 24:58 तक,	5:31	19:24	5:30	19:06	5:28	19:12	6:06	19:05
	24	५	बुध	27:01	पुन.	15:06	गण्ड	17:19	ब	14:00	क. 8:27		5:31	19:24	5:30	19:06	5:27	19:12	6:06	19:05
	25	६	गुरु	29:20	पुष्य	17:54	वृद्धि	18:07	कौ	16:11	कर्क	**सूर्य रोहिणी में** 20:58, अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, गुरुपुष्य योग **(E)**	5:30	19:25	5:30	19:07	5:27	19:13	6:05	19:06
	26	७	शुक्र	--	आश्ले	20:50	ध्रुव	19:03	ग	18:32	सिं. 20:50		5:30	19:26	5:29	19:07	5:26	19:14	6:05	19:06
	27	७	शनि	7:43	मघा	23:43	व्या.	19:57	व	7:43	सिंह	भ. 7:43 से 20:50 तक,	5:30	19:26	5:29	19:08	5:26	19:14	6:05	19:07
	28	८	रवि	9:57	पू.फा.	26:20	हर्ष	20:39	ब	9:57	सिंह	**श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी** (काश्मीर)	5:29	19:27	5:29	19:09	5:26	19:15	6:05	19:07
	29	९	चन्द्र	11:50	उ.फा.	28:29	वज्र	21:01	कौ	11:50	कं. 8:55		5:29	19:27	5:28	19:09	5:25	19:15	6:05	19:07
	30	१०	मंग	13:09	हस्त	--	सिद्धि	20:54	ग	13:09	कन्या	भ. 25:28 से, **श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि), **शुक्र कर्क में 19:38**	5:28	19:28	5:28	19:10	5:25	19:16	6:05	19:08
	31	११	बुध	13:46	हस्त	6:00	व्य.	20:14	वि	13:46	तु. 18:30	भ. 13:46 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	5:28	19:29	5:28	19:10	5:25	19:17	6:05	19:08

(A) वैशाखस्नान समाप्त, श्रीकूर्म-जयन्ती, **श्रीसत्यनारायण व्रत,** श्री छिन्नमस्तिका जयन्ती **(B)** वक्री बुध अश्वि. 4 में 15:46, शुक्र आर्द्रा में 14:25, **(C)** पुण्यकाल सं. प्रातः 5:20 से, **बुध मार्गी 8:45,** **मेला भद्रकाली एकादशी** (कपूरथला, पंजाब) **(D)** उमा-अवतार **(E)** गण्डमूल 17:54 से

वि. संवत् 2080, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य उत्तर-दक्षिणायन; ग्रीष्म-वर्षा ऋतु)	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
ज्ये. शुक्ल	1	१२	गुरु	13:40	चित्रा	6:48	वरी.	18:59	बा	13:40	तुला	**प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ, जून मास प्रारम्भ, चम्पक द्वादशी	5:28	19:29	5:27	19:11	5:25	19:17	6:05	19:09
	2	१३	शुक्र	12:49	स्वा	6:53	परि.	17:09	तै	12:49	वृ. 24:29	शुक्र पुष्य में 29:09	5:27	19:30	5:27	19:11	5:24	19:18	6:05	19:09
	3	१४	शनि	11:17	विशा अनु	6 16 29 4	शिव	14:47	व	11:17	वृश्चिक	भ. 11:17 से 22:15 तक, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमापक्ष), **श्रीसत्यनारायण व्रत**	5:27	19:30	5:27	19:12	5:24	19:18	6:04	19:09
	4	१५	रवि	9:12	ज्ये.	27:23	सिद्ध	11:58	ब	9:12	ध. 27:23	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयंती** (625वीं), ज्येष्ठी योग, गुरु अश्वि. 4 में 21:56	5:27	19:31	5:27	19:12	5:24	19:19	6:04	19:10
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	5	१	चन्द्र	6:40	मूल	25:23	साध्य शुभ	8 48 29 25	कौ	6:40	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध कृतिका में 9:19, गण्डमूल 25:23 तक	5:27	19:31	5:27	19:13	5:24	19:19	6:04	19:10
	०	२	चन्द्र	27:50	००	००	००	००	०	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	6	३	मंग	24:51	पू.षा.	23:13	शुक्ल	25:54	व	14:21	म. 28:40	भ. 14:21 से 24:51 तक,	5:27	19:32	5:27	19:13	5:24	19:20	6:04	19:10
	7	४	बुध	21:51	उ.षा.	21:03	ब्रह्म	22:23	ब	11:21	मकर	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **बुध वृष में 19:44**	5:26	19:33	5:27	19:13	5:24	19:20	6:04	19:11
	8	५	गुरु	18:59	श्रव.	18:59	ऐन्द्र	18:59	कौ	8:25	मकर	सूर्य मृगशिर में 18:53, मंगल आश्ले. में 15:20	5:26	19:33	5:27	19:14	5:24	19:21	6:04	19:11
	9	६	शुक्र	16:21	धनि.	17:09	वैधृ.	15:46	ग	5:40	कुं. 6:02	भ. 16:21 से 27:12 तक, **पंचक प्रारम्भ 6:02**	5:26	19:33	5:27	19:14	5:23	19:21	6:05	19:11
	10	७	शनि	14:02	शत.	15:39	विष्क	12:49	ब	14:02	कुम्भ		5:26	19:34	5:27	19:15	5:23	19:21	6:05	19:12
	11	८	रवि	12:06	पू.भा.	14:32	प्रीति	10:10	कौ	12:06	मी. 8:46		5:26	19:34	5:27	19:15	5:23	19:22	6:05	19:12
	12	९	चन्द्र	10:35	उ.भा.	13:50	आयु	7:52	ग	10:35	मीन	भ. 22:02 से, गण्डमूल 13:50 बाद	5:26	19:35	5:27	19:15	5:23	19:22	6:05	19:12
	13	१०	मंग	9:29	रेव.	13:33	सौभा शोभ	5 55 28 18	वि	9:29	मे. 13:33	भ. 9:29 तक, **पंचक समाप्त 13:33**, बुध रोहिणी में 28:19	5:26	19:35	5:27	19:16	5:23	19:23	6:05	19:13
	14	११	बुध	8:49	अश्वि	13:40	अति	27:00	बा	8:49	मेष	**योगिनी एकादशी व्रत**, गण्डमूल 13:40 तक	5:26	19:36	5:27	19:16	5:24	19:23	6:05	19:13
	15	१२	गुरु	8:33	भर.	14:12	सुक	26:02	तै	8:33	वृ. 20:24	**प्रदोष व्रत, सूर्य मिथुन** में 18:16, **आषाढ़ संक्रांति**, मु. 30, पुण्यकाल **(A)**	5:26	19:36	5:27	19:17	5:24	19:23	6:05	19:13
	16	१३	शुक्र	8:41	कृति.	15:07	धृति	25:22	व	8:41	वृष	भ. 8:41 से 20:57 तक, मासशिवरात्रि व्रत	5:26	19:36	5:27	19:17	5:24	19:24	6:05	19:13
	17	१४	शनि	9:12	रोहि.	16:25	शूल	25:01	श	9:12	मि. 29:13	**पितृकार्येषु अमावस**, शुक्र आश्लेषा में 21:29, **शनि वक्री 22:52**	5:26	19:37	5:27	19:17	5:24	19:24	6:05	19:14
	18	३०	रवि	10:07	मृग.	18:07	गण्ड	24:59	ना	10:07	मिथुन	**आषाढ़ अमावस** (स्नानदानादि 10:07 तक),	5:27	19:37	5:27	19:17	5:24	19:24	6:06	19:14
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	19	१	चन्द्र	11:26	आर्द्रा	20:11	वृद्धि	25:15	ब	11:26	मिथुन	**आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन**, मु. 15, **गुप्त नवरात्र प्रारम्भ**	5:27	19:37	5:27	19:18	5:24	19:24	6:06	19:14
	20	२	मंग	13:08	पुन.	22:37	ध्रुव	25:47	कौ	13:08	क. 15:58	**रथयात्रा उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), बुध पूर्व में अस्त 5:55, जिल्हिजा (मु.) मास. प्रारम्भ	5:27	19:37	5:28	19:18	5:24	19:25	6:06	19:14
	21	३	बुध	15:10	पुष्य	25:21	व्या.	26:34	ग	15:10	कर्क	भ. 28:19 से, बुध मृग. में 7:17, गुरु भर. (1) में 12:10, सूर्य सायन कर्क **(B)**	5:27	19:38	5:28	19:18	5:24	19:25	6:06	19:15
	22	४	गुरु	17:28	आश्ले	28:18	हर्ष	27:31	वि	17:28	सिं. 28:18	भ. 17:28 तक, **सूर्य आर्द्रा में 17:48**, शक आषाढ़ प्रारम्भ, गण्डमूल	5:27	19:38	5:28	19:18	5:25	19:25	6:06	19:15
	23	५	शुक्र	19:55	मघा	——	वज्र	28:31	ब	6:42	सिंह	गण्डमूल विचार	5:27	19:38	5:28	19:18	5:25	19:25	6:07	19:15
	24	६	शनि	22:18	मघा	7:18	सिद्धि	29:26	कौ	9:07	सिंह	**स्कन्द** (कुमार) **षष्ठी, बुध मिथुन में 12:41**, गण्डमूल 7:18 तक	5:28	19:38	5:28	19:19	5:25	19:25	6:07	19:15
	25	७	रवि	24:26	पू.फा.	10:11	व्य.	--	ग	11:22	कं. 16:52	भ. 24:26 से, **विवस्वत सप्तमी**, स.सि.यो. 10:11 से	5:28	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:07	19:15
	26	८	चन्द्र	26:05	उ.फा.	12:44	व्य.	6:06	वि	13:16	कन्या	भ. 13:16 तक, राहु अश्वि. 2 केतु चित्रा 4 में 22:26, **श्रीदुर्गाष्टमी**	5:28	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:07	19:16
	27	९	मंग	27:06	हस्त	14:43	वरी	6:23	बा	14:36	तु. 27:28	भढली नवमी, बुध आर्द्रा में 15:17, **गुप्त नवरात्र समाप्त**, मेला शरीक **(C)**	5:29	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:08	19:16
	28	१०	बुध	27:19	चित्रा	16:01	परि शिव	6 8 29 15	तै	15:13	तुला		5:29	19:39	5:30	19:19	5:26	19:26	6:08	19:16
	29	११	गुरु	26:43	स्वा.	16:30	सिद्ध	27:43	व	15:01	तुला	भ. 15:01 से 26:43 तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य (D)**	5:29	19:39	5:30	19:19	5:27	19:26	6:08	19:16
	30	१२	शुक्र	25:17	विशा	16:10	साध्य	25:32	ब	14:00	वृ. 10:20	**मंगल मघा 1 सिंह में 26:16**, हरिवासर	5:30	19:39	5:30	19:19	5:27	19:26	6:09	19:16

(A) सं. 11:52 बाद **(B)** में 20:28, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ **(C)** भवानी (काश्मीर) **(D)** व्रत, नियमादि प्रारम्भ

वि. संवत् 2080, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन / वर्षा-ऋतु	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आ. शु.	1	१३	शनि	23:08	अनु.	15:04	शुभ	22:44	कौ	12:13	वृश्चिक	शनि प्रदोष व्रत, जुलाई–सन् 2023 ई. शुरु,	5:30	19:39	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
	2	१४	रवि	20:22	ज्ये.	13:18	शुक्ल	19:26	ग	9:45	ध. 13:18	भ. 20:22 से, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 17), कोकिला व्रत, **(A)**	5:31	19:39	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
	3	१५	चन्द्र	17:09	मूल	11:02	ब्रह्म	15:45	वि	6:46	धनु	भ. 6:46 तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा, बुध पुन. में **(B)**	5:31	19:39	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्ष	4	१	मंग	13:39	पू.षा. / उषा.	8:25 / 5 40	ऐन्द्र / वैधृ.	11:49 / 7 47	कौ	13:39	म. 13:44	**प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**, अशून्यशयन व्रत, मङ्गलागौरी व्रत शुरु	5:31	19:38	5:32	19:19	5:29	19:26	6:10	19:16
	5	२	बुध	10:03	श्रव.	26 56	विष्क	27 48	ग	10:03	मकर	भ. 20:17 से, कज्जली तृतीया (श्रवणनक्षत्र युता)	5:32	19:38	5:32	19:19	5:29	19:26	6:10	19:16
	6	३	गुरु	6:31	धनि.	24:25	प्रीति	24:00	वि	6:31	कुं. 13:39	भ. 6:31 तक, **पंचक प्रा. 13:39, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12), **(C)**	5:32	19:38	5:33	19:19	5:30	19:25	6:10	19:16
	०	४	गुरु	27:13	००	००	००	००	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	7	५	शुक्र	24:18	शत.	22:16	आयु	20:30	कौ	13:46	कुम्भ	**नाग-पंचमी** (राजस्थान व बंगाल)	5:33	19:38	5:33	19:19	5:30	19:25	6:11	19:16
	8	६	शनि	21:52	पू.भा.	20:36	सौभा	17:23	ग	11:05	मी. 14:58	भ. 21:52 से, **बुध कर्क में 12:15**	5:33	19:38	5:34	19:19	5:31	19:25	6:11	19:16
	9	७	रवि	20:00	उ.भा.	19:30	शोभ	14:43	वि	8:56	मीन	भ. 8:56 तक, बुध पुष्य में 27:41, गण्डमूल 19:30 से, स.सि.यो.	5:34	19:38	5:34	19:18	5:31	19:25	6:12	19:16
	10	८	चन्द्र	18:45	रेव.	18:59	अति	12:33	बा	7:23	मे. 18:59	**पंचक समाप्त 18:59**, गुरु भर. (2) में 17:43, **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**	5:34	19:37	5:35	19:18	5:32	19:25	6:12	19:16
	11	९	मंग	18:05	अश्वि	19:05	सुक	10:52	तै	6:25	मेष	स.सि.यो., गण्डमूल 19:05 तक	5:35	19:37	5:35	19:18	5:32	19:24	6:12	19:16
	12	१०	बुध	18:00	भर.	19:44	धृति	9:40	व	6:03	वृ. 25:58	भ. 6:03 से 18:00 तक, **बुध पश्चिम में उदय 28:55**	5:35	19:37	5:36	19:18	5:33	19:24	6:13	19:16
	13	११	गुरु	18:25	कृति	20:52	शूल	8:52	ब	6:13	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**,	5:36	19:36	5:36	19:18	5:33	19:24	6:13	19:16
	14	१२	शुक्र	19:18	रोहि	22:27	गंड	8:27	कौ	6:52	वृष		5:37	19:36	5:37	19:17	5:34	19:24	6:13	19:16
	15	१३	शनि	20:33	मृग.	24:23	वृद्धि	8:21	ग	7:56	मि. 11:22	भ. 20:33 से, **शनि प्रदोष व्रत, श्रावण शिवरात्रि व्रत**	5:37	19:36	5:37	19:17	5:34	19:23	6:14	19:16
	16	१४	रवि	22:09	आर्द्रा	26:39	ध्रुव	8:32	वि	9:21	मिथुन	भ. 9:21 तक, सूर्य कर्क में 29:07, **श्रावण संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल **(D)**	5:38	19:35	5:38	19:17	5:35	19:23	6:14	19:15
	17	३०	चन्द्र	24:02	पुन.	29:11	व्या.	8:57	च	11:06	क. 22:32	**श्रावण (हरियाली) अमावस, सोमवती अमावस**, (देखें पृष्ठ 80) **(E)**	5:38	19:35	5:38	19:16	5:35	19:22	6:14	19:15
प्रथम (अधिक) श्रावण शुक्ल पक्ष	18	१	मंग	26:10	पुष्य	--	हर्ष	9:36	किं	13:06	कर्क	**श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम, मल) मास प्रारम्भ** (देखें पृष्ठ 81), **(F)**	5:39	19:34	5:39	19:16	5:36	19:22	6:15	19:15
	19	२	बुध	28:31	पुष्य	7:58	वज्र	10:25	बा	15:21	कर्क	**चन्द्रदर्शन**, मु. 15, गण्डमूल 7:58 से,	5:40	19:34	5:39	19:15	5:37	19:22	6:15	19:15
	20	३	गुरु	--	आश्ले	10:55	सिद्धि	11:22	तै	17:45	सिं. 10:55	सूर्य पुष्य में 16:55, मुहर्रम (मुस्लिम) सं. 1445 हिजरी प्रारम्भ	5:40	19:33	5:40	19:15	5:37	19:21	6:15	19:14
	21	३	शुक्र	6:59	मघा	13:58	व्य.	12:24	ग	6:59	सिंह	भ. 20:13 से, गण्डमूल 13:58 तक	5:41	19:33	5:40	19:15	5:38	19:21	6:16	19:14
	22	४	शनि	9:27	पू.फा.	16:59	वरी	13:24	वि	9:27	कं. 23:42	भ. 9:27 तक, मंगल पू.फा. में 23:53	5:42	19:32	5:41	19:14	5:38	19:20	6:16	19:14
	23	५	रवि	11:45	उ.फा.	19:47	परि	14:16	बा	11:45	कन्या	**शुक्र वक्री 7:02**, सूर्य सायन सिंह में 7:20, शक श्रावण प्रारम्भ	5:42	19:32	5:41	19:14	5:39	19:19	6:17	19:14
	24	६	चन्द्र	13:43	हस्त	22:12	शिव	14:51	तै	13:43	कन्या	**बुध मघा 1 सिंह में 28:31**	5:43	19:31	5:42	19:13	5:40	19:19	6:17	19:13
	25	७	मंग	15:09	चित्रा	24:03	सिद्ध	15:01	व	15:09	तु. 11:13	भ. 15:09 से 27:31 तक,	5:43	19:31	5:42	19:12	5:40	19:18	6:17	19:13
	26	८	बुध	15:53	स्वा.	25:10	साध्य	14:39	ब	15:53	तुला	श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम) मास–18 जुला. से 16 अग.	5:44	19:30	5:43	19:12	5:41	19:18	6:18	19:13
	27	९	गुरु	15:48	विशा	25:28	शुभ	13:38	कौ	15:48	वृ. 19:28		5:45	19:29	5:44	19:11	5:41	19:17	6:18	19:12
	28	१०	शुक्र	14:52	अनु	24:55	शुक्ल	11:56	ग	14:52	वृश्चिक	भ. 25:59 से, गण्डमूल 24:55 से,	5:45	19:28	5:44	19:11	5:42	19:16	6:18	19:12
	29	११	शनि	13:06	ज्ये.	23:35	ब्रह्म	9:34	वि	13:06	ध. 23:35	भ. 13:06 तक, **पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार	5:46	19:28	5:45	19:10	5:43	19:16	6:19	19:11
	30	१२	रवि	10:35	मूल	21:33	ऐन्द्र / वैधृ.	6 34 / 27 1	बा	10:35	धनु	**प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 21:33 तक	5:47	19:27	5:45	19:09	5:43	19:15	6:19	19:11
	31	१३	चन्द्र	7:27	पू.षा.	18:58	विष्क	23:05	तै	7:27	म. 24:16	भ. 27:52 से,	5:48	19:26	5:46	19:09	5:44	19:14	6:19	19:11
	०	१४	चन्द्र	27:52	००	००	००	००	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--

(A) शिवशयनोत्सव, मेला, ज्वालामुखी (काश्मीर) **(B)** 18:21, वायु परीक्षा **(C)** सूर्य पुन. में 17:26, शुक्र मघा 1 सिंह में 28:05 **(D)** सं. अगले दिन 11:31 तक, बुध आश्लेषा में 28:15, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(E)** मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य **(F)** प्रथम (अधिक) श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ

वि. संवत् 2080, अगस्त मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन, वर्षा-शरद्-ऋतु	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
	1	१५	मंग	24:02	उ.षा.	16:03	प्रीति	18:52	वि	13:57	मकर	भ. 13:57 तक, अधि. श्रावण पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, अग. 2023 ई. (A)	5:48	19:25	5:46	19:08	5:45	19:14	6:20	19:10
द्वितीय (अधिक) श्रावण कृष्ण पक्ष	2	१	बुध	20:06	श्रव.	12:58	आयु	14:33	बा	10:05	कुं. 23:26	द्वितीय (अधिक) श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 23:26	5:49	19:25	5:47	19:08	5:45	19:13	6:20	19:10
	3	२	गुरु	16:17	धनि. शत.	9:56 7 8	सौभा शोभ	10:17 6 13	तै	6:12	कुम्भ	भ. 26:32 से, सूर्य आश्ले. में 15:52, बुध पू.फा. में 19:59, वक्री शुक्र (B)	5:50	19:24	5:48	19:07	5:46	19:12	6:20	19:09
	4	३	शुक्र	12:46	पू.भा.	28 45	अति	26 29	वि	12:46	मी. 23:18	भ. 12:46 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12)	5:50	19:23	5:48	19:06	5:46	19:11	6:21	19:09
	5	४	शनि	9:41	उ.भा.	26:54	सुक	23:12	बा	9:41	मीन	गण्डमूल 26:54 से,	5:51	19:22	5:49	19:05	5:47	19:10	6:21	19:08
	6	५	रवि	7:10	रेव.	25:44	धृति	20:27	तै	7:10	मे. 25:44	भ. 29:21 से, पंचक समाप्त 25:44, गुरु भर. (3) में 7:26	5:52	19:21	5:49	19:05	5:48	19:10	6:21	19:08
	०	६	रवि	29:21	००	००	००	००	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	7	७	चन्द्र	28:15	अश्वि	25:16	शूल	18:16	वि	16:48	मेष	भ. 16:48 तक, वक्री शुक्र आश्ले. 4 कर्क में 10:56, गण्डमूल 25:16 तक	5:52	19:20	5:50	19:04	5:48	19:09	6:22	19:07
	8	८	मंग	27:53	भर.	25:32	गण्ड	16:41	बा	16:04	मेष		5:53	19:19	5:50	19:03	5:49	19:08	6:22	19:07
	9	९	बुध	28:12	कृति.	26:29	वृद्धि	15:40	तै	16:03	वृ. 7:43		5:54	19:18	5:51	19:02	5:49	19:07	6:22	19:06
	10	१०	गुरु	29:07	रोहि.	28:01	ध्रुव	15:10	व	16:40	वृष	भ. 16:40 से 29:07 तक,	5:54	19:17	5:51	19:01	5:50	19:06	6:22	19:05
	11	११	शुक्र	—	मृग.	—	व्या.	15:06	ब	17:50	मि. 16:59		5:55	19:16	5:52	19:00	5:51	19:05	6:23	19:05
	12	११	शनि	6:32	मृग.	6:03	हर्ष	15:22	बा	6:32	मिथुन	पुरुषोत्तमा (कमला) एकादशी व्रत	5:56	19:15	5:53	18:59	5:51	19:04	6:23	19:04
	13	१२	रवि	8:20	आर्द्रा	8:27	वज्र	15:55	तै	8:20	क. 28:26	प्रदोष व्रत, मंगल उ.फा. में 9:24	5:56	19:14	5:53	18:59	5:52	19:03	6:23	19:04
	14	१३	चन्द्र	10:26	पुन.	11:07	सिद्धि	16:40	व	10:26	कर्क	भ. 10:26 से 23:35 तक, मासशिवरात्रि व्रत	5:57	19:13	5:54	18:58	5:53	19:02	6:24	19:03
	15	१४	मंग	12:43	पुष्य	13:59	व्य.	17:32	श	12:43	कर्क	भारत स्वतन्त्रता दिवस (77वाँ), गण्डमूल 13:59 से,	5:58	19:12	5:54	18:57	5:53	19:01	6:24	19:02
	16	३०	बुध	15:08	आश्ले	16:57	वरी	18:30	ना	15:08	सिं. 16:57	अधि. श्रावण अमावस, श्रावण अधिक (मल) मास समाप्त (देखें पृष्ठ 81)	5:58	19:11	5:55	18:56	5:54	19:00	6:24	19:02
द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष	17	१	गुरु	17:36	मघा	19:58	परि.	19:29	ब	17:36	सिंह	सूर्य मघा 1 सिंह में 13:32, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल (C)	5:59	19:10	5:55	18:55	5:54	18:59	6:24	19:01
	18	२	शुक्र	20:02	पू.फा.	22:57	शिव	20:27	बा	6:49	कं. 29:41	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल कन्या में 15:54, वक्री शुक्र पूर्व में उदय 19:04	6:00	19:09	5:56	18:54	5:55	18:58	6:25	19:00
	19	३	शनि	22:20	उ.फा.	25:48	सिद्ध	21:19	तै	9:11	कन्या	मधुस्त्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	6:00	19:08	5:56	18:53	5:56	18:57	6:25	18:59
	20	४	रवि	24:23	हस्त	28:22	साध्य	21:58	व	11:22	कन्या	भ. 11:22 से 24:23 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी, स.सि.यो.	6:01	19:07	5:57	18:52	5:56	18:56	6:25	18:59
	21	५	चन्द्र	26:01	चित्रा	—	शुभ	22:20	ब	13:12	तु. 17:30	नाग-पंचमी, शुक्र बालयत्व समाप्त 19:04	6:02	19:06	5:57	18:51	5:57	18:55	6:25	18:58
	22	६	मंग	27:07	चित्रा	6:32	शुक्ल	22:18	कौ	18:34	तुला	श्रीकल्कि-जयन्ती, वक्री शनि शत. 1 में 22:34	6:02	19:04	5:58	18:50	5:57	18:54	6:26	18:57
	23	७	बुध	27:32	स्वा.	8:08	ब्रह्म	21:45	ग	15:20	वृ. 26:54	भ. 27:32 से, गोस्वामी तुलसीदास जयंती, बुध वक्री 25:28, सूर्य सायन(D)	6:03	19:03	5:59	18:49	5:58	18:53	6:26	18:56
	24	८	गुरु	27:11	विशा.	9:04	ऐन्द्र	20:36	वि	15:22	वृश्चिक	भ. 15:22 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी (हि.प्र.)(E)	6:04	19:02	5:59	18:47	5:59	18:51	6:26	18:56
	25	९	शुक्र	26:03	अनु.	9:14	वैधृ.	18:50	बा	14:37	वृश्चिक	गण्डमूल 9:14 से,	6:04	19:01	6:00	18:46	5:59	18:50	6:26	18:55
	26	१०	शनि	24:09	ज्ये.	8:38	विष्क	16:26	तै	13:06	ध. 8:38	गण्डमूल विचार	6:05	19:00	6:00	18:45	6:00	18:49	6:26	18:54
	27	११	रवि	21:33	मूल पू.षा.	7 16 29 15	प्रीति आयु	13:26 9 56	व	10:51	धनु	भ. 10:51 से 21:33 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, गण्डमूल 7:16 तक	6:06	18:58	6:01	18:44	6:00	18:48	6:27	18:53
	28	१२	चन्द्र	18:23	उ.षा.	26:43	सौभा	30 1	ब	7:58	म. 10:40	सोम प्रदोष व्रत, वक्री बुध पू.फा. 4 में 13:37, राहु अश्वि. 1, केतु चित्रा 3 (F)	6:06	18:57	6:01	18:43	6:01	18:47	6:27	18:53
	29	१३	मंग	14:48	श्रव.	23:50	शोभ	25:51	तै	14:48	मकर	ऋग्वेदि उपाकर्म	6:07	18:56	6:02	18:42	6:01	18:46	6:27	18:52
	30	१४	बुध	10:59	धनि	20:47	अति	21:32	व	10:59	कुं. 10:19	भ. 10:59 से 21:03 तक, पंचक प्रा. 10:19, रक्षाबन्धन (भद्रा बाद) (देखें पृ. 17)(G)	6:08	18:55	6:02	18:41	6:02	18:44	6:27	18:51
	31	१५	गुरु	7:06	शत.	17:45	सुक	17:16	ब	7:06	कुम्भ	श्रावण-पूर्णिमा, सूर्य पू.फा. में 9:31, संस्कृत-दिवस, (H) शुक्र उदय 18 अग.	6:08	18:53	6:03	18:40	6:03	18:43	6:28	18:50
	०	१	गुरु	27:19	००	००	००	००	०	०	००	भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ००	--	--	--	--	--	--	--	--

श्रावण अधिक (मल) मास 18 जुलाई से 16 अगस्त

(A) प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव (B) पश्चिम में अस्त 19:05 (C) सं. प्रात: 7:08 बाद, द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, गण्डमूल 19:58 तक (D) कन्या में 14:31, शक भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रारम्भ (E) समाप्त, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 17) (F) में 19:51 (G) श्रावणी उपाकर्म, यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, हयग्रीव जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत पूर्ण, गायत्री-जयन्ती (H) दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त (काश्मीर), गायत्री जपम्, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 5:23

वि. संवत् 2080, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन, शरद्-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	२	शुक्र	23:51	पू.भा.	14:56	धृति	13:09	तै	13:35	मी. 9:36		6:09	18:52	6:03	18:39	6:03	18:42	6:28	18:49
	2	३	शनि	20:50	उ.भा.	12:31	शूल गण्ड	9:22 30:1	व	10:21	मीन	भ. 10:21 से 20:50 तक, कज्जली–तृतीया, गण्डमूल 12:31 से	6:10	18:51	6:04	18:38	6:04	18:41	6:28	18:48
	3	४	रवि	18:25	रेव.	10:39	वृद्धि	27:12	ब	7:38	मे. 10:39	**पंचक समाप्त 10:39, श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ–12),**(A)**	6:10	18:50	6:04	18:36	6:04	18:40	6:28	18:48
	4	५	चन्द्र	16:43	अश्वि	9:27	ध्रुव	24:59	तै	16:43	मेष	**चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 21:35 (जालन्धर), **गुरु वक्री 19:40, (B)**	6:11	18:48	6:05	18:35	6:05	18:38	6:28	18:47
	5	६	मंग	15:47	भर.	9:00	व्या.	23:23	व	15:47	वृ. 15:01	भ. 15:47 से 27:43 तक, **हल-षष्ठी,** स.सि.यो. 9:00 से	6:12	18:47	6:05	18:34	6:05	18:37	6:28	18:46
	6	७	बुध	15:38	कृति	9:20	हर्ष	22:25	ब	15:38	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (स्मार्त्त-गृहस्थियों के लिए), शीतला–सप्तमी **(C)**	6:12	18:46	6:06	18:33	6:06	18:36	6:29	18:45
	7	८	गुरु	16:15	रोहि.	10:25	वज्र	22:02	कौ	16:15	मि. 23:13	**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत** (वैष्णव) (देखें पृष्ठ 18, 23)	6:13	18:44	6:06	18:32	6:07	18:35	6:29	18:44
	8	९	शुक्र	17:31	मृग.	12:10	सिद्धि	22:07	ग	17:31	मिथुन	**श्रीगुग्गा-नवमी,** गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	6:13	18:43	6:07	18:31	6:07	18:33	6:29	18:43
	9	१०	शनि	19:19	आर्द्रा	14:26	व्य.	22:35	व	6:25	मिथुन	भ. 6:25 से 19:19 तक,	6:14	18:42	6:07	18:29	6:08	18:32	6:29	18:42
	10	११	रवि	21:29	पुन.	17:07	वरी	23:19	ब	8:24	क. 10:25	**अजा एकादशी व्रत,**	6:15	18:40	6:08	18:28	6:08	18:31	6:29	18:42
	11	१२	चन्द्र	23:53	पुष्य	20:01	परि	24:13	कौ	10:41	कर्क	**वत्स द्वादशी (पूजा)**	6:15	18:39	6:08	18:27	6:09	18:30	6:30	18:41
	12	१३	मंग	26:22	आश्ले	23:01	शिव	25:11	ग	13:08	सिं. 23:01	भ. 26:22 से, **भौम प्रदोष व्रत,** कैलाश यात्रा प्रारम्भ	6:16	18:38	6:09	18:26	6:09	18:28	6:30	18:40
	13	१४	बुध	28:50	मघा	26:01	सिद्ध	26:07	वि	15:36	सिंह	भ. 15:36 तक, सूर्य उ.फा. में 27:25, वक्री बुध पूर्व में उदय 18:32, **(D)**	6:17	18:36	6:09	18:25	6:10	18:27	6:30	18:39
	14	३०	गुरु	--	पू.फा.	28:54	साध्य	26:59	च	18:00	सिंह	**कुशाग्रहणी अमावस–'ॐ हुं फट् स्वाहा'** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, **(E)**	6:17	18:35	6:10	18:23	6:11	18:26	6:30	18:38
	15	३०	शुक्र	7:10	उ.फा.	--	शुभ	27:42	ना	7:10	कं. 11:36	**भाद्रपद अमावस**–स्नानदानादि प्रातः 7:10 तक, **बुध मार्गी 25:48**	6:18	18:34	6:10	18:22	6:11	18:25	6:30	18:37
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	16	१	शनि	9:18	उ.फा.	7:36	शुक्ल	28:12	ब	9:18	कन्या	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,	6:19	18:32	6:11	18:21	6:12	18:23	6:30	18:36
	17	२	रवि	11:10	हस्त	10:02	ब्रह्म	28:27	कौ	11:10	तु. 23:08	**सूर्य कन्या में 13:30, आश्विन संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः **(F)**	6:19	18:31	6:11	18:20	6:12	18:22	6:31	18:35
	18	३	चन्द्र	12:40	चित्रा	12:08	ऐन्द्र	28:24	ग	12:40	तुला	भ. 25:12 से, **हरितालिका तृतीया, कलंक चतुर्थी** (चन्द्रदर्शन–निषेध),**(G)**	6:20	18:30	6:11	18:19	6:13	18:21	6:31	18:35
	19	४	मंग	13:44	स्वा.	13:48	वैधृ.	27:57	वि	13:44	तुला	भ. 13:44 तक, **सिद्धि विनायक व्रत** (देखें पृष्ठ 19)	6:20	18:28	6:12	18:17	6:13	18:19	6:31	18:34
	20	५	बुध	14:17	विशा.	14:59	विष्क	27:05	बा	14:17	वृ. 8:44	**ऋषि-पंचमी,** सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	6:21	18:27	6:12	18:16	6:14	18:18	6:31	18:33
	21	६	गुरु	14:15	अनु.	15:35	प्रीति	25:44	तै	14:15	वृश्चिक	**सूर्य षष्ठी व्रत**	6:22	18:26	6:13	18:15	6:15	18:17	6:31	18:32
	22	७	शुक्र	13:36	ज्ये.	15:35	आयु	23:52	व	13:36	ध. 15:35	भ. 13:36 से 24:57 तक, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी, व्रत, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.(H)**	6:22	18:24	6:13	18:14	6:15	18:16	6:32	18:31
	23	८	शनि	12:18	मूल	14:56	सौभा	21:30	ब	12:18	धनु	**श्रीराधाष्टमी,** मंगल चित्रा में 17:10, सूर्य सायन तुला में 12:20, दक्षिण **(I)**	6:23	18:23	6:14	18:13	6:16	18:14	6:32	18:30
	24	९	रवि	10:24	पू.षा.	13:42	शोभ	18:39	कौ	10:24	म. 19:18	**श्रीचन्द नवमी** (उदासीन–सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ, **(J)**	6:24	18:21	6:14	18:11	6:16	18:13	6:32	18:29
	25	१०	चन्द्र	7:56	उ.षा.	11:55	अति	15:23	ग	7:56	मकर	भ. 18:29 से 29:01 तक, **पद्मा एकादशी व्रत (स्मार्त्त), (K)**	6:24	18:20	6:15	18:10	6:17	18:12	6:32	18:28
	०	११	मंग	29:01	००	००	००	००	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	26	१२	मंग	25:46	श्रव.	9:42	सुक	11:45	ब	15:24	कुं. 20:28	**पंचक प्रा. 20:28,** पद्मा एकादशी व्रत (वैष्णव), श्रीवामन-जयं., **श्रवण-(L)**	6:25	18:19	6:15	18:09	6:17	18:11	6:32	18:27
	27	१३	बुध	22:19	धनि. शत.	7:10 28:29	धृति शूल	7:54 27:54	कौ	12:03	कुंभ	**प्रदोष व्रत,** सूर्य हस्त में 18:55	6:26	18:17	6:16	18:08	6:18	18:09	6:32	18:27
	28	१४	गुरु	18:50	पू.भा.	25:49	गण्ड	23:55	ग	8:35	मी. 20:28	भ. 18:50 से 29:09 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, **मेला बाबा सोढल** (जालंधर), **श्रीसत्यनारायण व्रत**	6:26	18:16	6:17	18:07	6:19	18:08	6:33	18:26
	29	१५	शुक्र	15:28	उ.भा.	23:18	वृद्धि	20:03	ब	15:28	मीन	**भाद्रपद पूर्णिमा,** बुध उ.फा. में 19:46, **प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्ध प्रारम्भ(M)**	6:27	18:15	6:17	18:05	6:19	18:07	6:33	18:25
	30	१	शनि	12:22	रेव.	21:08	ध्रुव	16:27	कौ	12:22	मे. 21:08	आश्विन कृष्णपक्ष प्रा., **द्वितीया का श्राद्ध, पंचक समाप्त 21:08**	6:28	18:13	6:18	18:04	6:20	18:06	6:33	18:24

(A) मंगल हस्त में 7:06 **(B) शुक्र मार्गी** 6:50, अगस्त्य-उदय, गण्डमूल 9:27 तक, **(C) श्रीकृष्ण-जयन्ती योग** (देखें पृष्ठ 18,23) **(D)** मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा चतुर्दशी **(E)** पिठोरी अमावस, पितृकार्येषु अमावस, रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान), लोहार्गल-स्नान-2 दिन **(F)** 7:06 बाद, श्रीवराह-जयन्ती (अपराह्ण-व्यापिनी) देखें पृष्ठ-18, विश्वकर्मा पूजन, रबि-उल्लावल (मु.) मास शुरु **(G)** चन्द्रास्त 20:13 (जालन्धर), गौरी तृतीया, पत्थर चौथ (देखें पृष्ठ 18) **(H)** (चन्द्रोदय-व्यापिनी) (देखें पृष्ठ 19) **(I)** गोल प्रारम्भ, शक आश्विन प्रारम्भ, दधीचि जयन्ती **(J) मंगल पश्चिम में अस्त** 17:56 **(K)** विष्णुशृंखल योग 11:55 से प्रारम्भ **(L) द्वादशी** (देखें पृष्ठ 19) **(M) पूर्णिमा एवं प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 19), **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ**

वि. संवत् 2080, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	अक्तू.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन, शरद्-हेमन्त-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	२	रवि	9:42	अश्वि	19:28	व्या.	13:13	ग	9:42	मेष	भ. 20:40 से, बुध कन्या में 20:35, शुक्र मघा 1 सिंह में 24:59, (A)	6:28	18:12	6:18	18:03	6:20	18:04	6:33	18:23
	2	३	चन्द्र	7:37	भर.	18:24	हर्ष	10:29	वि	7:37	वृ. 24:15	भ. 7:37 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), महात्मा गाँधी (B)	6:29	18:11	6:19	18:02	6:21	18:03	6:33	18:22
	०	४	चन्द्र	30:12	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	3	५	मंग	29:33	कृति	18:04	वज्र	8:17	कौ	17:53	वृष	मंगल तुला में 17:57, वक्री गुरु भर. (2) में 24:40, पंचमी का श्राद्ध	6:30	18:09	6:19	18:01	6:22	18:02	6:34	18:21
	4	६	बुध	29:42	रोहि	18:29	सिद्धि, व्य.	6 43, 29 45	ग	17:38	वृष	भ. 29:42 से, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध,	6:30	18:08	6:20	18:00	6:22	18:01	6:34	18:21
	5	७	गुरु	--	मृग	19:40	वरी.	29:22	वि	18:09	मि. 6:59	भ. 18:09 तक, सप्तमी का श्राद्ध	6:31	18:07	6:20	17:58	6:23	17:59	6:34	18:20
	6	७	शुक्र	6:36	आर्द्रा	21:32	परि.	29:30	ब	6:36	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न (चन्द्रोदय-व्यापिनी), अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत	6:32	18:06	6:21	17:57	6:23	17:58	6:34	18:19
	7	८	शनि	8:09	पुन.	23:57	शिव	30:02	कौ	8:09	क. 17:18	बुध हस्त में 14:33, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ-नवमी	6:32	18:04	6:21	17:56	6:24	17:57	6:35	18:18
	8	९	रवि	10:13	पुष्य	26:45	सिद्ध	--	ग	10:13	कर्क	भ. 23:25 से, दशमी का श्राद्ध	6:33	18:03	6:22	17:55	6:25	17:56	6:35	18:17
	9	१०	चन्द्र	12:37	आश्ले	29:45	सिद्ध	6:50	वि	12:37	सिं. 29:45	भ. 12:37 तक, एकादशी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 20) महालय श्राद्ध (देखें पृष्ठ 100)	6:34	18:02	6:22	17:54	6:25	17:55	6:35	18:16
	10	११	मंग	15:09	मघा	--	साध्य	7:46	बा	15:09	सिंह	इन्दिरा एकादशी व्रत, मघा श्राद्ध,	6:35	18:00	6:23	17:53	6:26	17:53	6:35	18:16
	11	१२	बुध	17:38	मघा	8:45	शुभ	8:42	तै	17:38	सिंह	सूर्य चित्रा में 7:59, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासिनां श्राद्ध	6:35	17:59	6:24	17:52	6:27	17:52	6:36	18:15
	12	१३	गुरु	19:54	पू.फा.	11:36	शुक्ल	9:30	ग	6:46	कं. 18:17	भ. 19:54 से, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध	6:36	17:58	6:24	17:51	6:27	17:51	6:36	18:14
	13	१४	शुक्र	21:51	उ.फा.	14:11	ब्रह्म	10:05	वि	8:53	कन्या	भ. 8:53 तक, मंगल स्वाती में 15:50, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु)(C)	6:37	17:57	6:25	17:50	6:28	17:50	6:36	18:13
	14	३०	शनि	23:25	हस्त	16:24	ऐन्द्र	10:24	च	10:38	तु. 29:21	आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, शनिवासरी अमावस, (D)	6:37	17:55	6:25	17:48	6:29	17:49	6:36	18:13
आश्विन शुक्ल पक्ष	15	१	रवि	24:33	चित्रा	18:12	वैधृ.	10:24	किं	11:59	तुला	शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन (10:24 बाद), मातामह (नाना/नानी)(E)	6:38	17:54	6:26	17:47	6:29	17:48	6:37	18:12
	16	२	चन्द्र	25:14	स्वा.	19:35	विष्क	10:03	बा	12:54	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. 15	6:39	17:53	6:26	17:46	6:30	17:47	6:37	18:11
	17	३	मंग	25:27	विशा	20:31	प्रीति	9:21	तै	13:21	वृ. 14:20	सूर्य तुला में 25:29, कार्तिक संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले दिन(F)	6:40	17:52	6:27	17:45	6:31	17:45	6:37	18:10
	18	४	बुध	25:13	अनु	21:01	आयु	8:18	व	13:20	वृश्चिक	भ. 13:20 से 25:13 तक, बुध तुला में 25:16, गण्डमूल 21:01 से	6:40	17:51	6:28	17:44	6:31	17:44	6:38	18:10
	19	५	गुरु	24:32	ज्ये.	21:04	सौभा, शोभ.	6 54, 29 8	ब	12:53	ध. 21:04	उपाङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल विचार	6:41	17:50	6:28	17:43	6:32	17:43	6:38	18:09
	20	६	शुक्र	23:25	मूल	20:41	अति	27:02	कौ	11:59	धनु	सरस्वती आवाहन मूलभे, गण्डमूल 20:41 तक	6:42	17:48	6:29	17:42	6:33	17:42	6:38	18:08
	21	७	शनि	21:54	पू.षा.	19:54	सुक	24:36	ग	10:40	म. 25:39	भ. 21:54 से, सरस्वती पूजन पू.षाभे, भद्रकाली अवतार	6:43	17:47	6:30	17:41	6:33	17:41	6:39	18:08
	22	८	रवि	20:00	उ.षा.	18:44	धृति	21:52	वि	8:57	मकर	भ. 8:57 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, बुध स्वाती में 24:39, सरस्वती(G)	6:43	17:46	6:30	17:40	6:34	17:40	6:39	18:07
	23	९	चन्द्र	17:45	श्रव.	17:14	शूल	18:52	बा	6:53	कुं. 28:23	पंचक प्रा. 28:23, महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान हेतु), (H)	6:44	17:45	6:31	17:40	6:35	17:39	6:39	18:06
	24	१०	मंग	15:15	धनि.	15:28	गण्ड	15:39	ग	15:15	कुम्भ	भ. 25:54 से, विजयादशमी (दशहरा), अपराजिता-पूजन, शमी पूजा,(I)	6:45	17:44	6:32	17:39	6:36	17:38	6:40	18:06
	25	११	बुध	12:33	शत.	13:30	वृद्धि	12:17	वि	12:33	मी. 29:58	भ. 12:33 तक पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत-मिलाप	6:46	17:43	6:32	17:38	6:36	17:37	6:40	18:05
	26	१२	गुरु	9:45	पू.भा.	11:27	ध्रुव, व्या.	8 50, 29 22	बा	9:45	मीन	प्रदोष व्रत,	6:47	17:42	6:33	17:37	6:37	17:36	6:40	18:05
	27	१३	शुक्र	6:57	उ.भा.	9:25	हर्ष	26:01	तै	6:57	मीन	भ. 28:18 से, वाराह चतुर्दशी, मेला शाकम्भरी देवी (देवबन), गण्डमूल 9:25 से	6:48	17:41	6:34	17:36	6:38	17:35	6:41	18:04
	०	१४	शुक्र	28:18	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० (देखें पृष्ठ 27,180)	--	--	--	--	--	--	--	--
	28	१५	शनि	25:54	रेव, अश्वि	7 31, 29 54	वज्र	22:52	वि	15:06	मे. 7:31	भ. 15:06 तक, पंचक समाप्त 7:31, आश्विन पूर्णिमा, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण(J)	6:48	17:40	6:34	17:35	6:39	17:34	6:41	18:03
का.कृ.	29	१	रवि	23:54	भर.	28:42	सिद्धि	20:01	बा	12:54	मेष	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, ग्रहणवेध दिन	6:49	17:39	6:35	17:34	6:39	17:33	6:42	18:03
	30	२	चन्द्र	22:24	कृति.	28:01	व्य.	17:33	तै	11:09	वृ. 10:28	बुध विशाखा में 30:26, शुक्र उ.फा. में 25:05, राहु रेव. 4 मीन, केतु चित्रा 2 कन्या में 17:43	6:50	17:38	6:36	17:33	6:40	17:33	6:42	18:02
	31	३	मंग	21:31	रोहि.	27:58	वरी	15:33	व	9:58	वृष	भ. 9:58 से 21:31 तक, वक्री गुरु भर. 1 में 21:21	6:51	17:37	6:36	17:33	6:41	17:32	6:42	18:02

(A) तृतीया का श्राद्ध, अक्तूबर–सन् 2023 ई. प्रारम्भ **(B)** जयन्ती, भरणी श्राद्ध, चतुर्थी का श्राद्ध, बुध पूर्व में अस्त 29:47 **(C)** से मृतों का श्राद्ध **(D)** चतुर्दशी/अमावस तिथि का श्राद्ध, पितृ–विसर्जन, श्राद्ध समाप्त, बुध चित्रा में 28:08 **(E)** का श्राद्ध, वक्री शनि धनि. 4 में 11:18, महाराजा अग्रसेन जयन्ती **(F)** प्रात: 7:53 तक, शुक्र पू.षा. में 15:24, आकाश दीपदान प्रारम्भ, श्रीदुर्गा पूजा प्रारम्भ, रवि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ **(G)** बलिदान उ.षाभे, **सरस्वती विसर्जन** (श्रवणभे) (देखें पृष्ठ 20) **(H) नवरात्र समाप्त**, सूर्य सायन वृश्चिक में 21:51, शक कार्तिक प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(I)** सूर्य स्वाती में 18:26, आयुध (शस्त्र) पूजा, सीमोल्लंघन, श्रीमाधवाचार्य जयंती **(J)** (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 27, 180), शरद् पूर्णिमा व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, कार्तिक स्नान–नियम प्रारम्भ, कोजागर व्रत, आकाश दीपदान शुरु

वि. संवत् 2080, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य-दक्षिणायन, हेमन्त-ऋतुः)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	४	बुध	21:20	मृग.	28:36	परि.	14:06	ब	9:26	मि. 16:12	**व्रत करवा–चौथ** (करक–चतुर्थी), चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12, **(A)**	6:52	17:36	6:37	17:32	6:42	17:31	6:43	18:01
	2	५	गुरु	21:53	आर्द्रा	29:57	शिव	13:13	कौ	9:37	मिथुन	**शुक्र कन्या में 29:12,**	6:53	17:35	6:38	17:31	6:42	17:30	6:43	18:01
	3	६	शुक्र	23:08	पुन.	––	सिद्ध	12:53	ग	10:31	क. 25:24	भ. 23:08 से, **स्कन्द षष्ठी व्रत,** स.सि.यो.	6:53	17:34	6:39	17:30	6:43	17:29	6:44	18:00
	4	७	शनि	25:00	पुन.	7:57	साध्य	13:02	वि	12:04	कर्क	भ. 12:04 तक, **शनि मार्गी 12:35**	6:54	17:34	6:39	17:30	6:44	17:28	6:44	18:00
	5	८	रवि	27:19	पुष्य	10:29	शुभ	13:36	बा	14:10	कर्क	**अहोई अष्टमी व्रत,** राधाष्टमी	6:55	17:33	6:40	17:29	6:45	17:28	6:45	17:59
	6	९	चन्द्र	29:51	आश्ले	13:23	शुक्ल	14:25	तै	16:35	सिं. 13:23	सूर्य विशाखा में 26:39, **बुध वृश्चिक में 16:25,** **दीपावली पर्व** (देखें पृ. 195)	6:56	17:32	6:41	17:28	6:46	17:27	6:45	17:59
	7	१०	मंग	––	मघा	16:24	ब्रह्म	15:20	व	19:08	सिंह	भ. 19:08 से,	6:57	17:31	6:42	17:28	6:46	17:26	6:46	17:59
	8	१०	बुध	8:24	पू.फा.	19:19	ऐन्द्र	16:10	वि	8:24	कं. 26:01	भ. 8:24 तक, बुध अनुराधा में 20:43	6:58	17:30	6:42	17:27	6:47	17:26	6:46	17:58
	9	११	गुरु	10:42	उ.फा.	21:57	वैधृ.	16:48	बा	10:42	कन्या	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी** (देखें पृष्ठ 20), कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	6:59	17:30	6:43	17:26	6:48	17:25	6:47	17:58
	10	१२	शुक्र	12:36	हस्त	24:08	विष्क	17:05	तै	12:36	कन्या	**प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी** (देखें पृष्ठ 20), **यम प्रीत्यर्थं दीपदान**	7:00	17:29	6:44	17:26	6:49	17:24	6:47	17:58
	11	१३	शनि	13:58	चित्रा	25:47	प्रीति	16:58	व	13:58	तु. 13:02	भ. 13:58 से 26:22 तक, **श्रीधनवन्तरी जयं., श्रीहनुमान–जयन्ती (B)**	7:01	17:28	6:45	17:25	6:50	17:24	6:48	17:57
	12	१४	रवि	14:45	स्वा.	26:51	आयु	16:24	स	14:45	तुला	नरक–चतुर्दशी (पूर्व–अरुणोदय वाली), तैलाभ्यंग, रूप चौदश, **दीपावली (C)**	7:01	17:28	6:45	17:25	6:51	17:23	6:48	17:57
	13	३०	चन्द्र	14:57	विशा.	27:23	सौभा	15:23	ना	14:57	वृ. 21:18	**कार्तिक–सोमवती अमावस** (देव–पितृकार्येषु अमावस), तीर्थस्नान माहात्म्य **(D)**	7:02	17:27	6:46	17:24	6:51	17:23	6:49	17:57
कार्तिक शुक्ल पक्ष	14	१	मंग	14:37	अनु.	27:24	शोभ	13:56	ब	14:37	वृश्चिक	**अन्नकूट–गोवर्धन पूजा,** गोक्रीडा, कार्तिक शुक्लपक्ष प्रा., नेहरू जयं (बाल–दिवस)	7:03	17:26	6:47	17:24	6:52	17:22	6:49	17:57
	15	२	बुध	13:48	ज्ये.	27:01	अति	12:07	कौ	13:48	ध. 27:01	**चन्द्रदर्शन,** मु. 15, **भ्रातृ (भाई) दूज** (देखें पृ. 21), **यम द्वितीया,** यमुना–स्नान, **(E)**	7:04	17:26	6:48	17:23	6:53	17:21	6:50	17:56
	16	३	गुरु	12:35	मूल	26:17	सुक	9:59	ग	12:35	धनु	भ. 23:50 से, **सूर्य वृश्चिक में 25:18, मार्गशीर्ष संक्रांति,** मु. 30, **(F)**	7:05	17:25	6:49	17:23	6:54	17:21	6:50	17:56
	17	४	शुक्र	11:04	पू.षा.	25:17	धृति / शूल	7:36 / 29:1	वि	11:04	धनु	भ. 11:04 तक, बुध ज्येष्ठा में 18:52	7:06	17:25	6:49	17:22	6:55	17:21	6:51	17:56
	18	५	शनि	9:19	उ.षा.	24:07	गण्ड	26:17	बा	9:19	म. 7:01	सौभाग्य–पंचमी, जया–पंचमी, ज्ञान–पंचमी (जैन),	7:07	17:24	6:50	17:22	6:56	17:20	6:52	17:56
	19	६	रवि	7:24	श्रव.	22:49	वृद्धि	23:28	तै	7:24	मकर	भ. 29:22 से, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**	7:08	17:24	6:51	17:22	6:57	17:20	6:52	17:56
	०	७	रवि	29:22	००	००	००	००	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	20	८	चन्द्र	27:17	धनि.	21:26	ध्रुव	20:35	वि	16:20	कुं. 10:08	भ. 16:20 तक, **पंचक प्रारम्भ 10:08, गोपाष्टमी,** सूर्य अनु. में 8:37, **(G)**	7:09	17:23	6:52	17:21	6:57	17:19	6:53	17:56
	21	९	मंग	25:10	शत.	20:01	व्या.	17:40	बा	14:14	कुम्भ	**अक्षय–कूष्माण्ड नवमी,** आरोग्य व्रत, आमला–नवमी, जगधातृ पूजा	7:10	17:23	6:53	17:21	6:58	17:19	6:53	17:56
	22	१०	बुध	23:05	पू.भा.	18:37	हर्ष	14:46	तै	12:08	मी. 12:58	सूर्य सायन धनु में 19:33, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	7:10	17:22	6:53	17:21	6:59	17:19	6:54	17:55
	23	११	गुरु	21:03	उ.भा.	17:16	वज्र	11:53	व	10:04	मीन	भ. 10:04 से 21:03 तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह, (H)**	7:11	17:22	6:54	17:21	7:00	17:18	6:54	17:55
	24	१२	शुक्र	19:07	रेव.	16:01	सिद्धि / व्य.	9:5 / 30:23	व	8:05	मे. 16:01	**पंचक समाप्त 16:01,** शनि शत. 1 में 8:54,	7:12	17:22	6:55	17:20	7:01	17:18	6:55	17:55
	25	१३	शनि	17:23	अश्वि	14:56	वरी	27:53	तै	17:23	मेष	**शनि प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी** (देखें पृष्ठ 21), गण्डमूल 14:56 तक	7:13	17:22	6:56	17:20	7:02	17:18	6:56	17:55
	26	१४	रवि	15:54	भर.	14:06	परि.	25:36	व	15:54	वृ. 19:56	भ. 15:54 से 27:20 तक, त्रिपुरोत्सव, **श्रीसत्यनारायण व्रत, बुध मूल 1 (I)**	7:14	17:21	6:57	17:20	7:02	17:18	6:56	17:55
	27	१५	चन्द्र	14:46	कृति.	13:36	शिव	23:38	ब	14:46	वृष	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयं., कार्तिकस्नान समाप्त, (J)**	7:15	17:21	6:57	17:20	7:03	17:17	6:57	17:55
मार्ग. कृ.	28	१	मंग	14:06	रोहि.	13:32	सिद्ध	22:03	कौ	14:06	मि. 25:41	**मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,** मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	7:16	17:21	6:58	17:20	7:04	17:17	6:58	17:56
	29	२	बुध	13:57	मृग.	13:59	साध्य	20:55	ग	13:57	मिथुन	भ. 26:11 से, **शुक्र तुला में 25:04,** सौभाग्य–सुन्दरी व्रत	7:17	17:21	6:59	17:20	7:05	17:17	6:58	17:56
	30	३	गुरु	14:26	आर्द्रा	15:02	शुभ	20:14	वि	14:26	मिथुन	भ. 14:26 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12),	7:18	17:20	7:00	17:20	7:06	17:17	6:59	17:56

(A) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मंगल विशाखा में 27:18, दशरथ चतुर्थी **(B)** (उ. भारत) (अर्द्धरात्रि व्या.), यमाय तर्पण, बुध पश्चिम में उदय 17:27, मासशिवरात्रि व्रत **(C) श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृष्ठ 195), कुबेर पूजा, सायं दीपदान देवालये, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, शुक्र हस्त में 10:37 **(D)** मेला हरिद्वार–प्रयागराजादि, **विश्वकर्मा दिवस (पंजाब),** श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) **(E)** कलम–दवात पूजन, **विश्वकर्मा पूजन,** गण्डमूल विचार **(F)** पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, **मंगल वृश्चिक में 10:46,** दूर्वा गणपति व्रत, आकाशदीपदान समाप्ति, जमादिउल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ **(G)** मंगल अनु. में 27:58, पुष्कर मेला प्रारम्भ (राज.) **(H) भीष्मपंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रत**–नियम समाप्त, शुक्र चित्रा में 30:32 **(I) धनु में 29:53,** वक्री गुरु अश्वि. 4 में 27:1 **(J) भीष्मपंचक समाप्त,** मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान), मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब), महाकार्तिकी

वि. संवत् 2080, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2023 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य दक्षिण-उत्तरायणे हेमन्त-शिशिर ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	४	शुक्र	15:32	पुन.	16:41	शुक्ल	20:03	बा	15:32	क. 10:12	दिसम्बर मास (सन् 2023 ई.) प्रारम्भ	7:18	17:20	7:00	17:20	7:07	17:17	6:59	17:56
	2	५	शनि	17:15	पुष्य	18:54	ब्रह्म	20:19	तै	17:15	कर्क	गण्डमूल 18:54 बाद,	7:19	17:20	7:01	17:20	7:07	17:17	7:00	17:56
	3	६	रवि	19:28	आश्ले	21:36	ऐन्द्र	20:56	व	19:28	सिं. 21:36	भ. 19:28 से, सूर्य ज्येष्ठा में 13:01, गण्डमूल विचार	7:20	17:20	7:02	17:20	7:08	17:17	7:01	17:56
	4	७	चन्द्र	22:00	मघा	24:35	वैधृ.	21:47	वि	8:44	सिंह	भ. 8:44 तक, गण्डमूल 24:35 तक	7:21	17:20	7:03	17:20	7:09	17:17	7:01	17:56
	5	८	मंग	24:38	पू.फा.	27:38	विष्क	22:42	बा	11:19	सिंह	श्रीकालभैरवाष्टमी, भैरव-जयन्ती, शुक्र स्वाती में 17:48	7:22	17:20	7:03	17:20	7:10	17:17	7:02	17:57
	6	९	बुध	27:05	उ.फा.	30:29	प्रीति	23:29	तै	13:52	कं. 10:22		7:23	17:20	7:04	17:20	7:11	17:17	7:02	17:57
	7	१०	गुरु	29:07	हस्त	— —	आयु	24:00	व	16:06	कन्या	भ. 16:06 से 29:07 तक,	7:23	17:20	7:05	17:20	7:11	17:17	7:03	17:57
	8	११	शुक्र	30:32	हस्त	8:54	सौभा	24:04	ब	17:50	तु. 21:53	उत्पन्ना एकादशी व्रत	7:24	17:20	7:06	17:20	7:12	17:17	7:04	17:57
	9	१२	शनि	31:14	चित्रा	10:43	शोभ	23:37	कौ	18:53	तुला	मंगल ज्येष्ठा में 18:44, बुध पू.षा. में 25:45	7:25	17:21	7:06	17:20	7:13	17:18	7:04	17:58
	10	१३	रवि	31:11	स्वा.	11:50	अति	22:34	ग	19:13	वृ. 30:12	भ. 31:11 से, प्रदोष व्रत	7:26	17:21	7:07	17:21	7:13	17:18	7:05	17:58
	11	१४	चन्द्र	30:25	विशा.	12:14	सुक	20:58	वि	18:48	वृश्चिक	भ. 18:48 तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयं., मेला पुरमण्डल (जम्मू) (A)	7:26	17:21	7:08	17:21	7:14	17:18	7:06	17:58
	12	३०	मंग	29:02	अनु.	11:57	धृति	18:51	च	17:44	वृश्चिक	मार्गशीर्ष अमावस, भौमवती अमावस, गण्डमूल 11:57 बाद	7:27	17:21	7:08	17:21	7:15	17:18	7:06	17:59
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	13	१	बुध	27:10	ज्ये.	11:05	शूल	16:18	किं	16:06	ध. 11:05	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 12:38, गण्डमूल विचार	7:28	17:21	7:09	17:21	7:16	17:19	7:07	17:59
	14	२	गुरु	24:57	मूल	9:47	गण्ड	13:24	बा	14:04	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. 30, गण्डमूल 9:47 तक	7:28	17:22	7:10	17:22	7:16	17:19	7:07	17:59
	15	३	शुक्र	22:31	पूषा. उषा.	8 11 30 25	वृद्धि ध्रुव	10 17 31 3	तै	11:44	म. 13:45	जमादि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ	7:29	17:22	7:10	17:22	7:17	17:19	7:08	18:00
	16	४	शनि	20:01	श्रव.	28:37	व्या.	27:47	व	9:16	मकर	भ. 9:16 से 20:01 तक, सूर्य मूल 1 धनु में 15:57, पौष संक्रान्ति, (B)	7:30	17:22	7:11	17:22	7:17	17:20	7:08	18:00
	17	५	रवि	17:34	धनि.	26:55	हर्ष	24:35	बा	17:34	कुं. 15:45	पंचक प्रा. 15:45, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 17:23, श्रीपञ्चमी, (C)	7:30	17:23	7:12	17:23	7:18	17:20	7:09	18:01
	18	६	चन्द्र	15:15	शत.	25:22	वज्र	21:32	तै	15:15	कुम्भ	स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र),	7:31	17:23	7:12	17:23	7:19	17:20	7:09	18:01
	19	७	मंग	13:07	पू.भा.	24:02	सिद्धि	18:38	व	13:07	मी. 18:21	भ. 13:07 से 24:11 तक, मित्र (विष्णु) सप्तमी (देखें पृष्ठ 21)	7:32	17:23	7:13	17:24	7:19	17:21	7:10	18:01
	20	८	बुध	11:15	उ.भा.	22:58	व्य.	15:56	ब	11:15	मीन	श्रीदुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, गण्डमूल 22:58 से,	7:32	17:24	7:13	17:24	7:20	17:21	7:11	18:02
	21	९	गुरु	9:38	रेव.	22:09	वरी	13:27	कौ	9:38	मे. 22:09	पंचक समाप्त 22:09, नन्दा नवमी, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.	7:33	17:24	7:14	17:25	7:20	17:22	7:11	18:02
	22	१०	शुक्र	8:17	अश्वि	21:36	परि	11:11	ग	8:17	मेष	भ. 19:45 से 31:12 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (देखें पृष्ठ 21) (D)	7:33	17:25	7:14	17:25	7:21	17:22	7:12	18:03
	०	११	शुक्र	31:12	००	००	००	००	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	23	१२	शनि	30:25	भर.	21:19	शिव सिद्ध	9 7 31 17	ब	18:49	वृ. 27:17	मोक्षदा एकादशी व्रत (वैष्णव) (देखें पृष्ठ 21), अखण्ड द्वादशी	7:34	17:25	7:15	17:26	7:21	17:23	7:12	18:03
	24	१३	रवि	29:56	कृति.	21:19	साध्य	29:42	कौ	18:11	वृष	प्रदोष व्रत, शुक्र वृश्चिक में 30:45	7:34	17:26	7:15	17:26	7:22	17:23	7:12	18:04
	25	१४	चन्द्र	29:47	रोहि.	21:39	शुभ	28:22	ग	17:52	वृष	भ. 29:47 से, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन)	7:34	17:26	7:16	17:27	7:22	17:24	7:13	18:05
	26	१५	मंग	30:03	मृग.	22:21	शुक्ल	27:21	वि	17:55	मि. 9:57	भ. 17:55 तक, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्रीदत्तात्रेय जयं., श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)	7:35	17:27	7:16	17:27	7:22	17:24	7:13	18:05
पौष कृष्ण	27	१	बुध	30:47	आर्द्रा	23:29	ब्रह्म	26:41	बा	18:25	मिथुन	मंगल मूल 1 धनु में 24:21, शुक्र अनु. में 24:53, पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ	7:35	17:28	7:16	17:28	7:23	17:25	7:14	18:06
	28	२	गुरु	— —	पुन.	25:05	ऐन्द्र	26:23	तै	19:24	क. 18:38	वक्री बुध ज्येष्ठा 4 वृश्चिक में 11:22, वक्री बुध पूर्व में उदय 17:31 (F)	7:36	17:28	7:17	17:29	7:23	17:26	7:14	18:06
	29	२	शुक्र	8:00	पुष्य	27:10	वैधृ.	26:29	ग	8:00	कर्क	भ. 20:52 से, सूर्य पू.षा. में 18:14, गण्डमूल 27:10 से	7:36	17:29	7:17	17:29	7:24	17:26	7:15	18:07
	30	३	शनि	9:44	आश्ले	29:42	विष्क	26:56	वि	9:44	सिं. 29:42	भ. 9:44 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), गण्डमूल विचार	7:36	17:30	7:17	17:30	7:24	17:27	7:15	18:07
	31	४	रवि	11:56	मघा	— —	प्रीति	27:40	बा	11:56	सिंह	गुरु मार्गी 8:12, गण्डमूल विचार	7:37	17:30	7:18	17:31	7:24	17:28	7:15	18:08

(A) देविका–स्नान (ऊधमपुर, जम्मू–काश्मीर), (B) पुण्यकाल सं. प्रातः 9:33 बाद, वक्री बुध मूल 4 में 17:02, शुक्र विशाखा में 23:14 (C) श्रीराम–विवाहोत्सव, नाग-पंचमी (D) श्रीगीता जयन्ती, सूर्य सायन मकर में 8:57, शरद् ऋतु प्रारम्भ, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 21:36 तक (E) त्रिपुरभैरव–जयन्ती (F) स.सि.यो.

वि. संवत् 2080, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	सूर्योत्तरायण — भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौष कृष्ण पक्ष	1	५	चन्द्र	14:29	मघा	8:36	आयु	28:35	तै	14:29	सिंह	जनवरी मास–सन् 2024 ई. प्रा., राहु रेव. 3, केतु चित्रा 1 में 15:12, गं.मू. 8:36 तक	7:37	17:31	7:18	17:31	7:24	17:28	7:16	18:09
	2	६	मंग	17:11	पू.फा.	11:42	सौभा	29:33	व	17:11	कं. 18:29	भ. 17:11 से 30:30 तक, बुध मार्गी 8:38	7:37	17:32	7:18	17:32	7:25	17:29	7:16	18:09
	3	७	बुध	19:49	उ.फा.	14:46	शोभ	30:21	ब	19:49	कन्या		7:37	17:33	7:18	17:32	7:25	17:30	7:16	18:10
	4	८	गुरु	22:05	हस्त	17:34	अति	30:49	बा	8:57	तु. 30:46	रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	7:37	17:33	7:18	17:33	7:25	17:31	7:17	18:10
	5	९	शुक्र	23:47	चित्रा	19:50	सुक	30:47	तै	10:56	तुला		7:38	17:34	7:19	17:34	7:25	17:31	7:17	18:11
	6	१०	शनि	24:42	स्वा.	21:23	धृति	30:10	व	12:15	तुला	भ. 12:15 से 24:42 तक,	7:38	17:34	7:19	17:35	7:25	17:32	7:17	18:12
	7	११	रवि	24:47	विशा.	22:08	शूल	28:53	ब	12:45	वृ. 16:02	सफला एकादशी व्रत, बुध मूल 1 धनु में 20:52, शुक्र ज्ये. में 23:48	7:38	17:36	7:19	17:35	7:25	17:33	7:17	18:12
	8	१२	चन्द्र	23:59	अनु.	22:03	गण्ड	26:56	कौ	12:23	वृश्चिक	गण्डमूल 22:03 से,	7:38	17:37	7:19	17:36	7:25	17:34	7:18	18:13
	9	१३	मंग	22:25	ज्ये.	21:11	वृद्धि	24:22	ग	11:12	ध. 21:11	भ. 22:25 से, भौम प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल विचार	7:38	17:37	7:19	17:37	7:25	17:35	7:18	18:14
	10	१४	बुध	20:11	मूल	19:40	ध्रुव	21:17	वि	9:18	धनु	भ. 9:18 तक, गण्डमूल 19:40 तक	7:38	17:38	7:19	17:38	7:25	17:35	7:18	18:14
	11	३०	गुरु	17:27	पू.षा.	17:39	व्या.	17:49	ना	17:27	म. 23:05	पौष–अमावस, सूर्य उ.षा. में 20:13, शनि शत. (2) में 7:37	7:38	17:39	7:19	17:38	7:25	17:36	7:18	18:15
पौष शुक्ल पक्ष	12	१	शुक्र	14:24	उ.षा.	15:18	हर्ष	14:05	ब	14:24	मकर	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, आरोग्य व्रत	7:38	17:40	7:19	17:39	7:25	17:37	7:18	18:15
	13	२	शनि	11:12	श्रव.	12:50	वज्र सिद्धि	10 13 / 30 23	कौ	11:12	कुं. 23:35	पंचक प्रारम्भ 23:35, लोहड़ी पर्व (पंजाब), रज्जब (मु.) मास प्रारम्भ	7:38	17:41	7:19	17:40	7:25	17:38	7:18	18:16
	14	३	रवि	8:00	धनि.	10:23	व्य.	26:40	ग	8:00	कुम्भ	भ. 18:30 से 29:00 तक, सूर्य मकर में 26:43, मकर (माघ) संक्रान्ति(A)	7:37	17:42	7:19	17:41	7:25	17:39	7:19	18:17
	०	४	रवि	29:00	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	15	५	चन्द्र	26:17	शत. पू.भा.	8 7 / 30 10	वरी	23:11	ब	15:39	मी. 24:37		7:37	17:43	7:19	17:42	7:25	17:40	7:19	18:17
	16	६	मंग	23:58	उ.भा.	28:38	परि	20:01	कौ	13:08	मीन	मंगल पूर्व में उदय 28:17, गण्डमूल 28:38 से	7:37	17:44	7:19	17:43	7:25	17:40	7:19	18:18
	17	७	बुध	22:07	रेव.	27:34	शिव	17:13	ग	11:03	मे. 27:34	भ. 22:07 से, पंचक समाप्त 27:34, मार्तण्ड सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयंती	7:37	17:44	7:19	17:43	7:25	17:41	7:19	18:19
	18	८	गुरु	20:45	अश्वि	26:58	सिद्ध	14:48	वि	9:26	मेष	भ. 9:26 तक, शुक्र मूल 1 धनु में 20:56, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत (B)	7:37	17:45	7:19	17:44	7:24	17:42	7:19	18:19
	19	९	शुक्र	19:52	भर.	26:51	साध्य	12:46	बा	8:19	मेष		7:36	17:46	7:18	17:45	7:24	17:43	7:19	18:20
	20	१०	शनि	19:27	कृति.	27:09	शुभ	11:06	तै	7:35	वृ. 8:53	भ. 31:28 से, बुध पू.षा. में 15:37, सूर्य सायन कुम्भ में 19:37	7:36	17:47	7:18	17:46	7:24	17:44	7:19	18:21
	21	११	रवि	19:28	रोहि.	27:52	शुक्ल	9:47	वि	19:28	वृष	भ. 19:28 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, शक माघ प्रारम्भ	7:36	17:48	7:18	17:47	7:24	17:45	7:19	18:21
	22	१२	चन्द्र	19:52	मृग.	28:59	ब्रह्म	8:46	ब	7:40	मि. 16:23	सुजन्म द्वादशी	7:35	17:49	7:18	17:48	7:23	17:46	7:19	18:22
	23	१३	मंग	20:40	आर्द्रा	30:27	ऐन्द्र	8:04	कौ	8:16	मिथुन	भौम प्रदोष व्रत, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, ईशान व्रत	7:35	17:50	7:17	17:48	7:23	17:47	7:19	18:23
	24	१४	बुध	21:51	पुन.	--	वैधृ.	7:39	ग	9:16	क. 25:47	भ. 21:51 से, सूर्य श्रवण में 22:30	7:34	17:51	7:17	17:49	7:23	17:48	7:18	18:23
	25	१५	गुरु	23:24	पुन.	8:17	विष्क	7:32	वि	10:38	कर्क	भ. 10:38 तक, पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रा., श्रीसत्यनारायण व्रत, (C)	7:34	17:52	7:17	17:50	7:22	17:48	7:18	18:24
माघ कृष्ण पक्ष	26	१	शुक्र	25:20	पुष्य	10:28	प्रीति	7:42	बा	12:22	कर्क	भारत गणतन्त्र दिवस (75वाँ), माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 10:28 से	7:33	17:53	7:16	17:51	7:22	17:49	7:18	18:24
	27	२	शनि	27:37	आश्ले	13:01	आयु	8:08	तै	14:29	सिं. 13:01	गण्डमूल विचार	7:33	17:54	7:16	17:52	7:21	17:50	7:18	18:25
	28	३	रवि	30:11	मघा	15:53	सौभा	8:50	व	16:54	सिंह	भ. 16:54 से 30:11 तक, गण्डमूल 15:53 तक	7:32	17:55	7:16	17:53	7:21	17:51	7:18	18:26
	29	४	चन्द्र	--	पू.फा.	18:57	शोभ	9:43	व	19:33	कं. 25:45	श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12), गौरी–वक्रतुण्ड चतुर्थी, (D)	7:32	17:56	7:15	17:53	7:20	17:52	7:18	18:26
	30	४	मंग	8:55	उ.फा.	22:06	अति	10:43	बा	8:55	कन्या	बुध उ.षा. में 7:57	7:31	17:57	7:15	17:54	7:20	17:53	7:17	18:27
	31	५	बुध	11:37	हस्त	25:08	सुक	11:41	तै	11:37	कन्या		7:31	17:58	7:14	17:55	7:19	17:54	7:17	18:27

(A) मु. 15, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 9:07 तक, मंगल पू.षा. में 21:56, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, (B) गण्डमूल 26:58 तक (C) शाकम्भरी जयन्ती (D) शुक्र पू.षा. में 16:57

वि. संवत् 2080, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण शिशिर-वसन्त-ऋतु	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
माघ कृष्ण पक्ष	1	६	गुरु	14:04	चित्रा	27:49	धृति	12:28	व	14:04	तु. 14:32	भ. 14:04 से 27:04 तक, मंगल उ.षा. में 12:53, **बुध मकर में 14:22,(A)**	7:30	17:59	7:14	17:56	7:19	17:55	7:17	18:28
	2	७	शुक्र	16:03	स्वा.	29:57	शूल	12:54	ब	16:03	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार)	7:29	18:00	7:13	17:57	7:18	17:56	7:17	18:28
	3	८	शनि	17:21	विशा	31:21	गण्ड	12:51	कौ	17:21	वृ. 25:04	गुरु भर. (1) में 12:48,	7:29	18:00	7:13	17:57	7:17	17:56	7:16	18:29
	4	९	रवि	17:50	अनु.	--	वृद्धि	12:12	ग	17:50	वृश्चिक	भ. 29:38 से,	7:28	18:01	7:12	17:58	7:17	17:57	7:16	18:29
	5	१०	चन्द्र	17:25	अनु.	7:54	ध्रुव	10:52	वि	17:25	वृश्चिक	भ. 17:25 तक, **मंगल मकर में 21:42**	7:27	18:02	7:11	17:59	7:16	17:58	7:16	18:30
	6	११	मंग	16:08	ज्ये. मूल	7:35 30:27	व्या. हर्ष	8:50 30:9	बा	16:08	ध. 7:35	**षट्तिला एकादशी व्रत, सूर्य धनि. में 25:43**	7:26	18:03	7:11	18:00	7:15	17:59	7:15	18:30
	7	१२	बुध	14:02	पू.षा.	28:37	वज्र	26:53	तै	14:02	धनु	**प्रदोष व्रत, बुध श्रवण में 27:27,**	7:26	18:04	7:10	18:01	7:15	18:00	7:15	18:31
	8	१३	गुरु	11:18	उ.षा.	26:14	सिद्धि	23:09	व	11:18	म. 10:04	भ. 11:18 से 21:41 तक, मेरू त्रयोदशी (जैन), मासशिवरात्रि व्रत	7:25	18:05	7:09	18:01	7:14	18:01	7:14	18:32
	9	१४	शुक्र	8:03	श्रव.	23:29	व्य.	19:07	श	8:03	मकर	**माघ (मौनी) अमावस (8:03 बाद), महोदय योग (B)**	7:24	18:06	7:09	18:02	7:13	18:02	7:14	18:32
	०	३०	शुक्र	28:29	००	००	००	००	०	०	००	**अमावस तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
माघ शुक्ल पक्ष	10	१	शनि	24:48	धनि	20:34	वरी	14:53	किं	14:39	कुं. 10:02	**पंचक प्रा.** 10:02, बुध पूर्व में अस्त 7:18, शनि शत. (3) में 12:28, **(C)**	7:23	18:07	7:08	18:03	7:12	18:02	7:13	18:32
	11	२	रवि	21:10	शत.	17:40	परि शिव	10:38 30:30	बा	10:58	कुम्भ	**चन्द्रदर्शन**, मु. 30, **शुक्र मकर में 28:52**, बाबा श्रीलाल दयाल जयंती **(D)**	7:22	18:08	7:07	18:04	7:11	18:03	7:13	18:33
	12	३	चन्द्र	17:45	पू.भा.	14:57	सिद्ध	26:37	तै	7:28	मी. 9:36	भ. 28:14 से, **गौरी तृतीया व्रत (गोंतरी), श्रीगणेश तिल चतुर्थी (देखें पृष्ठ 21), (E)**	7:21	18:09	7:06	18:05	7:11	18:04	7:13	18:33
	13	४	मंग	14:43	उ.भा.	12:36	साध्य	23:05	वि	14:43	मीन	भ. 14:43 तक, **सूर्य कुम्भ में 15:43, फाल्गुन संक्रांति**, मु. 30, **(F)**	7:20	18:10	7:06	18:05	7:10	18:05	7:12	18:34
	14	५	बुध	12:10	रेव.	10:43	शुभ	19:59	बा	12:10	मे. 10:43	**पंचक समाप्त 10:43, वसन्त-पञ्चमी**, लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन, वागेश्वरी जयं.	7:19	18:11	7:05	18:06	7:09	18:06	7:12	18:34
	15	६	गुरु	10:13	अश्वि.	9:26	शुक्ल	17:22	तै	10:13	मेष		7:19	18:11	7:04	18:07	7:08	18:07	7:11	18:35
	16	७	शुक्र	8:55	भर.	8:47	ब्रह्म	15:17	व	8:55	वृ. 14:43	भ. 8:55 से 20:36 तक, **रथ-आरोग्य सप्तमी**, पुत्र सप्तमी व्रत, **(G)**	7:18	18:12	7:03	18:08	7:07	18:07	7:10	18:35
	17	८	शनि	8:17	कृति.	8:46	ऐन्द्र	13:43	ब	8:17	वृष		7:17	18:13	7:02	18:08	7:06	18:08	7:10	18:36
	18	९	रवि	8:16	रोहि.	9:23	वैधृ.	12:39	कौ	8:16	मि. 21:54	मंगल श्रवण में 22:24, **गुप्त नवरात्र समाप्त**	7:16	18:14	7:02	18:09	7:05	18:09	7:09	18:36
	19	१०	चन्द्र	8:51	मृग.	10:33	विष्क	12:01	ग	8:51	मिथुन	भ. 22:28 से, सूर्य शत. में 30:10, **बुध कुम्भ में 30:01**, सूर्य सायन मीन **(H)**	7:15	18:15	7:01	18:10	7:04	18:10	7:09	18:37
	20	११	मंग	9:56	आर्द्रा	12:13	प्रीति	11:46	वि	9:56	मिथुन	भ. 9:56 तक, **जया एकादशी व्रत, भीष्म-द्वादशी (देखें पृष्ठ 21), शुक्र श्रवण में 6:56,(I)**	7:13	18:16	7:00	18:10	7:03	18:10	7:08	18:37
	21	१२	बुध	11:28	पुन.	14:18	आयु	11:51	बा	11:28	क. 7:44	**प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी**	7:12	18:17	6:59	18:11	7:02	18:11	7:08	18:37
	22	१३	गुरु	13:22	पुष्य	16:43	सौभा	12:12	तै	13:22	कर्क	मेला जैसलमेर (राजस्थान) शुरु, **गुरु पुष्य योग**, गण्डमूल 16:43 से	7:11	18:17	6:58	18:12	7:02	18:12	7:07	18:38
	23	१४	शुक्र	15:34	आश्ले	19:26	शोभ	12:48	व	15:34	सिं. 19:26	भ. 15:34 से 28:47 तक, बुध शत. में 24:27, श्रीसत्यनारायण व्रत,	7:10	18:18	6:57	18:12	7:01	18:12	7:06	18:38
	24	१५	शनि	18:00	मघा	22:21	अति	13:34	ब	18:00	सिंह	**माघ-पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयंती, श्रीललिता जयं.**	7:09	18:19	6:56	18:13	7:00	18:13	7:06	18:38
फाल्गुन कृष्ण	25	१	रवि	20:36	पू.फा.	25:24	सुक	14:28	बा	7:18	सिंह	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ	7:08	18:20	6:55	18:14	6:59	18:14	7:05	18:39
	26	२	चन्द्र	23:17	उ.फा.	28:31	धृति	15:27	तै	9:57	कं. 8:11		7:07	18:21	6:54	18:15	6:57	18:15	7:04	18:39
	27	३	मंग	25:54	हस्त	--	शूल	16:25	व	12:36	कन्या	भ. 12:36 से 25:54 तक, गुरु भर. (2) में 12:32	7:06	18:22	6:53	18:15	6:56	18:16	7:04	18:40
	28	४	बुध	28:19	हस्त	7:33	गण्ड	17:17	ब	15:07	तु. 21:00	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12)**	7:05	18:22	6:52	18:16	6:55	18:16	7:03	18:40
	29	५	गुरु	30:23	चित्रा	10:22	वृद्धि	17:56	कौ	17:21	तुला		7:03	18:23	6:51	18:17	6:54	18:17	7:03	18:40

(A) फरवरी मास-सन् 2024 ई. प्रारम्भ **(B)** तीर्थस्नान माहात्म्य, शुक्र उ.षा. में 12:09 **(C)** गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ **(D)** (ध्यानपुर, पंजाब), शनि पश्चिम में अस्त 29:16 **(E)** वरद्–कुन्द चतुर्थी, शब्बान (मु.) मास प्रारम्भ **(F)** पुण्यकाल सं. प्रातः 9:19 बाद, गण्डमूल 12:36 बाद, वरद्–चतुर्थी, श्रीगणेश पूजा **(G)** श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, भानु सप्तमी, बुध धनि. में 8:27, भीष्माष्टमी (देखें पृष्ठ 21) **(H)** में 9:43, वसन्त ऋतु प्रारम्भ **(I)** शक फाल्गुन प्रारम्भ

वि. संवत् 2080, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण / वसन्त–ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	६	शुक्र	--	स्वा.	12:49	ध्रुव	18:15	ग	19:09	तुला	बुध पू.भा. में 29:07, शुक्र धनि. में 25:32, मार्च-मास-सन् 2024 ई.प्रा.	7:02	18:24	6:50	18:17	6:54	18:17	7:02	18:40
	2	६	शनि	7:54	विशा	14:42	व्या.	18:06	व	7:54	वृ. 8:17	भ. 7:54 से 20:20 तक,	7:01	18:25	6:49	18:18	6:53	18:18	7:01	18:41
	3	७	रवि	8:45	अनु	15:55	हर्ष	17:24	ब	8:45	वृश्चिक	श्रीनाथ-उत्सव,	7:00	18:26	6:48	18:18	6:51	18:19	7:01	18:41
	4	८	चन्द्र	8:50	ज्ये.	16:21	वज्र	16:06	कौ	8:50	ध. 16:21	सूर्य पू.भा. में 12:33, राहु रेव. 2 केतु हस्त 4 में 12:23, जानकी व्रत	6:59	18:26	6:47	18:19	6:50	18:19	7:00	18:41
	5	९	मंग	8:04	मूल	16:00	सिद्धि	14:08	ग	8:04	धनु	भ. 19:18 से 30:31 तक,	6:57	18:27	6:46	18:20	6:49	18:20	6:59	18:41
	०	१०	मंग	30:31	००	००	००	००	०	०	००	दशमी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	6	११	बुध	28:14	पू.षा.	14:52	व्या. / वरी / परि	11:33 / 8 24 / 28 46	ब	17:23	म. 20:28	विजया एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (देखें पृष्ठ 22), मंगल धनि. में 28:11	6:56	18:28	6:45	18:20	6:48	18:21	6:58	18:42
	7	१२	गुरु	25:20	उ.षा.	13:03			कौ	14:47	मकर	विजया एकादशी व्रत (वैष्णव), बुध मीन में 9:35, शुक्र कुम्भ में 10:46	6:55	18:29	6:44	18:21	6:47	18:21	6:58	18:42
	8	१३	शुक्र	21:58	श्रव.	10:41	शिव	24:46	ग	11:39	कु. 21:20	भ. 21:58 से, पंचक प्रा. 21:20, प्रदोष व्रत, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (A)	6:54	18:29	6:42	18:22	6:46	18:22	6:57	18:42
	9	१४	शनि	18:18	धनि. / शत.	7 55 / 28 56	सिद्ध	20:32	वि	8:08	कुम्भ	भ. 8:08 तक,	6:52	18:30	6:41	18:22	6:44	18:23	6:56	18:43
	10	३०	रवि	14:30	पू.भा.	25:55	साध्य	16:13	ना	14:30	मी. 20:40	फाल्गुन अमावस (स्नानदानादि)	6:51	18:31	6:40	18:23	6:43	18:23	6:55	18:43
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	11	१	चन्द्र	10:46	उ.भा.	23:03	शुभ	11:58	ब	10:46	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. 45, फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	6:50	18:32	6:39	18:23	6:42	18:24	6:54	18:43
	12	२	मंग	7:14	रेव.	20:30	शुक्ल / ब्रह्म	7 53 / 28 8	कौ	7:14	मे. 20:30	पंचक समाप्त 20:30, शुक्र शत. में 20:00, फुलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.),(B)	6:49	18:32	6:38	18:24	6:41	18:25	6:54	18:43
	०	३	मंग	28:04	००	००	००	००	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	13	४	बुध	25:26	अश्वि	18:25	ऐन्द्र	24:48	व	14:45	मेष	भ. 14:45 से 25:26 तक, बुध पश्चिम में उदय 18:30, अविघ्नकर व्रत	6:47	18:33	6:37	18:24	6:38	18:26	6:52	18:44
	14	५	गुरु	23:27	भर.	16:56	वैधृ.	22:00	ब	12:27	वृ. 22:40	सूर्य मीन में 12:36, चैत्र संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. सूर्योदय बाद (C)	6:46	18:34	6:36	18:25	6:37	18:27	6:51	18:44
	15	६	शुक्र	22:10	कृति.	16:08	विष्क	19:45	कौ	10:49	वृष	मंगल कुम्भ में 18:08, बुध रेवती में 30:19	6:45	18:35	6:34	18:26	6:36	18:27	6:50	18:45
	16	७	शनि	21:39	रोहि.	16:06	प्रीति	18:08	ग	9:55	मि. 28:21	भ. 21:39 से, गुरु भर. (3) में 20:58, शनि पूर्व में उदय 28:40	6:43	18:35	6:33	18:27	6:35	18:28	6:50	18:45
	17	८	रवि	21:54	मृग.	16:47	आयु	17:05	वि	9:47	मिथुन	भ. 9:47 तक, सूर्य उ.भा. में 20:54, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा-अष्टमी	6:42	18:36	6:32	18:27	6:34	18:29	6:49	18:45
	18	९	चन्द्र	22:50	आर्द्रा	18:11	सौभा	16:36	बा	10:22	मिथुन		6:41	18:37	6:31	18:28	6:32	18:29	6:48	18:45
	19	१०	मंग	24:22	पुन.	20:10	शोभ	16:37	तै	11:36	क. 13:37		6:39	18:38	6:29	18:28	6:31	18:30	6:47	18:46
	20	११	बुध	26:23	पुष्य	22:38	अति	17:00	व	13:23	कर्क	भ. 13:23 से 26:23 तक, आमलकी एकादशी व्रत, सूर्य सायन मेष (D)	6:38	18:38	6:28	18:29	6:30	18:31	6:46	18:46
	21	१२	गुरु	28:45	आश्ले	25:27	सुक	17:42	ब	15:34	सिं. 25:27	शक चैत्र एवं संवत् 1946 प्रारम्भ, गोविन्द द्वादशी	6:37	18:39	6:27	18:29	6:29	18:31	6:45	18:46
	22	१३	शुक्र	--	मघा	28:28	धृति	18:35	कौ	18:02	सिंह	प्रदोष व्रत	6:36	18:40	6:26	18:30	6:27	18:32	6:45	18:46
	23	१३	शनि	7:18	पू.फा.	--	शूल	19:34	तै	7:18	सिंह	शुक्र पू.भा. में 14:39, महेश्वर व्रत	6:34	18:41	6:25	18:31	6:26	18:33	6:44	18:47
	24	१४	रवि	9:56	पू.फा.	7:34	गण्ड	20:34	व	9:56	कं. 14:20	भ. 9:56 से 23:13 तक, मंगल शत. में 7:50, होलिका-दहन (भद्रा-बाद)(E)	6:33	18:41	6:24	18:31	6:25	18:33	6:43	18:47
	25	१५	चन्द्र	12:30	उ.फा.	10:38	वृद्धि	21:30	ब	12:30	कन्या	फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, बुध अश्वि. 1 मेष में (F)	6:32	18:42	6:22	18:32	6:24	18:34	6:42	18:47
चैत्र कृष्ण पक्ष	26	१	मंग	14:56	हस्त	13:34	ध्रुव	22:18	कौ	14:56	तु. 26:57	होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा सा.), वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, (G)	6:30	18:43	6:21	18:32	6:22	18:35	6:41	18:47
	27	२	बुध	17:07	चित्रा	16:16	व्या.	22:53	ग	17:07	तुला	भ. 30:02 से, सन्त तुकाराम जयन्ती	6:29	18:43	6:20	18:33	6:21	18:35	6:40	18:47
	28	३	गुरु	18:57	स्वा.	18:38	हर्ष	23:13	वि	18:57	तुला	भ. 18:57 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12),	6:28	18:44	6:19	18:33	6:20	18:36	6:39	18:48
	29	४	शुक्र	20:21	विशा.	20:36	वज्र	23:11	व	7:39	वृ. 14:09	श्रीभगवान्नारायण जयन्ती	6:26	18:45	6:18	18:34	6:19	18:36	6:39	18:48
	30	५	शनि	21:14	अनु.	22:04	सिद्धि	22:46	कौ	8:48	वृश्चिक	श्री रंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) शुरु, मेला गुरु रामराय (देहरादून)	6:25	18:45	6:17	18:34	6:18	18:37	6:38	18:48
	31	६	रवि	21:32	ज्ये.	22:57	व्य.	21:53	ग	9:23	ध. 22:57	भ. 21:32 से, सूर्य रेवती में 7:49, शुक्र मीन में 16:46, एकनाथ-षष्ठी	6:24	18:46	6:16	18:35	6:16	18:38	6:37	18:48

(A) बुध उ.भा. में 26:48, शनि शत. (4) में 23:57 (B) श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, रमज़ान (मु.) मास प्रारम्भ (C) याज्ञवल्क्य जयन्ती (D) में 8:36, उत्तर गोल प्रारम्भ (E) (देखें पृष्ठ 22), श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीलक्ष्मीनारायण व्रत, वृषदान व्रत (F) 27:05, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन (G) धुलैण्डी, आम्रकुसुम प्राशन

वि. संवत् 2080, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2024 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण / वसन्त ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	७	चन्द्र	21:10	मूल	23:12	वरी	20:30	वि	9:21	धनु	भ. 9:21 तक, शीतला सप्तमी (पूजा), मेला शीतलामाता (कुराली पं.) **(A)**	6:22	18:47	6:15	18:35	6:16	18:38	6:37	18:48
	2	८	मंग	20:09	पू.षा.	22:49	परि	18:35	बा	8:40	म. 28:37	**शीतलाष्टमी व्रत**	6:21	18:48	6:14	18:36	6:14	18:39	6:36	18:49
	3	९	बुध	18:30	उ.षा.	21:48	शिव	16:10	तै	7:20	मकर	भ. 29:23 से, शुक्र उ.भा. में 9:29	6:20	18:48	6:13	18:36	6:13	18:39	6:35	18:49
	4	१०	गुरु	16:15	श्रव.	20:12	सिद्ध	13:15	वि	16:15	मकर	भ. 16:15 तक, **वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:20**	6:19	18:49	6:11	18:37	6:12	18:40	6:35	18:49
	5	११	शुक्र	13:29	धनि.	18:07	साध्य शुभ	9 55 / 30 15	बा	13:29	कुं. 7:13	**पंचक प्रारम्भ 7:13, पापमोचनी एकादशी व्रत,**	6:17	18:50	6:10	18:37	6:11	18:41	6:34	18:49
	6	१२	शनि	10:20	शत.	15:40	शुक्ल	26:20	तै	10:20	कुम्भ	**शनि प्रदोष व्रत, महावारुणी योग** 10:20 से 15:40 तक, **वारुणी पर्व (B)**	6:16	18:50	6:09	18:38	6:10	18:41	6:33	18:50
	7	१३	रवि	6:54	पू.भा.	12:58	ब्रह्म	22:17	व	6:54	मी. 7:40	भ. 6:54 से 17:08 तक, **मेला पृथूदक**-पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मासशिवरात्रि व्रत	6:15	18:51	6:08	18:39	6:08	18:42	6:32	18:50
	०	१४	रवि	27:22	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	8	३०	चन्द्र	23:51	उ.भा.	10:13	ऐन्द्र	18:14	च	13:37	मीन	**चैत्र (सोमवती) अमावस,** तीर्थस्नान माहात्म्य, वि. संवत् 2080 **(C)**	6:13	18:52	6:07	18:39	6:07	18:42	6:31	18:51

(A) गुरु भर. 4 में 24:59, अप्रैल मास सन् 2024 ई. प्रारम्भ, **बुध वक्री 27:45** **(B)** (देखें पृष्ठ22), शनि पू.भा. (1) में 14:11 **(C)** पूर्ण, मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि

वास्तु दोष निवारण हेतु कुछ उपाये

यदि आपका भवन/निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते हैं।

(1) जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।

(2) जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।

(3) जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सीने से नींद गहरी और अच्छी आती है।

(4) जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।

(5) सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वस्तिक, ॐ, मीन एवं शुभ आदि मांगलिक चिन्ह मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।

(6) यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उसे उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।

(7) यदि पूर्व-उत्तर दिशा का भाग ऊंचा हो तो दक्षिण-पश्चिम भाग में कोई निर्माण कार्य करा दें जिससे पूर्व-उत्तर दिशा का भाग नीचा हो जाए।

(8) यदि भवन के सामने का उत्तर-पूर्व दिशा का फर्श दक्षिण-पश्चिम से बने फर्श से ऊंचा हो तो दक्षिण-पश्चिम दिशा के फर्श को ऊंचा करें। ऐसा नहीं कर सकते तो पश्चिम-दिशा के कोने में एक प्लेट फार्म बनाएं।

(९) रसोई घर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण (पूर्व-दक्षिण) में एक बल्ब लगा दें और सुबह शाम उसे अनिवार्य रुप से जलायें।

(10) दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियां हों तो उसे बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।

इन नियमों की व्यवहार में लाकर सुख समृद्धि की अपनी अंगशयनी बनाएं।

'वास्तुदोष शान्ति के लिए उपयोगी मन्त्र'

'ॐ नमस्तेवास्तु देवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि, शान्ति देहि, सर्वकामान् प्रयच्छ मे। ॐ वास्तु पुरुषाय नमः'।।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक
मंगलवार–अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक
बुधवार–दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक
शुक्रवार–प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक
शनिवार–प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक
रविवार–सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट–*यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।*

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)-2023 ई.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 31	7 24	17 29	7 21	17 33	7 10	17 19	7 20	17 41	7 08	17 17	7 17	17 25	7 21	17 31	7 18	17 24	7 33	17 30	1
2	34	34	29	32	24	30	21	34	10	20	20	41	08	18	17	25	21	31	19	25	34	30	2
3	35	35	29	33	24	31	21	35	11	21	20	42	08	18	18	26	22	31	19	26	34	31	3
4	35	36	29	33	24	32	21	35	11	21	20	43	09	19	18	27	22	32	19	26	34	32	4
5	35	37	29	34	24	32	22	36	11	22	21	44	09	20	18	28	22	33	19	27	34	33	5
6	35	38	29	35	24	33	22	37	11	23	21	44	09	21	18	28	22	34	19	28	34	33	6
7	35	38	29	36	25	34	22	38	11	24	21	45	09	21	18	29	22	34	19	29	34	34	7
8	35	39	29	37	25	35	22	38	11	24	21	46	09	22	18	30	22	35	19	29	34	35	8
9	35	40	29	37	25	35	22	39	11	25	21	47	09	23	18	31	22	36	20	30	34	36	9
10	35	41	29	38	25	36	22	40	12	26	21	47	09	24	18	32	22	37	20	31	34	37	10
11	35	42	29	39	25	37	22	41	12	27	21	48	09	25	18	32	22	37	20	32	34	38	11
12	35	42	29	40	25	38	22	42	11	28	21	49	09	25	18	33	22	38	19	33	34	38	12
13	35	43	29	41	24	39	22	42	11	28	21	50	09	26	18	34	22	39	19	34	34	39	13
14	35	44	29	42	24	40	22	43	11	29	21	50	09	27	18	35	22	40	19	34	34	40	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	11	30	21	51	09	28	18	36	22	41	19	35	34	41	15
16	34	46	29	43	24	41	22	45	11	31	21	52	09	29	18	37	22	42	19	36	33	42	16
17	34	47	29	44	24	42	22	46	11	32	21	53	09	30	18	38	22	43	19	37	33	43	17
18	34	48	28	45	24	43	21	47	11	33	21	54	08	30	17	38	21	43	19	38	33	44	18
19	34	49	28	46	23	44	21	47	11	34	21	54	08	31	17	39	21	44	18	39	33	45	19
20	33	50	28	47	23	45	21	48	10	34	20	55	08	32	17	40	21	45	18	40	32	46	20
21	33	50	27	48	23	46	21	49	10	35	20	56	08	33	17	41	21	46	18	40	32	47	21
22	33	51	27	49	23	47	20	50	10	36	20	57	07	34	16	42	20	47	18	41	32	48	22
23	32	52	27	49	23	48	20	51	09	37	20	58	07	35	16	43	20	48	17	42	31	49	23
24	32	53	26	50	22	48	20	52	09	38	19	58	07	36	15	44	20	49	17	43	31	49	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	09	39	19	17 59	06	36	15	44	19	49	16	44	30	50	25
26	31	55	25	52	21	50	19	53	08	40	19	18 00	06	37	15	45	19	50	16	45	30	51	26
27	31	56	25	53	20	51	18	54	08	40	18	01	06	38	14	46	18	51	16	46	29	52	27
28	30	57	24	54	20	52	18	55	07	41	18	01	05	39	14	47	18	52	15	47	29	53	28
29	30	58	24	55	20	52	18	56	07	42	17	02	05	40	13	48	17	53	15	47	28	54	29
30	29	17 59	24	56	19	54	17	57	06	43	17	03	04	41	13	49	17	54	14	48	28	55	30
31	7 28	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	7 06	17 44	7 17	18 04	7 04	17 42	7 12	17 50	7 16	17 55	7 14	17 49	7 27	17 56	31
फर.	7 28	18 01	7 22	17 58	7 18	17 55	7 16	17 58	7 05	17 45	7 16	18 04	7 03	17 42	7 12	17 51	7 16	17 55	7 13	17 50	7 26	17 57	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	17 59	05	45	16	05	02	43	11	51	15	56	12	51	26	58	2
3	26	02	21	17 59	17	57	15	18 00	04	46	15	06	02	44	10	52	14	57	12	52	25	59	3
4	26	03	20	18 00	16	58	14	18 01	04	47	14	07	01	45	10	53	14	58	11	53	24	18 00	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	02	03	48	14	07	01	46	09	53	13	17 59	10	54	24	01	5
6	24	05	19	02	15	18 00	13	02	02	49	13	08	7 00	47	08	55	13	18 00	10	54	23	02	6
7	24	06	18	03	14	01	12	03	02	50	13	09	6 59	47	08	56	12	00	09	55	22	02	7
8	7 23	18 07	7 18	18 04	7 13	18 01	7 12	18 04	7 01	17 50	7 13	18 10	6 59	17 48	7 07	17 56	7 11	18 01	7 08	17 56	7 21	18 03	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 05	7 12	18 02	7 11	17 05	7 00	17 51	7 11	18 10	6 58	17 49	7 06	17 57	7 10	18 02	7 08	17 57	7 20	18 04	9
10	21	09	16	06	11	03	10	06	6 59	52	11	11	57	50	05	58	10	03	07	58	20	05	10
11	20	09	15	07	11	04	09	06	59	53	10	12	56	51	05	17 59	09	04	06	59	19	06	11
12	20	10	14	08	10	05	09	07	58	54	09	13	55	52	04	18 00	08	04	05	59	18	07	12
13	19	10	13	08	09	06	08	08	57	54	09	13	55	52	03	00	07	05	04	18 00	17	08	13
14	18	12	12	09	08	06	07	09	56	55	08	14	54	53	02	01	06	06	03	01	16	09	14
15	17	13	11	10	07	07	06	09	55	56	07	15	53	54	01	02	05	07	03	02	15	10	15
16	16	14	10	11	06	08	05	10	54	57	06	15	52	55	7 00	03	05	08	02	03	14	10	16
17	15	15	10	12	05	09	04	11	54	58	05	16	51	55	6 59	04	04	08	01	03	13	11	17
18	14	15	09	12	04	09	03	12	53	58	05	17	50	56	59	04	03	09	7 00	04	12	12	18
19	13	16	08	13	04	10	03	12	52	59	04	17	49	57	58	05	02	10	6 59	05	11	13	19
20	12	17	07	14	03	11	02	13	51	18 00	03	18	48	58	57	06	01	11	58	06	10	14	20
21	11	18	06	15	02	12	01	14	50	18 01	02	19	48	58	56	07	7 00	11	57	06	09	15	21
22	10	19	05	16	01	13	7 00	14	49	01	01	19	47	59	55	07	6 59	12	56	07	08	16	22
23	09	19	04	16	7 00	13	6 59	15	48	02	7 00	20	46	18 00	54	08	58	13	55	08	07	16	23
24	08	20	02	17	6 59	14	58	16	47	03	6 59	20	45	01	53	09	57	14	54	09	06	17	24
25	07	21	01	18	57	15	57	16	46	03	58	21	44	01	52	10	56	14	53	09	05	18	25
26	06	22	7 00	19	56	15	56	17	45	04	57	22	43	02	51	10	55	15	52	10	03	19	26
27	04	23	6 59	19	55	16	55	18	44	05	57	22	42	03	50	11	54	16	51	11	02	20	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	17 18	6 43	18 06	6 56	18 23	6 40	18 03	48	18 12	53	18 16	6 50	18 12	7 01	18 20	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 21	6 53	18 18	6 53	18 19	6 42	18 06	6 55	18 23	6 39	18 04	6 47	18 12	6 52	18 17	6 49	18 12	7 00	18 21	मार्च
2	7 01	25	56	21	52	18	52	20	41	07	54	24	38	05	46	13	51	18	48	13	6 59	22	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	40	08	53	25	37	05	45	14	50	18	46	14	58	23	3
4	6 59	26	54	23	50	20	50	21	38	08	52	25	36	06	44	14	48	19	45	14	56	23	4
5	58	27	53	24	49	20	48	22	37	09	51	26	35	07	43	15	47	20	44	15	56	24	5
6	56	28	51	24	48	21	47	22	36	10	50	26	34	07	42	16	46	20	43	16	54	25	6
7	55	29	50	25	46	22	46	23	35	10	49	27	33	08	41	16	45	21	42	16	53	26	7
8	54	29	49	26	45	22	45	24	34	11	47	27	32	09	40	17	44	22	41	17	52	27	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	33	12	46	28	31	09	38	18	43	22	40	18	50	27	9
10	52	31	47	27	43	24	43	25	32	12	45	29	29	10	37	18	42	23	38	18	49	28	10
11	50	31	45	28	42	24	42	25	31	13	44	29	28	11	36	19	40	24	37	19	48	29	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	29	13	43	30	27	11	35	20	39	24	36	20	47	29	12
13	48	33	43	29	39	26	40	27	28	14	42	30	26	12	34	20	38	25	35	20	45	30	13
14	47	33	42	30	38	26	38	27	27	15	41	31	25	12	33	21	37	25	34	21	44	31	14
15	45	34	40	30	37	27	37	28	26	15	40	31	24	13	31	22	36	26	33	22	43	32	15
16	44	35	39	31	36	28	36	28	25	16	39	32	22	14	30	22	35	27	31	22	41	32	16
17	43	36	38	32	34	28	35	29	23	17	38	32	21	14	29	23	33	27	30	23	40	33	17
18	42	36	37	32	33	29	34	30	22	17	37	33	20	15	28	23	32	28	29	24	39	34	18
19	40	37	36	33	32	30	33	30	21	18	36	33	19	16	27	24	31	29	28	24	38	35	19
20	39	38	34	34	31	30	31	31	20	18	35	34	18	16	25	25	30	29	26	25	36	35	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	19	19	33	34	17	17	24	25	29	30	25	26	35	36	21
22	37	39	32	35	28	31	29	32	18	20	32	35	15	17	23	26	27	30	24	26	34	37	22
23	35	40	31	36	27	32	28	32	16	20	31	35	14	18	22	26	26	31	23	27	32	37	23
24	34	40	29	36	26	33	27	33	15	21	30	36	13	19	20	27	25	32	22	27	31	38	24
25	33	41	28	37	25	33	26	34	14	21	29	36	12	19	19	28	24	32	20	28	30	39	25
26	31	42	27	38	23	34	24	34	13	22	28	37	11	20	18	28	23	33	19	29	28	39	26
27	6 30	18 42	6 26	18 38	6 22	18 35	6 23	18 35	6 12	18 23	6 27	18 37	6 09	18 20	6 17	18 29	6 21	18 33	6 18	18 29	7 27	18 40	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 39	6 21	18 35	6 22	18 35	6 10	18 23	6 26	18 38	6 08	18 21	6 16	18 30	6 20	18 34	6 17	18 30	7 26	18 41	28
29	28	44	23	40	20	36	21	36	09	24	25	38	07	21	14	30	19	35	15	31	25	42	29
30	26	44	22	40	19	36	20	36	08	24	24	39	06	18 22	13	31	18	35	14	31	23	42	30
31	6 25	18 45	6 21	18 41	6 17	18 37	6 19	18 37	6 07	18 25	6 22	18 39	6 05	18 23	6 12	18 31	6 17	18 36	6 13	18 32	6 22	18 43	31
अप्रै.	6 24	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 38	6 06	18 25	6 21	18 40	6 03	18 23	6 11	18 32	6 15	18 36	6 12	18 32	6 21	18 44	अप्रै.
2	23	46	18	42	15	38	16	38	04	26	20	40	02	24	10	33	14	37	11	33	19	44	2
3	21	47	17	43	14	39	15	39	03	27	19	41	01	24	08	33	13	38	09	34	18	45	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	02	27	18	41	6 00	25	07	34	12	38	08	34	17	46	4
5	19	48	15	44	11	40	13	40	01	28	17	42	5 59	26	06	34	11	39	07	35	16	46	5
6	18	49	13	45	10	41	12	40	6 00	28	16	42	58	26	05	35	10	39	06	35	14	48	6
7	16	50	12	45	09	41	11	41	5 59	29	15	43	56	27	04	36	08	40	05	36	13	48	7
8	15	50	11	46	08	42	09	41	57	30	14	43	55	27	03	36	07	40	03	37	12	48	8
9	14	51	10	47	07	43	08	42	56	30	13	44	54	28	01	37	06	41	02	37	11	49	9
10	13	52	09	47	06	43	07	43	55	31	12	44	53	29	6 00	37	05	42	01	38	09	50	10
11	12	52	07	48	04	44	06	43	54	31	11	45	52	29	5 59	38	04	42	6 00	39	08	51	11
12	10	53	06	49	03	45	05	44	53	32	10	45	51	30	58	39	03	43	5 59	39	07	51	12
13	09	54	05	49	02	45	04	44	52	33	09	46	50	30	57	39	02	44	58	40	06	52	13
14	08	54	04	50	01	46	03	45	51	33	08	46	48	31	56	40	6 01	44	57	40	04	53	14
15	07	55	03	50	6 00	46	02	46	50	34	07	47	47	32	55	40	5 59	45	55	41	03	53	15
16	06	56	02	51	5 59	47	01	46	48	34	06	47	46	32	54	41	58	45	54	42	02	54	16
17	04	56	6 01	52	58	48	6 00	47	47	35	05	48	45	33	53	42	57	46	53	42	01	55	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	46	36	04	48	44	33	51	42	56	47	52	43	00	55	18
19	02	58	58	53	55	49	58	48	45	36	03	49	43	34	50	43	55	47	51	44	00	56	19
20	6 01	58	57	54	54	50	57	48	44	37	02	49	42	35	49	44	54	48	50	44	5 57	57	20
21	6 00	18 59	56	54	53	50	56	49	43	38	01	50	41	35	48	44	53	48	49	45	56	58	21
22	5 59	19 00	55	55	52	51	55	50	42	38	6 00	50	40	36	47	45	52	49	48	46	55	58	22
23	58	00	54	56	51	52	54	50	41	39	5 59	51	39	37	46	45	51	50	47	46	54	18 59	23
24	57	01	53	56	50	52	53	51	40	39	58	52	38	37	45	46	50	50	46	47	53	19 00	24
25	56	02	52	57	49	53	52	51	39	40	57	52	37	38	44	47	49	51	45	47	52	00	25
26	55	03	51	58	48	53	51	52	38	41	56	53	36	38	43	47	48	52	44	48	51	01	26
27	54	03	50	58	47	54	50	53	37	41	56	53	35	39	42	48	47	52	43	49	50	02	27
28	53	04	49	59	46	55	49	53	36	42	55	54	34	40	41	49	46	53	42	49	49	03	28
29	52	05	48	19 00	45	55	48	54	35	43	54	54	33	40	40	49	45	53	41	50	48	03	29
30	5 51	19 05	5 47	19 00	5 44	18 56	5 47	18 54	5 34	18 43	5 53	18 55	5 32	18 41	5 40	18 50	5 44	18 54	5 40	18 51	5 47	19 04	30
मई	5 50	19 06	5 46	19 01	5 44	18 57	5 46	18 55	5 34	18 44	5 52	18 55	5 31	18 42	5 39	18 51	5 44	18 55	5 39	18 51	5 47	19 05	मई
2	49	07	45	02	43	57	45	56	33	44	51	56	31	42	38	51	43	55	38	52	45	06	2
3	48	07	44	02	42	58	45	56	32	45	51	56	30	43	37	52	42	56	37	53	45	06	3
4	47	08	44	03	41	59	44	57	31	46	50	57	29	43	36	53	41	57	36	53	43	07	4
5	46	09	43	04	40	18 59	43	58	30	46	49	58	28	44	35	53	40	57	36	54	42	08	5
6	45	10	42	04	39	19 00	42	58	29	47	48	58	27	45	34	54	39	58	35	55	41	08	6
7	44	10	41	05	39	01	42	59	29	48	48	59	26	45	34	54	39	59	34	55	40	09	7
8	44	11	40	06	38	01	41	18 59	28	48	47	18 59	26	46	33	55	38	59	33	56	40	14	8
9	43	12	39	07	37	02	40	19 00	27	49	46	19 00	25	47	32	56	37	19 00	32	57	39	11	9
10	42	12	39	07	36	03	39	01	26	50	46	00	24	47	31	56	36	00	32	57	38	11	10
11	41	13	38	08	36	03	39	01	26	50	45	01	24	48	31	57	36	01	31	58	37	12	11
12	5 40	19 14	5 37	19 09	5 35	19 04	5 38	19 02	5 25	18 51	5 45	19 02	18 23	18 49	5 30	18 58	5 35	19 02	5 30	18 59	5 36	19 13	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	37	19 09	5 34	19 05	5 37	19 02	5 24	18 51	5 44	19 02	5 22	18 49	5 29	18 58	5 34	19 02	5 30	18 59	5 36	19 13	13
14	39	15	36	10	33	05	37	03	24	52	43	03	22	50	29	18 59	34	03	29	19 00	35	14	14
15	38	16	35	11	33	06	36	04	23	53	43	03	21	50	28	19 00	33	04	28	01	34	15	15
16	38	16	35	11	32	07	36	04	22	53	42	04	20	51	27	00	32	04	28	01	33	16	16
17	37	17	34	12	32	07	35	05	22	54	42	04	20	52	27	01	32	05	27	02	33	16	17
18	36	18	33	13	31	08	34	06	21	55	41	05	19	52	26	02	31	06	26	02	32	17	18
19	36	18	33	13	30	09	34	06	21	55	41	05	19	53	26	02	31	06	26	03	32	18	19
20	35	19	32	14	30	09	33	07	20	56	40	06	18	54	25	03	30	07	25	04	31	18	20
21	35	20	32	14	29	10	33	07	20	56	40	07	18	54	25	03	30	07	25	04	30	19	21
22	34	20	31	15	29	10	33	08	19	57	40	07	17	55	24	04	29	08	24	05	30	20	22
23	34	21	31	16	29	11	32	09	19	58	39	08	17	55	24	05	29	09	24	06	29	20	23
24	33	22	30	16	28	12	32	09	18	58	39	08	16	56	23	05	28	09	23	06	29	21	24
25	33	22	30	17	28	12	31	10	18	59	38	09	16	57	23	06	28	10	23	07	28	22	25
26	32	23	30	18	27	13	31	10	18	18 59	38	09	15	57	23	06	28	10	23	07	28	22	26
27	32	24	29	18	27	13	31	11	17	19 00	38	10	15	58	22	07	27	11	22	09	28	23	27
28	32	24	29	19	27	14	30	11	17	01	38	10	15	58	22	08	27	12	22	09	27	24	28
29	31	25	28	19	26	15	30	12	17	01	37	11	14	59	22	08	27	12	22	09	27	24	29
30	31	25	28	20	26	15	30	12	16	02	37	11	14	59	21	09	26	13	21	10	26	25	30
31	5 31	19 26	5 28	19 20	5 26	19 16	5 30	19 13	5 16	19 02	5 37	19 12	5 14	19 00	5 21	19 09	5 26	19 13	5 21	19 10	5 26	19 25	31
जून	5 30	19 27	5 28	19 21	5 25	19 16	5 29	19 13	5 16	19 03	5 37	19 12	5 14	19 00	5 21	19 10	5 26	19 14	5 21	19 11	5 26	19 26	जून
2	30	27	27	22	25	17	29	14	15	03	37	13	13	01	21	10	26	14	20	11	26	26	2
3	30	28	27	22	25	17	29	14	15	04	36	13	13	01	20	11	25	15	20	12	25	27	3
4	30	28	27	23	25	18	29	15	15	04	36	14	13	02	20	11	25	15	20	12	25	28	4
5	29	29	27	23	25	18	29	15	15	05	36	14	13	02	20	12	25	16	20	13	25	28	5
6	29	29	27	24	25	19	29	16	15	05	36	15	13	03	20	12	25	16	20	13	25	29	6
7	29	30	27	24	24	19	28	16	15	06	36	15	13	03	20	13	25	17	20	14	25	29	7
8	29	30	27	24	24	20	28	17	15	06	36	15	13	04	20	13	25	17	20	14	25	30	8
9	29	31	26	25	24	20	28	17	15	07	36	16	12	04	20	14	25	17	19	15	24	30	9
10	29	31	26	25	24	21	28	18	15	07	36	16	12	05	20	14	25	18	19	15	24	30	10
11	29	31	26	26	24	21	28	18	15	07	36	17	12	05	20	14	25	18	19	16	24	31	11
12	29	32	26	26	24	21	28	18	15	08	36	17	12	06	20	15	25	19	19	16	24	31	12
13	29	32	26	27	24	22	28	19	15	08	36	17	12	06	20	15	25	19	19	16	24	32	13
14	29	33	26	27	24	22	28	19	15	09	36	18	12	06	20	15	25	19	19	17	24	32	14
15	29	33	27	27	24	22	29	19	15	09	36	18	13	07	20	16	25	20	20	17	24	32	15
16	29	33	27	28	25	23	29	20	15	09	36	18	13	07	20	16	25	20	20	17	25	33	16
17	29	34	27	28	25	23	29	20	15	09	36	18	13	07	20	16	25	20	20	18	25	33	17
18	29	34	27	28	25	23	29	20	15	10	37	19	13	07	20	17	25	21	20	18	25	33	18
19	29	34	27	28	25	24	29	21	15	10	37	19	13	08	20	17	26	21	20	18	25	34	19
20	30	34	27	29	25	24	29	21	15	10	37	19	13	08	21	17	26	21	20	19	25	34	20
21	30	35	27	29	25	24	29	21	16	11	37	19	13	08	21	17	26	21	20	19	25	34	21
22	30	35	28	29	26	24	30	21	16	11	37	20	14	08	21	18	26	22	21	19	26	34	22
23	30	35	28	29	26	24	30	21	16	11	38	20	14	09	21	18	26	22	21	19	26	34	23
24	30	35	28	29	26	24	30	21	16	11	38	20	14	09	22	18	27	22	21	19	26	35	24
25	31	35	28	30	26	25	30	22	17	11	38	20	14	09	22	18	27	22	21	19	26	35	25
26	31	35	29	30	27	25	31	22	17	11	38	20	15	09	22	18	27	22	22	20	27	35	26
27	31	36	29	30	27	25	31	22	17	11	39	20	15	09	22	18	28	22	22	20	27	35	27
28	5 32	19 36	5 29	19 30	5 27	19 25	5 31	19 22	5 18	19 12	5 39	19 20	5 15	19 09	5 23	19 18	5 28	19 22	5 22	19 20	5 27	19 35	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 36	5 30	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 18	19 12	5 39	19 21	5 16	19 09	5 23	19 18	5 28	19 22	5 23	19 20	5 28	19 35	29
30	5 32	19 36	5 30	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 18	19 12	5 40	19 21	5 16	19 09	5 24	19 18	5 29	19 22	5 23	19 20	5 28	19 35	30
जुला	5 33	19 36	5 31	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 18	19 12	5 40	19 21	5 16	19 09	5 24	19 18	5 29	19 22	5 23	19 20	5 28	19 35	जुला
2	33	36	31	30	29	25	33	22	19	12	40	21	17	09	24	18	29	22	24	20	29	35	2
3	34	36	31	30	29	25	33	22	19	12	41	21	17	09	25	18	30	22	24	20	29	35	3
4	34	36	32	30	30	25	34	22	20	12	41	21	18	09	25	18	30	22	25	20	30	35	4
5	34	35	32	30	30	25	34	22	20	11	42	20	18	09	26	18	31	22	25	20	30	35	5
6	35	35	33	29	31	25	35	22	21	11	42	20	18	09	26	18	31	22	26	19	31	35	6
7	35	35	33	29	31	24	35	22	21	11	42	20	19	09	26	18	32	22	26	19	31	34	7
8	36	35	34	29	31	24	35	21	21	11	43	20	19	09	27	18	32	22	26	19	32	34	8
9	36	35	34	29	32	24	36	21	22	11	43	20	20	09	27	18	32	21	27	19	32	34	9
10	37	35	35	29	32	24	36	21	22	11	44	20	20	08	28	17	33	21	27	19	33	34	10
11	37	34	35	28	33	24	37	21	23	10	44	20	21	08	28	17	33	21	28	19	33	33	11
12	38	34	36	28	34	23	37	21	23	10	45	19	21	08	29	17	34	21	28	18	34	33	12
13	39	34	36	28	34	23	38	20	24	10	45	19	22	08	29	17	34	21	29	18	34	33	13
14	39	33	37	27	35	23	38	20	24	10	46	19	22	07	30	16	35	20	29	18	35	32	14
15	40	33	37	27	35	22	39	20	25	09	46	19	23	07	30	16	36	20	30	17	35	32	15
16	40	33	38	27	36	22	39	19	25	09	47	18	23	07	31	16	36	20	31	17	36	32	16
17	41	32	38	26	36	22	40	19	26	09	47	18	24	06	32	15	37	19	31	17	37	31	17
18	41	32	39	26	37	21	40	19	27	08	48	18	24	06	32	15	37	19	32	16	37	31	18
19	42	31	40	25	37	21	41	18	27	08	48	17	25	06	33	14	38	18	32	16	38	30	19
20	43	31	40	25	38	20	42	18	28	07	49	17	26	05	33	14	38	18	33	15	38	30	20
21	43	30	41	24	39	20	42	17	28	07	49	16	26	05	34	13	39	17	33	15	39	29	21
22	44	30	41	24	39	19	43	17	29	06	50	16	27	04	34	13	39	17	34	14	40	29	22
23	44	29	42	23	40	19	43	16	29	06	50	16	27	04	35	12	40	16	35	14	40	28	23
24	45	29	43	23	40	18	44	16	30	05	51	15	28	03	36	12	41	16	35	13	41	28	24
25	46	28	43	22	41	18	44	15	31	05	51	15	28	03	36	11	41	15	36	13	42	27	25
26	46	27	44	22	41	17	45	15	31	04	52	14	29	02	37	11	42	15	36	12	42	26	26
27	47	27	44	21	42	16	45	14	32	04	52	14	30	01	37	10	42	14	37	12	43	26	27
28	48	26	45	20	43	16	46	13	32	03	53	13	30	01	38	09	43	13	38	11	44	25	28
29	48	25	46	20	43	15	47	13	33	02	53	12	31	19 00	39	09	43	13	38	10	44	24	29
30	49	25	46	19	44	14	47	12	33	02	54	12	31	18 59	39	08	44	12	39	10	45	23	30
31	5 50	19 24	5 47	19 18	5 45	19 14	5 48	19 12	5 34	19 01	5 54	19 11	5 32	18 59	5 40	19 07	5 45	19 11	5 39	19 09	5 46	19 23	31
अग.	5 50	19 23	5 48	19 17	5 45	19 13	5 48	19 11	5 35	19 00	5 55	19 11	5 33	18 58	5 40	19 07	5 45	19 11	5 40	19 08	5 46	19 22	अग.
2	51	22	48	17	46	12	49	10	35	19 00	55	10	33	57	41	06	46	10	41	07	47	21	2
3	51	22	49	16	46	11	49	09	36	18 59	56	09	34	57	42	05	46	09	41	07	48	20	3
4	52	21	50	15	47	11	50	09	36	58	56	08	34	56	42	04	47	08	42	06	48	19	4
5	53	20	50	14	48	10	51	08	37	57	57	08	35	55	43	03	48	08	42	05	49	19	5
6	53	19	51	13	48	09	51	07	38	57	57	07	35	54	43	03	48	07	43	04	50	18	6
7	54	18	51	12	49	08	52	06	38	56	58	06	36	53	44	02	49	06	44	03	50	17	7
8	55	17	52	12	49	07	52	05	39	55	58	06	37	53	45	01	49	C5	44	03	51	16	8
9	55	16	53	11	50	06	53	05	39	54	59	05	37	52	45	19 00	50	04	45	02	52	15	9
10	56	15	53	10	51	05	53	04	40	53	5 59	04	38	51	46	18 59	51	03	45	01	52	14	10
11	57	15	54	09	51	04	54	03	41	52	6 00	03	38	50	46	58	51	02	46	19 00	53	13	11
12	57	14	55	08	52	04	55	02	41	51	00	02	39	49	47	57	52	02	47	18 59	54	12	12
13	58	13	55	07	52	03	55	01	42	50	01	01	40	48	48	56	52	01	47	58	54	11	13
14	5 59	19 12	5 56	19 06	5 53	19 02	5 56	19 00	5 42	18 49	6 01	19 01	5 40	18 47	5 48	18 55	5 53	19 00	5 48	18 57	5 55	19 10	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 11	5 56	19 05	5 54	19 01	5 56	18 59	5 43	18 49	6 02	19 00	5 41	18 46	5 49	18 54	5 54	18 59	5 48	18 56	5 56	19 09	15
16	6 00	09	57	04	54	19 00	57	58	43	48	02	18 59	41	45	49	53	54	58	49	55	56	08	16
17	00	08	58	03	55	18 59	57	57	44	47	03	58	42	44	50	52	55	57	50	54	57	07	17
18	01	07	58	02	55	58	58	56	45	46	03	57	42	44	50	51	55	56	50	53	58	06	18
19	02	06	59	01	56	56	58	55	45	45	04	56	43	42	51	50	56	55	51	52	58	04	19
20	02	05	5 59	19 00	57	55	59	54	46	44	04	55	44	41	52	49	56	54	51	51	59	03	20
21	03	04	6 00	18 59	57	54	5 59	53	46	42	05	54	44	40	52	48	57	53	52	50	6 00	02	21
22	04	03	01	57	58	53	6 00	52	47	41	05	53	45	18 39	53	47	58	51	53	49	00	01	22
23	04	02	01	56	58	52	01	51	47	18 40	06	52	45	18 38	53	46	58	50	53	48	01	19 00	23
24	05	19 01	02	55	5 59	51	01	50	48	18 39	06	51	46	37	54	45	59	49	54	47	02	18 59	24
25	06	18 59	02	54	6 00	50	02	49	49	38	07	50	46	36	54	44	5 59	48	54	45	02	57	25
26	06	58	03	53	00	49	02	48	49	37	07	49	47	35	55	43	6 00	47	55	44	03	56	26
27	07	57	04	52	01	48	03	47	50	36	08	48	47	34	56	42	00	46	55	43	04	55	27
28	07	56	04	51	01	46	03	46	50	35	08	47	48	33	56	41	01	45	56	42	04	54	28
29	08	55	05	49	02	45	04	45	51	34	09	46	49	31	57	39	01	44	57	41	05	53	29
30	09	54	05	48	02	44	04	43	51	33	09	45	49	30	58	38	02	43	57	40	05	51	30
31	6 09	18 52	6 06	18 47	6 03	18 43	6 05	18 42	5 52	18 31	6 09	18 44	5 50	18 29	5 58	18 37	6 02	18 41	5 58	18 39	6 06	18 50	31
सितं.	6 10	18 51	6 07	18 46	6 03	18 42	6 05	18 41	5 52	18 30	6 10	18 43	5 50	18 28	5 58	18 36	6 03	18 40	5 58	18 37	6 07	18 49	सितं.
2	10	50	07	44	04	41	06	40	53	29	10	42	51	27	59	35	04	39	59	36	07	48	2
3	11	49	08	43	05	39	06	39	53	28	11	41	51	26	5 59	34	04	38	5 59	35	08	46	3
4	12	47	08	42	05	38	07	38	54	27	11	39	52	24	6 00	32	05	37	6 00	34	09	45	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	54	26	12	38	52	23	00	31	05	35	01	33	09	44	5
6	13	45	09	40	06	36	08	35	55	24	12	37	53	22	01	30	06	34	01	31	10	42	6
7	13	43	10	38	07	34	08	34	55	23	13	36	53	21	02	29	06	33	02	30	10	41	7
8	14	42	11	37	07	33	09	33	56	22	13	35	54	20	02	27	07	32	02	29	11	40	8
9	15	40	11	36	08	32	09	32	57	21	13	34	54	18	03	26	07	31	03	28	12	39	9
10	15	40	12	35	08	31	10	31	57	19	14	33	55	17	03	25	08	29	03	26	12	37	10
11	16	38	12	33	09	30	10	29	58	18	14	32	55	16	04	24	08	28	04	25	13	36	11
12	16	37	13	32	10	28	11	28	58	17	15	31	56	15	04	23	09	27	04	24	14	35	12
13	17	36	13	31	10	27	11	27	59	16	15	29	56	14	05	21	09	26	05	23	14	33	13
14	18	34	14	29	11	26	12	26	5 59	15	16	28	57	12	05	20	10	24	05	21	15	32	14
15	18	33	15	28	11	24	12	25	6 00	13	16	27	57	11	06	19	10	23	06	20	15	31	15
16	19	32	15	27	12	23	13	23	00	12	16	26	58	10	06	18	11	22	07	19	16	29	16
17	19	31	16	26	12	22	13	22	01	11	17	25	59	09	07	16	11	21	07	18	17	28	17
18	20	29	16	24	13	21	14	21	01	10	17	24	5 59	07	07	15	12	20	08	16	17	27	18
19	21	28	17	23	13	19	14	20	02	08	18	23	6 00	06	08	14	13	18	08	15	18	25	19
20	21	27	17	22	14	18	15	19	02	07	18	21	00	05	09	13	13	17	09	14	19	24	20
21	22	25	18	20	15	17	15	17	03	06	19	20	01	04	09	11	14	16	09	12	19	23	21
22	22	24	19	19	15	16	16	16	03	05	19	19	01	02	10	10	14	15	10	11	20	21	22
23	23	23	19	18	16	14	16	15	04	04	19	18	02	01	10	09	15	13	10	10	21	20	23
24	24	21	20	17	16	13	17	14	04	02	20	17	02	18 00	10	08	15	12	11	09	21	18	24
25	24	20	20	15	17	12	17	12	05	01	20	16	03	17 59	11	06	16	11	12	07	22	17	25
26	25	19	21	14	17	11	18	11	06	18 00	21	15	03	57	12	05	16	10	12	06	22	16	26
27	25	17	21	13	18	09	18	10	06	17 58	21	13	04	56	12	04	17	08	13	05	23	15	27
28	26	16	22	11	19	08	19	09	07	57	22	12	04	55	13	03	17	07	13	04	24	13	28
29	27	15	23	10	19	07	19	08	07	56	22	11	05	54	13	01	18	06	14	02	24	12	29
30	6 27	18 14	6 23	18 09	6 20	18 06	6 20	18 06	6 08	17 55	6 23	18 10	6 05	17 53	6 14	18 00	6 18	18 05	6 14	18 01	6 25	18 11	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 24	18 08	6 20	18 04	6 20	18 05	6 08	17 54	6 23	18 09	6 06	17 51	6 15	17 59	6 19	18 03	6 15	18 00	6 25	18 09	अक्तू
2	29	11	25	06	21	03	21	04	09	52	23	08	07	50	15	58	20	02	16	17 59	26	08	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	09	51	24	07	07	49	16	57	20	01	16	58	27	07	3
4	30	08	26	04	22	18 01	22	02	10	50	24	06	08	48	16	55	21	18 00	17	56	28	05	4
5	31	07	26	03	23	17 59	23	18 01	11	49	25	05	08	47	17	54	21	17 59	17	55	28	04	5
6	31	06	27	02	23	58	23	17 59	11	48	25	03	09	45	18	53	22	58	18	54	29	03	6
7	32	05	28	18 00	24	57	24	58	12	46	26	02	09	44	18	52	22	56	19	53	30	02	7
8	33	03	28	17 59	24	56	24	57	12	45	26	01	10	43	19	51	23	55	19	52	30	18 00	8
9	33	02	29	58	25	55	25	56	13	44	27	18 00	11	42	19	49	24	54	20	50	31	17 59	9
10	34	18 01	30	57	26	54	25	55	13	43	27	17 59	11	41	20	48	24	53	20	49	32	58	10
11	35	18 00	30	56	26	52	26	54	14	42	28	58	12	40	21	47	25	52	21	48	33	57	11
12	35	17 59	31	54	27	51	27	53	15	41	28	57	12	39	21	46	26	51	22	47	33	55	12
13	36	57	32	53	28	50	27	52	15	40	29	56	13	37	22	45	26	50	22	46	34	54	13
14	37	56	32	52	28	49	28	51	16	39	29	55	14	36	22	44	27	48	23	45	35	53	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	17	37	30	54	14	35	23	44	27	47	24	43	35	52	15
16	38	54	34	50	30	47	29	49	17	36	31	53	15	34	24	42	28	46	24	42	36	51	16
17	39	53	34	49	30	46	30	47	18	35	31	52	16	33	24	41	29	45	25	41	37	49	17
18	39	52	35	48	31	45	30	46	18	34	32	51	16	32	25	39	29	44	26	40	38	48	18
19	40	51	36	47	32	44	31	45	19	33	32	50	17	31	26	38	30	43	26	39	38	47	19
20	41	50	36	45	32	43	31	44	20	32	33	49	17	30	26	37	31	42	27	38	39	46	20
21	42	48	37	44	33	42	32	43	20	31	33	48	18	29	27	36	31	41	28	37	40	45	21
22	42	47	38	43	34	40	33	43	21	30	34	48	19	28	28	35	32	40	28	36	41	44	22
23	43	46	38	42	34	39	33	42	22	29	35	47	20	27	28	34	33	39	29	35	41	43	23
24	44	45	39	41	35	39	34	41	22	28	35	46	20	26	29	33	33	38	30	34	42	42	24
25	45	44	40	40	36	38	35	40	23	27	36	45	21	25	30	32	34	37	30	33	43	41	25
26	45	43	41	39	37	37	35	39	24	26	36	44	22	24	31	32	35	36	31	32	44	40	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	25	25	37	43	22	23	31	31	35	35	32	31	45	39	27
28	47	41	42	38	38	35	37	37	25	25	37	43	23	22	32	30	36	35	33	30	45	38	28
29	48	40	43	37	39	34	38	36	26	24	38	42	24	22	33	29	37	34	33	29	46	37	29
30	48	39	44	36	40	33	38	35	27	23	39	41	24	21	33	28	38	33	34	29	47	36	30
31	6 49	17 39	6 45	17 35	6 40	17 32	6 39	17 35	6 27	17 22	6 40	17 40	6 25	17 20	6 34	17 27	6 38	17 32	6 35	17 28	6 48	17 35	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 34	6 41	17 31	6 40	17 34	6 28	17 21	6 40	17 40	6 26	17 19	6 35	17 26	6 39	17 31	6 36	17 27	6 49	17 34	नवं.
2	51	37	46	33	42	31	40	33	29	20	41	39	27	18	36	26	40	30	36	26	50	33	2
3	52	36	47	32	43	30	41	32	30	20	42	38	27	17	37	25	41	30	37	25	50	32	3
4	53	35	48	32	43	29	42	32	30	19	42	37	28	17	37	24	41	29	38	24	51	31	4
5	53	34	49	31	44	28	43	31	31	18	43	37	29	16	38	23	42	28	39	24	52	30	5
6	54	34	49	30	45	27	43	30	32	17	44	36	30	15	39	23	43	27	40	23	53	30	6
7	55	33	50	29	46	27	44	30	33	17	44	36	31	15	40	22	44	27	40	22	54	29	7
8	56	32	51	29	47	26	45	29	34	16	45	35	31	14	40	21	45	26	41	22	55	28	8
9	57	31	52	28	47	25	46	28	34	15	46	34	32	13	41	21	45	25	42	21	56	27	9
10	58	31	53	27	48	25	46	28	35	15	46	34	33	13	42	20	46	25	43	20	57	27	10
11	58	30	54	27	49	24	47	27	36	14	47	33	34	12	43	19	47	24	44	20	57	26	11
12	6 59	29	54	26	50	24	48	27	37	14	48	33	34	11	44	19	48	24	44	19	58	25	12
13	7 00	29	55	26	51	23	49	26	38	13	49	33	35	11	45	18	49	23	45	18	59	25	13
14	01	28	56	25	52	23	50	26	38	13	49	32	36	10	45	18	49	23	46	18	7 00	24	14
15	02	28	57	25	52	22	50	25	39	12	50	32	37	10	46	17	50	22	47	17	01	24	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 40	17 12	6 51	17 31	6 38	17 09	6 47	17 17	6 51	17 22	6 48	17 17	7 02	17 23	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		पिथौरागढ़		हरिद्वार		करनाल		देहरादून		कटुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 27	6 59	17 24	6 54	17 21	6 52	17 24	6 41	17 11	6 52	17 31	6 39	17 09	6 48	17 16	6 52	17 21	6 49	17 16	7 03	17 23	17
18	05	26	7 00	23	55	21	53	24	42	11	52	31	39	09	49	16	53	21	49	16	04	22	18
19	05	26	00	23	56	20	54	24	42	10	53	30	40	08	49	16	54	21	50	16	05	22	19
20	06	25	01	22	57	20	54	23	43	10	54	30	41	08	50	15	54	20	51	15	05	21	20
21	07	25	02	22	58	20	55	23	44	10	55	30	42	08	51	15	55	20	52	15	06	21	21
22	08	25	03	22	58	19	56	23	45	09	55	30	43	07	52	15	56	20	53	15	07	20	22
23	09	24	04	21	6 59	19	57	22	46	09	56	29	43	07	53	14	57	19	54	14	08	20	23
24	10	24	05	21	7 00	19	58	22	47	09	57	29	44	07	54	14	58	19	55	14	09	20	24
25	11	24	06	21	01	19	58	22	47	09	58	29	45	06	54	14	58	19	55	14	10	20	25
26	12	23	06	21	02	18	6 59	22	48	08	59	29	46	06	55	14	59	19	56	14	11	19	26
27	12	23	07	21	03	18	7 00	22	49	08	6 59	29	47	06	56	14	7 00	19	57	13	12	19	27
28	13	23	08	20	03	18	01	22	50	08	7 00	29	48	06	57	13	01	18	58	13	13	19	28
29	14	23	09	20	04	18	02	22	51	08	01	29	48	06	58	13	02	18	59	13	13	19	29
30	7 15	17 23	7 10	17 20	7 05	17 18	7 02	17 22	6 51	17 08	7 02	17 29	6 49	17 06	6 59	17 13	7 03	17 18	6 59	17 13	7 14	17 19	30
दिसं.	7 16	17 23	7 10	17 20	7 06	17 18	7 03	17 21	6 52	17 08	7 02	17 29	6 50	17 06	6 59	17 13	7 03	17 18	7 00	17 13	7 15	17 18	दिसं.
2	17	23	11	20	07	18	04	21	53	08	03	29	51	06	7 00	13	04	18	01	13	16	18	2
3	17	23	12	20	07	18	05	22	54	08	04	29	52	06	01	13	05	18	02	13	17	18	3
4	18	23	13	20	08	18	06	22	55	08	04	29	52	06	02	13	06	18	03	13	18	18	4
5	19	23	14	20	09	18	06	22	55	08	05	29	53	06	02	13	06	18	03	13	18	18	5
6	20	23	14	20	10	18	07	22	56	08	05	29	54	06	03	13	07	18	04	13	19	18	6
7	21	23	15	20	10	18	08	22	57	08	07	29	55	06	04	13	08	19	05	13	20	19	7
8	21	23	16	20	11	18	08	22	58	08	07	29	55	06	05	14	09	19	06	13	21	19	8
9	22	23	17	21	12	18	09	22	58	08	08	30	56	06	05	14	09	19	06	13	21	19	9
10	23	23	17	21	13	19	10	22	6 59	09	08	30	57	06	06	14	10	19	07	14	22	19	10
11	24	23	18	21	13	19	11	23	7 00	09	09	30	57	07	07	14	11	19	08	14	23	19	11
12	24	24	19	21	14	19	11	23	00	09	10	30	58	07	07	14	11	20	09	14	24	19	12
13	25	24	19	22	15	19	12	23	01	09	11	31	59	07	08	15	12	20	09	14	24	20	13
14	26	24	20	22	15	20	13	24	02	10	11	31	6 59	08	09	15	13	20	10	15	25	20	14
15	26	24	21	22	16	20	13	24	02	10	12	31	7 00	08	09	15	13	20	11	15	26	20	15
16	27	25	21	23	17	20	14	24	03	10	12	32	01	08	10	16	14	20	11	15	26	21	16
17	27	25	22	23	17	21	14	25	04	11	13	32	01	09	11	16	15	21	12	16	27	21	17
18	28	26	23	23	18	21	15	25	04	11	14	33	02	09	11	17	15	21	12	16	28	21	18
19	29	26	23	24	18	22	15	26	05	12	14	33	02	09	12	17	16	22	13	16	28	22	19
20	29	26	24	24	19	22	16	26	05	12	15	34	03	10	12	17	16	22	13	17	29	22	20
21	30	27	24	25	19	23	17	26	06	12	15	34	04	10	13	18	17	23	14	17	29	23	21
22	30	27	25	25	20	23	17	27	06	13	16	34	04	11	13	18	17	24	15	18	30	23	22
23	31	28	25	26	20	24	17	27	07	13	16	35	05	11	14	19	18	24	15	18	30	24	23
24	31	28	26	26	21	24	18	28	07	14	17	36	05	12	14	20	18	25	15	19	31	24	24
25	32	29	26	27	21	25	18	29	08	15	17	36	05	12	15	20	19	25	16	20	31	25	25
26	32	30	26	27	22	25	19	29	08	15	18	37	06	13	15	21	19	26	16	20	31	25	26
27	32	30	27	28	22	26	19	30	09	16	18	37	06	14	16	21	19	26	17	21	32	26	27
28	33	31	27	29	22	26	20	30	09	16	18	38	07	14	16	22	20	27	17	21	32	27	28
29	33	31	28	29	23	27	20	31	09	17	19	39	07	15	16	23	20	28	17	22	33	27	29
30	33	32	28	30	23	28	20	32	10	18	19	39	07	15	17	23	20	28	18	23	33	28	30
31	7 34	17 33	7 28	17 31	7 23	17 28	7 21	17 32	7 10	17 18	7 19	17 40	7 08	17 16	7 17	17 24	7 21	17 29	7 18	17 23	7 33	17 29	31

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०८० (सन् 2023-24 ई.)

❖❖❖❖❖ (चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों (शिशुओं) का नामकरण करें।) ❖❖❖❖❖

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
मार्च 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
22/23 मार्च	रेवती	15	32	21	11	2	51	8	30
23/24 मार्च	अश्वि.	14	09	19	57	1	46	7	34
24/25 मार्च	भरणी	13	22	19	21	1	21	7	20
25/26 मार्च	कृतिका	13	19	19	25	1	38	7	50
26/27 मार्च	रोहिणी	14	01	20	22	2	44	9	05
27/28 मार्च	मृग	15	27	21	56	4	25	10	59
28/29 मार्च	आर्द्रा	17	32	0	11	6	49	13	28
29/30 मार्च	पुन	20	07	2	50	9	33	16	15
30/31 मार्च	पुष्य	22	59	5	43	12	28	19	12
1 अप्रैल	आश्ले	1	57	8	40	15	22	22	05
2/3 अप्रै.	मघा	4	48	11	27	18	06	0	45
3/4 अप्रै.	पू.फा.	7	24	13	57	20	30	3	03
4/5 अप्रै.	उ.फा.	9	36	16	06	22	31	4	58
5/6 अप्रै.	हस्त	11	23	17	43	0	02	6	22
6/7 अप्रै.	चित्रा	12	42	18	57	1	11	7	22
7/8 अप्रै.	स्वाती	13	33	19	39	1	46	7	52
8/9 अप्रै.	विशाखा	13	59	19	59	2	01	8	02
9/10 अप्रै.	अनु.	14	00	19	55	1	49	7	44
10/11 अप्रै.	ज्ये.	13	39	19	29	1	18	7	08
11/12 अप्रै.	मूल	12	58	18	43	0	29	6	14
12/13 अप्रै.	पू.षा.	11	59	17	40	23	21	5	02
13/14 अप्रै.	उ.षा.	10	43	16	22	21	59	3	37
14/15 अप्रै.	श्रवण	9	14	14	49	20	25	2	0
15/16 अप्रै.	धनि.	7	36	13	10	18	44	0	18
16 अप्रै.	शत.	5	52	11	26	16	59	22	33
17 अप्रै.	पू.भा.	4	07	9	42	15	17	20	52
18 अप्रै.	उ.भा.	2	28	8	06	13	45	19	23
19 अप्रै.	रेवती	1	01	6	44	12	27	18	10

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
अप्रैल2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
19/20 अप्रै.	अश्वि	23	53	5	42	11	32	17	21
20/21 अप्रै.	भरणी	23	11	5	08	11	06	17	03
21/22 अप्रै.	कृतिका	23	00	5	02	11	10	17	16
22/23 अप्रै.	रोहिणी	23	24	5	40	11	55	18	11
24 अप्रै.	मृग.	0	27	6	50	13	13	19	40
25 अप्रै.	आर्द्रा	2	07	8	40	15	14	21	47
26/27 अप्रै.	पुन.	4	21	11	0	17	38	0	18
27/28 अप्रै.	पुष्य	7	00	13	43	20	27	3	10
28/29 अप्रै.	आश्ले	9	53	16	36	23	20	6	03
29/30 अप्रै.	मघा	12	47	19	28	2	08	8	49
30 अप्रै/1 मई	पू.फा.	15	30	22	05	4	41	11	16
1/2 मई	उ.फा.	17	51	0	22	6	48	13	15
2/3 मई	हस्त	19	41	2	0	8	18	14	37
3/4 मई	चित्रा	20	56	3	04	9	10	15	23
4/5 मई	स्वाती	21	35	3	36	9	37	15	38
5/6 मई	विशा.	21	39	3	34	9	28	15	22
6/7 मई	अनु.	21	13	3	0	8	47	14	34
7/8 मई	ज्ये.	20	21	2	03	7	46	13	28
8/9 मई	मूल	19	10	0	49	6	28	12	06
9/10 मई	पू.षा.	17	45	23	22	4	58	10	35
10/11 मई	उ.षा.	16	12	21	49	3	26	9	02
11/12 मई	श्रवण	14	37	20	13	1	50	7	26
12/13 मई	धनि.	13	03	18	40	0	18	5	57
13/14 मई	शत.	11	35	17	15	22	56	4	36
14/15 मई	पू.भा.	10	16	15	59	21	41	3	24
15/16 मई	उ.भा.	9	08	14	55	20	41	2	28
16/17 मई	रेवती	8	15	14	06	19	57	1	48

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
मई 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
17/18 मई	अश्वि.	7	39	13	35	19	31	1	27
18/19 मई	भरणी	7	23	13	25	19	26	1	28
19/20 मई	कृतिका	7	30	13	35	19	45	1	53
20/21 मई	रोहि.	8	03	14	18	20	34	2	49
21/22 मई	मृग.	9	05	15	26	21	47	4	12
22/23 मई	आर्द्रा	10	37	17	07	23	38	6	08
23/24 मई	पुन.	12	39	19	15	1	52	8	27
24/25 मई	पुष्य	12	06	19	33	3	0	10	27
25/26 मई	आश्ले	17	54	0	38	7	22	14	06
26/27 मई	मघा	20	50	0	33	10	17	17	0
27/28 मई	पू.फा.	23	43	6	22	13	02	19	41
29 मई	उ.फा.	2	20	8	55	15	27	21	58
30 मई	हस्त	4	29	10	52	17	14	23	37
31 मई/1जून	चित्रा	6	0	12	15	18	30	0	37
1/2 जून	स्वाती	6	48	12	49	18	51	0	52
2/3 जून	विशा.	6	53	12	45	18	36	0	29
3 जून	अनु.	6	16	11	58	17	40	23	22
4 जून	ज्ये.	5	04	10	39	16	13	21	48
5 जून	मूल	3	23	8	53	14	23	19	53
6 जून	पू.षा.	1	23	6	50	12	18	17	45
6/7 जून	उ.षा.	23	13	4	40	10	08	15	35
7/8 जून	श्रवण	21	03	2	32	8	01	13	30
8/9 जून	धनि.	18	59	0	30	6	02	11	35
9/10 जून	शत.	17	09	22	46	4	24	10	01
10/11 जून	पू.भा.	15	39	21	20	3	04	8	46
11/12 जून	उ.भा.	14	32	20	21	2	11	8	0
12/13 जून	रेवती	13	50	19	46	1	41	7	37
13/14 जून	अश्वि.	13	33	19	35	1	36	7	38

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
जून 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
14/15 जून	भरणी	13	40	19	48	1	56	8	04
15/16 जून	कृति.	14	11	20	24	2	37	8	52
16/17 जून	रोहि.	15	07	21	26	3	46	10	05
17/18 जून	मृग.	16	25	22	48	5	13	11	40
18/19 जून	आर्द्रा	18	07	0	38	7	09	13	40
19/20 जून	पुन.	20	11	2	46	9	22	15	58
20/21 जून	पुष्य	22	37	5	18	11	59	18	40
22 जून	आश्ले.	1	21	8	05	14	50	21	34
23/24 जून	मघा	4	18	11	03	17	48	0	33
24/25 जून	पू.फा.	7	18	14	01	20	45	3	28
25/26 जून	उ.फा.	10	11	16	52	23	30	6	08
26/27 जून	हस्त	12	44	19	14	1	43	8	13
27/28 जून	चित्रा	14	43	21	04	3	28	9	44
28/29 जून	स्वाती	16	01	22	08	4	16	10	23
29/30 जून	विशा.	16	30	22	27	4	22	10	20
30जू/1जुला.	अनु.	16	10	21	53	3	37	9	21
1/2 जुला.	ज्ये.	15	04	20	37	2	11	7	44
2/3 जुला.	मूल	13	18	18	44	0	10	5	36
3/4 जुला.	पू.षा.	11	02	16	23	21	43	3	04
4/5 जुला.	उ.षा.	8	25	13	44	19	02	0	21
5 जुला.	श्रवण	5	40	10	59	16	18	21	37
6 जुला.	धनि.	2	56	8	17	13	39	19	01
7 जुला.	शत.	0	25	5	53	11	20	16	48
7/8 जुला.	पू.भा.	22	16	3	50	9	24	14	58
8/9 जुला.	उ.भा.	20	36	2	19	8	03	13	46
9/10 जुला	रेवती	19	30	1	22	7	15	13	07
10/11 जुला	अश्वि.	18	59	1	0	7	02	13	03
11/12 जुला	भरणी	19	05	1	15	7	24	13	34
12/13 जुला	कृति	19	44	1	58	8	16	14	34
13/14 जुला	रोहि	20	56	3	16	9	39	16	03
14/15 जुला	मृग.	22	27	4	54	11	22	17	52
16 जुला	आर्द्रा	0	23	6	57	13	31	20	05
17 जुला	पुन.	2	39	9	17	15	54	22	32

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
जुला. 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
18/19 जुला	पुष्य	5	11	11	53	18	34	1	16
19/20 जुला	आश्ले.	7	58	14	12	21	27	4	11
20/21 जुला	मघा	10	55	17	41	0	26	7	12
21/22 जुला	पू.फा.	13	58	20	43	3	29	10	45
22/23 जुला	उ.फा.	16	59	23	42	6	24	13	06
23/24 जुला	हस्त	19	47	2	23	9	0	15	36
24/25 जुला	चित्रा	22	12	4	42	11	13	17	37
26 जुला	स्वाती	0	03	6	20	12	36	18	53
27 जुला	विशा.	1	10	7	15	13	21	19	28
28 जुला	अनु.	1	28	7	20	13	11	19	03
29 जुला	ज्ये.	0	55	6	35	12	15	17	55
29/30 जुला	मूल	23	35	5	04	10	34	16	04
30/31 जुला	पू.,षा.	21	33	2	54	8	16	13	37
31जु/1 अग.	उ.षा.	18	58	0	16	5	32	10	48
1/2 अग.	श्रवण	16	03	21	17	2	30	7	44
2/3 अग.	धनि.	12	58	18	12	23	26	4	41
3/4 अग.	शत.	9	56	15	14	20	32	1	50
4 अग.	पू.भा.	7	08	12	30	17	55	23	18
5 अग.	उ.भा.	4	45	10	17	15	50	21	22
6 अग.	रेवती	2	54	8	36	14	19	20	02
7 अग.	अश्वि.	1	44	7	37	13	30	19	23
8 अग.	भरणी	1	16	7	20	13	24	19	28
9 अग.	कृतिका	1	32	7	43	14	0	20	14
10 अग.	रोहि.	2	29	8	52	15	15	21	38
11 अग.	मृग.	4	01	10	30	16	59	23	32
12/13 अग.	आर्द्रा	6	03	12	39	19	15	1	51
13/14 अग.	पुर्न	8	27	15	07	21	46	4	26
14/15 अग.	पुष्य	11	07	17	50	0	33	7	16
15/16 अग.	आश्ले.	13	59	20	43	3	28	10	13
16/17 अग.	मघा	16	57	23	42	6	28	13	13
17/18 अग.	पू.फा.	19	58	2	43	9	27	16	12
18/19 अग.	उ.फा.	22	57	5	41	12	22	19	05
20 अग.	हस्त	1	48	8	26	15	05	21	43

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
अग. 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
21/22 अग.	चित्रा	4	22	10	56	17	30	0	02
22/23 अग.	स्वाती	6	32	12	56	19	20	1	44
23/24 अग.	विशा.	8	08	14	23	20	38	2	54
24/25 अग.	अनु.	9	04	5	06	21	09	3	11
25/26 अग.	ज्ये.	9	14	15	05	20	56	2	47
26/27 अग.	मूल	8	38	14	17	19	57	1	36
27 अग.	पू.षा.	7	16	12	45	18	15	23	45
28 अग.	उ.षा.	5	15	10	40	16	0	21	22
29 अग.	श्रवण	2	43	8	0	13	16	18	33
29/30 अग.	धनि.	23	50	5	04	10	19	15	33
30/31 अग.	शत.	20	47	2	01	7	16	12	31
31अ/1सितं.	पू.भा.	17	45	23	02	4	19	9	36
1/2 सितं.	उ.भा.	14	56	20	20	1	44	7	07
2/3 सितं.	रेवती	12	31	18	03	23	35	10	39
3/4 सितं.	अश्वि.	10	39	16	21	22	03	3	45
4/5 सितं.	भरणी	9	27	15	20	21	13	3	07
5/6 सितं.	कृति	9	0	15	01	21	08	3	14
6/7 सितं.	रोहि	9	20	15	36	21	52	4	08
7/8 सितं.	मृग.	10	25	16	49	23	13	5	41
8//9 सितं.	आर्द्रा	12	10	18	44	1	18	7	52
9/10 सितं.	पुर्न	14	26	21	05	3	45	10	25
10/11 सितं.	पुष्य	17	07	23	50	6	33	13	17
11/12सितं.	आश्ले.	20	01	2	46	9	31	16	16
12/13सितं.	मघा	23	01	5	46	12	31	19	16
14 सितं.	पू.फा.	2	01	8	44	15	27	22	10
15/16सितं.	उ.फा.	4	54	11	36	18	16	0	56
16/17सितं.	हस्त	7	36	14	12	21	48	5	25
17/18सितं.	चित्रा	10	02	16	34	23	08	5	39
18/19सितं.	स्वाती	12	08	18	33	0	58	7	23
19/20सितं.	विशा.	13	48	20	06	2	25	8	44
20/21सितं.	अनु.	14	59	21	08	3	17	9	26
21/22सितं.	ज्ये.	15	35	21	35	3	35	9	35
22/23सितं.	मूल	15	35	21	25	3	15	9	06

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
सितं. 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
23/24सितं.	पू.षा.	14	56	20	37	2	19	8	01
24/25सितं.	उ.षा.	13	42	19	18	0	50	6	24
25/26सितं.	श्रवण	11	55	17	21	22	48	4	15
26/27सितं.	धनि.	9	42	15	05	20	28	1	49
27 सितं.	शत.	7	10	12	29	17	49	23	09
28 सितं.	पू.भा.	4	29	9	49	15	09	20	28
29 सितं.	उ.भा.	1	49	7	11	12	33	17	55
29/30सितं.	रेवती	23	18	4	45	10	12	15	40
30सि/1अक्तू.	अश्वि.	21	08	2	43	8	18	13	53
1/2 अक्तू.	भरणी	19	28	1	12	6	56	12	40
2/3 अक्तू.	कृति	18	24	0	15	6	12	12	08
3/4 अक्तू.	रोहि.	18	04	0	10	6	16	12	22
4/5 अक्तू.	मृग.	18	29	0	44	6	59	13	19
5/6 अक्तू.	आर्द्रा	19	40	2	08	8	36	15	04
6/7 अक्तू.	पुन.	21	32	4	06	10	43	17	18
7/8 अक्तू.	पुष्य	23	57	6	39	13	21	19	03
9 अक्तू.	आश्ले.	2	45	9	30	16	15	23	0
10/11अक्तू.	मघा	5	45	12	30	19	15	2	0
11/12अक्तू.	पू.फा.	8	45	15	27	22	10	4	53
12/13अक्तू.	उ.फा.	11	36	18	17	0	55	7	33
13/14अक्तू.	हस्त	14	11	20	44	3	18	9	51
14/15अक्तू.	चित्रा	16	24	22	52	5	21	11	46
15/16अक्तू.	स्वाती	18	12	0	32	6	53	13	14
16/17अक्तू.	विशा	19	35	1	50	8	05	14	20
17/18अक्तू.	अनु.	20	31	2	38	8	46	14	54
18/19अक्तू.	ज्ये.	21	01	3	01	9	02	15	03
19/20अक्तू.	मूल	21	04	2	58	8	53	14	47
20/21अक्तू.	पू.षा.	20	41	2	29	8	17	14	06
21/22अक्तू.	उ.षा.	19	54	1	39	7	20	13	03
22/23अक्तू.	श्रवण	18	44	0	21	5	59	11	37
23/24अक्तू.	धनि.	17	14	22	48	4	23	9	56
24/25अक्तू.	शत.	15	28	20	58	2	29	8	0
25/26अक्तू.	पू.भा.	13	30	18	59	0	28	5	58

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
अक्तू. 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
26/27 अक्तू	उ.भा.	11	27	16	56	22	25	3	55
27/28 अक्तू	रेवती	9	25	14	56	20	28	2	0
28/29 अक्तू	अश्वि.	7	31	13	06	18	42	0	18
29 अक्तू	भरणी	5	54	11	36	17	18	23	0
30 अक्तू	कृति	4	42	10	28	16	19	22	09
31 अक्तू	रोहि.	4	01	10	0	15	59	21	58
1 नवं.	मृग.	3	58	10	04	16	12	22	25
2 नवं.	आर्द्रा	4	36	10	56	17	17	23	47
3/4 नवं.	पुन.	5	57	12	26	18	55	1	24
4/5 नवं.	पुष्य	7	57	14	35	21	13	3	51
5/6 नवं.	आश्ले.	10	29	17	12	23	55	6	39
6/7 नवं.	मघा	13	23	20	08	2	53	9	38
7/8 नवं.	पू.फा.	16	24	23	07	5	51	12	35
8/9 नवं.	उ.फा.	19	19	2	01	8	39	15	19
9/10 नवं.	हस्त	21	57	4	29	11	02	17	35
11 नवं.	चित्रा	0	08	6	34	13	02	19	25
12 नवं.	स्वाती	1	47	8	03	14	19	20	35
13 नवं.	विशा.	2	51	9	01	15	09	21	18
14 नवं.	अनु.	3	23	9	23	15	23	21	23
15 नवं.	ज्ये.	3	24	9	18	15	12	21	06
16 नवं.	मूल	3	01	8	50	14	39	20	28
17 नवं.	पू.षा.	2	17	8	02	13	47	19	32
18 नवं.	उ.षा.	1	17	7	01	12	42	18	25
19 नवं.	श्रवण	0	07	5	47	11	27	17	08
19/20 नवं.	धनि.	22	49	4	29	10	08	15	48
20/21 नवं.	शत.	21	26	3	04	8	46	14	22
21/22 नवं.	पू.भा.	20	01	1	40	7	19	12	58
22/23 नवं.	उ.भा.	18	37	0	16	5	56	11	36
23/24 नवं.	रेवती	17	16	22	57	4	38	10	20
24/25 नवं.	अश्वि.	16	01	21	44	3	28	9	12
25/26 नवं.	भरणी	14	56	20	43	2	31	8	19
26/27 नवं.	कृति	14	06	19	56	1	50	7	43
27/28 नवं.	रोहि	13	36	19	35	1	34	7	33

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
नवं. 2023	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
28/29 नवं.	मृग.	13	32	19	36	1	41	7	50
29/30 नवं.	आर्द्रा	13	59	20	14	2	30	8	46
30न/1दिसं.	पुर्न	15	02	21	24	3	49	10	12
1/2 दिसं.	पुष्य	16	41	23	14	5	47	12	20
2/3 दिसं.	आश्ले.	18	54	1	34	8	15	14	56
3/4 दिसं.	मघा	21	36	4	20	11	05	17	50
5 दिसं.	पू.फा.	0	35	7	20	14	06	20	52
6 दिसं.	उ.फा.	3	38	10	22	17	03	23	46
7/8 दिसं.	हस्त	6	29	13	05	19	41	2	17
8/9 दिसं.	चित्रा	8	54	15	23	21	53	4	17
9/10 दिसं.	स्वाती	10	43	16	59	23	16	5	33
10/11दिसं.	विशा	11	50	17	58	0	04	6	12
11/12दिसं.	अनु.	12	14	18	09	0	05	6	01
12/13दिसं.	ज्ये.	11	57	17	44	23	31	5	18
13/14दिसं.	मूल	11	05	16	45	22	46	4	07
14/15दिसं.	पू.षा.	9	47	15	23	20	59	2	35
15/16दिसं.	उ.षा.	8	11	13	45	19	19	0	52
16 दिसं.	श्रवण	6	25	11	58	17	31	23	04
17 दिसं.	धनि.	4	37	10	11	15	45	21	21
18 दिसं.	शत.	2	55	8	31	14	08	19	45
19 दिसं.	पू.भा.	1	22	7	01	12	41	18	21
20 दिसं.	उ.भा.	0	02	5	46	11	28	17	13
20/21दिसं.	रेवती	22	58	4	45	10	33	16	21
21/22दिसं.	अश्वि.	22	09	4	00	9	52	15	44
22/23दिसं.	भरणी	21	36	3	31	9	27	15	23
23/24दिसं.	कृति	21	19	3	17	9	18	15	18
24/25दिसं.	रोहि.	21	19	3	24	9	29	15	34
25/26दिसं.	मृग.	21	39	3	47	9	57	16	10
26/27दिसं.	आर्द्रा	22	21	4	38	10	55	17	12
27/28दिसं.	पुन.	23	29	5	52	12	15	18	38
29 दिसं.	पुष्य	01	05	7	36	14	08	20	39
30 दिसं.	आश्ले.	03	10	9	48	16	26	23	04

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण→		1		2		3		4	
जन. 2024	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
31/1जन.(2024)	मघा	5	42	12	25	19	08	1	52
1/2 जन.	पू.फा.	8	36	15	22	22	09	4	56
2/3 जन.	उ.फा.	11	42	18	29	1	15	8	47
3/4 जन.	हस्त	14	46	21	28	4	10	10	52
4/5 जन.	चित्रा	17	34	0	10	6	46	13	18
5/6 जन.	स्वा.	19	50	2	13	8	37	15	00
6/7 जन.	विशा.	21	23	3	37	9	48	16	02
7/8 जन.	अनु.	22	08	4	06	10	05	16	04
8/9 जन.	ज्ये.	22	03	3	50	9	37	15	24
9/10 जन.	मूल	21	11	2	48	8	26	14	03
10/11 जन.	पू.षा.	19	40	1	09	6	39	12	09
11/12 जन.	उ.षा.	17	39	23	05	4	29	9	54
12/13 जन.	श्रवण	15	18	20	41	2	04	7	27
13/14 जन.	धनि.	12	50	18	12	23	35	4	59
14/15 जन.	शत.	10	23	15	49	21	15	2	41
15/16 जन.	पू.भा.	8	07	13	37	19	06	0	37
16 जन.	उ.भा.	6	10	11	47	17	24	23	01
17 जन.	रेवती	4	38	10	22	16	06	22	50
18 जन.	अश्वि.	3	34	9	25	15	16	21	07
19 जन.	भरणी	2	58	8	56	14	55	20	53
20 जन.	कृति.	2	51	8	53	14	58	21	04
21 जन.	रोहि.	3	09	9	19	15	30	21	41
22 जन.	मृग.	3	52	10	07	16	23	22	41
23/24 जन.	आर्द्रा	4	59	11	21	17	43	0	05
24/25 जन.	पुर्न	6	27	12	53	19	20	1	47
25/26 जन.	पुष्य	8	17	14	49	21	22	3	55
26/27 जन.	आश्ले	10	28	17	06	23	44	6	22
27/28 जन.	मघा	13	01	19	44	2	27	9	10
28/29 जन.	पू.फा.	15	53	22	39	5	25	12	11
29/30 जन.	उ.फा.	18	57	1	45	8	33	15	20
30/31 जन.	हस्त	22	06	4	51	11	37	18	23
1 फर.	चित्रा	1	08	7	50	14	32	21	11
2 फर.	स्वा.	3	49	10	21	16	53	23	25

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
फर. 2024	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
3/4 फर.	विशा.	5	57	12	20	18	41	1	04
4/5 फर.	अनु.	7	21	13	29	19	37	1	45
5/6 फर.	ज्ये.	7	54	13	49	19	45	1	40
6/7 फर.	मूल	7	35	13	18	19	01	0	44
7 फर.	पू.षा.	6	27	11	59	17	32	23	05
8 फर.	उ.षा.	4	37	10	04	15	28	20	52
9 फर.	श्रवण	2	14	7	32	12	51	18	10
9/10 फर.	धनि.	23	29	4	45	10	02	15	18
10/11 फर.	शत.	20	34	1	50	7	07	12	24
11/12 फर.	पू.भा.	17	40	22	58	4	17	9	36
12/13 फर.	उ.भा.	14	57	20	21	1	46	7	11
13/14 फर.	रेवती	12	36	18	07	23	39	5	11
14/15 फर.	अश्वि.	10	43	16	23	22	04	3	45
15/16 फर.	भरणी	9	26	15	16	21	06	2	57
16/17 फर.	कृति.	8	47	14	43	20	44	2	45
17/18 फर.	रोहि.	8	46	14	55	21	04	3	14
18/19 फर.	मृग.	9	23	15	38	21	54	4	12
19/20 फर.	आर्द्रा	10	33	16	58	23	23	5	48
20/21 फर.	पुन.	12	13	18	43	1	14	7	44
21/22 फर.	पुष्य	14	18	20	54	3	31	10	07
22/23 फर.	आश्ले	16	43	23	23	6	04	12	45
23/24 फर.	मघा	19	26	2	09	8	53	15	37
24/25 फर.	पू.फा.	22	21	5	06	11	52	18	38
26 फर.	उ.फा.	1	24	8	11	14	58	21	45
27/28 फर.	हस्त	4	31	11	16	18	02	0	48
28/29 फर.	चित्रा	7	33	14	16	21	00	3	41
29फर/1मार्च	स्वा.	10	22	16	58	23	35	6	12
1/2 मार्च	विशा.	12	49	19	18	1	48	8	17
2/3 मार्च	अनु.	14	42	21	00	3	19	9	37
3/4 मार्च	ज्ये.	15	55	22	01	4	08	10	14
4/5 मार्च	मूल	16	21	22	15	4	10	10	05
5/6 मार्च	पू.षा.	16	00	21	43	3	26	9	09
6/7 मार्च	उ.षा.	14	52	20	28	2	00	7	31

चन्द्र नक्षत्र चरण →		1		2		3		4	
मार्च 2024	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
7/8 मार्च	श्रवण	13	03	18	27	23	52	5	17
8/9 मार्च	धनि.	10	41	16	00	21	20	2	38
9 मार्च	शत.	7	55	13	10	18	26	23	41
10 मार्च	पू.भा.	4	56	10	10	15	25	20	40
11 मार्च	उ.भा.	1	55	7	12	12	29	17	46
11/12 मार्च	रेवती	23	03	4	24	9	46	15	08
12/13 मार्च	अश्वि.	20	30	1	58	7	27	12	56
13/14 मार्च	भरणी	18	25	0	02	5	40	11	18
14/15 मार्च	कृति.	16	56	22	40	4	30	10	18
15/16 मार्च	रोहि.	16	08	22	07	4	07	10	06
16/17 मार्च	मृग.	16	06	22	14	4	21	10	34
17/18 मार्च	आर्द्रा	16	47	23	08	5	29	11	50
18/19 मार्च	पुन.	18	11	0	38	7	08	13	37
19/20 मार्च	पुष्य	20	10	2	47	9	24	16	01
20/21 मार्च	आश्ले.	22	38	5	20	12	03	18	45
22 मार्च	मघा	1	27	8	12	14	58	21	43
23/24 मार्च	पू.फा.	4	28	11	14	18	01	0	48
24/25 मार्च	उ.फा.	7	34	14	20	21	06	3	52
25/26 मार्च	हस्त	10	38	17	22	0	06	6	50
26/27 मार्च	चित्रा	13	34	20	15	2	57	9	38
27/28 मार्च	स्वा.	16	16	22	51	5	27	12	03
28/29 मार्च	विशा.	18	38	1	08	7	39	14	09
29/30 मार्च	अनु.	20	36	2	58	9	20	15	42
30/31 मार्च	ज्ये.	22	04	4	17	10	30	16	44
31मा/1अप्रै.	मूल	22	57	5	00	11	04	17	08
1/2 अप्रै.	पू.षा.	23	12	5	06	11	01	16	55
2/3 अप्रै.	उ.षा.	22	49	4	37	10	21	16	06
3/4 अप्रै.	श्रव.	21	48	3	24	9	00	14	36
4/5 अप्रै.	धनि.	20	12	1	41	7	13	12	40
5/6 अप्रै.	शत.	18	07	23	30	4	53	10	16
6/7 अप्रै.	पू.भा.	15	40	20	59	2	20	7	40
7/8 अप्रै.	उ.भा.	12	58	18	16	23	35	4	54
8/9 अप्रै.	रेवती	10	13	-	-	-	-	-	-

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रात: साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको **15 अप्रैल, 2023 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **15 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (0-00°-35′-36″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रात: साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 15 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (16) अप्रै. में से 15 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (58′/47″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-08) कला तथा 30 मिनट की गति (1.13) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.21) हुई, इसको **15 अप्रैल प्रात: 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 15 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (0-00°-53′-57″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे) (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2080 (सन् 2023–24 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। (21 मार्च से 22 अप्रै. तक) 1 अप्रैल, 2023 ई० को अयनांश = 24°/10′/45″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	मार्च
मार्च	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
21	11 53 2	11 5 55 45	10 26 3 7	2 3 40 40	11 9 26 55	11 22 18 49	0 10 42 25	10 7 21 47	0 11 50 40	0 10 11 59	+0 3	−7 12	21
22	11 56 58	11 6 55 23	11 10 38 59	2 4 9 2	11 11 27 27	11 22 33 3	0 11 54 25	10 7 28 26	0 11 47 29	0 10 8 6	0 26	−0 26	22
23	12 0 55	11 7 54 58	11 24 56 47	2 4 37 33	11 13 28 21	11 22 47 19	0 13 6 22	10 7 35 4	0 11 44 18	0 10 5 44	0 50	+6 14	23
24	12 4 51	11 8 54 32	0 8 51 50	2 5 6 15	11 15 29 21	11 23 1 36	0 14 18 12	10 7 41 40	0 11 41 7	0 10 4 58	1 14	12 25	24
25	12 8 48	11 9 54 3	0 22 21 54	2 5 35 6	11 17 30 15	11 23 15 54	0 15 29 59	10 7 48 11	0 11 37 57	0 10 5 32	1 37	17 51	25
26	12 12 45	11 10 53 32	1 5 27 10	2 6 4 7	11 19 30 46	11 23 30 13	0 16 41 39	10 7 54 42	0 11 34 46	0 10 6 57	2 1	22 15	26
27	12 16 41	11 11 52 59	1 18 9 46	2 6 33 17	11 21 30 36	11 23 44 34	0 17 53 14	10 8 1 9	0 11 31 35	0 10 8 38	2 24	25 28	27
28	12 20 38	11 12 52 24	2 0 33 10	2 7 2 36	11 23 29 24	11 23 58 56	0 19 4 44	10 8 7 35	0 11 28 24	0 10 9 59	2 48	27 22	28
29	12 24 34	11 13 51 46	2 12 41 42	2 7 32 5	11 25 26 52	11 24 13 18	0 20 16 9	10 8 13 57	0 11 25 14	0 10 10 32	3 11	27 54	29
30	12 28 31	11 14 51 6	2 24 40 10	2 8 1 41	11 27 22 34	11 24 27 42	0 21 27 28	10 8 20 17	0 11 22 3	0 10 10 1	3 35	27 6	30
31	12 32 27	11 15 50 23	3 6 33 19	2 8 31 26	11 29 16 8	11 24 42 6	0 22 38 41	10 8 26 34	0 11 18 52	0 10 8 23	3 58	25 5	31
अप्रै.	12 36 24	11 16 49 38	3 18 25 32	2 9 1 19	0 1 7 10	11 24 56 31	0 23 49 49	10 8 32 49	0 11 15 42	0 10 5 45	4 21	21 59	अप्रै.
2	12 40 20	11 17 48 52	4 0 20 53	2 9 31 20	0 2 55 14	11 25 10 57	0 25 0 50	10 8 39 00	0 11 12 31	0 10 2 27	4 44	17 58	2
3	12 44 17	11 18 48 2	4 12 22 48	2 10 1 29	0 4 39 58	11 25 25 23	0 26 11 46	10 8 45 9	0 11 9 20	0 9 58 53	5 8	13 13	3
4	12 48 14	11 19 47 11	4 24 33 56	2 10 31 45	0 6 20 58	11 25 39 51	0 27 22 35	10 8 51 14	0 11 6 9	0 9 55 28	5 31	7 53	4
5	12 52 10	11 20 46 17	5 6 56 23	2 11 2 9	0 7 57 54	11 25 54 18	0 28 33 18	10 8 57 17	0 11 2 59	0 9 52 37	5 53	+2 11	5
6	12 56 7	11 21 45 22	5 19 31 21	2 11 32 40	0 9 30 24	11 26 8 46	0 29 43 55	10 9 3 16	0 10 59 48	0 9 50 36	6 16	−3 43	6
7	13 0 3	11 22 44 24	6 2 19 30	2 12 3 18	0 10 58 10	11 26 23 14	1 0 54 25	10 9 9 13	0 10 56 37	0 9 49 35	6 39	−9 35	7
8	13 4 0	11 23 43 24	6 15 20 57	2 12 34 3	0 12 20 56	11 26 37 42	1 2 4 48	10 9 15 6	0 10 53 27	0 9 49 31	7 1	−15 9	8
9	13 7 56	11 24 42 23	6 28 35 33	2 13 4 54	0 13 38 27	11 26 52 11	1 3 15 5	10 9 20 56	0 10 50 16	0 9 50 12	7 24	−20 6	9
10	13 11 53	11 25 41 19	7 12 2 56	2 13 35 53	0 14 50 30	11 27 6 40	1 4 25 16	10 9 26 42	0 10 47 5	0 9 51 18	7 46	−24 7	10
11	13 15 49	11 26 40 14	7 25 42 36	2 14 6 57	0 15 56 53	11 27 21 8	1 5 35 20	10 9 32 26	0 10 43 55	0 9 52 29	8 8	−26 50	11
12	13 19 46	11 27 39 7	8 9 33 50	2 14 38 8	0 16 57 26	11 27 35 36	1 6 45 16	10 9 38 6	0 10 40 44	0 9 53 24	8 30	−27 56	12
13	13 23 43	11 28 37 58	8 23 35 44	2 15 9 26	0 17 52 1	11 27 50 6	1 7 55 6	10 9 43 42	0 10 37 33	0 9 53 51	8 52	−27 16	13
14	13 27 39	11 29 36 48	9 7 46 50	2 15 40 50	0 18 40 32	11 28 4 33	1 9 4 49	10 9 49 15	0 10 34 22	0 9 53 44	9 14	−24 51	14
15	13 31 36	0 0 35 36	9 22 5 00	2 16 12 20	0 19 22 53	11 28 19 2	1 10 14 25	10 9 54 44	0 10 31 12	0 9 53 10	9 36	−20 52	15
16	13 35 32	0 1 34 23	10 6 27 19	2 16 43 56	0 19 59 2	11 28 33 30	1 11 23 53	10 10 0 10	0 10 28 1	0 9 52 18	9 57	−15 39	16
17	13 39 29	0 2 33 7	10 20 49 52	2 17 15 39	0 20 28 54	11 28 47 58	1 12 33 15	10 10 5 31	0 10 24 50	0 9 51 23	10 18	−9 35	17
18	13 43 25	0 3 31 50	11 5 8 19	2 17 47 27	0 20 52 31	11 29 2 25	1 13 42 29	10 10 10 49	0 10 21 39	0 9 50 38	10 40	−3 2	18
19	13 47 22	0 4 30 31	11 19 17 59	2 18 19 21	0 21 9 52	11 29 16 52	1 14 51 36	10 10 16 3	0 10 18 29	0 9 50 8	11 0	+3 37	19
20	13 51 18	0 5 29 10	0 3 14 30	2 18 51 21	0 21 21 2	11 29 31 19	1 16 0 35	10 10 21 13	0 10 15 18	0 9 49 58	11 21	9 59	20
21	13 55 15	0 6 27 47	0 16 54 25	2 19 23 26	0 21 26 8	11 29 45 44	1 17 9 25	10 10 26 19	0 10 12 7	0 9 50 3	11 42	15 46	21
22	13 59 12	0 7 26 22	1 0 15 29	2 19 55 37	0 21 25 18	0 0 0 9	1 18 18 8	10 10 31 22	0 10 8 56	0 9 50 16	12 2	20 40	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मिं.)

(23 अप्रैल से 27 मई 2023 ई. तक)

1 मई, 2023 ई० को अयनांश = 24°/10'/48"

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अप्रैल
अप्रै.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
23	14 3 8	0 8 24 55	1 13 16 49	2 20 27 54	0 21 18 46	0 0 14 33	1 19 26 42	10 10 36 20	0 10 5 46	0 9 50 29	+12 22	+24 26	23
24	14 7 5	0 9 23 27	1 25 59 2	2 21 0 15	0 21 6 47	0 0 28 57	1 20 35 7	10 10 41 13	0 10 2 35	0 9 50 37	12 42	26 53	24
25	14 11 1	0 10 21 56	2 8 24 5	2 21 32 42	0 20 49 41	0 0 43 19	1 21 43 23	10 10 46 3	0 9 59 24	0 9 50 37	13 2	27 55	25
26	14 14 58	0 11 20 23	2 20 35 0	2 22 5 14	0 20 27 53	0 0 57 40	1 22 51 31	10 10 50 48	0 9 56 13	0 9 50 31	13 22	27 35	26
27	14 18 54	0 12 18 47	3 2 35 32	2 22 37 51	0 20 1 50	0 1 12 0	1 23 59 29	10 10 55 29	0 9 53 3	0 9 50 22	13 41	25 56	27
28	14 22 51	0 13 17 10	3 14 30 4	2 23 10 32	0 19 32 4	0 1 26 19	1 25 7 17	10 11 0 6	0 9 49 52	0 9 50 17	+14 00	23 10	28
29	14 26 47	0 14 15 31	3 26 23 11	2 23 43 18	0 18 59 10	0 1 40 36	1 26 14 55	10 11 4 38	0 9 46 41	0 9 50 22	14 19	19 26	29
30	14 30 44	0 15 13 49	4 8 19 27	2 24 16 8	0 18 23 44	0 1 54 52	1 27 22 23	10 11 9 6	0 9 43 30	0 9 50 39	14 38	14 55	30
मई	14 34 41	0 16 12 6	4 20 23 19	2 24 49 3	0 17 46 30	0 2 9 7	1 28 29 41	10 11 13 29	0 9 40 20	0 9 51 11	14 56	9 47	मई
2	14 38 37	0 17 10 21	5 2 38 40	2 25 22 3	0 17 8 6	0 2 23 20	1 29 36 48	10 11 17 47	0 9 37 9	0 9 51 52	15 14	+4 12	2
3	14 42 34	0 18 8 33	5 15 8 43	2 25 55 6	0 16 29 17	0 2 37 32	2 0 43 44	10 11 22 1	0 9 33 58	0 9 52 36	15 32	−1 40	3
4	14 46 30	0 19 6 44	5 27 55 49	2 26 28 14	0 15 50 43	0 2 51 42	2 1 50 29	10 11 26 11	0 9 30 47	0 9 53 11	15 50	−7 36	4
5	14 50 27	0 20 4 53	6 11 1 8	2 27 1 25	0 15 13 5	0 3 5 50	2 2 57 3	10 11 30 15	0 9 27 37	0 9 53 26	16 7	−13 21	5
6	14 54 23	0 21 3 00	6 24 24 37	2 27 34 41	0 14 37 2	0 3 19 57	2 4 3 25	10 11 34 15	0 9 24 26	0 9 53 11	16 24	−18 38	6
7	14 58 20	0 22 1 5	7 8 4 57	2 28 8 1	0 14 3 9	0 3 34 2	2 5 9 36	10 11 38 10	0 9 21 15	0 9 52 21	16 41	−23 3	7
8	15 2 16	0 22 59 9	7 21 59 36	2 28 41 24	0 13 31 58	0 3 48 5	2 6 15 34	10 11 42 1	0 9 18 4	0 9 51 00	16 58	−26 14	8
9	15 6 13	0 23 57 11	8 6 5 20	2 29 14 52	0 13 3 58	0 4 2 6	2 7 21 19	10 11 45 46	0 9 14 54	0 9 49 19	17 14	−27 49	9
10	15 10 10	0 24 55 12	8 20 18 19	2 29 48 23	0 12 39 32	0 4 16 5	2 8 26 52	10 11 49 26	0 9 11 43	0 9 47 33	17 30	−27 35	10
11	15 14 6	0 25 53 12	9 4 34 45	3 0 21 58	0 12 19 00	0 4 30 2	2 9 32 13	10 11 53 2	0 9 8 32	0 9 46 4	17 45	−25 32	11
12	15 18 3	0 26 51 10	9 18 51 9	3 0 55 37	0 12 2 38	0 4 43 57	2 10 37 20	10 11 56 32	0 9 5 21	0 9 45 10	18 1	−21 52	12
13	15 21 59	0 27 49 7	10 3 4 34	3 1 29 20	0 11 50 38	0 4 57 50	2 11 42 14	10 11 59 58	0 9 2 11	0 9 45 0	18 16	−16 57	13
14	15 25 56	0 28 47 3	10 17 12 37	3 2 3 6	0 11 43 7	0 5 11 41	2 12 46 54	10 12 3 18	0 8 59 00	0 9 45 34	18 31	−11 9	14
15	15 29 52	0 29 44 58	11 1 13 28	3 2 36 57	0 11 40 11	0 5 25 29	2 13 51 20	10 12 6 33	0 8 55 49	0 9 46 41	18 45	−4 50	15
16	15 33 49	1 0 42 51	11 15 5 29	3 3 10 51	0 11 41 52	0 5 39 15	2 14 55 32	10 12 9 43	0 8 52 38	0 9 47 58	18 59	+1 39	16
17	15 37 45	1 1 40 43	11 28 47 14	3 3 44 48	0 11 48 9	0 5 52 58	2 15 59 29	10 12 12 48	0 8 49 28	0 9 48 57	19 13	8 0	17
18	15 41 42	1 2 38 34	0 12 17 22	3 4 18 50	0 11 59 2	0 6 6 39	2 17 3 12	10 12 15 47	0 8 46 17	0 9 49 12	19 27	13 53	18
19	15 45 39	1 3 36 23	0 25 34 37	3 4 52 55	0 12 14 25	0 6 20 17	2 18 6 38	10 12 18 41	0 8 43 6	0 9 48 21	19 40	19 3	19
20	15 49 35	1 4 34 11	1 8 37 57	3 5 27 3	0 12 34 14	0 6 33 53	2 19 9 49	10 12 21 29	0 8 39 55	0 9 46 17	19 53	23 12	20
21	15 53 32	1 5 31 58	1 21 26 48	3 6 1 15	0 12 58 23	0 6 47 25	2 20 12 43	10 12 24 12	0 8 36 45	0 9 43 4	20 5	26 7	21
22	15 57 28	1 6 29 43	2 4 1 13	3 6 35 31	0 13 26 46	0 7 0 55	2 21 15 20	10 12 26 50	0 8 33 34	0 9 38 58	20 17	27 40	22
23	16 1 25	1 7 27 27	2 16 22 5	3 7 9 49	0 13 59 16	0 7 14 21	2 22 17 40	10 12 29 22	0 8 30 23	0 9 34 28	20 29	27 48	23
24	16 5 21	1 8 25 9	2 28 31 7	3 7 44 11	0 14 35 45	0 7 27 45	2 23 19 41	10 12 31 48	0 8 27 12	0 9 30 3	20 41	26 34	24
25	16 9 18	1 9 22 50	3 10 30 59	3 8 18 37	0 15 16 8	0 7 41 5	2 24 21 24	10 12 34 9	0 8 24 1	0 9 26 13	20 52	24 8	25
26	16 13 14	1 10 20 29	3 22 25 7	3 8 53 5	0 16 0 17	0 7 54 22	2 25 22 47	10 12 36 24	0 8 20 50	0 9 23 24	21 3	20 42	26
27	16 17 11	1 11 18 7	4 4 17 34	3 9 27 36	0 16 48 5	0 8 7 36	2 26 23 50	10 12 38 34	0 8 17 40	0 9 21 50	21 13	16 26	27

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5[घं.]–30[मि.]) (28 मई से 2 जुलाई, 2023 ई. तक)

1 जून, 2023 ई० को अयनांश = 24°/10′/53″ 1 जुलाई 2023 ई. को अयनांश 24°/10′/59″

ता. मई	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	मई
28	16 21 8	1 12 15 43	4 16 12 57	3 10 2 11	0 17 39 26	0 8 20 47	2 27 24 32	10 12 40 38	0 8 14 29	0 9 21 32	+21 23	11 32	28
29	16 25 4	1 13 13 18	4 28 16 3	3 10 36 48	0 18 34 13	0 8 33 54	2 28 24 53	10 12 42 36	0 8 11 18	0 9 22 18	21 33	6 9	29
30	16 29 1	1 14 10 52	5 10 31 40	3 11 11 29	0 19 32 23	0 8 46 57	2 29 24 51	10 12 44 29	0 8 8 7	0 9 23 42	21 42	+0 26	30
31	16 32 57	1 15 8 23	5 23 4 13	3 11 46 12	0 20 33 47	0 8 59 57	3 0 24 27	10 12 46 16	0 8 4 57	0 9 25 10	21 51	–5 25	31
जून	16 36 54	1 16 5 54	6 5 57 24	3 12 20 58	0 21 38 23	0 9 12 53	3 1 23 40	10 12 47 57	0 8 1 46	0 9 26 3	21 59	–11 13	जून
2	16 40 50	1 17 3 23	6 19 13 38	3 12 55 46	0 22 46 5	0 9 25 45	3 2 22 28	10 12 49 32	0 7 58 35	0 9 25 43	22 7	–16 42	2
3	16 44 47	1 18 0 51	7 2 53 34	3 13 30 38	0 23 56 51	0 9 38 34	3 3 20 52	10 12 51 2	0 7 55 24	0 9 23 47	22 15	–21 31	3
4	16 48 43	1 18 58 19	7 16 55 51	3 14 5 32	0 25 10 36	0 9 51 19	3 4 18 49	10 12 52 26	0 7 52 13	0 9 20 9	22 23	–25 14	4
5	16 52 40	1 19 55 45	8 1 16 44	3 14 40 29	0 26 27 19	0 10 3 59	3 5 16 20	10 12 53 44	0 7 49 3	0 9 15 2	+22 30	–27 25	5
6	16 56 37	1 20 53 10	8 15 50 34	3 15 15 28	0 27 46 56	0 10 16 36	3 6 13 23	10 12 54 56	0 7 45 52	0 9 9 0	22 36	–27 46	6
7	17 0 33	1 21 50 35	9 0 30 29	3 15 50 31	0 29 9 24	0 10 29 9	3 7 9 58	10 12 56 2	0 7 42 41	0 9 2 52	22 42	–26 11	7
8	17 4 30	1 22 48 0	9 15 9 21	3 16 25 36	1 0 34 43	0 10 41 38	3 8 6 4	10 12 57 3	0 7 39 30	0 8 57 27	22 48	–22 51	8
9	17 8 26	1 23 45 22	9 29 40 58	3 17 0 44	1 2 2 51	0 10 54 2	3 9 1 40	10 12 57 58	0 7 36 19	0 8 53 28	22 53	–18 6	9
10	17 12 23	1 24 42 44	10 14 0 47	3 17 35 54	1 3 33 46	0 11 6 22	3 9 56 46	10 12 58 46	0 7 33 9	0 8 51 15	22 58	–12 24	10
11	17 16 19	1 25 40 7	10 28 6 5	3 18 11 7	1 5 7 28	0 11 18 38	3 10 51 18	10 12 59 29	0 7 29 58	0 8 50 45	23 3	–6 9	11
12	17 20 16	1 26 37 28	11 11 55 54	3 18 46 23	1 6 43 55	0 11 30 49	3 11 45 19	10 13 0 6	0 7 26 47	0 8 51 29	23 7	+0 17	12
13	17 24 12	1 27 34 49	11 25 30 29	3 19 21 42	1 8 23 6	0 11 42 55	3 12 38 45	10 13 0 37	0 7 23 36	0 8 52 38	23 11	6 36	13
14	17 28 9	1 28 32 10	0 8 50 47	3 19 57 4	1 10 5 00	0 11 54 57	3 13 31 37	10 13 1 2	0 7 20 25	0 8 53 15	23 14	12 31	14
15	17 32 6	1 29 29 31	0 21 57 54	3 20 32 28	1 11 49 36	0 12 6 54	3 14 23 52	10 13 1 21	0 7 17 15	0 8 52 25	23 17	17 47	15
16	17 36 2	2 0 26 50	1 4 52 52	3 21 7 56	1 13 36 51	0 12 18 46	3 15 15 29	10 13 1 34	0 7 14 4	0 8 49 28	23 20	22 9	16
17	17 39 59	2 1 24 10	1 17 36 25	3 21 43 26	1 15 26 43	0 12 30 34	3 16 6 28	10 13 1 41	0 7 10 53	0 8 44 9	23 22	25 22	17
18	17 43 55	2 2 21 28	2 0 9 00	3 22 18 58	1 17 19 10	0 12 42 16	3 16 56 46	10 13 1 42	0 7 7 42	0 8 36 36	23 24	27 18	18
19	17 47 52	2 3 18 47	2 12 31 10	3 22 54 33	1 19 14 4	0 12 53 53	3 17 46 22	10 13 1 37	0 7 4 31	0 8 27 19	23 25	27 50	19
20	17 51 48	2 4 16 4	2 24 43 30	3 23 30 11	1 21 11 23	0 13 5 24	3 18 35 14	10 13 1 26	0 7 1 20	0 8 17 7	23 26	26 59	20
21	17 55 45	2 5 13 21	3 6 47 8	3 24 5 52	1 23 10 58	0 13 16 51	3 19 23 21	10 13 1 10	0 6 58 10	0 8 6 55	23 26	24 53	21
22	17 59 41	2 6 10 38	3 18 43 45	3 24 41 35	1 25 12 43	0 13 28 12	3 20 10 40	10 13 0 47	0 6 54 59	0 7 57 37	23 26	21 43	22
23	18 3 38	2 7 7 53	4 0 35 49	3 25 17 20	1 27 16 26	0 13 39 27	3 20 57 11	10 13 0 18	0 6 51 48	0 7 49 58	23 26	17 40	23
24	18 7 35	2 8 5 9	4 12 26 35	3 25 53 8	1 29 21 57	0 13 50 36	3 21 42 51	10 12 59 44	0 6 48 37	0 7 44 26	23 25	12 58	24
25	18 11 31	2 9 2 23	4 24 20 3	3 26 28 59	2 1 29 1	0 14 1 40	3 22 27 37	10 12 59 3	0 6 45 26	0 7 41 9	23 24	7 45	25
26	18 15 28	2 9 59 37	5 6 20 52	3 27 4 52	2 3 37 26	0 14 12 38	3 23 11 29	10 12 58 17	0 6 42 15	0 7 39 49	23 22	+2 13	26
27	18 19 24	2 10 56 50	5 18 34 2	3 27 40 47	2 5 46 55	0 14 23 31	3 23 54 23	10 12 57 25	0 6 39 4	0 7 39 51	23 20	–3 30	27
28	18 23 21	2 11 54 3	6 1 4 39	3 28 16 45	2 7 57 12	0 14 34 17	3 24 36 17	10 12 56 27	0 6 35 54	0 7 40 19	23 18	–9 14	28
29	18 27 17	2 12 51 16	6 13 57 26	3 28 52 45	2 10 8 00	0 14 44 57	3 25 17 10	10 12 55 24	0 6 32 43	0 7 40 14	23 15	–14 45	29
30	18 31 14	2 13 48 27	6 27 16 10	3 29 28 47	2 12 19 2	0 14 55 31	3 25 56 58	10 12 54 14	0 6 29 32	0 7 38 38	23 12	–19 46	30
जुला	18 35 10	2 14 45 39	7 11 2 48	4 0 4 51	2 14 30 1	0 15 5 59	3 26 35 41	10 12 52 59	0 6 26 21	0 7 34 51	23 8	–23 55	जुला
2	18 39 7	2 15 42 50	7 25 17 00	4 0 40 58	2 16 40 41	0 15 16 20	3 27 13 11	10 12 51 39	0 6 23 11	0 7 28 40	23 4	–26 45	2

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मि.) (3 जुला. से 6 अग., 2023 ई. तक)

1 अग. 2023 ई. को अयनांश = 24°/11'/05"

ता. जुला	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	जुलाई
3	18 43 4	2 16 40 1	8 9 55 7	4 1 17 7	2 18 50 47	0 15 26 35	3 27 49 30	10 12 50 13	0 6 20 00	0 7 20 22	+23 0	−27 51	3
4	18 47 0	2 17 37 12	8 24 50 32	4 1 53 19	2 21 0 4	0 15 36 44	3 28 24 35	10 12 48 41	0 6 16 49	0 7 10 42	22 55	−26 57	4
5	18 50 57	2 18 34 22	9 9 54 12	4 2 29 33	2 23 8 21	0 15 46 46	3 28 58 22	10 12 47 3	0 6 13 38	0 7 0 47	22 50	−24 7	5
6	18 54 53	2 19 31 33	9 24 56 16	4 3 5 49	2 25 15 26	0 15 56 42	3 29 30 47	10 12 45 21	0 6 10 28	0 6 51 46	22 44	−19 38	6
7	18 58 50	2 20 28 44	10 9 47 35	4 3 42 7	2 27 21 11	0 16 6 30	4 0 1 50	10 12 43 33	0 6 7 17	0 6 44 38	22 38	−13 59	7
8	19 2 46	2 21 25 55	10 24 21 22	4 4 18 28	2 29 25 26	0 16 16 12	4 0 31 26	10 12 41 39	0 6 4 6	0 6 39 55	22 31	−7 40	8
9	19 6 43	2 22 23 7	11 8 33 43	4 4 54 51	3 1 28 8	0 16 25 47	4 0 59 33	10 12 39 40	0 6 0 55	0 6 37 35	22 25	−1 6	9
10	19 10 39	2 23 20 19	11 22 23 30	4 5 31 17	3 3 29 7	0 16 35 15	4 1 26 7	10 12 37 35	0 5 57 44	0 6 37 1	22 17	+5 22	10
11	19 14 36	2 24 17 31	0 5 51 41	4 6 7 45	3 5 28 24	0 16 44 35	4 1 51 6	10 12 35 25	0 5 54 33	0 6 37 12	22 10	11 25	11
12	19 18 33	2 25 14 44	0 19 0 30	4 6 44 16	3 7 25 53	0 16 53 49	4 2 14 26	10 12 33 10	0 5 51 23	0 6 36 54	22 2	16 50	12
13	19 22 29	2 26 11 58	1 1 52 51	4 7 20 49	3 9 21 33	0 17 2 54	4 2 36 3	10 12 30 50	0 5 48 12	0 6 34 56	21 54	21 22	13
14	19 26 26	2 27 9 12	1 14 31 29	4 7 57 25	3 11 15 21	0 17 11 53	4 2 55 53	10 12 28 25	0 5 45 1	0 6 30 28	21 45	24 49	14
15	19 30 22	2 28 6 26	1 26 58 46	4 8 34 3	3 13 7 18	0 17 20 43	4 3 13 54	10 12 25 54	0 5 41 50	0 6 23 4	21 36	27 1	15
16	19 34 19	2 29 3 41	2 9 16 37	4 9 10 44	3 14 57 23	0 17 29 26	4 3 30 2	10 12 23 19	0 5 38 39	0 6 12 54	21 26	27 51	16
17	19 38 15	3 0 0 56	2 21 26 30	4 9 47 27	3 16 45 35	0 17 38 1	4 3 44 13	10 12 20 39	0 5 35 29	0 6 00 33	21 16	27 19	17
18	19 42 12	3 0 58 11	3 3 29 29	4 10 24 13	3 18 31 54	0 17 46 28	4 3 56 23	10 12 17 54	0 5 32 18	0 5 46 58	21 6	25 31	18
19	19 46 8	3 1 55 27	3 15 26 46	4 11 1 1	3 20 16 21	0 17 54 47	4 4 6 29	10 12 15 4	0 5 29 7	0 5 33 16	20 56	22 34	19
20	19 50 5	3 2 52 44	3 27 19 38	4 11 37 52	3 21 58 54	0 18 2 58	4 4 14 28	10 12 12 9	0 5 25 56	0 5 20 34	20 45	18 43	20
21	19 54 2	3 3 50 00	4 9 9 51	4 12 14 45	3 23 39 37	0 18 11 1	4 4 20 16	10 12 9 10	0 5 22 45	0 5 9 49	20 33	14 9	21
22	19 57 58	3 4 47 17	4 20 59 53	4 12 51 40	3 25 18 27	0 18 18 55	4 4 23 51	10 12 6 6	0 5 19 34	0 5 1 39	20 22	9 3	22
23	20 1 55	3 5 44 35	5 2 52 51	4 13 28 38	3 26 55 25	0 18 26 40	4 4 25 9	10 12 2 58	0 5 16 24	0 4 56 16	20 10	+3 37	23
24	20 5 51	3 6 41 52	5 14 52 40	4 14 5 38	3 28 30 31	0 18 34 17	4 4 24 7	10 11 59 45	0 5 13 13	0 4 53 25	19 58	−2 0	24
25	20 9 48	3 7 39 10	5 27 3 56	4 14 42 41	4 0 3 45	0 18 41 46	4 4 20 45	10 11 56 28	0 5 10 2	0 4 52 27	19 45	−7 39	25
26	20 13 44	3 8 36 29	6 9 31 35	4 15 19 46	4 1 35 6	0 18 49 5	4 4 15 00	10 11 53 8	0 5 6 51	0 4 52 22	19 32	−13 8	26
27	20 17 41	3 9 33 47	6 22 20 40	4 15 56 53	4 3 4 34	0 18 56 16	4 4 6 52	10 11 49 43	0 5 3 40	0 4 52 1	19 19	−18 14	27
28	20 21 37	3 10 31 6	7 5 35 38	4 16 34 2	4 4 32 7	0 19 3 18	4 3 56 19	10 11 46 14	0 5 0 29	0 4 50 17	19 5	−22 37	28
29	20 25 34	3 11 28 26	7 19 19 39	4 17 11 13	4 5 57 44	0 19 10 10	4 3 43 22	10 11 42 41	0 4 57 18	0 4 46 24	18 51	−25 55	29
30	20 29 31	3 12 25 46	8 3 33 35	4 17 48 27	4 7 21 23	0 19 16 54	4 3 28 2	10 11 39 5	0 4 54 8	0 4 40 1	18 37	−27 43	30
31	20 33 27	3 13 23 6	8 18 15 10	4 18 25 43	4 8 43 3	0 19 23 28	4 3 10 21	10 11 35 25	0 4 50 57	0 4 31 23	18 23	−27 39	31
अग.	20 37 24	3 14 20 28	9 3 18 27	4 19 3 2	4 10 2 42	0 19 29 53	4 2 50 22	10 11 31 42	0 4 47 46	0 4 21 16	18 08	−25 34	अग.
2	20 41 20	3 15 17 50	9 18 34 16	4 19 40 22	4 11 20 17	0 19 36 8	4 2 28 10	10 11 27 55	0 4 44 35	0 4 10 45	17 53	−21 38	2
3	20 45 17	3 16 15 13	10 3 51 28	4 20 17 45	4 12 35 44	0 19 42 14	4 2 3 50	10 11 24 5	0 4 41 24	0 4 1 5	17 37	−16 14	3
4	20 49 13	3 17 12 36	10 18 59 2	4 20 55 11	4 13 49 1	0 19 48 10	4 1 37 28	10 11 20 11	0 4 38 14	0 3 53 18	17 22	−9 54	4
5	20 53 10	3 18 10 1	11 3 47 54	4 21 32 39	4 15 0 3	0 19 53 57	4 1 9 11	10 11 16 14	0 4 35 3	0 3 47 59	17 6	−3 7	5
6	20 57 6	3 19 7 27	11 18 12 21	4 22 10 9	4 16 8 45	0 19 59 34	4 0 39 9	10 11 12 15	0 4 31 52	0 3 45 11	16 49	+3 39	6

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: 5[घं.]–30[मि.]) (7 अग. से 10 सितं., 2023 ई. तक)

1 सितम्बर, 2023 ई. को अयनांश =24°/11′/09″

ता. अग.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	अगस्त
7	21 1 3	3 20 4 55	0 2 9 58	4 22 47 42	4 17 15 4	0 20 5 00	4 0 7 29	10 11 8 12	0 4 28 41	0 3 44 21	+16 33	+10 2	7
8	21 5 0	3 21 2 23	0 15 41 15	4 23 25 17	4 18 18 54	0 20 10 17	3 29 34 24	10 11 4 7	0 4 25 30	0 3 44 30	16 16	15 46	8
9	21 8 56	3 21 59 53	0 28 48 40	4 24 2 55	4 19 20 7	0 20 15 24	3 29 0 5	10 10 59 59	0 4 22 20	0 3 44 28	15 59	20 36	9
10	21 12 53	3 22 57 25	1 11 35 38	4 24 40 35	4 20 18 37	0 20 20 20	3 28 24 43	10 10 55 49	0 4 19 9	0 3 43 5	15 42	24 20	10
11	21 16 49	3 23 54 57	1 24 6 6	4 25 18 18	4 21 14 18	0 20 25 6	3 27 48 32	10 10 51 36	0 4 15 58	0 3 39 30	15 24	26 48	11
12	21 20 46	3 24 52 31	2 6 23 38	4 25 56 4	4 22 7 00	0 20 29 41	3 27 11 45	10 10 47 21	0 4 12 47	0 3 33 18	15 7	27 56	12
13	21 24 42	3 25 50 7	2 18 31 28	4 26 33 52	4 22 56 35	0 20 34 6	3 26 34 36	10 10 43 4	0 4 9 37	0 3 24 33	14 48	27 41	13
14	21 28 39	3 26 47 43	3 0 32 16	4 27 11 43	4 23 42 51	0 20 38 20	3 25 57 19	10 10 38 44	0 4 6 26	0 3 13 46	14 30	26 8	14
15	21 32 35	3 27 45 21	3 12 28 7	4 27 49 36	4 24 25 40	0 20 42 23	3 25 20 8	10 10 34 23	0 4 3 15	0 3 1 47	14 12	23 25	15
16	21 36 32	3 28 43 1	3 24 20 44	4 28 27 32	4 25 4 49	0 20 46 15	3 24 43 18	10 10 30 00	0 4 0 4	0 2 49 37	13 53	19 44	16
17	21 40 29	3 29 40 41	4 6 11 38	4 29 5 30	4 25 40 7	0 20 49 57	3 24 7 2	10 10 25 35	0 3 56 54	0 2 38 20	13 34	15 16	17
18	21 44 25	4 0 38 23	4 18 2 22	4 29 43 31	4 26 11 20	0 20 53 26	3 23 31 33	10 10 21 9	0 3 53 43	0 2 28 47	13 15	10 15	18
19	21 48 22	4 1 36 6	4 29 54 47	5 0 21 35	4 26 38 14	0 20 56 45	3 22 57 5	10 10 16 42	0 3 50 32	0 2 21 36	12 55	+4 51	19
20	21 52 18	4 2 33 50	5 11 51 13	5 0 59 41	4 27 0 36	0 20 59 53	3 22 23 50	10 10 12 14	0 3 47 21	0 2 17 1	12 36	–0 46	20
21	21 56 15	4 3 31 36	5 23 54 36	5 1 37 50	4 27 18 11	0 21 2 49	3 21 51 59	10 10 7 44	0 3 44 11	0 2 14 52	12 16	–6 25	21
22	22 0 11	4 4 29 22	6 6 8 28	5 2 16 1	4 27 30 45	0 21 5 34	3 21 21 43	10 10 3 14	0 3 41 00	0 2 14 36	11 56	–11 55	22
23	22 4 8	4 5 27 10	6 18 36 55	5 2 54 14	4 27 38 5	0 21 8 8	3 20 53 10	10 9 58 42	0 3 37 49	0 2 15 22	11 36	–17 3	23
24	22 8 4	4 6 24 59	7 1 24 17	5 3 32 30	4 27 39 55	0 21 10 30	3 20 26 31	10 9 54 10	0 3 34 38	0 2 16 9	11 16	–21 35	24
25	22 12 1	4 7 22 49	7 14 34 45	5 4 10 48	4 27 36 7	0 21 12 41	3 20 1 51	10 9 49 38	0 3 31 28	0 2 16 0	10 55	–25 10	25
26	22 15 58	4 8 20 40	7 28 11 42	5 4 49 9	4 27 26 28	0 21 14 40	3 19 39 18	10 9 45 5	0 3 28 17	0 2 14 12	10 34	–27 17	26
27	22 19 54	4 9 18 33	8 12 16 49	5 5 27 33	4 27 10 53	0 21 16 27	3 19 18 57	10 9 40 33	0 3 25 6	0 2 10 23	10 14	–28 5	27
28	22 23 51	4 10 16 26	8 26 49 15	5 6 5 58	4 26 49 18	0 21 18 3	3 19 0 52	10 9 36 00	0 3 21 55	0 2 4 42	9 52	–26 50	28
29	22 27 47	4 11 14 21	9 11 44 54	5 6 44 26	4 26 21 46	0 21 19 27	3 18 45 8	10 9 31 28	0 3 18 44	0 1 57 44	9 31	–23 40	29
30	22 31 44	4 12 12 18	9 26 56 18	5 7 22 57	4 25 48 25	0 21 20 40	3 18 31 45	10 9 26 56	0 3 15 34	0 1 50 20	9 10	–18 51	30
31	22 35 40	4 13 10 16	10 12 13 28	5 8 1 30	4 25 9 31	0 21 21 40	3 18 20 47	10 ·9 22 24	0 3 12 23	0 1 43 29	8 49	–12 47	31
सितं.	22 39 37	4 14 8 15	10 27 25 25	5 8 40 6	4 24 25 28	0 21 22 29	3 18 12 14	10 9 17 52	0 3 9 12	0 1 38 1	8 27	–5 59	सितं.
2	22 43 33	4 15 6 17	11 12 22 10	5 9 18 44	4 23 36 48	0 21 23 6	3 18 6 7	10 9 13 21	0 3 6 1	0 1 34 28	8 5	+1 3	2
3	22 47 30	4 16 4 20	11 26 56 20	5 9 57 25	4 22 44 16	0 21 23 31	3 18 2 24	10 9 8 51	0 3 2 50	0 1 32 55	7 43	7 51	3
4	22 51 27	4 17 2 24	0 11 3 39	5 10 36 9	4 21 48 42	0 21 23 44	3 18 1 5	10 9 4 22	0 2 59 39	0 1 33 0	7 21	14 5	4
5	22 55 23	4 18 0 31	0 24 43 00	5 11 14 55	4 20 51 9	0 21 23 45	3 18 2 7	10 8 59 54	0 2 56 29	0 1 34 3	6 59	19 24	5
6	22 59 20	4 18 58 40	1 7 55 50	5 11 53 44	4 19 52 44	0 21 23 34	3 18 5 30	10 8 55 27	0 2 53 18	0 1 35 13	6 37	23 35	6
7	23 3 16	4 19 56 51	1 20 45 10	5 12 32 36	4 18 54 44	0 21 23 11	3 18 11 8	10 8 51 1	0 2 50 7	0 1 35 41	6 15	26 29	7
8	23 7 13	4 20 55 4	2 3 14 59	5 13 11 31	4 17 58 25	0 21 22 36	3 18 19 1	10 8 46 37	0 2 46 56	0 1 34 47	5 52	27 58	8
9	23 11 9	4 21 53 18	2 15 29 32	5 13 50 28	4 17 5 6	0 21 21 48	3 18 29 5	10 8 42 15	0 2 43 46	0 1 32 12	5 30	28 2	9
10	23 15 6	4 22 51 35	2 27 33 00	5 14 29 28	4 16 16 5	0 21 20 49	3 18 41 16	10 8 37 54	0 2 40 35	0 1 27 56	5 7	26 46	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5^{घं.}–30^{मि.}) (11 सितं. से 15 अक्तू., 2023 ई. तक)

1 अक्तूबर, 2023 ई. को अयनांश 24° / 11′ / 12″

ता. सितं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	सितं.
11	23 19 2	4 23 49 54	3 9 29 8	5 15 8 31	4 15 32 33	0 21 19 37	3 18 55 31	10 8 33 35	0 2 37 24	0 1 22 16	+4 44	+24 18	11
12	23 22 59	4 24 48 15	3 21 21 13	5 15 47 37	4 14 55 34	0 21 18 13	3 19 11 46	10 8 29 18	0 2 34 13	0 1 15 45	4 21	20 49	12
13	23 26 56	4 25 46 38	4 3 11 55	5 16 26 45	4 14 26 5	0 21 16 38	3 19 29 57	10 8 25 4	0 2 31 3	0 1 9 2	3 59	16 30	13
14	23 30 52	4 26 45 3	4 15 3 32	5 17 5 57	4 14 4 50	0 21 14 50	3 19 50 1	10 8 20 51	0 2 27 52	0 1 2 49	3 36	11 34	14
15	23 34 49	4 27 43 29	4 26 58 00	5 17 45 11	4 13 52 23	0 21 12 50	3 20 11 54	10 8 16 41	0 2 24 41	0 0 57 39	3 13	6 11	15
16	23 38 45	4 28 41 58	5 8 56 58	5 18 24 28	4 13 49 7	0 21 10 38	3 20 35 32	10 8 12 34	0 2 21 30	0 0 53 57	2 49	+0 33	16
17	23 42 42	4 29 40 28	5 21 2 18	5 19 3 47	4 13 55 17	0 21 8 15	3 21 0 50	10 8 8 29	0 2 18 20	0 0 51 55	2 26	–5 10	17
18	23 46 38	5 0 39 1	6 3 15 51	5 19 43 10	4 14 10 54	0 21 5 39	3 21 27 49	10 8 4 28	0 2 15 9	0 0 51 26	2 3	–10 46	18
19	23 50 35	5 1 37 35	6 15 39 53	5 20 22 35	4 14 35 51	0 21 2 52	3 21 56 22	10 8 0 29	0 2 11 58	0 0 52 11	1 40	–16 2	19
20	23 54 31	5 2 36 10	6 28 16 59	5 21 2 3	4 15 9 54	0 20 59 53	3 22 26 26	10 7 56 33	0 2 8 47	0 0 53 40	1 17	–20 43	20
21	23 58 28	5 3 34 48	7 11 9 58	5 21 41 33	4 15 52 42	0 20 56 43	3 22 57 58	10 7 52 41	0 2 5 37	0 0 55 16	0 53	–24 32	21
22	0 2 25	5 4 33 27	7 24 21 38	5 22 21 7	4 16 43 47	0 20 53 21	3 23 30 55	10 7 48 52	0 2 2 26	0 0 56 25	0 30	–27 8	22
23	0 6 21	5 5 32 7	8 7 54 25	5 23 0 42	4 17 42 36	0 20 49 48	3 24 5 15	10 7 45 6	0 1 59 15	0 0 56 40	+0 7	–28 15	23
24	0 10 18	5 6 30 50	8 21 49 44	5 23 40 21	4 18 48 36	0 20 46 4	3 24 40 53	10 7 41 25	0 1 56 4	0 0 55 51	–0 17	–27 37	24
25	0 14 14	5 7 29 34	9 6 7 22	5 24 20 2	4 20 1 6	0 20 42 8	3 25 17 48	10 7 37 46	0 1 52 54	0 0 54 1	–0 40	–25 11	25
26	0 18 11	5 8 28 20	9 20 44 58	5 24 59 46	4 21 19 27	0 20 38 2	3 25 55 57	10 7 34 12	0 1 49 43	0 0 51 27	–1 3	–21 4	26
27	0 22 7	5 9 27 7	10 5 37 42	5 25 39 33	4 22 43 1	0 20 33 45	3 26 35 17	10 7 30 41	0 1 46 32	0 0 48 37	–1 27	–15 34	27
28	0 26 4	5 10 25 56	10 20 38 18	5 26 19 22	4 24 11 9	0 20 29 17	3 27 15 46	10 7 27 15	0 1 43 21	0 0 46 0	–1 50	–9 6	28
29	0 30 0	5 11 24 48	11 5 38 16	5 26 59 14	4 25 43 12	0 20 24 38	3 27 57 21	10 7 23 53	0 1 40 11	0 0 44 1	–2 13	–2 7	29
30	0 33 57	5 12 23 41	11 20 28 46	5 27 39 9	4 27 18 37	0 20 19 50	3 28 40 2	10 7 20 34	0 1 37 00	0 0 42 55	–2 37	+4 55	30
अक्तू.	0 37 54	5 13 22 36	0 5 2 15	5 28 19 7	4 28 56 48	0 20 14 51	3 29 23 43	10 7 17 21	0 1 33 50	0 0 42 44	–3 0	11 34	अक्तू
2	0 41 50	5 14 21 33	0 19 13 10	5 28 59 7	5 0 37 17	0 20 9 42	4 0 8 25	10 7 14 11	0 1 30 39	0 0 43 18	–3 23	17 28	2
3	0 45 47	5 15 20 33	1 2 58 34	5 29 39 11	5 2 19 36	0 20 4 23	4 0 54 4	10 7 11 6	0 1 27 28	0 0 44 21	–3 47	22 16	3
4	0 49 43	5 16 19 35	1 16 17 59	6 0 19 17	5 4 3 21	0 19 58 54	4 1 40 39	10 7 8 6	0 1 24 17	0 0 45 30	–4 10	25 45	4
5	0 53 40	5 17 18 39	1 29 13 2	6 0 59 26	5 5 48 11	0 19 53 16	4 2 28 7	10 7 5 10	0 1 21 7	0 0 46 28	–4 33	27 46	5
6	0 57 36	5 18 17 45	2 11 46 44	6 1 39 39	5 7 33 46	0 19 47 29	4 3 16 27	10 7 2 19	0 1 17 56	0 0 47 1	–4 56	28 17	6
7	1 1 33	5 19 16 54	2 24 3 10	6 2 19 54	5 9 19 52	0 19 41 32	4 4 5 36	10 6 59 33	0 1 14 45	0 0 47 3	–5 19	27 23	7
8	1 5 29	5 20 16 5	3 6 6 40	6 3 0 12	5 11 6 13	0 19 35 25	4 4 55 35	10 6 56 52	0 1 11 34	0 0 46 33	–5 42	25 13	8
9	1 9 26	5 21 15 19	3 18 1 49	6 3 40 34	5 12 52 41	0 19 29 11	4 5 46 18	10 6 54 16	0 1 8 24	0 0 45 40	–6 5	21 58	9
10	1 13 23	5 22 14 34	3 29 52 51	6 4 20 58	5 14 39 3	0 19 22 48	4 6 37 46	10 6 51 45	0 1 5 13	0 0 44 35	–6 28	17 51	10
11	1 17 19	5 23 13 52	4 11 43 40	6 5 1 26	5 16 25 13	0 19 16 18	4 7 29 57	10 6 49 19	0 1 2 2	0 0 43 28	–6 50	13 3	11
12	1 21 16	5 24 13 12	4 23 37 44	6 5 41 56	5 18 11 3	0 19 9 39	4 8 22 50	10 6 46 58	0 0 58 51	0 0 42 31	–7 13	7 45	12
13	1 25 12	5 25 12 35	5 5 37 48	6 6 22 29	5 19 56 30	0 19 2 52	4 9 16 22	10 6 44 43	0 0 55 41	0 0 41 50	–7 35	+2 8	13
14	1 29 9	5 26 11 59	5 17 46 11	6 7 3 6	5 21 41 28	0 18 55 59	4 10 10 32	10 6 42 33	0 0 52 30	0 0 41 27	–7 58	–3 38	14
15	1 33 5	5 27 11 26	6 0 4 38	6 7 43 45	5 23 25 57	0 18 48 58	4 11 5 21	10 6 40 29	0 0 49 19	0 0 41 21	–8 20	–9 21	15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं.–30मि.)

(16 अक्तू. से 19 नवंबर, 2023 ई. तक)

1 नवंबर 2023 ई. को अयनांश 24°/11′/16″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अक्तू.
अक्तू.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
16	1 37 2	5 28 10 54	6 12 34 26	6 8 24 27	5 25 9 51	0 18 41 50	4 12 0 44	10 6 38 30	0 0 46 8	0 0 41 26	−8 42	−14 48	16
17	1 40 58	5 29 10 25	6 25 16 35	6 9 5 12	5 26 53 9	0 18 34 36	4 12 56 42	10 6 36 37	0 0 42 58	0 0 41 34	−9 4	−19 43	17
18	1 44 55	6 0 9 57	7 8 11 52	6 9 46 1	5 28 35 52	0 18 27 17	4 13 53 13	10 6 34 50	0 0 39 47	0 0 41 38	−9 26	−23 48	18
19	1 48 52	6 1 9 31	7 21 20 56	6 10 26 52	6 0 17 57	0 18 19 51	4 14 50 16	10 6 33 8	0 0 36 36	0 0 41 35	−9 48	−26 43	19
20	1 52 48	6 2 9 7	8 4 44 19	6 11 7 46	6 1 59 24	0 18 12 20	4 15 47 51	10 6 31 32	0 0 33 25	0 0 41 25	−10 10	−28 11	20
21	1 56 45	6 3 8 45	8 18 22 20	6 11 48 42	6 3 40 15	0 18 4 44	4 16 45 56	10 6 30 2	0 0 30 14	0 0 41 11	−10 31	−27 59	21
22	2 0 41	6 4 8 25	9 2 14 57	6 12 29 42	6 5 20 27	0 17 57 3	4 17 44 30	10 6 28 38	0 0 27 4	0 0 41 1	−10 53	−26 3	22
23	2 4 38	6 5 8 6	9 16 21 33	6 13 10 44	6 7 0 3	0 17 49 18	4 18 43 32	10 6 27 20	0 0 23 53	0 0 41 2	−11 14	−22 29	23
24	2 8 34	6 6 7 50	10 0 40 30	6 13 51 50	6 8 39 3	0 17 41 28	4 19 43 3	10 6 26 8	0 0 20 42	0 0 41 18	−11 35	−17 33	24
25	2 12 31	6 7 7 34	10 15 9 4	6 14 32 58	6 10 17 27	0 17 33 36	4 20 43 0	10 6 25 1	0 0 17 31	0 0 41 49	−11 56	−11 34	25
26	2 16 27	6 8 7 21	10 29 43 16	6 15 14 9	6 11 55 16	0 17 25 40	4 21 43 22	10 6 24 1	0 0 14 21	0 0 42 28	−12 16	−4 55	26
27	2 20 24	6 9 7 9	11 14 17 58	6 15 55 23	6 13 32 32	0 17 17 41	4 22 44 11	10 6 23 7	0 0 11 10	0 0 43 4	−12 37	+1 59	27
28	2 24 21	6 10 6 59	11 28 47 25	6 16 36 40	6 15 9 15	0 17 9 40	4 23 45 24	10 6 22 19	0 0 7 59	0 0 43 23	−12 57	8 46	28
29	2 28 17	6 11 6 50	0 13 5 50	6 17 18 00	6 16 45 26	0 17 1 36	4 24 47 2	10 6 21 37	0 0 4 48	0 0 43 12	−13 17	15 1	29
30	2 32 14	6 12 6 44	0 27 8 6	6 17 59 23	6 18 21 7	0 16 53 31	4 25 49 3	10 6 21 1	0 0 1 38	0 0 42 27	−13 37	20 22	30
31	2 36 10	6 13 6 40	1 10 50 24	6 18 40 48	6 19 56 19	0 16 45 22	4 26 51 26	10 6 20 31	11 29 58 27	0 0 41 6	−13 57	24 29	31
नवं.	2 40 7	6 14 6 37	1 24 10 43	6 19 22 17	6 21 31 2	0 16 37 14	4 27 54 12	10 6 20 7	11 29 55 16	0 0 39 19	−14 16	27 9	नवं.
2	2 44 3	6 15 6 37	2 7 8 48	6 20 3 49	6 23 5 16	0 16 29 5	4 28 57 19	10 6 19 50	11 29 52 5	0 0 37 22	−14 35	28 16	2
3	2 48 0	6 16 6 39	2 19 46 6	6 20 45 24	6 24 39 5	0 16 20 56	5 0 0 46	10 6 19 38	11 29 48 55	0 0 35 34	−14 54	27 51	3
4	2 51 56	6 17 6 43	3 2 5 29	6 21 27 3	6 26 12 28	0 16 12 46	5 1 4 34	10 6 19 33	11 29 45 44	0 0 34 13	−15 13	26 4	4
5	2 55 53	6 18 6 49	3 14 10 48	6 22 8 44	6 27 45 27	0 16 4 37	5 2 8 42	10 6 19 34	11 29 42 33	0 0 33 33	−15 32	23 6	5
6	2 59 50	6 19 6 58	3 26 6 34	6 22 50 28	6 29 18 1	0 15 56 29	5 3 13 8	10 6 19 42	11 29 39 22	0 0 33 40	−15 50	19 13	6
7	3 3 46	6 20 7 8	4 7 57 36	6 23 32 16	7 0 50 12	0 15 48 21	5 4 17 53	10 6 19 55	11 29 36 11	0 0 34 34	−16 8	14 37	7
8	3 7 43	6 21 7 20	4 19 48 43	6 24 14 7	7 2 22 00	0 15 40 15	5 5 22 55	10 6 20 15	11 29 33 1	0 0 36 2	−16 26	9 28	8
9	3 11 39	6 22 7 35	5 1 44 33	6 24 56 00	7 3 53 25	0 15 32 11	5 6 28 15	10 6 20 41	11 29 29 50	0 0 37 45	−16 43	+3 57	9
10	3 15 36	6 23 7 51	5 13 49 12	6 25 37 57	7 5 24 28	0 15 24 9	5 7 33 51	10 6 21 13	11 29 26 39	0 0 39 18	−17 0	−1 46	10
11	3 19 32	6 24 8 9	5 26 6 4	6 26 19 57	7 6 55 8	0 15 16 10	5 8 39 43	10 6 21 52	11 29 23 28	0 0 40 14	−17 17	−7 32	11
12	3 23 29	6 25 8 29	6 8 37 43	6 27 2 00	7 8 25 27	0 15 8 13	5 9 45 51	10 6 22 37	11 29 20 17	0 0 40 8	−17 34	−13 8	12
13	3 27 25	6 26 8 51	6 21 25 38	6 27 44 7	7 9 55 23	0 15 0 21	5 10 52 14	10 6 23 28	11 29 17 7	0 0 38 46	−17 50	−18 18	13
14	3 31 22	6 27 9 15	7 4 30 10	6 28 26 16	7 11 24 56	0 14 52 32	5 11 58 52	10 6 24 26	11 29 13 56	0 0 36 4	−18 6	−22 43	14
15	3 35 19	6 28 9 40	7 17 50 34	6 29 8 28	7 12 54 5	0 14 44 47	5 13 5 43	10 6 25 30	11 29 10 45	0 0 32 12	−18 21	−26 2	15
16	3 39 15	6 29 10 7	8 1 25 12	6 29 50 43	7 14 22 48	0 14 37 6	5 14 12 49	10 6 26 40	11 29 7 34	0 0 27 39	−18 37	−27 55	16
17	3 43 12	7 0 10 35	8 15 11 40	7 0 33 2	7 15 51 6	0 14 29 31	5 15 20 7	10 6 27 56	11 29 4 24	0 0 23 0	−18 52	−28 7	17
18	3 47 8	7 1 11 5	8 29 7 22	7 1 15 22	7 17 18 55	0 14 22 1	5 16 27 39	10 6 29 18	11 29 1 13	0 0 18 56	−19 6	−26 33	18
19	3 51 5	7 2 11 35	9 13 9 46	7 1 57 46	7 18 46 14	0 14 14 37	5 17 35 23	10 6 30 47	11 28 58 2	0 0 16 1	−19 21	−23 20	19

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: 5 घं. – 30 मि.) (20 नवंबर से 24 दिसंबर 2023 ई. तक) (1 दिसंबर, 2023 ई. को अयनांश 24° /11′/21″)

ता. नवं.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता. नवं.
20	3 55 1	7 3 12 8	9 27 16 33	7 2 40 12	7 20 13 00	0 14 7 18	5 18 43 19	10 6 32 22	11 28 54 51	0 0 14 35	–19 35	–18 44	20
21	3 58 58	7 4 12 41	10 11 25 47	7 3 22 41	7 21 39 9	0 14 0 6	5 19 51 28	10 6 34 3	11 28 51 40	0 0 14 38	–19 48	–13 6	21
22	4 2 54	7 5 13 15	10 25 35 46	7 4 5 14	7 23 4 38	0 13 53 1	5 20 59 47	10 6 35 50	11 28 48 30	0 0 15 46	–20 1	–6 46	22
23	4 6 51	7 6 13 51	11 9 44 50	7 4 47 50	7 24 29 22	0 13 46 2	5 22 8 19	10 6 37 43	11 28 45 19	0 0 17 19	–20 14	–0 7	23
24	4 10 48	7 7 14 28	11 23 50 58	7 5 30 28	7 25 53 16	0 13 39 11	5 23 17 1	10 6 39 42	11 28 42 8	0 0 18 26	–20 27	+6 32	24
25	4 14 44	7 8 15 6	0 7 51 50	7 6 13 10	7 27 16 13	0 13 32 27	5 24 25 54	10 6 41 48	11 28 38 57	0 0 18 19	–20 39	12 50	25
26	4 18 41	7 9 15 45	0 21 44 37	7 6 55 55	7 28 38 5	0 13 25 51	5 25 34 58	10 6 43 59	11 28 35 47	0 0 16 22	–20 51	18 25	26
27	4 22 37	7 10 16 26	1 5 26 12	7 7 38 42	7 29 58 44	0 13 19 23	5 26 44 12	10 6 46 16	11 28 32 36	0 0 12 20	–21 2	22 59	27
28	4 26 34	7 11 17 7	1 18 53 44	7 8 21 32	8 1 17 59	0 13 13 3	5 27 53 36	10 6 48 39	11 28 29 25	0 0 6 23	–21 13	26 13	28
29	4 30 30	7 12 17 51	2 2 4 50	7 9 4 25	8 2 35 39	0 13 6 52	5 29 3 10	10 6 51 8	11 28 26 14	11 29 59 00	–21 23	27 56	29
30	4 34 27	7 13 18 35	2 14 58 15	7 9 47 20	8 3 51 29	0 13 0 49	6 0 12 54	10 6 53 42	11 28 23 3	11 29 50 58	–21 34	28 5	30
दिसं.	4 38 23	7 14 19 21	2 27 33 58	7 10 30 20	8 5 5 13	0 12 54 56	6 1 22 48	10 6 56 23	11 28 19 52	11 29 43 10	–21 43	26 45	दिसं.
2	4 42 20	7 15 20 8	3 9 53 23	7 11 13 22	8 6 16 32	0 12 49 12	6 2 32 50	10 6 59 9	11 28 16 41	11 29 36 24	–21 53	24 9	2
3	4 46 17	7 16 20 57	3 21 59 9	7 11 56 28	8 7 25 6	0 12 43 38	6 3 43 1	10 7 2 1	11 28 13 30	11 29 31 16	–22 2	20 31	3
4	4 50 13	7 17 21 47	4 3 54 57	7 12 39 36	8 8 30 29	0 12 38 13	6 4 53 21	10 7 4 59	11 28 10 19	11 29 28 6	–22 10	16 7	4
5	4 54 10	7 18 22 40	4 15 45 25	7 13 22 47	8 9 32 13	0 12 32 58	6 6 3 50	10 7 8 2	11 28 7 8	11 29 26 50	–22 18	11 08	5
6	4 58 6	7 19 23 33	4 27 35 39	7 14 6 2	8 10 29 47	0 12 27 53	6 7 14 26	10 7 11 11	11 28 3 58	11 29 27 7	–22 26	5 46	6
7	5 2 3	7 20 24 27	5 9 30 50	7 14 49 20	8 11 22 33	0 12 22 59	6 8 25 10	10 7 14 25	11 28 0 47	11 29 28 14	–22 33	+0 9	7
8	5 5 59	7 21 25 22	5 21 36 18	7 15 32 40	8 12 9 54	0 12 18 15	6 9 36 2	10 7 17 46	11 27 57 36	11 29 29 19	–22 40	–5 34	8
9	5 9 56	7 22 26 19	6 3 56 47	7 16 16 4	8 12 51 5	0 12 13 42	6 10 47 1	10 7 21 11	11 27 54 25	11 29 29 28	–22 46	–11 11	9
10	5 13 52	7 23 27 17	6 16 36 13	7 16 59 31	8 13 25 16	0 12 9 20	6 11 58 7	10 7 24 42	11 27 51 15	11 29 27 50	–22 52	–16 30	10
11	5 17 49	7 24 28 16	6 29 37 13	7 17 43 00	8 13 51 40	0 12 5 9	6 13 9 20	10 7 28 18	11 27 48 4	11 29 23 53	–22 57	–21 13	11
12	5 21 46	7 25 29 16	7 13 0 40	7 18 26 33	8 14 9 21	0 12 1 10	6 14 20 39	10 7 32 00	11 27 44 53	11 29 17 29	–23 2	–24 59	12
13	5 25 42	7 26 30 17	7 26 45 26	7 19 10 8	8 14 17 30	0 11 57 21	6 15 32 5	10 7 35 47	11 27 41 42	11 29 8 57	–23 7	–27 24	13
14	5 29 39	7 27 31 19	8 10 48 15	7 19 53 46	8 14 15 18	0 11 53 45	6 16 43 37	10 7 39 40	11 27 38 31	11 28 59 4	–23 11	–28 9	14
15	5 33 35	7 28 32 21	8 25 4 11	7 20 37 28	8 14 2 7	0 11 50 20	6 17 55 14	10 7 43 37	11 27 35 21	11 28 48 54	–23 14	–27 3	15
16	5 37 32	7 29 33 24	9 9 27 22	7 21 21 12	8 13 37 27	0 11 47 7	6 19 6 58	10 7 47 40	11 27 32 10	11 28 39 39	–23 17	–24 10	16
17	5 41 28	8 0 34 28	9 23 51 56	7 22 4 59	8 13 1 10	0 11 44 6	6 20 18 46	10 7 51 48	11 27 28 59	11 28 32 18	–23 20	–19 47	17
18	5 45 25	8 1 35 31	10 8 12 53	7 22 48 48	8 12 13 33	0 11 41 17	6 21 30 40	10 7 56 1	11 27 25 48	11 28 27 27	–23 22	–14 16	18
19	5 49 21	8 2 36 36	10 22 26 45	7 23 32 40	8 11 15 21	0 11 38 40	6 22 42 39	10 8 0 18	11 27 22 37	11 28 25 7	–23 24	–8 2	19
20	5 53 18	8 3 37 40	11 6 31 34	7 24 16 35	8 10 7 50	0 11 36 16	6 23 54 42	10 8 4 41	11 27 19 26	11 28 24 44	–23 25	–1 27	20
21	5 57 15	8 4 38 45	11 20 26 36	7 25 0 33	8 8 52 54	0 11 34 4	6 25 6 52	10 8 9 8	11 27 16 16	11 28 25 16	–23 26	+5 7	21
22	6 1 11	8 5 39 50	0 4 11 56	7 25 44 33	8 7 32 48	0 11 32 4	6 26 19 5	10 8 13 40	11 27 13 5	11 28 25 24	–23 26	11 23	22
23	6 5 8	8 6 40 56	0 17 47 44	7 26 28 35	8 6 10 15	0 11 30 17	6 27 31 23	10 8 18 17	11 27 9 54	11 28 23 53	–23 26	17 2	23
24	6 9 4	8 7 42 1	1 1 14 2	7 27 12 41	8 4 48 1	0 11 28 41	6 28 43 46	10 8 22 59	11 27 6 43	11 28 19 45	–23 25	21 47	24

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रात: 5घं.–30मि.) (25 दिसं. 2023 ई. से 29 जन. 2024 ई. तक) (1 जन., 2024 ई. को अयनांश 24°/11′/27″)

ता. दिसं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	दिसं.
25	6 13 1	8 8 43 7	1 14 30 20	7 27 56 50	8 3 28 48	0 11 27 19	6 29 56 13	10 8 27 45	11 27 3 33	11 28 12 33	–23 24	25 21	25
26	6 16 57	8 9 44 13	1 27 35 44	7 28 41 1	8 2 15 3	0 11 26 9	7 1 8 44	10 8 32 35	11 27 0 22	11 28 2 26	–23 23	27 30	26
27	6 20 54	8 10 45 19	2 10 29 11	7 29 25 14	8 1 8 47	0 11 25 11	7 2 21 20	10 8 37 30	11 26 57 11	11 27 49 3	–23 21	28 8	27
28	6 24 50	8 11 46 26	2 23 9 40	8 0 9 31	8 0 11 32	0 11 24 26	7 3 34 00	10 8 42 30	11 26 54 00	11 27 36 29	–23 18	27 16	28
29	6 28 47	8 12 47 33	3 5 36 51	8 0 53 50	7 29 24 16	0 11 23 53	7 4 46 44	10 8 47 33	11 26 50 49	11 27 22 58	–23 15	25 2	29
30	6 32 44	8 13 48 41	3 17 51 9	8 1 38 12	7 28 47 29	0 11 23 33	7 5 59 32	10 8 52 41	11 26 47 38	11 27 10 42	–23 12	21 41	30
31	6 36 40	8 14 49 48	3 29 54 5	8 2 22 37	7 28 21 17	0 11 23 25	7 7 12 24	10 8 57 54	11 26 44 27	11 27 0 36	–23 8	17 28	31
जन. 2024 1	6 40 37	8 15 50 56	4 11 48 14	8 3 7 4	7 28 5 27	0 11 23 30	7 8 25 20	10 9 3 10	11 26 41 17	11 26 53 14	–23 4	12 38	जन. 2024 1
2	6 44 33	8 16 52 5	4 23 37 15	8 3 51 35	7 27 59 29	0 11 23 47	7 9 38 19	10 9 8 30	11 26 38 6	11 26 48 41	–22 59	7 22	2
3	6 48 30	8 17 53 13	5 5 25 37	8 4 36 8	7 28 2 49	0 11 24 16	7 10 51 22	10 9 13 55	11 26 34 55	11 26 46 33	–22 53	+1 51	3
4	6 52 26	8 18 54 22	5 17 18 30	8 5 20 44	7 28 14 45	0 11 24 59	7 12 4 28	10 9 19 23	11 26 31 44	11 26 46 1	–22 48	–3 47	4
5	6 56 23	8 19 55 32	5 29 21 26	8 6 5 22	7 28 34 33	0 11 25 53	7 13 17 37	10 9 24 55	11 26 28 33	11 26 46 2	–22 41	–9 21	5
6	7 0 19	8 20 56 41	6 11 40 00	8 6 50 4	7 29 1 30	0 11 27 00	7 14 30 50	10 9 30 32	11 26 25 22	11 26 45 22	–22 35	–14 42	6
7	7 4 16	8 21 57 51	6 24 19 20	8 7 34 48	7 29 34 53	0 11 28 19	7 15 44 5	10 9 36 12	11 26 22 12	11 26 42 57	–22 28	–19 35	7
8	7 8 13	8 22 59 1	7 7 23 32	8 8 19 34	8 0 14 4	0 11 29 51	7 16 57 24	10 9 41 55	11 26 19 1	11 26 38 0	–22 20	–23 41	8
9	7 12 9	8 24 0 11	7 20 54 56	8 9 4 23	8 0 58 27	0 11 31 35	7 18 10 45	10 9 47 43	11 26 15 50	11 26 30 14	–22 12	–26 40	9
10	7 16 6	8 25 1 21	8 4 53 28	8 9 49 15	8 1 47 29	0 11 33 32	7 19 24 9	10 9 53 34	11 26 12 39	11 26 19 56	–22 4	–28 6	10
11	7 20 2	8 26 2 31	8 19 16 6	8 10 34 9	8 2 40 40	0 11 35 40	7 20 37 35	10 9 59 28	11 26 9 28	11 26 7 55	–21 55	–27 42	11
12	7 23 59	8 27 3 40	9 3 56 53	8 11 19 6	8 3 37 33	0 11 38 1	7 21 51 3	10 10 5 26	11 26 6 17	11 25 55 26	–21 46	–25 23	12
13	7 27 55	8 28 4 49	9 18 47 45	8 12 4 5	8 4 37 45	0 11 40 34	7 23 4 34	10 10 11 27	11 26 3 6	11 25 43 50	–21 36	–21 20	13
14	7 31 52	8 29 5 58	10 3 39 40	8 12 49 7	8 5 40 54	0 11 43 19	7 24 18 6	10 10 17 32	11 25 59 56	11 25 34 18	–21 26	–15 55	14
15	7 35 48	9 0 7 6	10 18 24 30	8 13 34 11	8 6 46 45	0 11 46 16	7 25 31 41	10 10 23 39	11 25 56 45	11 25 27 36	–21 15	–9 38	15
16	7 39 45	9 1 8 14	11 2 56 00	8 14 19 17	8 7 54 58	0 11 49 25	7 26 45 18	10 10 29 50	11 25 53 34	11 25 23 51	–21 4	–2 55	16
17	7 43 42	9 2 9 21	11 17 10 37	8 15 4 25	8 9 5 20	0 11 52 45	7 27 58 56	10 10 36 4	11 25 50 23	11 25 22 29	–20 53	+3 50	17
18	7 47 38	9 3 10 27	0 1 7 2	8 15 49 36	8 10 17 40	0 11 56 18	7 29 12 36	10 10 42 21	11 25 47 12	11 25 22 27	–20 41	10 16	18
19	7 51 35	9 4 11 32	0 14 45 45	8 16 34 49	8 11 31 46	0 12 0 1	8 0 26 18	10 10 48 41	11 25 44 2	11 25 22 20	–20 29	16 4	19
20	7 55 31	9 5 12 37	0 28 8 20	8 17 20 4	8 12 47 29	0 12 3 57	8 1 40 1	10 10 55 4	11 25 40 51	11 25 20 48	–20 17	20 59	20
21	7 59 28	9 6 13 40	1 11 16 37	8 18 5 21	8 14 4 40	0 12 8 4	8 2 53 46	10 11 1 29	11 25 37 40	11 25 16 45	–20 4	24 47	21
22	8 3 24	9 7 14 43	1 24 12 21	8 18 50 41	8 15 23 13	0 12 12 23	8 4 7 32	10 11 7 57	11 25 34 29	11 25 9 40	–19 50	27 13	22
23	8 7 21	9 8 15 45	2 6 56 47	8 19 36 2	8 16 43 2	0 12 16 51	8 5 21 20	10 11 14 28	11 25 31 18	11 24 59 35	–19 37	28 12	23
24	8 11 17	9 9 16 46	2 19 30 46	8 20 21 26	8 18 4 1	0 12 21 31	8 6 35 10	10 11 21 1	11 25 28 7	11 24 47 7	–19 23	27 42	24
25	8 15 14	9 10 17 46	3 1 54 44	8 21 6 52	8 19 26 6	0 12 26 22	8 7 49 1	10 11 27 37	11 25 24 57	11 24 33 18	–19 8	25 48	25
26	8 19 11	9 11 18 45	3 14 9 8	8 21 52 20	8 20 49 13	0 12 31 25	8 9 2 54	10 11 34 15	11 25 21 46	11 24 19 22	–18 54	22 44	26
27	8 23 7	9 12 19 43	3 26 14 29	8 22 37 51	8 22 13 19	0 12 36 38	8 10 16 48	10 11 40 56	11 25 18 35	11 24 6 32	–18 39	18 43	27
28	8 27 4	9 13 20 41	4 8 11 55	8 23 23 23	8 23 38 20	0 12 42 2	8 11 30 43	10 11 47 39	11 25 15 24	11 23 55 48	–18 23	13 59	28
29	8 31 0	9 14 21 38	4 20 3 10	8 24 8 58	8 25 4 16	0 12 47 35	8 12 44 40	10 11 54 24	11 25 12 13	11 23 47 48	–18 7	8 48	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (30 जनवरी से 5 मार्च, 2024 ई. तक)

1 फरवरी, 2024 ई. को अयनांश 24°/11'/32" ;1 मार्च, 2024 ई. को अयनांश 24°/11'/36"

ता. जन.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता. जन.
30	8 34 57	9 15 22 34	5 1 50 50	8 24 54 35	8 26 31 2	0 12 53 20	8 13 58 39	10 12 1 11	11 25 9 2	11 23 42 43	−17 51	+3 19	30
31	8 38 53	9 16 23 30	5 13 38 28	8 25 40 15	8 27 58 39	0 12 59 14	8 15 12 38	10 12 8 1	11 25 5 52	11 23 40 17	−17 35	−2 18	31
फर.	8 42 50	9 17 24 25	5 25 30 14	8 26 25 56	8 29 27 5	0 13 5 19	8 16 26 39	10 12 14 52	11 25 2 41	11 23 39 49	−17 18	−7 51	फर.
2	8 46 46	9 18 25 19	6 7 31 2	8 27 11 39	9 0 56 19	0 13 11 34	8 17 40 41	10 12 21 46	11 24 59 30	11 23 40 21	−17 1	−13 13	2
3	8 50 43	9 19 26 12	6 19 46 13	8 27 57 25	9 2 26 19	0 13 17 59	8 18 54 45	10 12 28 41	11 24 56 19	11 23 40 45	−16 44	−18 10	3
4	8 54 40	9 20 27 4	7 2 21 10	8 28 43 12	9 3 57 6	0 13 24 34	8 20 8 49	10 12 35 38	11 24 53 8	11 23 39 57	−16 26	−22 29	4
5	8 58 36	9 21 27 56	7 15 20 42	8 29 29 2	9 5 28 41	0 13 31 19	8 21 22 55	10 12 42 37	11 24 49 58	11 23 37 11	−16 9	−25 50	5
6	9 2 33	9 22 28 46	7 28 48 32	9 0 14 54	9 7 1 00	0 13 38 13	8 22 37 2	10 12 49 38	11 24 46 47	11 23 32 4	−15 50	−27 52	6
7	9 6 29	9 23 29 36	8 12 46 10	9 1 0 47	9 8 34 6	0 13 45 17	8 23 51 9	10 12 56 40	11 24 43 36	11 23 24 43	−15 32	−24 14	7
8	9 10 26	9 24 30 25	8 27 12 19	9 1 46 43	9 10 7 58	0 13 52 31	8 25 5 17	10 13 3 44	11 24 40 25	11 23 15 48	−15 13	−26 44	8
9	9 14 22	9 25 31 13	9 12 2 12	9 2 32 40	9 11 42 36	0 13 59 54	8 26 19 26	10 13 10 49	11 24 37 15	11 23 6 17	−14 54	−23 22	9
10	9 18 19	9 26 31 59	9 27 8 00	9 3 18 39	9 13 18 2	0 14 7 26	8 27 33 36	10 13 17 56	11 24 34 4	11 22 57 21	−14 35	−18 23	10
11	9 22 15	9 27 32 45	10 12 12 36	9 4 4 40	9 14 54 15	0 14 15 7	8 28 47 46	10 13 25 4	11 24 30 53	11 22 50 1	−14 16	−12 12	11
12	9 26 12	9 28 33 29	10 27 26 35	9 4 50 42	9 16 31 16	0 14 22 57	9 0 1 57	10 13 32 13	11 24 27 42	11 22 44 57	−13 56	−5 20	12
13	9 30 9	9 29 34 11	11 12 19 56	9 5 36 46	9 18 9 5	0 14 30 56	9 1 16 8	10 13 39 24	11 24 24 31	11 22 42 22	−13 36	+1 44	13
14	9 34 5	10 0 34 52	11 26 53 14	9 6 22 51	9 19 47 44	0 14 39 4	9 2 30 19	10 13 46 35	11 24 21 20	11 22 41 53	−13 16	8 34	14
15	9 38 2	10 1 35 31	0 11 3 12	9 7 8 58	9 21 27 14	0 14 47 21	9 3 44 31	10 13 53 48	11 24 18 10	11 22 42 43	−12 55	14 48	15
16	9 41 58	10 2 36 8	0 24 49 8	9 7 55 7	9 23 7 34	0 14 55 46	9 4 58 43	10 14 1 2	11 24 14 59	11 22 43 46	−12 35	20 6	16
17	9 45 55	10 3 36 44	1 8 12 20	9 8 41 16	9 24 48 46	0 15 4 19	9 6 12 55	10 14 8 16	11 24 11 48	11 22 44 1	−12 14	24 14	17
18	9 49 51	10 4 37 17	1 21 15 17	9 9 27 28	9 26 30 52	0 15 13 1	9 7 27 8	10 14 15 31	11 24 8 37	11 22 42 35	−11 53	27 00	18
19	9 53 48	10 5 37 49	2 4 0 55	9 10 13 40	9 28 13 50	0 15 21 51	9 8 41 21	10 14 22 47	11 24 5 26	11 22 39 2	−11 32	28 18	19
20	9 57 44	10 6 38 20	2 16 32 10	9 10 59 54	9 29 57 44	0 15 30 48	9 9 55 34	10 14 30 3	11 24 2 15	11 22 33 19	−11 11	28 6	20
21	10 1 41	10 7 38 48	2 28 51 38	9 11 46 9	10 1 42 33	0 15 39 54	9 11 9 47	10 14 37 21	11 23 59 5	11 22 25 51	−10 49	26 30	21
22	10 5 38	10 8 39 15	3 11 1 36	9 12 32 26	10 3 28 18	0 15 49 7	9 12 24 1	10 14 44 39	11 23 55 54	11 22 17 20	−10 28	23 41	22
23	10 9 34	10 9 39 40	3 23 3 56	9 13 18 44	10 5 14 59	0 15 58 28	9 13 38 15	10 14 51 57	11 23 52 43	11 22 8 37	−10 6	19 52	23
24	10 13 31	10 10 40 3	4 5 0 12	9 14 5 4	10 7 2 37	0 16 7 56	9 14 52 29	10 14 59 16	11 23 49 32	11 22 0 36	−9 44	15 17	24
25	10 17 27	10 11 40 25	4 16 52 2	9 14 51 24	10 8 51 11	0 16 17 32	9 16 6 44	10 15 6 35	11 23 46 21	11 21 53 58	−9 22	10 10	25
26	10 21 24	10 12 40 45	4 28 41 1	9 15 37 46	10 10 40 43	0 16 27 14	9 17 20 59	10 15 13 54	11 23 43 10	11 21 49 12	−8 59	+4 42	26
27	10 25 20	10 13 41 3	5 10 29 16	9 16 24 10	10 12 31 10	0 16 37 4	9 18 35 14	10 15 21 13	11 23 40 00	11 21 46 30	−8 37	−0 55	27
28	10 29 17	10 14 41 20	5 22 19 15	9 17 10 34	10 14 22 32	0 16 47 1	9 19 49 29	10 15 28 33	11 23 36 49	11 21 45 44	−8 14	−6 32	28
29	10 33 13	10 15 41 35	6 4 14 5	9 17 57 00	10 16 14 47	0 16 57 5	9 21 3 45	10 15 35 52	11 23 33 38	11 21 46 28	−7 52	−11 58	29
मार्च	10 37 10	10 16 41 49	6 16 17 27	9 18 43 27	10 18 7 53	0 17 7 16	9 22 18 1	10 15 43 12	11 23 30 27	11 21 48 7	−7 29	−17 1	मार्च
2	10 41 7	10 17 42 1	6 28 33 32	9 19 29 55	10 20 1 47	0 17 17 34	9 23 32 17	10 15 50 31	11 23 27 17	11 21 49 55	−7 6	−21 29	2
3	10 45 3	10 18 42 12	7 11 6 45	9 20 16 25	10 21 56 25	0 17 27 58	9 24 46 34	10 15 57 51	11 23 24 6	11 21 51 11	−6 43	−25 5	3
4	10 49 0	10 19 42 21	7 24 1 31	9 21 2 55	10 23 51 41	0 17 38 28	9 26 0 50	10 16 5 10	11 23 20 55	11 21 51 22	−6 20	−27 31	4
5	10 52 56	10 20 42 29	8 7 21 35	9 21 49 27	10 25 47 29	0 17 49 5	9 27 15 7	10 16 12 29	11 23 17 44	11 21 50 11	−5 57	−28 29	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(6 मार्च से 10 अप्रैल, 2024 ई. तक)

1 अप्रैल, 2024 ई. को अयनांश 24°/11′/39″

ता. मार्च	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	मार्च
6	10 56 53	10 21 42 35	8 21 9 26	9 22 35 59	10 27 43 41	0 17 59 49	9 28 29 24	10 16 19 48	11 23 14 34	11 21 47 39	−5 34	−27 44	6
7	11 0 49	10 22 42 39	9 5 25 24	9 23 22 33	10 29 40 9	0 18 10 38	9 29 43 41	10 16 27 7	11 23 11 23	11 21 44 5	−5 10	−25 11	7
8	11 4 46	10 23 42 42	9 20 6 59	9 24 9 7	11 1 36 39	0 18 21 34	10 0 57 58	10 16 34 24	11 23 8 12	11 21 40 4	−4 47	−20 56	8
9	11 8 42	10 24 42 43	10 5 8 33	9 24 55 43	11 3 32 59	0 18 32 36	10 2 12 15	10 16 41 42	11 23 5 1	11 21 36 14	−4 23	−15 16	9
10	11 12 39	10 25 42 43	10 20 21 44	9 25 42 19	11 5 28 54	0 18 43 43	10 3 26 32	10 16 48 58	11 23 1 51	11 21 33 10	−4 0	−8 35	10
11	11 16 36	10 26 42 39	11 5 36 24	9 26 28 55	11 7 24 6	0 18 54 56	10 4 40 49	10 16 56 14	11 22 58 40	11 21 31 17	−3 36	−1 24	11
12	11 20 32	10 27 42 35	11 20 42 28	9 27 15 32	11 9 18 14	0 19 6 15	10 5 55 5	10 17 3 30	11 22 55 29	11 21 30 40	−3 13	+5 48	12
13	11 24 29	10 28 42 28	0 5 31 21	9 28 2 10	11 11 10 58	0 19 17 40	10 7 9 21	10 17 10 45	11 22 52 18	11 21 31 11	−2 49	12 34	13
14	11 28 25	10 29 42 19	0 19 57 5	9 28 48 49	11 13 1 51	0 19 29 10	10 8 23 37	10 17 17 58	11 22 49 8	11 21 32 25	−2 25	18 29	14
15	11 32 22	11 0 42 9	1 3 56 35	9 29 35 27	11 14 50 30	0 19 40 45	10 9 37 53	10 17 25 11	11 22 45 57	11 21 33 52	−2 2	23 12	15
16	11 36 18	11 1 41 55	1 17 29 29	10 0 22 6	11 16 36 26	0 19 52 26	10 10 52 8	10 17 32 23	11 22 42 46	11 21 35 4	−1 38	26 30	16
17	11 40 15	11 2 41 40	2 0 37 22	10 1 8 46	11 18 19 11	0 20 4 11	10 12 6 23	10 17 39 33	11 22 39 35	11 21 35 35	−1 14	28 15	17
18	11 44 11	11 3 41 22	2 13 23 15	10 1 55 25	11 19 58 16	0 20 16 2	10 13 20 37	10 17 46 43	11 22 36 25	11 21 35 15	−0 51	28 25	18
19	11 48 8	11 4 41 2	2 25 50 42	10 2 42 5	11 21 33 13	0 20 27 57	10 14 34 51	10 17 53 51	11 22 33 14	11 21 34 4	−0 27	27 8	19
20	11 52 5	11 5 40 40	3 8 3 37	10 3 28 45	11 23 3 32	0 20 39 57	10 15 49 5	10 18 0 58	11 22 30 3	11 21 32 12	−0 3	24 34	20
21	11 56 1	11 6 40 16	3 20 5 43	10 4 15 26	11 24 28 48	0 20 52 2	10 17 3 18	10 18 8 3	11 22 26 52	11 21 29 56	+0 21	20 58	21
22	11 59 58	11 7 39 49	4 2 0 24	10 5 2 6	11 25 48 34	0 21 4 11	10 18 17 31	10 18 15 7	11 22 23 42	11 21 27 37	0 44	16 33	22
23	12 3 54	11 8 39 20	4 13 50 41	10 5 48 47	11 27 2 28	0 21 16 25	10 19 31 43	10 18 22 10	11 22 20 31	11 21 25 32	1 8	11 33	23
24	12 7 51	11 9 38 50	4 25 39 13	10 6 35 28	11 28 10 6	0 21 28 43	10 20 45 56	10 18 29 11	11 22 17 20	11 21 23 55	1 32	6 8	24
25	12 11 47	11 10 38 17	5 7 28 20	10 7 22 9	11 29 11 12	0 21 41 5	10 22 0 7	10 18 36 11	11 22 14 9	11 21 22 55	1 55	+0 30	25
26	12 15 44	11 11 37 41	5 19 20 7	10 8 8 51	0 0 5 28	0 21 53 32	10 23 14 19	10 18 43 8	11 22 10 59	11 21 22 33	2 19	−5 10	26
27	12 19 40	11 12 37 4	6 1 16 43	10 8 55 32	0 0 52 39	0 22 6 2	10 24 28 30	10 18 50 4	11 22 7 48	11 21 22 43	2 42	−10 42	27
28	12 23 37	11 13 36 25	6 13 20 17	10 9 42 14	0 1 32 37	0 22 18 37	10 25 42 41	10 18 56 59	11 22 4 37	11 21 23 17	3 6	−15 54	28
29	12 27 34	11 14 35 45	6 25 33 8	10 10 28 55	0 2 5 13	0 22 31 15	10 26 56 52	10 19 3 51	11 22 1 26	11 21 24 2	3 29	−20 32	29
30	12 31 30	11 15 35 2	7 7 57 52	10 11 15 37	0 2 30 22	0 22 43 57	10 28 11 2	10 19 10 42	11 21 58 16	11 21 24 47	3 52	−24 22	30
31	12 35 27	11 16 34 17	7 20 37 18	10 12 2 19	0 2 48 5	0 22 56 43	10 29 25 13	10 19 17 30	11 21 55 5	11 21 25 21	4 16	−27 6	31
अप्रै.	12 39 23	11 17 33 30	8 3 34 15	10 12 49 00	0 2 58 23	0 23 9 33	11 0 39 22	10 19 24 17	11 21 51 54	11 21 25 42	4 39	−28 28	अप्रै.
2	12 43 20	11 18 32 42	8 16 51 23	10 13 35 42	0 3 1 26	0 23 22 26	11 1 53 32	10 19 31 2	11 21 48 43	11 21 25 48	5 2	−28 14	2
3	12 47 16	11 19 31 52	9 0 30 45	10 14 22 23	0 2 57 25	0 23 35 23	11 3 7 42	10 19 37 44	11 21 45 33	11 21 25 43	5 25	−26 20	3
4	12 51 13	11 20 31 00	9 14 33 12	10 15 9 5	0 2 46 37	0 23 48 23	11 4 21 51	10 19 44 24	11 21 42 22	11 21 25 35	+5 48	−22 46	4
5	12 55 9	11 21 30 7	9 28 57 49	10 15 55 46	0 2 29 24	0 24 1 27	11 5 36 00	10 19 51 2	11 21 39 11	11 21 25 30	6 11	−17 46	5
6	12 59 6	11 22 29 12	10 13 41 35	10 16 42 26	0 2 6 15	0 24 14 34	11 6 50 8	10 19 57 38	11 21 36 00	11 21 25 31	6 33	−11 37	6
7	13 3 3	11 23 28 15	10 28 39 3	10 17 29 6	0 1 37 42	0 24 27 44	11 8 4 16	10 20 4 11	11 21 32 50	11 21 25 38	6 56	−4 44	7
8	13 6 59	11 24 27 16	11 13 42 48	10 18 15 46	0 1 4 24	0 24 40 57	11 9 18 24	10 20 10 41	11 21 29 39	11 21 25 45	7 18	+2 29	8
9	13 10 56	11 25 26 15	11 28 44 10	10 19 2 25	0 0 27 4	0 24 54 13	11 10 32 31	10 20 17 9	11 21 26 28	11 21 25 48	7 41	9 32	9
10	13 14 52	11 26 25 13	0 13 34 35	10 19 49 4	11 29 46 28	0 25 7 32	11 11 46 38	10 20 23 35	11 21 23 17	11 21 25 37	8 3	15 59	10

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. सं. २०८० (2023–24 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
22	0 22 8 55	11 01 10	9 5 47
25	0 22 17 4	11 01 17	9 5 51
28	0 22 25 29	11 01 23	9 5 54
31	0 22 34 9	11 01 30	9 5 57
अप्रै.	0 22 37 6	11 1 32	9 5 58
4	0 22 46 6	11 1 38	9 6 1
7	0 22 55 18	11 1 45	9 6 3
10	0 23 4 43	11 1 52	9 6 5
13	0 23 14 19	11 1 58	9 6 6
16	0 23 24 4	11 2 4	9 6 8
19	0 23 34 0	11 2 11	9 6 9
22	0 23 44 2	11 2 16	9 6 10
25	0 23 54 11	11 2 22	9 6 11
28	0 24 4 25	11 2 28	9 6 11
मई	0 24 14 44	11 2 33	9 6 11
4	0 24 25 6	11 2 38	9 6 11
7	0 24 35 30	11 2 43	9 6 10
10	0 24 45 54	11 2 48	9 6 10
13	0 24 56 19	11 2 52	9 6 9
16	0 25 6 44	11 2 57	9 6 8
19	0 25 17 6	11 3 1	9 6 6
22	0 25 27 24	11 3 4	9 6 5
25	0 25 37 39	11 3 8	9 6 3
28	0 25 47 48	11 3 11	9 6 1
31	0 25 57 50	11 3 15	9 5 58
जून	0 26 1 9	11 3 16	9 5 58
4	0 26 11 1	11 3 19	9 5 55
7	0 26 20 44	11 3 21	9 5 52
10	0 26 30 17	11 3 23	9 5 49
13	0 26 39 39	11 3 25	9 5 46
16	0 26 48 50	11 3 26	9 5 43
19	0 26 57 48	11 3 28	9 5 40
22	0 27 6 32	11 3 29	9 5 36
25	0 27 15 1	11 3 30	9 5 32

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
28	0 27 23 14	11 3 30	9 5 29
जुला	0 27 31 11	11 3 30	9 5 25
4	0 27 38 50	11 3 30	9 5 21
7	0 27 46 11	11 3 30	9 5 16
10	0 27 53 12	11 3 29	9 5 12
13	0 27 59 55	11 3 28	9 5 8
16	0 28 6 16	11 3 27	9 5 4
19	0 28 12 16	11 3 25	9 5 0
22	0 28 17 54	11 3 23	9 4 55
25	0 28 23 8	11 3 21	9 4 51
28	0 28 27 59	11 3 19	9 4 47
31	0 28 32 26	11 3 16	9 4 42
अग.	0 28 33 50	11 3 15	9 4 41
4	0 28 37 44	11 3 12	9 4 37
7	0 28 41 14	11 3 9	9 4 33
10	0 28 44 17	11 3 6	9 4 29
13	0 28 46 55	11 3 2	9 4 25
16	0 28 49 6	11 2 58	9 4 21
19	0 28 50 50	11 2 54	9 4 17
22	0 28 52 7	11 2 50	9 4 14
25	0 28 52 57	11 2 46	9 4 10
28	0 28 53 20	11 2 41	9 4 7
31	0 28 53 16	11 2 37	9 4 4
सितं.	0 28 53 8	11 2 35	9 4 3
4	0 28 52 28	11 2 30	9 4 0
7	0 28 51 22	11 2 26	9 3 57
10	0 28 49 48	11 2 21	9 3 55
13	0 28 47 48	11 2 16	9 3 52
16	0 28 45 23	11 2 11	9 3 50
19	0 28 42 31	11 2 6	9 3 48
22	0 28 39 15	11 2 1	9 3 47
25	0 28 35 35	11 1 56	9 3 45
28	0 28 31 32	11 1 51	9 3 44

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अक्तू.	0 28 27 6	11 1 46	9 3 43
4	0 28 22 19	11 1 41	9 3 43
7	0 28 17 11	11 1 37	9 3 42
10	0 28 11 43	11 1 32	9 3 42
13	0 28 5 57	11 1 28	9 3 42
16	0 27 59 54	11 1 23	9 3 43
19	0 27 53 35	11 1 19	9 3 43
22	0 27 47 2	11 1 15	9 3 44
25	0 27 40 17	11 1 11	9 3 46
28	0 27 33 20	11 1 7	9 3 47
31	0 27 26 14	11 1 4	9 3 49
नवं.	0 27 23 50	11 1 3	9 3 49
4	0 27 16 33	11 0 59	9 3 51
7	0 27 9 10	11 0 56	9 3 54
10	0 27 1 43	11 0 54	9 3 56
13	0 26 54 14	11 0 51	9 3 59
16	0 26 46 45	11 0 49	9 4 2
19	0 26 39 16	11 0 47	9 4 5
22	0 26 31 52	11 0 46	9 4 9
25	0 26 24 32	11 0 44	9 4 12
28	0 26 17 19	11 0 43	9 4 16
दिसं.	0 26 10 14	11 0 43	9 4 20
4	0 26 3 19	11 0 42	9 4 25
7	0 25 56 36	11 0 42	9 4 29
10	0 25 50 6	11 0 42	9 4 34
13	0 25 43 51	11 0 43	9 4 38
16	0 25 37 52	11 0 44	9 4 43
19	0 25 32 12	11 0 45	9 4 48
22	0 25 26 50	11 0 46	9 4 54
25	0 25 21 50	11 0 48	9 4 59
28	0 25 17 11	11 0 50	9 5 4
31	0 25 12 54	11 0 52	9 5 10
जन. 2024	0 25 11 34	11 0 53	9 5 12
4	0 25 7 49	11 0 56	9 5 17

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
7	0 25 4 29	11 0 59	9 5 23
10	0 25 1 35	11 1 2	9 5 29
13	0 24 59 8	11 1 6	9 5 35
16	0 24 57 8	11 1 10	9 5 41
19	0 24 55 35	11 1 14	9 5 46
22	0 24 54 31	11 1 18	9 5 52
25	0 24 53 54	11 1 23	9 5 58
28	0 24 53 46	11 1 28	9 6 4
31	0 24 54 6	11 1 33	9 6 10
फर.	0 24 54 19	11 1 35	9 6 12
4	0 24 55 18	11 1 40	9 6 17
7	0 24 56 45	11 1 46	9 6 23
10	0 24 58 40	11 1 51	9 6 29
13	0 25 1 4	11 1 57	9 6 34
16	0 25 3 55	11 2 3	9 6 39
19	0 25 7 14	11 2 9	9 6 45
22	0 25 10 59	11 2 16	9 6 50
25	0 25 15 11	11 2 22	9 6 55
28	0 25 19 49	11 2 29	9 7 0
मार्च	0 25 23 8	11 2 33	9 7 3
4	0 25 28 27	11 2 40	9 7 7
7	0 25 34 10	11 2 46	9 7 12
10	0 25 40 16	11 2 53	9 7 16
13	0 25 46 45	11 3 0	9 7 20
16	0 25 53 35	11 3 7	9 7 24
19	0 26 0 46	11 3 13	9 7 28
22	0 26 8 17	11 3 20	9 7 31
25	0 26 16 6	11 3 27	9 7 34
28	0 26 24 13	11 3 34	9 7 37
31	0 26 32 36	11 3 41	9 7 40
अप्रै.	0 26 35 28	11 3 43	9 7 41
4	0 26 44 12	11 3 49	9 7 44
7	0 26 53 11	11 3 56	9 7 46
10	0 27 2 23	11 4 2	9 7 48

'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2023–24 ई.

तारीख	अप्रैल–2023 ई.				मई–2023 ई.				जून–2023 ई.				जुलाई–2023 ई.				अगस्त–2023 ई.				सितंबर–2023 ई.				तारीख
	दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	14 20	3 40	14 21	3 52	14 55	3 15	15 00	3 24	16 29	3 09	16 39	3 13	17 26	2 56	17 41	2 56	19 17	4 42	19 30	4 42	19 49	7 05	19 56	7 11	1
2	15 16	4 14	15 18	4 26	15 50	3 43	15 56	3 51	17 32	3 42	17 44	3 45	18 35	3 46	18 50	3 46	20 04	5 57	20 16	5 58	20 23	8 13	20 28	8 20	2
3	16 11	4 45	16 15	4 55	16 46	4 11	16 54	4 17	18 39	4 21	18 53	4 22	19 41	4 47	19 56	4 45	20 44	7 10	20 54	7 13	20 57	9 19	21 01	9 28	3
4	17 06	5 14	17 11	5 23	17 44	4 40	17 53	4 45	19 48	5 07	20 03	5 07	20 39	5 55	20 53	5 54	21 20	8 20	21 29	8 25	21 33	10 24	21 35	10 35	4
5	18 01	5 42	18 08	5 49	18 45	5 11	18 56	5 15	20 55	6 03	21 10	6 01	21 30	7 08	21 42	7 08	21 54	9 27	22 00	9 34	22 12	11 28	22 12	11 41	5
6	18 57	6 11	19 06	6 16	19 50	5 47	20 03	5 49	21 57	7 06	22 11	7 05	22 12	8 21	22 23	8 22	22 27	10 32	22 31	10 40	22 55	12 32	22 55	12 46	6
7	19 56	6 40	20 07	6 45	20 57	6 29	21 11	6 29	22 50	8 15	23 04	8 15	22 49	9 31	22 59	9 34	23 00	11 35	23 03	11 45	23 43	13 33	23 42	13 47	7
8	20 58	7 13	21 10	7 16	22 04	7 18	22 19	7 17	23 36	9 27	23 48	9 27	23 23	10 37	23 30	10 42	23 36	12 37	23 37	12 49	– –	14 29	– –	14 45	8
9	22 02	7 50	22 16	7 51	23 08	8 15	23 23	8 14	– –	10 36	– –	10 38	23 55	11 41	– –	11 48	– –	13 39	– –	13 52	0 35	15 21	0 34	15 36	9
10	23 08	8 33	23 23	8 33	– –	9 19	– –	9 18	0 15	11 42	0 25	11 46	– –	12 42	0 01	12 51	0 15	14 40	0 16	14 55	1 31	16 06	1 30	16 20	10
11	– –	9 24	– –	9 23	0 05	10 28	0 19	10 27	0 49	12 46	0 58	12 52	0 27	13 43	0 31	13 54	0 59	15 39	0 59	15 54	2 27	16 46	2 27	16 59	11
12	0 13	10 22	0 28	10 21	0 54	11 37	1 07	11 38	1 21	13 47	1 28	13 55	1 00	14 44	1 02	14 56	1 48	16 34	1 47	16 49	3 24	17 20	3 25	17 32	12
13	1 13	11 27	1 28	11 26	1 36	12 44	1 48	12 47	1 52	14 48	1 58	14 57	1 36	15 45	1 37	15 59	2 41	17 23	2 40	17 38	4 19	17 51	4 21	18 02	13
14	2 08	12 35	2 22	12 36	2 13	13 49	2 23	13 53	2 24	15 49	2 28	15 59	2 16	16 45	2 16	17 00	3 37	18 07	3 36	18 20	5 13	18 19	5 17	18 28	14
15	2 55	13 44	3 08	13 46	2 47	14 51	2 55	14 58	2 58	16 50	3 01	17 02	3 02	17 43	3 01	17 58	4 33	18 45	4 33	18 57	6 06	18 46	6 12	18 54	15
16	3 36	14 52	3 47	14 56	3 19	15 53	3 25	16 01	3 36	17 52	3 37	18 05	3 52	18 37	3 51	18 52	5 29	19 18	5 31	19 29	6 59	19 13	7 06	19 19	16
17	4 12	15 58	4 22	16 03	3 50	16 55	3 55	17 05	4 18	18 52	4 18	19 07	4 46	19 25	4 45	19 39	6 24	19 48	6 27	19 58	7 53	19 40	8 01	19 45	17
18	4 46	17 02	4 53	17 09	4 23	17 57	4 26	18 09	5 06	19 49	5 05	20 04	5 42	20 07	5 42	20 20	7 18	20 16	7 22	20 24	8 48	20 10	8 58	20 13	18
19	5 18	18 05	5 24	18 14	4 59	19 00	5 01	19 13	5 58	20 42	5 56	20 56	6 39	20 44	6 40	20 56	8 11	20 42	8 16	20 49	9 45	20 43	9 56	20 45	19
20	5 51	19 08	5 55	19 19	5 39	20 02	5 39	20 16	6 53	21 28	6 52	21 42	7 35	21 16	7 37	21 27	9 03	21 09	9 10	21 15	10 45	21 22	10 58	21 22	20
21	6 26	20 12	6 28	20 24	6 23	21 02	6 23	21 17	7 50	22 08	7 49	22 21	8 29	21 45	8 33	21 55	9 57	21 37	10 06	21 41	11 48	22 07	12 02	22 06	21
22	7 03	21 15	7 04	21 28	7 13	21 58	7 11	22 13	8 46	22 43	8 47	22 55	9 22	22 12	9 27	22 21	10 52	22 08	11 02	22 10	12 51	23 00	13 06	22 59	22
23	7 45	22 17	7 45	22 31	8 06	22 48	8 05	23 03	9 41	23 15	9 44	23 25	10 15	22 39	10 21	22 46	11 50	22 43	12 02	22 44	13 53	– –	14 08	– –	23
24	8 32	23 15	8 31	23 30	9 02	23 32	9 01	23 46	10 35	23 43	10 39	23 52	11 08	23 06	11 16	23 12	12 52	23 24	13 05	23 24	14 51	0 01	15 06	0 01	24
25	9 22	– –	9 21	– –	9 59	– –	9 59	– –	11 29	– –	11 34	– –	12 02	23 36	12 12	23 39	13 57	– –	14 11	– –	15 42	1 09	15 56	1 09	25
26	10 17	0 08	10 16	0 23	10 55	0 11	10 56	0 23	12 22	0 11	12 29	0 18	13 00	– –	13 11	– –	15 02	0 13	15 17	0 12	16 27	2 20	16 39	2 21	26
27	11 13	0 55	11 13	1 10	11 50	0 44	11 53	0 56	13 16	0 38	13 25	0 44	14 01	0 08	14 13	0 11	16 05	1 11	16 20	1 10	17 07	3 32	17 17	3 34	27
28	12 10	1 37	12 10	1 50	12 44	1 15	12 49	1 25	14 13	1 06	14 23	1 11	15 06	0 46	15 20	0 47	17 02	2 18	17 16	2 17	17 43	4 41	17 51	4 46	28
29	13 06	2 13	13 08	2 25	13 38	1 43	13 44	1 51	15 14	1 38	15 25	1 41	16 13	1 32	16 28	1 32	17 52	3 30	18 05	3 30	18 17	5 49	18 23	5 56	29
30	14 01	2 45	14 04	2 56	14 33	2 10	14 40	2 17	16 18	2 13	16 31	2 15	17 20	2 27	17 35	2 26	18 36	4 44	18 47	4 45	18 51	6 56	18 56	7 05	30
31					15 29	2 39	15 38	2 44					18 22	3 31	18 37	3 30	19 14	5 56	19 23	5 59					31

'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2023–24 ई.

तारीख	अक्तूबर–2023 ई.				नवम्बर–2023 ई.				दिसम्बर–2023 ई.				जनवरी–2024 ई.				फरवरी–2024 ई.				मार्च–2024 ई.				तारीख
	दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर		
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	19 26	8 03	19 29	8 13	20 16	10 06	20 14	10 20	20 53	10 33	20 53	10 48	22 25	10 51	22 30	11 01	23 48	10 39	23 58	10 43	23 34	9 40	23 46	9 42	1
2	20 05	9 09	20 06	9 21	21 10	11 04	21 09	11 19	21 51	11 15	21 52	11 29	23 17	11 19	23 23	11 27	– –	11 08	– –	11 11	– –	10 15	– –	10 16	2
3	20 48	10 16	20 47	10 29	22 08	11 56	22 07	12 11	22 47	11 51	22 49	12 03	– –	11 45	– –	11 52	0 44	11 41	0 55	11 42	0 34	10 56	0 47	10 56	3
4	21 35	11 20	21 34	11 34	23 06	12 41	23 06	12 55	23 41	12 23	23 45	12 33	0 09	12 11	0 17	12 17	1 43	12 19	1 56	12 19	1 35	11 45	1 50	11 44	4
5	22 27	12 20	22 25	12 35	– –	13 20	– –	13 33	– –	12 51	– –	13 01	1 03	12 39	1 12	12 43	2 46	13 04	3 00	13 04	2 37	12 43	2 53	12 41	5
6	23 22	13 15	23 21	13 30	0 02	13 53	0 04	14 05	0 34	13 18	0 39	13 26	1 58	13 10	2 09	13 13	3 50	13 59	4 05	13 57	3 36	13 48	3 51	13 47	6
7	– –	14 03	– –	14 18	0 58	14 23	1 00	14 33	1 27	13 45	1 33	13 51	2 57	13 46	3 09	13 47	4 53	15 02	5 09	15 01	4 30	14 59	4 44	14 59	7
8	0 19	14 45	0 19	14 59	1 51	14 51	1 55	15 00	2 20	14 12	2 28	14 17	4 00	14 28	4 13	14 28	5 52	16 12	6 07	16 12	5 18	16 11	5 30	16 13	8
9	1 16	15 21	1 17	15 34	2 44	15 18	2 50	15 25	3 15	14 42	3 25	14 45	5 05	15 19	5 20	15 18	6 44	17 26	6 57	17 27	5 59	17 22	6 10	17 26	9
10	2 12	15 53	2 14	16 04	3 37	15 45	3 45	15 50	4 13	15 15	4 25	15 17	6 11	16 19	6 26	16 18	7 29	18 38	7 41	18 41	6 37	18 32	6 46	18 38	10
11	3 06	16 22	3 10	16 32	4 32	16 13	4 41	16 17	5 15	15 54	5 28	15 55	7 13	17 27	7 28	17 26	8 09	19 49	8 18	19 53	7 12	19 41	7 19	19 49	11
12	4 00	16 50	4 05	16 58	5 28	16 44	5 39	16 47	6 20	16 41	6 34	16 40	8 09	18 39	8 23	18 39	8 44	20 57	8 52	21 03	7 46	20 49	7 52	20 59	12
13	4 53	17 16	4 59	17 23	6 28	17 20	6 40	17 21	7 26	17 36	7 41	17 35	8 57	19 51	9 09	19 53	9 18	22 03	9 24	22 12	8 22	21 57	8 25	22 09	13
14	5 46	17 43	5 54	17 48	7 31	18 02	7 45	18 01	8 30	18 39	8 45	18 38	9 38	21 01	9 49	21 05	9 52	23 09	9 56	23 19	9 00	23 05	9 02	23 18	14
15	6 42	18 12	6 51	18 16	8 36	18 51	8 51	18 50	9 28	19 48	9 43	19 47	10 14	22 08	10 23	22 13	10 27	– –	10 30	– –	9 43	– –	9 43	– –	15
16	7 39	18 45	7 50	18 47	9 40	19 48	9 56	19 46	10 19	20 58	10 33	20 59	10 48	23 12	10 55	23 20	11 05	0 14	11 06	0 26	10 30	0 12	10 29	0 26	16
17	8 39	19 22	8 51	19 22	10 41	20 52	10 56	20 51	11 03	22 07	11 15	22 09	11 20	– –	11 25	– –	11 48	1 19	11 48	1 33	11 22	1 15	11 21	1 30	17
18	9 41	20 05	9 55	20 04	11 35	21 59	11 49	21 59	11 41	23 13	11 51	23 17	11 53	0 16	11 57	0 25	12 36	2 23	12 35	2 37	12 18	2 13	12 17	2 28	18
19	10 45	20 56	11 00	20 54	12 22	23 07	12 35	23 09	12 14	– –	12 23	– –	12 28	1 19	12 30	1 30	13 28	3 22	13 27	3 38	13 17	3 03	13 16	3 18	19
20	11 47	21 54	12 03	21 53	13 03	– –	13 14	– –	12 46	0 17	12 53	0 23	13 06	2 22	13 07	2 35	14 25	4 17	14 23	4 32	14 15	3 47	14 15	4 01	20
21	12 45	22 59	13 00	22 58	13 39	0 14	13 48	0 17	13 18	1 19	13 23	1 27	13 50	3 26	13 49	3 40	15 23	5 05	15 22	5 19	15 11	4 25	15 13	4 37	21
22	13 37	– –	13 51	– –	14 12	1 19	14 20	1 24	13 51	2 21	13 54	2 31	14 39	4 28	14 38	4 43	16 21	5 47	16 21	6 00	16 06	4 57	16 09	5 08	22
23	14 23	0 07	14 35	0 07	14 44	2 23	14 50	2 29	14 27	3 25	14 29	3 36	15 33	5 26	15 32	5 42	17 17	6 23	17 19	6 35	17 00	5 26	17 04	5 36	23
24	15 03	1 15	15 13	1 17	15 17	3 26	15 21	3 35	15 08	4 29	15 08	4 42	16 31	6 20	16 30	6 35	18 12	6 54	18 15	7 05	17 52	5 53	17 58	6 02	24
25	15 39	2 23	15 48	2 27	15 52	4 30	15 54	4 40	15 54	5 33	15 53	5 47	17 29	7 06	17 29	7 20	19 05	7 23	19 10	7 32	18 44	6 19	18 52	6 26	25
26	16 12	3 30	16 20	3 35	16 30	5 36	16 31	5 47	16 45	6 35	16 44	6 50	18 27	7 47	18 29	8 00	19 57	7 50	20 03	7 57	19 37	6 45	19 46	6 51	26
27	16 46	4 35	16 51	4 43	17 13	6 42	17 13	6 55	17 42	7 34	17 40	7 49	19 24	8 22	19 26	8 33	20 49	8 15	20 57	8 22	20 31	7 13	20 42	7 16	27
28	17 20	5 41	17 24	5 50	18 02	7 47	18 01	8 01	18 40	8 25	18 40	8 40	20 18	8 52	20 22	9 02	21 42	8 42	21 51	8 46	21 28	7 42	21 40	7 45	28
29	17 57	6 48	17 59	6 59	18 57	8 49	18 55	9 04	19 39	9 10	19 40	9 24	21 10	9 20	21 16	9 29	22 36	9 09	22 47	9 13	22 27	8 16	22 40	8 17	29
30	18 38	7 54	18 38	8 07	19 54	9 45	19 53	10 00	20 36	9 48	20 38	10 01	22 02	9 46	22 09	9 54					23 28	8 55	23 42	8 54	30
31	19 24	9 01	19 23	9 15					21 32	10 22	21 35	10 33	22 54	10 12	23 03	10 18					– –	9 40	– –	9 39	31

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त—सं. २०८० वि. (सन् 2023-24 ई.)

समय शुद्धि विचार (अशुभ समय—विचार)—

(1) गुरु—अस्त विचार—वि. संवत् २०८० मध्ये 31 मार्च, 2023 ई. को गुरु पश्चिम में अस्त होकर 29 अप्रैल, 2023 ई. को पूर्व में उदय होगा। **ध्यान रहे**, गुरु—शुक्र अस्तदिन से 3 दिन पहले **वार्धक्य दोष** और उदय दिन के 3 दिन बाद तक **बाल्यत्वदोष** रहता है। तद्नुसार 2 मई, 2023 ई. तक **गुरु—बाल्यत्वदोष** रहेगा।

ध्यान रहे, सम्वतारम्भ (22 मार्च) से 13 अप्रैल, 2023 तक **चैत्र मास** अर्थात् सूर्य मीन राशि में होगा।

(2) श्रावण अधिक (पुरुषोत्तम, मल) मास—18 जुलाई से 16 अगस्त, 2023 ई. तक श्रावण अधिक मास है। अतः इस समयावधि में शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। (देखें पृ. 81)

(3) शुक्र अस्त विचार—शुक्र ता. 3 अगस्त, 2023 ई. को पश्चिम में अस्त होकर ता. 18 अगस्त, 2023 ई. को पूर्व में उदित होगा। ता. 31 जुलाई, 2023 ई. से **शुक्र—वार्धक्यदोष** तथा 21 अगस्त, 2023 ई. तक **शुक्र—बाल्यत्वदोष** रहेगा।

(4) चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त—पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू—काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परया एवं लोकमान्यता—अनुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्त्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। कुछ मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने तो ऐसी परम्पराओं को शास्त्र से भी अधिक महत्त्व देने का परामर्श दिया है। [देखें मुहूर्त्त—चिन्तामणिः (पीयूषधारा)] 'वृहत्संहिता' में वराह का यह वाक्य है—

''देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः, देशे—देशे या स्थितिः सैव कार्या।
लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति, दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।''

(5) श्राद्ध दिन—ता. 29 सितम्बर से 14 अक्तूबर, 2023 ई. तक श्राद्ध—दिन (पितृ—पक्ष) रहेंगे।

(6) कार्तिक मास—ता. 17 अक्तू. से 15 नवम्बर, 2023 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभ कृत्य सम्पादित करने की शास्त्राज्ञा है।

(7) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तूबर, 2023 ई.)—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण **'अश्विनी'** नक्षत्रकालीन घटित होने से आगामी तीन मास (28 जनवरी, 2024 ई.) तक यह नक्षत्र विवाहादि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य रहेगा। (देखें पृष्ठ 27)।

(8) भीष्म—पंचक—(23 से 27 नवम्बर)—पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में परम्परावश विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ नहीं माना जाता, जबकि भारत के अधिकांश अन्य प्रदेशों में जैसे—उत्तरप्रदेश, राज., दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में परम्परागत विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध नहीं माना जाता।

(9) पौष मास—16 दिसम्बर, 2023 ई. से 13 जनवरी, 2024 ई. तक पौष मास (धनुस्थ सूर्य) रहेगा।

(10) चैत्र मास—ता. 14 मार्च, 2024 ई. से चैत्र मास प्रारम्भ हो जाएगा।

आगे दिए गए विवाह मुहूर्त्तों में 'लतादि दश गुण—दोष रेखाएं' शीर्षक के अन्तर्गत सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है, जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, लग्नस्थ व सप्तमस्थ क्रूर ग्रहादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। (आगामी पृष्ठों पर दिया गया लेख 'विवाह—मुहूर्त्त में लतादि दश दोष विचार' पढ़ें।) परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है, नवम दोष क्रान्तिसाम्य के लिए स्थूल क्रान्तिसाम्य के स्थान पर सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य (महापात् गणित) प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

***सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण*—विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ** तथा **१२ की संख्या को मीन लग्न** जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

आवश्यके = लग्न निर्बल है, अतः अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

पादवेध = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

ध्यान रहे—विवाह मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीख सूर्योदयकालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात्रि 12 बजे के बाद तथा सूर्योदय से पहिले का हो, वहाँ अंग्रेजी तारीख अगली (अग्रिम) समझनी चाहिए।

आवश्यक नोट—जिस मुहूर्त्त में गुरू, बुध—शुक्र की केन्द्र—त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरू की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है। ***परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।***

※ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ※ सन् 2023 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
वैशा. शु.१२,मंग	2 मई	१९ वैशा.	हस्त	19:41 बाद	मेष	कन्या	ऽसू.ऽ। । । । । । । ।	27:19 तक गुरु बालयत्व दोष, रा. ल. १२ (चं. श. दा.)
वैशा.शु.१३, बुध	3 मई	२० वैशा.	हस्त	20:56 तक	मेष	कन्या	ऽसू.ऽ। । । । । । । ।	दि. ल. २ (सू. गु. रा. दान), ४ (के. दा.), कर्क लग्न 11:27 तक, 11:27 से 15:03 तक वज्रदोष
वैशा.शु. १३,बुध	3 मई	२० वैशा.	चित्रा	20:56 बाद	मेष	कन्या	। । । । । । ऽ । । ।	रा. ल. १० (गुरु केन्द्रगते षष्ठस्थ शु. परिहार), 26:44 से मृत्युवाण-दोष
ज्ये. कृ. ५, बुध	10 मई	२७ वैशा.	उ.षा.	16:12 बाद	मेष	ध./म.	।ऽ । । ऽमं. । । । । ।	रा. ल. ९ (मं. शु. दा., अष्टमस्थ मं. परिहार), १२ (श. दा.)
ज्ये. कृ. ६, गुरु	11 मई	२८ वैशा.	उ.षा.	14:37 तक	मेष	मकर	।ऽ । । ऽमं.ऽरो. । । । ।	दि. ल. २
ज्ये. कृ. ६, गुरु	11 मई	२८ वैशा.	श्रवण	14:37 बाद	मेष	मकर	ऽबु. । । । । ऽरो.ऽऽ । ।	रा. ल. ९ (मं. शु. दा., अष्टमस्थ मं. परिहार), १२ (श. दा.)-भद्रा परिहार
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	२९ वैशा.	श्रवण	13:03 तक	मेष	मकर	ऽबु. । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. २ (सू. दा.)
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	२९ वैशा.	धनि.	13:03 बाद	मेष	म./कुं.	ऽके. । । । । । । ऽ । ।	21:33 से 26:06 तक क्रान्तिसाम्य दोष, तदुपरान्त रा. ल. १२ (चं. श. दा.)
ज्ये. कृ. ८, शनि	13 मई	३० वैशा.	धनि.	11:35 तक	मेष	कुम्भ	ऽके. । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. २, ३ (शु. दा.), 10:00 बाद मृत्युवाण दोष

※ ज्येष्ठ मास (मई–जून) ※ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	दि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
ज्ये. कृ. १२, मंग	16 मई	२ ज्ये.	उ.भा.	8:15 तक	वृष	मीन	। । । । । । ऽऽ । ।	दि. ल. ३ (प्रातः 8:15 तक)
ज्ये. कृ. १२, मंग	16 मई	२ ज्ये.	रेवती	8:15 बाद	वृष	मीन	। । । । । ऽमृ. । ऽ । ।	दि. ल. ३ (8:15 बाद), 12:37 से 25:02 तक मृत्युबाण दोष, 23:37 बाद-कृष्ण त्रयोदशी
ज्ये. शु. १, शनि	20 मई	६ ज्ये.	रोहि.	8:03 बाद	वृष	वृष	ऽश. । । । । । । । । ।	गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. शु. दा.), १२ (गु. श. दा.)-चंद्र पूज्य
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	७ ज्ये.	रोहि.	9:05 तक	वृष	वृष	ऽश. । । । । । । । । ।	दि. ल. ३ (9:05 तक, सू. चं. दा.)
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	७ ज्ये.	मृग.	9:05 बाद	वृष	वृ./मिथु	। । । । । ऽचौ.ऽ । । ।	दि. ल. ३ (9:05 बाद, चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं., षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. मं. शु. दा.), १२ (श. दा.)
ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	८ ज्ये.	मृग.	10:37 तक	वृष	मिथुन	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (चं. शु. दा.)
ज्ये. शु. ७, शुक्र	26 मई	१२ ज्ये.	मघा	20:50 बाद	वृष	सिंह	ऽमं. । । । । । ऽऽ । ।	19:03 से 22:39 तक व्याघात दोष, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, श. दा., चं. पूज्य)
ज्ये. शु. ७, शनि	27 मई	१३ ज्ये.	मघा	23:43 तक	वृष	सिंह	ऽमं. । । । । । ऽऽ । ।	दि. ल. ३ (7:43 तक, शु.दा.), 7:43 से 20:50 तक भद्रा-दोष, रा. ल. ९ (20:50 बाद, अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. शु. दा.)
ज्ये. शु. ८, रवि	28 मई	१४ ज्ये.	उ.फा.	26:20 बाद	वृष	सिंह	। । । । । ऽनृ.ऽ । । ।	रा. ल. १२ (26:20 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार) (चं. श. दा.)
ज्ये. शु. ९, चंद्र	29 मई	१५ ज्ये.	उ.फा.	28:29 तक	वृष	सिं./कं.	। । । । । ऽनृ.ऽ । । ।	दि. ल. ३ (सू. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. शु. दा.), १२ (चं. श. दा.)
ज्ये. शु. १० मंग	30 मई	१६ ज्ये.	हस्त	दिन-रात	वृष	कन्या	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (20:54 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. शु. दा.), -धनु लग्न अल्पकाले, 20:54 बाद व्यतीपात दोष
ज्ये. शु. ११, बुध	31 मई	१७ ज्ये.	चित्रा	6:00 बाद	वृष	कं./तुला	।ऽ । । । ऽचौ.ऽ । । ।	20:14 तक व्यतीपात दोष, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. शु. दा.),
ज्ये. शु. १२, गुरु	1 जून	१८ ज्ये.	चित्रा	6:48 तक	वृष	तुला	।ऽ । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ३ (6:48 तक, शु. दा.)
ज्ये. शु. १४,शनि	3 जून	२० ज्ये.	अनु.	6:16 से 29:04	वृष	वृश्चिक	। । । ऽबु. । । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. शु. परिहार, -मं. शु. दा.), १२ (श. दा.)-भद्रा परिहार
आषा. कृ.१, चंद्र	5 जून	२२ ज्ये.	मूल	25:23 तक	वृष	धनु	।ऽ । । । ऽअ. । । । ।	दि. ल. ३ (चं. पूज्य), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं.-शु. परिहार), १२ (25:23 तक, श. दा.) मीन लग्न अल्पकाले
आषा. कृ.३, मंग	6 जून	२३ ज्ये.	उ.षा.	23:13 बाद	वृष	ध./म.	। । । । । । । ऽ । ।	रा. ल. १२ (श. दा.)-दग्धातिथि व भद्रा परिहार

शुभ विवाह मुहूर्त—ज्येष्ठ मास (मई-जून)—सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
आषा. कृ.४, बुध	7 जून	२४ ज्ये.	उ.षा.	21:03 तक	वृष	मकर	। । । । । ऽनृ. । ऽ ऽ ऽ	दि. ल. ३ (सू. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (21:03 तक, अष्टमस्थ मं. शु. परिहार)
आषा. कृ.४, बुध	7 जून	२४ ज्ये.	श्रव.	21:03 बाद	वृष	मकर	। । । । ऽमं.शु. । । ऽ ऽ ।	रा. ल. ९ (21:03 बाद, मं. शु. पूंज्य), १२ (26:44 तक, श. दा.) 26:44 से क्रान्तिसाम्य दोष
आषा. कृ.५, गुरु	8 जून	२५ ज्ये.	श्रव.	18:59 तक	वृष	मकर	। । । । ऽमं.शु. । । ऽ ऽ ।	प्रातः 8:37 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि. ल. ६ (गु. दा.)
आषा. कृ. ८, रवि	11 जून	२८ ज्ये.	उ.भा.	14:32 बाद	वृष	मीन	। । । । । ऽरो.ऽ ऽ । ।	दि. ल. ६ (14:32 बाद), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. शु. परिहार, मं. शु. दा.), १२ (चं. श. दा.)
आषा. कृ. ९, चंद्र	12 जून	२९ ज्ये.	उ.भा.	13:50 तक	वृष	मीन	। । । । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (सू. बु. दा.), ६ (13:50 तक, चं. दा.)
आषा. कृ. ९, चंद्र	12 जून	२९ ज्ये.	रेव.	13:50 बाद	वृष	मीन	। । । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ६ (13:50 बाद, चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (अष्टमस्थ मं. शु. परिहार, मं. शु. दा.), –भद्रा 22:02 से (भूलोके)
आषा.कृ.१०, मंग	13 जून	३० ज्ये.	रेव.	13:33 तक	वृष	मीन	। । । । । । । । ऽ । ।	प्रातः 9:29 तक भद्रा, दि. ल. ६ (13:33 तक, चं. दा. व पूज्य)

✲ आषाढ़ मास (जून-जुलाई) ✲ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा. शु. ५, शुक्र	23 जून	९ आषा.	मघा	दिन-रात	मिथुन	सिंह	। । । । । ऽरो. ऽ ऽ । ।	प्रातः 7:07 तक वज्र-दोष, दि. ल. ६, ८, गोधूलि, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), २ (शु. दा.)
आषा. शु. ८, चंद्र	26 जून	१२ आषा	हस्त	12:44 बाद	मिथुन	कन्या	। । । । । । । । ऽ । ।	18:16 तक मृत्युबाण दोष, तदुपरान्त परिहार, गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. श. दा.), २ (शु. दा.) –दग्धा तिथि परिहार
आषा. शु. ९, मंग	27 जून	१३ आषा	हस्त	14:43 तक	मिथुन	कन्या	। । । । । । । । ऽ । ।	प्रातः 6:23 से 9:23 तक परिघ दोष, दि. ल. ६ (चं. दा.)
आषा. शु. ९, मंग	27 जून	१३ आषा	चित्रा	14:43 बाद	मिथुन	कं/तुला	। । ऽके. । । । । । । ।	दि. ल. ८ (सू. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. श. दा.), २ (27:28 तक, शु. दा.), 27:28 तक केतु युति का परिहार है, तदुपरान्त नहीं है।

देवशयनकाल (चातुर्मास्य) के विवाह–मुहूर्त्त (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर आदि के लिए) [29 जून से 23 नवंबर तक]

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा.शु.१२, शुक्र	30 जून	१६ आषा	अनु.	16:10 बाद	मिथुन	वृश्चिक	ऽसू.ऽ । ऽगु. । । । । । ।	दि. ल. ८ (चं. बु. दा.), 21:24 से 27:47 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा. ल. २ (27:47 बाद)–अल्पकाले
आषा.शु.१३, शनि	1 जुला	१७ आषा	अनु.	15:04 तक	मिथुन	वृश्चिक	ऽसू.ऽ । ऽगु. । । । । । ।	दि. ल. ४ (शु. दा.), ६ (गु. दा.)
आषा.शु.१४, रवि	2 जुला	१८ आषा	मूल	13:18 बाद	मिथुन	धनु	। । । । । । । ऽ ऽ ।	दि. ल. ८ (बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (श. दा.), २ (शु. दा.)–भद्रा परिहार
आषा.पूर्णिमा, चंद्र	3 जुला	१९ आषा	मूल	11:02 तक	मिथुन	धनु	। । । । । । । ऽ ऽ ।	दि. ल. ४ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.)
शु.श्रा.कृ. ३, गुरु	6 जुला	२२ आषा	धनि.	24:25 तक	मिथुन	म./कुंभ	। । । ऽशु.ऽशु. । ऽ । । ।	प्रातः 8:18 तक शुक्रपादवेध, तदुपरान्त दि. ल. ४ (अल्पकाले, बु. शु. दा.), मृत्युबाण–परिहार, ६ (मं. दा.), ८ (सू. दा.), रा. ल. १२ (24:25 तक, चं. श. दा.)
शु.श्रा.कृ. ७, रवि	9 जुला	२५ आषा	उ.भा.	19:30 तक	मिथुन	मीन	। । । । । ऽनृ.ऽ । । ।	प्रातः 8:56 तक भद्रा–दोष, दि. ल. ६ (चं. पूज्य), 14:43 से 17:07 तक अतिगण्ड दोष, ८ (17:07 बाद, सू. गु. दा.), गोधूलि
शु.श्रा.कृ. ७, रवि	9 जुला	२५ आषा	रेव.	19:30 बाद	मिथुन	मीन	। । । । । । । ऽ । ऽ	गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. श. दा.) (षष्ठस्थ शु. परिहार), २ (गु. दा.)–दग्धा परिहार
शु.श्रा.कृ. ८, चंद्र	10 जुला	२६ आषा	रेव.	18:59 तक	मिथुन	मीन	। । । । । । । ऽ । ऽ	दि. ल. ४ (बु. दा.), ६ (चं. पूज्य), ८ (सू. दा.)–दग्धा परिहार
शु.श्रा.कृ.११, गुरु	13 जुला	२९ आषा	रोहि.	20:52 बाद	मिथुन	वृष	ऽशऽ । । । । । ऽ । ।	रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शुक्र परिहार, शु. श. दा.), २ (गु. दा.)
शु.श्रा.कृ.१२, शुक्र	14 जुला	३० आषा	रोहि.	22:27 तक	मिथुन	वृष	ऽश.ऽ । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ४ (बु. दा.), ६, ८ (सू. दा.), 19:08 से कृष्ण त्रयोदशी

शुभ विवाह मुहूर्त्त—भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर) ✲ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में)
[ता. 18 जुलाई से 16 अगस्त, 2023 ई. तक श्रावण अधिक मास]								
[ता. 3 अगस्त से 21 अगस्त, 2023 ई. तक शुक्र—अस्त दोष]								
शु.श्रा.शु.८, गुरु	24 अग.	८ भाद्र.	अनु.	9:04 बाद	सिंह	वृश्चिक	।।।ऽगु.।।।ऽ।।	दि. ल. ८ (चं. गु. दा.), 15:06 से 21:08 तक गुरु पादवेध, 20:36 से वैधृति-दोष (भद्रा-परिहार)
शु.श्रा.शु.१०, शनि	26 अग.	१० भाद्र.	मूल	8:38 बाद	सिंह	धनु	।।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ	दि. ल. ८ (चं. दा.), ९ (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), १० (बु. शु. दा.), रा. ल. ३ (चं. दा.), ४ (शु. के. दा.)—दग्धातिथि परिहार
शु.श्रा.शु.१२, चंद्र	28 अग.	१२ भाद्र.	उ.षा.	26:43 तक	सिंह	मकर	ऽसू.।।।।।।।।।	11:07 तक मृत्युबाणदोष, तदुपरान्त परिहार, दि. ल. ८, ९ (अष्टमस्थ शु. परिहार), १० (चं. शु. दा.), रा. ल. २ (शु. दा.)
शु.श्रा.शु.१३, मंग	29 अग.	१३ भाद्र.	धनि.	23:50 बाद	सिंह	मकर	।।।ऽशु.ऽ।ऽऽ।।	रा. ल. २ (23:50 बाद, शु. दा.), 25:51 से 28:51 तक अतिगण्ड दोष, ४ (28:15 बाद, —चं. शु. दा. व पूज्य)
भाद्र. कृ. ७, बुध	6 सितं.	२१ भाद्र.	रोहि.	9:20 बाद	सिंह	वृष	ऽशऽ।।।ऽमृ.।ऽ।।	प्रातः 6:33 से 18:28 तक मृत्युबाण दोष, तदुपरान्त परिहार, 22:25 से 26:01 तक वज्र दोष, रा. ल. ४ (शु. दा.)
भाद्र. कृ. ८, गुरु	7 सितं.	२२ भाद्र.	मृग.	10:25 बाद	सिंह	वृ./मि.	ऽबुशु।।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि. ल. ८ (चं. दा.), ९ (षष्ठस्थ चंद्र एवं अष्टमस्थ शुक्र परिहार) (चं. शु. मं. दा.), १० (शु. दा.), रा. ल. २ (चं. शु. दा.), ३ (चं. दा.), ४ (शु. के. दा.)
भाद्र. कृ. ९, शुक्र	8 सितं.	२३ भाद्र.	मृग.	12:10 तक	सिंह	मिथुन	ऽ।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ८ (12:10 तक, **अल्पकाले लग्न**, अष्टमस्थ चं. परिहार)

✲ आश्विन मास (सितम्बर-अक्तूबर) ✲ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में)
भाद्र शु.५, बुध	20 सितं.	४ आश्वि	अनु.	14:59 बाद	कन्या	वृश्चिक	।।।ऽगु.।।।।।।	दि. ल. १० (शु. दा.), 21:08 से 27:17 तक गुरुपादवेध
भाद्र. शु.६, गुरु	21 सितं.	५ आश्वि	अनु.	15:35 तक	कन्या	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	पादेन गुरुवेधऽभावः, दि. ल. ८ (चं. दा.), ९ (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. दा.), १० (15:35 तक)
भाद्र शु.७, शुक्र	22 सितं.	६ आश्वि	मूल	15:35 बाद	कन्या	धनु	।।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. १० (15:35 बाद, बु. शु. दा.), रा. ल. २ (अष्टमस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, (चं. पूज्य), ३ (चं. दा.), ४ (षष्ठस्थ चं. परिहार, शु. दा.)—दग्धातिथि व भद्रा-परिहार
भाद्र शु.८, शनि	23 सितं.	७ आश्वि	मूल	14:56 तक	कन्या	धनु	।।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (14:56 तक, चं. दा.)
भाद्र शु.९, रवि	24 सितं.	८ आश्वि	उ.षा.	13:42 बाद	कन्या	ध./मक	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (13:42 बाद, चं. दा.), १० (बु. शु. दा.), 18:39 से 21:03 तक अतिगण्ड दोष, रा. ल. २ (21:03 बाद, शु. दा.), ४ (चं. शु. दा.)
भाद्र.शु.१०, चंद्र	25 सितं.	९ आश्वि	उ.षा.	11:55 तक	कन्या	मकर	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ८ (11:55 तक, गु. दा.)
भाद्र.शु.१०, चंद्र	25 सितं.	९ आश्वि	श्रवण	11:55 बाद	कन्या	मकर	ऽके।।।।ऽरो.।।।।	दि. ल. ८ (11:55 बाद, गु. दा.), ९ (अष्टमस्थ शु. परिहार), १० (बु. शु. दा. व पूज्य), रा. ल. २ (शु. दा.), ४ (चं. शु. दा.)—भद्रा परिहार
भाद्र.शु.१२, मंग	26 सितं.	१०आश्वि	धनि.	9:42 बाद	कन्या	म./कुंभ	ऽसू।।ऽशु.ऽ।ऽ।।।	दि. ल. ८, ९ (अष्टमस्थ शु. परिहार), 15:04 से 20:26 तक शुक्र पादवेध, रा. ल. २,३,४ (के.दा.)

✲ कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) ✲ सन् 2023 ई. (केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए)

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में)
आश्वि.शु.४, बुध	18 अक्तू.	२ कार्ति.	अनु.	21:01 तक	तुला	वृश्चिक	ऽमं।।ऽगु.।।।।।।	13:31 तक क्षीण सूर्यांश, दि. ल. १० (13:31 बाद, अष्टमस्थ शु. परिहार), १२ (अष्टमस्थ मं. एवं षष्ठस्थ शु. परिहार, रा. ल. २ (21:01 तक, सू. दा.)—भद्रा परिहार

शुभ विवाह मुहूर्त्त—कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) ✲ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
आश्वि.शु.५, गुरु	19 अक्तू	३ कार्ति.	मूल	21:04 बाद	तुला	धनु	। । । । । । । । । ।	मृत्युबाण परिहार, रा. ल. ३ (चं. शु. दा.), ४ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चन्द्रोऽपरि गुरुदृष्टि शुभप्रदा), ६ (29:08 बाद अतिगण्ड दोष)
आश्वि.शु.६, शुक्र	20 अक्तू	४ कार्ति.	मूल	20:41 तक	तुला	धनु	। । । । । ऽअ. । । । ।	दि. ल. ८ (सू. दा.), ९ (सू. चं. दा.), १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. २ (20:41 तक)
आश्वि.शु.७, शनि	21 अक्तू	५ कार्ति.	उ.षा.	19:54 से	तुला	ध./मक	। । । । । ऽनृ. । ऽ । ।	रा. ल. २ (19:54 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार), ३ (चं. शु. दा.), ४ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. के. दान), ६ (गु. दा.)–भद्रा परिहार
आश्वि.शु.८, रवि	22 अक्तू	६ कार्ति.	उ.षा.	18:44 तक	तुला	मकर	। । । । । ऽनृ. । ऽ । ।	दि. ल. ८, ९, १० (चं. शु. दा., अष्टमस्थ शु. परिहार), १२ (अष्टमस्थ मं. एवं षष्ठस्थ शु. परिहार)
आश्वि.शु.८, रवि	22 अक्तू	६ कार्ति.	श्रव.	18:44 बाद	तुला	मकर	ऽके. । । । । । । । । ।	रा. ल. २, ३ (21:52 तक, अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. शु. पूज्य), 21:52 से 23:52 तक–शूल–दोष, ४ (23:52 बाद, चं. के. दा.), ६
आश्वि.शु.९, चंद्र	23 अक्तू	७ कार्ति.	श्रव.	17:14 तक	तुला	मकर	ऽके. । । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (मं. गु. दा.), ९, १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), १२ (17:14 तक, अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
आश्वि.शु.१२, गुरु	26 अक्तू	१० कार्ति.	उ.भा.	11:27 बाद	तुला	मीन	ऽसू. । । । । ऽरो.ऽ । । ।	प्रात: 8:50 से 12:26 तक व्याघात दोष, दि. ल. १० (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. २, ३ (शु. दा.), ४, ६ (चं. दा. व पूज्य)
कार्ति.कृ.४, बुध	1 नवं.	१६ कार्ति.	मृग.	28:36 तक	तुला	वृ./मि.	। । । । । । ऽऽ । ।	दि. ल. ८ (चं. मं. दा.), ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दान), १० (मं. दा., अष्टमस्थ शु. परिहार), गोधूलि, रा. ल. २ (चं. दा.), ३ (चं.शु.दा.), ४ (चं. दा.)
कार्ति.कृ.९, चंद्र	6 नवं.	२१ कार्ति.	मघा	13:23 बाद	तुला	सिंह	ऽबु. । । । ऽश. । । ऽ । ।	14:41 तक मृत्युबाणदोष, गोधूलि, रा. ल. २ (19:55 तक) 19:55 से 24:50 तक––क्रान्तिसाम्य दोष, तदुपरान्त लग्नऽभाव:
कार्ति.कृ.१०, मंग	7 नवं.	२२ कार्ति.	मघा	16:24 तक	तुला	सिंह	ऽबु. । । । ऽऽअ.ऽऽ । ।	दि. ल. ८ (मं. बु. दा.), ९ (रा. दा.), १० (अष्टमस्थ चं. परिहार, चंद्रोऽपरि गुरुदृष्टि शुभप्रदा)
कार्ति.कृ.११, गुरु	9 नवं.	२४ कार्ति.	हस्त	21:57 बाद	तुला	कन्या	। । । । । । । ऽ । ऽ	रा. ल. ४ (शु. के. दा.), दग्धा–परिहार
कार्ति.कृ.१२, शुक्र	10 नवं.	२५ कार्ति.	हस्त	24:08 तक	तुला	कन्या	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ८ (मं. बु. दा.), ९ (रा. दा.), १० (12:36 तक), 12:36 से कृष्ण त्रयोदशी
कार्ति.शु.१, मंग	14 नवं.	२९ कार्ति.	अनु.	27:24 तक	तुला	वृश्चिक	। । ऽबुऽगु. । । । । । ।	दि. ल. ८ (चं. मं. दा.), ९, १०, 13:56 से 16:20 तक अतिगण्ड, गोधूलि, रा. ल. २, ३ (21:24 तक), 21:24 से गुरुपादवेध, 25:40 से मृत्युबाण दोष

✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) ✲ सन् 2023 ई. (चातुर्मास–अन्तर्गते)

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति.शु.५, शनि	18 नवं.	३ मार्ग.	श्रवण	24:07 बाद	वृश्चिक	मकर	ऽके.ऽ । । । । । ऽ । । ।	रा. ल. ७ (शु. दा.)
कार्ति.शु.६, रवि	19 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	22:49 तक	वृश्चिक	मकर	ऽके.ऽ । । । ऽअ. । ऽ । ।	दि. ल. ९ (मं. दा.), १० (चं. दा.), १ (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ४ (22:49 तक) (चं. पूज्य)
कार्ति.शु.१०, बुध	22 नवं.	७ मार्ग.	उ.भा.	18:37 बाद	वृश्चिक	मीन	। । । ऽशु. । । ऽऽ । ।	24:17 तक शुक्र पादवेध विचार्य, रा. ल. ७ (शु. दा., षष्ठस्थ चं. परिहार)
कार्ति.शु.११, गुरु	23 नवं.	८ मार्ग.	उ.भा.	17:16 तक	वृश्चिक	मीन	। । । । । ऽचौ.ऽऽ । ।	दि. ल. ९ (10:04 तक) तदुपरान्त भद्रा (भूलोके) (भीष्मपंचक विचार)
कार्ति. पूर्णिमा, चंद्र	27 नवं.	१२ मार्ग.	रोहि.	13:36 बाद	वृश्चिक	वृष	ऽश. । । । ऽसू. । । ऽ । ।	मृत्युबाण प्रात: 10:51 तक, तदुपरान्त परिहार, गोधूलि, रा. ल. ३ (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार), ४, ७ (गु. पूज्य, शु. दा., अष्टमस्थ चं. परिहार)—भीष्मपंचक विचार

(चातुर्मास्य के विवाह मुहूर्त्त समाप्त)

मार्ग. कृ. १, मंग	28 नवं.	१३ मार्ग.	रोहि.	13:32 तक	वृश्चिक	वृष	ऽश. । । ऽसू.ऽअ. । ऽ । ।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), १०

शुभ विवाह मुहूर्त—मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) ✲ सन् 2023 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिनटों में)
मार्ग. कृ. १, मंग	28 नवं.	१३ मार्ग.	मृग.	13:32 बाद	वृश्चिक	वृ./मि.	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. ३ (चं. बु. दा.), ४, ७ (गु. शु. दा.)
मार्ग. कृ. २, बुध	29 नवं.	१४ मार्ग.	मृग.	13:59 तक	वृश्चिक	मिथुन	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ९ (चं. बु. दा.), १० (षष्ठस्थ चं. परिहार)
मार्ग.कृ. १०, गुरु	7 दिसं.	२२ मार्ग.	हस्त	दिन-रात	वृश्चिक	कन्या	ऽबु.।।।।ऽअ.।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (बु. रा. दा.), १०, रा. ल. ३ (बु. दा.), ४, ७ (गु. शु. दा.)
मार्ग.कृ. ११ शुक्र	8 दिसं.	२३ मार्ग.	हस्त	8:54 तक	वृश्चिक	कन्या	ऽबु.।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (बु. दा., 8:54 तक)
मार्ग.कृ. ११, शुक्र	8 दिसं.	२३ मार्ग.	चित्रा	8:54 बाद	वृश्चिक	कं./तु.	।।ऽके.।ऽऽनृ.ऽऽ।।	दि. ल. ९ (8:54 बाद), १०, रा. ल. ३ (बु. दा.), ४ (21:53 तक)– –21:53 बाद केतुयुति का परिहार नहीं है।
✲ माघ मास (जनवरी-फरवरी) ✲ सन् 2024 ई.								
पौष शु. ६, मंग	16 जन.	३ माघ	उ.भा.	28:38 तक	मकर	मीन	।।।।।।ऽ।।।	दोपहर 14:12 तक मृत्युबाण दोष तदुपरान्त परिहार, गोधूलि, रा. ल. ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु. दा.), ८ (शु. दा.)
पौष शु. १०, शनि	20 जन.	७ माघ	रोहि.	27:09 बाद	मकर	वृष	ऽश.।।।।ऽचौं.।।ऽ।	रा. ल. ८ (27:09 बाद, चं. दा.)
पौष शु. ११, रवि	21 जन.	८ माघ	रोहि.	27:52 तक	मकर	वृष	ऽश.।।ऽसू.।ऽचौं.।।ऽ।	दि. ल. १ (गु. दा.), 15:52 से सूर्यवेध (भद्रा-परिहार)
माघ कृ. ४, मंग	30 जन.	१७ माघ	हस्त	22:06 बाद	मकर	कन्या	।।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. ७ (चं. शु. दा.), ८ (गु. दा.)
माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	१८ माघ	हस्त	25:08 तक	मकर	कन्या	।।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. १ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ७ (25:08 तक)
माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	१८ माघ	चित्रा	25:08 बाद	मकर	कन्या	।।ऽके.।ऽऽरो.।।।।	रा. ल. ७ (25:08 बाद) केतु युति परिहार
माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	१९ माघ	चित्रा	27:49 तक	मकर	कं./तु.	।।ऽके.।ऽऽरो.।।।।	14:32 तक केतु युति परिहार, दि. ल. १ (षष्ठस्थ चं. परिहार), 12:28 से 14:28 तक शूलदोष –14:32 बाद केतुयुति अपरिहार्य
माघ कृ. ९, रवि	4 फर.	२२ माघ	अनु.	दिन-रात	मकर	वृश्चिक	।।।ऽगु.।ऽअ.ऽऽ।।	दि. ल. १ (चं. पूज्य), गोधूलि, रा. ल. ७ (शु. दा.), 25:46 से गुरुपादवेध विचार्य
माघ कृ. ११, मंग	6 फर.	२४ माघ	मूल	7:35 से 30:27	मकर	धनु	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. १, रा. ल. ७ (गु. शु. दा.), ८ (गु. दा.)
✲ फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) ✲ सन् 2024 ई.								
माघ शु. ५, बुध	14 फर.	२ फाल्गु.	अश्वि	10:43 बाद	कुम्भ	मेष	।।।।ऽ।।।।।	दि. ल. १ (10:43 बाद, चं. गु. दा.), २ (चं. दा.), 15:26 से 27:18 तक मृत्युबाण दोष रा. ल. ९ (रा. दा.)
माघ शु. ८, शनि	17 फर.	५ फाल्गु.	रोहि.	8:46 बाद	कुम्भ	वृष	ऽश.।।।।।ऽ।।।	दि. ल.१ (मं. दा.), २ (चं. दा.), 13:43 से वैधृति दोष
माघ शु. ९, रवि	18 फर.	६ फाल्गु.	मृग.	9:23 बाद	कुम्भ	मिथुन	।ऽ।ऽशु.।।।ऽ।।	13:51 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रात्रि 22:24 तक मंगल का वेध तथा दोप. 15:40 तक शुक्रपादवेध है। रा. ल. ७ (22:24 बाद, गु. दा.), ८ (शु. दा.), ९
माघ शु. १०, चंद्र	19 फर.	७ फाल्गु.	मृग.	10:33 तक	कुम्भ	मिथुन	।ऽ।ऽशु.।।।ऽ।।	दि. ल. १ (10:33 तक, गु. दा.) पादेन शुक्र वेधऽभाव:
फाल्गु.कृ.४, बुध	28 फर.	१६फाल्गु.	चित्रा	7:33 बाद	कुम्भ	कं./तु.	।ऽऽके.।ऽ।।ऽऽऽ	दि. ल. १ (10:19 तक, षष्ठस्थ चं. परिहार), 10:19 से 14:32 तक क्रान्तिसाम्य दोष– –21:00 बाद केतु-युति का परिहार नहीं है।
फाल्गु.कृ.६, शनि	2 मार्च	१९फाल्गु.	अनु.	14:42 बाद	कुम्भ	वृश्चिक	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	गोधूलि, रा. ल. ७ (चं. गु. दा.), ८ (चं. शु. दा.), ९ (27:18 तक, चं. दा.) –27:18 से गुरुपादवेध विचार्य, भद्रा-परिहार
फाल्गु.कृ.७, रवि	3 मार्च	२०फाल्गु.	अनु.	15:55 तक	कुम्भ	वृश्चिक	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	दि. ल. १ (प्रात: 9:36 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार), प्रात: 9:36 तक गुरुपादवेध, २ (11:26 तक, चं. दा.), 11:26 से मृत्युबाण दोष

शुभ विवाह मुहूर्त्त—फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) ※ सन् 2024 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि वश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में)
फाल्गु.कृ.८, चंद्र	4 मार्च	२१फाल्गु.	मूल	16:21 बाद	कुम्भ	धनु	ऽ।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ७, ८ (शु. पूज्य), ९ (चं. दा.)
फाल्गु.कृ.९, मंग	5 मार्च	२२फाल्गु.	मूल	16:00 तक	कुम्भ	धनु	ऽ।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १ (गु. दा.), २ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चंद्रोऽपरि गुरुदृष्टि शुभप्रदा), 14:08 से व्यतिपात दोष
फाल्गु.कृ.११, बुध	6 मार्च	२३फाल्गु.	उ.षा.	14:52 बाद	कुम्भ	ध./म.	ऽके.।।।।ऽजू.।ऽ।।	रा. ल. ७ (गु. दा.), ८ (शु. दा.), ९ (रा. दा.)
फाल्गु.कृ.१२, गुरु	7 मार्च	२४फाल्गु.	उ.षा.	13:03 तक	कुम्भ	मकर	ऽके. ।।।।।।।ऽ।।	8:24 से 11:24 तक परिघ दोष, दि. ल. २ (11:24 बाद) अल्पकाले
फाल्गु.कृ.१२, गुरु	7 मार्च	२४फाल्गु.	श्रवण	13:03 बाद	कुम्भ	मकर	।।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ७, ८ (25:20 तक) 25:20 से कृष्ण त्रयोदशी
फाल्गु.शु. २, मंग	12 मार्च	२९फाल्गु.	अश्वि	20:30 बाद	कुम्भ	मेष	।।।।।।।।।।।	प्रात: 12:28 से 24:28 तक मृत्युबाण-दोष, तदुपरान्त परिहार रा. ल. ८ (24:28 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार), ९ (शु. रा. दा.)

विशेष—आगामी वर्ष (वि. संवत् २०८१) में गुरु-शुक्रास्त की सम्भावित तारीखें
(1) शुक्र लगभग 24 अप्रैल, 2024 ई. को पूर्व में अस्त होकर लगभग 7 जुलाई, 2024 ई. को पश्चिम में उदय होगा।
(2) गुरु लगभग 6 मई, 2024 ई. को पश्चिम में अस्त होकर लगभग 2 जून, 2024 ई. को पूर्व में उदय होगा।
(3) पुनः वक्री शुक्र लगभग 20 मार्च, 2025 ई. को पश्चिम में अस्त होकर लगभग 23 मार्च, 2025 ई. को ही पूर्व से उदय हो जाएगा।

जन्म राशि एवं प्रसिद्ध नाम राशि का महत्त्व

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके प्रचलित नाम का विशेष महत्त्व होता है। परिवार, समाज, शिक्षा, कैरियर, मित्रता इत्यादि प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में मनुष्य अपने प्रसिद्ध नाम से जाना जाता है। एक अच्छा नाम जो किसी महान् व्यक्ति के नाम सदृश हो, उसके लिए जीवन पर्यन्त प्रेरणा-स्रोत का काम करता है। इसी कारण हमारे प्राचीन ऋषि या ज्योतिषाचार्य जन्मराश्यनुसार बालक का नाम कुलदेवता, महान् पुरुष, देववाचक, मंगलदायक, या कुल/परम्परा के अनुरूप सार्थक नाम रखते थे। उनके अनुसार मनुष्य के आन्तरिक गुणों एवं ब्राह्य व्यक्तित्व के विकास तथा भाग्य वृद्धि में नामकरण का विशेष महत्त्व होता था–

नामखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहंकर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥

प्राचीन काल में आचार्य/गुरु कन्या या बालक के जन्म नक्षत्र एवं राशि के अनुसार ही नाम रखने का परामर्श देते थे। अर्थहीन अथवा कुत्ते, बिल्ली के नाम सदृश नाम रखने से जातक/जातिका के व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ते हैं। भारतीय मनीषियों ने वैसे तो जन्म नक्षत्र एवं जन्म राशि के आधार पर ही जातक का नाम रखने की आज्ञा दी है, परन्तु यदि परिस्थिति वश किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चन्द्रस्थित **जन्म राशि** में तथा, **प्रसिद्ध नाम** राशि में अन्तर होने की स्थिति में, दोनों राशियों के अन्तर्गत अलग-अलग प्रतिपाद्य कृत्यों को करने का परामर्श दिया है।

● **जन्म राशि (विचार)**—वर कन्या का राशि मिलान, विवाह निर्णय, गर्भाधान, पुंसवन, उपनयन, मुण्डन, विवाह षोडश संस्कार एवं **मांगलिक कार्य**, तीर्थादि की शुभ यात्रा, राशि से गोचर ग्रहों का फल-प्रतिपादन करना इत्यादि प्रशस्त है–

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥ (ज्योतिर्निबन्ध)
कुर्यात् षोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते॥ (ज्योतिषतत्त्वनिबन्धं)

● **प्रसिद्ध नाम राशि (विचार)**—प्रसिद्ध नाम राशि का प्रयोग गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, सांसारिक व्यवहार, व्यापार (व्यवसाय), देश-कार्य, मन्त्र-सिद्धि, दानादि के समय संकल्प कार्य, पुनर्विवाह, स्वामी व सेवक के पारस्परिक सम्बन्ध, रोगशान्ति हेतु औषधी प्रयोग, विवाद, मुकद्दमा, युद्ध, छूतादि क्रूर कार्यों तथा दानादि शुभ संकल्पों में नाम राशि का ही प्रयोग करना चाहिए–

देश ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारकेः। नाम राशेः प्रधानत्वं जन्म–राशिं न चिन्तयेत्॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे, नामराशेः प्रधानता॥

यदि जन्म राशि का ज्ञान न हो, तो नाम राशि को ही ग्रहण करें।

श्री सत्यनारायण व्रत (आश्विन शुक्ल)

आश्विन पूर्णिमा (28 अक्तूबर, 2023 ई.) को भारत में खण्डग्रास चन्द्रग्रहण है। अतः प्रदोषकाल चन्द्रग्रहण के वेध से दूषित होगा। अतएव इस व्रत तथा शरद् पूर्णिमा व्रत का आचरण करने वालों को चन्द्रोदय के समय स्नान (गंगाजल मिश्रित) करके भगवान सत्यनारायण की पूजादि करनी चाहिए। ऐसा करने से ग्रहणदोष नहीं लगता। यहां श्रीसत्यनारायण को पक्व अन्न (पंजीरी आदि) का भोग नहीं लगाना चाहिए। ("''' **पक्वमन्नं विवर्जयेत्।**) अतः यहां फल एवं सूखे मेवे आदि का ही भोग लगाना चाहिए और चरणामृत हेतु कुशायुक्त दूध का प्रयोग करना चाहिए तथा रात्रि को चन्द्रग्रहण के समय खीर का भोग न लगाकर अगले दिन प्रातःकाल ही कुशायुक्त दुग्ध से खीर बना कर भोग लगाकर सेवन करनी चाहिए।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त-संवत् २०८० वि. (सन् 2023-24 ई.)

नीचे वि. संवत् २०८० में उन विशेष दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का स्पष्टीकरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह-नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। यहाँ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों के आगे जिन युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों का विवरण लिखा है, उनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्तों, लग्नों में क्रूर ग्रहयुति, लग्नेश षष्ठाष्टमस्थ, चंद्र षष्ठाष्टमस्थ, शुक्र षष्ठाष्टमस्थ आदि दोषों का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्तों में सम्मिलित कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्ता

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
28 मार्च से 2 मई, 2023 ई. तक 'शुक्र-अस्त दोष'			
4 मई, गुरु	चित्रा	21:35 तक	मृत्युबाण, लग्नऽभाव:
4 मई, गुरु	स्वा.	21:35 बाद	केतु-युति अपरिहार्य
5 मई, शुक्र	स्वा.	21:39 तक	केतु-युति अपरिहार्य
6 मई, शनि	अनु.	21:13 बाद	सूर्य-वेध
7 मई, रवि	अनु.	20:21 तक	सूर्य-वेध
8 मई, चंद्र	मूल	19:10 बाद	भौम-वेध
9 मई, मंग	मूल	17:45 तक	भौम-वेध
15 मई, चंद्र	उ.भा.	9:08 बाद	ज्येष्ठ-संक्रान्ति
17 मई, बुध	रेव.	7:39 तक	कृष्ण त्रयोदशी
29 मई, चंद्र	हस्त	28:29 बाद	लग्नऽभाव
31 मई, बुध	हस्त	6:00 तक	व्यतीपात
1 जून, गुरु	स्वा.	6:48 बाद	केतु-युति, शनि-वेध
2 जून, शुक्र	स्वा.	6:53 तक	केतु-युति, शनि-वेध
4 जून, रवि	मूल	27:23 बाद	लग्नऽभाव:
8 जून, गुरु	धनि.	18:59 बाद	भौम-वेध, वैधृति
9 जून, शुक्र	धनि.	17:09 तक	भौम-वेध, वैधृति
13 जून, मंग	अश्वि	13:33 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
14 जून, बुध	अश्वि	13:40 तक	मासान्त
16 जून, शुक्र	रोहि	15:07 बाद	कृष्ण-त्रयोदशी
22 जून, गुरु	मघा	28:18 बाद	वज्र-दोष
24 जून, शनि	मघा	7:18 तक	लग्नऽभाव:
25 जून, रवि	उ.फा.	10:11 बाद	व्यतीपात
26 जून, चंद्र	उ.फा.	12:44 तक	मृत्युबाण
28 जून, बुध	चित्रा	16:01 तक	केतु-युति अपरिहार्य
28 जून, बुध	स्वा.	16:01 बाद	शनि-वेध
29 जून, गुरु	स्वा.	16:30 तक	शनि-वेध

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
4 जुला, मंग	उ.षा.	8:25 बाद	लग्नऽभाव, वैधृति
5 जुला. बुध	श्रव.	5:40-26:56	भौम-वेध
5 जुला, बुध	धनि.	26:56 बाद	मृत्युबाण 28:51 तक
8 जुला, शनि	उ.भा.	20:36 बाद	भद्रा (भूलोके)
10 जुला, चंद्र	अश्वि	18:59 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
11 जुला, मंग	अश्वि	19:05 तक	राहु-युति अपरिहार्य
14 जुला, शुक्र	मृग.	24:27 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
18 जुलाई से 16 अगस्त, 2023 ई. तक श्रावण अधिक मास			
31 जुलाई से 21 अगस्त, 2023 ई. तक शुक्र अस्त दोष			
22 अग., मंग	चित्रा	6:32 तक	केतु-युति अपरिहार्य
22 अग., मंग	स्वा.	6:32 बाद	शनि-वेध
23 अग., बुध	स्वा.	8:08 तक	शनि-वेध
25 अग., शुक्र	अनु.	9:14 तक	वैधृति-दोष
27 अग., रवि	मूल	7:16 तक	लग्नऽभाव:
27 अग., रवि	उ.षा.	29:15 बाद	मृत्युबाण (22:41 से)
28 अग., चंद्र	श्रव.	26:43 बाद	सूर्य-वेध
29 अग., मंग	श्रव.	23:50 तक	सूर्य-वेध
30 अग., बुध	धनि.	20:47 बाद	भद्रा, शुक्रपादवेध
1 सितं., शुक्र	उ.भा.	14:56 बाद	भुजंगपात
2 सितं. शनि	उ.भा.	12:31 तक	भुजंगपात
2 सितं., शनि	रेवती	12:31 बाद	भौम-वेध, क्रान्तिसाम्य
3 सितं., रवि	रेवती	10:39 तक	7:06 तक भौमवेध, लग्नऽभाव
3 सितं., रवि	अश्वि	10:39 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
4 सितं., चंद्र	अश्वि	9:27 तक	राहु-युति अपरिहार्य
7 सितं., गुरु	रोहि	10:25 तक	लग्नऽभाव:
12 सितं., मंग	मघा	23:01 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
16 सितं., शनि	हस्त	7:36 बाद	मासान्त

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
17 सितं., रवि	हस्त	10:02 तक	आश्विन संक्रान्ति
18 सितं., चंद्र	चित्रा	12:08 तक	केतु-युति अपरिहार्य
18 सितं., चंद्र	स्वा.	12:08 बाद	शनि-वेध
19 सितं., मंग	स्वा.	13:48 तक	शनि-वेध
26 सितं., मंग	श्रवण	9:42 तक	लग्नऽभाव
27 सितं., बुध	धनि.	7:10 तक	लग्नऽभाव
28 सितं., गुरु	उ.भा.	25:49 बाद	भद्रा (भूलोके)
29 सितं., शुक्र	उ.भा.	23:18 तक	प्रोष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध
29 सितं. से 14 अक्तू., 2023 ई. तक श्राद्ध-दिन			
15 अक्तू, रवि	चित्रा	18:12 तक	सूर्य-केतु युति अपरिहार्य
15 अक्तू, रवि	स्वा.	18:12 बाद	भौम-युति अपरिहार्य
16 अक्तू, चंद्र	स्वा.	19:35 तक	मासान्त, भौम-युति
23 अक्तू, चंद्र	धनि.	17:14 बाद	भुजंगपात
24 अक्तू, मंग	धनि.	15:28 तक	भुजंगपात
27 अक्तू, शुक्र	उ.भा.	9:25 तक	चन्द्रग्रहण-वेध
27 अक्तू, शुक्र	रेव.	9:25 बाद	ग्रहणवेध, 26:43 से मृत्युबाण
28 अक्तू, शनि	अश्वि.	7:31 से 29:54	चन्द्रग्रहण, मृत्युबाण
30 अक्तू, चंद्र	रोहि.	28:01 बाद	चन्द्रग्रहणवेध
31 अक्तू, मंग	रोहि.	27:58 तक	चन्द्रग्रहणवेध
31 अक्तू, मंग	मृग.	27:58 बाद	चन्द्रग्रहणवेध
8 नवं., बुध	उ.फा.	19:19 बाद	राहु-वेध
9 नवं., गुरु	उ.फा.	21:57 तक	राहु-वेध, वैधृति
10 नवं., शुक्र	चित्रा	24:08 बाद	कृष्ण-त्रयोदशी
15 नवं., बुध	मूल	27:01 बाद	मासान्त
17 नवं., शुक्र	उ.षा.	25:17 बाद	भुजंगपात
18 नवं., शनि	उ.षा.	24:07 तक	भुजंगपात
19 नवं., रवि	धनि.	22:49 बाद	शनि-युति अपरिहार्य

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
20 नवं., चंद्र	धनि.	21:26 तक	शनि-युति अपरिहार्य
23 नवं., गुरु	रेवती	17:16 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
24 नवं.,शुक्र	रेवती	16:01 तक	राहु-युति अपरिहार्य
24 नवं.,शुक्र	अश्वि.	16:01 बाद	ग्रहण-नक्षत्र
3 दिसं., रवि	मघा	21:36 बाद	वैधृति
4 दिसं., चंद्र	मघा	24:35 तक	वैधृति-विष्कम्भ, लग्नऽभाव
5 दिसं., मंग	उ.फा.	27:38 बाद	राहु-वेध
6 दिसं., बुध	उ.फा.	30:29 तक	राहु-वेध
6 दिसं., बुध	हस्त	30:29 बाद	लग्नऽभाव:
9 दिसं.,शनि	चित्रा	10:43 तक	केतु-युति अपरिहार्य
9 दिसं.,शनि	स्वा.	10:43 बाद	शनि-वेध
10 दिसं.,रवि	स्वा.	11:50 तक	कृष्ण-त्रयोदशी
13 दिसं.,बुध	मूल	11:05 बाद	भुजंगपात
14 दिसं.,गुरु	मूल	9:47 तक	भुजंगपात
15 दिसं.,शुक्र	उ.षा.	8:11-30:25	मासान्त
(सन् 2024 ई.)			
15 जन., चंद्र	उ.भा.	30:10 बाद	26:12 से मृत्युबाण
16 जन., मंग	रेव.	28:38 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
17 जन.,बुध	रेव.	27:34 तक	राहु-युति अपरिहार्य
18 जन.,गुरु	अश्वि.	26:58 तक	ग्रहण-नक्षत्र
21 जन.,रवि	मृग.	27:52 बाद	सूर्य-वेध
22 जन.,चंद्र	मृग.	28:59 तक	सूर्य-वेध
27 जन.,शनि	मघा	13:01 बाद	सूर्य-वेध
28 जन.,रवि	मघा	15:53 तक	सूर्य-वेध
29 जन.,चंद्र	उ.फा.	18:57 बाद	राहु-वेध
30 जन., मंग	उ.फा.	22:06 तक	राहु-वेध
1 फर., गुरु	स्वा.	27:49 बाद	भुजंगपात, शनि-वेध
2 फर., शुक्र	स्वा.	29:57 तक	भुजंगपात, शनि-वेध
5 फर., चंद्र	अनु.	7:54 तक	गुरुपादवेध
7 फर., बुध	उ.षा.	28:37 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
10 फर.,शनि	धनि.	20:34 तक	सूर्य-युति अपरिहार्य
12 फर., चंद्र	उ.भा.	14:57 बाद	मासान्त
14 फर.,बुध	रेव.	10:43 तक	राहु-युति अपरिहार्य
15 फर., गुरु	अश्वि	9:26 तक	लग्नऽभाव:
18 फर., रवि	रोहि.	9:23 तक	वैधृतिदोष
23 फर.,शुक्र	मघा	19:26 बाद	भौम-वेध
24 फर.,शनि	मघा	22:21 तक	भौम-वेध
25 फर., रवि	उ.फा.	25:24 बाद	राहु-वेध
26 फर., चंद्र	उ.फा.	28:31 तक	राहु-वेध
26 फर., चंद्र	हस्त	28:31 बाद	भुजंगपात
27 फर., मंग	हस्त	दिन-रात	भुजंगपात
29 फर., गुरु	चित्रा	10:22 तक	केतु-युति अपरिहार्य
29 फर., गुरु	स्वा.	10:22 बाद	शनि-वेध
1 मार्च, शुक्र	स्वा.	12:49 तक	शनि-वेध
11 मार्च, चंद्र	उ.भा.	23:03 तक	केतु-वेध
11 मार्च, चंद्र	रेव.	23:03 बाद	राहु-युति अपरिहार्य
12 मार्च, मंग	रेव.	20:30 तक	राहु-युति अपरिहार्य
13 मार्च, बुध	अश्वि	18:25 तक	मासान्त

श्रावण मास में

काँवड़ जलाभिषेक मुहूर्त—सन् 2023 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री-हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्रीगंगाजल के कलश भरकर भगवान् श्रीशिव की प्रसन्नता हेतु आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान् श्रीशिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, ज्योतिर्लिङ्गों, विग्रहों, स्वरूपों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रुद्राभिषेक करें।

कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रुद्राभिषेकं कुर्वीत् मासमात्रं दिने दिने॥

कुछ लोगों का भ्रम है कि श्रावण-भाद्रपद मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती—ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियां रजोदोष से युक्त नहीं होती है।—ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।

पक्ष, तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	समय
आषा.पूर्णिमा,	चंद्र	3 जुला	मूल	मु. 11:02 तक
श्राव. कृ. ४,	गुरु	6 जुला.	धनि.	मु. 6:31 बाद
श्राव. कृ.१२,	शुक्र	14 जुला	रोहि.	सारा-दिन
श्राव. कृ.१३,	शनि	15 जुला	मृग.	सारा-दिन
श्राव. कृ.१४,	रवि	16 जुला	आर्द्रा	प्रातःकाल
अ.श्रा.कृ.१३,	चंद्र	14 अग.	पु./पु.	प्रातःकाल
श्राव. शु. ४,	रवि	20 अग.	हस्त	सारा दिन (शु.अस्त) (भद्रा-परिहार)
श्राव. शु. ५,	चंद्र	21 अग.	चित्रा	—शुक्रास्त विचार्य
श्राव. शु. १२,	चंद्र	28 अग.	उ.षा.	प्रदोषकाल
श्राव. शु. १३,	मंग	29 अग.	श्रवण	सारा-दिन
श्राव. शु. १४,	बुध	30 अग.	धनि.	मु.प्रात: 10:59 तक

श्रीगंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें—

विशेष—यद्यपि इन मुहूर्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल ग्रहण करने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर ज़लाभिषेक हेतु यद्यपि नित्यकर्म के पश्चात् प्रातःकाल का समय ही श्रेष्ठ (सूर्योदय से लगभग 2घं.-24मि. तक) रहता ह। ता. 15 जुलाई, 2023 ई., शनिवार को प्रदोषकाल तथा 16 जुलाई, रविवार को प्रातःकाल के समय मुख्य मुहूर्त रहेंगे। कुछ विद्वान् मुख्य मुहूर्त वाले दिन (श्रावण-शिवरात्रि-15 जुलाई) प्रदोष व निशीथकाल में जलाभिषेक करेंगे। यद्यपि आर्द्रा नक्षत्र विशेष रूप से शिव-पूजन तथा जलाभिषेक के लिए शुभ माना गया है।

शुभ समय—*(i)* 15 जुलाई ⇒ सायं 19:30 से 21घं.:32मि. तक, *(ii)* 16 जुलाई ⇒ प्रात: 5:38मि. से 8:22मि. तक, *(iii)* 16 जुलाई ⇒ सायं 19:29 से 21:31मि. तक।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित–वर–कन्या की राशि–अनुसार शुभ विवाह–मुहूर्त्त निकालें–संवत् २०८० वि. (सन् 2023–24 ई.)

नीचे वर–कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि–सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर–कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो–जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर–कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। विवाह लग्न का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**—मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त अप्रैल (वैशाख), 2023 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 2, 3, 10, 11, 12 मई की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे,** विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। कन्या की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12, 13, 16 (चं.दा.), 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 5, 6, 7, 8, 11–12–13 (चं.दा.), 23, 26, 27, **जुला.** 2, 3, 6, 9–10 (चं.दा.), 13, 14, **अग.** 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10] **सन् 2024 ई. में जन.** 16 (चं. दा.), 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।	मेष राशि के **वर** को आषाढ़, आश्विन, माघ, फाल्गुन **शुभ** ; वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य **पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष व चैत्र मास **त्याज्य** रहेंगे। **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल से संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12, 13, 16 (चं.दा.), 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 5, 6, 7, 8, 11–12–13 (चं.दा.), 23, 26, 27, **जुला.** 2, 3, 6, 9–10 (चं.दा.), 13, 14, **अग.** 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 19, 20, 21, 22, 23, 26 (चं.दा.), **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10] मार्गशीर्ष में **नवं.** 18, 19, 22–23 (चं.दा.), 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16 (चं.दा.), 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि–जून 26, 27, 30, **जुला.** 1, 6, 9, 10, 13, 14, **सितं.** 20, 21, 24 (19:18 बाद), 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 21 (25:39 बाद), 22, 23, 26, **नवं.** 1, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 14 (चं.दा.), 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 6 (20:28 बाद), 7, 12 (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।	वृष राशि के **वर** को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास–**शुभ**, ज्येष्ठ; आषाढ़, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** रहेंगे। **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृष राशि–मई** 2, 3, 10 (21:49 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 29 (8:55 बाद), 30, 31, **जून** 1, 3, 6 (28:40 बाद), 7, 8, 11, 12, 13, 26, 27, 30, **जुला.** 1, 6, 9, 10, 13, 14, **सितं.** 20, 21, 24 (19:18 बाद), 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 21 (25:39 बाद), 22, 23, 26, **नवं.** 1, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 14 (चं.दा.), 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 6 (20:28 बाद), 7, 12 (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि–मई 10 (21:49 तक), 12 (24:18 बाद), 13, **जून** 23, 27 (27:28 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (13:39 बाद), 9, 10, 13–14 (चं.दा.), **अग.** 24, 26, **सितं.** 6–7 (चं.दा.), 8, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21 (25:39 तक), 26, नवं. 1 (चं.दा.), 6, 7, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 22, 23, 27–28 (चं.दा.), 29, **दिसं.** 8 (21.53 बाद), **सन् 2024 ई. में फर.** 14, 17 (चं.दा.), 18, 19 28 (21:00 बाद), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6 (20:28 तक), 12 तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन राशि के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, भाद्रपद मास–**शुभ**। आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल से संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**मिथुन राशि–मई** 10 (21:49 तक), 12 (24:18 बाद), 13, 16, 20–21 (चं.दा.), 22, 26, 27, 28, 29 (8:55 तक), 31 (18:30 बाद), **जून** 1, 3, 5, 6 (28:40 तक), 11, 12, 13, 23, 27 (27:28 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (13:39 बाद), 9, 10, 13–14 (चं.दा.), **अग.** 24, 26, **सितं.** 6, 7 (चं.दा.), 8, 20, 21, 22, 23, 24, (19:18 तक), 26 (20:28 बाद), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21 (25:39 तक) 26, **नवं.** 1 (चं.दा.), 6, 7, 14] मार्गशीर्ष मास में नवं. 22, 23, 27–28 (चं.दा.), 29, **दिसं.** 8 (21:53 बाद), **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20–21 (चं.दा.), **फर.** 1 (14:32 बाद), 4, 6, 14, 17 (चं.दा.), 18, 19, 28 (21:00 बाद), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6 (20:28 तक), 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12 (24:18 तक), 16, 20, 21–22 (चं.दा.), 26, 27, 28, 29, 30, 31 (18:30 तक), **जून** 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7–8 (चं.दा.), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (20:28 तक), मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28–29 (चं.दा.), **दिसं.** 7, 8 (21:53 तक), **सन् 2024 ई. जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1 (14:32 तक), 4, 6 तारीखें शुभ होंगी।	कर्क राशि के **वर** को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-**शुभ**, श्रावण, भाद्रपद, मार्गशीर्ष व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** रहेंगे। कर्क राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवत् के अन्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12 (24:18 तक), 16, 20, 21–22 (चं.दा.), 26, 27, 28, 29, 30, 31 (18:30 तक), **जून** 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, 23, 26, 27 (27:28 तक), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (13:39 तक), 9, 10, 13, 14, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7–8 (चं.दा.), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (20:28 तक), [कार्तिक मास में **अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1 (चं.दा.), 6, 7, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27,28,29, **दिसं.** 7, 8 (21:53 तक), **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1 (14:32 तक), 4, 6, 14, 17, 18–19 (चं.दा.), 28 (21:00 तक), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 5, 6, 7, 8, 23, 26, 27, **जुला.** 2, 3, 6, 13, 14, **अग.** 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8,22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 19, 20, 21, 22, 23, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10] **सन् 2024 ई. में जन.** 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ मास **शुभ** ; आश्विन, भाद्रपद, वैशाख व फाल्गुन मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण-मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** रहेंगे। सिंह राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक गुरु शुभ रहेगा।	**सिंह राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 5, 6, 7, 8, 23, 26, 27, **जुला.** 2, 3, 6, 13, 14, **अग.** 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 22, 23, 24, 25, 26 [कार्तिक मासे **अक्तू.** 19, 20, 21, 22, 23, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–मई 16, 20, 21, 22, 26–27–28–29 (चं.दा.), 30, 31, **जून** 1, 3, 6 (28:40 बाद), 7, 8, 11, 12, 13, 23 (चं.दा.), 26, 27, 30, **जुला.** 1, 6, 9, 10, 13, 14, **सितं.** 20, 21, 24 (19:18 बाद), 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 21 (25:39 बाद), 22, 23, 26, **नवं.** 1, 6–7 (चं.दा.), 9, 10, 14] मार्गशीर्ष में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 6 (20:28 बाद), 7 तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के **वर** को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ**। ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि। वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि–मई** 2, 3, 10 (21:49 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 26–27–28–29 (चं.दा.), 30, 31, **जून** 2, 3, 6 (28:40 बाद), 7, 8, 11, 12, 13, 23, 26, 27, 30, **जुला.** 1, 6, 9, 10, 13, 14, **अग.** 24, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 20, 21, 24 (19:18 बाद), 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 21, (25:39 बाद), 22, 23, 26, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 6 (20:28 बाद), 7 तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–मई 2–3 (चं.दा.), 10 (21:49 तक), 12 (24:18 बाद), 13, **जून** 23, 26–27 (चं.दा.), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (13:39 बाद), 9, 10, **अग.** 24, 26, **सितं.** 7 (23:13 बाद), 8, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21 (25:39 तक), 26, **नवं.** 1 (16:12 बाद), 6, 7, 9–10 (चं.दा.), 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 22, 23, 28 (25:41 बाद), 29, **दिसं.** 7–8 (चं.दा.), **सन् 2024 ई. में फर.** 14, 18, 19, 28 (चं.दा.), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6 (20:28 तक), 12 तारीखें शुभ होंगी।	तुला राशि के **वर** को श्रावण, भाद्रपद- **शुभ**। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मासों में सूर्य की **पूजा/दानादि** होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** होंगे। तुला राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**तुला राशि–मई** 2–3 (चं.दा.), 10 (21:49 तक), 12 (24:18 बाद), 13, 16, 21 (21:47 बाद), 22, 26, 27, 28, 29–30–31 (चं.दा.), **जून** 1, 3, 5, 6 (28:40 तक), 11, 12, 13, 23, 26–27 (चं.दा.), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (13:39 बाद), 9, 10, **अग.** 24, 26, **सितं.** 7 (23:13 बाद), 8, 20, 21, 22, 23, 24 (19:18 तक), 26 (20:28 बाद), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21 (25:39 तक), 26, **नवं.** 1 (16:12 बाद), 6, 7, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 22, 23, 28 (25:41 बाद), 29, **दिसं.** 7–8 (चं.दा.), **सन् 2024 ई. जन.** *16, 30–31–फर. 1 (चं.दा.), 4, 6, 14, 18, 19, 28, मार्च 2, 3, 4, 5, 6 (20:28 तक), 12 तारीखें शुभ होंगी।*

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
वृश्चिक राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12 (24:18 तक), 16, 20, 21 (21:47 तक), 26, 27, 28, 29, 30, 31–**जून** 1 (चं.दा.), 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7 (23:13 तक), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (20:28 तक), मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28 (25:41 तक), **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1 (चं.दा.), 4, 6 तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के **वर** को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास **शुभ**, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक साधारण रुपेण **पूज्य** रहेगा।	**वृश्चिक राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12 (24:18 तक), 16, 20, 21 (21:47 तक), 26, 27, 28, 29, 30, 31–**जून** 1 (चं.दा.), 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7 (23:13 तक), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (20:28 तक), [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1 (16:12 तक), 6, 7, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28 (25:41 तक), **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 6, 14, 17, 28 (चं.दा.), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।
धनु राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 3 (चं.दा.), 5, 6, 7, 8, 23, 26, 27, 30–**जुला.** 1 (चं.दा.), 2, 3, 6, 13, 14, **अग.** 24 (चं.दा.), 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 20–21 (चं.दा.), 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18 (चं.दा.), 19, 20, 21, 22, 23, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10, 14 (चं.दा.)] **सन् 2024 ई. में जन.** 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4 (चं.दा.), 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2–3 (चं.दा.), 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास **शुभ**, वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे। धनु राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**धनु राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31, **जून** 1, 3 (चं.दा.), 5, 6, 7, 8, 23, 26, 27, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6, 13, 14, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, **नवं.** 1, 6, 7, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 6, 14, 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–मई 16, 20, 21, 22, 29 (8:55 बाद), 30, 31, **जून** 1, 3, 5–6 (चं.दा.), 7, 8, 11, 12, 13, 26, 27, 30, **जुला.** 1, 2–3 (चं.दा.), 6, 9, 10, 13, 14, **सितं.** 20, 21 22–23–24 (चं.दा.), 25–26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19–20–21 (चं.दा.), 22, 23, 26, **नवं.** 1, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 6 (चं.दा.), 17, 18, 19, 28, **मार्च** 2, 3, 4–5–6 (चं.दा.), 7 तारीखें शुभ होंगी।	मकर राशि के **वर** को आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास-**शुभ**। ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि–मई** 2, 3, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 29 (8:55 बाद), 30, 31, **जून** 1, 3, 5–6 (चं.दा.), 7, 8, 11, 12, 13, 26, 27, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6, 9, 10, 13, 14, **अग.** 24, 26 (चं.दा.), 28, 29, **सितं.** 6, 7, 8, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1, 9, 10, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28, 29, **दिसं.** 7, 8, **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1, 4, 6, 17, 18, 19, 28, **मार्च 2, 3, 4, 5, 6, 7** तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–मई 10–11–12 (चं.दा.), 13, **जून** 23, 27 (27:28 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (चं.दा.), 9, 10, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 7 (23:13 बाद), 8, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21–22–23 (चं.दा.), 26, **नवं.** 1 (16:12 बाद), 6, 7, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18–19 (चं.दा.), 22, 23, 28 (25:41 बाद), 29, **दिसं.** 8 (21:53 बाद), **सन् 2024 ई. में फर.** 14, 18, 19, 28 (21:00 बाद), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6–7 (चं.दा.), 12 तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ**, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक साधारण रूपेण **पूज्य** रहेगा।	**कुम्भ राशि–मई** 10, 11, 12, 13, 16, 21 (21:47 बाद), 22, 26, 27, 28, 29 (8:55 तक), 31 (18:30 बाद), **जून** 1, 3, 5, 6–7–8 (चं.दा.), 11, 12, 13, 23, 27 (27:28 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6, 9, 10, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 7 (23:13 बाद), 8, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, [कार्तिक मासे **अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1 (16:12 बाद), 6, 7, 14] मार्गशीर्ष मास में **नवं.** 18, 19, 22, 23, 28 (25:41 बाद), 29, **दिसं.** 8 (21:53 बाद), **सन् 2024 ई. में जन.** 16, **फर.** 1 (14:32 बाद), 4, 6, 14, 18, 19, 28 (21:00 बाद), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 12 तारीखें शुभ होंगी।

वर (लड़का)

मीन राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12–13 (चं.दा.), 16, 20, 21 (21:47 तक), 26, 27, 28, 29, 30, 31 (18:30 तक), **जून** 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7 (23:13 तक), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (चं.दा.), मार्गशीर्ष मासे **नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28 (25:41 तक), **दिसं.** 7, 8 (21:53 तक), **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1 (14:32 तक), 4, 6 तारीखें शुभ होंगी।

वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि

मीन राशि के वर को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे।

मीन राशि की **कन्या** को गुरु 21 अप्रैल, 2023 ई. से संवतान्त तक शुभ ही रहेगा।

कन्या (लड़की)

मीन राशि–मई 2, 3, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 21 (21:47 तक), 26, 27, 28, 29, 30, 31 (18:30 तक), **जून** 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 13, 23, 26, 27 (27:28 तक) 30, **जुला.** 1, 2, 3, 6 (चं.दा.), 9, 10, 13, 14, **अग.** 24, 26, 28, 29, **सितं.** 6, 7 (23:13 तक), 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26 (चं.दा.), [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 22, 23, 26, **नवं.** 1 (16:12 तक), 6, 7, 9, 10, 14] **मार्गशीर्ष मास में नवं.** 18, 19, 22, 23, 27, 28 (25:41 तक), **दिसं.** 7, 8 (21:53 तक), **सन् 2024 ई. में जन.** 16, 20, 21, 30, 31, **फर.** 1 (14:32 तक), 4, 6, 14, 17, 28 (21:00 तक), **मार्च** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 12 **तारीखें** शुभ होंगी।

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान् है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के '**भाग्य का फल**' आगे लिखे अनुसार जानें–

उदाहरण–मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B,C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 +16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अतः प्रश्नकर्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भान्ति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमकों इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विग्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। *(30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।*

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त–वि. संवत् २०८०

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है–विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्त्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। 'पंचांगदिवाकर' में दिए गए सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

—निवेदकः पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०८० वि.

मुण्डन संस्कार को चूडाकरण संस्कार या चौलकर्म भी कहते हैं, जिसका अर्थ है–वह संस्कार जिसमें बालक को चूड़ा अर्थात् शिखा दी जाएं। गर्भावस्था की अपवित्रता दूर करने के लिए भी मुण्डन संस्कार किया जाता है। मुण्डन संस्कार करके बालक को अन्य संस्कारों (वेदारम्भ, यज्ञादि) के योग्य बनाया जाता है, क्योंकि मुण्डन संस्कार करते समय यह प्रार्थना की जाती है कि इसका सिर पवित्र हो, यह दीर्घजीवी हो। अतः बालक के स्वास्थ्य व शरीर के लिए नया संस्कार है।

मुण्डन मुहूर्त्त सम्बन्धी विशेष लेख इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 201 पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु.१३,	बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ३, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ३,	चंद्र	8 मई	ज्ये.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रवण	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ८,	शनि	13 मई	धनि.	मु. प्रातः 6:51 तक
ज्ये. कृ. १२,	मंग	16 मई	रेव.	मु. 8:15 बाद, ल. ३, अभि. (क्षत्रियाणां)
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	मृग.	मु 9:05 बाद, अभि. (विप्राणां)
ज्ये. शु. ३,	चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक, ल. ३
ज्ये. शु. ५,	बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ६,	गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (भौम–युति परिहार)
ज्ये. शु. १०,	मंग	30 मई	हस्त	ल. ३, ५, अभि. (क्षत्रियाणां)
ज्ये. शु. १२,	गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रातः 6:48 तक
आषा. कृ. ५,	गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद, ल. ५, अभि.
आषा. कृ.१०,	मंग	13 जून	रेव.	मु. 9:29 बाद, ल. ५, अभि. (क्षत्रियाणां)
आषा. शु. २,	मंग	20 जून	पुन.	ल. ५, अभि. (क्षत्रियाणां)
आषा. शु. ३,	बुध	21 जून	पुष्य	ल. ३, ५
आषा. शु. ८,	चंद्र	26 जून	हस्त	मु. 12:44 बाद (मृत्युबाण विचार)
श्राव. कृ. ३,	गुरु	6 जुला	धनि.	मु. प्रातः 6:31 तक, शुक्रपादवेध विचार्य
श्राव. कृ. ८,	चंद्र	10 जुला	रेव.	मु. 8:18 बाद, ल. ४, ५ अभि.
आश्विन नवरात्रों में–आवश्यके				
आश्वि. शु. ५,	गुरु	19 अक्तू	ज्ये.	ल. ८, ९, अभिजित्
(सन् 2024 ई०)				
पौष पूर्णिमा,	गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १,	शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक,
माघ कृ. ५,	बुध	31 जन.	हस्त	ल. ११, १
माघ कृ. ६,	गुरु	1 फर.	चित्रा	ल. ११, १, अभिजित्
माघ कृ. १०,	चंद्र	5 फर.	ज्ये.	मु. 7:54 बाद, 10:52 से–व्याघात दोष
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि.	मु. 10:43 बाद, ल. १, २
माघ शु. ६,	गुरु	15 फर.	अश्वि.	मु. 9:26 तक
माघ शु. १०,	चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु. १२,	बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २, मु. 14:18 तक
माघ शु. १३,	गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु. कृ. ८,	चंद्र	4 मार्च	ज्ये.	मु. प्रातः 8:50 तक
फाल्गु. शु. २,	मंग	12 मार्च	रेव.	ल. १, अभि. (क्षत्रियाणां)

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त–सं. २०८०

(खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष–नींव मुहूर्त्त (शिलान्यास) सम्बन्धी विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं.– पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

नोट–देवालय खनन हेतु केवल उत्तरायण काल (16 जुलाई से पूर्व) के मुहूर्त्त ही ग्राह्य होंगे। (देखें पृष्ठ 206)

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*ज्ये. कृ. ६,	गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
*ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रवण	ल. २, ३, अभिजित्
*ज्ये. कृ. ८,	शनि	13 मई	धनि.	मु. प्रातः 6:51 तक
*ज्ये. शु. १,	शनि	20 मई	रोहि.	मु.8:03 बाद, ल. ३, ५, अभि.
*ज्ये. शु. ३,	चंद्र	22 मई	मृग.	मु. प्रातः 8:37 तक
*ज्ये. शु. ६,	गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि.,– (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. १२,	गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रातः 6:48 तक
ज्ये. शु. १४,	शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद (भद्रा–परि.)

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*आषा.कृ. ९, चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद
आषा. शु. ८, चंद्र	26 जून	हस्त	मु. 12:44 बाद (मृत्युबाण विचार)
*श्राव.कृ. ३, गुरु	6 जुला	धनि.	मु. प्रात: 6:31 तक -शुक्रपादवेध विचार्य
*श्राव. कृ. ८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ४, ६, अभिजित्
*श्रा.कृ.१२, शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ४, ६, अभिजित्
*श्राव. शु.८, गुरु	24 अग.	अनु.	मु. 9:04 बाद, अभिजित्
*भाद्र.कृ. ८, गुरु	7 सितं.	रोहि.	मु. 10:25 तक (प्रात: 6:55 से अग्निबाण दोष विचार)
*भाद्र. कृ.८, गुरु	7 सितं.	मृग.	मु. 10:25 बाद, ल. ८, अभि.
*भाद्र कृ.१२, चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, अभिजित्
*कार्ति.कृ.६, शुक्र	3 नवं.	पुन.	ल. ८ (चं. दा.), ९, अभि.
*कार्ति.कृ.७, शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद
*कार्ति.कृ.१२, शुक्र	10 नवं.	हस्त	मु. दोप. 12:36 तक
कार्ति.शु.११, गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक, तदुपरान्त भद्रा
कार्ति. पूर्णिमा, चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग.कृ. २, बुध	29 नवं.	मृग.	दि.ल. ९, १०
मार्ग. कृ.१०, गुरु	7 दिसं.	हस्त	दि. ल. ९, १०, अभिजित् (प्रात: 7:56 तक अग्निबाण विचार)
मार्ग. कृ.११, शुक्र	8 दिसं.	हस्त	मु. 8:54 तक, ल. ९
मार्ग.कृ.११, शुक्र	8 दिसं.	चित्रा	मु. 8:54 बाद (केतु युति परि.)
(सन् 2024 ई०)			
पौष पूर्णिमा, गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १, शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक (लैंटर हेतु -अग्निबाण विचार्य)
*माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	चित्रा	ल. १, अभि. मु. 14:32 तक (केतु युति परिहार)
*माघ शु. ५, बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
*माघ शु. ६, गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
*फाल्गु.कृ.११, बुध	6 मार्च	उ.षा.	मु. 14:52 बाद

नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृष वास्तु चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०८०)

नूतन गृह-प्रवेश में पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नए घर में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजा शान्ति, स्वस्तिवाचन, एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या-पूजन, जलपूर्ण कलश (नारियल सहित) तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

●बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त यहाँ मतान्तरवश दिए जा रहे हैं। इन्हें परम्परा एवं आवश्यक परिस्थितिवश ग्रहण करें। विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 208 का अवलोकन अवश्य करें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु. १३, बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ३, मु. 11:27 तक
*ज्ये. कृ. ६, गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
*ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, ३, अभिजित्
*ज्ये. कृ. ८, शनि	13 मई	धनि.	मु. प्रात: 6:51 तक
*ज्ये. शु. १, शनि	20 मई	रोहि.	मु. 8:03 बाद
*ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक
*ज्ये. शु. ५, बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित् (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. ९, चंद्र	29 मई	उ.फा.	मु. 11:50 बाद
ज्ये. शु. १२, गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रात: 6:48 तक
*ज्ये. शु.१४, शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद, भद्रा-परि.
*आषा. कृ. ५, गुरु	8 जून	श्रवण	मु. 8:37 बाद, ल. ५, अभि.
आषा. कृ.९, चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद
*आषा.शु. ३, बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५, ६
आषा. शु. ८, चंद्र	26 जून	उ.फा.	मु. 6:06 बाद, (मृत्युबाण विचार) भद्रा परिहार
●आषा.शु.१३, शनि	1 जुला	अनु.	ल. ४, ५, अभिजित्
●*श्रा.कृ.८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ४, ५, अभिजित्
●श्रा. कृ.१२, शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ४, ६, अभि., ८

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आश्वि.शु.१२, गुरु	26 अक्टू	उ.भा.	मु. 11:27 बाद
*कार्ति.कृ.६, शुक्र	3 नवं.	पुन.	ल. ८, अभिजित्
*कार्ति.कृ.७, शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद
कार्ति.कृ.१२, शुक्र	10 नवं.	हस्त	मु. 12:36 तक, ल. ८, अभि.
कार्ति.शु.११, गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक,
*कार्ति.पूर्णिमा, चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
*मार्ग.कृ. २, बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, अभिजित्
*मार्ग.कृ. ५, शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.१०, गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.११, शुक्र	8 दिसं.	ह./चि	ल. ९, अभि. (केतुयुति परि.)
(सन् 2024 ई.)			
*पौष पूर्णिमा, गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद,
*माघ कृ.१, शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
*माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	हस्त	ल. ११, १
माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	चित्रा	ल. ११, अभि., मु. 12:28 तक
माघ कृ. १०, चंद्र	5 फर.	अनु.	मु. 7:54 तक, -गुरुपादवेध विचार्य
माघ शु. ५, बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६, गुरु	15 फर.	अश्वि.	मु. 9:26 तक
माघ शु.१०, चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. प्रात: 10:33 तक
माघ शु. १२, बुध	21 फर.	पुन.	ल. २
माघ शु. १३, गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.१२, गुरु	7 मार्च	उ.षा.	मु. 8:24 तक, 8:24 से 11:24 तक परिघदोष, ल. २ (11:24 बाद)

विशेष नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल केवल कलश चक्र शुद्धि नहीं है, शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुरातन गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०८० वि.

पहिले दिए गए नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त पुरातन गृह प्रवेश में निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। विशेष विवरण पृष्ठ 208 पर देखें।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १,	बुध	22 मार्च	उ.भा.	ल. २, ३, (स्वयंसिद्ध मुहू.)
गुरु-अस्तकाल में (आवश्यक परिस्थितिवश)				
वैशा.कृ.१०,	शनि	15 अप्रै.	धनि.	ल. २, अभि. (भद्रा-परिहार)
वैशा. शु. ४,	चंद्र	24 अप्रै.	मृग.	मु. प्रातः 8:25 बाद
वैशा. शु. ६,	बुध	26 अप्रै.	पुन.	ल. २, ३ (भौमयुति परिहार)
वैशा. शु. ७,	गुरु	27 अप्रै.	पुन/पु.	मु. 8:47 तक (भौमयुति परि.)
वैशा. शु. ८,	शुक्र	28 अप्रै.	पुष्य	मु. 9:53 तक
ज्ये. कृ. १३,	बुध	17 मई	रेव.	मु. प्रातः 7:39 तक
अ.श्राव. शु.२,	बुध	19 जुला	पुष्य	मु. प्रातः 7:58 तक
अ.श्रा.शु. ६,	चंद्र	24 जुला	हस्त	ल. ५, ६, अभिजित्
अ.श्रा.शु.१०,	शुक्र	28 जुला	अनु.	ल. ५, ६, अभि.- (गुरुपादवेधऽभावः)
अ.श्रा.कृ. १,	बुध	2 अग.	श्रव.	ल. ५, ६, मु. 12:58 तक (बुध-शुक्रवेधऽभावः)
अ.श्रा.कृ. २,	गुरु	3 अग.	धनि.	मु. 9:56 तक
अ.श्रा.कृ. ४,	शनि	5 अग.	उ.भा.	मु. 9:41 बाद
अ.श्रा.कृ.१०,	गुरु	10 अग.	रोहि.	ल. ५, ६, अभिजित्
अ.श्रा.कृ.११,	शुक्र	11 अग.	मृग.	ल. ५, ६, अभिजित्
अ.श्रा.कृ.१३,	चंद्र	14 अग.	पुन.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव.शु. ३,	शनि	19 अग.	उ.फा.	ल. ६, ८, अभिजित्- (भौमयुति परिहार)
श्राव.शु. ५,	चन्द्र	21 अग.	चित्रा	ल. ६, ८, अभि. (शु.दा.)
श्रा.शु. ८,	गुरु	24 अग.	अनु.	मु. 9:04 बाद, ल. ८ (15:06 तक गुरुवेधऽभावः)
श्राव.शु. १२,	चंद्र	28 अग.	उ.षा.	मृत्युबाणदोष विचार्य 11:07 तक; तदुपरान्त परिहार, ल. ८
(सन् 2024 ई०)				
फाल्गु.कृ.१३,	शुक्र	8 मार्च	श्रव.	मु. 10:41 तक

व्यवसाय (विपणि) शुरू करने के मुहूर्त्त- वि. संवत् २०८० (2023-24 ई.)

[दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरू करने के मुहूर्त्त]

मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी-जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट—मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु.१३,	बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ३, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ६,	गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १,	शनि	20 मई	रोहि.	मु. 8:03 बाद, ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	रोहि.	मु. 9:05 तक
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	मृग.	मु. 9:05 बाद, ल. ३, अभि.
ज्ये. शु. ३,	चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक, ल. ३
ज्ये. शु. ६,	गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. ९,	चंद्र	29 मई	उ.फा.	मु. 11:50 बाद, ल. ५, अभि.
ज्ये. शु. १२,	गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रातः 6:48 तक
ज्ये. शु. १४,	शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद (भद्रा-परि.)
आषा. कृ. ५,	गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद, ल. ५, अभि.
आषा. कृ. ९,	चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद,
आषा. शु. ३,	बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५, ६
आषा. शु. ८,	चंद्र	26 जून	उ.फा.	मु. 6:06 बाद, मृत्युबाण-विचार (भद्रा-परिहार)
आषा.शु. १३,	शनि	1 जुला	अनु.	ल. ५, अभिजित्
शु.श्रा.कृ. ७,	रवि	9 जुला	उ.भा.	मु. 8:56 बाद, ल. ५
शु.श्रा.कृ. ८,	चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ५, अभिजित्
शु.श्रा.कृ.१२,	शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ५, ६, अभि., ८
शु.श्रा.शु. ८,	गुरु	24 अग.	अनु.	मु. प्रातः 9:04 बाद, अभि.
शु.श्रा.शु. १२,	चंद्र	28 अग.	उ.षा.	11:07 तक मृत्युबाण, तदुपरान्त परिहार, ल. ८, ९

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र. कृ. ७,	बुध	6 सितं.	रोहि.	मु 9:20 बाद (मृत्युवाण विचार)
भाद्र. कृ. ८,	गुरु	7 सितं.	रोहि.	मु. 10:25 तक
भाद्र. कृ. ८,	गुरु	7 सितं.	मृग.	मु. 10:25 बाद, ल. ८, अभि.
भाद्र. कृ. १२,	चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, अभिजित्
भाद्र. शु. ६,	गुरु	21 सितं.	अनु.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ९,	रवि	24 सितं.	उ.षा.	मु. 13:42 बाद,
भाद्र. शु.१०,	चंद्र	25 सितं.	उ.षा.	11:55 तक, ल. ८
भाद्र. शु.१०,	चंद्र	25 सितं.	श्रव.	11:55 बाद, ल. ८, ९
आश्वि.शु. ८,	रवि	22 अक्टू	उ.षा.	ल. ८, ९, १०, अभिजित्
आश्वि. शु.१२,	गुरु	26 अक्टू	उ.भा.	मु. 12:26 बाद, ल. १०
कार्ति.कृ. ७,	शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद,
कार्ति.कृ. ८,	रवि	5 नवं.	पुष्य	मु. 10:29 तक
कार्ति.कृ.१२,	शुक्र	10 नवं.	हस्त	ल. ८, ९, १० (मु. 12:36 तक)
कार्ति. शु. ६,	रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, अभिजित्
कार्ति. शु.११,	गुरु	23 नवं.	उ.भा.	ल. ९ (10:04 तक)
कार्ति.पूर्णिमा,	चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग.कृ. २,	बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०, मु. 13:59 तक
मार्ग.कृ. ५,	शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ. १०,	गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, १० अभिजित्
मार्ग.कृ. ११,	शुक्र	8 दिसं.	हस्त	मु. 8:54 तक
मार्ग.कृ. ११,	शुक्र	8 दिसं.	चित्रा	8:54 बाद, ल. ९, १० (केतुयुति परिहार)
(सन् 2024 ई.)				
पौष शु.११,	रवि	21 जन.	रोहि.	ल. ९, अभि. (भद्रा-परिहार)
पौष पूर्णिमा,	गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १,	शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
माघ कृ. ५,	बुध	31 जन.	हस्त	ल. ९, अभिजित्
माघ कृ. ६,	गुरु	1 फर.	चित्रा	मु. 12:28 तक
माघ कृ. १०,	चंद्र	5 फर.	अनु.	मु 7:54 तक (गुरुपादवेध विचार्य)
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद,
माघ शु. ६,	गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक

व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. ८,	शनि	17 फर.	रोहि.	मु. 8:46 बाद, ल. १, २
माघ शु. १०,	चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. प्रातः 10:33 तक
माघ शु. १२,	बुध	21 फर.	पुष्य	मु. दोप. 14:18 बाद
माघ शु. १३,	गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ. ७,	रवि	3 मार्च	अनु.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.१२,	गुरु	7 मार्च	उ.षा.	8:24 तक, 8:24 से 11:24 तक परिघ-दोष, ल. २ (11:24 बाद)

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०८०

उपनयन संस्कार सम्बन्धी आवश्यक विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक-मुहूर्त' लेख में पृष्ठ 202 पर देखें।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. २,	गुरु	23 मार्च	रेव.	ल. २, ३ (प्रातः 7:31 से रोगबाण)
ज्ये. कृ. ५,	बुध	10 मई	पू.षा.	ल. २, ३ (10:35 से शुक्रपादवेध)
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	रोहि.	मु. 9:05 तक, ल. ३ (9:05 तक)
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	मृग.	मु. 9:05 बाद, ल. ३
ज्ये. शु. ३,	चंद्र	22 मई	मृ/आ	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ५,	बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५ (प्रातः 7:26 तक -रोगबाण विचार्य)
ज्ये. शु.१०,	मंग.	30 मई	हस्त	ल. ३, ५, अभि. (सामवेदियों हेतु)
ज्ये. शु. १२,	गुरु	1 जून	चित्रा	मु. 6:48 तक
आषा. कृ. १,	चंद्र	5 जून	मूल	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ३,	मंग	6 जून	पू.षा.	ल. ३, ५, अभिजित् (सामवेदियों हेतु)
आषा.कृ. ५,	गुरु	8 जून	श्रव.	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा.शु. २,	मंग.	20 जून	पुन.	ल. ५, अभि. (सामवेदियों हेतु)
आषा. शु. ३,	बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५
श्रा. कृ. १,	मंग	4 जुला	पू./उ	मु. 11:49 तक (सामवेदियों हेतु) रोगबाण परिहार
श्रा. कृ. ३,	गुरु	6 जुला	धनि.	मु. प्रातः 6:31 तक
(सन् 2024 ई०)				
पौष शु. ११,	रवि	21 जन.	रोहि.	ल. १, अभिजित्
माघ कृ. १,	शुक्र	26 जन.	पुष्य	ल. १, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
माघ कृ. ५,	बुध	31 जन.	हस्त	मु. 11:37 तक
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि	मुं. 10:43 बाद
माघ शु. १०,	चंद्र	19 फर.	मृ/आ	ल. १, २, अभिजित्
माघ शु. ११,	मंग	20 फर.	आर्द्रा	ल. १, २, अभिजित् (सामवेदियों हेतु)
माघ शु. १२,	बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
फाल्गु.कृ. १,	रवि	25 फर.	पू.फा.	ल. १, २, अभिजित्
चैत्र कृ. २,	बुध	27 मार्च	चित्रा	ल. २ (प्रातः 9:36 तक शुक्रपादवेध)

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०८०

विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर ही द्विरागमन हो तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू-प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ ही होता है। इसके अतिरिक्त नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा प्रथम यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है। (देखें पृष्ठ 204)

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. १३,	बुध	3 मई	हस्त	ल. २, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ६,	गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३ (भद्रा-परिहार)
ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, मु. 13:03 तक
कार्ति.शु. ११,	गुरु	23 नवं.	उ.भा.	ल. ९ (मु. 10:04 तक)
कार्ति.पूर्णिमा,	चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग. कृ. २,	बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ.१०,	गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, १०
मार्ग. कृ.११,	शुक्र	8 दिसं.	ह/चि	ल. ९, १०, अभिजित्
(सन् 2024 ई.)				
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद, ल. १, २
माघ शु. ६,	गुरु	15 फर.	अश्वि	ल. १, २, अभिजित्
माघ शु. १०,	चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु. १२,	बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
माघ शु. १३,	गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.१२,	गुरु	7 मार्च	उ.षा.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.१३,	शुक्र	8 मार्च	श्रव.	मु. 10:41 तक

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८०

आगे लिखे उत्तरायण में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त प्रायः सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति-स्थापना, जलाशय, बावड़ी, कूँआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा उनके अवतरण (जयन्ती) का दिवस भी विशेष रूप से ग्राह्य होगा।

जैसे-श्रीविष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय-तृतीया, रामनवमी विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु-प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं। श्रीशिव मूर्त्ति एवं शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुन मास की चुतर्दशी (महाशिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण-काल में (मध्याह्न से पहिले) ही की जाती है। कालभैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। अतः दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त अलग से दिए गए हैं।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु.१३,	बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ३, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ६,	गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. शु. १,	शनि	20 मई	रोहि.	मु. 8:03 बाद
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	रोहि.	मु. 9:05 तक, ल. ३,
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	मृग.	मु. 9:05 बाद, ल. ३, अभि.
ज्ये. शु. ३,	चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक,
ज्ये. शु. ५,	बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ६,	गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित् (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. ९,	चंद्र	29 मई	उ.फा.	मु. 11:50 बाद
ज्ये. शु. १२,	गुरु	1 जून	चित्रा	मु. 6:48 तक
ज्ये. शु. १४,	शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद (भद्रा. परि.)
आषा.कृ. ५,	गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद, ल. ६
आषा. कृ. ९,	चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद
आषा. शु. ३,	बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५, ६

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. शु. ८, चंद्र	26 जून	उ.फा.	मु. 6:06 बाद, भद्रा-परिहार
(सन् 2024 ई०)			
पौष शु. ११, रवि	21 जन.	रोहि.	ल. १, अभि. (भद्रा-परिहार)
पौष पूर्णिमा, गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १, शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	हस्त	ल. १,
माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	चित्रा	ल. १, 14:32 तक केतुयुति का परिहार है
माघ शु. ५, बुध	14 फर.	अश्वि.	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६, गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
माघ शु. १०, चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु. १२, बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
माघ शु. १३, गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ. ७, रवि	3 मार्च	अनु.	मु. 9:36 बाद, ल. १, २
फाल्गु.कृ.१२,गुरु	7 मार्च	उ.षा.	ल. १, २, अभिजित्

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (दक्षिणायन में)

(देवी, वाराह, नृसिंह, काली आदि उग्र देवताओं के प्रतिष्ठा मुहूर्त्त)

आषा.शु.१३,शनि	1 जुला	अनु.	ल. ५, अभिजित्
श्राव.कृ. ३, गुरु	6 जुला	धनि.	मु. 6:31 तक (शुक्रपादवेध विचार्य)
श्राव. कृ. ७, रवि	9 जुला	उ.भा.	मु. 8:56 बाद
श्राव. कृ. ८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ५, ६, ८
श्राव.कृ. १२,शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ५, ६, ८, अभिजित्
श्राव. शु. ८, गुरु	24 अग.	अनु.	मु. 9:04 बाद, ल. ८, अभि.
श्राव. शु.१२, चंद्र	28 अग.	उ.षा.	मु. 11:07 बाद, ल. ८, ९
भाद्र. कृ. ७, बुध	6 सितं.	रोहि.	मु. 9:20 बाद
भाद्र. कृ. ८, गुरु	7 सितं.	रोहि.	मु. 10:25 तक
भाद्र. कृ. ८, गुरु	7 सितं.	मृग.	10:25 बाद, ल. ८, ९
भाद्र.कृ. ११, रवि	10 सितं.	पुन.	ल. ८, अभिजित्
भाद्र.कृ. १२, चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, अभिजित्
भाद्र.शु. ६, गुरु	21 सितं.	अनु	ल. ८, ९, १०
भाद्र.शु. १०, चंद्र	25 सितं.	षा/श्र	ल. ८, ९, १०

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
अश्वि.शु. ८, रवि	22 अक्टू	उ.षा.	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु.१२, गुरु	26 अक्टू	उ.भा.	मु. 11:27 बाद
कार्ति.कृ. ६,शुक्र	3 नवं.	पुन.	ल. ८, ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ७,शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद
कार्ति. कृ. ८,रवि	5 नवं.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
कार्ति.कृ.१२,शुक्र	10 नवं.	हस्त	मु. 12:36 तक
कार्ति.शु. ६, रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, अभिजित्
कार्ति.शु. ११,गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक
मार्ग.कृ. २, बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग.कृ. ५, शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ.१०, गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ.११, शुक्र	8 दिसं.	ह/चि	ल. ९, १०, अभिजित्

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-२०८०

आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु इनमें से शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां श्रीगौरी की प्रतिष्ठा हेतु विशेष रूप से शुभ एवं प्रशस्त होंगी।

श्रीदुर्गादि प्रतिष्ठा में उत्तरायण के अतिरिक्त दक्षिणायन भी शुभ है–'महिषासुरइन्त्याश्च प्रतिष्ठा दक्षिणायने च'–(देवीपुराण), अपि च, 'महिषासुरहन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने' –वैखानस संहिता।

इसके अतिरिक्त देवियों की प्रतिष्ठा में 'मूल' नक्षत्र विशेष रूप से प्रशस्त माना गया है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु. १३, बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ४, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ३, चंद्र	8 मई	ज्ये.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ६, गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ८, शनि	13 मई	धनि.	मु. 6:51 तक
ज्ये. शु. १, शनि	20 मई	रोहि.	मु. 8:03 बाद
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	रो/मृ	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित् (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. १२, गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रात: 6:48 तक
आषा. कृ. १, चंद्र	5 जून	मूल	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ५, गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद, ल. ६
आषा. शु. ३, बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५, ६
आषा. शु.१३,शनि	1 जुला	अनु.	ल. ४, ५, ६, अभिजित्
आषा.पूर्णिमा, चंद्र	3 जुला	मूल	मु. 11:02 तक
श्राव.कृ. ११, गुरु	13 जुला	कृति	ल. ५, अभिजित्
श्राव.कृ. १२,शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ४, ६, ८, अभि.
श्राव. शु. ८, गुरु	24 अग	अनु.	मु. 9:04 बाद, ल. ८, अभि.
श्राव.शु.१०, शनि	26 अग.	ज्ये/मू	ल. ८, ९, अभिजित्
श्राव.शु.११, रवि	27 अग.	मूल	मु. 7:16 तक
भाद्र.कृ. ७, बुध	6 सितं.	कृ/रो	ल. ८, ९ (मृत्युवाण परि.)
भाद्र.कृ. ८, गुरु	7 सितं.	रो/मृ	ल. ८, अभि., ९
भाद्र.कृ. ९, शुक्र	8 सितं.	मृग.	मु. 12:10 तक
भाद्र.कृ. १२, चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र.शु. ६, गुरु	21 सितं.	अनु.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र.शु. ७, शुक्र	22 सितं.	ज्ये.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र.शु. ८, शनि	23 सितं.	मूल	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र.शु. १०, चंद्र	25 सितं.	श्रव.	मु. 11:55 बाद
आश्वि.शु. ५, गुरु	19 अक्टू	ज्ये.	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु. ६, शुक्र	20 अक्टू	मूल	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु. ९, चंद्र	23 अक्टू	श्रव.	ल. ८, ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ७, शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद
कार्ति. कृ. ८, रवि	5 नवं.	पुष्य	मु. 10:29 तक
कार्ति. शु. ६, रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, ११, अभिजित्
कार्ति.पूर्णिमा, चंद्र	27 नवं.	कृति.	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. २, बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ. ५, शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०
मार्ग. कृ.११, शुक्र	8 दिसं.	चित्रा	मु. 8:54 बाद, ल. ९, १०

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
मार्ग. शु. २, गुरु	14 दिसं.	मूल	मु. 9:47 तक
(सन् 2024 ई०)			
पौष शु. १०, शनि	20 जन.	कृति.	ल. ११, १, अभिजित्
पौष शु. ११, रवि	21 जन.	रोहि.	ल. ११, १, अभिजित्
पौष पूर्णिमा, गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद, अभिजित्
माघ कृ. १, शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	चित्रा	मु. 12:28 तक
माघ कृ. ९, रवि	4 फर.	अनु.	ल. ११, १, अभिजित्
माघ शु. ७, शुक्र	16 फर.	कृति.	मु. 8:47 बाद
माघ शु. ८, शनि	17 फर.	कृ/रो	ल. १, २, अभिजित्
माघ शु. १०, चंद्र	19 फर.	मृग.	ल. १, मु. 10:33 तक
माघ शु. १३, गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ. ७, रवि	3 मार्च	अनु.	मु. 9:36 बाद, 9:36 तक गुरुपादवेध, ल. १, २
फाल्गु. कृ. ८, चंद्र	4 मार्च	ज्ये.	ल. १, २

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८०

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापना हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषतः शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में आगे दिए गए **'शिववास चक्र'** का भी प्रयोग कर लें तो विशेष शुभ होगा, परन्तु अनिवार्य नहीं है। शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. १३, बुध	3 मई	हस्त	ल. २, ४ (11:27 तक)
ज्ये. कृ. ३, चंद्र	8 मई	ज्ये.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. १२, मंग	16 मई	रेव.	ल. ३
ज्ये. कृ. १३, बुध	17 मई	रेव.	मु. प्रातः 7:39 तक
ज्ये. शु. १, शनि	20 मई	रोहि.	मु. 8:03 बाद

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	रो/मृ	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	मृ/आ	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ४, मंग	23 मई	आ/पु	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ५, बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित् (भौमयुति परिहार)
ज्ये. शु. १०, मंग	30 मई	हस्त	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. १४, शनि	3 जून	अनु.	ल. ३, ५
आषा. कृ.१, चंद्र	5 जून	मूल	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ५, गुरु	8 जून	श्रव.	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ.१०, मंग	13 जून	रेव.	ल. ३, ५,
आषा. शु. १, चंद्र	19 जून	आर्द्रा	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. २, मंग	20 जून	पुन.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. ३, बुध	21 जून	पुष्य	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा.शु.१३, शनि	1 जुला	अनु.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु.१४, रवि	2 जुला	ज्ये.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा.पूर्णिमा, चंद्र	3 जुला	मूल	ल. ५, मु. 11:02 तक
श्राव. कृ. ३, गुरु	6 जुला	धनि.	मु. 8:18 बाद
श्राव. कृ. ८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव.कृ.१२, शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ६, ८, अभिजित्
कार्ति.शु. ६, रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, अभिजित्
कार्ति.पूर्णिमा, चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग. कृ. १, मंग	28 नवं.	रोहि.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ. २, बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ. ३, गुरु	30 नवं.	आर्द्रा	ल. ९, १०, अभि. (भद्रा.परि)
मार्ग. कृ. ४, शुक्र	1 दिसं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग. कृ. १४, चंद्र	11 दिसं.	अनु.	मु. 12:14 बाद
(सन् 2024 ई०)			
पौष शु. १४, बुध	24 जन.	पुन.	मु. 8:51 बाद,
माघ कृ. ४, चंद्र	29 जन.	पू.फा.	ल. ११, १, अभिजित्- पादेन गुरुवेधऽभावः
माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	हस्त	ल. ११, १, अभिजित्

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. ५, बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६, गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
माघ शु. १०, चंद्र	19 फर.	मृ./आ	ल. १, २, अभिजित्
माघ शु. १२, बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
माघ शु. १३, गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.७, रवि	3 मार्च	अनु.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु. कृ.८, चंद्र	4 मार्च	ज्ये.	मु. 8:50 तक
फाल्गु.कृ.१३, शुक्र	8 मार्च	श्रव.	ल. १, २, मु. 10:41 तक

शिववास चक्र

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है-

उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना।

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(०)	श्मशान	नेष्ट फल

उदाहरण-मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. कृ.४, बुध	7 जून	उ.षा.	ल. ३, ५
श्राव.कृ. ३, गुरु	6 जुला	धनि.	मु. 8:18 बाद, ल. ४, ६
भाद्र.कृ. ४, रवि	3 सितं.	रेव.	मु. 7:06 से 10:39 तक
कार्ति.कृ. ४, बुध	1 नवं.	मृग.	ल. ८, ९, १०
मार्ग. कृ. ४, शुक्र	1 दिसं.	पुन.	ल. ९, १०
(सन् 2024 ई०)			
माघ कृ. ४, चंद्र	29 जन.	पू.फा.	ल. ११, १, अभिजित्, पादेन गुरुवेधऽभाव:
फाल्गु.कृ. ४, बुध	28 फर.	चित्रा	मु. 7:33 से 10:19 तक

श्री स्कन्द प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८०

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित् (भौमयुति परिहार)
आषा. शु. ६,शनि	24 जून	मघा	मु. प्रात: 7:18 तक
भाद्र.शु. ६, गुरु	21 सितं.	अनु.	ल. ८, ९, १०
आश्वि.शु. ६,शुक्र	20 अक्तू	मूल	ल. ८, ९, १०
कार्ति.शु. ६, रवि	19 नवं.	श्रव.	मु. 7:24 तक
(सन् 2024 ई०)			
माघ शु. ६, गुरु	14 फर.	अश्वि.	मु. 12:10 बाद
माघ शु. ६, शुक्र	15 फर.	अश्वि.	मु. 9:26 तक

श्रीलक्ष्मीनारायण व श्रीराधा-कृष्ण मूर्त्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०८०

गत पृष्ठों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी विशेष रूप से ग्राह्य होंगे। मतान्तर से कुछ लोग माघ मास में श्रीविष्णु जी की प्रतिष्ठा को वर्ज्य मानते हैं। **विशेष**–कृष्ण–जन्माष्टमी पर्व और मार्गशीर्ष मास श्रेष्ठ माने गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु.१३, बुध	3 मई	हस्त	ल. २, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ५, बुध	10 मई	पू.षा.	ल. २, ३, ५ (10:35 बाद शुक्रपादवेध विचार्य)

श्रीलक्ष्मीनारायण व श्रीराधा–कृष्ण मूर्त्ति

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	श्र/ध	मु. 9:07 बाद
ज्ये. कृ. ८, शनि	13 मई	धनि.	मु. 6:51 तक
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	रो/मृ	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	मृग.	मु. 10:37 तक
ज्ये. शु. ५, बुध	24 मई	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ९, चंद्र	29 मई	उ.फा.	मु. 11:50 बाद
ज्ये. शु. १०, बुध	30 मई	हस्त	ल. ३
ज्ये. शु. १४, शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद (भद्रा-परिहार)
आषा. कृ. ५, गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद
आषा.शु.१३, शनि	1 जुला	अनु.	ल. ४, ६, अभिजित्
आषा.पूर्णिमा, चंद्र	3 जुला	मूल	ल. ५, मु. 11:02 तक
श्राव. कृ. ८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ४, ६, ८
भाद्र.कृ. ८, गुरु	7 सितं.	रोहि/मृ.	ल. ६, ८, अभि.
कार्ति. शु.११, गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक
मार्ग.कृ. ५, शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित्
(सन् 2024 ई०)			
पौष शु. ११, रवि	21 जन.	रोहि.	ल. १, अभिजित्
पौष पूर्णिमा, गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. ५, बुध	31 जन.	हस्त	ल. १
माघ कृ. ६, गुरु	1 फर.	चित्रा	ल. १, अभिजित्
माघ शु. ५, बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६, गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
माघ शु. १०, चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु. १२, बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
फाल्गु. कृ. ८, चंद्र	4 मार्च	ज्ये.	मु. 8:50 तक

श्रीमद्भागवत्, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८०

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्रीमद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. १३, बुध	3 मई	हस्त	ल. २ (मु. 11:27 तक)
ज्ये. कृ. ६, गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २
ज्ये. कृ. ७, शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २
ज्ये. शु. २, रवि	21 मई	रो/मृ	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, चंद्र	22 मई	मृग.	ल. ३, मु. 10:37 तक
ज्ये. शु. ५, बुध	24 मई	पुन.	ल. ३
ज्ये. शु. ६, गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (भौमयुति परि.)
ज्ये. शु. १२, गुरु	1 जून	चित्रा	मु. प्रात: 6:48 तक
आषा. कृ. ५, गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद,
आषा. कृ. ८, रवि	11 जून	पू.भा.	मु. 12:06 तक
आषा. कृ. ९, चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद
आषा. शु. ३, बुध	21 जून	पुष्य	ल. ४, ५
आषा. शु. ८, चंद्र	26 जून	उ.फा.	मु. 6:06 बाद
श्राव. कृ. ३, गुरु	6 जुला	धनि.	मु. 6:31 तक
श्राव. कृ. ७, रवि	9 जुला	उ.भा.	मु. 8:56 बाद
श्राव. कृ. ८, चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ४, ६, ८, अभिजित्
श्राव. कृ.१२, शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ४, ६, ८, अभिजित्
श्राव. शु. ८, गुरु	24 अग.	अनु.	मु. 9:04 बाद, भद्रा-परिहार
श्राव. शु. ११, रवि	27 अग.	पू.षा.	मु. 7:16 बाद
श्राव. शु. १२, चंद्र	28 अग.	उ.षा.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. कृ. ७, बुध	6 सितं.	रोहि.	मु. 9:20 बाद
भाद्र. कृ. ८, गुरु	7 सितं.	रो/मृ	ल. ६, ८, ९, अभिजित्
भाद्र.कृ. ११, रवि	10 सितं.	पुन.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. कृ.१२, चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ६, गुरु	21 सितं.	अनु.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ९, रवि	24 सितं.	पू/उ	मु. 10:24 बाद
आश्वि.शु. ८, रवि	22 अक्तू	उ.षा.	ल. ८, ९, १०
कार्ति. कृ.६, शुक्र	3 नवं.	पुन.	ल. ८, ९, १०
कार्ति. कृ. ८, रवि	5 नवं.	पुष्य	ल. ८, ९, मु. 10:29 तक
कार्ति. कृ.१०, बुध	8 नवं.	पू.फा.	मु. 8:24 बाद

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति.कृ.१२,	शुक्र	10 नवं.	हस्त	मु. 12:36 तक
कार्ति. शु. ६,	रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, १, अभि.
कार्ति. शु.११,	गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक
कार्ति.पूर्णिमा,	चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग.कृ. २,	बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग.कृ. १०,	गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ. ११,	शुक्र	8 दिसं.	ह/चित्रा	ल. ९, १०, अभि.
मार्ग. शु. २,	गुरु	14 दिसं.	पू.षा.	मु. 9:47 बाद, अभि.
(सन् 2024 ई०)				
पौष शु. ८,	गुरु	18 जन.	अश्वि.	ल. ११, १
पौष शु. ११,	रवि	21 जन.	रोहि.	ल. ११, १, अभिजित्
पौष पूर्णिमा,	गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १,	शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
माघ कृ. ५,	बुध	31 जन.	हस्त	ल. ११, १
माघ कृ. ६,	गुरु	1 फर.	चित्रा	मु. 12:28 तक
माघ कृ. १२,	बुध	7 फर.	पू.षा.	ल. ११, १
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६,	गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
माघ शु.१०,	चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु. १२,	बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
माघ शु. १३,	गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु. कृ. १,	रवि	25 फर.	पू.फा.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ. ७,	रवि	3 मार्च	अनु.	ल. १, २
फाल्गु. कृ.११,	बुध	6 मार्च	पू.षा.	मु. 11:33 बाद
फाल्गु.कृ.१२,	गुरु	7 मार्च	उ.षा.	8:24 से 11:24 तक परिघ दोष त्यक्त्वा

वाहनादि क्रय मुहूर्त्त-वि. संवत् २०८०

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्प्यूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की ख़रीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्रीगणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच/स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी 4, 8 या 12वें नहीं होना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. १३,	बुध	3 मई	हस्त	ल. २, मु. 11:27 तक
ज्ये. कृ. ५,	बुध	10 मई	पू.षा.	ल. २, ३, ५ (10:35 बाद शुक्रपादवेध विचार्य)
ज्ये. कृ. ६,	गुरु	11 मई	उ.षा.	ल. २, ३, अभिजित्
ज्ये. कृ. ७,	शुक्र	12 मई	श्रव.	ल. २, अभिजित्
ज्ये. शु. १,	शनि	20 मई	रोहि	मु. 8:03 बाद
ज्ये. शु. २,	रवि	21 मई	रो/मृ	ल. ३, अभिजित्
ज्ये. शु. ३,	चन्द्र	22 मई	मृग.	ल. ३, मु. 10:37 तक
ज्ये. शु. ५,	बुध	24 मई	पुन.	ल. ३
ज्ये. शु. ६,	गुरु	25 मई	पुष्य	ल. ३, ५, अभि. (भौमयुति परि.)
ज्ये. शु. ९,	चंद्र	29 मई	उ.फा.	मु. 11:50 बाद
ज्ये. शु. १४,	शनि	3 जून	अनु.	मु. 11:17 बाद
आषा. कृ.१,	चंद्र	5 जून	मूल	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ५,	गुरु	8 जून	श्रव.	मु. 8:37 बाद, ५, अभि.
आषा. कृ. ९,	चंद्र	12 जून	उ.भा.	मु. 10:35 बाद
आषा. शु. ३,	बुध	21 जून	पुष्य	ल. ४, ५
आषा. शु. ५,	शुक्र	23 जून	मघा	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा. शु. ८,	चंद्र	26 जून	उ.फा.	मु. 6:06 बाद
आषा. शु.१२,	शुक्र	30 जून	अनु.	मु. 16:10 बाद
आषा. शु.१३,	शनि	1 जुला	अनु	ल. ४, ६,
आषा.पूर्णिमा,	चंद्र	3 जुला	मूल	मु. 11:02 तक, ल. ५
श्राव. कृ. ७,	रवि	9 जुला	उ.भा.	मु. 8:56 बाद
श्राव.कृ. ८,	चंद्र	10 जुला	रेव.	ल. ४, ६, ८, अभिजित्
श्राव.कृ. १२,	शुक्र	14 जुला	रोहि.	ल. ४, ६, ८, अभिजित्
श्राव. शु. ८,	गुरु	24 अग.	अनु.	मु. 9:04 बाद, भद्रा-परिहार
श्राव. शु.१०,	शनि	26 अग.	मूल	मु. 8:38 बाद
श्राव. शु.११,	रवि	27 अग.	पू.षा.	मु. 7:16 बाद, अभिजित्
श्राव.शु.१२,	चंद्र	28 अग.	उ.षा.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. कृ. ७,	बुध	6 सितं.	रोहि.	मु. 9:20 बाद
भाद्र.कृ. ८,	गुरु	7 सितं.	रो/मृ	ल. ६, ८, ९, अभिजित्
भाद्र. कृ. ११,	रवि	10 सितं.	पुन.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र.कृ. १२,	चंद्र	11 सितं.	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र. शु. ६,	गुरु	21 सितं.	अनु.	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ८,	शनि	23 सितं.	मूल	ल. ८, ९, अभिजित्
भाद्र. शु. ९,	रवि	24 सितं.	पू/उ	मु. 10:24 बाद
भाद्र.शु.१०,	चंद्र	25 सितं.	उ/श्र	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु. ६,	शुक्र	20 अक्तू	मूल	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु. ७,	शनि	21 अक्तू	पू.षा.	ल. ८, ९, अभिजित्
आश्वि.शु. ८,	रवि	22 अक्तू	उ.षा.	ल. ८, ९, १०, अभिजित्
कार्ति. कृ.६,	शुक्र	3 नवं.	पुन.	ल. ८, ९, १०, अभिजित्
कार्ति. कृ.७,	शनि	4 नवं.	पुष्य	मु. 12:04 बाद
कार्ति. कृ.८,	रवि	5 नवं.	पुष्य	मु. 10:29 तक
कार्ति.कृ.१०,	बुध	8 नवं.	पू.फा.	मु. 8:24 बाद
कार्ति.कृ.१२,	शुक्र	10 नवं.	हस्त	मु. 12:36 तक
कार्ति.शु. ६,	रवि	19 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, १, अभिजित्
कार्ति. शु.११,	गुरु	23 नवं.	उ.भा.	मु. 10:04 तक
कार्ति.पूर्णिमा,	चंद्र	27 नवं.	रोहि.	मु. 13:36 बाद
मार्ग. कृ.२,	बुध	29 नवं.	मृग.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ.५,	शनि	2 दिसं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ.१०,	गुरु	7 दिसं.	हस्त	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.कृ.११,	शुक्र	8 दिसं.	ह/चि	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग.शु. २,	गुरु	14 दिसं.	मू/पू	ल. ९, १०, १, अभिजित्
(सन् 2024 ई०)				
पौष शु. ११,	रवि	21 जन.	रोहि.	ल. ११, १, अभिजित्
पौष पूर्णिमा,	गुरु	25 जन.	पुष्य	मु. 10:38 बाद
माघ कृ. १,	शुक्र	26 जन.	पुष्य	मु. 10:28 तक
माघ कृ. ५,	बुध	31 जन.	हस्त	ल. ११, १
माघ कृ. ६,	गुरु	1 फर.	चित्रा	मु. 12:28 तक
माघ कृ. १२,	बुध	7 फर.	पू.षा.	ल. ११, १
माघ शु. ५,	बुध	14 फर.	अश्वि	मु. 10:43 बाद
माघ शु. ६,	गुरु	15 फर.	अश्वि	मु. 9:26 तक
माघ शु. ८,	शनि	17 फर.	रोहि.	मु. 8:46 बाद
माघ शु.१०,	चंद्र	19 फर.	मृग.	मु. 10:33 तक
माघ शु.१२,	बुध	21 फर.	पुन.	ल. १, २
माघ शु.१३,	गुरु	22 फर.	पुष्य	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.१,	रवि	25 फर.	पू.फा.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.७,	रवि	3 मार्च	अनु.	ल. १, २, अभिजित्
फाल्गु.कृ.११,	बुध	6 मार्च	पू.षा.	मु. 11:33 बाद
फाल्गु.कृ.१२,	गुरु	7 मार्च	उ.षा.	मु. 11:24 बाद

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभकाल (मुहूर्त्त) (12 नवम्बर, रविवार, सन् 2023 ई.)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक अमावस में प्रदोष-काल एवं अर्द्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिक स्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणी।। ज्योतिर्निबन्ध

लक्ष्मीपूजन, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतः प्रशस्त माना गया है–

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्ष प्रदायिनीम्।। (भविष्यपुराण)

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक अमावस 12 नवम्बर, रविवार, 2023 ई. को दोपहर 14घं.–45मि. बाद प्रदोष, निशीथ तथा महानिशीथ व्यापिनी होगी। अतः **'दीपावली-पर्व'** 12 नवम्बर, रविवार, 2023 ई. के दिन ही होगा। सायं दीपावली पर्व स्वाती नक्षत्र, सौभाग्य योग, तुला राशिस्थ चन्द्र तथा अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं श्लाघ्य रहेगी।

दीपावली-दिन के कृत्य–इस दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत्त हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिए। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिए। यदि सम्भव हो तो एकभुक्त उपवास कर गोधूलि वेला (सूर्यास्त के समय) में अथवा वृष, सिंह आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। इसके अनन्तर **महाकाली** का दावात के रूप में, **महासरस्वती** का कलम, बही आदि के रूप में तथा **कुबेर** का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिए। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त ससंकल्प दीपदान करना चाहिए। तदुपरान्त यथोलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिए।

दीपावली वस्तुतः पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्र्योदशी (धनतेरस) से कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। दीपावली के पर्व पर धन की प्रभूत प्राप्ति के लिए धन की अधिष्ठात्री धनदा भगवती लक्ष्मी का समारोहपूर्वक आवाहन, षोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। आगे दिए गए निर्दिष्ट शुभ समय में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवों की विधिवत पूजार्चन करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र–**'कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।

'ॐ गं गणपतये नमः।। लक्ष्म्यै नमः।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरेः प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।' से लक्ष्मी; **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें– **'कुबेराय नमः, धनदाय नमस्तुभ्यं निधपद्माधिपाय च।**
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पदः।।'

पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएं सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियां मुहूर्त्त भी पूजन, बही-खाता पूजन, कुबेर-पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं–

12 नवम्बर, 2023 ई. के चौघड़िया मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं.-मिं.)	
उद्वेग	6:56 से 8:15 तक	शुभ	17:27 से 19:08 तक
चर	8:15 से 9:34 तक	अमृत	19:08 से 20:49 तक
लाभ	9:34 से 10:53 तक	चर	20:49 से 22:30 तक
अमृत	10:53 से 12:12 तक	रोग	22:30 से 24:11 तक
काल	12:12 से 13:31 तक	काल	24:11 से 25:52 तक
शुभ	13:31 से 14:50 तक	लाभ	25:52 से 27:33 तक
रोग	14:50 से 16:08 तक	उद्वेग	27:33 से 29:15 तक
उद्वेग	16:08 से 17:27 तक	शुभ	29:15 से 30:57 तक

नोट–(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रातः 6 बजे से है।

(3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त्त 12 नवंबर, 2023 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए इसी पंचांग में दी गई मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में से स्थानीय सूर्योदयास्त निकालकर इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 285 का अवलोकन कर चौघड़ियां मुहूर्त निकालें।

प्रदोष काल–12 नवम्बर, 2023 ई. को जालन्धर एवं निकटवर्ती नगरों में सूर्यास्त 17घं.–27मि. से लेकर 2घं.–42मि. पर्यन्त 20घं.–09मि. तक प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार प्रदोषकाल निर्धारित करें। (देखें पृष्ठ नं. 300 इसी पंचांग में)

सायं 17घं.–39मि. से स्थिर लग्न **'वृष' विशेषतया शुभ रहेगा।** प्रदोषकाल आरम्भ (17-27मि.) से ही **'शुभ'** की चौघड़ियां भी 19घं.–08मि. तक रहेगी। तदुपरान्त **'अमृत'** चौघड़ियां शुभ हैं। अतएव 17घं.–39मि. से श्रीगणेश-लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इसी काल में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, कुबेर-पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह-स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ होगा।

निशीथ काल–12 नवम्बर, 2023 ई. को जालन्धर व समीपस्थ नगरों में निशीथकाल रात्रि 20घं.–09मि. से 22घं.–51मि. तक रहेगा। निशीथकाल में **'मिथुन'** लग्न 21-48 तक, फिर 21-48 से 24घं.–11मि. तक **'कर्क'** लग्न भी प्रशस्त है। **'निशीथकाल'** में भी **'अमृत'** तथा **'चर'** की चौघड़ियों का समावेश 22घं.–30मि. तक रहेगा।

अतएव इस बार प्रदोषकाल से प्रारम्भ होकर 22घं.–30मि. तक का समय अत्यन्त शुभ एवं सिद्धिकारक रहेगा। धर्मनिष्ठ लोगों को इस समय तक अपने पूजन कार्य समाप्ति की ओर बढ़ाने चाहिए। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी-स्तोत्रादि मन्त्रों का पाठ करना चाहिए। **ध्यान रहे,** 22घं.–30मि. (लगभग) रोग की चौघड़ियां प्रारम्भ हो जाएंगी।

महानिशीथ काल–रात्रि 22घं.–51मि. से अर्द्धरात्रि 25घं.–33मि. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में **'रोग'** तथा **'काल'** की चौघड़ियां इतनी शुभ नहीं है। अतएव कोई भी स्तोत्र, पाठ आदि प्रदोष/निशीथकाल में ही प्रारम्भ कर लेने चाहिए। इस अवधि में काली-उपासना, तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य-प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधनाएं एवं यज्ञादि किए जाते हैं। अतएव इनका प्रारम्भ प्रदोष/निशीथकाल में पहिले ही कर लें।

नोट–अपने स्थानीय नगर में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त वृष, कर्क व सिंह लग्नों के लिए पृष्ठ 287 का अवलोकन कर निकालें। साधारण जमा/ऋण कर आप निकाल सकते हैं। अथवा स्थानीय ब्राह्मण से पंचांग दिखाकर सम्पर्क करें– **–पं. विवेक शर्मा।**

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यो में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि को शरीर**, **चन्द्रमा को मन**, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न को आत्मा** माना गया है। यथा—

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योर्तिनिबंध

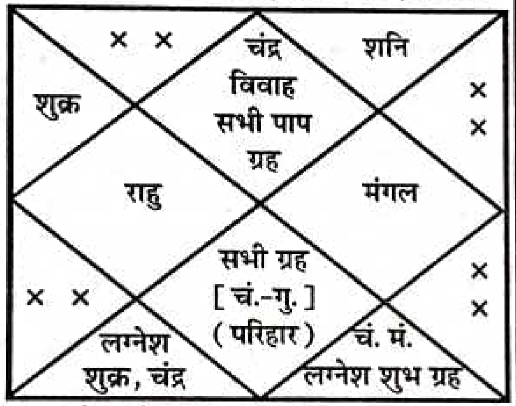
लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह



''त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥''

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी**, **केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

➡**कर्तृरि दोष**—लग्न में क्रूर ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

➡**परिहार**—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

➡**अष्टमस्थ मंगल का परिहार**—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**

कुजाष्टमोद्‌भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

➡**छठे, अष्टम चन्द्र का परिहार**—शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या ८वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि (३, ६)

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

''अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥'' (पीयूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—''कर्किगोरथः पूर्णो विधुस्तनौ''

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

➡**षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार**—नीच एवं शत्रु राशिगत (कर्क, सिंह या कन्या) शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

➡**सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु**—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र–गुरु का परिहार है। **''चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।''**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु**, **शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

➡**वेध दोष परिहार**—*पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो*

जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

➡**युतिदोष परिहार**—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। **यथा—**

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) **दग्धा तिथि परिहार**—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

कश्यप ऋषि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

विवाह लग्न से रेखाप्रद ग्रहों का ज्ञान

मुहूर्त्त-चिन्तामणि अनुसार विवाह लग्न से 3, 6, 8, 11वें स्थानों में सूर्य, शनि, राहु, केतु शुभप्रद होते हैं। चन्द्रमा 2, 3, 11वें, मंगल 3, 6, 11वें स्थानों में शुभ-प्रद होते हैं। बुध-गुरु 7, 8, 12वें स्थानों में अशुभ व अन्य स्थानों में शुभ, जबकि शुक्र वि. लग्न से 3, 6, 7, 8, 12वें स्थानों में अशुभ व शेष स्थानों में शुभप्रद होता है। **यथा—**

ग्रह	विवाह से शुभ स्थान	विंशोपक बल
सू.	3, 6, 8, 11	3½
चं.	2, 3, 11	5
मं.	3, 6, 11	1½
बु.	1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11	2
गु.	1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11	3
शु.	1, 2, 4, 5, 9, 10, 11	2
श.	3, 6, 8, 11	1½
रा.	3, 6, 8, 11	1½
के.	3, 6, 8, 11	1½

लग्न विंशोपक—

आचार्य वराह-अनुसार सूर्य का पूर्ण विंशोपक 3½, चंद्रमा का 5, गुरु का तीन, बुध-शुक्र का 2-2, मंगल-शनि-राहु-केतु का 1½-1½ होता है। बलाबल के आधार पर विंशोपक बल का ज्ञान करना चाहिए।

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो—दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।**

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा—भद्र दायिनी॥

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्या निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक) में—अर्थात् सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। मतान्तर से, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल-शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह-लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने-अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो, गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ –मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार—**

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं—

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध-अस्त होने के अनन्तर **२ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।**

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५-१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है— दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष—यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए।

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३-इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.-इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष-ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'-यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'-यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। "**आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥**"

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —**वाराहमिहिर॥**

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (**मु. मार्तण्ड**)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (**नारद**), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (**वसिष्ठ**) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (**नारदः**)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (**वृन्द्धमनुः**)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (**शार्गंधर**) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णयसिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे।

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —**वसिष्ठ**

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —**नारद**

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —**मुहूर्त्त चिंतामणि**

विवाह में सम-विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है– (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि–३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***–रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***–भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***–३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**–गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ–(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***–१, ४, ७, १०। **विशेष**–केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। **संसद्** में शपथ ग्रहण के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, नैऋत्य (दक्षि.-पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, वैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकदमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्राय: सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभु:। चक्रमादाय गोविन्द: सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। '**नारद पुराण**' के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से 1 घटी अर्थात् 24 मिनट पूर्व और मध्याह्न से 24 मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने 28 नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (25/30 घटी पल) का अर्धभाग 12 घड़ी, 45 पल होंगे। इस अर्ध भाग के 5 घंटे, 6 मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय 7/10 घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. 12 बजकर 16 मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे 24 मिनट पूर्व अर्थात् 11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा *(12:16 + 00:24 मिनट = 12 घं. 40 मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।*

★★★★ आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय ★★★★

आगे हम भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रानुसार मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय प्रकार दे रहे हैं, जिसमें विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दे रहे हैं। **ध्यान रहे,** सभी मुहूर्त्तों में वर्ज्य तत्त्वों जैसे–अधिक मास, क्षय मास, पितृ पक्ष, रिक्ता-तिथि (४, ९, १४), वैधृति-व्यतीपात आदि दुष्ट योग, भद्रा (भूलोके) एवं गुरु-शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा। ज्ञातव्य रहे, पंचांगदिवाकर में षोडश संस्कार अन्तर्गत गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्त स्थायी स्तम्भ **'भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व'** में दिए रहते हैं। हम इसके आगे के मुख्य मुहूर्त्तों का ग्राह्य-अग्राह्य तत्त्वों का निर्णय प्रकार लिख रहे हैं–

(1) मुण्डन (चौल, चूड़ाकरण) मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान से ३, ५, ७ आदि विषम वर्षों में मुण्डन संस्कार किया जाता है। कुलाचार अनुसार इसे प्रथम वर्ष भी सम्पन्न कर लेते हैं अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ करते हैं। कन्या का चौल (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में होता है।

ग्राह्य मास–उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला.-आषाढ़ तक)-यथा-वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ व फाल्गुन मास।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ (कृ. व शु. पक्ष), १३ (शुक्लपक्ष) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। (परन्तु ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार तथा वैश्यों को शनिवार मुण्डनादि कार्यों के लिए विशेष शुभ माने गए हैं।) शुक्ल पक्ष का सोमवार विशेष शुभ होता है, जबकि कृष्ण पक्ष का सोमवार अशुभ (साधारण) होता है।

ग्राह्य नक्षत्र–लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), अनुराधा नक्षत्र को त्यागकर मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती) तथा चरसंज्ञक (पुन, स्वा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ रहते हैं।

कुछ विद्वान जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र, विरुद्ध व विपरीत चन्द्र (४, ८, १२ व शत्रुगत) में वर्ज्य मानते हैं–

न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धेऽशुभतारकासु।
युग्माब्दमासे न च कृष्ण पक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे॥

परन्तु कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को शुभ मानते हैं।

नोट–ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन न करें।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९ या १२ राशियों के लग्न अथवा इनके नवांश में मुण्डन शुभ होते हैं। ग्राह्य लग्न राशि जन्म-लग्न या जन्म-राशि से अष्टमस्थ न हो। अष्टम भाव (शुक्र के अतिरिक्त) शुद्ध होना चाहिए। सामान्य लग्न शुद्धि तो आवश्यक ही है।

तारा-शुद्धि–मुहूर्त्त ग्रन्थों में चूड़ाकरण (मुण्डन) में तारा का प्रबल होना चन्द्रमा से भी अधिक आवश्यक माना गया है। (ज्योतिर्निबन्ध)

परन्तु तारा-विचार कृष्ण-पक्ष में ही विचारणीय है, शुक्ल पक्ष में नहीं। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल ही विचारणीय है।–**'कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे बली शशी।'** (नारद), अपि च, कृष्ण पक्ष में भी अशुभ तारा होने पर भी यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, मित्रवर्ग या किसी शुभ ग्रह के साथ हो, तो मुण्डन कार्य किया जा सकता है। ('तारा-चक्र' वि. संवत् २०७४ के पंचांगदिवाकर में देखें।)

विशेष ध्यातव्य–यदि बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, और गर्भ पाँच मास से अधिक का हो, तो मुण्डन कार्य न करावें। इस संस्कार से गर्भ नष्ट हो सकता है, परन्तु यदि संस्कार्य बालक 5 वर्ष से अधिक हो, तो माता के गर्भ के दोषापत्ति नहीं रहती।

(2) नूतन अक्षर–लेखनारम्भ मुहूर्त्त

बालक की पाँच वर्ष की अवस्था में सम्प्राप्त हो जाने पर आगे वर्णित विशुद्ध दिन को श्रीगणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, गुरु एवं कुलदेवता की पूजा के साथ उसे लिखने-पढ़ने के उद्देश्य से नूतन अक्षराम्भ संस्कार करवाना चाहिए। उपर्युक्त देवताओं के नाम से घी का हवन करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वाभिमुख गुरु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बालक को अक्षरारम्भ करवाना चाहिए। संस्कार्य बालक का चन्द्र-बुध बल अपेक्षित है।

ग्राह्य मास–कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. तक), कुछ विद्वान कुम्भस्थ सूर्य की अवधि को भी ग्राह्य मानते हैं।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., अभि., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न–२, ३, ६, ९, १२ लग्नराशि। अष्टम भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

नोट–यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार से पहिले अक्षराम्भ और व्रतबन्ध के पश्चात् वेदारम्भ शुभ होता है।

(3) विद्यारम्भ–मुहूर्त्त

वर्णमाला-गणितादि में बालक परिपक्व हो जाने पर भविष्यत् आजीविका-प्रदात्री कोई विशेष या सर्वसामान्य विद्या का शुभारम्भ करना चाहिए।

ग्राह्य मास—फाल्गुन मास को छोड़कर उत्तरायण के मास।

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२

ग्राह्य वार—रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग. आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा. उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८ राशि लग्न। तथा केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह हों।

(4) उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

यह नवम संस्कार यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध, उपनयन, मौञ्जिबन्धन और जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म व्रतबन्ध से संस्कृत होने पर माना गया है। अतः वे '**द्विज**' वा '**द्विजन्मा**' कहलाने के अधिकारी हैं। अतः ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र-सम्मत् काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कब करना चाहिए ? इस संस्कार में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे गए हैं। ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्मदिन से पंचम वर्ष में काम्यकाल या अष्टम वर्ष में नित्यकाल ; क्षत्रिय का षष्ठ या 11वें वर्ष में क्रमशः काम्य व नित्यकाल एवं 8वें या 12वें वर्ष में वैश्य का काम्य व नित्यकाल में उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए।

यदि उपरोक्त वर्षों तक उपनयन संस्कार न हो सके, तो उपरोक्त वर्षों को द्विगुणित कर देने से मध्यमान्तर काल '**गौण-काल**' माना गया है। अर्थात् 8 से 16वें वर्ष तक ब्राह्मण का, 11 से 22 वर्ष तक क्षत्रिय का तथा 12 से 24 वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार मध्यम फलप्रदी होने से अत्यावश्यकता में करणीय हैं।

शुभ ग्राह्य मास—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयनी एकादशी से पूर्वकाल तक), माघ व फाल्गुन मास।

ज्ञातव्य बिन्दु—*(i)* ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य रखना चाहिए। मीनस्थ सूर्य यज्ञोपवीत में शुभ कहा गया है। (निर्णय सिन्धु)

(ii) यज्ञोपवीत संस्कार के लिए वसन्त ऋतु तथा अष्टम वर्ष की उत्कृष्टता इतनी है कि दोनों के संयोग में जन्ममास-तिथि-नक्षत्र भी दूषित नहीं होते।

(iii) यद्यपि जन्ममास यज्ञोपवीत में त्याज्य है, तथापि आवश्यक होने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार दोषपूर्ण नहीं होता। (राजमार्तण्ड)

(iv) अन्य मतानुसार जन्मकालिक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शुभ कार्य करने पर जन्म मास का दोष नहीं रहता। (निर्णय सिन्धुः)

ग्राह्य तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ एवं कृष्ण पक्ष की–१, २, ३, ५ तिथियां शुभ हैं।

ज्ञातव्य बिन्दु—*(i)* चैत्र-वैशाख शुक्ल तृतीया, माघ शुक्ल सप्तमी तथा फाल्गुन शुक्ल तृतीया उपनयन में विशेष रूप से ग्राह्य हैं। (पुरुपार्थ-चिन्तामणि)

(ii) **मन्वादि-युगादि**-*सोपपद तिथियां, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी तथा निरयण सूर्य संक्रान्ति दिन उपनयन संस्कार के लिए त्याज्य हैं। इसी प्रकार पौष, माघ और फाल्गुन की तीनों कृष्णाष्टमी तथा ७, ८, ९ तिथियां '**अष्टका**' संज्ञक त्याज्य हैं।

ग्राह्य वार—रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

वर्णेश, शाखेश बल—विशेष रूप से **ब्राह्मणों** को गुरु व शुक्रवार में, **क्षत्रियों** का रवि, मंगलवार में तथा **वैश्यों** का सोम और बुधवार में उपनयन शुभ हैं, क्योंकि ये ही इनके वर्णेश हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(ii) बुध यदि अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार त्यागें।

(iii) मुहूर्त्त के दिन बालक का चन्द्र ४, ८, या १२वें नहीं होना चाहिए।

शुभ समय—**पूर्वाह्न उत्तम**, मध्याह्न मध्यम और अपराह्न वर्जित कहा गया है।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव, धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र त्याज्य है।

शुभ लग्न—विशेषतया २, ३, ५, ६, ९ राशि लग्न उत्कृष्ट कहे गए हैं, तथापि कोई भी राशि लग्न ग्राह्य हैं, जब ८, १२वां भाव शुद्ध ; ३, ६, ११वें पापग्रह, अन्यत्र (लग्न बिना) सौम्य ग्रह तथा वृष या कर्कस्थ पूर्णचन्द्र लग्न में हो। पुनः गुरु, शुक्र और स्वशाखा, स्ववर्ण का अधिपति ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मूलत्रिकोण या केन्द्र-त्रिकोणस्थ हो, तो वह काल उपनयन में शुभ जानना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र व गुरु बल (त्रिबल)—उपनयन मुहूर्त्त के प्रवरण हेतु संस्कार्य बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु और चन्द्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि चक्र

ग्रह बल	सूर्य बल	चन्द्र बल	गुरु बल
शुभ स्थान	३,६,१०,११	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्य स्थान	१,२,५,७,९	१२	१,३,६,१०
अनिष्ट स्थान	४,८,१२	४,८	४,८,१२

उच्चस्थ, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम या स्वराशि में गुरु हो, तो अनिष्ट गुरु भी ग्राह्य होता है।

रोग-बाण—उपनयन मुहूर्त्त में रोगबाण का भी विचार किया जाता है। (रोगबाण प्रत्येक

*सोपपद तिथियाँ—ज्ये. शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल १०, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२

राशि के 9, 18, और 27वें अंश में स्थित सूर्य का संचारकाल होता है) परन्तु ध्यान रहे, रोगबाण और चौरबाण का विचार रात्रि में किया जाता है। तथा उपनयन का समय तो पूर्वार्द्ध या मध्याह्न तक ही होता है। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है–

लग्ने पूर्णबलोयेते न दोषः पंचकस्य च।। –मुहूर्त्त गणपति

नोट–यदि संस्कार्य बालक की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

(5) केशान्त कर्म मुहूर्त्त

ब्राह्मण को 16वें, क्षत्रियों को 22वें तथा वैश्य को 24वें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए काल-शुद्धि, ग्राह्य-वर्ज्य दोष चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के सदृश ही जानने चाहिएं।

(6) समावर्तन मुहूर्त्त

यह संस्कार आचार्य-गृह (गुरुकुल) में विद्या समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय एक विशेष अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। केशान्त तथा विवाह संस्कार के मध्यवर्त्ती काल में, जब बालक गुरु से अध्ययन करके स्वगृह लौटता है, तब उपाकर्म की तरह ही समावर्तन करना चाहिए। इसे कुछ विद्वान लोग **'मौंजी-मोक्षण'** संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में वर्ज्य-ग्राह्य एवं काल-शुद्धि आदि उपनयन संस्कार की भान्ति रहेगी। समावर्तन संस्कार के उपरान्त ही ब्रह्मचारी विद्याव्रत स्नातक कहलाता है।

विवाह संस्कार

विवाह गृहस्थाश्रम का सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं– (1) अनर्गल प्रवृत्ति का निरोध, (2) पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा एवं (3) भगवत्प्रेम का अभ्यास। ऋषि-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण–इन तीन ऋणों का शोधन कर अपना चित्त मोक्ष में लगाना चाहिए। तीन ऋणों से बिना छुटकारा पाये मुक्ति मार्ग का आश्रय लेने से मानव का पतन हो जाता है। अतएव स्वाध्याय द्वारा ऋषि-ऋण, यज्ञ-साधन द्वारा देव-ऋण और पुत्रोत्पत्ति द्वारा पितृ-ऋण से सद्गृहस्थ मुक्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के समस्त ऋण ज्ञानयज्ञ में लय हो जाते हैं।

गृहस्थ बनने के लिए मन के अनुरुपा, भिन्नगोत्रीया, अपने से अल्पवयस्का एवं अनन्यपूर्विका (पहिले किसी के साथ अविवाहिता) कन्या का पाणिग्रहण करें।

(7) वर–वरण (सगाई) मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे-सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबुत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्ठान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह-पद्धति'** का अवलोकन करें।)

ग्राह्य मास–पौष एवं चैत्र मास (धनु एवं मीनस्थ सूर्यकालीन) को छोड़कर शेष मास।

शुभ–ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा तिथि।

ग्राह्य वार–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–कृति., रोहि., मृग, तीनों पूर्वा, हस्त, श्रवण, चित्रा।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, परन्तु केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11वें भावों में क्रूर ग्रह हों।

(8) कन्या–वरण मुहूर्त्त

वर-वरण की भान्ति ही वर के माता-पिता अथवा रक्त-सम्बन्धी कन्या के वरण के लिए कन्या के घर में जाकर शास्त्र-प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें।

शुभ मास–धनुस्थ एवं मीनस्थ (पौष एवं चैत्र मास) सूर्य को छोड़कर शेष मास।

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २ ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र–मघा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा तथा विवाह-मुहूर्त्त वाले सभी नक्षत्र।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, तथा केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) हों।

(9) विवाहांग कृत्यारम्भ मुहूर्त्त

विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण कृत्य जैसे–दलन, कण्डन, अनाज-शोधन, पिष्टीकरण, घर को लीपना (पेंट), सजाना, चित्रकारी करना, स्तम्भारोपण, अंकुरार्पण, गणेशादि पूजन, वस्त्रालंकार संग्रह, भूषण-कंकणादि धारण, कलश-स्थापन, मंगल-स्नान तथा नान्दीश्राद्धादि विवाहांग कृत्यों को विवाह दिन से पूववर्ती ३, ६, ९वें दिनों को छोड़कर करना चाहिए। इन्हें विवाह-मुहूर्त्तोक्त नक्षत्रों तथा सामान्य पंचांग शुद्धि में २, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२ दिन पूर्व करें।

वेदिका निर्माण और स्तम्भारोपण

विवाह में वेदी-रचना (मण्डप) भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्राह्मणों के लिए विवाह के लिए (कन्या) के 4 हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी, एक हाथ ऊँची और पूर्व की ओर क्रमशः ढालु होती हुई वेदी बनानी चाहिए। समस्त वर्णों के लिए कन्या-घर के बायीं ओर वेदी का निर्माण करना चाहिए। अर्थात् घर के बाहर घर की ओर मुँह करके खड़े व्यक्ति के दायीं ओर बनाई जाए। इस मण्डपवेदी को चारों ओर चार मण्डप-स्तम्भों से आवृत्त किया जाता है। मण्डप निर्माणान्तर्गत प्रथण स्तम्भ के आरोपणार्थ दिशा ज्ञान के हेतु सूर्य राशि संचार के अनुसार निम्न चक्र द्रष्टव्य है–

दिशा	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य
सूर्य राशि	५,६,७	२,३,४	११,१२,१	८,९,१०

अर्थात् सूर्य के सिंह, कन्या, तुला राशि संचार कालीन (भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मास) स्तम्भ ईशान कोण में सर्वप्रथम गाड़ा जाना चाहिए।

विशेष—मण्डप निर्माणारम्भ में **'विवाहांग कृत्यारम्भ'** में कहे हुए तत्त्वों का विचार तथा मंगलवार व पंचक-नक्षत्रों का परित्याग करना चाहिए।

विवाह कार्य पूर्ण हो जाने के अनन्तर पूर्वनिर्मित मण्डपादि तथा पूर्वामन्त्रित गणेशषोडश-मातृकादि का विसर्जन २, ४, ५, ७वें दिन करना शुभावह माना गया है।

ध्यान रहे—नान्दीमुख श्राद्ध से मण्डपोद्वासन पर्यन्त पिता, भाई तथा सभी सगोत्र/सपिण्ड बान्धवों को दर्श श्राद्ध, क्षयश्राद्ध, ठण्डे पानी से स्नान, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, अध्ययन, नदी व सीमा का लांघना, उपवास, व्रत और श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए।

(10) तैलादि–लापन (चढ़ाने) का मुहूर्त्त

वर-कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना (उबटन) हो, उसका चन्द्र-बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन के पूर्व (पहिले) करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से 5 दिन पूर्व तैलाभ्यंग करना चाहिए। इसमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैलसंख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

(11) विवाह–मुहूर्त्त

विवाह-मुहूर्त्त निर्णय में सामान्य वर्ज्य दोषों के अतिरिक्त लतादि दस दोषों का विवरण तथा लग्न शुद्धि एवं अन्य घटक तत्त्व इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्तों के अनन्तर पृष्ठों पर प्रतिवर्ष दिया रहता है। मुख्य ग्राह्य मासादि का विवरण पुनः लिख रहे हैं–

ग्राह्य मास—विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मास ग्रहण किए हैं। परन्तु अनेक विद्वानों एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा अनुसार लोकाचार से श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास भी ग्रहणीय हैं। इसीदिन (भद्रदेश) पंजाब (हि.प्र., हरियाणा, जम्मू सहित) में अति प्राचीन काल से श्रा., भाद्र., आश्वि महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। पर्वतीयों प्रदेशों (हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में कार्तिक मास में भी विवाह होते हैं।

ग्राह्य तिथि—कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में।

ग्राह्य वार—सभी वार ग्रहणीय है। परन्तु रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र विशेष शुभ तथा मंगल-शनिवार मध्यम कहे गए हैं।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

अश्वि., चित्रा, श्रव. व धनिष्ठा—ये चार विवाह नक्षत्र कात्यायन गृहसूत्रोक्त त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु प्रमाणानुसार ग्रहण किए गए हैं। गृहसूत्र के अतिरिक्त 'धर्मसिन्धु', 'ज्योतिर्विदाभरणम्' तथा 'सत्यकृत्य मुक्तावली' ग्रन्थ में भी ये चारों नक्षत्र विवाह हेतु ग्राह्य माने गए हैं।

विवाह में लग्न शुद्धि एवं विशेष विषयों पर विचार—विवाह में त्रिविक्रमसंहिता अनुसार शुद्ध काल, लग्न-शुद्धि, लग्न-बल, वर-कन्या के सम-विषम वर्षों का विचार, भद्रादि दोष, गोधूली लग्न सम्बन्धी सभी विषयों का निर्णयप्रकार सप्रपञ्च इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्त वाले पृष्ठों के बाद स्थायी स्तम्भों में देखें।

(12) नववधू प्रवेश–(वध्वागमन) मुहूर्त्त

विवाह दिन से 16 दिनों के मध्यान्तर में सम दिनों में एवं 5, 7, 9वें विषम दिनों एवं स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता। यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न हो सके तो विषम दिनों (तिथियों) में, विषम मासों में और विषम वर्षों में होना चाहिए। परन्तु यदि किसी कारण अथवा दैवगत व्यवधान के कारण पाँच वर्ष तक भी नववधू प्रवेश न हो सके तो फिर किसी भी अन्य शुभ मुहूर्त्त में प्रवेश करना चाहिए। 16 दिन के पश्चात् ही निम्न तिथ्यादि तत्त्व विचारणीय होंगे–

ग्राह्य तिथि—कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथियाँ तथा ४, ९, १४ तिथियाँ त्यागकर सभी तिथियां।

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उत्तरा-तीनों, श्रव., धनि. तथा रेवती।

शुभ लग्न—५, ८, ११ लग्न विशेष शुभ हैं। परन्तु अन्य लग्नों में भी (४, ८ भाव शुद्ध होने पर) वधू प्रवेश रात्रि के समय किया जा सकता है।

नववधू प्रवेश के समय भद्रा, व्यतिपातादि अशुभ दोषों का विचार तो करना ही चाहिए।

विवाह के बाद प्रथम वर्ष में कन्या वास-चिन्तन

विवाह के पश्चात् नव-परिणीता स्त्री प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर निवास करे, तो पति के ज्येष्ठ (जेठ) को, प्रथम अधिक मास में पति को, क्षय मास में स्वयं का, प्रथम आषाढ़ (मासान्तर श्रावण) में सास को एवं पौष में श्वसुर को अशुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम चैत्र मास में मायके (पितृ-गृह) में रहने से पिता को अशुभ फल प्राप्त होता है।

(13) द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू का वधू-प्रवेश के अनन्तर पिता के गृह में लौटकर पुनः भर्तृगृह गमन (ससुराल) **'द्विरागमन'** कहलाता है। अतः इसे **'पुनर्वधूप्रवेश'** भी कहा जा सकता है।

द्विरागमन काल—यदि द्विरागमन विवाह दिन से 16 दिन के मध्यान्तर में किया जाए तो विषम या सम दिनों में सूर्य-चन्द्र बल, गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एकराशिगत सूर्य-

चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद हो, तो द्विरागमन में ये घटक त्याज्य रहेंगे। विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचम-सप्तमादि विषम वर्षों में वर (पुरुष) के सूर्य एवं गुरु तथा दोनों (वर-वधू) के चन्द्रमा बलवान् होने पर पत्नी का द्विरागमन शुभ होता है।

ग्राह्य मास—मेष, वृश्चिक तथा कुम्भस्थ कालीन सूर्य अर्थात् वैशाख, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन सौर मासों में।

ग्राह्य शुभ तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, १२ लग्न विशेष शुभ हैं तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टियां हों। लग्न से ३, ६, १०, ११वें गुरु तथा केन्द्र भावों में शुक्र विशेष शुभप्रद होगा।

शुक्र-विचार—शुक्र की शुद्धि द्विरागमन में अत्यावश्यक है। शुक्र जिस दिशा में उदित हुआ हो, उसी दिशा से शुक्रवास का विचार करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—जैसे यदि शुक्र पूर्व दिशा से उदय हुआ हो [जब शुक्र, सूर्य से पीछे (कम) रहता है, तो प्रातःकाल पूर्व में उदित रहता है।]—उस समय पूर्व-उत्तर (आग्नेय-ईशान) की यात्रा में शुक्र सम्मुख-दक्षिण होने से अशुभ होगा। परन्तु पश्चिम-दक्षिण (नैर्ऋत्य-वायव्य) की यात्रा में शुक्र पृष्ठ-वाम (बाएं) होने से शुभ है। इसी प्रकार शुक्र जब सूर्य से आगे (अधिक) रहता है, तो सन्ध्या में पश्चिम में उदित रहता है, उस समय पश्चिम (वायव्य) की यात्रा में शुक्र सम्मुख (सामने) तथा दक्षिण की यात्रा में दक्षिण (दाहिना) होता है। अतः पूर्व (आग्नेय) तथा उत्तर (ईशान) की यात्रा में पृष्ठ एवं वाम (बाएं) शुक्र होते हैं। **सम्मुख** एवं **दक्षिण** शुक्र में बालक, गर्भिणी तथा नवोढ़ा के लिए यात्रा अशुभ कही गई है।

यह शुक्र का विचार तृतीयादि विषम वर्ष के द्विरागमन, नवविवाहिता तथा गर्भिणी की यात्रा में करना आवश्यक है।

सम्मुख-शुक्र का परिहार—एक ही नगर/ग्राम में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात) आदि के उपद्रव में, विवाह सम्बन्धी यात्रा में, देव-तीर्थ यात्रादि में, राज-पीड़ित होकर और विवाह के बाद एक वर्ष के भीतर स्त्री पिता के घर से पतिगृह की यात्रा करें तो सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होगा। अपि च, जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिर तक हो, तो भी सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। क्योंकि इस अवधि में शुक्र अन्धा हो जाता है। इसीप्रकार पति द्वारा पत्नी के ले जाने पर (अर्थात् यदि पति साथ हो) तो तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भारद्वाज-इन 7 मुनियों के वंश (गोत्र) में भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता है।

(14) प्रथम स्त्री-समागम मुहूर्त्त

रजोदर्शन उपरान्त 16 रात्रि पर्यन्त, प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर शेष 12 रात्रियों में स्त्री संगम (समागम) करें। पुरुष अपने चन्द्र बल में प्रसन्नचित्त होकर नवांगना से प्रथम-समागम करे। विषम रात्रि में संभोग से गर्भ होने पर कन्या, समरात्रियों में पुत्र का जन्म होता है।

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार

ग्राह्य नक्षत्र—रोहि., मृग., उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव., धनि और शतभिषा

शुभ लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११ राशि लग्न

(15) नववधू द्वारा प्रथम पाककर्म मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू को ससुराल में सर्वप्रथम रसोई बनवाना शुरु करने हेतु विचारणीय शुभ काल–

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १० तथा शुक्ल पक्ष की १३ व पूर्णिमा

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—कृति., रोहि., मृग, पुन., उत्तरा-तीनों, विशा., ज्ये., श्रव., धनि., शत. एवं रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११ राशि लग्न। जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहाभाव, सप्तम में बलयुत सौम्य ग्रह तथा अष्टम भाव भी शुद्ध हो।

(16) वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गड्ढा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसी गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गड्ढा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ

जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

(17) गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त

विभिन्न सूर्य संक्रान्तियों में राहु-मुख से पृष्ठवर्तिनी दिशा में घर की नींव खोदना शुभता का द्योतक होता है। भूखण्ड में सूर्य की राशि के अनुसार सर्पाकार राहु का मुख, उदर एवं पुच्छ परिवर्तित होती रहती है। इसीलिए उस दिशा में खुदाई प्रारम्भ करनी चाहिए। जहाँ राहु का कोई अंश (अवयव) न हो–

(1) सूर्य, वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) कोण से करें।

(2) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या कार्तिक) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **आग्नेय कोण** (पूर्व-दक्षिण) में करें।

(3) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **ईशान कोण** (उत्तर-पूर्व) में करें।

(4) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ **वायव्य कोण** (उत्तर-पश्चिम) से करें।

ध्यान दें, नींव की खुदाई में सुप्त-भूमि (भू-शयन) का विचार करना भी आवश्यक है।

सुप्तभूमि (भू-शयन)–(*i*) **प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१ एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है,** अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, गृह-निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

(*ii*) एक अन्य मतानुसार, सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें चन्द्र नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है। (**पंचांगदिवाकर में दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में इन दोनों मतों का अनुसरण होता है।**) (**भू-रजस्वला**–सूर्य-संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें–परन्तु अधिकतर पंचांगकार एवं विद्वान इस मत को मान्यता नहीं देते।)

ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग., माघ तथा फाल्गुन श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं।

द्वार-मुख के अनुसार मास ग्रहण–जब सूर्य मेष-वृष-वृश्चिक-तुला राशि में हो, तो दक्षिण या उत्तर मुख का और जब सूर्य कर्क-सिंह-मकर-कुम्भ राशि में हो, तो पूर्व या पश्चिम मुख का गृह बनाना चाहिए।

पूर्व-पश्चिमाभिमुख गृह	उत्तरदक्षिणाभिमुख गृह
सौर श्रावण, भाद्रपद, माघ तथा फाल्गुन मास	सौर वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास

ग्राह्य तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र–अश्विनी, रोहि., मृग., पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा-तीनों, अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती।

शुभ लग्न–स्थिर या द्विस्वभाव लग्न शुभ होंगे (२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२)। लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, पापग्रह ३, ६, ११ में हों तथा शुभ ग्रह ८, १२वें भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में हों, दशम भाव में सबल सौम्य ग्रह तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें न हों।

अग्निबाण–'गृहगोपेऽग्निपंचकम्' अनुसार गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के अनुसार लकड़ी आदि की छत डालते समय, इलैक्ट्रिक वायरिंग प्रारम्भ करते हुए तथा स्तम्भ आरोहणादि काल में ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है।

वृषवास्तु चक्र

बैल के अंग	शिर	आगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूंछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्र्य	सदा पीड़ा व कष्ट

गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण–जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः–गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

ध्यान रहे, भूखनन के बाद भूमि-पूजन एवं वास्तु-पूजा करनी *आवश्यक है।*

शिलान्यास मुहूर्त्त–*गृहारम्भ की शुभ बेला में खनित नींव को गृहारम्भ के लिए निर्दिष्ट*

समय-शुद्धि का विचार करके विधिवत् पत्थरों, शिलाओं, ईंटों से पूरित कर देना चाहिए। वृहत्संहिता अनुसार पहिले से खोदी हुई नींव में पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य में अर्थात् अग्निकोण में पूजा करके प्रथम शिला स्थापित करके प्रदक्षिणा के क्रम से अर्थात् अग्नि के बाद दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) तथा वायव्यादि(उत्तर) दिशाओं में स्थापित करना चाहिए एवं खम्भ को भी इसी रीति से बनवाना चाहिए।

■■■■■नींव में रखने योग्य सामग्री■■■■■

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें। ➧ ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत, 1 नारियल।
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

(18) द्वार–शाखा स्थापन मुहूर्त्त

उचित दिशा में प्रमुख द्वार का निर्माण व उसमें चौखट लगवाने में उपयुक्त काल शुद्धि-

तिथि–५, ७, ८, ९ [पंचमी धनदा चैव, मुनिनन्दवसौ शुभम्।।–ज्योतिर्निबन्ध]

ग्राहय वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र

ग्राहय नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वा., श्रव. और रेवती।

सूर्यभात् द्वार-देहली चक्र

सूर्यभात् नक्षत्र	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मी प्राप्ति	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्युतुल्य कष्ट	सौख्य
वास	शिर	चतुष्कोण	चतु: शाखा	देहली	मध्य

(19) जलाशय (कुआँ), देवालय खनन मुहूर्त्त

सामान्य रूप से कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि समस्त जलस्थानों का शुभारम्भ निम्न मुहूर्त्त में शास्त्र-सम्मत होगा-

ग्राहय मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क), माघ तथा फाल्गुन।

ग्राहय तिथि–शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३

ग्राहय वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

ग्राहय नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती।

लग्न-शुद्धि–२, ४, ७, ९, १०, ११, १२ आदि राशि लग्न तथा शुभ ग्रहों के नवांश। केन्द्र में शुभ ग्रह हों।

विशेष–गुरु-शुक्रास्त, गुर्वादित्य, दक्षिणायन, भद्रा, कुयोगादि त्याज्य।

(20) राहु मुख ज्ञान चक्रम्

सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियों में संचार-कालीन देवालय-प्रारम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशय (कुआँ, नल, तालाबादि) के लिए भू-खननोपयोगी दिशा ज्ञान चक्र है। तीन-तीन राशि की स्थिति में ऊपर के क्रम से राहु के मुख की दिशा लिखी है, उसकी विपरीत (पृष्ठ) दिशा में खात करना शुभ होगा।

सूर्यराशिवशात् खात चक्रम

राहुमुखम्	ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नये
देवालयारम्भे सूर्य	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिंह, कन्या, तुला,	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशा (खुदाई) शुभ➔	आग्नेये (पूर्व-दक्षिण)	ईशाने (उत्तर-पूर्व)	वायव्ये (उत्तर-पश्चिम)	नैऋत्ये (दक्षिण-पश्चिम)

सूर्यभात् कूप-नल (जल चक्र)

नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्य	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
प्राप्यजल	स्वादु	खण्डित	स्वादु	अभाव	स्वादु	क्षार	मिश्रित	मधुर	क्षार

(21) अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से 6 नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। आगामी 4 नक्षत्र मस्तक के मृत्युपद। आगामी 8 नक्षत्र बाहु के सुन्दर-सुख एवं भोगदायक। 5 गर्भ के नाशक। 2 भुज के भोगदायक तथा अन्तिम 2 नक्षत्र चरण के नाशक माने गए हैं। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य द्वारा लिखा गया है। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में ही चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

(22) नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

***ग्राह्य मास*—**निरयण उत्तरायणकाल अर्थात् वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (लगभग 15 जुलाई तक की कालावधि), माघ तथा फाल्गुन मास। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।

***ग्राह्य वार*—**चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

***ग्राह्य शुभ तिथियां*—**रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) तथा अमावस को छोड़कर शेष प्राय: सभी तिथियां।

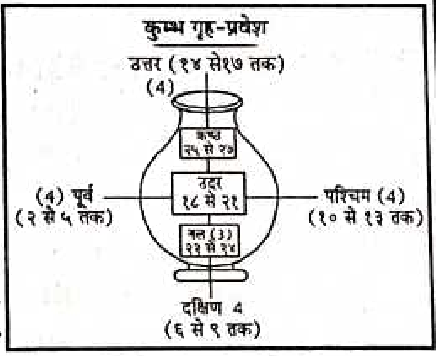
प्रकारान्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह-प्रवेशोपयोगी तिथियां–

द्वार दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
शुभ तिथियां	५,१०,१५	२,७,१२	३,८,१३	१,६,११

***ग्राह्य नक्षत्र*—**अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–



गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र	अग्नि से भय होता है।
2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	उजाड़ होने का भय होता है।
3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	धन लाभ होता है।
4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	धन-वैभव प्राप्त होता है।
5. उत्तर के चार नक्षत्रों में	कलह-क्लेश रहता है।
6. उदर के चार नक्षत्रों में	विनाश का भय रहता है।
7. तल के तीन नक्षत्रों में	स्थिरता (स्थायी वास)।
8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	गृहस्वामी की चिरायु हो।

***शुभ लग्न*—*विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म-लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह-प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह-प्रवेश करना शुभ होता है।**

***वामस्थ रवि विचार*—**गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुख: वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है।

वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

द्वार दिशा	गृह-प्रवेश लग्न से	आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य
पूर्वाभिमुख गृह	अष्टम स्थान से	सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव
दक्षिणाभिमुख गृह	पंचम स्थान से	सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव
पश्चिमाभिमुख गृह	दूसरे स्थान (भाव) से	सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव
उत्तराभिमुख गृह	11वें स्थान (भाव) से	सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव

***स्पष्टीकरण*—**जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह-प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष, वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अत: चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त्त-लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

(23) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु-शुक्रास्त काल, अधिक-क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं।** परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष, तिथि-क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश-पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु-शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

(24) विपणि मुहूर्त्त

(अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त)

***शुभ एवं ग्राह्य मास*—**वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ*—**रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र*—**अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार*—**रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न*—*कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र,**

बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। नोट–क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

(25) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

(26) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***–चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्रवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

(27) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***–यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***–द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

(28) सर्ववस्तु क्रय–विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता। ***वस्तु खरीदने के नक्षत्र***–रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है। ***वस्तु बेचने के नक्षत्र***–तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र। लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

(29) आप्रेशन कराने का मूहूर्त

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)।

ग्राह्य वार–रवि, मंगल, गुरु और शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

(30) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

(31) भूमि–खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***–१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***–मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***–मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

(32) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

(33) ऋण–दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है-

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***–१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**–बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

(34) ऋण–ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***–सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***–१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**–मंगलवार को कर्ज़ के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज़) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, "**ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे**"–मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

(35) क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

(36) तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तैल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता-(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह मुहूर्तों के साधन में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पंचबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि-इन दश दोषों का विचार करके निर्णय लेना आवश्यक है। पंचांगदिवाकर या किसी अन्य पंचांग में भी इन दस दोषों का विचार करके ही विवाह मुहूर्त्त दिए जाते हैं। इन दस महादोषों में से वेध, मृत्युबाण तथा क्रान्तिसाम्य-ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं-शेष सात दोषों में से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह मुहूर्त्त में उपरोक्त दस दोषों में से क्रमशः जो दोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो दोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है। जैसा कि पंचांगदिवाकर के विवाह मुहूर्तों में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस पंचांग या अन्य किसी भी पंचांग में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सके तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त्त शोधन में सुयोग्य बन जाएं। इसलिए प्रत्येक महादोष का विचार व चक्र दिया जा रहा है-

(1) लत्तादोष-चक्र

विवाह नक्षत्र / ग्रह	अश्वि.	रोहि	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु	मूल	उ.षा.	श्रवण	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वा.	विशा.
मंग.	उ.भा.	भरणी	कृति.	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुर्न	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेवती	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरू	धनि.	उ.भा.	रेवती	मृग.	पुर्न.	पुष्य	आश्ले	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	श्रव.
शुक्र	मृग.	पुष्य	अश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत	पू.भा.	कृति.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोह.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न	अश्ले	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	मूल

(*i*) **लत्तादोष**–ऊपर की प्रथम पंक्ति में लिखे गए विवाह-नक्षत्रों के नीचे जिस ग्रह का नक्षत्र आ जाए, तो उस ग्रह से सम्बन्धित लत्तादोष होगा। मान लीजिए आपने रोहिणी नक्षत्र के विवाह हेतु लत्तादोष देखना हो तो साथ दिए गए चक्र (तालिका) में सूर्य यदि पू.षा. में हो अथवा गुरु उ.भा. नक्षत्र में हो या राहु (या केतु) धनिष्ठा नक्षत्र में हों, तो उन्हीं ग्रहों का लत्तादोष माना जाएगा।

(2) पातदोष चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
–सूर्य नक्षत्र–	रेव.	आर्द्रा	मृग	अश्वि	कृति	भर.	रोहि	कृति.	अश्वि	रोह.	भर.	अश्वि	रेव.	भर.	अश्वि.
	श्ले.	पुर्न	आर्द्रा	मृग	आर्द्रा	मृग.	श्ले.	पुष्य	आर्द्रा	श्ले.	पुर्न.	आर्द्रा	मृग	पू.फा.	मघा
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्र	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा	स्वा.	धनि	श्रव.	पू.षा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वा.	विशा.	स्वा.
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

(*ii*) **पातदोष**–विवाह नक्षत्रों के नीचे विवाह-काल में सूर्य निम्न नक्षत्रों पर हो, तो पातदोष होता है। **उदाहरण**–विवाह-नक्षत्र यदि श्रवण हो, तो सूर्य-अश्वि, आर्द्रा, स्वा., विशाखा, पू.षा. एवं धनि. आदि नक्षत्र में हो, तो पातदोष होगा। **विशेष**–हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस विवाह नक्षत्र में हो, वह भी पात-दूषित हो जाता है। विवाह नक्षत्र में शूल योग हो या उसका अन्त हो, तो **'भुजंग'** नामक पातदोष होता है, जोकि सर्वत्र त्याज्य माना जाता है। **नोट**–वैधृति-व्यतिपात की सम्पूर्ण घड़ियां, शूल-योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड की प्रथम 6 घड़ियां विशेषतः त्याज्य हैं। हर्षण, साध्य को पूज्य माना गया है।

(3) युति दोष–जिस नक्षत्र का विवाह निकाल रहे हों, यदि उसी नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष माना जाता है। 'श्रीपति' अनुसार पापग्रहों की युति विशेषतया त्याज्य मानी जाती है। जबकि शुभ ग्रह की युति शुभ मानी जाती है। परन्तु चन्द्रमा यदि अपनी (स्व) राशि, उच्च या मित्रग्रह की राशि में हों, तो युति दोष नही होता, अपितु वर-वधू का कल्याण करने वाला होता है। यथा-चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह, कन्या राशि में हो, तो क्रूर ग्रह की युति का परिहार माना जाता है।

(4) वेध दोष–पंचशलाका चक्र अनुसार विवाह नक्षत्र यदि किसी अन्य क्रूर आदि ग्रह से विद्ध हो जाएं, तो उस नक्षत्र का विवाह सर्वथा त्याज्य माना जाता है। वेध नक्षत्र ज्ञान के लिए पंचशलाका एवं सप्त-शलाका चक्रों का आश्रय लिया जाता है। वधू-प्रवेश, दान, वर-कन्या का वरण एवं

(4) वेध दोष चक्र–पञ्चशलाका वेध

वेधक नक्षत्र	अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
वेध्य नक्षत्र	पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुर्न	मृग.	मघा	आश्ले	हस्त	उ.फा.

विवाहादि शुभ कार्यों में 'पंचशलाका' चक्र का तथा अन्य मंगल कार्यों में सप्तशलाका चक्र के द्वारा विचार करना चाहिए। विवाह पटल अनुसार सूर्यवेध से वैधव्य, भौमवेध से पुत्रशोक बुधवेध से वन्ध्या योग, गुरुवेध से प्रव्रज्या, शुक्रवेध से केवल कन्या सन्तति तथा शनि, राहु-केतु वेध से दारिद्रय योग होता है।

ज्योतिर्निबन्धानुसार सौम्य ग्रह से विद्ध नक्षत्र का चरण ही त्याज्य होता है, परन्तु क्रूर ग्रह से कोई भी चरण विद्ध होने पर पूर्ण नक्षत्र त्याज्य माना जाता है। यथा-बुध, गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रह का केवल चरण वेध (प्रथम-चतुर्थ, द्वितीय-तृतीय) का विचार करें। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रहों के सभी चरण त्याज्य होंगे। अर्थात् वेधदोष होगा।

(5) यामित्रदोष–

विवाह नक्षत्र के नीचे वाले नक्षत्रों पर स्थित कोई भी ग्रह उस नक्षत्र में होने पर यामित्रदोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के कोष्ठक में उससे 14वाँ नक्षत्र है, जिस पर कोई भी ग्रह होने पर वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को यामित्र-दोष से दूषित करेगा। पापी या क्रूर ग्रह का यामित्र दोष पूज्य होता है। **नोट**–(*i*) यामित्रदोष वाले ग्रह को शुभ ग्रह देखते हों, तो यह दोष नहीं रहता। (*ii*) सप्तम भाव में चंद्र-गुरु स्वगृही, उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री हो तो यामित्रदोष नहीं रहता।

(5) यामित्र दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	हस्त

(6) बाणदोष–

रोगादि पाँच बाणों का सम्बन्ध सूर्य के विशेष अंशों से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गए हैं, क्योंकि पंचांग में दैनिक सूर्यस्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला-विकला दी जाती है। अतः आप सरलतापूर्वक दैनिक सूर्य-गति निकालकर सूर्यस्पष्ट के समय में (1° अंश की) जमा-घटा देने से बाणारम्भ-काल तथा समाप्तिकाल जान सकते हैं। यों तो पाँच-बाणों के विशेष समय व वारानुसार त्याज्य माने गए हैं। परन्तु मुहूर्त-शोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्ज्य करने की परम्परा है। अपि च, प्रचलित परम्परानुसार पंचांगदिवाकर में केवल 1° से 1°-30' अर्थात् 30' कला तक ही अशुभ प्रभाव को समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त-लग्न लगाए जाते हैं।

(6) बाणदोष चक्र

नाम बाण	सूर्य के गतांश	वर्ज्य कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	8°-17°-26°	उपनयन	रविवार	रात्रि
अग्नि	2°-11°-20°-29°	गृहारम्भ	मंगलवार	सदैव
नृप	4°-13°-22°	राजसेवा	शनिवार	दिवाकाल
चोर	6°-15°-24°	यात्रा	मंगलवार	रात्रि
मृत्यु	1°-10°-19°-28°	विवाह	बुधवार	संध्या

(7) एकार्गल दोष–विवाह नक्षत्र के समय यदि सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र साभिजित गिनने पर विषम हो, तो एकार्गल दोष होता है, परन्तु उस समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड-इन अशुभ योगों की विद्यमानता अनिवार्य है। अतः चक्र में प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचे वाले कोष्ठकों में दिया गया है। जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस कोष्ठक का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। यह कश्मीर में विशेषतः वर्जित है। **परिहार**–ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त-गणपति अनुसार अशुभ योगों में कुछ विशेष घड़ियां ही विशेष रूप से त्याज्य मानी गई हैं–विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात और वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटि) भाग, शूल योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड की प्रथम 6 घड़ियां, वैधृति-व्यतीपात योग सम्पूर्णतया त्याज्य होंगे।

विवाह नक्षत्र→	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
—सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र—	अश्वि	पू.भा.	शत	पू.षा.	ज्ये.	अनु	विशा	स्वा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	मृग.	धनि.	कृति	भर.
	कृति	रेव	उ.भा.	अभि	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु	स्वा	हस्त	पू.फा.	पुर्न	पू.भा.	मृग	रोहि
	मृग	भर	अश्वि	धनि.	अभि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु	स्वा.	हस्त	श्ले.	रेव	पुर्न	आर्द्रा
	पुर्न	रोह.	कृति	पू.भा.	धनि	श्रवण	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु	स्वा	पू.फा.	भर	अश्ले	पुष्य
	अश्ले	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि	श्रव	उ.षा.	मूल	अनु	हस्त	रोहि	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुर्न	भर.	रेव	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव	उ.षा.	मूल	स्वा	आर्द्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	अश्ले	रोहि.	भर.	अश्वि	रेव	उ.भा.	शत	श्रव.	उ.षा.	अनु.	पुष्य	स्वा.	चित्रा
	स्वा.	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृति	भर.	अश्वि	उ.भा.	शत	श्रव.	मूल	मघा	अनु.	विशा.
	अनु.	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृति.	अश्वि	उ.भा.	शत	उ.षा.	उ.फा.	मूल	ज्ये.
	मूल	विशा	स्वा.	मघा	पुष्य	पुर्न	आर्द्रा	मृग.	कृति	अश्वि	उ.भा.	श्रव	चित्रा	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्ये.	अनु.	उ.फा.	मघा	अश्ले	पुष्य	पुर्न	मृग.	कृति	अश्वि	शत	विशा	श्रव	अभि.
	श्रव.	पू.षा.	मूला	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	मघा	अश्ले	पुर्न	मृग	कृति	उ.भा.	ज्ये.	शत.	धनि
	शत	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	मृग	अश्वि	पू.षा.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	कृति	अभि	अश्वि	रेव.

(8) उपग्रह दोष–विवाह-नक्षत्र के समय सूर्य जिस नक्षत्र में हो, तो उसे 5वें, 7वें, 8वें, 10वें, 14वें, 15वें, 18वें, 19वें, 21वें, 22वें, 23वें, 24वें, 25वें नक्षत्र पर यदि वहीं विवाह-नक्षत्र हो, तो उपग्रह दोष होता है। **उदाहरणार्थ**–यदि अश्विनी नक्षत्र हो, तो सूर्य यदि शत., श्रव., उ.षा. आदि नक्षत्रों में होगा तो उपग्रह दोष होगा। यह दोष कुरु देश (दिल्ली के समीप) और वाह्लिक (कश्मीर के पश्चिम) क्षेत्रों में विशेषतः अशुभ होता है। अन्यत्र नहीं।

—सूर्य नक्षत्र—

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
—सूर्य नक्षत्र—	शत.	रेव.	अश्वि	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	श्रव.	धनि.
	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	पू.फा.	हस्त	स्वा.	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
	उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृति	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
	मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्ये.
	स्वा.	ज्ये.	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	अश्वि.	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग.	पुष्य	आश्ले
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि	भर.	कृति	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पूभा.	रेव	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	आश्ले	मघा	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पूभा	उ.भा.	रेव.	कृति	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा.	विशा	अनु.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृति.

(9) स्थूल क्रान्तिसाम्य दोषः—

सूर्य	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

चक्र के ऊपरी बॉक्स में क्रमशः द्वादश राशियां सूर्य की दी गई हैं। उनमें से जिस राशि पर सूर्य हो उस बॉक्स की नीचे वाली राशि पर चन्द्रमा के होने से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। क्रान्तिसाम्य सर्वत्र त्याज्य है। परन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। महापात गणित द्वारा प्रणीत क्रान्तिसाम्य दोष ही विवाह–मुहूर्त्त शोधन में वर्जित होता है।

(10) दग्धातिथि दोष चक्र—

सूर्य राशि	मेष (वेशा.)	वृष (ज्ये.)	मिथुन (आषा.)	कर्क (श्राव.)	सिंह (भाद्र.)	कन्या (आश्वि.)	तुला (कार्ति.)	वृश्चि. (मार्ग.)	धनु (पौष)	मकर (माघ)	कुम्भ (फाल्गु.)	मीन चैत्र)
दग्धा तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

जब सूर्य मेष (वैशाख), वृष (ज्येष्ठ), मिथुन (आषाढ़) आदि में हो तब क्रमशः ६, ४, ८ आदि तिथियां दग्धा तिथियां कहलाती हैं। **अपवाद**—मास में दग्धा तिथियां केवल मध्य देश में ही वर्जित होती हैं। सर्वत्र नहीं।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः **मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें।** नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंग. राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५°	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	मुख	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	तिर्य	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्पद	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अधो	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	ऊर्ध्व	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	तिर्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	ऊर्ध्व	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	तीर्य	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	ऊर्ध्व	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	अधो	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अधो	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	व.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	ऊर्ध्व	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	तिर्य	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	तिर्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्वकर्मा	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	तिर्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	अधो	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	तिर्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	तिर्य	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अधो	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ श.३	मनुष्य	अन्त्य	ऊर्ध्व	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वेदेव	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	००	पृथ्वी	क्षिप्र	ब्रह्मा	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	ऊर्ध्व	पृथ्वी	चर	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	ऊर्ध्व	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	ऊर्ध्व	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	अधो	वा.३ ज.१	उग्र	अजैकपाद	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	ऊर्ध्व	जल	ध्रुव	अहिर्बुध्न्य	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	तिर्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु.
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	२	३	४	५	६	१	३	५	७	९	११
८	७	१०	९	१२	११	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नवपंचम दोष—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ 215

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक** दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।

–मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद–(1) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(2) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह अन्येऽपि–

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(3) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशिस्थ मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष क्षीण हो जाता है। यथोक्तम्–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **–मुहूर्त्त पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते"** **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(4) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष क्षीण हो जाता है–

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(5) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(6) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोषकारक एवं अनिष्टकारक नहीं होता–

"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥" **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(7) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **–मु. चिंतामणि**

(8) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, 27 गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार–

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले–") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे-विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। **केवल १, ४, ७, ८** आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। **यथा–**

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ **–मु. संग्रह दर्पण**

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। **जैसे–**चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के माध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(1) वर्णकूट विचार—समाज में प्रचलित वर्णों की भान्ति राशियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण होते हैं। ४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण ; १, ५, ९ का क्षत्रिय ; २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ष कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय अथवा समान होने पर एक गुण प्राप्त होता है, अन्यथा शून्य प्राप्त होता है।

परिहार—(*i*) राशीश मैत्री—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है। अथवा वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हो।

सूर्य-मंगल का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, बुध-शनि का शूद्र तथा गुरु-शुक्र का ब्राह्मण है।

वर्ण गुण चक्र

कन्या↓ वर→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

(*ii*) **राशीश एकता**—वर-कन्या का एक ही राशीश।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**—वर-कन्या के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**—वर-कन्या का एक ही नवमांशेश हो।

(2) वश्यकूट विचार—'वैश्य' का अर्थ है—वश में करने योग्य। सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ पुरुष (नर) राशियों के वश में हैं। जल राशियाँ (४, १० उ./१२)—नर राशियों (३, ६, ७, ९ पूर्वार्ध, ११) का भक्ष्य है। वृश्चिक राशि को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीट आदि वश्य-पंचक-राशियों के अनुसार निम्न चक्र से ज्ञातव्य हैं—

वश्य	वर—कन्या राशि
चतुष्पद	मेष, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर-पूर्वार्ध
मानव	मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुम्भ
जलचर	कर्क, मकर-उत्तरार्ध, मीन
वनचर	सिंह
कीट	वृश्चिक

गुण-विभाग—वश्य-विचार के अन्तर्गत वश्यों के परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि 4 मूल तत्त्व हैं। एक समान वश्य अथवा मैत्री होने पर 2 गुण ; एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण ; एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने पर शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा—जैसा—द्विपद (मानव) राशियों का जलचर राशियों से वश्य-भक्ष्य, सिंह (वन) से वैर-भक्ष्य, चतुष्पदों से वश्य-शत्रु सम्बन्ध है।

वश्य गुण चक्र

कन्या↓ वर→	चतुष्पद	मानव	जल	वन	कीट
चतुष्पद	2	1	1	0	1
मानव	1	2	1/2	0	1
जल	1	1/2	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	0	1	0	2

वश्यकूट परिहार

(*i*) **राशीश मैत्री**—वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**—दोनों का एक ही राशीश हो।

(*iii*) **नवामांशेश-मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम।

(*iv*) **नवमांशेश-एकता**–दोनों का ही नवमांशेश हो।

(*v*) **योनि-मैत्री**–वर-कन्या में परस्पर योनि-मैत्री होने पर भी वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

(3) ताराकूट विचार–ताराकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है। जन्मनक्षत्र से गिरने पर तारा का ज्ञान होता है। जन्म, सम्पद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र–ये नक्षत्र ही ताराएं होती है। ये शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं को अलग-अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3, 5, 7 बचे तों '**अशुभ-तारा**' होती है, अन्यथा '**शुभतारा**' होगी।

तारा गुण चक्र

शेषांक		वर								
		१	२	३	४	५	६	७	८	०
कन्या	१	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	२	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	३	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	४	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	५	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	६	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	७	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	८	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	०	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

यदि दोनों प्रकार से (वर-कन्या) शुभ तारा प्राप्त हो, तो समझना चाहिए कि ताराकूट दोष का अभाव है अर्थात् 3 गुण होंगे। यदि एक प्रकार से शुभतारा और दूसरे प्रकार से अशुभतारा मिले तो डेढ़ (1.5') गुण होंगे। यदि दोनों ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण होगा। **ध्यान रहे**, दोनों प्रकार से अशुभतारा कभी भी प्राप्त नहीं होती। **जैसे**–वर के नक्षत्र अश्विनी से कन्या के नक्षत्र मृगशिर तक गिनने पर 5वीं तारा (प्रत्यरि) होती है तथा कन्या के नक्षत्र मृगशिर से वर के नक्षत्र अश्विनी तक की नक्षत्र संख्या 24 हुई।

तारादोष परिहार–(*i*) **राशीश मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**–दोनों (वर-कन्या) का राशीस्वामी एक हो।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**–दोनों के नवमांशेश मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**–दोनों के नवमांशेश एक हों।

(4) योनिकूट विचार–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे–गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर (शत्रुता) है।

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

योनि–बोधक चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
नक्षत्र	अश्वि, शत	भर, रेव.	कृति, पुष्य	रोहि, मृग	आर्द्रा मूल	पुन, आश्ले.	मघा, पू.फा.	उ.फा., उ.भा.	हस्त स्वाती	चित्रा, विशा.	अनु ज्ये.	पू.षा., श्रव.	उ.षा. अभि.	धनि., पू.भा.

गुणविभाग –वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्रता हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति (उदासीनता) समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता (महावैर) हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

योनि-गुण चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	1	2	2	2	0
मेष	3	3	4	2	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	2	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	3	3	2	3	2	2	1
मूषक	3	3	2	1	2	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	2	2	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	1
नकुल	2	2	2	0	2	2	1	3	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	2	4

(5) ग्रह मैत्री–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी तथा नैसर्गिक '**मैत्री-चक्र**' का

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
मित्र	अति मित्रता	सामान्य मित्रता	सामान्य समता
सम	सामान्य मित्रता	समता	सामान्य शत्रुता
शत्रु	सामान्य समता	सामान्य शत्रुता	अतिशत्रुता

विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

ग्रह-सम्बन्धों से अन्ततः 5 प्रकार बन जाते हैं। यथा-दोनों मित्र हो तो 'अधिमित्र', दोनों शत्रु हों तो 'अधिशत्रु' और दोनों में समभाव हो तो 'सम' कहलाते हैं। स्पष्टता चक्र से प्राप्य है-

गुण विचार-वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर 5 गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो 4 गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र

कन्या \ वर	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ -बृहज्जयोतिः सार

अपवाद-वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(6) गण विचार-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन-वर-कन्या का एक ही गण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्यगण हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

		वर		
	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	6	5	1
	मनुष्य	6	6	0
	राक्षस	0	0	6

गण दोष परिहार-

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥
गर्ग-मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **-पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **-मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(7) भकूट विचार-इसे 'राशिकूट' भी कहते हैं। भकूट का तात्पर्य वर एवं कन्या की राशियों के परस्पर अन्तर से है। यह छह प्रकार का होता है-प्रथम-सप्तक (समसप्तक), तृतीय एकादश, द्वितीय-द्वादश, चतुर्थ-दशम, पंचम-नवम (नवपंचम) तथा षडाष्टक (6-8).

इनमें द्विर्द्वादश, नवपंचम तथा षडाष्टक अशुभ भकूट हैं। तथा शेष (1-7), (3-11) तथा (4-10) शुभ भकूट होते हैं। भकूट को जानने की सरल विधि यह है कि वर की राशि से कन्या की राशि तक तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गणना करनी चाहिए। यदि दोनों की राशि आपस में दूसरी-बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश भकूट होता है। तदनुसार गुण-विभाजन किया जाता है। स्पष्टता के लिए आगामी पृष्ठ पर चक्र देखें-

वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार-(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

भकूट गुण चक्र

कन्या की राशि	वर→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
	वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
	मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
	कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
	सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
	कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
	तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
	वृश्चि.	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
	धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
	मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
	कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
	मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ –बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥
–बृहज्योतिषः सारः

(ii) **मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर**–ये चार नवपंचम विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥–शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे–वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया–

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ –ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है।**–बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का

प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥–मुहूर्त्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे** एवं **तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है। (मुहूर्त्त-चिन्तामणि)-पीयूषधारा-

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद–इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ **–ज्यो० चिन्तामणि**

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का भी विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-दोष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा– **हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।**
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1,2,3	२२ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३ ॥ 3,8	३१ ॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३ ॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४ ॥ 1238	१८ 1358	२६ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१ ॥ 3	२३ ॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८ ॥ 8,9व	२६ 9,व	२१ ॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६ ॥ 1236	२० 1356	२० ॥ 1356	२१ 1356	२५ ॥ 3,6	२६ ॥ 3,6	२३ ॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५ ॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६ ॥ 3,6	१७ ॥ 2,3,6	१७ ॥ 2,3,6	१८ ॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३ ॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३ ॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२ ॥ 3468	१० ॥ 3568	२४ ॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३ ॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९ ॥ 1,2,8	२४ ॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९ ॥ 456व	१५ 3458	२४ ॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७ ॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१ ॥ 3,4	१९ ॥ 2,4,5	१२ 2358	१४ ॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८ ॥ 3,व	३१ ॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९ ॥ 3,5,8	२७ ॥ 3,5	२१ ॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२० ॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९ ॥ 3,4व	२१ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७ ॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३ ॥ 3,5,6	२० ॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१ ॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७ ॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९ ॥ 1,3	२५ ॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९ ॥ 3,6	१६ ॥ 1246	२० ॥ 1234	१५ ॥ 1238	१८ 1358	१९ ॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३० ॥ 1,3	२१ ॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११ ॥ 12358	१८ ॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५ ॥ 1238	२३ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२ ॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११ ॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५ ॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५ ॥ 1246	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६ ॥ 8,9,व	१७ ॥ 158व	९ ॥ 1568व	१७ ॥ 156व	२१ ॥ 146व	२२ ॥ 136व	२१ 1346व	१६ ॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६ ॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६ ॥ 1236	२१ ॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८ ॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३ ॥ 145व	१५ ॥ 1458	२० 148व	२८ ॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२ ॥ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	१६ ॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७ ॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८ ॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१ ॥ 1,3,8	१७ ॥ 2,3,8	२५ ॥ 2,3	२० 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६ ॥ 128व	१३ ॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२ ॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४ ॥ 3,9	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1,3,8	२४ ॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२ ॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७ ॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७ ॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२ ॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८ ॥ 236व	२२ ॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४ ॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२ ॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५ ॥ 1,3,6	२१ ॥ 356व	१२ ॥ 3568व	२७ 35,व	२२ ॥ 2,3,व	८ ॥ 2368व	१४ ॥ 2346व	२४ ॥ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या ↓	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ ब3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 356व	१७ ॥ ब3456	१७ ॥ 2346	१९ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	११ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुंभ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4,8,9	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1व458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 135	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

कन्या	वर/नक्षत्र → नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ व3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1व35	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ व 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 135 व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पू.फा. 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 1356व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
	उ.फा. 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568व	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३ ॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७ ॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३ ॥ 4,8,व	१८ ॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ व 34578
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१ ॥ 2,3व	१६ ॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९ ॥ 357,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४ ॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७ ॥ 2,8व	१६ 246व	२१ ॥ 234व	२७ ॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७ ॥ 368व	३० ॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३ ॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६ ॥ 128व	२८ 8	२७ ॥ 4,6	३१ ॥ 3,4	२२ 1234	१७ ॥ 1362व	९ 12368	१२ ॥ 13568	१२ ॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	९ ॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६ ॥ 12व68	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३ ॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४ ॥ 145व	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ ॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९ ॥ 1234	१५ 126व	१९ ॥ 1234	३१ ॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४ ॥ 1248	१७ ॥ 1236	१७ ॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1व358	१० 13568	९ ॥ 3689	२१ ॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 1234	१५ ॥ व2346	१५ व248	२८ 8	२८ 4,6	२६ ॥ 3,6	१५ ॥ 1236	१५ ॥ 1236	२० ॥ 1234	२८ ॥ 1,3,4	२१ ॥ 1,3,8	१४ ॥ 1468	१६ ॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५ ॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३ ॥ 1,2,व	५ ॥ 1268	१४ ॥ 1468	२३ ॥ 1,4,6	२८ ॥ 1,4	३० ॥ 4,व	२३ ॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९ ॥ 268व	२४ 2,3व	१८ ॥ 2,3,6	२६ ॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६ ॥ 128व	१५ 1248व	१५ ॥ 1236व	२३ ॥ 1,3,6	२३ ॥ 1,3,6	२९ ॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,8	१५ ॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७ ॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६ ॥ 4,6	१७ ॥ 126व	१७ ॥ 1236व	२३ ॥ 1234	३० ॥ 3	३१ 3	२२ ॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२ ॥ 148व	१७ ॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७ ॥ 246व	२३ ॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1व236	२१ ॥ 124व	२८ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	२२ ॥ 3,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४ ॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७ ॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8	१८ ॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६ ॥ 3,6	१५ ॥ 4,6,8	२२ ॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८ ॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९ ॥ 3,4	१५ ॥ 3468	२४ ॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८ ॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४ ॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९ ॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६ ॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,6	२४ ॥ 3,4,6	१८ ॥ 236व	१८ ॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९ ॥ 4,6,8	८ ॥ 2468व	१७ ॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२० ॥ 456व	२६ ॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९ ॥ 3,4	३० ॥ 3,4	२४ ॥ 234व	२३ ॥ 234व	२० ॥ 236व	२८ ॥ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७ ॥ 2,8,व	२२ ॥ 2,4,व	२० ॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९ ॥ 1457	१३ ॥ 14567	१९ ॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५ ॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९ ॥ 1,3,4	२८ ॥ 1,3,4	२५ ॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३० ॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९ ॥ 1357	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 4,6,9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	२४ ॥ 136व	२२ ॥ 1,8व	३० 134व	२९ ॥ 1,3,4	२९ ॥ 1,3	१४ ॥ 1468	५ ॥ 12468	१६ ॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४ ॥ 145678	१० ॥ 4689	२७ ॥ 9	२२ ॥ 6,9	२७ 146व	२९ ॥ 1,3व	२१ ॥ 138व	२१ 1348	२१ ॥ 1348	२३ 1346	१४ ॥ 1246व	१६ ॥ 1236व	१८ ॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

(1) अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

(2) आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्राय: चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है-

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

(3) मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

(4) ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः॥ (जातक-पारिजात)

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

(5) अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ-कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूलं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमांशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥ (जातक-पारिजात)

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है-

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को 15 द्वारा भाग देकर 15 खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना को कष्ट (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

(6) रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा। आत्मानं संध्ययोर्हन्ति ततो गण्डं विवर्जयेत्॥

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है–

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–

(१) **गर्भाधान** (२) **पुंसवन** (३) **सीमन्तोन्नयन** (४) **जातकर्म** (५) **नामकरण** (६) **निष्क्रमण** (७) **अन्न प्राशन** (८) **चूडाकरण** (मुण्डन), (९) **यज्ञोपवीत** (१०) से (१३) तक **चतुर्वेदीय व्रत**, (१४) **समानवर्त्तन** (१५) **विवाह** (१६) **अन्त्येष्टि।**

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार–रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों में** मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**–रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण:

लग्न–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां–२, ७, १२

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

नक्षत्र–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेधा-जनन संस्कार**–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ **भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **(५) स्तनपान का मुहूर्त्त**–जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **(६) षष्ठी पूजन**–जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी**

पूजन, कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ **(७) प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., रेव.।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ **(८) नामकरण संस्कार**—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ **नामकरण**—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युञ्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ **(९) झूला आरोहन मुहूर्त्त**—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा; हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ **(१०) निष्क्रमण मुहूर्त्त**—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ **(११) भुम्युपवेशन-मुहूर्त्त**—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ **(१२) जीविका परीक्षा**—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ **(१३) अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त**—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞(१४)**कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां) छोड़कर सभी तिथियां।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞**कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

●●● जन्म दिन कृत्य ●●●

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के अवसर पर प्रात: उठकर गंगाजल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवाकर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है–(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

10 दिन के अशौच में यदि 5 दिन के भीतर दूसरा 10 दिन का या इससे कम दिन का मृत-अशौच प्राप्त हो जाए तो पहले के साथ ही दूसरे अशौच की शुद्धि हो जाती है। 5 दिन के बाद 9 दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ ही दूसरे आशौच की भी शुद्धि हो जाती है, यदि दसवें दिन की रात्री में दूसरा अशौच हो जाये तो 2 दिन अशौच और बढ़ जाता है। 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिन वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति या शुद्धि हो जाती है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृताशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए।

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त वालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, वालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-वहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।(वसिष्ठ)

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है–अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

–त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर *मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।*

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 13 अप्रै., 2021 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/02 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/07) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 5 मिनट के घटी पल 13 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

13 अप्रैल, 2023 ई. को जालन्धर का पंचांग—13 अप्रैल, 2023 ई. को दिल्ली का पंचांग

13 अप्रैल, 2023 ई. जालन्धर (घटी पल)	13 अप्रैल, 2023 ई. दिल्ली (घटी पल)
तिथि – ४८/४० (समाप्ति काल)	**तिथि** – ४८/५३ (समाप्ति काल)
नक्षत्र – ११/३०	**नक्षत्र** – ११/४३
योग – १६/०५	**योग** – १६/१८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०८० मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में वैशाख कृष्ण नवमी, प्रविष्टे १ वैशाख, तदनुसार 14 अप्रै., 2023 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ५८ पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ०/००°/०१'/०४" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मेष राशि के सामने और ०° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/४० घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/५८ में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/३८ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/३६ सिंह (४) राशि के सामने और ४ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/३८ से केवल २ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो २ पल के पीछे १० कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/५८ घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, ४ अंश, १० कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०४°/१०'/०२")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५ ।० ।।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१ ।३०)** **चरखण्ड १५१ ।१२० ।५१**

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° **पलभा ४ ।७ ।५५**

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३° — पलभा ५ ।५ ।३८

कोलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५९	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१७ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	४२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	४८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७° — पलभा ६ ।६ ।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१४ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३१ ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	४३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनूं, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६ ।३९ ।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२१	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश — ३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°)

पलभा ७ ।४८ ।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१३ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान वल, दिग्वल, काल वल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**–जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**–बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**–रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर वली होते हैं। **चेष्टाबल**–मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टावली होते हैं। **दृक् बल**–शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**– **लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २० ।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (० ।१२ ।७) द्वारा प्राप्तांक ४ ।९ है, और लग्न स्पष्ट ४ । १० ।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४ ।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** ११ ।८ ।३६ प्राप्त हुआ। दशभाव स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश** आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

–पं० विवेक शर्मा ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

भाग		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
० मेष	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृष	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मिथुन	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ कर्क	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिंह	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कन्या	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भाग		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
६ तुला		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
		७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृश्चिक		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
		८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ धनु		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	५	५	५	५	५	५	५	५
		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
		९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ मकर		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
		१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुम्भ		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
		११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मीन		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
		१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आधांप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंधा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंघ्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
पुरी	19 48	85 52	+13 28
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आजमगढ़	26 04	83 11	+ 02 44
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कानपुर	**26 28**	**80 21**	**–08 36**
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08
चकला	25 02	83 12	+ 02 48
चन्दौसी	28 28	78 48	–14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	–10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	–06 32
चिरगांव	25 36	78 50	–14 40
छतरपुर	24 56	79 38	–11 28
छपरा	24 39	76 48	–22 48
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जलालाबाद	27 44	79 40	–11 20
जलेसर	27 29	78 20	–16 36
जसरा	25 17	81 48	–02 48
जसराना	27 15	78 42	–15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	–14 16
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	–18 32
जालौन	26 10	79 20	–12 40
जिगनी	25 46	79 26	–12 16
जौनपुर	25 45	82 40	÷00 40
झाँसी	25 27	78 37	–15 32
टाण्डा	28 56	78 59	–14 04
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	–14 40
डेरापुर	26 28	79 48	–10 48
ताजपुर	29 08	78 30	–16 00

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दानापुर	25 40	85 02	+10 08	बनारस(वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00	महरोनी	24 35	78 43	−15 08	हाथरस	27 36	78 03	−17 48
दालमऊ	26 02	81 02	−05 52	बहराइच	27 35	81 36	−03 36	महोबा	25 17	79 52	−10 32	हापुड़	28 43	77 47	−18 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00	बड़ौत	29 06	77 16	−20 56	मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	−00 20	**उत्तराखण्ड**			
देवगांव	25 24	83 01	+02 04	बलिया	25 45	84 10	+06 40	मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16	**अल्मोड़ा**	29 37	79 40	−11 20
देवबन्द	29 42	77 41	−19 16	बरेली	28 21	79 25	−12 20	मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28	आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
देवरिया	26 32	83 45	+05 00	बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16	मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12	आदिबद्री	30 10	79 12	−13 12
देहरी	24 52	84 11	+06 44	बस्ती	26 48	82 43	+00 52	मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44	उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
धामपुर	29 19	78 31	−15 56	बागपत	28 57	77 13	−21 08	मुरादनगर(गा.)	28 47	77 30	−20 00	उखीमठ	30 31	79 07	−13 32
नगीना	29 27	78 27	−16 12	बाड़ी	26 39	77 36	−19 36	मेरठ	28 59	77 42	−19 12	**ऋषिकेश**	30 07	78 18	−15 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40	बान्दा	25 29	80 20	−08 40	मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56	कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
नरैनी	25 11	80 29	−08 04	बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12	राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16	कपकोट	29 58	79 54	−10 54
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28	बांसी	27 11	82 56	+01 44	राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16	काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28	बिजनौर	29 22	78 08	−17 28	रामनगर	25 17	83 02	+02 08	काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00	बिलसी	28 08	78 55	−14 20	रायबरेली	26 13	81 14	−05 04	काण्डी	29 56	78 25	−16 20
नोएडा	28 35	77 20	−20 40	बिलारी	28 38	78 48	−14 48	रूदौली	26 45	81 45	−03 00	केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
पट्टी	25 55	82 12	−01 12	बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56	**लखनऊ**	26 51	80 55	−06 20	केनूर	30 03	79 01	−13 56
पयागपुर	27 25	81 48	02 48	बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48	लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56	कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
पवायां	28 04	80 06	−09 36	बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36	ललितपुर	24 41	78 25	−16 20	खानपुर	29 36	78 07	−17 32
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24	बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08	शामली	29 27	77 19	−20 44	खाती	30 08	79 54	−10 54
पिहानी	27 38	80 12	−09 12	भदोही	25 25	82 34	+00 16	शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20	गरजिया	29 29	79 06	−13 36
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48	भोनगांव	27 15	79 11	−13 16	शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36	गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
पुरवा	26 28	80 50	−06 40	भोवाली	29 23	79 31	−11 56	सम्भल	28 35	78 33	−15 48	गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
प्रतापगढ़	25 50	81 59	— 2 04	**मन्दावर**	29 30	78 08	−17 28	सरधना	29 09	77 37	−19 32	गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48	मऊ	25 17	81 23	−04 28	सहसवां	28 05	78 45	−15 00	घरमघर	29 52	80 01	−09 56
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20	मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20	**सहारनपुर**	29 58	77 33	−19 48	घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44	मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12	सिधौली	27 17	80 50	−06 40	चकराता(देह.)	30 42	77 51	−18 36
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32	मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28	सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12	चम्बा	30 18	78 25	−16 20
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48	मथुरा	27 30	77 41	−19 16	सीतापुर	27 34	80 41	−07 16	चमौली	30 24	79 21	−12 36
फर्रूखाबाद	27 24	79 34	−11 44	मवाना	29 06	77 55	−18 20	सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44	चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20	मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08	सैदपुर	25 33	83 11	+02 44	चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28	महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32	हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24	चुरानी	29 47	78 55	−14 20
बक्सर	25 35	83 59	+05 56	महरौली	24 35	78 43	−15 08	हरदोई	27 25	80 07	−09 32	जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12
बदायूँ	28 02	79 07	−13 32	महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16	हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52				

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
देवप्रयाग	30 09	78 37	−15 32
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिथौरागढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
बाजपुर	29 09	79 07	−13 32
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
रालम	30 16	80 12	−09 12
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56
कर्नाटक			
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्गा	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04
केरला			
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
तिरुवन्तपुरम्	8 31	76 56	−22 16
कन्नूर	11 52	75 25	−28 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12
गुजरात			
अंकलेश्वर	21 36	73 00	−38 00
अंजार	23 08	70 01	−49 56
अमरापुर	21 45	70 02	−49 52
अमरेली	21 37	71 14	−45 04
अमोद	21 59	72 54	−38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	−39 20
आनन्द	22 34	72 56	−38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	−45 28
उपलेटा	21 44	70 17	−48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	−38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	−48 20

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कटाना	22 18	72 49	−38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	−40 04
कांडला	23 03	70 11	−49 16
कुटियाना	21 39	71 04	−45 44
कोरल	21 53	73 10	−37 20
खम्भात	22 20	72 38	−39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	−51 24
खावड़ा	23 51	69 43	−51 08
गांधीधाम	23 06	70 08	−49 28
गोधरा	22 45	73 38	−35 28
जखाऊ	23 13	68 43	−55 08
जसदान	22 02	71 12	−45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	−44 32
जामनगर	22 28	70 04	−49 44
जारोद	22 26	73 20	−36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	−48 08
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	−47 48
तालाजा	21 21	72 03	−41 48
दभोई	22 11	73 26	−36 16
दासदा	23 19	71 50	−42 40
देहज	21 42	72 35	−39 40
देवदार	24 07	71 50	−42 40
दोहाद	22 47	74 18	−32 48
द्वारिका	22 14	68 58	−54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	−37 16
धारी	21 20	71 01	−45 56
धुले	20 54	74 47	−30 52
धोराजी	21 44	70 27	−48 12
नडियाद	22 41	72 55	−38 20
नवसारी	20 51	72 55	−38 20
नालिया	23 18	68 50	−54 40
पड़ाना	22 21	69 52	−50 16
पाटन	23 50	72 07	−41 16

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पाटरी	23 08	71 10	−45 20
पालनपुर	24 10	72 26	−40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	−51 36
बगासरा	20 58	70 56	−46 16
बजाना	23 04	71 45	−43 00
बरूच	21 38	72 56	−38 16
बुलसार	20 38	72 56	−38 16
बोताड़	22 10	71 40	−43 20
भंगोर	22 02	69 55	−50 20
भरूच	21 40	72 58	−38 08
भावनगर	21 46	72 09	−41 24
भुज	23 16	69 40	−51 20
महेसाणा	23 37	72 28	−40 08
महुआ	21 05	71 48	−42 48
माधवपुर	21 18	70 01	−49 56
रतनपुर	21 44	73 16	−36 56
राजकोट	22 18	70 47	−46 52
लखपत	23 49	68 47	−54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	−35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	−37 12
वलसाड़	20 40	72 55	−38 20
वादनगर	23 47	72 38	−39 28
वीजापुर	23 34	72 45	−39 00
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	−43 16
सूरत	21 10	72 50	−38 40
सिहोर	21 42	71 58	−42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	−48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	−48 00
हडोल	23 55	73 13	−37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	−38 12
गोवा			
पंजिम	15 29	73 50	−34 40
मडगांव	15 18	73 57	−34 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जम्मू–कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	–29 12
अखनूर	32 54	74 45	–31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	–29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	–27 48
उड़ी	34 04	74 02	–33 52
ऊधमपुर	32 55	75 08	–29 28
कठुआ	32 22	75 31	–27 56
कटरा	33 01	74 58	–30 08
कारगिल	34 30	76 13	–25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	–26 48
कुलगाम	33 42	75 02	–29 52
केरन	34 40	73 59	–34 04
कोटली	33 30	73 53	–34 12
खयालू	35 10	76 20	–24 40
गिलगित	35 55	74 22	–32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	–32 20
गुरयास	34 38	74 56	–30 16
चिनेनी	33 01	75 20	–28 40
चिलास	35 27	74 06	–33 36
चुशूल	33 35	78 39	–15 24
छम्ब	32 51	74 23	–32 28
जम्मू	**32 43**	**74 54**	**–30 24**
जंगला	33 40	77 00	–22 00
जास्कार	33 20	77 00	–22 00
डोडा	33 10	75 35	–27 40
द्रास	34 22	75 50	–26 40
नवांशहर	32 30	74 4	–30 56
नागिर	36 17	74 45	–31 00
नौशेहरा	33 09	74 17	–32 52
पहलगांव	34 01	75 24	–28 24

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परिपंजाल	33 36	74 22	–22 32
पुंछ	33 51	74 08	–33 28
बनिहाल	33 32	75 19	–28 44
बटोटी	33 06	75 19	–28 44
बटोत	33 06	75 19	–28 44
बड़गाम	34 00	74 44	–31 04
बसौली	32 30	75 49	–26 24
बारामूला	34 10	74 20	–32 40
भद्रवाह	32 59	75 43	–27 08
मनावर	32 50	74 25	–32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	–28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	–35 56
रामनगर	32 50	75 22	–28 32
राजौरी	33 23	74 18	–32 48
रामबन	33 14	75 15	–29 00
रियासी	33 04	74 53	–30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	–10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	–30 16
शेरकिला	36 05	74 04	–33 44
श्रीनगर	34 06	74 50	–30 40
साम्बा	32 33	75 07	–29 32
सोपूर	34 19	74 30	–32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	–28 40
सोन्दर	33 29	75 57	–26 12
सुन्दरबनी	33 02	74 29	–32 04
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	–10 00
झारखण्ड			
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
हज़ारीबाग	23 59	85 25	+11 40
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	–08 52
कांचीपुरम्	12 50	79 44	–11 04

तामिलनाडू के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मदुरै	9 58	78 10	–17 20
रामेश्वरम्	09 17	79 22	–12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	–17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	–16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर–नगर–हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	–38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	–38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	–46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	–21 12
शाहदरा	28 40	77 19	–20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	–21 08
शकरपुर	28 41	77 09	–21 24
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
दीमापुर	25 44	93 43	+44 52
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 20	+23 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	–30 20
अजनाला	31 51	74 48	–30 48
अटारी	31 37	74 36	–31 36
अमलोह	30 37	76 15	–25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	–26 36
अबोहर	30 09	74 11	–33 16
अकालगढ़	29 50	75 54	–26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	–25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	–27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	–23 52
आदमपुर	31 25	75 43	–27 08
उरमर–टाण्डा	31 40	75 41	–27 16
कपूरथला	31 23	75 23	–28 28
करतारपुर	31 27	75 30	–28 00
कादियां	31 49	75 23	–28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	–23 44
कुराली	30 50	76 35	–23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	–30 32
खन्ना	30 42	76 13	–25 08
खरड़	30 45	76 38	–23 28
खेमकरण	31 08	74 35	–31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	–27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	–25 28
गिद्दड़बाहा	30–12	74–40	–31 20
गुरदासपुर	32 02	75 27	–28 12
गुरुहरसहाय	30 43	74 25	–32 20
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	–29 28
गोराया	31 06	75 47	–26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	–24 28
घनौर	30 21	76 37	–23 32
चमकौर साहि.	30 55	76 24	–24 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	31 56	75 53	−26 28
तलवंडी सावो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 28	−28 08
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 05	75 35	−27 40
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04
पटियाला	30 20	76 25	−24 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 45	−31 00
फगवाड़ा	31 14	75 46	−26 56
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बनूड़(मोहाली)	30 34	76 43	−23 08
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बाबा बकाला	31 33	75 15	−29 00
बाघा पुराना	30 41	75 06	−29 36
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 53	−26 28
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 42	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 36	−23 36
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 59	75 45	−27 00
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

बिहार के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
कटिहार	25 31	87 34	+20 16
किशनगंज	26 06	87 56	+21 44
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
दरभंगा	26 10	85 57	+13 48
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 10	+10 40
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
उखरूल	25 05	94 21	+47 24
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया	23 32	80 50	−06 40
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12
धार	22 36	75 18	−28 48
नयागाँव	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	−13 12
नीमच	24 28	74 52	−30 32

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंचमढ़ी	22 30	78 26	−16 16
पठारिया	23 54	79 12	−13 12
पन्ना	24 43	80 12	−09 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना	21 36	78 31	−15 56
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया	22 45	78 21	−16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	−30 52
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बरनगर	23 03	75 22	−28 32
बालाघाट	21 48	80 11	−09 16
बासोदा	23 51	77 56	−18 16
बीना (इटावा)	24 11	78 11	−17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
भिण्ड	26 34	78 48	−14 48
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मण्डला	22 36	80 23	−08 28
मनावर	22 14	75 05	−29 40
मन्दसौर	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मानपुर	23 46	81 08	−05 28
मुरैना	26 30	78 09	−17 24
मुलताई	21 46	78 15	−17 00
मैहर	24 16	80 45	−07 00
रतलाम	23 19	75 04	−29 44
राजगढ़	23 56	76 58	−22 08
राजपुर	25 23	81 09	−05 24
रामनगर	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा	24 28	75 26	−28 16

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रायसेन	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 32	81 18	−04 48
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लखनादोन	22 36	79 36	−11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	−25 20
लामटा	22 08	80 07	−09 32
विदिशा	23 32	77 49	−18 44
वैधन	24 04	82 20	−00 40
शहडोल	23 20	81 21	−04 36
शाजापुर	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	−07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	−19 24
श्योपुर	25 40	76 42	−23 12
सतना	24 35	80 50	−06 40
सनावद	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04
सागर	23 50	78 43	−15 08
सांची	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	−24 08
सिरोंज	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा	23 29	80 07	−09 32
सिहोर	23 12	77 05	−21 40
सीधी	24 25	81 53	−02 28
सेओनी	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	−20 08
सेंधवा	21 41	75 06	−29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	−17 12
हट्टा	24 07	79 36	−11 36
हरदा	22 20	77 06	−21 36
होशंगाबाद	22 45	77 44	−19 04

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	−02 08
कवर्धा	22 00	81 15	−05 00
कांकेर	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	−06 48
कोंगूर	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	−03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	−04 36
दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
धमतरी	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	−06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	−02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	−04 20
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	−01 20
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	−03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	−02 16
भिलई	21 13	81 26	−04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	−03 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	−25 08
अकोला(मुम्ब.)	20 44	77 00	−22 00
अकोट	21 11	77 04	−21 44
अचलपुर	21 16	77 31	−19 56
अमरावती	20 56	77 45	−19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	−24 28
अरमोरी	20 28	79 59	−10 04
अरवी	20 59	78 14	−17 04
अलीपुर	20 34	78 41	−15 16
अहमदनगर	19 05	74 44	−31 04
उल्हासनगर	19 13	73 07	−37 32
एलोरा	20 01	75 10	−29 20
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	−25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	−28 40
कतोल	21 16	78 35	−15 40
कराड़	17 17	74 12	−33 12
कल्याण	19 15	73 09	−37 24
कामथी	21 14	79 12	−13 12
किरकी	18 34	73 52	−34 32
कोल्हापुर	16 42	74 13	−33 08
खमगांव	20 41	76 34	−23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	−36 28
गंगापुर	19 41	75 01	−29 56
गोंडिया(मुम्बई)	21 27	80 12	−09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	−38 24
चन्द्रापुर	19 57	79 18	−12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	−29 56
चिखली	20 21	76 15	−25 00

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चिपलून	17 32	73 31	−35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	−28 48
जलगांव	21 01	75 34	−27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	−23 52
जालना	19 50	75 53	−26 28
जुन्नार	19 12	73 53	−34 28
तासगांव	17 02	74 36	−31 36
थाने	19 12	72 58	−38 08
दरवाहा	20 19	77 46	−18 56
दिगरस	20 06	77 43	−19 08
दिगलूर	18 33	77 36	−19 36
देवलाली	19 57	73 50	−34 40
धुलिया	20 54	74 47	−30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	−31 24
नागपुर	21 09	79 06	−13 36
नान्देड़	19 09	77 20	−20 40
नासिक	19 59	73 48	−34 48
नेवी–मुम्बई	19 02	73 02	−37 52
पंढरपुर	17 40	75 20	−28 40
पनवेल	18 59	73 06	−37 36
पाचोरा	20 40	75 21	−28 36
पाटन(महेसाणा)	23 50	72 07	−41 32
पातुर	20 27	76 56	−22 16
पुणे	18 32	73 52	−34 44
पुलगांव	20 44	78 20	−16 40
बारसी	18 14	75 42	−27 12
बारामती	18 09	74 35	−21 40
बालापुर	20 40	76 46	−22 56
बासमत	19 19	77 10	−21 20
बीड़	18 59	75 46	−26 56
भण्डारा	21 10	79 39	−11 24
भिवंडी	19 18	73 04	−37 44
भुसावल	21 03	75 46	−26 56
भोकरदान	20 16	75 46	−26 56

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मनवात	19 18	76 30	−24 00
मल्कापुर(बुल्डाना)	20 53	76 12	−25 12
महाद	18 05	73 25	−36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	−35 20
मालवान	16 04	73 28	−36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	−31 52
मुम्बई	**18 58**	**72 50**	**−38 40**
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	−37 48
मुरुद	18 19	72 58	−38 08
यवतमाल	20 24	78 08	−17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	−36 48
रामटेक	21 24	79 20	−12 40
लातूर	18 24	76 34	−23 44
वर्धा	20 45	78 37	−15 32
वसाई	19 21	72 48	−38 48
वाशिम	20 06	77 09	−21 24
वाशी	19 13	73 10	−37 20
वाई	17 56	73 54	−34 24
वैजापुर	19 55	74 44	−31 12
शिरपुर	21 21	74 53	−30 28
शोलापुर	17 41	75 55	−26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	−37 56
सकोली	21 05	79 59	−10 04
संगोला	17 26	75 12	−29 12
सतना	20 35	74 12	−33 12
सतारा	17 41	73 59	−34 04
सांगली	16 52	74 34	−31 44
सिन्नार	19 51	74 00	−34 00
हरनाई	17 48	73 06	−37 36
हिंगोली	19 43	77 09	−21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	−37 36
अलवर	27 34	76 38	−23 28
असोप	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	−25 30
अमेट	25 20	73 59	−34 04
आबू	24 40	72 45	−39 00
आमेर	26 59	75 52	−26 32
उदयपुर	24 35	73 41	−35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	−34 56
करौली	26 30	77 01	−21 56
कांकरोली	25 02	73 54	−34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	−30 32
केकड़ी	25 55	75 10	−29 20
कोटा	25 10	75 52	−26 32
खण्डेला	27 37	75 32	−27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	−35 44
घोटारू	27 18	70 04	−49 44
चात्सू	26 36	75 59	−26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	−31 12
चूरू	28 19	75 01	−29 56
चोमू	27 08	75 47	−26 52
चोटां	25 28	71 06	−45 36
छाबरा	24 40	76 54	−22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	−31 36
जयपुर	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	−40 00
जालौर	25 22	72 38	−39 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जैसलमेर	26 55	70 54	−46 24
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73· 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोखरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बाराँ	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाठी	27 03	71 30	−44 00
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	−23 52
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
सिक्किम			
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24
हरियाणा			
अम्बाला कैंट	30 21	76 52	−22 32
अम्बाला शहर	30 22	76 46	−22 56
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 50	76 56	−22 16

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कुरुक्षेत्र	29 59	76 51	−22 36
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुरुग्राम	28 28	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 48	75 50	−26 40
जीन्द	29 19	76 19	−24 44
झज्जर	28 37	76 39	−23 24
टोहाना	29 42	75 54	−26 24
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 42	76 52	−22 32
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	76 59	−22 04
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 58	76 35	−23 40
फतेहाबाद	29 31	75 27	−28 12
फरीदाबाद	28 26	77 19	−20 44
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44
बहादुरगढ़	28 42	76 55	−22 20
बरवाला	29 23	75 55	−26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	−28 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भादसों	29 56	76 56	−22 16	काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08	तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20	वैजनाथ	32 03	76 38	−23 28
भिवानी	28 47	76 08	−25 48	**कांगड़ा**	**32 05**	**76 18**	**−24 48**	त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24	भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32	किन्नौर	31 32	78 20	−16 40	त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24	भरमौर	32 27	76 32	−23 52
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32	कुफरी	31 07	77 12	−21 12	देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04	भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
महेन्द्रगढ़	28 17	76 09	−25 24	कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48	दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08	भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40	कुल्लू	31 58	77 06	−21 36	धनेटा	31 38	76 29	−24 04	**मण्डी**	**31 43**	**76 58**	**−22 08**
यमुनानगर	30 07	77 18	−20 48	कुमारसैन	31 18	77 37	−19 32	धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48	मनाली	32 16	77 10	−21 20
रादौर	30 02	77 06	−21 36	कुनिहार	30 58	77 10	−21 20	धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44	मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
रिवाड़ी	28 12	76 38	−23 28	केलांग	32 37	77 05	−21 40	धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04	मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
रैना	29 28	74 54	−30 24	कोटखाई	31 08	77 36	−19 36	नगर	32 07	77 10	−21 20	मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
रोडी	29 44	75 15	−29 00	कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04	नगरोंटा बगवां	32 06	76 22	−24 32	महासू	31 05	77 13	−21 08
रोहतक	28 54	76 38	−23 28	कोटला	32 17	76 02	−25 52	नगरोटा	32 07	76 23	−24 28	राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
लाडवा	29 59	77 05	−21 40	खजियार	32 31	76 03	−25 40	नादौन	31 47	76 21	−24 36	रामपुरबुशहर	31 27	77 38	−19 28
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20	गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	−24 48	नाहन	30 33	77 18	−20 48	रोहड़	31 12	77 45	−19 00
सिरसा	29 32	75 01	−29 56	गगरेट	31 41	76 04	−25 44	नालागढ़	31 03	76 42	−23 12	लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
सिवानी	28 55	75 37	−27 32	गोहर	31 32	77 02	−21 52	नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08	शाहपुर	32 13	76 11	−25 16
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56	घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12	निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44	**शिमला**	**31 06**	**77 10**	**−21 20**
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04	**चम्बा**	**32 34**	**76 08**	**−25 28**	नूरपुर	32 18	75 54	−26 24	शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00	चच्योट	31 36	77 04	−21 44	नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56	सुबाथू	30 59	76 59	−22 04
हिसार	29 10	75 46	−26 56	चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32	पच्छाद	31 47	77 08	−21 28	सरकाघाट	31 42	76 45	−23 00
हिमाचल–प्रदेश				चायल	31 03	77 14	−21 04	पण्डोह	31 41	77 07	−21 32	सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
				चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	−25 44	पपरोला	32 04	76 34	−23 44	संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
अम्ब	31 43	76 06	−25 36	जस्सूर	32 17	75 55	−26 20	परवाणू	30 50	76 57	−22 12	सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
अर्की	31 09	76 59	−22 04	जतोग	31 06	77 07	−21 32	पाओंटा साहिब	30 27	77 37	−19 32	**सुन्दरनगर**	**31 32**	**76 53**	**−22 28**
आनी	31 28	77 20	−20 40	जोगिन्द्रनगर	31 59	76 46	−22 56	पालमपुर	32 07	76 33	−23 48	सुजानपुरटिहरा	31 50	76 30	−24 00
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00	ज्वाली	32 08	76 01	−25 56	बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08	सोलन	30 55	77 09	−21 24
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16	ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40	बसौली	31 34	76 23	−24 28	हमीरपुर	31 41	76 31	−23 56
ऊना	31 29	76 17	−24 52	ठयोग	31 08	77 33	−19 48	बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16	हड़सर	32 21	76 33	−23 48
करसोग	31 23	77 13	−21 08	डमटाल	32 13	75 41	−27 16	बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00	हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
कसौली	30 55	76 57	−22 12	डगशाई	30 53	77 06	−21 36	बंजार	31 40	77 20	−20 40	हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
कथला	31 59	76 47	−22 52	डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00	बनीखेत	32 32	75 58	−26 08	हाटकोटी	31 09	77 45	−19 00
कल्पा	31 34	78 16	−16 56	ढलियारा	31 52	76 11	−25 16	बकलोह	32 27	75 59	−26 04	**अन्य केन्द्रीय प्रदेश**			
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28	तारादेवी	31 04	77 10	−21 20	बिलासपुर	31 20	76 45	−23 00	चण्डीगढ़	30 44	76 52	−22 32

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। **ज्ञातव्य** रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– **एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी ध्रुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूज़ीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(1) AMERICA [UNITED-STATES] [यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Abilen, Texas	30 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30
Albany, N.Y.	42 39 उ.	73 45 प.	+05 00	75 00 प.	+10 30
Abotsford	49 00 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30
Anderson, Indiana	40 06 उ.	85 41 प.	–42 44	75 00 प.	+10 30
Athens, Georgia	33 57 उ.	83 23 प.	–33 32	75 00 प.	+10 30
Atlanta, Georgia	33 45 उ.	84 23 प.	–37 32	75 00 प.	+10 30
Atlantic City, N.J.	39 22 उ.	74 25 प.	+02 20	75 00 प.	+10 30
Auburn, N.Y.	42 56 उ.	76 34 प.	–06 16	75 00 प.	+10 30
Austin, Taxas	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30
Asbury Park (N.J.)	40 13 उ.	74 01 प.	+03 56	75 00 प.	+10 30
Bakersfield, Califo.	35 22 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
Bay City, Michigan	43 36 उ.	83 53 प.	–35 32	75 00 प.	+10 30
Bay Town, Texas	29 44 उ.	94 59 प.	–19 56	90 00 प.	+11 30
Boston, Massa.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Buffalo, N. York	42 53 उ.	78 53 प.	–15 32	75 00 प.	+10 30
Cambridge, Massa.	42 22 उ.	71 06 प.	+15 36	75 00 प.	+10 30
Chicago, Illinois	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
Cincinnati, Ohio	39 10 उ.	84 27 प.	–37 48	75 00 प.	+10 30
Californiacity (Cal.)	35 08 उ.	117 59 प.	+08 04	120 00 प.	+13 30
Columbia, Missouri	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
Columbus, Georgia	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
Dales, Texas	29 56 उ.	97 34 प.	–30 16	90 00 प.	+11 30
Detriot, Michi.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
Edison, N. Jersey	41 04 उ.	74 34 प.	+01 44	75 00 प.	+10 30
Essex, Maryland	39 19 उ.	76 29 प.	– 05 56	75 00 प.	+10 30
Florida City, FL	25 27 उ.	80 29 प.	–21 56	75 00 प.	+10 30
Frederick (D.M.)	39 38 उ.	78 31 प.	–14 04	75 00 प.	+10 30
Frankfort, Kentucky	38 12 उ.	84 52 प.	–39 28	75 00 प.	+10 30
Greenville, Missi	33 25 उ.	91 04 प.	–04 16	90 00 प.	+11 30
Hamilton, Ohio	39 24 उ.	84 34 प.	–38 16	75 00 प.	+10 30
Houston, Texas	29 46 उ.	95 22 प.	–21 28	90 00 प.	+11 30
Irving, Texas	32 49 उ.	96 57 प.	–27 48	90 00 प.	+11 30
Jersey City, N.J.	40 44 उ.	74 05 प.	+03 20	75 00 प.	+10 30
Johnson City, Tenne.	36 19 उ.	82 21 प.	+30 36	90 00 प.	+11 30
Kingston, N.Y.	41 56 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Lockport, N.Y.	43 10 उ.	78 41 प.	–14 44	75 00 प.	+10 30
Los Angeles, Calif.	34 03 उ.	118 15 प.	+07 00	120 00 प.	+13 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Manchester, N. Hamp.	43 00 उ.	71 27 प.	+14 54	75 00 प.	+10 30
Meridian, Missi	32 22 उ.	88 42 प.	+05 12	90 00 प.	+11 30
Michigan City, Indiana	41 42 उ.	86 54 प.	–47 36	75 00 प.	+10 30
Midland, Texas	32 00 उ.	102 05 प.	–48 20	90 00 प.	+11 30
Milwankee, Wiscon.	43 02 उ.	87 54 प.	+08 24	90 00 प.	+11 30
Montgomery, Alabama	32 22 उ.	86 18 प.	+14 48	90 00 प.	+11 30
New Bedford, Massa	41 38 उ.	70 56 प.	+ 16 16	75 00 प.	+10 30
New Castle, P.A.	40 44 उ.	76 13 प.	–04 52	75 00 प.	+10 30
Newton, Massa	42 20 उ.	71 13 प.	+15 10	75 00 प.	+10 30
New York, N.Y.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Ontario, Calif	34 04 उ.	117 39 प.	+11 24	120 00 प.	+13 30
Oxford, Alabama	33 37 उ.	85 50 प.	+16 40	90 00 प.	+11 30
Redlands, California	34 04 उ.	117 11 प.	+11 16	120 00 प.	+13 30
Reston, Virginia	38 58 उ.	77 20 प.	–09 20	75 00 प.	+10 30
Richfield, Minnesota	44 53 उ.	93 17 प.	–13 08	90 00 प.	+11 30
Richmond, Calif	37 56 उ.	122 21 प.	–09 24	120 00 प.	+13 30
Sacramento, Calif	38 35 उ.	121 30 प.	–06 00	120 00 प.	+13 30
St. Louis Park, Minne	44 57 उ.	93 21 प.	–13 24	90 00 प.	+11 30
San Francisco, Calif	37 47 उ.	122 25 प.	–09 40	120 00 प.	+13 30
Santa Rosa, Calif	38 27 उ.	122 43 प.	–10 52	120 00 प.	+13 30
Seattle, Washington	47 36 उ.	122 20 प.	–09 20	120 00 प.	+13 30
Texas City, Texa	29 23 उ.	94 54 प.	–19 36	90 00 प.	+11 30
Washington, D.C.	38 55 उ.	77 02 प.	–08 08	75 00 प.	+10 30
Yuba City, Calif	39 08 उ.	121 37 प.	–06 28	120 00 प.	+13 30
(2) AFGANISTAN	(Standard Meridian—67-30 पू.)				
Daulatabad	36 25 उ.	64 55 पू.	–10 20	67 30 पू.	+01 00
Kabul	34 31 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
Kandhar	31 32 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
(3) ARGENTINA [यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] (St. Meridian-45-00 प.)					
Rofaela	31 16 द.	61 29 प.	–05 56	60 00 प.	+08 30
San Francisco	31 26 द.	62 05 प.	–08 20	60 00 प.	+08 30
(4) AUSTRALIA [यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Adelaide	34 55 द.	138 35 पू.	–15 40	142 30 पू.	–04 00
Brisbane	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	–04 30
Canberra	35 17 द.	149 08 पू.	–03 28	150 00 पू.	–04 30
Hobart	42 53 द.	147 19 पू.	–10 44	150 00 पू.	–04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Liverpool	33 54 द.	150 56 पू.	+03 44	150 00 पू.	–04 30
Melbourne	37 50 द.	144 58 पू.	–20 08	150 00 पू.	–04 30
Perth	31 56 द.	115 50 पू.	–16 40	120 00 पू.	–02 30
Sydney	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	–04 30
(5) Austria (Standard Meridian – 15-00 पू.)					
Graz	47 05 उ.	15 27 पू.	–01 48	15 00 पू.	–04 30
(6) Bangladesh					
Chittagong	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	90 00 पू.	–00 30
Dhaka	22 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	90 00 पू.	–00 30
(7) Bhutan					
Thimbu	27 28 उ.	89 39 पू.	–01 24	90 00 पू.	–00 30
(8) BRAZIL [कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है।] [चार कालक्षेत्र में आवंटित है।]					
Brasilia	15 47 द.	47 55 प.	–11 40	45 00 प.	+08 30
Maringa	23 25 द.	51 55 प.	–27 40	45 00 प.	+08 30
Rio Branco	9 58 द.	67 48 प.	+28 48	75 00 प.	+10 30
Rio Claro	22 24 द.	47 33 प.	–10 12	45 00 प.	+08 30
Rio de Janeiro	22 54 द.	43 14 प.	+07 04	45 00 प.	+08 30
(9) BURMA (MYANMAR)					
Rangoon	16 47 उ.	96 10 पू.	–05 20	97 30 पू.	–01 00
(10) CANADA [इस देश में भी छः कालक्षेत्र प्रचलित हैं।]					
Brampton, Ontario	43 41 उ.	79 46 प.	–19 04	75 00 प.	+10 30
Calgary, Alberta	51 03 उ.	114 05 प.	–36 20	105 00 प.	+12 30
Edmonton, Alberta	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30
Kingston, Ontario	44 14 उ.	76 30 प.	–06 00	75 00 प.	+10 30
Mississauga, Ontario	43 35 उ.	79 37 प.	–18 28	75 00 प.	+10 30
Montreal, Quebec	45 31 उ.	73 34 प.	+05 44	75 00 प.	+10 30
Niagara Falls, Ontario	43 06 उ.	79 04 प.	–16 16	75 00 प.	+10 30
North York, Ontario	43 46 उ.	79 25 प.	–17 40	75 00 प.	+10 30
Ottawa, Ontario	45 25 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30
Prince George, B.C.	53 55 उ.	122 46 प.	–11 04	120 00 प.	+13 30
Prince Rupert, B.C.	54 19 उ.	130 19 प.	–41 16	120 00 प.	+13 30
Quebec, Quebec	46 49 उ.	71 14 प.	+15 04	75 00 प.	+10 30
Richmond, British Col.	49 10 उ.	123 10 प.	–12 40	120 00 प.	+13 30
Saint John's-New Foundland	47 33 उ.	52 40 प.	–00 40	52 30 प.	+09 00
Toronto, Ontario	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प.=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Vancouver- (B.C.)	49 16 उ.	123 07 प.	–12 28	120 00 प.	+13 30
Victoria-B.C.	48 25 उ.	123 21 प.	–13 24	120 00 प.	+13 30
Winnipeg, Manitoba	49 53 उ.	97 09 प.	–28 36	90 00 प.	+11 30
Windsor, Ontario	42 18 उ.	83 01 प.	–32 04	75 00 प.	+10 30
(11) CHINA	**(ZHONGGUO)**				
Beijing (Peking)	39 55 उ.	116 25 पू.	–14 20	120 00 पू.	–02 30
Fushun	29 11 उ.	105 00 पू.	–60 00	120 00 पू.	–02 30
Huainan	32 40 उ.	117 00 पू.	–12 00	120 00 पू.	–02 30
Ji'an	41 06 उ.	126 08 पू.	+24 32	120 00 पू.	–02 30
Shanghai	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	120 00 पू.	–02 30
(12) ENGLAND (UNITED-KINGDOM) U.K. [D.S.T.—मार्च के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक] [Starting Time—01:00 A:M, Ending Time 2:00 A:M]					
Adenberg	55 52 उ.	03 12 प.	–12 48	00 00	+05 30
Bedford	52 08 उ.	00 29 प.	–01 56	00 00	+05 30
Birmingham	52 28 उ.	01 54 प.	–07 36	00 00	+05 30
Bradford	53 48 उ.	01 45 प.	–07 00	00 00	+05 30
Bristol	51 27 उ.	02 35 प.	–10 20	00 00	+05 30
Cambridge	52 13 उ.	00 08 पू.	+00 32	00 00	+05 30
Coventry	52 25 उ.	01 30 प.	–06 00	00 00	+05 30
Derby	52 55 उ.	01 29 प.	–05 56	00 00	+05 30
Glasgow, Scotla	55 53 उ.	04 15 प.	–17 00	00 00	+05 30
Hamilton, Scotla	55 47 उ.	04 03 प.	–16 12	00 00	+05 30
Kingswood	51 27 उ.	02 31 प.	–10 04	00 00	+05 30
Leeds	53 50 उ.	01 35 प.	–06 20	00 00	+05 30
Leicester	52 38 उ.	01 05 प.	–04 20	00 00	+05 30
Liverpool	53 25 उ.	02 58 प.	–11 52	00 00	+05 30
London	51 32 उ.	00 05 प.	–00 20	00 00	+05 30
Manchester	53 30 उ.	02 13 प.	–08 52	00 00	+05 30
New-Castle	52 26 उ.	03 06 प.	–12 24	00 00	+05 30
Northampton	52 14 उ.	00 54 प.	–03 36	00 00	+05 30
Nottingham	52 58 उ.	01 10 प.	–04 40	00 00	+05 30
Slough	51 31 उ.	00 36 प.	–02 24	00 00	+05 30
Southampton	50 55 उ.	01 25 प.	–05 40	00 00	+05 30
Walsall	52 35 उ.	01 58 प.	–07 52	00 00	+05 30
Wolverhampton	52 36 उ.	02 08 प.	–08 32	00 00	+05 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प.=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(13) FIJI [ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है।] (नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक)					
Kandavu Island	19 03 द.	178 13 पू.	–05 58	180 00 पू.	–06 30
Lau Group	18 20 द.	178 30 पू.	–06 00	180 00 पू.	–06 30
ONO-I-LAU	20 39 द.	178 42 पू.	–05 12	180 00 पू.	–06 30
Rotuma Island	12 30 द.	177 05 पू.	–11 40	180 00 पू.	–06 30
Taveuni	16 51 द.	179 58 प.	–00 08	180 00 पू.	–06 30
Vanua Levu	16 33 द.	179 15 पू.	–03 00	180 00 पू.	–06 30
Vitina	16 19 द.	179 43 पू.	–01 08	180 00 पू.	–06 30
(14) FRANCE					
Lyon	45 45 उ.	04 51 पू.	–40 36	15 00 पू.	+04 30
Paris	48 52 उ.	02 20 पू.	–50 40	15 00 पू.	+04 30
(15) Germany					
Berlin	52 32 उ.	13 25 पू.	–06 20	15 00पू.	+04 30
Bonn	50 44 उ.	07 05 पू.	–31 40	15 00पू.	+04 30
(16) GREECE					
Piraievs (Piraeus)	37 57 उ.	23 38 पू.	–25 28	30 00पू.	+03 30
(17) HONGKONG **(CHINA का भाग)**					
Kwun Tong	22 19 उ.	114 12 पू.	–23 12	120 00 पू.	–02 30
Tai Tong	22 25 उ.	114 01 पू.	–23 56	120 00 पू.	–02 30
(18) Indonesia [यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,]					
Jambi	01 42 द.	103 34 पू.	–05 44	105 00 पू.	–01 30
Jakarta	06 10 द.	106 48 पू.	+07 12	105 00 पू.	–01 30
(19) IRAN					
Tehran	35 40 उ.	51 26 पू.	–04 16	52 30 पू.	+02 00
(20) IRAQ					
Baghdad	33 21 उ.	44 25 पू.	–02 20	45 00 पू.	+02 30
(21) IRELAND					
Dublin	53 20 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00	+05 30
(22) ITALY					
Brescia	45 33 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Monza	45 35 उ.	09 16 पू.	–22 56	15 00 पू.	+04 30
Lucca	43 50 उ.	10 29 पू.	–18 04	15 00 पू.	+04 30
Milano (Milan)	45 28 उ.	09 12 पू.	–23 12	15 00 पू.	+04 30
Rho	45 32 उ.	09 02 पू.	–23 52	15 00 पू.	+04 30
Rome	41 54 उ.	12 29 पू.	–10 04	15 00 पू.	+04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(23) JAPAN					
Tokyo	35 42 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	–03 30
(24) KENYA					
Mombasa	04 03 द.	39 40 पू.	–21 20	45 00 पू.	+02 30
Nairobi	01 17 द.	36 49 पू.	–32 44	45 00 पू.	+02 30
(25) KOREA (South)					
Seoul	37 33 उ.	126 58 पू.	–32 08	135 00 पू.	–03 30
(26) KUWAIT					
AL-Kuwayt	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
AL-Jahrah	29 20 उ.	47 40 पू.	+10 40	45 00 पू.	+02 30
(27) MALAYSIA					
Kualalumpur	03 10 उ.	101 42 पू.	–73 12	120 00 पू.	–02 30
(28) MAURITIUS					
Port Louis	20 10 द.	57 30 पू.	–10 00	60 00 पू.	+01 30
(29) NEPAL					
Kathmandu	27 43 उ.	85 19 पू.	–03 44	86 15 पू.	–00 15
(30) NETHERLANDS (HOLLAND)					
Amsterdam	52 22 उ.	04 54 पू.	–40 24	15 00 पू.	+04 30
(31) NEW-ZEALAND					
Auckland	36 52 द.	174 46 पू.	–20 56	180 00 पू.	–06 30
Christchurch	43 32 द.	172 38 पू.	–29 28	180 00 पू.	–06 30
Hamilton	37 47 द.	175 17 पू.	–18 52	180 00 पू.	–06 30
Napier	39 29 द.	176 55 पू.	–12 20	180 00 पू.	–06 30
Wellington	41 18 द.	174 47 पू.	–20 52	180 00 पू.	–06 30
(32) NORWAY					
Drammen	59 44 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Oslo	59 55 उ.	10 45 पू.	–18 00	15 00 पू.	+04 30
(33) OMAN					
Muscat	23 37 उ.	58 35 पू.	–05 40	60 00 पू.	+01 30
(34) PAKISTAN					
Islamabad	33 42 उ.	73 10 पू.	–07 20	75 00 पू.	+00 30
Karachi	24 52 उ.	67 03 पू.	–31 48	75 00 पू.	+00 30
Lahore	31 35 उ.	74 18 पू.	–02 48	75 00 पू.	+00 30
Multan	30 11 उ.	71 29 पू.	–14 04	75 00 पू.	+00 30
Sialkot	32 30 उ.	74 31 पू.	–01 56	75 00 पू.	+00 30
(35) PHILIPPINES					
Manila	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	–02 30
Olongapo	14 50 उ.	120 16 पू.	+01 04	120 00 पू.	–02 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(36) PORTUGAL [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00′]					
Lisbon	38 43 उ.	09 08 प.	–36 32	00 00 पू.	+05 30
(37) QATAR					
Doha	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	45 00 पू.	+02 30
(38) RUSSIA [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Moscow	55 45 उ.	37 35 पू.	–29 40	45 00 पू.	+02 30
(39) SAUDI-ARABIA					
Al-Mubarraz	22 17 उ.	46 44 पू.	+06 56	45 00 पू.	+02 30
Riyadh	24 38 उ.	46 43 पू.	+06 52	45 00 पू.	+02 30
Jiddah	21 30 उ.	39 12 पू.	–23 12	45 00 पू.	+02 30
(40) SINGAPORE					
Singapore	01 17 उ.	103 51 पू.	–64 36	120 00 पू.	–02 30
(41) SOUTH-AFRICA					
Cape Town	33 55 द.	18 22 पू.	–46 32	30 00 पू.	+03 30
Durban	29 55 द.	30 56 पू.	+03 44	30 00 पू.	+03 30
East London	33 00 द.	27 55 पू.	–08 20	30 00 पू.	+03 30
Johannesburg	26 15 द.	28 00 पू.	–08 00	30 00 पू.	+03 30
Port-Elizabeth	33 58 द.	25 40 पू.	–17 20	30 00 पू.	+03 30
(42) SPAIN					
Barcelona	41 23 उ.	02 11 पू.	–51 16	15 00 पू.	+04 30
Madrid	40 24 उ.	03 41 प.	–74 44	15 00 पू.	+04 30
Manresa	41 44 उ.	01 50 प.	–67 20	15 00 पू.	+04 30
Salamanca	40 58 उ.	05 39 प.	–82 26	15 00 पू.	+04 30
San Fernando	36 28 उ.	06 12 प.	–84 48	15 00 पू.	+04 30
(43) SRI-LANKA					
Colombo	06 56 उ.	79 51 पू.	–40 36	90 00 पू.	–00 30
Jaffna	09 40 उ.	80 00 पू.	–40 00	90 00 पू.	–00 00
Kandy	07 18 उ.	80 38 पू.	–37 28	90 00 पू.	–00 00
(44) Switzerland					
Berne	46 57 उ.	07 26 पू.	–30 16	15 00 पू.	+04 30
Geneva	46 12 उ.	06 09 पू.	–35 24	15 00 पू.	+04 30
(45) UNITED-ARAB-EMIRATES					
Abudhabi	24 28 उ.	54 22 पू.	–22 32	60 00 पू.	+01 30
Sharjah	25 22 उ.	55 23 पू.	–18 28	60 00 पू.	+01 30
Dubai	25 18 उ.	55 18 पू.	–18 48	60 00 पू.	+01 30
(46) ZIMBABWE					
Harare	17 50 द.	31 03 पू.	+04 08	30 00 पू.	+03 30
(47) Zambia					
Lusaka	15 25 द.	28 17 पू.	–06 52	30 00 पू.	+03 30

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश 82/30′ पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश 23/11′ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (–) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर 82°/30 रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (–) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर 82°/30′ के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्राय: सभी नगर 82°/30′ पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश 28/58, रेखांश 77°/01′ तथा स्टैं. अन्तर –21/56 मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. 6/49 प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (–21 मिं.–56 सैं.) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय 7/11 प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् 7/14

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे-इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या – करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश 10° उ.		अक्षांश 20° उ.		अक्षांश 25° उ.		अक्षांश 30° उ.		अक्षांश 35° उ.		अक्षांश 40° उ.		अक्षांश 45° उ.		अक्षांश 50° उ.		अक्षांश 52° उ.		अक्षांश 54° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश 10° उ.		अक्षांश 20° उ.		अक्षांश 25° उ.		अक्षांश 30° उ.		अक्षांश 35° उ.		अक्षांश 40° उ.		अक्षांश 45° उ.		अक्षांश 50° उ.		अक्षांश 52° उ.		अक्षांश 54° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश 10° उ.		अक्षांश 20° उ.		अक्षांश 25° उ.		अक्षांश 30° उ.		अक्षांश 35° उ.		अक्षांश 40° उ.		अक्षांश 45° उ.		अक्षांश 50° उ.		अक्षांश 52° उ.		अक्षांश 54° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश 10° उ.		अक्षांश 20° उ.		अक्षांश 25° उ.		अक्षांश 30° उ.		अक्षांश 35° उ.		अक्षांश 40° उ.		अक्षांश 45° उ.		अक्षांश 50° उ.		अक्षांश 52° उ.		अक्षांश 54° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46.	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्टू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश 10° उ.		अक्षांश 20° उ.		अक्षांश 25° उ.		अक्षांश 30° उ.		अक्षांश 35° उ.		अक्षांश 40° उ.		अक्षांश 45° उ.		अक्षांश 50° उ.		अक्षांश 52° उ.		अक्षांश 54° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त–सन् 2023 ई. (भा. स्टै. टा.)

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Uppor Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण–मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	कांगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	17 27	7 28	17 27	7 28	17 28	7 26	17 27	7 26	17 25	7 27	17 26	7 24	17 26	7 23	17 26	7 31	17 26	7 22	17 26	7 23	17 23
4	7 30	17 29	7 28	17 29	7 29	17 30	7 26	17 29	7 27	17 27	7 27	17 28	7 24	17 28	7 24	17 28	7 32	17 29	7 22	17 28	7 23	17 25
7	7 31	17 32	7 29	17 31	7 29	17 33	7 27	17 31	7 27	17 30	7 28	17 30	7 25	17 30	7 24	17 31	7 32	17 31	7 23	17 31	7 24	17 27
10	7 31	17 34	7 29	17 34	7 29	17 35	7 27	17 34	7 27	17 32	7 28	17 33	7 25	17 32	7 25	17 33	7 32	17 33	7 23	17 33	7 24	17 30
13	7 30	17 37	7 28	17 36	7 29	17 38	7 27	17 36	7 27	17 35	7 28	17 36	7 25	17 35	7 24	17 36	7 32	17 36	7 23	17 36	7 23	17 32
16	7 30	17 39	7 28	17 39	7 29	17 40	7 26	17 39	7 26	17 37	7 27	17 38	7 24	17 38	7 24	17 38	7 32	17 39	7 23	17 38	7 23	17 35
19	7 29	17 42	7 27	17 42	7 28	17 43	7 26	17 41	7 26	17 40	7 27	17 41	7 24	17 40	7 23	17 41	7 31	17 42	7 22	17 41	7 22	17 38
22	7 28	17 45	7 26	17 44	7 27	17 46	7 25	17 44	7 25	17 43	7 26	17 44	7 23	17 43	7 23	17 44	7 30	17 44	7 21	17 44	7 21	17 40
25	7 27	17 47	7 25	17 47	7 26	17 49	7 24	17 47	7 24	17 45	7 24	17 46	7 21	17 46	7 21	17 46	7 29	17 47	7 20	17 47	7 20	17 43
28	7 25	17 50	7 24	17 50	7 24	17 51	7 22	17 50	7 22	17 48	7 23	17 50	7 20	17 48	7 20	17 49	7 27	17 50	7 19	17 49	7 19	17 46
31	7 24	17 53	7 22	17 53	7 23	17 54	7 21	17 52	7 20	17 51	7 21	17 52	7 18	17 51	7 18	17 52	7 25	17 53	7 17	17 51	7 17	17 49
3 फर.	7 22	17 56	7 20	17 55	7 21	17 57	7 19	17 55	7 19	17 54	7 19	17 55	7 17	17 54	7 17	17 54	7 23	17 56	7 15	17 54	7 15	17 51
6	7 19	17 58	7 18	17 58	7 19	18 00	7 17	17 58	7 16	17 56	7 17	17 57	7 15	17 56	7 15	17 57	7 21	17 58	7 13	17 57	7 13	17 54
9	7 17	18 01	7 16	18 01	7 16	18 02	7 14	18 00	7 14	17 59	7 15	18 00	7 12	17 59	7 12	18 00	7 19	18 01	7 11	17 59	7 11	17 57
12	7 15	18 04	7 13	18 03	7 14	18 05	7 12	18 03	7 12	18 02	7 12	18 03	7 10	18 02	7 10	18 02	7 16	18 04	7 09	18 02	7 08	17 59
15	7 12	18 06	7 11	18 06	7 11	18 07	7 09	18 05	7 09	18 04	7 10	18 05	7 07	18 04	7 07	18 05	7 13	18 07	7 06	18 04	7 06	18 02
18	7 09	18 09	7 08	18 08	7 08	18 10	7 06	18 08	7 06	18 07	7 07	18 08	7 04	18 06	7 05	18 07	7 10	18 09	7 03	18 07	7 03	18 04
21	7 06	18 12	7 05	18 11	7 05	18 12	7 03	18 10	7 03	18 09	7 04	18 10	7 01	18 09	7 02	18 09	7 07	18 12	7 00	18 09	7 00	18 07
24	7 03	18 14	7 02	18 13	7 02	18 15	7 00	18 13	7 00	18 12	7 01	18 12	6 58	18 11	6 58	18 12	7 04	18 14	6 57	18 11	6 57	18 09
27	6 59	18 16	6 57	18 16	6 59	18 17	6 57	18 15	6 57	18 14	6 57	18 15	6 55	18 13	6 55	18 14	7 01	18 17	6 54	18 13	6 54	18 11
2 मार्च	6 56	18 19	6 54	18 19	6 55	18 20	6 53	18 18	6 52	18 17	6 53	18 18	6 51	18 16	6 51	18 17	6 56	18 20	6 50	18 16	6 49	18 14
5	6 52	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 49	18 20	6 48	18 19	6 49	18 20	6 47	18 19	6 47	18 19	6 52	18 22	6 46	18 18	6 46	18 17
8	6 49	18 24	6 47	18 23	6 47	18 24	6 45	18 22	6 45	18 21	6 46	18 22	6 44	18 21	6 44	18 21	6 49	18 24	6 43	18 20	6 42	18 19
11	6 45	18 26	6 43	18 25	6 44	18 26	6 42	18 24	6 41	18 24	6 42	18 24	6 40	18 23	6 40	18 23	6 45	18 27	6 39	18 22	6 38	18 21
14	6 41	18 28	6 39	18 27	6 40	18 28	6 38	18 26	6 37	18 26	6 38	18 27	6 36	18 25	6 37	18 25	6 41	18 29	6 36	18 24	6 35	18 23
17	6 37	18 30	6 35	18 29	6 36	18 30	6 34	18 28	6 34	18 28	6 35	18 29	6 33	18 27	6 33	18 27	6 37	18 31	6 32	18 26	6 31	18 25
20	6 33	18 32	6 32	18 31	6 33	18 32	6 31	18 31	6 30	18 30	6 31	18 31	6 29	18 29	6 29	18 29	6 33	18 33	6 28	18 28	6 27	18 27

नगर	कांगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 30	18 34	6 28	18 34	6 29	18 34	6 27	18 32	6 26	18 32	6 27	18 33	6 25	18 31	6 26	18 31	6 29	18 35	6 25	18 30	6 23	18 29
26	6 26	18 36	6 24	18 36	6 25	18 36	6 23	18 34	6 22	18 34	6 23	18 35	6 21	18 33	6 22	18 33	6 25	18 37	6 21	18 32	6 20	18 31
29	6 22	18 38	6 20	18 38	6 21	18 38	6 19	18 36	6 18	18 36	6 19	18 37	6 18	18 35	6 18	18 35	6 21	18 39	6 17	18 34	6 16	18 33
2 अप्रै.	6 17	18 41	6 15	18 40	6 16	18 41	6 14	18 39	6 13	18 39	6 14	18 39	6 13	18 37	6 14	18 37	6 16	18 42	6 13	18 36	6 11	18 36
5	6 13	18 43	6 12	18 42	6 12	18 43	6 11	18 41	6 10	18 41	6 10	18 41	6 09	18 39	6 09	18 39	6 12	18 44	6 09	18 38	6 07	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 09	18 45	6 07	18 43	6 06	18 43	6 07	18 43	6 05	18 41	6 06	18 41	6 09	18 47	6 05	18 40	6 03	18 40
11	6 06	18 47	6 04	18 46	6 05	18 47	6 03	18 45	6 02	18 45	6 03	18 45	6 02	18 43	6 02	18 43	6 05	18 49	6 02	18 42	6 00	18 42
14	6 02	18 49	6 01	18 48	6 02	18 49	6 00	18 47	5 59	18 47	6 00	18 47	5 58	18 45	5 59	18 45	6 01	18 51	5 58	18 44	5 56	18 44
17	5 58	18 51	5 57	18 50	5 58	18 51	5 56	18 49	5 55	18 49	5 56	18 49	5 55	18 47	5 56	18 47	5 58	18 53	5 55	18 46	5 53	18 46
20	5 55	18 53	5 54	18 52	5 55	18 53	5 53	18 51	5 52	18 51	5 53	18 52	5 52	18 49	5 52	18 49	5 54	18 55	5 52	18 48	5 49	18 48
23	5 52	18 55	5 51	18 54	5 52	18 55	5 50	18 53	5 49	18 53	5 50	18 54	5 49	18 51	5 49	18 51	5 51	18 57	5 49	18 50	5 46	18 50
26	5 48	18 58	5 47	18 57	5 49	18 57	5 47	18 55	5 46	18 55	5 46	18 56	5 45	18 53	5 46	18 53	5 48	18 59	5 46	18 52	5 43	18 52
29	5 45	19 00	5 45	18 59	5 46	18 59	5 44	18 57	5 43	18 57	5 43	18 58	5 43	18 55	5 43	18 55	5 45	19 02	5 43	18 54	5 40	18 54
2 मई	5 42	19 02	5 41	19 01	5 43	19 01	5 41	18 59	5 40	18 59	5 41	19 00	5 40	18 57	5 40	18 57	5 42	19 04	5 40	18 56	5 37	18 56
4	5 40	19 04	5 40	19 02	5 41	19 03	5 38	19 01	5 38	19 00	5 39	19 01	5 38	18 59	5 39	18 58	5 40	19 05	5 38	18 57	5 36	18 57
7	5 37	19 06	5 37	19 04	5 38	19 05	5 36	19 03	5 35	19 03	5 36	19 03	5 35	19 01	5 36	19 01	5 37	19 07	5 36	18 59	5 33	18 59
10	5 35	19 08	5 35	19 06	5 36	19 07	5 34	19 05	5 33	19 05	5 34	19 05	5 33	19 03	5 34	19 03	5 35	19 10	5 34	19 01	5 31	19 01
13	5 33	19 10	5 33	19 08	5 34	19 09	5 32	19 07	5 31	19 07	5 32	19 08	5 31	19 05	5 32	19 05	5 32	19 12	5 32	19 03	5 29	19 03
16	5 31	19 12	5 31	19 10	5 32	19 11	5 30	19 09	5 29	19 09	5 30	19 10	5 29	19 07	5 30	19 07	5 30	19 14	5 30	19 05	5 27	19 06
19	5 29	19 14	5 29	19 12	5 30	19 13	5 28	19 11	5 27	19 11	5 28	19 12	5 27	19 09	5 28	19 09	5 28	19 16	5 28	19 07	5 25	19 08
22	5 27	19 16	5 27	19 14	5 29	19 15	5 27	19 13	5 25	19 13	5 26	19 14	5 26	19 11	5 26	19 10	5 27	19 18	5 26	19 09	5 23	19 09
25	5 26	19 18	5 26	19 16	5 27	19 17	5 26	19 15	5 24	19 15	5 25	19 16	5 24	19 12	5 25	19 12	5 25	19 20	5 25	19 11	5 22	19 11
28	5 25	19 20	5 25	19 18	5 26	19 19	5 24	19 16	5 23	19 17	5 24	19 17	5 23	19 14	5 24	19 14	5 24	19 22	5 24	19 12	5 21	19 13
31	5 24	19 22	5 24	19 20	5 25	19 20	5 23	19 18	5 22	19 18	5 23	19 19	5 22	19 16	5 23	19 16	5 23	19 24	5 23	19 14	5 20	19 15
3 जून	5 23	19 24	5 23	19 22	5 24	19 22	5 23	19 20	5 21	19 20	5 22	19 21	5 22	19 18	5 22	19 17	5 22	19 25	5 22	19 16	5 19	19 17
6	5 22	19 25	5 22	19 23	5 24	19 24	5 22	19 23	5 21	19 21	5 22	19 22	5 21	19 19	5 22	19 19	5 22	19 27	5 22	19 17	5 19	19 18
9	5 22	19 26	5 22	19 24	5 24	19 25	5 22	19 22	5 20	19 23	5 21	19 24	5 21	19 20	5 22	19 20	5 22	19 28	5 22	19 19	5 18	19 19
12	5 22	19 28	5 22	19 26	5 24	19 26	5 22	19 24	5 20	19 24	5 21	19 25	5 21	19 22	5 22	19 21	5 21	19 30	5 22	19 20	5 18	19 21
15	5 22	19 29	5 22	19 27	5 24	19 27	5 22	19 25	5 21	19 25	5 21	19 26	5 21	19 23	5 22	19 22	5 22	19 31	5 22	19 21	5 18	19 22
18	5 23	19 30	5 23	19 28	5 24	19 28	5 23	19 26	5 21	19 26	5 22	19 27	5 21	19 24	5 22	19 23	5 22	19 32	5 22	19 22	5 19	19 23
21	5 23	19 30	5 23	19 28	5 25	19 29	5 23	19 27	5 21	19 27	5 22	19 28	5 22	19 24	5 23	19 24	5 24	19 32	5 23	19 22	5 19	19 23
24	5 24	19 31	5 24	19 29	5 25	19 29	5 24	19 27	5 22	19 27	5 23	19 28	5 23	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 24	19 23	5 20	19 24
27	5 25	19 31	5 25	19 29	5 26	19 30	5 25	19 27	5 23	19 28	5 24	19 28	5 24	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 25	19 23	5 21	19 24
30	5 26	19 31	5 26	19 29	5 27	19 30	5 26	19 27	5 24	19 28	5 25	19 28	5 25	19 25	5 26	19 25	5 25	19 33	5 26	19 23	5 22	19 24
3 जुला	5 27	19 31	5 27	19 29	5 29	19 30	5 27	19 27	5 25	19 27	5 26	19 28	5 26	19 25	5 27	19 25	5 25	19 33	5 27	19 23	5 23	19 24
6	5 29	19 31	5 29	19 29	5 30	19 29	5 28	19 27	5 27	19 27	5 28	19 28	5 27	19 25	5 28	19 25	5 25	19 32	5 28	19 23	5 25	19 24
9	5 30	19 30	5 30	19 28	5 32	19 29	5 30	19 26	5 28	19 27	5 29	19 27	5 29	19 24	5 30	19 24	5 24	19 32	5 30	19 22	5 26	19 23
12	5 32	19 29	5 32	19 27	5 33	19 28	5 31	19 26	5 30	19 26	5 31	19 26	5 30	19 23	5 31	19 23	5 23	19 31	5 31	19 22	5 28	19 22

नगर	कांगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 26	5 35	19 27	5 33	19 25	5 32	19 25	5 32	19 25	5 32	19 22	5 33	19 22	5 33	19 30	5 33	19 21	5 29	19 21
18	5 35	19 27	5 35	19 25	5 36	19 25	5 35	19 23	5 33	19 23	5 34	19 24	5 34	19 21	5 34	19 21	5 35	19 29	5 34	19 19	5 31	19 20
21	5 37	19 25	5 37	19 23	5 38	19 24	5 37	19 22	5 35	19 22	5 36	19 23	5 36	19 20	5 36	19 19	5 37	19 27	5 36	19 18	5 33	19 19
24	5 39	19 24	5 39	19 22	5 40	19 22	5 39	19 20	5 37	19 20	5 38	19 21	5 37	19 18	5 38	19 18	5 39	19 25	5 38	19 16	5 35	19 17
27	5 41	19 22	5 41	19 20	5 42	19 20	5 40	19 18	5 38	19 18	5 40	19 19	5 39	19 16	5 40	19 16	5 41	19 23	5 40	19 14	5 37	19 15
30	5 43	19 19	5 43	19 18	5 44	19 18	5 42	19 16	5 41	19 16	5 42	19 17	5 41	19 14	5 42	19 14	5 43	19 21	5 42	19 12	5 39	19 13
2 अग.	5 45	19 17	5 45	19 15	5 46	19 16	5 44	19 14	5 43	19 14	5 44	19 15	5 43	19 12	5 44	19 12	5 45	19 19	5 43	19 10	5 41	19 10
5	5 47	19 15	5 47	19 13	5 48	19 13	5 46	19 11	5 44	19 11	5 46	19 12	5 45	19 09	5 46	19 09	5 47	19 16	5 45	19 08	5 42	19 08
8	5 49	19 12	5 48	19 10	5 50	19 11	5 48	19 09	5 47	19 18	5 48	19 09	5 47	19 07	5 47	19 07	5 49	19 13	5 47	19 05	5 44	19 05
11	5 51	19 09	5 50	19 07	5 52	19 08	5 50	19 06	5 49	19 06	5 50	19 06	5 49	19 04	5 49	19 04	5 51	19 10	5 49	19 02	5 46	19 02
14	5 53	19 06	5 52	19 04	5 54	19 05	5 52	19 03	5 51	19 03	5 51	19 03	5 51	19 01	5 51	19 01	5 53	19 07	5 51	19 00	5 48	18 59
17	5 55	19 03	5 54	19 01	5 55	19 02	5 54	19 00	5 53	18 59	5 53	19 00	5 52	18 58	5 53	18 58	5 55	19 04	5 53	18 56	5 50	18 56
20	5 57	18 59	5 56	18 58	5 57	19 00	5 56	18 56	5 54	18 56	5 55	18 57	5 54	18 54	5 55	18 55	5 57	19 01	5 54	18 53	5 52	18 53
23	5 59	18 56	5 58	18 54	5 59	18 55	5 57	18 53	5 56	18 53	5 57	18 54	5 56	18 51	5 57	18 51	5 59	18 57	5 56	18 50	5 54	18 50
26	6 00	18 52	6 00	18 51	6 01	18 52	5 59	18 50	5 58	18 49	5 59	18 50	5 58	18 48	5 58	18 48	6 01	18 53	5 58	18 47	5 56	18 46
29	6 02	18 49	6 02	18 47	6 03	18 48	6 01	18 46	6 00	18 46	6 01	18 46	6 00	18 44	6 00	18 44	6 03	18 50	6 00	18 43	5 58	18 43
1 सितं.	6 04	18 45	6 03	18 44	6 05	18 44	6 03	18 42	6 02	18 42	6 03	18 43	6 01	18 40	6 02	18 41	6 04	18 46	6 01	18 40	5 59	18 39
4	6 06	18 41	6 05	18 40	6 06	18 41	6 05	18 39	6 04	18 38	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 37	6 06	18 42	6 03	18 36	6 01	18 35
7	6 08	18 37	6 07	18 36	6 08	18 37	6 06	18 35	6 06	18 34	6 06	18 35	6 05	18 33	6 05	18 33	6 08	18 38	6 05	18 32	6 03	18 31
10	6 10	18 33	6 09	18 32	6 10	18 33	6 08	18 31	6 07	18 30	6 08	18 31	6 07	18 29	6 07	18 29	6 10	18 34	6 06	18 28	6 05	18 28
13	6 12	18 29	6 11	18 28	6 12	18 29	6 10	18 27	6 09	18 27	6 10	18 27	6 08	18 25	6 09	18 26	6 12	18 30	6 08	18 25	6 06	18 24
16	6 13	18 25	6 13	18 26	6 14	18 25	6 12	18 23	6 11	18 23	6 12	18 23	6 10	18 22	6 10	18 22	6 14	18 26	6 10	18 21	6 08	18 20
19	6 15	18 21	6 14	18 20	6 15	18 21	6 14	18 19	6 13	18 19	6 14	18 20	6 12	18 18	6 12	18 18	6 16	18 22	6 11	18 17	6 10	18 16
22	6 17	18 17	6 16	18 16	6 17	18 17	6 15	18 15	6 15	18 15	6 15	18 16	6 14	18 14	6 14	18 14	6 18	18 18	6 13	18 13	6 12	18 12
25	6 19	18 13	6 18	18 12	6 19	18 13	6 17	18 12	6 16	18 11	6 17	18 12	6 15	18 10	6 16	18 10	6 20	18 14	6 15	18 09	6 14	18 08
28	6 21	18 10	6 20	18 09	6 21	18 10	6 19	18 08	6 18	18 07	6 19	18 08	6 17	18 06	6 17	18 06	6 22	18 10	6 17	18 06	6 15	18 04
1 अक्तू	6 23	18 06	6 22	18 05	6 23	18 06	6 21	18 04	6 20	18 03	6 21	18 04	6 19	18 02	6 19	18 03	6 24	18 06	6 18	18 02	6 17	18 00
4	6 25	18 02	6 24	18 01	6 25	18 02	6 23	18 00	6 22	17 59	6 23	18 00	6 21	17 59	6 21	18 00	6 26	18 02	6 20	17 58	6 19	17 57
7	6 27	17 58	6 26	17 57	6 27	17 58	6 25	17 56	6 24	17 55	6 25	17 56	6 23	17 55	6 23	17 55	6 28	17 58	6 22	17 55	6 21	17 53
10	6 29	17 54	6 28	17 54	6 29	17 55	6 27	17 53	6 26	17 52	6 27	17 53	6 25	17 51	6 25	17 52	6 30	17 55	6 24	17 51	6 23	17 49
13	6 31	17 51	6 30	17 50	6 31	17 51	6 29	17 50	6 28	17 48	6 29	17 49	6 27	17 48	6 27	17 48	6 32	17 51	6 26	17 48	6 25	17 46
16	6 33	17 47	6 32	17 46	6 33	17 48	6 31	17 45	6 30	17 45	6 31	17 46	6 29	17 44	6 29	17 45	6 34	17 47	6 28	17 44	6 27	17 42
19	6 35	17 44	6 34	17 43	6 35	17 44	6 33	17 42	6 32	17 41	6 33	17 42	6 31	17 41	6 31	17 42	6 36	17 46	6 30	17 41	6 29	17 39
22	6 38	17 40	6 36	17 40	6 37	17 41	6 35	17 39	6 35	17 38	6 35	17 39	6 33	17 38	6 33	17 38	6 39	17 41	6 32	17 38	6 32	17 36
25	6 40	17 37	6 39	17 37	6 39	17 38	6 37	17 36	6 37	17 35	6 38	17 36	6 35	17 35	6 35	17 35	6 41	17 37	6 34	17 35	6 34	17 33
28	6 42	17 34	6 41	17 34	6 42	17 35	6 40	17 33	6 39	17 32	6 40	17 33	6 38	17 32	6 38	17 33	6 44	17 34	6 36	17 32	6 36	17 30
31	6 45	17 32	6 43	17 31	6 44	17 32	6 42	17 31	6 42	17 30	6 42	17 30	6 40	17 29	6 40	17 30	6 46	17 32	6 39	17 30	6 39	17 27
3 नवं.	6 47	17 29	6 46	17 29	6 46	17 30	6 44	17 28	6 44	17 27	6 45	17 28	6 42	17 27	6 42	17 27	6 49	17 29	6 41	17 27	6 41	17 25

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 50	17 27	6 48	17 26	6 49	17 28	6 47	17 26	6 47	17 25	6 47	17 25	6 45	17 25	6 45	17 25	6 51	17 27	6 43	17 25	6 43	17 22
9	6 53	17 24	6 51	17 24	6 51	17 25	6 49	17 24	6 49	17 23	6 50	17 23	6 47	17 23	6 47	17 23	6 54	17 24	6 46	17 23	6 46	17 20
12	6 55	17 23	6 53	17 22	6 54	17 24	6 52	17 22	6 52	17 21	6 53	17 21	6 50	17 21	6 50	17 21	6 57	17 22	6 48	17 21	6 49	17 18
15	6 58	17 21	6 56	17 21	6 57	17 22	6 54	17 20	6 54	17 19	6 55	17 20	6 52	17 19	6 52	17 20	6 59	17 21	6 51	17 20	6 51	17 17
18	7 01	17 19	6 59	17 19	6 59	17 21	6 57	17 19	6 57	17 17	6 58	17 18	6 55	17 18	6 55	17 18	7 02	17 19	6 53	17 18	6 54	17 15
21	7 03	17 18	7 01	17 18	7 02	17 19	7 00	17 18	7 00	17 16	7 01	17 17	6 58	17 17	6 57	17 17	7 05	17 18	6 56	17 17	6 56	17 14
24	7 06	17 17	7 04	17 17	7 05	17 18	7 02	17 17	7 02	17 15	7 03	17 16	7 00	17 16	7 00	17 16	7 07	17 17	6 59	17 16	6 59	17 13
27	7 08	17 17	7 07	17 16	7 09	17 18	7 05	17 16	7 05	17 15	7 06	17 16	7 03	17 15	7 03	17 16	7 10	17 16	7 01	17 16	7 02	17 12
30	7 11	17 16	7 09	17 16	7 10	17 17	7 07	17 16	7 07	17 14	7 08	17 15	7 05	17 15	7 05	17 15	7 13	17 16	7 04	17 15	7 04	17 12
3 दिसं	7 14	17 16	7 11	17 16	7 12	17 17	7 10	17 16	7 10	17 14	7 11	17 15	7 08	17 15	7 07	17 15	7 15	17 16	7 06	17 15	7 07	17 12
6	7 16	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 12	17 16	7 12	17 14	7 13	17 15	7 10	17 15	7 10	17 15	7 18	17 16	7 08	17 15	7 09	17 12
9	7 18	17 16	7 16	17 16	7 17	17 18	7 14	17 16	7 15	17 15	7 15	17 16	7 12	17 15	7 12	17 16	7 20	17 16	7 10	17 16	7 11	17 13
12	7 20	17 17	7 18	17 17	7 19	17 19	7 17	17 17	7 17	17 15	7 17	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 22	17 17	7 13	17 17	7 13	17 13
15	7 22	17 18	7 20	17 18	7 21	17 19	7 18	17 18	7 19	17 16	7 19	17 17	7 16	17 17	7 16	17 18	7 24	17 17	7 14	17 18	7 15	17 14
18	7 24	17 19	7 22	17 19	7 23	17 21	7 20	17 19	7 20	17 17	7 21	17 18	7 18	17 18	7 18	17 19	7 26	17 19	7 16	17 19	7 17	17 15
21	7 26	17 21	7 24	17 21	7 24	17 22	7 22	17 20	7 22	17 19	7 23	17 20	7 20	17 19	7 19	17 20	7 27	17 20	7 18	17 20	7 19	17 17
24	7 27	17 22	7 25	17 22	7 26	17 24	7 23	17 22	7 23	17 20	7 24	17 21	7 21	17 21	7 21	17 22	7 29	17 22	7 19	17 22	7 20	17 18
27	7 28	17 24	7 26	17 24	7 27	17 25	7 24	17 24	7 25	17 22	7 25	17 23	7 22	17 23	7 22	17 23	7 30	17 23	7 20	17 23	7 21	17 20
30	7 29	17 26	7 27	17 26	7 28	17 27	7 25	17 25	7 26	17 24	7 26	17 25	7 23	17 25	7 23	17 26	7 31	17 26	7 21	17 25	7 22	17 22

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

काँगड़ा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
धर्मशाला	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८
कुल्लू	– ० ३२

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटखाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणू	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

वैशाख (अप्रैल–मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	२	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	३	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	४	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	५	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	६	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	७	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	८	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	९	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	१०	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	११	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१२	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१३	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१४	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१५	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१६	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१७	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१८	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	१९	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२०	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२१	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२२	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२३	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२४	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२५	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२६	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२७	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२८	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	२९	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३०	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	३१	५ ३३	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४२	१९ ०३	२१ २३	२३ २७	१ ०८	२ ३३	३ ५६
15	ज्ये.	५ २९	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

ज्येष्ठ (मई–जून)

मई	ज्येष्ठ प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	२	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	३	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	४	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	५	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	६	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	७	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	८	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	९	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	१०	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	११	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१२	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१३	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१४	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१५	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१६	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१७	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१८	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	१९	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२०	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२१	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२२	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२३	५ ५७	८ १२	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२४	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२५	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२६	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२७	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२८	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	२९	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३०	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	३१	५ २५	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ ०१	१९ २१	२१ २६	२३ ०७	० ३१	१ ५४	३ २७
15	आ	५ २१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	२	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	३	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	४	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	५	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	६	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	७	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	८	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	९	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	१०	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	११	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१२	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१३	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१४	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१५	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१६	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१७	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१८	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	१९	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२०	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२१	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२२	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२३	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२४	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२५	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२६	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२७	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२८	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	२९	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३०	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३१	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	३२	५ ५५	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९
17	भा.	५ ५१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	२	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	३	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	४	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	५	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	६	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	७	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	८	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	९	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	१०	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	११	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१२	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१३	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१४	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१५	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१६	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१७	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१८	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	१९	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२०	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२१	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२२	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२३	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२४	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२५	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२६	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२७	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२८	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	२९	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३०	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	३१	६ १२	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४८
17	आ	६ ०८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	२	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	३	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	४	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	५	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	६	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	७	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	८	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	९	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	१०	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	११	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१२	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१३	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१४	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१५	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१६	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १४	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१७	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१८	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	१९	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२०	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२१	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२२	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२३	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२४	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२५	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२६	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२७	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२८	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	२९	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३०	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)

अक्तू.	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	३०	६ ५६	९ १६	११ २०	१३ ०१	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०
16	मा	६ ५२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	२	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	३	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	४	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	५	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	६	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	७	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	८	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	९	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	१०	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	११	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१२	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१३	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१४	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१५	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं	१६	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१७	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१८	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	१९	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२०	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२१	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२२	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२३	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२४	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२५	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२६	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२७	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२८	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	२९	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	३०	७ १८	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५५
16	पौ.	७ १४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.
16	१	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	२	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	३	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	४	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	५	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	६	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	७	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	८	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	९	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	१०	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	११	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१२	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१३	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१४	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१५	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१६	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१७	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१८	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	१९	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२०	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२१	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२२	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२३	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२४	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२५	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२६	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२७	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२८	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	२९	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	३०	७ १०	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ३	२० २२	२२ ४०	१ १	३ २१	५ २५
13	फा.	७ ०६	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फाल्गुन (फरवरी-मार्च)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	२	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	३	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	४	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	५	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	६	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	७	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	८	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	९	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	१०	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	११	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१२	७ ४९	९ ११	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
25	१३	७ ४६	९ ०८	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३२	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ३६	६ १७
26	१४	७ ४२	९ ०४	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २८	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ३२	६ १३
27	१५	७ ३९	९ ०१	१० ३५	१२ २९	१४ ४३	१७ ०६	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ १०
28	१६	७ ३६	८ ५८	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	० ०२	२ २२	४ २६	६ ०७
29	१७	७ ३२	८ ५४	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ०३
मार्च	१८	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१९	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	२०	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२१	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२२	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२३	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२४	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२५	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२६	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२७	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२८	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२९	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	३०	६ ४१	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	चैत्र	६ ३७	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

चैत्र (मार्च-अप्रैल)

मार्च	चैत्र प्रवि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	वै.	६ २	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	गुरु / शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२२		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	मंग / राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०	केतु	३	०	२३	सूर्य	१	१	१५	राहु	१६	१०	१५	शनि	१३	०	२२

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
७	४०	केतु	२	११	२१	सूर्य	१	०	१८	राहु	१६	७	२४	शनि	१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		०	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		०	९	०		१५	९	०		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	सूर्य / चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	केतु / शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	०		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	०	०		६	६	०		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०	शुक्र	१७	३	०	चंद्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	०	०	चन्द्र	६	०	०	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१	शनि	०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५	राहु	०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	०		१	१०	१५		१५	०	०		११	८	७
२१	०		८	६	०		१	९	०		१४	९	१८		११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०	चंद्र	०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२१		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०	शुक्र	३	६	०	मंग	६	५	२१	गुरु	१०	९	१८	बुध	७	२	२१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२४	३०	शुक्र	३	३	०	मंग	६	४	२०	गुरु	१०	७	६	बुध	७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०	शुक्र	०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०	बुध	०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्मनक्षत्र होगा, उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं। दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा कर दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य 200 रु.

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण,आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि			मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पू.फा. मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान 120 वर्षों का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशाओं का प्रचलन उत्तर भारत-विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि विंशोतरी दशा पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो) में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरु की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मारा	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मारा	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मारा	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मारा	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना	धुआं देखना	कार्य में विघ्न
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	छंटनी देखना	पदोन्नति	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि	धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कबाब खाना	अपयश/विवाद	जख्म देखना	परेशानियां	तूफान देखना	परेशानी बढ़े	नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच	नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
अर्थी देखना	रोग मुक्त	खून करना	संकट आना	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	तोता देखना	धन लाभ	नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	खिलौना देखना	सुख शान्ति	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा	न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	खेत देखना	संकट पूर्ण	जल देखना	मान सम्मान	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता	नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	तराजू देखना	व्यापार लाभ	नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
आत्महत्या करना	दीर्घायु	गुरु देखना	कार्य सफलता	जुआ खेलना	धन हानि	ताश खेलना	व्यापार लाभ	नाखून काटना	रोग से मुक्ति
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	गोबर देखना	पशु लाभ हो	जेब काटना	धन हानि	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट	नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तरबूज देखना	परेशानी	नाग देखना	सुख प्राप्ति
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	थूक देना	परेशानी बढ़े	नृत्य देखना	धन प्राप्ति
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	झाड़ू देखना	नुकसान हो	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश	प्यासा होना	कार्य बाधा
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	थप्पड़ खाना	शुभ	पुल देखना	शुभ यात्रा हो
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	झांकी देखना	अशुभ	दूध पीना	खुशी प्राप्ति	परछाई देखना	अशुभ होना
इमली खाना	पुत्र प्राप्ति	गर्भपात	गम्भीर रोग	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हो	पशु देखना	व्यापार में लाभ
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	झरना देखना	दुःख दूर हो	दान करना	शुभ	पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	दर्जी देखना	काम बिगड़ना	पान खाना	प्रिय से मिलाप
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट	परीक्षा देते देखना	असफलता
ऊँट देखना	अंग घात	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	टापू देखना	संकट लक्षण	दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े	पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	घड़ी देखना	यात्रा का संकेत	टोपी देखना	प्रगति हो	दवाई पीना	रोग नाश	पपीता देखना	धन लाभ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	ठग मिलना	धन हानि	दुकान (भरी) देखना	धन लाभ	पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	दुकान (खाली) देखना	धन हानि	पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	चावल खाना	शुभ समाचार	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति	पखाना करना	कष्ट मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दरिया में नहाना	रोग नाश	पानी बरसते देखना	शुभ कारक
काला नाग	राज्य सम्मान	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दीवार गिरना	धन हानि	पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
किला देखना	तरक्की पाना	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दाह संस्कार देखना	दीर्घायु	पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
कोढ़ी देखना	रोग सूचक	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	डाकू देखना	धन हानि	धन देखना	धन की प्राप्ति	प्रणय सबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट	धूल देखना	यात्रा पड़े	प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय	धमकी देना	शत्रु पर विजय	फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति	धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख	फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	छींकना	कार्य बाधा	तैरते देखना	आयु में वृद्धि	धोबी देखना	सफलता हो	फेल होना	सफलता का सूचक

स्वप्न	फल
फकीर देखना	शुभ फलदायक
वहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
वकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
वूढ़ी स्त्री देखना	दु:ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा

स्वप्न	फल
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके **"महामृत्युञ्जय मन्त्र"** का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण लाभ
दाईं भुजा	मान-सम्मान
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश
बाईं पीठ	रोग भय
दायीं पीठ	सुख लाभ
दायें कन्धे	विजय, सफलता
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाईं जाँघ	धन हानि
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ

अंग	फल
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बायें पाँव	रोग-क्लेश
पावों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

अंगस्फुरण फल

अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपोल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति

अंग	फल
बाहुमध्य	धनागमः
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्तिः
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रदः
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की वढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीप
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्नि
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्कान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगमय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्तः पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दिं ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रलया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरत्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूल १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि .२४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरस नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीडा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र–पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा–द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्त्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वयं नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योग में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या प काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त ह उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक विल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और विल्ली के बाल गोघृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विद्यलिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गोघृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्वं महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि मापञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

☆☆☆☆☆☆ वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व ☆☆☆☆☆☆

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य विगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (विस्तृत फलादेश के लिए देखें हमारी पुस्तक '**वर्षफल चंद्रिका**') **मूल्य 150/- रु. मात्र**

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 5	13	29
	9	18	59
अर्थात् (रविवार)	2 वार	18	59

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2023 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2023 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 49 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 49 के सामने हमें 5 वार, 13 घण्टे एवं 29 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 9 वार, 18 घण्टे, 59 मिनट प्राप्त हुए। हमें 9 वार अर्थात् 7 वार ऋण करने पर हमें सोमवार की सायं 6 बजकर, 59 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 2 अक्तू., सोमवार की सायं 6 बजकर 59 मिनट पर हमें **'मेष' वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मेष में सं. २०८० की पंचांग से 2 अक्तूबर, 2023 ई. की सोमवार सायं 18$^{घं.}$–59$^{मि.}$ स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 150 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

मार्च ता.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

अप्रैल ता.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

मई — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली (DELHI)

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जून — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली (DELHI)

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्तिकाल, दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6:00
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7:30
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	13:30
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	15:00
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	16:30

॥चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	18:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	19:30
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	21:00
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	22:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	24:00
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	25:30
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	27:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	28:30

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् 12 घण्टे का दिन तथा 12 घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त 1½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' 24 घण्टा अर्थात् 60 घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को 60 घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेषे	४-००-००	मघा (१) सिंहे	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	.. (२) ..	४-०३-२०	.. (२) ..	८-०३-२०	.. (२) ..
०-०६-४०	.. (३) ..	४-०६-४०	.. (३) ..	८-०६-४०	.. (३) ..
०-१०-००	.. (४) ..	४-१०-००	.. (४) ..	८-१०-००	.. (४) ..
०-१३-२०	भरणी (१) ..	४-१३-२०	पू.फा. (१) ..	८-१३-२०	पू.षा. (१) ..
०-१६-४०	.. (२) ..	४-१६-४०	.. (२) ..	८-१६-४०	.. (२) ..
०-२०-००	.. (३) ..	४-२०-००	.. (३) ..	८-२०-००	.. (३) ..
०-२३-२०	.. (४) ..	४-२३-२०	.. (४) ..	८-२३-२०	.. (४) ..
०-२६-४०	कृतिका (१) मेषे	४-२६-४०	उ.फा. (१) ..	८-२६-४०	उ.षा. (१) ..
१-००-००	.. (२) वृषे	५-००-००	.. (२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	.. (३) ..	५-०३-२०	.. (३) ..	९-०३-२०	.. (३) ..
१-०६-४०	.. (४) ..	५-०६-४०	.. (४) ..	९-०६-४०	.. (४) ..
१-१०-००	रोहिणी (१) ..	५-१०-००	हस्ते (१) ..	९-१०-००	श्रव (१) ..
१-१३-२०	.. (२) ..	५-१३-२०	.. (२) ..	९-१३-२०	.. (२) ..
१-१६-४०	.. (३) ..	५-१६-४०	.. (३) ..	९-१६-४०	.. (३) ..
१-२०-००	.. (४) ..	५-२०-००	.. (४) ..	९-२०-००	.. (४) ..
१-२३-२०	मृगशिर (१) ..	५-२३-२०	चित्रा (१) ..	९-२३-२०	धनि (१) ..
१-२६-४०	.. (२) ..	५-२६-४०	.. (२) ..	९-२६-४०	.. (२) ..
२-००-००	.. (३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	.. (३) कुंभे
२-०३-२०	.. (४) ..	६-०३-२०	.. (४) ..	१०-०३-२०	.. (४) ..
२-०६-४०	आर्द्रा (१) ..	६-०६-४०	स्वाती (१) ..	१०-०६-४०	शतभिषा (१)..
२-१०-००	.. (२) ..	६-१०-००	.. (२) ..	१०-१०-००	.. (२) ..
२-१३-२०	.. (३) ..	६-१३-२०	.. (३) ..	१०-१३-२०	.. (३) ..
२-१६-४०	.. (४) ..	६-१६-४०	.. (४) ..	१०-१६-४०	.. (४) ..
२-२०-००	पुनर्वसु (१) ..	६-२०-००	विशाखा (१) ..	१०-२०-००	पूभा (१) ..
२-२३-२०	.. (२) ..	६-२३-२०	.. (२) ..	१०-२३-२०	.. (२) ..
२-२६-४०	.. (३) ..	६-२६-४०	.. (३) ..	१०-२६-४०	.. (३) ..
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्के	७-००-००	.. (४) वृश्चिके	११-००-००	पूभा (४) मीने
३-०३-२०	पुष्ये (१) ..	७-०३-२०	अनुराधा (१) ..	११-०३-२०	उ.भा. (१) ..
३-०६-४०	.. (२) ..	७-०६-४०	.. (२) ..	११-०६-४०	.. (२) ..
३-१०-००	.. (३) ..	७-१०-००	.. (३) ..	११-१०-००	.. (३) ..
३-१३-२०	.. (४) ..	७-१३-२०	.. (४) ..	११-१३-२०	उ.भा. (४) ..
३-१६-४०	आश्ले (१) ..	७-१६-४०	ज्ये. (१) ..	११-१६-४०	रेवती (१) ..
३-२०-००	.. (२) ..	७-२०-००	.. (२) ..	११-२०-००	.. (२) ..
३-२३-२०	.. (३) ..	७-२३-२०	.. (३) ..	११-२३-२०	.. (३) ..
३-२६-४०	.. (४) ..	७-२६-४०	.. (४) ..	११-२६-४०	रेवती (४) ..
				००-००-००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-08′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या −) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 29 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी से ३१ दिसंबर** तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2022 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +1 मिनट प्राप्त हुए।

अत: सन् 2022 में **मेष लग्न** 7/30 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
2008A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2008B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2009	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
2010	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2011	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2012A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2012B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	+०	−१	−१
2013	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2014	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2015	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2016A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2016B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2017	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2018	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2019	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2020A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2020B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
2021	+०	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2022	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2023	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2024A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2024B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४८	१२ ११	१४ ३१	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये	५ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३[illegible]
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २[illegible]
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २[illegible]
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १[illegible]
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १[illegible]
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ १[illegible]
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०[illegible]
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०[illegible]
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ०[illegible]
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७.५५	२० १५	२२ २०	००० १	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ	५ २७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	२३ १३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ २३	८ ३८	१० ५९	२३ ०९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
17	आ	६ ११	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू.	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं.	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी	दिसं.-जन. (पौष)	भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर											
दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी	जन.-फर. (माघ)	भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर											
जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ २७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १३	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१३	७ ५२	९ १४	१० ४७	१२ ४१	१४ ५५	१७ १८	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
26	१४	७ ४९	९ ११	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
27	१५	७ ४६	९ ०८	१० ४१	१२ ३५	१४ ४९	१७ १२	१९ ३२	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ३५	६ १७
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्तिकाल, जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १७	४ ४२
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश 31°-19′ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (−) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरणस्वरूप**—मान लो आपने 16 जुलाई, 2022 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें 16 जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें −८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−४	−६	−१०	−१४	−१७	−१८	−१८	−१५	−१२	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२१	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
अल्मोड़ा (उ.खण्ड)	−१५	−१५	−१५	−१६	−१७	−१७	−१९	−१९	−१९	−१८	−१८	−१६
आगरा	−४	−२	−३	−६	−१०	−१४	−१७	−१९	−१९	−१५	−१२	−७
अगरतला	−५०	−४७	−४६	−५३	−६०	−६७	−७५	−७८	−७६	−७३	−६४	−५३
अल्मोड़ा	−१५	−१५	−१५	−१६	−१७	−१७	−१९	−१९	−१९	−१८	−१८	−१६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	−१	−९	−१६	−२१	−१९	−१२	−३	+५
ऊना (हि. प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
उधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+७	+१६	+१४	+८	+०	−७	−१४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
उत्तरकाशी	−११	−११	−११	−११	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−११
करनाल	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−४	−३	−३	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा (राज.)	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कोलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−११	−१०	−१०	−१४	−१८	−२२	−२८	−३०	−२९	−२५	−२१	−१६
कांगड़ा	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५
कठुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−२	+१	−१	−५	−१०	−१५	−१९	−२२	−२१	−१७	−१२	−७
गुरदासपुर	−१	−१	−१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−३	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गुवाहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाज़ियाबाद	−२	−२	−३	−५	−८	−१०	−१२	−१३	−१३	−११	−०९	−६
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−१	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−६	−६	−६	−५	−४	−२	+१	+२	+१	+०	+३	−४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+१	+०	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−४	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
दुर्ग (छ.गढ़)	−६	−०	−२	−१०	−१९	−२७	−३७	−४२	−४२	−३१	−२१	−१४
देहरादून	−१०	−१०	−९	−१०	−११	−११	−१२	−१२	−१२	−११	−११	−१०
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	−६	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−५	−६
नंगल (पंजा.)	−३	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३
नैनीताल	−१३	−१२	−१३	−१४	−१६	−१७	−१८	−२०	−१९	−१७	−१७	−१४
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	−२	−१	+४	+४
नवांशहर	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−२	−२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	−१४	−२३	−३२	−३५	−३३	−२७	−७	−६
नदौन(हि.प्र.)	−३	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३	−३
नाभा (पंजा.)	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−२	−२	−२	−२
पटियाला	−३	−३	−३	−४	−३	−३	−५	−५	−४	−३	−३	−३
पानीपत	−६	−६	−६	−६	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५
पठानकोट	−४	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१
पुंछ	−१	−२	−१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	−१६	−१४	−१५	−२०	−२४	−३०	−३५	−३७	−३७	−३१	−२७	−२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	−२	−१३	−१९	−१७	−९	+३	+१७
पंचकूला	−५	−५	−५	−४	−४	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५
पटना	−२९	−२६	−२३	−३०	−३५	−४२	−४७	−४९	−४९	−४६	−४०	−३३
पालमपुर	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−६	−६	−५	−५	−५	−५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	−१	−१	−१	−१	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	−३	−३	−२	−५	−८	−९	−१२	−१३	−१३	−११	−१०	−६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	−२०	−१८	−१९	−२३	−३०	−३४	−३९	−४२	−४१	−३७	−३१	−२५
बिलासपुर	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−४	−४	−४	−३	−३	−४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	−१	−२१	−३६	−४४	−४१	−२८	−११	+६
बरेली	−११	−११	−११	−१३	−१६	−१८	−२०	−२१	−२१	−१९	−१८	−१४
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	−५	−५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	−५	−५	−५	−७	−९	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−१२	−८
बरनाला	−१	−१	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−०	−०	−०	−०
विशाखापटनम	−९	−१	+१	−१३	−२६	−४०	−५२	−५८	−५६	−४७	−३४	−२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	−२३	−१८	−२०	−२८	−३६	−४९	−५८	−६३	−६२	−५४	−४३	−३२
भरतपुर	−२	+०	+०	−५	−८	−१२	−१५	−१७	−१७	−१२	−१०	−५
भोपाल	+६	+१०	+७	+१	−६	−१३	−२०	−२६	−२४	−१७	−९	−१
मेरठ(उ. प्र.)	−६	−५	−६	−७	−९	−११	−१२	−१२	−१२	−१०	−९	−७

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुज़फ्फरनगर	−६	−५	−६	−७	−९	−११	−१२	−१३	−१३	−११	−१०	−७
मुरादाबाद	−१०	−९	−१०	−११	−१४	−१५	−१६	−१८	−१८	−१६	−१३	−१२
मण्डी(हि.प्र.)	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−४	−४	−४	−६	−६	−६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	−२	−१	−२	−४	−८	−१२	−१५	−१६	−१६	−१३	−१०	−५
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	−१३	−३१	−४६	−५५	−५२	−४०	−२३	−०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	−१७	−३३	−४१	−३९	−२६	−९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	−१	−१	−१	−१	−१	−२	+०	−१	−१	−१	−२	−२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	−८	−१४	−१२	−३	+९	+२१
रोपड़	−४	−३	−३	−४	−३	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−३
राँची	−२५	−२१	−२३	−२८	−३६	−४५	−५१	−५७	−५५	−४८	−३९	−३१
रायपुर (छत्ती.)	−८	−२	−४	−१२	−२१	−२९	−३९	−४४	−४४	−३४	−२३	−१६
रोहतक	−१	+१	+१	−२	−२	−६	−९	−१०	−१०	−८	−५	−३
रूड़की	−७	−७	−७	−८	−९	−१०	−११	−११	−११	−१०	−१०	−८
लुधियाना	−२	−२	−१	−२	−१	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−२
लखनऊ	−१४	−१२	−१४	−१६	−२१	−२४	−२९	−३०	−३०	−२६	−२३	−१८
शिलांग	−५५	−४९	−५२	−५५	−६१	−६९	−७४	−७६	−७५	−७१	−६५	−६१
श्रीनगर	−३	−३	−३	−१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	−६	−६	−६	−६	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−६
सोलन	−६	−५	−६	−६	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−६	−६
सोनीपत	−२	−२	−२	−२	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−७	−५
सहारनपुर	−६	−६	−५	−७	−८	−९	−१०	−१०	−१०	−९	−९	−७
सागर(म.प्र.)	−१	−२	+०	−५	−१३	−१८	−२५	−२९	−२८	−२२	−१५	−७
सुन्दरनगर	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−४	−५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	−४	−९	−८	+१	+१२	+२१
शहडोल(म.प्र.)	−१०	−७	−९	−१५	−२३	−३०	−३७	−४२	−४०	−३२	−२५	−१६
शाहपुर	−४	−४	−५	−५	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३
हरिद्वार	−८	−८	−८	−९	−९	−१२	−१३	−१३	−१३	−१२	−१२	−१०
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	−७	−२१	−३३	−३९	−३७	−२८	−१५	−१
होशियारपुर	−३	−४	−३	−३	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−२	−३
हमीरपुर(हि.प्र.)	−५	−५	−४	−४	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	−४	−५	−७	−५	−४	−१	+२
हिसार	+२	+३	+२	+१	+०	−२	−३	−४	−४	−२	−२	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र–रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना,चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल–रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी में कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार** धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु–रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने** में सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **"ऊँ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला–इसे पुखराज का उपरत्न माना जंाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिएं होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र–रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व '**हीरा**' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोज़ा–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। **हिन्दी** में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण–नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ **अथवा अधिक** रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यत: गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रवल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मज़बूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफ्लता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफ्लता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ** नग **सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना रत्न** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

दिनमान व रात्रिमान से मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष काल आदि जानना

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमशः मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण–मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2018 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7-39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायाह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायाह्न-काल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न		दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति		प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30	12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45	12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00	12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15	13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30	13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45	13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99	13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15	14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30	14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45	14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00	15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

–प्रदोषकाल ज्ञात करना–

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है–''त्रिमुहूर्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।''

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवतः यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषाःकाल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय–सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दु:खों से पीड़ित रहना पड़ता है–

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं–स्वतन्त्र **भारतवर्ष** एवं **पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू,** पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फकार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का देवता 'काल' है। केतु का देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यत: इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण–इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवेले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से-(१) द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक ज्योतिर्लिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिृलग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिृलग का ध्यान करते हुए करें।

–कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय–

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागवलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे-(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प** युगल-नाग **स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र–ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें-ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रात: उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए–

नवनाग स्तोत्र– अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना-७ रत्ती, चाँदी-१२ रत्ती, तांबा-१६ रत्ती-ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वत: ही संतति की प्राप्ति होगी।

(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	1000 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	360 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	500 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2014-2024 ई.)	560 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	115 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	150 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	200 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	400 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	400 रु.
सुतभाव (सन्तान) प्रकाश	200 रु.
शिव मन्त्रावली	**250 रु.**
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	250 रु.
विवाह पद्धति	100 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	125 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	120 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**100 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	50 रु.
नवग्रह पूजा विधान	80 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	50 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	40 रु.
कार्तिक माहात्म्य (भाषा)	60 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह(जिल्द)	110 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	50 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	40 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	17 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (16 पृ.)	12 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन 300 रु. सैंकड़ा	
सरल पूजा संग्रह	80 रु.
लाल किताब (पंजाबी)	160 रु.
फलित ज्योतिष (पंजाबी)	550 रु.
राशिफल सन् 2023 ई.	**75 रु.**

अन्य प्रकाशनों की ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

प्रारंभिक फलित ज्यो.	400 रु.
योग-पारिजात (धन योग)	400 रु.
योग-पारिजात (भाग्य योग)	450 रु.
योग-पारिजात (राज-योग)	450 रु.
योग-पारिजात (अनुपम योग)	450 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	600 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
आयु आकलन	500 रु.
आयु निर्णय	300 रु.
शनि और साढ़ेसाती	80 रु.
मंगलीक योग-भ्रान्ति निदान	135 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	395 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
भारतीय ज्यो.-नेमिचंद शास्त्री	**420 रु.**
भृगु संहिता	500 रु.
बुद्धि विद्या विचार	400 रु.
भावफल विचार (2 भाग)	400 रु.
षड्बल रहस्य	150 रु.
आजीविका विचार (2 भाग)	700 रु.
जैमिनी ज्योतिष	150 रु.
राहु-केतु	180 रु.
ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन	200 रु.
पूर्व कालामृत	200 रु.
उत्तर-कालामृत	300 रु.
फलित सूत्रम्	300 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
ग्रहफल विचार	250 रु.
अष्टकवर्ग सिद्धान्त-प्रयोग	120 रु.
ज्यो. में नवांश का महत्त्व	350 रु.
भावार्थ रत्नाकर	200 रु.
सत्यजातकम्	180 रु.
ग्रह-युति फल दर्पण	280 रु.

गोचर फल दर्पण	200 रु.
शनि संहिता	400 रु.
प्रश्न नवनीतम	300 रु.
संतानसुख विचार	150 रु.
वैवाहिक सुख में शनि प्रमुख	400 रु.
जातक सारावली (प्रथम2 भाव)	400 रु.
जातक सारावली (द्वितीय भाव)	400 रु.
जातक सारावली (सप्तम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (दशम भाव)	400 रु.
परिणय निर्णय (वैवाहिक)	400 रु.
परिणय निर्णय (मुहूर्त मीमांसा)	400 रु.
परिणय निर्णय (मंगली दोष)	400 रु.
परिणय निर्णय (विवाह समय)	500 रु.
शिशु चिन्तन	450 रु.
कुण्डली मिलान	150 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
मृत्युंजय मन्त्र संकलन	400 रु.
शनि दशा दिग्दर्शन	180 रु.
भारतीय कुण्डली दर्पण	300 रु.
मानसागरी	**200 रु.**
मुहूर्त-चिन्तामणि	140 रु.
मुहूर्त-मार्त्तण्ड	235 रु.
शक्ति-कुंज	350 रु.
सत्य जातकम्	180 रु.
होरा-रत्नम (2 भाग)	800 रु.
व्यावहारिक अंक ज्यो.	200 रु.
व्याधि-वीथिका (स्वस्थ जीवन)	400 रु.
मंगल दशा फलदीपिका	500 रु.
सर्वार्थ चिंतामणी	600 रु.
सारावली	**400 रु.**
बृहज्जातकम्	295 रु.
वृद्ध यवनजातकम् (2 भाग)	600 रु.
ग्रहयोग-संक्षेपिका	400 रु.
दशाफल बोध	250 रु.
आर्थिक ज्योतिष	140 रु.

समृद्धि सुधा	500 रु.
वैवाहिक विलम्ब आयाम व मंत्र	395 रु.
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
वृहत्पराशर होराशास्त्र (2 भाग)	800 रु.
जातक पारिजात (2 भाग)	850 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	595 रु.
फलदीपिका	**300 रु.**
मुहूर्त चिन्तामणि (पीयूषधारा)	415 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रुशमन	295 रु.
कालसर्प योग कारणनिवारण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	500 रु.
प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र (2 भाग)	740 रु.
भाग्य चिंतामणि	295 रु.
चमत्कार चिंतामणी	295 रु.
लाल किताब (वृहद्)	**2500 रु.**
लाल किताब (बड़ी)	800 रु.
लाल किताब टोटके व उपाय	250 रु.
रावण संहिता (वृहद्)	2500 रु.
रावण संहिता (बड़ी)	800 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	175 रु.
मंगलीदोष कारण-निवारण	150 रु.
जातक निर्णय (दो भाग)	490 रु.
गोचर विचार	150 रु.
जातकालंकार	150 रु.
प्रश्न मार्ग (दो-खण्ड)	450 रु.
शनि दशा फलदीपिका	550 रु.
दशाफल विचार	250 रु.
विंशोत्तरी दशा तरंगिणी	200 रु.
नक्षत्र जातकम्	150 रु.
मेदिनी ज्योतिष	300 रु.
वैदिक उपचारीय ज्यो.	160 रु.
ताजिक नीलकंठी	350 रु.
गीता मंत्र गंगोत्री	380 रु.
अनिष्ट ग्रह उपचार	350 रु.
व्यावसायिका	450 रु.

वर्ग कुण्डली रहस्य	350 रु.
ग्रहफल निर्णय (दो भाग)	**600 रु.**
ज्योतिष प्रकाश (सूक्ष्म दशाएं)	300 रु.
रत्न ज्योतिष	100 रु.
लघु पराशरी	200 रु.
रत्न प्रदीप	200 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	200 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	250 रु.
आपका भाग्यरत्न	80 रु.
अंक विद्या रहस्य	80 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	150 रु.
अंकों का अद्‌भुत संसार	195 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	150 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	250 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	150 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	250 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	250 रु.
वास्तुशास्त्र के रहस्य(दो भाग)	600 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	150 रु.
गृह वास्तु संहिता-2 भाग	580 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 3000 रु. (डाक व्यय सहित)

पुस्तकें मंगवाने का पता :

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा भेजना अनिवार्य है।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित
सन्
1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

गौरवमयी वर्ष
प्रवेश
148 वाँ

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 901/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 2500/- रु.

वृहद् जन्मपत्री– आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1750/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 3100/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 3100/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 900/- रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों के लिए विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 900/- रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 900/- रु.। विस्तृत विज्ञापन '**व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी**' लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

Mobile : 94172 91325

नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज), चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008, फोन-0181-2457959